Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Gurumandal Series No. XX

SKANDAPURANAM

Second Volume

VAISHNAVA KHANDAM

BY

Shrimanmaharsi Krishna Dwaipayan Vedavyas.

Part II

5, CLIVE ROW

CALCUTTA-1

Vikram Era 2017 — First Edition 5000 — Christian era 1960

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुद्रकः

सारनमण्डलान्तर्गत गोरियाकोठी

निवासी श्रीमत्स्वर्गतगोपालप्रसाद

सूनुः श्रीअवधकिशोरसिंहः

स्वयन्त्रालये

गोपाल प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

नामके

स्थानम् :—८७ए, राजा दिनेन्द्र स्ट्रीट,

कलकत्ता—६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

स्कन्दपुराण के द्वितीयवैष्णवखण्ड के विषय में

श्री परब्रह्म सच्चिदानन्दघन परात्परतर की असीम अनुकम्पा से संस्कृत-प्रेमी पुराणानुसन्धानकर्त्ता ज्ञानसर्वस्व विद्वद्वर्ग की सेवा में स्कन्दपुराण के द्वितीय श्रीवैष्णवखण्ड को प्रस्तुत करते हुए विशेष हार्दिक आनन्द अनुभव होता है। इस विशाल-काय महापुराण के प्रकाशन का दायित्व लेते हुए महती कठि-नाइयाँ उपस्थित हुई हैं। कुछ हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रहालयों को बार-बार इसमें अनुपलब्ध ग्रन्थभाग के लिये प्रार्थना करते रहने पर भी जो प्रकाशनीय सामग्री इसमें नहीं आ सकी है उसकी ओर विद्वत्समुदाय का ध्यान आकर्षित करना परमकर्त्तव्य है जिससे भविष्यमें उन विशेष स्थलोंको पुस्तकाकारही परि-शिष्ट में त्रुटिपरिमार्जन के रूप में प्रकाशित किया जा सके।

प्रथम भूमिवाराहखण्ड के अनन्तर पुरुषोत्तमक्षेत्र माहात्म्य में ४६ वीं अध्याय के आरम्भ से अन्तिम ६० वीं अध्याय के ४६ वें श्लोक तक का पाठ कलकत्ता के बङ्गवासी मुद्रणालय के बङ्गाक्षर मुद्रितग्रन्थ में अधिक मिलने से उसे प्रस्तुत ग्रन्थ में सम्मिलित किया गया है। इसे उपलब्ध ग्रन्थसंस्करणों से विशेष पाठ समझकर ही कृपालु विद्वान् इसे ग्रहण करने की कृपा करेंगे।

कुछ विशेष पाठ जो तीनों संस्करणों में सम्मिलित नहीं हैं और नारदीय पुराणोक्त स्कन्दपुराणके कार्त्तिकमाहात्म्यकी विषयसूचीमें जिस मदनालसमाहात्म्य और धूम्रकोशाख्यान का निरूपण आया है, वह इसमें अप्राप्य होने से नहीं गया है साथ ही मार्गशीर्षमाहात्म्य के बाद द्वादशवनमाहात्म्य भी सम्मिलित नहीं हुआ है। जैसे जैसे हस्तलिखितग्रन्थों में अथवा स्वतन्त्र उपलब्धपुस्तकों से ये भाग मिलते जावेंगे इन्हें परिशिष्ट में स्थान दिया जाता रहेगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसीप्रकार भागवतमाहात्म्य के अनन्तर माघमासमाहात्म्य की १० अध्यायों का उल्लेख आता है जो अप्राप्य है। उपर्युक्त स्कन्दपुराण की विषयानुक्रमणिका के अनुसार माहेश्वरखण्ड के महाकाल की आविर्भावाध्याय के साथ वर्णन आता है उसका केवल वृद्धवासुदेव नाम से थोड़ा-सा प्रसङ्गोपात्त निरूपण कियाजाकर सविशेष सम्पूर्ण प्रकरण छूट गया था; उसे अविकल श्रीवेङ्कटेश्वर मुद्रणालय के स्कन्दपुराण में वैष्णवखण्ड में मुद्रण प्राप्त होने से इस भाग में प्रस्तुत किया जा सका है। यह सम्पूर्ण प्रकरण ही अध्यायानुगत है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के माहेश्वर एवं वैष्णव खण्डों की विषयानुक्रमणिका देखने से उपर्युक्त अवतक प्राप्त एवं अप्राप्त ग्रन्थस्थल का पूर्णविवरण आपलोगों की सेवा में प्रस्तुत हो सकेगा। अतः नारदपुराण के पूर्वभागस्थ बृहदुपाख्यान चतुर्थपाद के १०४ की अध्याय में प्रतिपादित अंश इस संदर्भ में अविकलरूप से प्रस्तुत है :—

ब्रह्मावोले—हे मरीचे! जिसके प्रत्येक पद में महादेव जी साक्षात् स्थित हैं ऐसे स्कन्द नाम के पुराण कोमैं कहता हूं तुम ध्यान से सुनो शतकोटिप्रविस्तर पुराणमें जो शिव की महिमा का मैंने वर्णन किया, उसके सारांशको विस्तार से कह दिया है सम्पूर्णपाप को नाश करने वाले प्रायः इक्यासी हजार श्लोकों के

श्रीनारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने चतुर्थपादे १०४ अध्याये प्रतिपादिता विषयानुक्रमणिका

ब्रह्मोवाच

शृणु वक्ष्ये मरीचे! च पुराणं स्कन्दसञ्ज्ञितम्।
यस्मिन्प्रतिपदं साक्षान्महादेवो व्यवस्थितः॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्कन्दपुराण को यहाँ पर सात ही खण्ड में वर्णन किया है जिस पुराण में सम्पूर्ण सिद्धियों को देनेवाले शिव जी के चरित्र तथा माहेश्वर धर्म तत्पुरुषकल्पमें जोकार्त्तिकेय जी के द्वारा प्रकाशित किये गये वृत्त हैं। ऐसे स्कन्द-पुराण को जो सुनता है अथवा पढ़ता है वह साक्षात् शिव ही है।

प्रथम माहेश्वरखण्ड में प्रतिपादितः—

उस स्कन्दपुराण का पहला माहेश्वरखण्ड है। जिसमें प्रायः १२ हजार से न्यून श्लोक हैं ये सब बहुत पुण्यदायक हैं अनेक पापोंके नाशक तथा बहुत शिक्षा-प्रद कथाओंसे युक्त हैं और साथही असङ्ख्य सच्चरित्र कथाओं से परिपूर्ण तथा स्वामी कार्त्तिकेय के माहात्म्य के सूचक हैं।

इसमें सर्वप्रथम केदारमाहात्म्य में पुराण का उपक्रम वर्णित है। उसके बाद दक्षप्रजापति के यज्ञ की कथा है। तदनन्तर शिवलिङ्ग की पूजा करने से जो फल मिलता है उसका वर्णन है। तत्पश्चात् समुद्रमन्थन का वृत्तान्त है फिर देवेन्द्र (इन्द्र) का चरित्र वर्णित है। इसके अनन्तर पार्वती जी का वृत्तान्त नका विवाह, कार्त्तिकेय की उत्पत्ति का वर्णन फिर स्कन्दका तारकासुर के साथ हुए युद्ध का वर्णन है।

पुराणेशतकोटौ तु यच्चैवंवर्णितंमया। लक्षितस्याऽर्थजातस्यसारोव्यासेनकीर्त्तितः

स्कन्दाह्वयस्याऽत्र खण्डाःसप्तैव परिकीर्तिताः।
एकाशीतिसहस्रन्तु स्कान्दं सर्वाघकृन्तनम्॥
यः शृणोति पठेद्वाऽपि स तु साक्षाच्छिवःस्थितः।
यत्र माहेश्वराधर्मा षण्मुखेन प्रकाशिताः॥
कल्पे तत्पुरुषे वृत्ताः सर्वसिद्धिविधायकाः।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदनन्तर चण्डाख्यान से संयुक्त शिव जी का वृत्तान्त वर्णित है। फिर द्यूतप्रवर्त्तनाख्यान तथा नारद जी का समागम कहा गया है।

इसके बाद कुमारमाहात्म्य में पञ्चतीर्थ की कथा धर्मवर्मा राजा का चरित्र, नदीसागर कीर्तन किया गया है इसके पश्चात् नाड़ीजङ्घ की कथा सहित इन्द्रद्युम्न की कथा है। फिर पृथ्वी का प्रादुर्भाव, दमनक की कथा, पृथ्वी-सागर सङ्गम तीर्थ और कुमारेश की कथा वर्णित है। तदनन्तर अनेक कथाओं से परिपूर्ण तारकासुर का युद्ध फिर तारकासुर का वध और पञ्चलिङ्ग की स्थापना कही गयी है।

इसके अनन्तर अत्यन्त पुण्यप्रद ऊर्ध्वलोक के वर्णन सहित सब द्वीपों का वर्णन है, फिर ब्रह्माण्ड की स्थिति तथा परिमाण और वर्करेश की कथा वर्णित की गई है। पुनः महाकाल की उत्पत्ति तथा उसकी महती अद्भुत कथा कही गई है। फिर भगवान् वासुदेव का माहात्म्य और कोरितीर्थ का प्रसङ्ग सविस्तर निरूपित है।

तत्रप्रथमेमाहेश्वरखण्डे :—

तत्रमाहेश्वरश्चाऽऽद्यःखण्डःपापप्रणाशनः। किञ्चिन्न्यूनार्कसाहस्रोबहुपुण्योबृहत्कथः सुचरित्रशतैर्युक्तः स्कन्दमाहात्म्यसूचकः। यत्रकेदारमाहात्म्ये पुराणोपक्रमः पुरा दक्षयज्ञकथा पश्चाच्छिवलिङ्गार्चने फलम्। समुद्रमथनाख्यानं देवेन्द्रचरितं ततः॥ पार्वत्याः समुपाख्यानं विवाहस्तदनन्तरम्। कुमारोत्पत्तिकथनं ततस्तारकसङ्गरः॥ ततः पशुपताख्यानं चण्डाख्यानसमाचितम्। द्यूतप्रवर्तनाख्यानं नारदेन समागमः॥ ततः कुमारमाहात्म्ये पञ्चतीर्थकथानकम्। धर्म्मवर्म्मनृपाख्यानं नदीसागरकीर्तनम् इन्द्रद्युम्नकथा पश्चान्नाडीजङ्घकथाचिता। प्रादुर्भावस्ततोमह्याःकथा दमनकस्य च॥ महीसागरसंयोगः कुमारेशकथा ततः। ततस्तारकयुद्धञ्च नानाख्यानसमाचितम्॥ वधश्च तारकस्याऽथपञ्चलिङ्गनिवेशनम्। द्वीपाख्यानंततःपुण्यंऊर्ध्वलोकव्यवस्थितः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पश्चात् गुप्तक्षेत्रमें अनेक तीर्थों का वर्णन है। और अत्यन्त पवित्रपाण्डवों की कथा और महाविद्या के प्रसाधन का वर्णन है।

फिर तीर्थयात्राकी समाप्ति, अद्भुतरूपसे वर्णितकुमार (कार्त्तिकेय) का अपूर्व चरित्र तथा अरुणाचल के माहात्म्य में सनक और ब्रह्मा की कथा का वर्णन है।

इसकेबाद पार्वतीजी की तपश्चर्या का वर्णन और उन सब तीर्थों का निरूपण फिर आश्चर्यजनक महिषासुरके पुत्रका चरित्र और उसका वध कहा गया है।

तदनन्तर शोणाचल पर पार्वती का तपोवास और नित्यदा का परिकीर्तन इत्यादि स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड में कहा गया है।

दूसरे वैष्णवखण्ड में वर्णित :—

ब्रह्मा जी कहते हैं :—

उस स्कन्दपुराण का दूसरा वैष्णवखण्ड है। उसका कथाख्यान मैं कहता हूँ सुनो :—

सर्वप्रथम वाराह भगवान् के द्वारा पृथ्वी के उद्धार का वर्णन है। जिसमें अनेक पापों के नाशक वेङ्कटगिरि का माहात्म्य कहा गया है फिर लक्ष्मी की पवित्र कथा, श्रीनिवास और उनकी स्थिति का वर्णन है।

ब्रह्माण्डस्थितिमानञ्च वर्करेशकथानकम्। महाकालसमुद्भूतिःकथाचाऽस्यमहाद्भुता
वासुदेवस्य माहात्म्यं कोरितीर्थं ततःपरम्। नानातीर्थसमाख्यानंगुप्तक्षेत्रेप्रकीर्तितम्
पाण्डवानांकथापुण्या महाविद्याप्रसाधनम्। तीर्थयात्रासमाप्तिश्चकौमारसिदमद्भुतम्
अरुणाचलमाहात्म्ये सनकब्रह्मसंकथा। गौरीतपः समाख्यानं तत्तत्तीर्थनिरूपणम्
महिषासुरजाख्यानंवधश्चास्यमहाद्भुतः। शोणाचलेशिवास्थानंनित्यदापरिकीर्त्तितम्
इत्येष कथितः स्कान्दे खण्डो माहेश्वरोऽद्भुतः॥

द्वितीये वैष्णवखण्डे :—

ब्रह्मोवाच

द्वितीयो वैष्णवःखण्डस्तस्याख्यानानि मे शृणु।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यहाँ पर कुलालाख्यान, सुवर्णमुखरीकथा तथा अनेक कथाओं से संयुक्त भारद्वाज की अद्भुत कथा कही गई है। तत्पश्चात् अनन्त कीर्त्ति को देने वाला तथा सम्पूर्ण पापों का संहार करने वाला मतङ्ग और अञ्जना का सम्वाद कहा गया है। इसके वाद उत्कल देश में पुरुषोत्तम का माहात्म्य वर्णित है। फिर मार्कण्डेयमुनि, अम्वरीष राजा, इन्द्रद्युम्न, और विद्यापति के शुभकथाओं का वर्णन है। हे वाड़व! फिर जैमिनि का चरित्र, नारद का वृत्तान्त, नीलकण्ठ का समाख्यान और नरसिंह भगवान् का वर्णन है। पुनः इन्द्रद्युम्न राजा के अश्वमेध की कथा और उसकी ब्रह्मलोक यात्रा, तथा रथयात्रा विधि इसके बाद जन्म-स्नान विधि का वर्णन है।

तत्पश्चात् दक्षिणा मूर्त्ति का प्रसङ्ग तथा गुण्डिचाख्यान वर्णित है, इसके बाद रथरक्षाविधान और शयनोत्सव का वर्णन है।

इसकेबाद ही श्वेतोपाख्यान और वह्न्युत्सव का निरूपण किया गया है। तथा दोलोत्सव नामक भगवान् के वार्षिकव्रत को कहा गया है।

प्रथमं भूमिवाराहं समाख्यानं प्रकीर्त्तितम् ॥
यत्र वोचककुध्रस्य माहात्म्यं पापनाशनम् ।
कमलायाः कथापुण्या श्रीनिवासस्थितिस्ततः ॥

कुलालाख्यानकञ्चाऽत्र सुवर्णमुखरीकथा। नानाख्यानसमायुक्ता भारद्वाज कथाऽद्भुता मतङ्गाञ्जनसम्वादः कीर्तितः पापनाशनः। पुरुषोत्तममाहात्म्यं कीर्तितंचोत्कले ततः मार्कण्डेयसमाख्यानमम्वरीषस्य भूपतेः। इन्द्रद्युम्नस्यचाख्यानंविद्यापतिकथा शुभा जैमिनेः समुपाख्यानं नारदस्याऽपि बाडव!। नीलकण्ठसमाख्यानंनारसिंहोपवर्णनम् अश्वमेधकथा राज्ञोब्रह्मलोकगतिस्तथा। रथयात्राविधिःपश्चाज्जन्मस्नानविधिस्तथा

दक्षिणामूर्त्युपाख्यानं गुण्डिचाख्यानकं ततः।
रथरक्षाविधानञ्च शयनोत्सवकीर्त्तनम् ॥
श्वेतोपाख्यानमत्रोक्तं वह्न्युत्सवनिरूपणम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपरञ्च कामनाओं की प्राप्ति करनेवाले जनों से विष्णु पूजा एवं उद्दालक नियोग का आख्यान मोक्षसाधन व नाना योगों का निरूपण व दशावतार कथा स्नानादि का वर्णन यह उत्कल खण्ड में वर्णित है। इसके बाद बदरिकाश्रम का माहात्म्य जो पापों का नाश करने वाला तथा अग्नि आदि तीर्थों का माहात्म्य वैनतेय शिलामाहात्म्य भगवान् के वासस्थान का कारण कापालमोचनतीर्थ पञ्चधारा एवं मेरुसंस्थापन तीर्थ का वर्णन है।

इसके आगे कार्त्तिकमास माहात्म्य मदनालसमाहात्म्य एवं धूम्रकोशाख्यान का वर्णन है कार्त्तिक मासमें सम्पूर्ण दिनकृत्योंका वर्णन, भुक्ति-मुक्ति एवं कीर्त्तिको देने वाले पञ्चभीष्माख्यान व्रत का माहात्म्य व स्नान का विधान; मार्गशीर्षमाहात्म्य में पुण्ड्रादिकों का कीर्त्तन, मालाधारण का पुण्य, पञ्चामृत स्नान का पुण्य, घण्टा-नादादिकोंका फल, नाना पुष्पोंसे पूजाफल, तुलसी दलका फल, नैवेद्यका माहात्म्य, हरिवासर कीर्त्तन, अखण्डैकादशी का पुण्य तथा जागरण का फल मत्स्योत्सव विधान, नाम माहात्म्य का वर्णन ध्यानादि का पुण्यकथन मथुरामाहात्म्य और मथुरातीर्थ का माहात्म्य वर्णित है।

इसके आगे द्वादशवन-माहात्म्य फिर श्रीमद्भागवत माहात्म्य में अन्तर्लीला का प्रकाशन करने वाला वज्रशाण्डिल्य का सम्वाद वर्णित है। इसके बाद माघ-माहात्म्य जिसमें स्नान दान जप का फल एवं नाना आख्यानों का वर्णन दश

दोलोत्सवो भगवतो व्रतं साम्वत्सराभिधम् ॥
पूजा च कामिभिर्विष्णोरुद्दालकनियोगकः। मोक्षसाधनमत्रोक्तंनानायोगनिरूपणम्
दशावतारकथनं स्नानादिपरिकीर्त्तनम्। ततोबदरिकायाश्च माहात्म्यं पापनाशनम् ॥
अग्न्यादितीर्थमाहात्म्यं वैनतेयशिलाभवम्। कारणंभगवद्वासे तीर्थंकापालमोचनम्
पञ्चधाराभिधं तीर्थं मेरुसंस्थापनं तथा। ततःकार्त्तिकमाहात्म्येमाहात्म्यंमदनालसम्
धूम्रकोशसमाख्यानंदिनकृत्यानिकार्त्तिके। पञ्चभीष्मव्रताख्यानंकीर्त्तिदंभुक्तिमुक्तिदम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अध्याय में किया है। तदनन्तर वैशाखमाहात्म्य में शय्यादानादि का फल, जलदानादिविधि, कामदेवाख्यान, श्रुतदेवचरित्र, व्याध का उपाख्यान, एवं अक्षयतृतीया आदि का विशेष पुण्यवर्णन किया है।

फिर अयोध्यामाहात्म्य में चक्रब्रह्माह्वतीर्थ, ऋणपापविमोक्षाख्यतीर्थ, सहस्रधारातीर्थ, स्वर्गद्वार, चन्द्रहरि व धर्महरिका वर्णन, स्वर्णवृष्टि, तिलोदा, सरयूयुति, सीताकुण्ड, गुप्तहरि, सरयूघर्घरासङ्गम, गोप्रचारतीर्थ, दुग्धोद, गुरुकुण्डादिपञ्चतीर्थ, घोषार्कादितेरहतीर्थ, और गयाकूप का माहात्म्य तथा माण्डव्य आदि आश्रमों का माहात्म्य एवं अजित आदिमानस तीर्थों का वर्णन है इसतरह वैष्णवखण्ड का सुन्दर वर्णन किया गया है।

इस महत्तर कार्य को सम्पादन करने में व्याकरणाचार्य श्री पं० ब्रह्मदत्तजी त्रिवेदी एम० ए० (लक्ष्मणगढ़-सीकर) और शास्त्री श्री रामनाथदाधीच मिश्र पुराण-सांख्य-स्मृतितीर्थ (नवलगढ़-जयपुर) ने परिश्रम किया है। यह संस्था के अभिन्न अङ्ग हैं उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन और धन्यवाद प्रदर्शन उनकी गुरुतर दायिता को लघु बनाने जैसा है।

तद्व्रतस्य च माहात्म्ये विधानं स्नानजं तथा।
पुण्ड्रादिकीर्तनञ्चाऽत्र मालाधारणपुण्यकम् ॥
पञ्चामृतस्नानपुण्यं घण्टानादादिजंफलम्। नानापुष्पार्चनफलं तुलसीदलजम्फलम्
नैवेद्यस्य च माहात्म्यं हरिवासन (र) कीर्तनम्।
अखण्डैकादशीपुण्यं तथा जागरणस्य च ॥
मत्स्योत्सवविधानञ्च नाममाहात्म्यकीर्तनम्।
ध्यानादिपुण्यकथनं माहात्म्यं मथुराभवम् ॥
मथुरातीर्थमाहात्म्यं पृथगुक्तं ततःपरम्। वनानांद्वादशानाञ्चमाहात्म्यं कीर्त्तितं ततः
श्रीमद्भागवतस्याऽत्र माहात्म्यं कीर्तितम्परम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस महान् कार्य के सम्पादन में जो अशुद्धियाँ मानव सुलभ अभिनिवेशादि दोष दृष्टियों से तथा प्रेस के कार्यकर्त्ताओं से अनवधानतावश रह गईं हैं उनके लिये मैं साञ्जलि क्षमा प्रार्थी हूं।

अन्त में, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) की प्रसिद्ध संस्था श्री शारदा सदन पुस्तकालय का मैं साभार कृतज्ञ हूं। यदि श्री वेङ्कटेश्वरप्रेस, बम्बई से मुद्रित ग्रन्थ के अविकल भाग वहाँसे प्राप्त नहीं होते तो तुलनात्मक दृष्टिसे पाठभेदादिमें यथा-शक्ति विशेष कठिनाइयाँ अनुभव होतीं। तदर्थ वहाँ की प्रबन्धकारिणीसमिति के स्थानीय सभापति श्री पण्डित गङ्गाधरजी जोशी साहित्य वेदान्त गणितभूषण, श्रीशारदासदनके पुस्तकालयाध्यक्ष पं० श्री महावीरप्रसादजी जोशी हिन्दी विशारद और सभी पुस्तकालय के सम्मान्य सदस्यों का आभार मानता हूं। हमें आशा है भविष्य में इसीप्रकार विशेष सहायता प्राप्त होती रहेगी तथा उत्साह वर्द्धन किया जाता रहेगा।

वज्रशाण्डिल्यसम्वादमन्तर्लीलाप्रकाशकम् ॥

ततोमावस्यमाहात्म्यंस्नानदानजपोद्भवम्। नानाख्यानसमायुक्तंदशाध्यायेनिरूपितम्

ततोवैशाखमाहात्म्येशय्यादानादिजम्फलम्। जलदानादिविधयःकामाख्यानमतःपरम्

श्रुतदेवस्यचरितं व्याधोपाख्यानमद्भुतम्। तथाक्षयतृतीयादेर्विशेषात्पुण्यकीर्त्तनम् ॥

ततस्त्वयोध्यामाहात्म्ये चक्रब्रह्माह्वतीर्थके। ऋणपापविमोक्षाख्येतथाधारसहस्रकम्

स्वर्गद्वारं चन्द्रहरिर्धर्महर्य्युपवर्णनम् ॥

स्वर्णवृष्टेरुपाख्यानं तिलोदासरयूयुतिः। सीताकुण्डंगुप्तहरिःसरयूर्घर्घराचयः ॥

गोप्रचारञ्च दुग्धोदं गुरुकुण्डादिपञ्चकम्। घोषार्कादीनितीर्थानित्रयोदशततःपरम्

गयाकूपस्य माहात्म्यं सर्व्वाघविनिवर्त्तकम्।

माण्डव्याश्रमपूर्व्वाणि तीर्थानि तदनन्तरम् ॥

अजितादि मानसादितीर्थानिगदितानिच। इत्येषवैष्णवःखण्डोद्वितीयःपरिकीर्तितः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुराणप्रेमी विद्वद्वृन्दसे पुनः अपनी अपूर्णताओंके लिये क्षमाप्रार्थी हूं मैं आशा करता हूं कि इस अमित ज्ञान भाण्डागार महापुराण ग्रन्थराशिका अविकल पारायण कर आप सब जनता जनार्दन की सेवा में अपनी अमूल्य विश्वजनीन ज्ञानविभूति को प्रवचन, भाषण एवं सतत इसी प्रकार की सेवाओं द्वारा ज्ञानवर्द्धन करते हुए यथार्थ में "सर्वभूतहितेरताः" का आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

"कामये दुःखतप्तानाम्प्राणिनामार्त्तिनाशनम्"

शुभमिति मार्गशीर्षशुक्ला ११
गीताजयन्ती भौमवार
२०१७ विक्रमसम्वत्

भवदीय
मनसुखराय मोर
५, क्लाइव रो,
कलकत्ता -१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ स्कन्दपुराणान्तर्गत द्वितीयवैष्णवखण्डस्य

विषयानुक्रमणिका

प्रारभ्यते

—:०*०:—

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
	वेङ्कटाचलमाहात्म्यम्	
१	नारदस्य सुमेरुशिखरस्थयज्ञवराहदर्शनम्	१
,	शेषाचलस्थ सर्वपर्वतातिशायित्ववर्णनम्	३
,,	वेङ्कटाद्रौ पापनाशनतीर्थवर्णनम्	५
,,	श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्यवर्णनम्	७
२	श्रीवाराहमन्त्राराधनविधिवर्णनम्	८
,,	श्रीवाराहमन्त्रेणधर्मादीनां स्वाभीष्टसिद्धिवर्णनम्	६
३	अगस्त्यप्रार्थनया भगवतःसर्वजनदृग्गोचरत्ववर्णनम्	१०
,,	आकाशराजस्य वसुदानोत्पत्तिः	११
४	उद्यानवासिन्याःपद्मावत्याःसमीपे नारदाऽऽगमनम्	१२
,,	नारदोदीरितपद्मावतीशरीरलक्षणवर्णनम्	१३
,,	पद्मिनीदर्शनमनुश्रीनिवासस्यवेङ्कटाद्रौगमनम्	१५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५	पद्मावतीदर्शनेन श्रीनिवासस्य मोहप्राप्तिः	१६
,,	वियद्राजपुरम्प्रति बकुलमालिकागमनम्	१७
,,	बकुलमालिकोक्तिवर्णनम्	१९
६	बकुलमालिकाम्प्रतिसखीनिवेदितपद्मावत्युदन्तवर्णनम्	२०
,,	धरणीप्रश्नेपुलिन्दीप्रतिवचनम्	२१
,,	पद्मावतीनिवेदितभगवद्भागवतयोर्वर्णनम्	२३
७	धरणीदेव्यैबकुलमालिकानिवेदितश्रीनिवासोदन्तवर्णनम्	२४
,,	शङ्खनृपस्यस्वामितीर्थे तपोवनवर्णनम्	२५
,,	शुकेनसहश्रीनिवाससमीपेबकुलायागमनवर्णनम्	२७
८	श्रीनिवासस्यलक्ष्म्यादिकृतपरिणयालङ्कारवर्णनम्	२९
,,	ब्रह्मादीनांविष्णुविवाहमनुस्ववासगमनम्	३१
९	वसुनामकनिषादवृत्तान्तेसुतहननोद्युक्तंतम्प्रतिभगवदुक्तिवर्णनम्	३२
,,	रङ्गेनदिव्योद्यानमण्डपादिनिर्माणवर्णनम्	३३
,,	पञ्चवर्णशुकविषयेतोण्डमन्नृपवर्णनम्	३५
,,	इन्द्रादीन्प्रतिलक्ष्म्यावचनवर्णनम्	३७
१०	तोण्डमन्नृपस्यस्वपितुःसकाशाद्राज्यप्राप्तिवर्णनम्	३८
,,	तोण्डमतेवसुकथितवाराहोदन्तवर्णनम्	३९
,,	गङ्गास्नानागतवरशर्मचरित्रवर्णनम्	४१
,,	कुर्वग्रामस्थभीमाख्यकुलालवृत्तवर्णनम्	४३
११	काश्यपस्यस्वामिपुष्करिणीस्नानेनमहापातकवर्णनम्	४५
,,	परीक्षिन्नृपतिवृत्तान्तवर्णनम्	४७
,,	काश्यपशाकल्यसम्वादवर्णनम्	४९
१२	स्वामिपुष्करिणीस्नानात्तामिस्रादिनरकनिस्तारवर्णनम्	५०
,,	स्वामितीर्थमहिमवर्णनम्	५३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१३	धर्मगुप्तचरित्रवर्णनम्	५४
,,	सिंहर्क्षसम्वादवर्णनम्	५५
१४	सुमत्याख्यद्विजवृत्तान्तकिरातीसङ्गान्महापातकप्राप्तिवर्णनम्	५७
,,	सुमतये ब्रह्महत्यापनोदनोपायवर्णनम्	५६
१५	रामकृष्णतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	६०
,,	कृष्णतीर्थमहत्त्ववर्णनम्	६१
१६	श्रीवेङ्कटाद्रौजलदानप्रसङ्गेहेमाङ्गस्यजलदानाकरणेनगृहगोधिकात्वप्राप्तिवर्णनम्	६२
,,	हेमाङ्गस्य जातिस्मरत्ववर्णनम्	६३
१७	श्रीवेङ्कटाचलक्षेत्रादिवर्णनम्	६५
१८	श्रीवेङ्कटेश्वरवैभववर्णनम्	६७
१६	ब्रह्मादीनां नैरन्तर्येण श्रीवेङ्कटाचलेस्थितिवर्णनम्	६६
,,	वेङ्कटाचलस्यसर्वपर्वतातिशायित्ववर्णनम्	६६
,,	कुलपतिनाशूद्रायोपदेशवर्णनम्	७१
,,	पापविनाशनतीर्थमहत्त्ववर्णनम्	७३
२०	पापविनाशनतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	७५
,,	भूमिदानप्रशंसावर्णनम्	७७
,,	भद्रमतिकृताश्रीविष्णुस्तुतिवर्णनम्	७६
२१	रामानुजाख्यद्विजवृत्तान्तवर्णनम्	८०
,,	रामानुजविप्रेणभगवत्स्तुतिः	८१
,,	भागवतानांलक्षणवर्णनम्	८३
२२	दानार्हसत्पात्रनिर्णयवर्णनम्	८४
,,	पुण्यशीलस्यगर्दभमुखत्वप्राप्तिवर्णनम्	८५
२३	चक्रतीर्थमाहात्म्यवर्णनेपद्मनाभाख्यद्विजवृत्तान्तवर्णनम्	८७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२३	चक्रतीर्थमहत्त्ववर्णनम्	८६
२४	सुन्दराख्यगन्धर्वस्यराक्षसत्त्वप्राप्तिनिवृत्योरुपोद्धातवर्णनम्	६०
,,	वशिष्ठशापानुग्रहवर्णनम्	६१
,,	सराक्षसत्वापनोदनंचक्रतीर्थवर्णनम्	६३
२५	जाबालितीर्थमाहात्म्येकावेरीतीरवासीदुराचाराख्यद्विजोदन्तवर्णनम्	६४
,,	दुराचारविमोक्षणवर्णनम्	६५
२६	तुम्बुरुघोणतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	६६
,,	घोणतीर्थस्नानमहत्त्ववर्णनम्	६७
,,	गन्धर्वेणपत्नीम्प्रतिशापवर्णनम्	६६
,,	घोणतीर्थप्रशस्तिवर्णनम्	१०१
२७	श्रीवेङ्कटाचलस्यसर्वपुण्यतीर्थाधारत्ववर्णनम्	१०२
,,	पुराणश्रवणनामसङ्कीर्त्तनमहत्त्ववर्णनम्	१०३
२८	कटाहतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	१०५
,,	केशवाख्यद्विजवृत्तान्तवर्णनम्	१०७
,,	भरद्वाजद्वाराब्रह्महत्यापनोदनोपायवर्णनम्	१०६
२६	अर्जुनतीर्थयात्रोपोद्धातवर्णनम्	१११
,,	सुवर्णमुखरीमाहात्म्यवर्णनम्	११३
३०	सुवर्णमुखरीवर्णनेऽर्जुनस्य तत्तीरस्थकालहस्तीश्वरादिसेवा-प्राप्तिवर्णनम्	११४
,,	भरद्वाजाश्रमशोभावर्णनम्	११५
३१	सुवर्णमुखरीप्रभावशुश्रूषयाभरद्वाजम्प्रत्यर्जुनप्रश्नवर्णनम्	११७
३२	नद्युत्पादनायाऽगस्त्यम्प्रत्याकाशवाण्युक्तिवर्णनम्	११६
,,	गङ्गारूपायाःसुवर्णमुखर्याभूलोकेगमनवर्णनम्	१२१
३३	सुवर्णमुखरीम्प्रतिशक्रादिस्तुतिवर्णनम्	१२२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३३	सुवर्णमुखरीस्तववर्णनम्	१२३
,,	सुवर्णमुखरीमहत्त्ववर्णनम्	१२५
३४	अगस्त्यतीर्थागस्त्येश्वरयोः प्रभाववर्णनम्	१२७
३५	सुवर्णमुखरीकल्यानदीसङ्गमवर्णनम्	१२६
,,	विष्णुमाहात्म्येतद्वैभववर्णनम्	१३१
,,	विष्णोःसकाशात्सृष्ट्यादिवर्णनम्	१३३
३६	वराहकृतधरण्युद्धरणक्रमेश्वेतवराहावतारवर्णनम्	१३४
,,	मनूनांक्रमशोवर्णनम्	१३५
,,	ब्रह्मणोऽनुरोधेनदिव्यतनुधारणवर्णनम्	१३७
३७	शङ्खाभिधाननृपवृत्तान्तवर्णनम्	१३८
,,	अगस्त्यस्यवेङ्कटाचलागमनवर्णनम्	१३६
३८	अगस्त्यशङ्खादितपस्तुष्टस्य भगवतआविर्भाववर्णनम्	१४१
,,	अगस्त्येनविष्णावचलाभक्तिप्रार्थनवर्णनम्	१४३
,,	श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्यवर्णनम्	१४५
३६	पुत्रार्थमञ्जनाकृततपःप्रकारवर्णनम्	१४६
,,	अञ्जनायैमतङ्गेनपुत्रप्राप्त्युपायवर्णनम्	१४७
४०	व्यासप्रोक्ताकाशगङ्गास्नानकालनिर्णयवर्णनम्	१४६
,,	अध्यायफलश्रुतिवर्णनम्	१५१

पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्रमाहात्म्यम्

१	ब्रह्मप्रार्थनया विष्णोराविर्भाववर्णनम्	१५२
,,	ब्रह्मणाकृतंविष्णुस्तववर्णनम्	१५३
२	ब्रह्मणःपुरुषोत्तमक्षेत्रगमनान्तरं काकमुक्तिपूर्वकंयमस्तुतिवर्णनम्	१५५
,,	लक्ष्मीयमसम्वादवर्णनम्	१५७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३	लक्ष्म्यायमप्रबोधनावसरेमार्कण्डेयकृताभगवत्स्तुतिवर्णनम्	१५८
,,	यमेश्वरमाहात्म्यवर्णनम्	१६१
४	लक्ष्मीयमसम्वादेलक्ष्म्यापुरुषोत्तमक्षेत्रस्यतीर्थराजत्ववर्णनम्	१६२
,,	रोहिणाख्यकुण्डस्यतीर्थत्ववर्णनम्	१६३
,,	तीर्थेऽस्मिन्मूर्त्तीनांस्थापनावर्णनम्	१६५
,,	पुण्डरीकाम्वरीषोद्धारोपायवर्णनम्	१६७
५	ब्राह्मणक्षत्रियपुण्डरीकाम्वरीषाभ्यांविष्णुरूपदर्शनवर्णनम्	१६८
,,	पुण्डरीककृतंभगवत्स्तववर्णनम्	१६९
,,	पुण्डरीकाम्वरीषयोःसगणस्यविष्णोर्दर्शनवर्णनम्	१७१
६	ओढ्र (उत्कल) देशवर्णनम्	१७३
७	मालवाधिपतेरिन्द्रद्युम्नस्यकेनचित्तीर्थाटनव्यग्रेणजटिलेनवार्त्तालापवर्णनम्	१७५
,,	भगवद्दर्शनायविप्रस्यस्यन्दनेप्रयाणवर्णनम्	१७७
,,	भगवद्दर्शनविषये विद्यापतिनाशवरवार्त्ताकरणम्	१७९
८	पुरुषोत्तमक्षेत्रे ब्राह्मणस्यशवरेणसहगमनम्	१८१
,,	ब्राह्मणस्यदिव्यवस्तूनांदर्शनेनाऽऽश्चर्यवर्णनम्	१८३
,,	इन्द्रद्युम्नपुरोहितस्यप्रत्यागमनम्	१८५
९	इन्द्रद्युम्ननृपतेर्विद्यापतिम्प्रतिपुरुषोत्तमक्षेत्रप्रश्नवर्णनम्	१८६
,,	विप्रापादितनिर्माल्यमालाप्रदानवर्णनम्	१८७
,,	विद्यापतिनाप्रथितक्षेत्रमहत्त्ववर्णनम्	१८९
१०	विद्यापतिनेन्द्रद्युम्नायभगवतःपुरुषोत्तमस्यस्वरूपवर्णनम्	१९०
,,	इन्द्रद्युम्नायभगवतोदिव्यरूपवर्णनम्	१९१
,,	विष्णुभक्तिप्रशंसनवर्णनम्	१९३
,,	वासुदेवभक्तलक्षणवर्णनम्	१९५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

११	इन्द्रद्युम्नस्यनारदेनसहपुरुषोत्तमक्षेत्रगमनार्थम्परामर्शवर्णनम्	१६७
,,	नीलाञ्चलगमनायरोजोद्योगवर्णनम्	१६६
,,	राज्ञइन्द्रद्युम्नस्यस्वपरिघरैर्गमनवर्णनम्	२०१
,,	ओढ्रदेशाधिपद्वारेइन्द्रद्युम्नसमादरवर्णनम्	२०३
,,	ओढ्रनृपतिम्प्रतिस्वस्थतावर्णनम्	२०५
१२	नारदेन्द्रद्युम्नसम्वाद एकाम्रकस्थानविषयिणीवार्त्तावर्णनम्	२०६
,,	गौरीकृतंस्नेहगर्भपरुषवाक्यवर्णनम्	२०७
,,	विष्णुमहादेवसम्वादवर्णनम्	२०८
,,	कोटिलिङ्गेशेनेन्द्रद्युम्नम्प्रतिवचनम्	२११
१३	कपोतेशबिल्वेशयोर्माहात्म्यवर्णनम्	२१३
१४	विद्यापतिनासाकंनारदपार्थिवयोर्गमनवर्णनम्	२१५
,,	राज्ञेदारवमूर्त्तिकृतेसमाश्वासनवर्णनम्	२१७
१५	भगवतः पुनराविर्भावशंसिनभोवाण्याराज्ञःप्रसादवर्णनम्	२१८
,,	चतुर्मूर्त्तिधरस्यविष्णोर्दर्शनवर्णनम्	२१६
१६	आद्यमूर्त्तिनृसिंहस्थापनायराजोद्योगवर्णनम्	२२१
,,	इन्द्रद्युम्नकृतनृसिंहस्तववर्णनम्	२२३
,,	नृसिंहदर्शनफलवर्णनम्	२२५
१७	राज्ञइन्द्रद्युम्नस्यसहस्रहयमेधानुष्ठानवर्णनम्	२२६
,,	देवानामावाहनवर्णनम्	२२७
,,	यज्ञेसमागतानांशोभनातिथ्यवर्णनम्	२२६
,,	भगवतासहदक्षपार्श्वेलक्ष्म्यादर्शनवर्णनम्	२३१
१८	अक्षयवटोत्पत्तिवर्णनम्	२३३
,,	मूर्त्तिघटनार्थंवर्द्धकिसमागमवर्णनम्	२३५
१६	विष्णोर्दारुमयमूर्त्याविभाववर्णनम्	२३६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१६	चतुर्ण्णांमूर्त्तीनामाविर्भाववर्णनम्	२३७
२०	इन्द्रद्युम्नकृताभगवत्स्तुतिस्तस्यनाम्नासरोवरोत्पत्तिवर्णनम्	२३६
"	इन्द्रद्युम्नकृतार्चनवर्णनम्	२४१
"	राज्ञोविष्णुप्रीत्यर्थंस्वस्वसमर्पणवर्णनम्	२४३
२१	इन्द्रद्युम्नेनदारुवृक्षेणप्रासादनिर्माणवर्णनम्	२४४
"	भगवत्प्रासादवृद्धिवर्णनम्	२४५
"	नारदेन्द्रद्युम्नसम्वादवर्णनम्	२४७
२२	इन्द्रद्युम्नस्यब्रह्मलोकेनारदेनसहगमनवर्णनम्	२४८
"	राज्ञाब्रह्मणोदर्शनकरणवर्णनम्	२४६
२३	राज्ञाब्रह्मदर्शनवर्णनंब्रह्मवैभवदर्शनञ्च	२५१
"	देवानांब्रह्मदर्शनवर्णनम्	२५३
२४	भूलोकेसमागतदेवैःश्रीविष्णुस्तववर्णनम्	२५५
"	पद्मनिधिस्वागतवर्णनम्	२५७
२५	रथनिर्माणवर्णनम्	२५८
"	रथस्थापनविधिवर्णनम्	२५६
"	विष्णुरथाङ्गभङ्गेजातोत्पातानांवर्णनम्	२६१
२६	इन्द्रद्युम्नद्वाराभगवत्प्रतिष्ठायोजनवर्णनम्	२६२
"	गालेन्द्रद्युम्नयोः सम्वादवर्णनम्	२६३
"	देवानांदिविगच्छतांसम्मर्दवर्णनम्	२६५
२७	इन्द्रद्युम्नद्वाराभगवन्मूर्त्तिचतुष्टयप्रतिष्ठापनवर्णनम्	२६६
"	ब्रह्मकृताभगवत्स्तुतिवर्णनम्	२६७
"	भारद्वाजकृतासर्वदेवपूजावर्णनम्	२६६
२८	भगवतोनृसिंहमूर्त्तिपरिग्रहवर्णनम्	२७१
"	ब्रह्मेन्द्रद्युम्नसम्वादवर्णनम्	२७३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२९	भगवतेन्द्रकृते वरदानम्	२७५
"	नानामासेषुप्रतिमापूजनविधिवर्णनम्	२७७
३०	पञ्चतीर्थमाहात्म्यकीर्तनम्	२७९
"	न्यग्रोधमूलेविष्णोरावाहनवर्णनम्	२८१
"	स्वर्गद्वारतीर्थेन्यासविधिवर्णनम्	२८३
"	बहिःपूजावर्णनम्	२८५
"	सिन्धुराजतीर्थमहत्त्ववर्णनम्	२८७
३१	दारुब्राह्मणः स्नानयात्राविधिवर्णनम्	२८८
"	यात्राकर्तृविधिवर्णनम्	२८९
"	विष्णोःस्नपनमाहात्म्यवर्णनम्	२९१
३२	सदक्षिणामूर्त्तिदर्शनंज्येष्ठपञ्चकादिव्रतकथनम्	२९३
"	ज्येष्ठपञ्चकेदारुब्रह्मणःपूजावर्णनम्	२९५
३३	रथयात्रामहोत्सवविधिकथनम्	२९७
"	महावेदीमहोत्सवमाहात्म्यवर्णनम्	२९९
"	गुण्डिचायात्रायांबीजनादिफलवर्णनम्	३०१
३४	रथयात्रामहोत्सवप्रशंसातत्रश्राद्धविधिवर्णनम्	३०३
"	रथयात्रामहोत्सवप्रशंसावर्णनम्	३०५
३५	भगवतोरथरक्षाविधानवर्णनम्	३०६
३६	भगवतःशयनोत्सववर्णनम्	३०७
"	चातुर्मास्यव्रतवर्णनम्	३०९
३७	दक्षिणायनसङ्क्रान्तिकृत्यवर्णनमुखेनश्वेतमाधवोपाख्यानवर्णनम्	३११
"	श्वेतायवरप्रदानवर्णनम्	३१३
३८	भगवतःप्रसादनिर्माल्यादिमाहात्म्यवर्णनम्	३१४
"	जगन्नाथप्रसादमहिमवर्णनम्	३१५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३८	मध्यदेशभवद्विजोत्तमकथावर्णनम्	३१७
”	भगवन्निर्माल्यग्रहणमहत्त्ववर्णनम्	३१९
”	विष्णोर्निर्माल्यादिमाहात्म्यवर्णनम्	३२१
३९	भगवतः पार्श्वपर्यायणसमुत्सवविधिवर्णनम्	३२२
”	भगवतउत्थापनमहोत्सववर्णनम्	३२३
४०	भगवतोनृसिंहस्यप्रावरणोत्सववर्णनम्	३२६
४१	पुण्यस्नानमहोत्सववर्णनम्	३२८
४२	मकरसङ्क्रमणविधिवर्णनम्	३२९
४३	दोलारोहणमहोत्सववर्णनम्	३३१
”	दोलारोहणविधिवर्णनम्	३३३
४४	सम्वत्सरेप्रतिमासंविष्ण्वादिद्वादशमूर्त्तिपूजनमहोत्सववर्णनम्	३३४
”	साम्वत्सरव्रतविधिवर्णनम्	३३५
४५	दमनकभञ्जिकाविधिवर्णनम्	३३६
४६	भगवत्पूजाविधौदक्षप्रजापतिनाभगवतःप्रार्थनवर्णनम्	३३७
”	दक्षायभगवतावरदानवर्णनम्	३३९
४७	भगवतोनानामूर्तीनांसमाराधनेनविविधफलप्राप्तिवर्णनम्	३४०
”	दारुब्रह्मणोनानामूर्त्तिवर्णनम्	३४१
४८	जैमिनिऋषिसम्वादेराजेन्द्रद्युम्नेनराजाज्ञयाविष्णुपूजाप्रचारवर्णनम्	३४२
	भगवतोविष्णोःपूजावर्णनम्	३४३
४९	पुरुषोत्तमक्षेत्रस्यसाक्षाद्विष्णुस्वरूपत्ववर्णनम्	३४४
”	पुरुषोत्तममहिमवर्णनम्	३४५
५०	मृतस्याऽऽत्मज्ञानलाभादिवर्णनम्	३४७
५१	भगवद्भक्तयोर्विप्रयोरुपाख्यानम्	३४९
५२	भगवद्भक्तविप्रस्यप्राक्परित्यक्तपत्न्यासहसङ्गतिवर्णनम्	३५१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५२	अकस्मात्सुन्दरीदर्शनवर्णनम्	३५३
५३	भगवद्भक्तविप्रस्यवैष्णवज्ञानलाभवर्णनम्	३५५
५४	सागरस्नानादिमाहात्म्यवर्णनम्	३५८
”	सागरेमकरस्नानमाहात्म्यवर्णनम्	३५६
५५	पाखण्डकुलजातस्यकस्यचिद्विष्णुभक्तस्याख्यानवर्णनम्	३६१
”	पितृतारकसत्पुत्रप्रशंसनवर्णनम्	३६१
५६	शास्त्रीयविधिनाश्राद्धकरणवर्णनम्	३६५
५७	अर्द्धोदययोगमाहात्म्यवर्णनम्	३६७
”	अर्द्धोदययोगवैशिष्ट्यवर्णनम्	३६६
५८	पुरुषोत्तमक्षेत्रस्यदशावतारक्षेत्रनाम्नाप्रसिद्धिकारणवर्णनम्	३७१
५६	पुरुषोत्तमप्रीतिसाधकव्रतविशेषवर्णनम्	३७३
६०	श्रीजगन्नाथप्रतिष्ठाविधिवर्णनम्	३७५
”	पुराणश्रवणमाहात्म्यवर्णनम्	३७६

श्रीबदरिकाश्रममाहात्म्यारम्भः

१	बदरिकाश्रमस्यसर्वतीर्थाधिकत्ववर्णनम्	३८१
”	विशालरूपेणबदरीशमहत्त्ववर्णनन्	३८५
२	अग्निकृतभगवत्स्तववर्णनम्	३८६
”	अग्निप्रश्नम्प्रतिव्यासोत्तरवर्णनम्	३८७
३	अग्नितीर्थनारदशिलामार्कण्डेयशिलामाहात्म्यवर्णनम्	३८६
”	नारदशिलाविषयेवरदानवर्णनम्	३६१
”	मार्कण्डेयशिलामाहात्म्यवर्णनम्	३६३
४	गरुडशिलावाराहीशिलानारसिंहीशिलामाहात्म्यवर्णनम्	३६४
”	गरुडायवरदानवर्णनम्	३६५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४	देवस्तुतिप्रसन्नहरिणावरदानवर्णनम्	३६७
५	भगवतोविष्णोःपूजादर्शनादिविषयेविधिवर्णनम्	३६८
”	हरिभक्तिप्रशंसनवर्णनम्	३६६
”	बदरीशधाममाहात्म्यवर्णनम्	४०१
६	ससरस्वतीसरिद्वर्णनम्वसुधारामाहात्म्यकथनम्	४०२
”	ब्रह्मकुण्डतीर्थमहत्त्वकथनम्	४०३
”	वसुधारामाहात्म्यकथनम्	४०५
७	पञ्चधारादितीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	४०७
”	सत्यपदतीर्थवर्णनम्	४०६
”	उर्वशीकुण्डमहत्त्ववर्णनम्	४११
८	मेरुसंस्थापनतीर्थादिधर्मक्षेत्रादिविविधतीर्थान्तमहत्त्ववर्णनम्	४१२
”	लोकपालस्थापनवर्णनम्	४१३
”	अध्यायफलश्रुतिमहत्त्ववर्णनम्	४१५

कार्त्तिकमासमाहात्म्यारम्भः

१	कार्त्तिकमासव्रतप्रशंसनवर्णनम्	४१६
”	कार्त्तिकधर्मवर्णनम्	४१७
”	कार्त्तिकव्रतप्रशंसावर्णनम्	४१६
२	कार्त्तिकव्रतधर्मनिरूपणम्	४२०
”	कार्त्तिकव्रतधर्मवर्णनम्	४२१
३	कार्त्तिकवैभववर्णनम्	४२३
”	अश्वत्थपूजावर्णनम्	४२५
४	कार्त्तिकस्नानविधिनिरूपणम्	४२६
”	कार्त्तिकमासितीर्थानांश्रेष्ठत्ववर्णनम्	४२७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४	कावेरीमहत्त्ववर्णनम्	४२६
५	नित्यकर्मकथनम्	४३१
६	कार्त्तिकव्रतनिरूपणम्	४३३
"	वाराणस्यांकार्त्तिकव्रतफलवर्णनम्	४३५
७	दीपदानमाहात्म्यवर्णनम्	४३७
"	दीपदानविधिमहत्त्ववर्णनम्	४३६
"	राज्ञादीपदानवर्णनम्	४४१
"	दीपदानमाहात्म्यवर्णनम्	४४३
८	तुलसीमाहात्म्यवर्णनम्	४४४
"	हरिमेधसुमेधसोराख्यानवर्णनम्	४४५
"	तुलसीमाहात्म्यवर्णनम्	४४७
६	वत्सद्वादशायमत्रयोदशीनरकचतुर्द्दशीदीपावलीकृत्यवर्णनम्	४४८
"	यमचतुर्द्दशीवर्णनम्	४४६
"	कौमोदिन्यामाहात्म्यवर्णनम्	४५१
"	द्वादश्यादिदीपावलीकृत्यवर्णनम्	४५३
१०	कार्त्तिकदीपावलीमनुशुक्लप्रतिपन्माहात्म्यप्रतिपादनम्	४५४
"	मार्गपालीपूजावर्णनम्	४५५
"	कार्त्तिकशुक्लप्रतिपन्महत्त्ववर्णनम्	४५७
११	सयमद्वितीयामाहात्म्यंविशेषकृत्यवर्णनम्	४५८
"	यमद्वितीयायांभगिनीगृहभोजनमहत्त्ववर्णनम्	४५६
"	यमद्वितीयाप्रशंसावर्णनम्	४६१
१२	धात्रीमाहात्म्यवर्णनम्	४६२
"	धात्रीवृक्षपूजामाहात्म्यवर्णनम्	४६३
"	कार्त्तिकेधात्रीमाहात्म्यवर्णनम्	४६५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१२	धात्रीमाहात्म्यवर्णनम्	४६७
१३	ससत्यभामापूर्वजन्मकथनंप्रयागप्रशंसनम्	४७०
"	शङ्खासुरवृत्तवर्णनम्	४७१
"	प्रयागप्रशंसनवर्णनम्	४७३
१४	जलन्धरोत्पत्तिवर्णनम्	४७४
२५	जलन्धरविजयप्राप्तिवर्णनम्	४७६
"	जलन्धरविजयवर्णनम्	४७७
१६	जलन्धरसदसिनारदागमनवर्णनम्	४७८
"	विष्णुनासागरनिवासवर्णनम्	४७६
१७	जलन्धरोपाख्यानेनारददैत्यसम्वादवर्णनम्	४८०
"	शिवसमीपेराहुप्रार्थनवर्णनम्	४८१
१८	जलन्धरोपाख्यानेरुद्रसेनापराभवर्णनम्	४८३
१६	जलन्धरोपाख्यानेवीरभद्रपतनवर्णनम्	४८५
२०	जलन्धरोपाख्यानेशिवजलन्धरयुद्धवर्णनम्	४८७
२१	जलन्धरोपाख्यानेविष्णुनावृन्दापातिव्रत्यभङ्गवर्णनम्	४८६
२२	जलन्धरोपाख्यानेशिवेनजलन्धरमुक्तिवर्णनम्	४६२
"	देवान्प्रतिशक्तिवाक्यम्	४६३
२३	धात्रीतुलस्युद्भववर्णनम्	४६४
"	धात्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनम्	४६५
२४	धर्मदत्तविप्रेतिहासवर्णनम्	४६६
"	कलहायादुष्कर्मफलवर्णनम्	४६७
२५	धर्मदत्तोपाख्यानेकलहामोक्षकथनम्	४६८
"	गणाभ्यांधर्मदत्तप्रशंसावर्णनम्	४६६
२६	चोलराजविष्णुदासब्राह्मणाख्यानवर्णनम्	५००

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२६	विष्णुदासचोलनृपसम्वादवर्णनम्	५०१
२७	चोलनृपेणसहविष्णुदासब्राह्मणस्यमुक्तिवर्णनम्	५०३
२८	धर्मदत्तमोक्षप्राप्तिवर्णनम्	५०५
२६	धनेश्वरयक्षजन्मप्राप्तिवर्णनम्	५०८
”	कार्त्तिकप्रभावर्णनम्	५०६
३०	दत्तपुण्यपापफलप्राप्तिवर्णनपूर्वकंमासोपवासव्रतविधिकथनम्	५१०
”	दत्तपुण्यपापफलप्राप्तिवर्णनम्	५११
”	मासोपवासव्रतादिविधिवर्णनम्	५१३
३१	कूष्माण्डनवमीतुलसीविवाहविधिवर्णनम्	५१४
”	तुलस्युद्वाहविधिवर्णनम्	५१५
३२	कार्त्तिकेभीष्मपञ्चकव्रतमाहात्म्यवर्णनम्	५१७
”	भीष्मपञ्चकव्रतवर्णनम्	५१६
३३	प्रबोधिन्येकादश्यांसमुत्सवोद्वादशीतिथिकृत्यवर्णनञ्च	५२०
”	प्रबोधिन्येकादशीमाहात्म्यवर्णनम्	५२१
”	प्रबोधमनुद्वादशीतिथिकृत्यवर्णनम्	५२३
३४	व्रतोद्यापनविधिकथनम्	५२४
”	व्रतोद्यापनविधिवर्णनम्	५२५
३५	वैकुण्ठचतुर्दशीत्रिपुरीपूर्णिमाविधानवर्णनम्	५२६
”	वैकुण्ठचतुर्दशीविधिवर्णनम्	५२७
३६	पुष्करिणीसञ्ज्ञिकान्तिमतिथित्रयमाहात्म्यपूर्वकंपुराणश्रवणमहिमवर्णनम्	५२६

मार्गशीर्षमाहात्म्यारम्भः

१	गोपीकृतमार्गशीर्षस्नानकथनम्	५३३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२	त्रिपुण्ड्रधारणविधिकथनम्	५३५
३	गोपीचन्दनादिशङ्खचक्राद्यायुधधारणतत्तन्मुद्राविधिधारण-प्रकारवर्णनम्	५३७
,,	शङ्खचक्रादिधारणमाहात्म्यवर्णनम्	५३८
४	शङ्खपूजाविधिकथनम्	५४१
,,	शङ्खादिपूजनवर्णनम्	५४३
५	पञ्चामृतस्नानमाहात्म्यवर्णनपूर्वकंशङ्खपूजनफलकथनम्	५४५
६	भगवतेतुलसीकाष्ठचन्दनार्पणफलवर्णनम्	५४७
७	जातीपुष्पश्रैष्ठ्यकथनपूर्वकंविष्णुकण्ठेतत्सहस्रपुष्पाङ्कितमाला-स्थापनफलवर्णनम्	५५०
,,	नानाविधपुष्पार्पणफलवर्णनम्	५५१
८	तुलसीपत्रधूपदीपमाहात्म्यवर्णनम्	५५२
,,	भगवतेधूपदानमाहात्म्यवर्णनम्	५५३
९	नैवेद्यविधिकथनम्	५५५
१०	पूजाविधिसमापनंतदुद्यापनंतत्फलवर्णनञ्च	५५७
११	एकादशीमाहात्म्यवर्णनम्	५५९
,,	भरद्वाजेन राज्ञःसम्वादवर्णनम्	५६१
,,	राज्ञःपूर्वजन्मवृत्तान्तवर्णनम्	५६३
१२	सराजपूर्वभववृत्तमखण्डैकादशीविधिवर्णनम्	५६४
,,	अखण्डैकादशीविधिवर्णनम्	५६५
,,	अखण्डैकादश्युद्यापनविधिवर्णनम्	५६७
१३	सषड्विंशतिगुणयुक्तजागरणवर्णनमेकादशीमाहात्म्यम्	५६८
,,	एकादश्यांजागरणफलवर्णनम्	५६९
,,	एकादशीव्रतजागरणफलवर्णनम्	५७१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१४	मत्स्योत्सवमाहात्म्यवर्णनम्	५७२
"	मत्स्योत्सववर्णनम्	५७३
१५	श्रीविष्णुप्रीत्यर्थंदानभोजनादिमहत्त्ववर्णनपुरःसरंश्रीनाममाहात्म्यम्	५७४
"	ब्राह्मणतृप्तिमहत्त्ववर्णनम्	५७५
"	श्रीकृष्णनाममाहात्म्यवर्णनम्	५७७
१६	भगवद्ध्यानपुरःसरंभागवतश्रैष्ठ्यमाहात्म्यवर्णनम्	५७८
"	गुरुलक्षणमहत्ववर्णनम्	५७९
"	भागवतश्रैष्ठ्यवर्णनम्	५८१
१७	मथुरामाहात्म्यवर्णनम्	५८२

भागवतमाहात्म्यारम्भः

१	शाण्डिल्योपदिष्टव्रजभूमिमाहात्म्यवर्णनम्	५८६
"	व्रजभूमिमाहात्म्यवर्णनम्	५८७
२	गोवर्द्धनसमीपेपरीक्षिदादीनामुद्धवदर्शनवर्णनम्	५८९
"	उद्धवदर्शनवर्णनम्	५९१
३	श्रीमद्भागवतमाहात्म्येपरीक्षिदुद्धवसम्वादवर्णनम्	५९२
"	विष्णुनासृष्टिसंरक्षणायभागवतमाहात्म्यवर्णनम्	५९३
"	श्रीमद्भागवतप्रशंसावर्णनम्	५९५
४	श्रीमद्भागवतमाहात्म्येवक्तृश्रोतृश्रद्धावर्णनम्	५९६

वैशाखमासमाहात्म्यारम्भः

१	वैशाखस्नानमाहात्म्यवर्णनम्	६०१
२	वैशाखेनानादानफलमाहात्म्यवर्णनम्	६०२
"	वैशाखेनानाविधदानवर्णनम्	६०३
३	विविधदानमाहात्म्यवर्णनम्	६०४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३	कटकम्बलादिदानवर्णनम्	६०५
४	वैशाखधर्मप्रशंसनवर्णनम्	६०७
५	वैशाखश्रेष्ठत्वनिरूपणम्	६१०
,,	वैशाखश्रेष्ठत्ववर्णनम्	६११
६	जलदानमाहात्म्येगृहगोधिकाख्यानवर्णनम्	६१३
,,	गोधायोनितोराज्ञोमुक्तिर्वैकुण्ठप्राप्तिवर्णनञ्च	६१५
७	सभागवतधर्मनिरूपणंपिशाचमोक्षवर्णनम्	६१६
,,	वैशाखमासेऽन्नजलदानादिमहत्त्ववर्णनम्	६१७
,,	पिशाचमोक्षप्राप्तिकथनम्	६१८
८	दाक्षायण्यपमानेदक्षयज्ञविध्वंसपूर्वकपार्वतीजन्मादिकामदहनवर्णनम्	६२०
,,	सतीशिवसम्वादवर्णनम्	६२१
,,	तारकासुरवधायदेवोद्योगवर्णनम्	६२३
९	रतिविलापानान्तरंकुमारोत्पत्तिप्रसङ्गवर्णनम्	६२५
,,	शङ्करप्राप्त्यर्थंपार्वतीतपश्चर्यावर्णनम्	६२७
,,	शरकाण्डसमीपेषट्कृत्तिकानामागमनम्	६२९
१०	अशून्यशयनव्रतवर्णनपूर्वकंछत्रदानप्रशंसनेहेमकान्तस्यब्रह्महत्यादि-पापशमनवर्णनम्	६३१
,,	हेमकान्तसमीपेत्रितमुनेरागमनवर्णनम्	६३३
११	वैशाखधर्मवर्णनेकीर्त्तिमद्राजविजयवर्णनम्	६३५
,,	वशिष्ठेनकीर्त्तिमन्तम्प्रतिवैशाखधर्मवर्णनम्	६३७
,,	वैशाखधर्मप्रभाववर्णनम्	६३९
,,	कीर्त्तिमद्द्विजयेनयमदुःखवर्णनम्	६४१
१२	यमदुःखनिरूपणम्	६४२
,,	यमेनब्रह्मणःसमीपेस्वदुःखवर्णनम्	६४३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१३	यमदुःखसान्त्वनवर्णनम्	६४५
१४	सत्यनिष्ठतपोनिष्ठयोराख्यानवर्णनम्	६४६
,,	पिशाचत्वनिर्मुक्तिवर्णनम्	६५१
१५	पाञ्चालाधिपतेर्जयप्राप्तिर्दारिद्र्यनाशवर्णनम्	६५२
,,	राज्ञःपूर्वजन्मवृत्तवर्णनम्	६५३
,,	राज्ञे वैशाखोक्तधर्मनिरूपणम्	६५५
१६	पाञ्चालदेशाधिपतेःसायुज्यप्राप्तिवर्णनम्	६५७
,,	पाञ्चालाधिपतिम्प्रतिविष्णुनावरदानवर्णनम्	६५६
१७	दन्तिलकोहलमुक्तिप्राप्तिवर्णनम्	६६१
,,	दन्तिलकोहलवृत्तवर्णनम्	६६३
१८	व्याधोपाख्याने तस्य पूर्वजन्मवृत्तकथनम्	६६५
,,	व्याधस्यपूर्वभवकथावर्णनम्	६६७
,,	व्याधस्यपूर्वजन्मवृत्तवर्णनम्	६६६
१६	शङ्खव्याधसम्वादेपरब्रह्मनिरूपणपूर्वकंवायुशापकथनम्	६७०
,,	देवेषुश्रेष्ठत्वविषयेविवादवर्णनम्	६७१
,,	प्राणश्रेष्ठत्ववर्णनम्	६७३
२०	श्रीभागवतधर्मकथनम्	६७५
,,	सृष्टिक्रमवर्णनम्	६७७
,,	माधवमासेवर्ज्यशाकवर्णनम्	६७६
२१	व्याधोपाख्यानेवाल्मीकेर्जन्मवर्णनम्	६८१
,,	वैशाखमहत्ववर्णनम्	६८३
२२	कलिधर्मनिरूपणेपितृमुक्तिवर्णनम्	६८५
,,	कलिधर्मवर्णनम्	६८७
,,	पितृमुक्तिवर्णनम्	६८८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२२	वैशाखेदर्शमाहात्म्यवर्णनम्	६६१
२३	अक्षयतृतीयामाहात्म्यवर्णनम्	६६२
,,	इन्द्रमन्वेष्टुं देवानामुद्योगवर्णनम्	६६३
२४	शुनीमोक्षप्राप्तिवर्णनम्	६६५
,,	मालिन्याश्चरित्रवर्णनम्	६६७
,,	शुनीयोनिगतायाःक्रन्दनवर्णनम्	६६६
,,	शुनीमोक्षप्राप्तिवर्णनम्	७०१
२५	वैशाखमासमाहात्म्योपसंहारवर्णनम्	७०२
,,	वैशाखेऽन्त्यतिथित्रयमाहात्म्यवर्णनम्	७०३
,,	वैशाखमासफलश्रुतिवर्णनम्	७०५

अयोध्यामाहात्म्यारम्भः

१	विष्णुहरिमाहात्म्यवर्णनम्	७०६
,,	अयोध्यामाहात्म्यवर्णनम्	७०७
,,	व्यासागस्त्यसम्वादवर्णनम्	७०६
,,	विष्णुशर्माणम्प्रतिभगवतोवरदानम्	७११
२	ब्रह्मकुण्डसहस्रधारातीर्थवर्णनम्	७१३
,,	पापमोचनतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	७१५
,,	नागपूजामहत्त्ववर्णनम्	७१७
३	चन्द्रसहस्रव्रतोद्यापनवर्णनम्	७१६
,,	चन्द्रहरिवृत्तवर्णनम्	७२१
,,	चन्द्रसहस्रव्रतोद्यापनविधिवर्णनम्	७२३
४	धर्महरिस्वर्णखनिमाहात्म्यवर्णनम्	७२४
,,	धर्महरिस्थापनमहत्त्ववर्णनम्	७२५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४	कौत्सरघुसम्वादवर्णनम्	१२७
५	सकौत्सवृत्तवर्णनंतिलोदकीमाहात्म्यकथनम्	१२६
६	स्वर्गद्वारगोप्रतारतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	१३१
”	भगवदाविर्भावकारणवर्णनम्	१३३
”	मार्गेचक्रहरितीर्थफलवर्णनम्	१३५
”	सरयूघर्वरसङ्गममहत्त्ववर्णनम्	१३७
”	श्रीरामान्तर्धानवर्णनम्	१३६
”	गोप्रतारतीर्थमहत्त्ववर्णनम्	१४१
”	स्वर्गद्वारगोप्रतारतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	१४३
७	क्षीरोदकादिघोषार्ककुण्डान्तमाहात्म्यवर्णनम्	१४४
”	रुक्मिणीकुण्डमहत्त्ववर्णनम्	१४५
”	धनयक्षतीर्थवर्णनम्	१४७
”	रैभ्यउर्वश्यप्सरसोःसम्वादवर्णनम्	१४६
”	सूर्येणराज्ञोवरदानवर्णनम्	१५१
८	रतिकुण्डमहारत्नतीर्थदुर्भरमहाभरतीर्थेमहाविद्यातीर्थसिद्धपीठ-क्षीरेश्वरसीताकुण्डसुग्रीवतीर्थहनुमत्कुण्डविभीषणसरस्तीर्था-योध्यायायात्राविधिक्रमवर्णनम्	१५२
”	शीतलातीर्थवर्णनम्	१५३
”	सुरगव्याविर्भाववर्णनम्	१५५
६	महाक्षेत्रमाहात्म्यवर्णनम्	१५७
”	गयाकूपपिशाचमोचनमानसतीर्थतमसानदीमाण्डव्याद्याश्रमसीता-कुण्डदुग्धेश्वरभैरवभरतकुण्डजयकुण्डमाहात्म्यवर्णनम्	१५६
”	भैरवक्षेत्रवर्णनम्	१६१
१०	अयोध्यायात्राविधिक्रमवर्णनम्	१६३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१०	यात्राविधानवर्णनम्	७६५
”	अयोध्यायात्राफलश्रुतिवर्णनम्	७६७

श्रीवासुदेवमाहात्म्यारम्भः

१	सावर्णिप्रश्नवर्णनम्	७६९
२	आत्यन्तिकश्रेयःसाधनवर्णनेनारायणनारदसमागमवर्णनम्	७७१
”	नारायणनारदसमागमवर्णनम	७७३
३	श्रीवासुदेवस्यसर्वोपास्यत्वनिरूपणम्	७७४
४	श्वेतद्वीपमुक्तवर्णनम्	७७६
”	श्वेतद्वीपप्रशंसावर्णनम्	७७७
५	उपरिचरवसुसद्गुणवर्णनम्	७७८
६	वेदस्यहिंसापरत्वोक्त्योपरिचरवसोरधःपातवर्णनम्	७८१
”	राज्ञाऋषीणांसस्वादवर्णनम्	७८३
७	उपरिचरवसुमोक्षवर्णनम्	७८४
”	वस्वच्छोदाभ्यांशापवार्त्तावर्णनम्	७८५
८	देवेन्द्रशापवार्त्तावर्णनम	७८७
९	हिंस्रयज्ञप्रवृत्तिहेतुनिरूपणम्	७८९
१०	श्रीवासुदेवप्रसादनिरूपणम्	७९१
”	भगवतादेवेभ्यःसमुद्रमथनार्थकथनम्	७९३
११	अमृतमन्थनेविषोत्पत्तिनिरूपणम्	७९४
”	समुद्रमथनवर्णनम्	७९५
१२	अमृतमन्थनेचतुर्दशरत्नोत्पत्तिवर्णनम्	७९६
”	चतुर्दशरत्नानामुत्पत्तिवर्णनम्	७९७
१३	देवतामृतपानवर्णनम्	७९८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१३	मोहिनीरूपेणामृतपानवर्णनम्	७६६
१४	लक्ष्मीनारायणविवाहोत्सववर्णनम्	८००
,,	लक्ष्म्याअभिषेकवर्णनम्	८०१
,,	समुद्रेणलक्ष्मीप्रदानवर्णनम्	८०३
१५	ब्रह्मादिदेवकृतालक्ष्मीनारायणस्तुतिवर्णनम्	८०५
,,	लक्ष्मीनारायणस्तुतिवर्णनम्	८०७
,,	लक्ष्मीप्रेक्षणेनसर्वेषांसम्पत्तिप्राप्तिवर्णनम्	८०६
१६	गोलोकवर्णनम्	८१०
,,	नारदस्यगोलोकगमनवर्णनम्	८१३
१७	श्रीवासुदेवदर्शनवर्णनम्	८१४
,,	नारदस्यभगवद्दर्शनवर्णनम्	८१५
१८	वासुदेवावतारादिवर्णनम्	८१७
,,	ब्रह्मविष्णुसम्वादवर्णनम्	८१६
१६	नारदनरनारायणसमागमवर्णनम्	८२१
२०	चातुर्वर्ण्यधर्मनिरूपणम्	८२३
,,	नानावर्णधर्मनिरूपणम्	८२५
२१	ब्रह्मचारिधर्मनिरूपणम्	८२७
२२	गृहस्थधर्मनिरूपणम्	८२८
,,	नानापुण्यस्थलीनाम्वर्णनम्	८२६
,,	स्त्रीणांधर्मवर्णनम्	८३१
२३	वनस्थयतिधर्मनिरूपणम्	८३३
,,	वनस्थयतिधर्मवर्णनम्	८३५
२४	ज्ञानस्वरूपनिरूपणम्	८३६
,,	सृष्टेःप्रादुर्भावोपक्रमवर्णनम्	८३७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२४	यज्ञापूर्वकल्पकथनवर्णनम्	८३६
२५	वैराग्यभक्तिनिरूपणम्	८४१
,,	कल्पान्तप्रलयक्रमवर्णनम्	८४३
२६	क्रियायोगाधिकारादिवर्णनम्	८४५
,,	श्रीकृष्णार्चनमाहात्म्यवर्णनम्	८४७
२७	क्रियायोगेपूजामण्डलरचनाविधिवर्णनम्	८४८
,,	भगवतोव्यूहवर्णनम्	८४६
,,	पूजामण्डलस्थदेवतानाम्वर्णनम्	८५१
२८	श्रीराधाकृष्णस्वरूपध्याननिरूपणम्	८५३
,,	श्रीराधाकृष्णस्वरूपध्यानवर्णनम्	८५५
२६	श्रीवासुदेवपूजाविधिनिरूपणम्	८५६
३०	अष्टाङ्गयोगनिरूपणम्	८५६
३१	श्रीनरनारायणस्तुतिनिरूपणम्	८६१
३२	ग्रन्थसम्प्रदायप्रवृत्तिनिरूपणम्	८६३

समाप्ताचेयं स्कन्दमहापुराणान्तर्गतद्वितीयवैष्णवखण्डस्यविषयानुक्रमणिका
इतिविद्वज्जनकृपाभिलाषिणौ लक्ष्मणदुर्गाभिजन (लक्ष्मणगढ-सीकर निवासि) ब्रह्मदत्तत्रिवेदि—नवलदुर्गवास्तव्य (नवलगढ़-जयपुर निवासि) रामनाथदाधीचौ ।

——*:०:*——

शुभमस्तु सताम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीमन्महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

स्कन्दपुराणम्

तस्येदं द्वितीयंवैष्णवखण्डम्प्रारभ्यते

प्रथमोऽध्यायः

तत्राऽऽदौवेङ्कटाचलमाहात्म्यम्

नारदस्यसुमेरुशिखरस्थयज्ञवराहदर्शनम्

व्यास उवाच

पावनेनैमिषारण्ये शौनकाद्या महर्षयः । चक्रिरे लोकरक्षार्थं सत्रं द्वादशवार्षिकम् ॥१

तानभ्यगच्छत्कथको व्यासशिष्यो महामतिः ।

मुनिरुग्रश्रवा नाम रोमहर्षणसम्भवः ॥ २ ॥

सम्यगभ्यर्चितस्तेषांसूतः पौराणिकोत्तमः । कथयामास तद्दिव्यंपुराणंस्कन्दनामकम्

सृष्टिसंहारवंशानांवंशानुचरितस्य च । कथांमन्वन्तराणां च विस्तरात्स न्यवेदयत्

कथास्तीर्थप्रभावाणां श्रुत्वा ते मुनिपुङ्गवाः । ऊचिरे वशिनंसूतंकथाश्रवणकाङ्क्षया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऋषय ऊचुः

रोमहर्षण सर्वज्ञ पुराणार्थविशारदः !। माहात्म्यंश्रोतुमिच्छामोगिरीन्द्राणां महीतले

ब्रूहि त्वं नो महाभाग ! के प्रधाना महीधराः ।

श्रीसूत उवाच

एतमेव पुरा प्रश्नमपृच्छं जाह्नवीतटे । व्यासं मुनिवरश्रेष्ठं सोऽब्रवीन्मे गुरूत्तमः ॥ ७॥

व्यास उवाच

पुरा देवयुगे सूत नारदो मुनिसत्तमः । सुमेरुशिखरं गत्वा नानारत्नसुशोभितम् ॥
तन्मध्येविपुलं दीप्तं ब्रह्मणो दिव्यमालयम् । दृष्ट्वा तस्योत्तरे देशे पिप्पलद्रुममुत्तमम्
सहस्रयोजनोच्छ्रायं विस्तीर्णं द्विगुणंतथा । तन्मूलेमण्डपंदिव्यंनानारत्नसमन्वितम्
पद्मरागमणिस्तम्भैःसहस्रैःसमलंकृतम् । वैडूर्यमुक्तामणिभिःकृतस्वस्तिकमालिकम्
नवरत्नसमाकीर्णं दिव्यतोरणशोभितम् । मृगपक्षिभिराकीर्णं नवरत्नमयैः शुभैः ॥१२
पुष्परागमहाद्वारं सप्तभूमिकगोपुरम् । सन्दीप्तवज्रसुकृतकवाटद्वयशोभितम् ॥ १३॥
प्रविश्याऽसौ ददर्शान्तर्दिव्यमौक्तिकमण्डपम् । वैडूर्यवेदिकं तुङ्गमारुरोह महामुनिः॥
तन्मध्ये तुङ्गमतुलं वसुपादविराजितम् । ददर्श मुक्तास्रङ्कीर्णं सिंहासनं महाद्युति ॥
तन्मध्ये पुष्करंदिव्यंसहस्रदलशोभितम् । श्वेतंचन्द्रसहस्राभंकर्णिकाकेसरोज्ज्वलम्
तस्य मध्ये समासीनं पूर्णचन्द्रायुतप्रभम् । कैलासपर्वताकारं सुन्दरं पुरुषाकृतिम्
चतुर्बाहुमुदाराङ्गं वराहवदनं शुभम् । शङ्खचक्राभयवरान्बिभ्राणं पुरुषोत्तमम् ॥ १८ ॥
पीताम्बरधरं देवं पुंडरीकायतेक्षणम् । पूर्णेन्दुसौम्यवदनं धूपगन्धिमुखाम्बुजम् १९

सामध्वनिं यज्ञमूर्तिं स्रुक्तुण्डं स्रुवनासिकम् ।

क्षीरसागरसङ्काशं किरीटोज्ज्वलिताननम् ॥ २० ॥

श्रीवत्सवक्षसं शुभ्रयज्ञसूत्रविराजितम् । कौस्तुभश्रीसमुद्द्योतं समुन्नतमहोरसम्
जाम्बूनदमयैर्दिव्यैः सुरत्नाभरणैर्युतम् । विद्युन्मालापरिक्षिप्तशरन्मेघमिवोज्ज्वलम् ॥
वामपादतलाक्रान्तपादपीठविराजितम् । कटकाङ्गदकेयूरकुण्डलोज्ज्वलितं सदा ॥
चतुर्मुखवसिष्ठात्रिमार्कण्डेयैर्मुनीश्वरैः । भृग्वादिभिरनेकैश्च सेव्यमानमहर्निशम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रादिलोकपालैश्च गन्धर्वाप्सरसां गणैः । सेवितं देवदेवेशं प्रणिपत्याऽभिगम्य च
दिव्यैरुपनिषद्भागैरभिष्टूय धराधरम् । नारदः परमप्रीतः स्थितो देवस्य सन्निधौ ॥
एतस्मिन्नन्तरेचाभूद्दिव्यदुन्दुभिनिःस्वनः ॥ २७ ॥
ततस्समागता देवी धरणी सखिसंयुता । सरत्नसागराकारदिव्याम्बरसमुज्ज्वला॥
सुमेरुमन्दराकारस्तनभारावनामिता । नवदूर्वादलश्यामा सर्वाभरणभूषिता ॥ २६ ॥
इलया वै पिङ्गलया सखीभ्यां च समन्विता ।
ततस्ताभ्यां समानीतं पुष्पाणां निचयं मही ॥ ३० ॥
श्रीमद्वराहदेवस्य पादमूले विकीर्य च । प्रणम्य देवदेवेशं कृताञ्जलिपुटा स्थिता ॥३१
तां देवीं श्रीवराहोऽपि ह्यालिङ्ग्याऽङ्के निधाय च ॥ ३२ ॥
पप्रच्छ कुशलं पृथ्वीं प्रीतिप्रवणमानसः ॥ ३३ ॥

श्रीवराह उवाच

त्वां निवेश्यमहीदेवि! शेषशीर्षेसुखावहे । लोकंत्वयिनिवेश्यैवत्वत्सहायान्धराधरान्
इहाऽऽगतोऽस्म्यहं देवि ! किमर्थं त्वमिहाऽऽगता ॥ ३४ ॥

पृथिव्युवाच

मां समुद्धृत्य पातालात्सहस्रफणशोभिते । रत्नपीठ इवोत्तुङ्गे सरत्नेऽनन्तमूर्धनि ॥
कृत्वा मां सुस्थिरां देव ! भूधरान्संनिवेश्य च ॥ ३५ ॥
मद्धारणक्षमान्पुण्यांस्त्वन्मयान्पुरुषोत्तम । तेषु मुख्यान्महाबाहो मदाधारान्वदस्व मे

श्रीवराह उवाच

सुमेरुर्हिमवान्विन्ध्योमन्दरो गन्धमादनः । सालग्रामश्चित्रकूटो माल्यवान्पारियात्रकः
महेन्द्रो मलयःसह्यः सिंहाद्रिरपि रैवतः । मेरुपुत्रोऽञ्जनो नाम शैलः स्वर्णमयो महान्
एते शैलवराः सर्वे त्वदाधारा वसुन्धरे । ये मया देवसङ्घैश्च ऋषिसङ्घैश्च सेविताः ॥
एतेषु प्रवरान्वक्ष्ये तत्त्वतः शृणु माधवि !। सालग्रामश्चसिंहाद्रिश्शैलेन्द्रोगन्धमादनः
एते शैलवरा देवि दिशं हैमवतीं श्रिताः । दक्षिणस्यां प्रतीतांस्तुवक्ष्येशैलान्वसुन्धरे
अरुणाद्रिर्हस्तिशैलो गृध्राद्रिर्घटिकाचलः । एते शैलवराः सर्वे क्षीरनद्यास्समीपगाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हस्तिशैलादुत्तरतः पञ्चयोजनमात्रतः । सुवर्णमुखरीनाम नदीनाम्प्रवरा नदी ॥४३॥
तस्या एवोत्तरे तीरे कमलाख्यं सरोवरम् । तत्तीरे भगवानास्ते शुकस्य वरदो हरिः
बलभद्रेण संयुक्तः कृष्णोभक्तार्तिनाशनः । वैखानसैर्मुनिगणैर्नित्यमाराधितोऽमलैः
कमलाख्यस्य सरस उत्तरे काननोत्तमे । क्रोशद्वयार्धमात्रे तु हरिचन्दनशोभिते ॥

श्रीवेङ्कटाचलो नाम वासुदेवालयो महान् ॥ ४६ ॥

सप्तयोजनविस्तीर्णः शैलेन्द्रोयोजनोच्छ्रितः । अस्तिस्वर्णमयोदेवि रत्नसानुभृदायतः
इन्द्राद्या दैवतगणा वसिष्ठाद्यामुनीश्वराः । सिद्धाः साध्याश्चमरुतोदानवादैत्यराक्षसाः

रम्भाद्या अप्सरःसङ्घा वसन्ति नियतं धरे !॥ ४८ ॥

तपश्चरन्ति नागाश्च गरुडाः किन्नरास्तथा ।

एतैरधिष्ठितास्तत्रसरितःपुण्यदर्शनाः । सरांसिविविधान्यत्रसन्ति दिव्यानिमाधवि

तीर्थानाञ्चैव सर्वेषां शृणुष्व प्रवराणि वै ॥ ५० ॥

चक्रतीर्थन्दैवतीर्थं वियद्गङ्गा तथैव च । कुमारधारिका तीर्थस्पापनाशनमेव च ॥

पाण्डवं नामतीर्थञ्च स्वामिपुष्करिणी तथा ॥ ५१ ॥

सप्तैतानि वराण्याहुर्नारायणगिरौ शुभे । एतेषु प्रवरा देवि स्वामिपुष्करिणी शुभा

अस्यास्तु पश्चिमे तीरे निवसामि त्वया सह ।

आस्तेऽस्या दक्षिणे तीरे श्रीनिवासो जगत्पतिः ॥ ५३ ॥

गङ्गाद्यैःसकलैस्तीर्थैःसमासासागराम्बरे । त्रैलोक्येयानितीर्थानिसरांसिसरितस्तथा

तेषां स्वामित्वमापन्नं धरे ! स्वामिसरोवरे ॥ ५४ ॥

स्वामिपुष्करिणींपुण्यांसेवितुंदिव्यभूधरे । वसन्तिसर्वतीर्थानितेषांसंख्यांवदामिते

षट्षष्टिकोटितीर्थानि पुण्येऽस्मिन्भूधरोत्तमे ।

तेषु चात्यन्तमुख्यानि षट् तीर्थानि वसुन्धरे !॥ ५६ ॥

पञ्चानां तीर्थराजानां तुम्बोगर्भसमोमहान् । गर्भवासभयध्वंसी स्नातानाम्भूधरोत्तमे

धरण्युवाच

षट्तीर्थानिमहाबाहो! त्वयोक्तानि महीधरे । माहात्म्यंवदतेषांमे यथाकालंयथाविधि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलानि तेषु स्नातानां नराणाम्वद भूधर !॥ ५८ ॥

श्रीवराह उवाच

नारायणाद्रिमाहात्म्यं वदामि शृणु माधवि । देवाश्चऋषयश्चैव योगिनः सनकादयः

कृतेऽञ्जनाद्रिं त्रेतायां नारायणगिरिं तथा ॥ ६० ॥

द्वापरे सिंहशैलञ्च कलौ श्रीवेङ्कटाचलम् । प्रवदन्तीह विद्वांसः परमात्मालयंगिरिम्

योजनानां सहस्रान्ते द्वीपान्तरगतोऽपि वा । यो नमेद्भूधरेन्द्रंतद्दिशमुद्दिश्यभक्तितः

सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ६२ ॥

तस्मिन्नष्टतीर्थमाहात्म्यं यथाकालम्वदामि ते ॥ ६३ ॥

शृणुष्वावहिताभद्रेसर्वपापप्रणाशनम् । कुम्भसंस्थेरवौमाघे पौर्णमास्याम्महातिथौ

मघानक्षत्रयुक्तायां भूधरेन्द्रे वसुन्धरे । कुमारधारिकानाम सरसी लोकपावनी ॥६५॥

यत्रास्तेपार्वतीसूनुःकार्तिकेयोऽग्निसम्भवः । देवसेनासमायुक्तःश्रीनिवासार्चकोऽमले

तस्यां यः स्नातिमध्याह्नेतस्यपुण्यफलंशृणु । गङ्गादिसर्वतीर्थेषु यः स्नातिनियमाद्वरे

द्वादशाब्दं जगद्धात्रि ! तत्फलं समवाप्नुयात् ।

योऽन्नं ददाति तत्तीर्थे शक्त्या दक्षिणयान्वितम् ।

स तावत्फलमाप्नोति स्नाने तूक्तं फलं यथा ॥ ६८ ॥

मीनसंस्थे सवितरि पौर्णमासीतिथौ धरे । उत्तराफाल्गुनी युक्ते चतुर्थे कालउत्तमे

पञ्चानामपि तीर्थानां तुम्बेऽथ गिरिगह्वरे । यः स्नाति मनुजो देवि पुनर्गर्भे न जायते

अग्निवाहस्थितो भानौ चित्रानक्षत्रसंयुते । पूर्णिमाख्येतिथौपुण्ये प्रातःकालेतथैवच

आकाशगङ्गासरितिस्नातो मोक्षवाप्नुयात् ॥ ७२ ॥

वृषभस्थे रवौ राधे द्वादश्यांरविवासरे । शुक्लेवाप्यऽथवा कृष्णे पक्षेभौमसमन्विते

शुक्ले वाप्यथवा कृष्णे भानुवारेण संयुते । पुष्यनक्षत्रसंयुक्ते हस्तर्क्षेण युतेऽपिवा

तीर्थे पाण्डवनाम्न्यत्र सङ्गवे स्नाति यो नरः । नेहदुःखमवाप्नोति परत्र सुखमश्नुते ॥

शुक्ले पक्षेऽथवा कृष्णे याऽर्कवारेण सप्तमी । पुष्यनक्षत्रसंयुक्ताहस्तर्क्षेणयुतापिवा

तस्यां तिथौ महाभागे पापनाशनसंज्ञके । तीर्थेयःस्नाति नियमाद्भूधरेन्द्रस्य मस्तके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोटिजन्मार्जितैः पापैर्मुच्यते स नरोत्तमः ॥ ७७ ॥

शृणु देवि परब्रह्ममनन्ताख्ये महागिरौ । मद्दिव्यालयवायव्ये शिखरे गिरिगह्वरे ॥

देवतीर्थमितिख्यातं तटाकमतिशोभनम् ॥ ७८ ॥

तस्मिन्पुण्यतमे देवि ! स्नानकालम्वदामि ते ॥ ७९ ॥

गुरुपुष्ये व्यतीपाते सोमश्रवणके तथा । दिनेष्वेतेषु यः स्नाति तस्यपुण्यफलं शृणु

यानि कानीह पापानिज्ञानाज्ञानकृतानिच । तानि सर्वाणिनश्यन्ति देवतीर्थेऽतिपावने

पुण्यान्यपि च वर्धन्ते देवतीर्थनिमज्जनात् । दीर्घमायुरवाप्नोति पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥

अन्ते स्वर्गं समासाद्य चन्द्रलोके महीयते ॥ ८२ ॥

तद्दिनेष्वन्नदो देवि यावज्जीवान्नदो भवेत् । अतिगुह्यतमं देवि प्रोक्तन्तुभ्यं वसुन्धरे

व्यास उवाच

श्रुत्वाऽथ पृथिवी देवी प्रीतिप्रवणमानसा । इष्टाभिर्वाग्भिरतुलं तुष्टाव धरणीधरम्

धरण्युवाच

नमस्ते देवदेवेश! वराहवदनाऽच्युत । क्षीरसागरसङ्काश वज्रशृङ्ग! महाभुज !॥८५ ॥

उद्धृताऽस्मि त्वया देव !कल्पादौ सागराम्भसः ।

सहस्रबाहुना विष्णो ! धारयामि जगन्त्यहम् ॥ ८६ ॥

अनेकदिव्याभरणयज्ञसूत्रविराजित !। अरुणारुणाम्बरधर दिव्यरत्नविभूषित ॥८७॥

उद्यद्भानुप्रतीकाश पादपद्म नमोनमः । बालचन्द्राभ दंष्ट्राग्रमहाबल पराक्रम !॥८८॥

दिव्यचन्दनलिप्ताङ्ग ! तप्तकाञ्चनकुण्डल !। इन्द्रनीलमणिद्योति हेमाङ्गदविभूषित !॥

वज्रदंष्ट्राग्रनिर्भिन्न हिरण्याक्ष महाबल । पुण्डरीकाभिरामाक्ष! सामस्वनमनोहर ॥

श्रुतिसीमन्त भूषात्मन्सर्वात्मंश्चारुविक्रम !। चतुराननशम्भुभ्यां वन्दिताऽऽयतलोचन

सर्वविद्यामयाकार शब्दातीत नमो नमः । आनन्दविग्रहाऽनन्त कालकाल नमोनमः

इति स्तुत्वाऽचला देवी ववन्दे पादयोर्विभुम् ।

वन्दमानां समुद्वीक्ष्य देवः फुल्लविलोचनः ॥ ९३ ॥

उद्धृत्य धरणीं देवीमालिलिङ्गेऽथबाहुभिः । आघ्रायधरणीवक्त्रंवामाङ्केसन्निवेश्यच

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरुह्य गरुडेशानं जगाम वृषभाचलम् । मुनीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानो महीपतिः ॥
स्वामिपुष्करिणीतीरे पश्चिमे लोकपूजिते । आस्ते वराहवदनोमुनीन्द्रैस्तत्रपूजितः
वैखानसैर्महाभागैर्ब्रह्मतुल्यैर्महात्मभिः ॥ ९६ ॥

व्यास उवाच

तं दृष्ट्वा नारदः सूत! मुनीनामुक्तवान्पुरा । तदेतदहमश्रौषं तत्र वै मुनिसंसदि ॥ ९७॥
यत्पृष्टोऽहं त्वयासूतमाहात्म्यंधरणीभृताम् । मया तूक्तं यथावद्धि नारदाच्चपुराश्रुतम्
य इदं धर्मसम्वादमावयोः सूत! पावनम् । पटेद्वा देवपुरतो ब्राह्मणानां पुरस्तथा ॥
सर्वेषामपिवर्णानांशृण्वतांभक्तिपूर्वकम् । स प्रतिष्ठामवाप्नोति पुत्रपौत्रैःसमन्वितः
श्रृण्वतामपि सर्वेषां यदिष्टं तद्भविष्यति ॥ १०१ ॥

सूत उवाच

इति मे भगवान्व्यासःप्रोवाच मुनिसेवितः । यथाश्रुतं मया पूर्वं कृष्णद्वैपायनाद्गुरोः
तत्तथासर्वमेवाऽऽत्र मयाप्युक्तंमुनीश्वराः । श्रुत्वासूतवचस्त्वित्थंते प्रीतमनसोऽभवन्

ऋषय ऊचुः

सूत ! त्वयोक्तं भुवि पर्वतेषु पुण्येषु पुण्यस्य महीधरस्य ।
माहात्म्यमस्माकमहीन्द्रनाम्नः पापापहं मोक्षफलप्रदायकम् ॥ १०४ ॥

ततो वृषाद्रिं सम्प्राप्य वराहोधरणीयुतः । किमुक्तवान्धरण्यै स तन्नो ब्रूहि महामते

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यांसंहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येधरणीवराहसम्वादे नारदस्य सुमेरुशिखरस्थ-यज्ञवराहदर्शनप्राप्त्यादिवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीयोऽध्यायः

श्रीवाराहमन्त्राराधनविधिवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे कथामपुण्यां पुरातनीम् । वैवस्वतेऽन्तरे पूर्वं कृते पुण्यतमे युगे
नारायणाद्रौ देवेशं निवसन्तं क्षमापतिम् । वाराहरूपिणं देवं धरणी सखिभिर्वृता
प्रणम्य परिपप्रच्छ रक्तपद्मायतेक्षणम् ॥ ३ ॥

धरण्युवाच

आराध्यःकेन मन्त्रेणभवान्प्रीतोभविष्यति । तं मे वद त्वं देवेश यःप्रियो भवतःसदा
जपतां सर्वसम्पत्तिकारकं पुत्रपौत्रदम् । सार्वभौमत्वदश्चैव कामिनां कामदं सदा ॥
अन्ते यस्त्वत्पदप्राप्तिं ददाति नियमात्मनाम् । एवम्भूतं वद प्रीत्यामयिवाराहमानद

श्रीसूत उवाच

इति पृष्टस्तया भूम्या प्राह प्रीतिस्मिताननः ।

श्रीवराह उवाच

श्रृणु देवि परं गुह्यं सद्यः सम्पत्तिकारकम् । भूमिदं पुत्रदं गोप्यमप्रकाश्यंकदाचन ॥
किं च शुश्रूषवे वाच्यं भक्ताय नियतात्मने ॥ ६ ॥

ॐ नमः श्रीवराहाय धरण्युद्धरणाय च । वह्निजायासमायुक्तः सदाजप्योमुमुक्षुभिः
अयं मन्त्रो धरादेवि सर्वसिद्धिप्रदायकः । ऋषिः सङ्कर्षणः प्रोक्तोदेवता त्वहमेव हि
छन्दः पङ्क्तिः समाख्याता श्रींबीजं समुदाहृतम् ।
चतुर्लक्षं जपेन्मन्त्रं सद्गुरोर्लब्धतन्मनुः ॥ १२ ॥

जुहुयात्पायसान्नम्वैक्षौद्रसर्पिःसमन्वितम् । अथध्यानम्प्रवक्ष्यामिमनःशुद्धिप्रदायकम्
शुद्धिस्फटिकशैलाभं रक्तपद्मदलेक्षणम् । वराहवदनं सौम्यश्चतुर्बाहुं किरीटिनम् ॥
श्रीवत्सवक्षसं चक्रशङ्खाभयकराम्बुजम् । वामोरुस्थितयायुक्तं त्वया मां सागराम्बरे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रक्तपीताम्बरधरं रक्ताभरणभूषितम् । श्रीकूर्मपृष्ठमध्यस्थशेषमूर्त्यब्जसंस्थितम् ॥

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सदा चाऽष्टोत्तरं शतम् ।
सर्वान्कामानवाप्नोति मोक्षञ्चाऽन्ते व्रजेद् ध्रुवम् ॥ १७ ॥

प्रोक्तंमया ते धरणियत्पृष्टोऽहंत्वयाऽमले । अतः किन्ते व्यवसितम्ब्रूहि तद्विमलानने

श्रीसूत उवाच

एतच्छ्रुत्वा ततो भूमिः पप्रच्छपुनरेवतम् । केनवाऽनुष्ठितन्देव पुराप्राप्तम्फलञ्च किम्
इति पृष्टः पुनर्देवः श्रीवराहोऽब्रवीदिदम् । पुरा कृतयुगे देवि धर्मोनाम मनुर्महान् ॥

ब्रह्मणोऽमुं मनुं लब्ध्वा जप्त्वाऽस्मिन्धरणीधरे ।
माञ्च दृष्ट्वा वरं लब्ध्वा प्राप्तोऽभून्मामकम्पदम् ॥ २१ ॥

इन्द्रोदुर्वाससः शापात्पुराभ्रष्टस्त्रिविष्टपात् । अनेनेष्ट्वाऽत्र मां देवि पुनःप्राप्तस्त्रिविष्टपम्

अन्येऽपि मुनयो भूमे! जप्त्वा प्राप्ताः पराङ्गतिम् ।
अनन्तः पन्नगाधीशो ह्यमुं लब्ध्वाऽथ कश्यपात् ॥ २३ ॥

श्वेतद्वीपे जपित्वैव बभूव धरणीधरः । तस्माज्जप्यः सदा चेह मनुष्यैश्च धरार्थिभिः

श्रीसूत उवाच

एतच्छ्रुत्वाऽथ सुप्रीता पुनः प्राह धराधरम् ॥ २५ ॥

धरण्युवाच

वेङ्कटाख्येमहाशैले श्रीनिवासोजगत्पतिः । कदाह्यायातिदेवेश श्रीभूमिसहितोऽमलः
कथं कल्पान्तरस्थायी भविष्यति जनार्दनः । एतद्ब्रूहि वराहात्मन्महत्कौतूहलं मम

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे श्रीवराहमन्त्राराधनविध्यादि वर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तृतीयोऽध्यायः

अगस्त्यप्रार्थनयाभगवतःसर्वजनदृग्गोचरत्ववर्णनम्

श्रीवराह उवाच

हन्त ते कथयिष्यामि पुरावृत्तं वरानने !। शृणु पुण्यं महादेवि सभविष्यं सहोत्तरम्
वैवस्वतेऽन्तरे देवि! पूर्वे कृतयुगेऽन्तरे । वायोस्तपो महद् दृष्ट्वा श्रीभूमिसहितोऽनघे

आगच्छच्छ्रीनिवासश्च स्वामिपुष्करिणीतटे ॥ २ ॥

दक्षिणेऽस्मिन्पुण्यतम आनन्दाख्यविमानके ।

वसिष्यति च श्रीकान्तो वायोः प्रियकरो हरिः ॥ ३ ॥

तदारभ्य हृषीकेशः सेनान्याराधितोऽनिशम् ।

आकल्पान्तमदृश्योऽस्मिन्विमानेऽसौ वसिष्यति ॥ ४ ॥

धरण्युवाच

अदृश्यो भगवान्मर्त्यैः कथं दृश्यो भविष्यति ॥ ५ ॥

श्रीनिवासोऽपि देवेशो भवद्दक्षिणपार्श्वगः । एतद्वद सुराधीश! जनैराराध्यते कथम्

श्रीवराह उवाच

अगस्त्योऽस्मिन्समासाद्यदृष्ट्वादेवंसनातनम् । आराध्यद्वादशाब्दंतंप्रीणयित्वापुनःपुनः
ययाचे तत्र सान्निध्यंभवान्दृश्योभवत्विति । एवमुक्तोहृषीकेशः श्रीभूमिसहितो धरे

श्रीभगवानुवाच

अहं दृश्यो भविष्यामित्वत्कृते सर्वदेहिनाम् । एतद्विमानंदेवर्षे न दृश्यं स्यात्कदाचन

आकल्पान्तं मुनीन्द्राऽस्मिन्दृश्योऽहं नाऽत्र संशयः ।

मुनिस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रीतः प्रायात्स्वमाश्रमम् ॥ १० ॥

ततश्चतुर्भुजो देवः स दृश्योऽभून्नरादिभिः ।

विमाने मुनिचिन्त्येऽस्मिन्नासिता च तथोत्तरम् ॥ ११ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आराध्यमानः स्कन्देन वायुना सेवितः सदा। एवं गते महाकाले चतुयुगसमन्विते
अष्टाविंशे तु सञ्जाते द्वापरान्ते वसुन्धरे। युद्धे च भारतेऽतीते तिष्ये सतियुगे तथा
विक्रमार्कादयो भूपाःशकाः शूद्रादयस्तथा। गमिष्यन्तिस्वर्गलोकं मामज्ञात्वावरानने
ततः सोमकुलोद्भूतो मित्रवर्मा महारथः। तुण्डीरमण्डले राजा नारायणपुरे वसन्
भविष्यति वरारोहेमहाभाग्योदयो महान्। तस्मिञ्छासतिभूलोकं धर्मेणपृथिवीपतौ
अकृष्टपच्या पृथिवी सर्वसस्यविभूषणा। निरीतिकोऽभवत्सर्वो जनोधर्मसमन्वितः

तस्य पत्नी समभवत्पाण्ड्यकन्यामनोरमा।

तस्य जज्ञे कुलोत्तंसो वियन्नामासुतोऽस्यवै॥ १८॥

तस्य पत्नीतुधरणीनाम्नासीच्छकवंशजा। तस्मिन्राज्यंविनिक्षिप्यमित्रवर्मानृपोत्तमः

ययौ तपोवनं पुण्यं वेङ्कटाद्रेः समीपतः॥ २०॥

आकाशनामा तु महान्राजाऽभूत्सार्वभौमकः। एकदारव्रतो राजाधरणीसक्तचेतनः २१
यज्ञार्थं शोधयामास भुवमारणितीरतः। काञ्चनेन हलेनैव कृष्यमाणे धरातले॥२२॥
बीजमुष्टिं विकिरता दृष्टा कन्या धरोद्गता। पद्मशय्यागता रम्या सर्वलक्षणलक्षिता
तप्तजाम्बूनदमयी पुत्रिकेव विराजती। तां दृष्ट्वा स महीपालो विस्मयोत्फुल्ललोचनः
आदाय तनयाचेयं ममैवेति पुनःपुनः। जहर्ष मन्त्रिभिश्चैनं प्राह वागशरीरिणी॥२५
सत्यं तवैव तनया वर्धयस्व सुलोचनाम्। ततः प्रीतमना राजा स्वपुरं प्रविवेश ह
आहूय धरणीं देवीमिदमाह महीपतिः। देवदत्तामिमां पश्य भूतलादुत्थितां मम

आवाभ्यां तदपुत्राभ्यां पुत्रीयं भविता ध्रुवम्।

इत्युक्त्वा प्रददौ देव्या हस्ते प्रीत्या वियन्नृपः॥ २८॥

तस्यांगृहं प्रविष्टायांधरणीगर्भमादधौ। वियन्नृपश्चसुप्रीतोवीक्ष्यस्निग्धविलोचनाम्

उवाच फलिता सुभ्रूर्लता सान्तानिकी च मे।॥ ३०॥

अथ सा धरणी देवी काले कमललोचना। सुप्रशस्ते मुहूर्ते च स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु

ग्रहेषु सुषुवे पुत्रं मेषस्थे च दिवाकरे॥ ३१॥

देवदुन्दुभयो नेदुःपुष्पवृष्टिर्गृहेऽपतत्। ववौ वायुः सुखस्पर्शस्तज्जन्मदिवसे तदा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुत्रसूतिप्रवक्तॄणां सुप्रीतः पुत्रजन्मनि । सर्वस्वदानमकरोच्छत्रचामरवर्जितम् ॥
कपिलाकोटिदानंचवृषभणां शताधिकम् । दिवसेद्वादशे पुण्येजातकर्मादिकाःक्रियाः
चकार नामधेयं च वसुदान इति स्वयम् ॥३४ ॥

श्रीवराह उवाच

आकाशतनयो देवि वसुदानो मनोरमः । ववृधे दिवसैर्बालः शुक्लपक्ष इवोडुराट् ॥
उपनीतोविनीतोऽसौगुरुभिर्ब्रह्मपारगैः । पितुरस्त्राणिशस्त्राणिमन्त्रवत्सोऽप्यशिक्षत
चतुष्पादं धनुर्वेदं साङ्गोपाङ्गमधीतवान् । पिता तेनाऽतिबलिना दुराधर्षः परैरभूत्
आकाश इव निष्पङ्को ग्रीष्मेभानुमता युतः । वैशाख इव मध्याह्ने दुःसहोदुर्निरीक्षकः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादेऽगस्त्यप्रार्थनयाभगवतः
सर्वजनदृग्गोचरत्वादिवर्णनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः

उद्यानवासिन्याःपद्मावत्याःसमीपेनारदागमनम्

धरण्युवाच

उक्तं भगवता तस्य वियत्पुत्रस्य नाम च ।
अयोनिजायास्तत्पुत्र्याः किं नाम च तदाऽकरोत् ॥१ ॥

श्रीसूत उवाच

इति पृष्टः पुनः प्राह श्रीवराहो जगत्पतिः ॥ २ ॥

श्रीवराह उवाच

आकाशराजो मतिमांस्तां दृष्ट्वा कमलेक्षणाम् ॥ ३ ॥
पद्मिनीति च नाम्ना वै चकार वसुधासुताम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तां तु यौवनसम्पन्नां सखीभिःपरिवारिताम् ॥ ४ ॥
आरामे विहरन्तीं च शुककोकिलानादिते । यदृच्छयाऽऽगतस्तत्रनारदो मुनिसत्तमः
वनलक्ष्मीमिवाऽऽलोक्य विस्मयादिदमब्रवीत् ॥ ६ ॥

नारद उवाच

काऽसि कस्य सुता भीरु ! हस्तं दर्शय मे तव ।
इत्युक्ता सा सुचार्वङ्गी स्वात्मानं मुनयेऽब्रवीत् ॥ ७ ॥
वियद्राजसुता ब्रह्मँल्लक्षणानि वदस्व मे । इत्युक्तः स तदा प्राह नारदो मुनिसत्तमः

नारद उवाच

शृणु त्वं चारुवदने! लक्षणानि वदामि ते । पादौ प्रतिष्ठितौ सुभ्रु रक्तपद्मदलान्वितौ
पादाङ्गुल्यः समा रक्ता रक्ततुङ्गनखान्विताः । गुल्फौ गूढौ समावेतौजङ्घेचारोमशेशुभे
जानुनीसमसुस्निग्धे समावूरू क्रमादुरू । नितम्बौ पृथुलौ पीनौ जघनंचिन्त्यमेव हि
नाभिर्मण्डलवान्निम्नःपार्श्वौते मेदुरावुभौ । त्रिम्वलीललितंमध्यंरोमराजिविराजितम्
स्तनौ पीनौ घनौ स्निग्धावुन्नतौ मग्नचूचुकौ । करौतेरक्तपद्माभौपद्मरेखासमन्वितौ
सुसूक्ष्मौ रक्तसत्पर्व निरन्तरसमाङ्गुली ॥ १३ ॥
शुकतुण्डसमाकारनखपङ्क्तिविराजितौ । दीर्घौच कोमलौ भद्रे भुजौतेपुष्पदण्डवत्
पृष्ठं ते वेदिवद्भाति विलग्नमृजु मध्यमम् । कण्ठस्तु रक्तोदीर्घश्चस्कन्धौचावनतौशुभे
मुखं प्रसन्नं सततमकलङ्कशशिप्रभम् । कपोलौ कनकादर्शसदृशौकुण्डलोज्ज्वलौ॥
तिलपुष्पसमाकारा नासिका ते शुभानने । अकलङ्काष्टमीचन्द्रसदृशोऽतिमनोहरः ॥
दृश्यतेऽयं ललाटस्ते नीलालकसुशोभितः । मूर्धा तेसमवृत्तश्चस्निग्धायतकचान्वितः
स्मितसंशोभिदशनं बिम्बाधरसमन्वितम् ।
मुखं ते विष्णुयोग्यं स्यादिति मे निश्चिता मतिः ॥ १६ ॥
नाभिस्ते दक्षिणावर्त आवर्तइवगाङ्गजः । त्वंहिक्षीराब्धिसम्भूतालक्ष्मीरिवहिदृश्यसे

श्रीवाराह उवाच

इत्युक्त्वा पूजितस्ताभिर्नारदोऽन्तर्दधे तदा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एतच्छ्रुत्वाऽथ तत्सख्यस्तामूचुः पद्मिनीं सखीम् ॥ २१ ॥
वनं गच्छाम? पुष्पार्थं वसन्तःसमुपागतः । कर्णिकाराश्चचूताश्चचम्पकाःपारिभद्रकाः
पलाशाः पाटलाः कुन्दा रक्ताशोकाश्च पुष्पिकाः ।
पद्मिन्यः सिन्धुवाराश्च मालत्यो यूथिका लताः ॥ २३ ॥
कह्लारकरवीराश्च सङ्घर्षादिव पुष्पिताः । पुष्पावचयनं कुर्मो वनेऽस्मिन्सुमनोहरे ॥
इत्युक्त्वा ता वनंजग्मुराकाशतनयायुताः । पुष्पाण्याहरमाणास्तुविचरन्त्यस्ततस्ततः
कश्चिद्गजेन्द्रंददृशुःशुभ्रदन्तद्वयोज्ज्वलम् । गण्डभित्तितलोद्भूतमदधाराढ्ययोज्ज्वलम्
उन्नतं करिणीयूथैः समुपेतं रजोज्ज्वलम् । फूत्कारिपुष्करप्रोद्यच्छीकरापूरिताननम्
दृष्ट्वा चोद्विग्नहृदया वनस्पतिमुपाश्रिताः । एतस्मिन्नन्तरे चाऽऽशु ददृशुर्हयमुत्तमम् ॥
अकलङ्केन्दुधवलं जाम्बूनदपरिष्कृतम् ।
स्फुरद्विद्युल्लतायुक्तशरन्मेघमिवोन्नतम् ॥ २९ ॥
तस्मिंस्तु पुरुषं कृष्णं मदनाकारवर्चसम् । पुण्डरीकदलाकारकर्णान्तायतलोचनम् ॥३०
सुसूक्ष्मक्षौमसंवीतनीलचूलिकयोज्ज्वलम् ।
पद्मरागमणिद्योतिस्फुरत्कुण्डलमण्डितम् ॥ ३१ ॥
सुवर्णरत्नखचितशार्ङ्गदिव्यधनुर्धरम् । अपरेण करेणैव वहन्तं काञ्चनं शरम् ॥ ३२ ॥
पीतकक्षौमसंवीतकटिदेशं सुमध्यमम् । रत्नकङ्कणकेयूरकटिसूत्रविराजितम् ॥ ३३॥
विशालवक्षः संशोभिदक्षिणावर्तसंयुक्तम् । स्वर्णयज्ञोपवीतेनस्फुरत्स्कन्धंमनोहरम्
ईहामृगं समुद्दिश्य महावेगादनुद्रुतम् । तं दृष्ट्वा विस्मिता नार्यः सस्मितास्तस्थुरत्रवै
तं दृष्ट्वा हयमारूढं गजेन्द्रोनम्रमस्तकः । तुण्डमुद्धृत्य गर्जन्वै विनिर्वृत्यययौवनम्
तस्मिन्गतेगजेतत्र हयारूढः समाययौ । ईहामृगं विचिन्वानः पुष्पलावीसमीपतः
ताः समेत्य स चोवाच तुरगोपरिसंस्थितः । अत्रागतोमृगःकश्चिदीहामृगइतीरितः
दृष्टो वा भवतीभिः स ब्रूत मे कन्यका इति ॥ ३९ ॥

श्रीवराह उवाच

प्रत्यूचुस्तास्तु तं कन्या दृष्टोऽस्माभिर्न कश्चन ॥ ४० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभगवानुवाच

प्रीतोऽस्मि शङ्ख ! भक्त्याते वृणीष्वाऽभीप्सितं वरम्।
ददामि वरदोऽहं ते कृशिष्ठस्य तपस्यतः ॥ ६१ ॥

शङ्ख उवाच

न याचेऽन्यन्महावाहो ! त्वत्पादाम्वुजसेवनात् ।
यास्प्राप्नुवन्ति त्वद्भक्तास्तां याचे गतिमुत्तमाम् ॥ ६२ ॥

श्रीभगवानुवाच

यत्प्रार्थितं त्वया शङ्ख! तत्तथैव भविष्यति । मत्सेवायोगभव्यानामलभ्यंकिमुविद्यते
आकल्पमिन्द्रलोकस्थो ह्यप्सरोगणसेवितः ।
भुक्त्वा बहुविधान्भोगांस्ततो मल्लोकमेष्यसि ॥ ६४ ॥
एवं ददौ वरानिष्टाञ्छङ्खाय पृथिवीपते !। नारायणो जगद्योनिर्भजतां कल्पभूरुहः ॥
ततो ब्रह्मादिकान्सर्वान्विसृज्य कमलेक्षणः । संस्तूयमानसैर्भक्तयातत्रैवाऽन्तर्दधेप्रभुः

भरद्वाज उवाच

वेङ्कटाद्रेःप्रभावोऽयमाख्यातोभवतेऽर्जुन !। नराःपापैः प्रमुच्यन्तेश्रुत्वेमांपावनींकथाम्
वाराहंरूपमुत्सृज्यब्रह्मणाऽभ्यर्थितोहरिः । मुमोदाऽत्राऽद्भुताकारोमायया मोहयञ्जगत्
पश्चादगस्त्यशङ्खाभ्यां प्रार्थितः सुखदर्शनम् । ददौनितान्तसुभगंशान्तंभोगात्मकंवपुः
नारायणंवेङ्कटाद्रिस्वामिपुष्करिणींतथा । इमामाख्यांचसंस्मृत्यमुच्यन्तेपातकैर्जनाः
वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डेनास्तिकिञ्चन । वेङ्कटेशसमोदेवो न भूतो न भविष्यति
वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं न भूतं न भविष्यति । स्वामितीर्थसरस्तुल्यंनकुत्रापिचविद्यते
प्रातरुत्थाय ये नित्यंवेङ्कटेशं स्मरन्ति वै। तेषांकरस्थामोक्षश्रीर्नात्रकार्याविचारणा
स्वामिपुष्करिणीतीर्थे स्नात्वा सर्वात्मकं हरिम् ।
ये वा पश्यन्ति नियता वराहाचलवासिनम् ॥ ७४ ॥
तेऽश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च । प्राप्नुवन्ति फलं पूर्णं नाऽत्रकार्या विचारणा
वेङ्कटाचलमाहात्म्यं येश्रृण्वन्ति नरोत्तमाः । तेषाम्मुक्तिश्चभुक्तिश्च इह लोके परत्र च

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वेङ्कटाचलमाहात्म्यं संक्षिप्य कथितं तव । अतः परं महानद्याः प्रभावःकथ्यतेऽर्जुन

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायामगस्त्यशङ्खादितपस्तुष्ट-श्रीवेङ्कटेशाविर्भावादिमाहात्म्यवर्णनंनामाऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः

पुत्रार्थमञ्जनाकृततपःप्रकारवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

पुत्रहीनाऽञ्जना पूर्वं दुःखितातपसि स्थिता । तांदृष्ट्वामुनिशार्दूलोमतङ्गोविष्णुतत्परः
अञ्जनाख्यामुवाचेदमत्युग्रे तपसि स्थिताम् ॥ २ ॥

मतङ्ग उवाच

समुत्तिष्ठाऽञ्जने देवि! किमर्थं तपसि स्थिता । वद देवि! महाभागेकार्यं तव वरानने

अञ्जनोवाच

मतङ्ग मुनिशार्दूल ! वचनं मे शृणुष्व ह ।
पिता मे केसरी नाम राक्षसः शिवतत्परः ॥ ४ ॥

शैवं घोरं तपश्चक्रे पुत्रार्थं तु सुदुष्करम् । पार्वतीसहितः शम्भुर्वृषभोपरि संस्थितः
प्रादुरासीत्तदा देवो ददौ तस्मै वरं शुभम् ॥ ६ ॥

शम्भुरुवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामिविधिना निर्मितं तव । अस्मिञ्जन्मन्यपुत्रत्वंतथाप्यन्यद्ददामिते
विश्रुता सर्वलोकेषु पुत्री तव भविष्यति ।
तस्याः पुत्रो महाबुद्धिस्तव प्रीतिं करिष्यति ॥ ८ ॥

इति तस्मै वरं दत्त्वा तत्रैवाऽन्तर्दधे हरः । मां लब्ध्वामत्पिताविप्रःकृतकृत्योबभूवह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततःकालान्तरे विप्रः केसर्याख्यो† महाकपिः । ययाचेमांददस्वेतिपितरंमेततःपिता
तस्मै मां दत्तवांश्चैव पारिबर्हं ददौ च सः । गवां लक्षसहस्राणि गजलक्षं महामनाः
वाजिनामर्बुदं चैव रथानामर्बुदं तथा । वस्त्ररत्नान्यनेकानि दासदासीसहस्रकम् ॥१२
अन्तः पुरचरीर्नारीर्नृत्यगीतविशारदाः । ददौ वासःसहस्रं च मया साकं महामते ॥
पत्या मे रममाणायाभूयान्कालोगतो मुने !। अपुत्राद्दुःखिताविप्रव्रतानिविविधानिच
कृतानिच मयातत्रकिष्किन्धायांमहापुरि । माघेमासिचविप्रेन्द्र! वैशाखेकार्त्तिकेतथा
स्नानदानव्रतादीनि चातुर्मास्यव्रतं तथा । नमस्कारस्तथा विप्र प्रदक्षिणमनुत्तमम् ॥
शालग्रामान्नदानानि दीपदानं तथैव च । गोदानं तिलदानं च वस्त्रदानं महामुने ॥१७
भूदानंवारिदानंचदत्त्वापुष्पादिकंमुने !। यानियानिचमुख्यानिवैष्णवानि व्रतानि च ।
मया कृतानि सर्वाणि सत्पुत्रफलकाङ्क्षया ॥ १८ ॥
श्रवणादिषु यत्प्रोक्तं व्रतं विप्रैर्महात्मभिः । मया कृतश्च विप्रेन्द्र वैशाखेकार्तिके तथा
यानियानिचमुख्यानिफलानिविविधानिच । मयादत्तानिसर्वाणिसत्पुत्रफलकाङ्क्षया
मया कृतान्य संख्यानिव्रतानि विविधानि च ।
पुत्रं तथाप्यलब्ध्वाऽहं दुःखिता तपसि स्थिता ॥ २१ ॥
भविष्यति कथं विप्र! पुत्रस्त्रैलोक्यविश्रुतः । याचेऽहं तु मुनिश्रेष्ठ प्रणताचतवाऽग्रतः
वद त्वं मुनिशार्दूल ! दीनाऽहं तपसि स्थिता ॥ २३ ॥

श्रीसूत उवाच

एवं वदन्तीं तां प्राह मतङ्गो मुनिसत्तमः । शृणु मद्वचनं देवि! पुत्रपौत्रप्रदायकम् ॥
इतो दक्षिणदिग्भागे दशयोजनदूरतः । घनाचल इति ख्यातो नृसिंहस्य निवासभूः
तस्योपरि महाभागे ब्रह्मतीर्थं मनोहरम् । तस्याऽपि पूर्वदिग्भागे दशयोजनमात्रतः॥
सुवर्णमुखरी नाम नदीनां प्रवरा नदी । तस्या एवोत्तरे भागे वृषभाचलनामतः ॥२७

---

† एतेन—अञ्जनायाः पिता केसरीनाम राक्षस, अञ्जनायाः पतिः केसरीनामवानरश्च इति केसरीत्यभिधाश्वशुरजामात्रोः राक्षसावनरयोः समानैवाऽऽसीत् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्याऽग्रेसरसिनाम्नास्वामिपुष्करिणीशुभा। गत्वाद्गृष्ट्वाशुभंतोयंमनःशुद्धिंगमिष्यसि
तत्र स्नात्वा विधानेन वराहं तम्प्रणम्य च। वेङ्कटेशं नमस्कृत्य ततो गच्छ वरानने!॥
उत्तरेस्वामितीर्थस्य सिंहशार्दूलसंयुते। चूतपुन्नागपनसैर्बकुलामलकैः शुभैः॥ ३०॥
चन्दनागुरुनिम्बैश्च तालहिन्तालकिंशुकैः। कपित्थाश्वत्थबिल्वैश्चइङ्गुदैश्च वरानने
एतादृशैर्महापुण्यैर्वृक्षैश्च विविधै शुभैः। वियद्गङ्गेति विख्यातं तीर्थमेकं विराजते

तस्मिंस्तीर्थेऽञ्जने देवि ! सङ्कल्पविधिपूर्वकम्।

स्नात्वा पीत्वा शुभं तीर्थं तीर्थस्याऽभिमुखी स्थिता॥ ३३॥

वायुमुद्दिश्य हे! देवि! तपः कुरु वरानने !। देवैश्च राक्षसैर्विप्रैर्मनुजैर्मुनिसत्तमैः॥
भृङ्गैः पक्षिभिरस्त्रैश्च शस्त्रैश्च विविधैः शुभैः। अवध्यो भवितापुत्रस्तपसातेनसंशयः

श्रीसूत उवाच

इति प्रोक्ताऽञ्जनादेवी तम्प्रणम्य पुनः पुनः। भर्त्रा साकंययावाशुवेङ्कटाचलसञ्ज्ञकम्

कापिलं तीर्थमासाद्य स्नात्वा निर्मलमानसा।

वेङ्कटाद्रिं समारुह्य स्वामिपुष्करिणीं ययौ॥ ३७॥

स्नात्वा वराहमानम्य वेङ्कटेशकृतानतिः। मतङ्गस्य ऋषेर्वाक्यं स्मरन्ती च मुहुर्मुहुः

वियद्गङ्गां ययावाशु चाऽञ्जना मञ्जुभाषिणी।

स्नात्वा पीत्वा शुभं तोयं तीरे तस्यतदुन्मुखी॥ ३६॥

प्राणवायुं समुद्दिश्य तपश्चक्रे यतव्रता। फलाहारा जलाहारा निराहारा ततः परम्॥
सहस्राब्दं तपश्चक्रे न्यस्तनासाग्रदृष्टिका। वयस्या विपुला नाम शुश्रूषामकरोच्छुभा
वर्षाणांचसहस्रान्ते वायुर्देवो महामतिः। प्रादुरासीत्तदा तां वै भाषमाणो महामतिः
मेषसङ्क्रमणं भानौ सम्प्राप्ते मुनिसत्तमाः। पूर्णिमाख्येतिथौ पुण्येचित्रानक्षत्रसंयुते
तवेप्सितमहं दास्ये वरं वरय सुव्रते!। इति तद्वचनं श्रुत्वा ततः प्राहाऽञ्जना सती॥
पुत्रं देहि महाभाग! वायो देव महामते। तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा मातरिश्वाऽब्रवीत्ततः
पुत्रस्तेऽहंभविष्यामिख्यातिंदास्येशुभानने। इतितस्यैवरंदत्त्वातत्रैवाऽऽस्तेमहाबलः

तदा ब्रह्मादयो देवा इन्द्राद्या लोकपालकाः।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वसिष्ठाद्या महात्मानः सनकाद्याश्च योगिनः ॥ ४७ ॥
व्यासादयश्च विप्रेन्द्रा लक्ष्म्या साकं जगत्पतिः ।
मुनिपत्न्यो देवपत्न्य ऋषिपत्न्यस्तथैव च ॥ ४८ ॥
स्वंस्वंवाहनमारुह्यदारभृत्यसुतादिभिः । आगतास्तेमहामानोद्रष्टुंतांतपसिस्थिताम्
आश्चर्यमाश्चर्यमिति ब्रुवाणा ब्रह्मादयो देवगणाश्च सर्वे ।
आलोकयन्तो दिवि दूरतस्ते स्थितास्तदा ब्रह्ममहेशमुख्याः ॥ ५० ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये अञ्जनातपःकरणप्रकारादिवर्णनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः

चत्वारिंशोऽध्यायः

व्यासप्रोक्ताकाशगङ्गास्नानकालनिर्णयवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

अञ्जनाऽपि वरं लब्ध्वाभर्त्रा साकंमुमोद ह । ब्रह्मादीनागतान्दृष्ट्वाविस्मयाविष्टमानसा
पत्या साकं ततः स्वस्था चाऽञ्जना मञ्जुभाषिणी ।
ब्रह्मादिभिरनुज्ञातो व्यासो वेदविदाम्वरः ॥ २ ॥
अञ्जनां तामुवाचेदं मेघगम्भीरया गिरा ॥ ३ ॥
अञ्जने ! शृणुमद्वाक्यंसर्वलोकोपकारकम् । मतङ्गस्य ऋषेर्वाक्यं श्रुत्वानिमलचेतसा
यस्मात्तु वेङ्कटं गत्वा तपः कृत्वा सुदुष्करम् ।
प्रसूयते त्वया पुत्रः शूरस्त्रैलोक्यविक्रमः ॥ ५ ॥
इदं तीर्थोत्तमं तस्मात्प्रत्यक्षदिवसे तव । गङ्गाद्यानिच तीर्थानि समायान्ति जगत्त्रये
वेङ्कटाद्रिसमं तीर्थं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन ।
तत्राप्यत्यन्तपुण्या वै स्वामिपुष्करिणी शुभा ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततोऽधिकमिदं तीर्थं प्रत्यक्षंदिवसेतव । स्नानार्थं ये समायान्ति चित्राऋक्षसमन्विते

मेषं पूषणि सम्प्राप्ते पूर्णिमायां शुभे दिने ।

शृणु तेषां फलं देवि ! वक्ष्यामि तव सुव्रते !॥ ६ ॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेषु द्वादशाव्दं वरानने !। यत्फलं विद्यते देवि ! तत्फलं भवति ध्रुवम्

दानानि कुर्वतांपुंसां तेषाशृणुफलोन्नतिम् । स्थानेतूक्तं फलंदेविविद्धितेषां वरानने

अञ्जनोवाच

कार्याणि यानि दानानि वेङ्कटाद्रौ नगोत्तमे । तानिसर्वाणि विप्रेन्द्रवदवेदविदाम्वर!

व्यास उवाच

अन्नदानं वस्त्रदानं द्वयमेतत्प्रशस्यते । पितुः श्राद्धं विशेषेण वेङ्कटाद्रौ नगोत्तमे ॥

सुवर्णं ये प्रयच्छन्ति प्रीतये मधुघातिनः ।

सर्वलोकं समासाद्य मोदन्ते मुनिसत्तमाः ॥ १४ ॥

शालग्रामशिलादानं ये कुर्वन्ति नगोत्तमे । अङ्गभङ्गमवाप्नोति स्वानुभूतिं च विन्दति

यो ददाति द्विजेन्द्रायगोदानं चकुटुम्बिने । रोमसङ्ख्याप्रमाणेनविष्णुलोकेविराजते

भूमिं ददाति यो देवि! ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ।

तस्य पुण्यफलं वक्तुं कः शक्तो दिवि वा भुवि ॥ १७ ॥

कन्यांददातियो देवि! श्रोत्रियायद्विजातये । विष्णुलोकंसमासाद्यमोदतेपितृभिःसह

प्रपां कुर्वन्ति ये देवि शीतलोदकसंयुताम् । तेषां पुण्यफलं वक्तुंशेषेणाऽपिनशक्यते

तिलं ददाति विप्राय श्रोत्रियायकुटुम्बिने । सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति

धान्यदानं प्रशंसन्ति विप्रा वेदविदाम्वराः ।

वहुपुत्रा भविष्यन्ति धान्यदानं प्रकुर्वताम् ॥ २१ ॥

गन्धचम्पकपुष्पादीञ्छत्रव्यजनचामरान् । ताम्बूलवनसारादीन्यो ददाति द्विजातये ॥

भुक्त्वा भोगं चिरं कालं स्वर्गलोकं ततो व्रजेत् ।

दिव्यवर्षसहस्रञ्च भुक्त्वा भोगाननेकशः ॥ २३ ॥

सार्वभौमस्ततो भूत्वा तत्र भुक्त्वाचिरंमहीम् । ततोविप्रत्वमासाद्यवेदवेदान्तपारगः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततो मुक्तिं समायाति प्रसादाच्चक्रपाणिनः । इत्येतत्कथितं देवि वेङ्कटाचलवैभवम्
य एतच्छृणुयान्नित्यंयश्चापिपरिकीर्तयेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति
इत्येतत्कथितंपूर्वं व्यासेनैव महात्मना । शृणुयाद्वा पठेद्वाऽपि कृतकृत्यो भविष्यति
तस्यैव वंशजाः सर्वे मुक्तिं यान्ति न संशयः ॥ २८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येऽञ्जनावरलब्ध्याकाशगङ्गास्नानकालनिर्णयादिवर्णनंनाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

समाप्तमिदं स्कान्दपुराणान्तर्गतं श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्यम् ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे द्वितीये वैष्णवखण्डे प्रथमोभूमिवाराहखण्डः समाप्तः ॥

——:०:——

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

* श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय नमः *

अथ स्कन्दपुराणस्थ वैष्णवखण्डे

द्वितीयमुत्कलखण्डम्

पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्रमाहात्म्यम्

प्रथमोऽध्यायः

ब्रह्मप्रार्थनया विष्णोराविर्भाववर्णनम्

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

मुनय ऊचुः

भगवन्सर्वशास्त्रज्ञ! सर्वतीर्थमहत्त्ववित् । कथितं यत्त्वया पूर्वं प्रस्तुते तीर्थकीर्तने ॥

पुरुषोत्तमाख्यं सुमहत्क्षेत्रं परमपावनम् ॥ २ ॥

यत्राऽऽस्ते दारुतनुः श्रीशोमानुषलीलया । दर्शनान्मुक्तिदः साक्षात्सर्वतीर्थफलप्रदः

तन्नो विस्तरतोब्रूहितत्क्षेत्रंकेननिर्मितम् । ज्योतिःप्रकाशोभगवान्साक्षान्नारायणःप्रभुः

कथं दारुमयस्तस्मिन्नास्ते परमपूरुषः । वद ,त्वं वदतांश्रेष्ठ! सर्वलोकगुरो मुने !॥

श्रोतुमिच्छामहे ब्रह्मन्परं कौतूहलं हि नः ।

जैमिनिरुवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे रहस्यं परमं हि तत् ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवैष्णवानां श्रवणे भक्तिस्तत्र न जायते । यस्य सङ्कीर्तनादेव सकलं लीयते तमः
यद्यप्येष जगन्नाथः सर्वगःसर्वभावनः । स्कन्देनकथितं पूर्वं श्रुत्वाशम्भोर्मुखाम्बुजात्

सन्ति क्षेत्राणि चाऽन्यानि सर्वपापहराणि वै ॥ ८ ॥

एतत्क्षेत्रंपरंचाऽस्यवपुर्भूतंमहात्मनः । स्वयंवपुष्मांस्तत्रास्तेस्वनाम्नाख्यापितंहितत्
तत्र ये स्थातुमिच्छन्ति तेपिसर्वेहतांहसः । किंपुनस्तत्रतिष्ठन्तोयेपश्यन्तिगदाधरम्
अहोतत्परमंक्षेत्रं विस्तृतं दशयोजनम् । तीर्थराजस्य सलिलादुत्थितं वालुकाचितम्
नीलाचलेनमहतामध्यस्थेनविराजितम् । एकस्तनमिव पृथ्व्याः सुदूरात्परिभावितम्
वाराहरूपिणापूर्वंसमुद्धृत्यवसुन्धराम् । सर्वतः सुसमां कृत्वापर्वतैःसुस्थिरीकृताम्

सृष्ट्वा चराचरं सर्वं तीर्थानि सरिदब्धिकान् ।

क्षेत्राणि च यथास्थानं संनिवेश्य यथा पुरा ॥ १४ ॥

ब्रह्मा विचिन्तयामासस्सृष्टिभारनिपीडितः । पुनरेतां क्रियांगुर्वीं नारभेयकथन्त्विति
तापत्रयाभिभूताहि मुच्यन्ते जन्तवःकथम् । एवं चिन्तयमानस्यमतिरासीत्प्रजापतेः

मुक्त्यैककारणं विष्णुं स्तोष्येऽहं परमेश्वरम् ।

ब्रह्मोवाच

नमस्ते जगदाधार ! शङ्खचक्रगदाधर ॥ १७ ॥

यन्नाभिपङ्कजादेव जातोऽहं विश्वसृष्टिकृत् । परमार्थस्वरूपं ते त्वं वै वेत्सिजगन्मय
यन्माययाजगत्सर्वंनिर्मितंमहदादिकम् । यन्निःश्वाससमुद्भूतं शब्दब्रह्म त्रिधाऽभवत्
उपजीव्यतदेवाऽहमसृजम्भुवनानि वै । त्वत्तोनाऽन्यः स्थूलसूक्ष्मदार्घह्रस्वादिकिञ्चन
विकारभेदैर्भगवंस्त्वमेवेदं चराचरम् । कटकादि यथा स्वर्णं गुणत्रयविभागशः ॥२१
स्रष्टासृज्यंत्वमेवाऽत्रपोष्टापोष्यञ्जगत्प्रभो । आधारो ध्रियमाणश्चच धर्ता त्वंपरमेश्वर

त्वत्प्रेरितमतिः सर्वश्चरते च शुभाऽशुभम् ।

ततः प्राप्नोति सदृशीं त्वयैव विहितां गतिम् ॥ २३ ॥

जगतोऽस्य गतिर्भर्त्ता साक्षी त्वं परमेश्वर !। चराचरगुरो ! सर्वजीवभूतकृपामय !

प्रसीदाऽऽद्यजगन्नाथ! नित्यं त्वच्छरण्यस्य मे ॥ २४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

* श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय नमः *

अथ स्कन्दपुराणस्थ वैष्णवखण्डे

द्वितीयमुत्कलखण्डम्

पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्रमाहात्म्यम्

प्रथमोऽध्यायः

ब्रह्मप्रार्थनया विष्णोराविर्भाववर्णनम्

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

मुनय ऊचुः

भगवन्सर्वशास्त्रज्ञ! सर्वतीर्थमहत्त्ववित् । कथितं यत्त्वया पूर्वं प्रस्तुते तीर्थकीर्तने ॥

पुरुषोत्तमाख्यं सुमहत्क्षेत्रं परमपावनम् ॥ २ ॥

यत्राऽऽस्ते दारुवतनुः श्रीशोमानुषलीलया । दर्शनान्मुक्तिदः साक्षात्सर्वतीर्थफलप्रदः

तन्नो विस्तरतोब्रूहितत्क्षेत्रंकेननिर्मितम् । ज्योतिःप्रकाशोभगवान्साक्षान्नारायणःप्रभुः

कथं दारुमयस्तस्मिन्नास्ते परमपूरुषः । वद ,त्वं वदतांश्रेष्ठ! सर्वलोकगुरो मुने !॥

श्रोतुमिच्छामहे ब्रह्मन्परं कौतूहलं हि नः ।

जैमिनिरुवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे रहस्यं परमं हि तत् ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवैष्णवानां श्रवणे भक्तिस्तत्र न जायते । यस्य सङ्कीर्तनादेव सकलं लीयते तमः
यद्यप्येष जगन्नाथः सर्वगःसर्वभावनः । स्कन्देनकथितं पूर्वं श्रुत्वाशम्भोर्मुखाम्बुजात्
सन्ति क्षेत्राणि चाऽन्यानि सर्वपापहराणि वै ॥ ८ ॥
एतत्क्षेत्रंपरंचाऽस्यवपुर्भूतंमहात्मनः । स्वयंवपुष्मांस्तत्रास्तेस्वनाम्नाख्यापितंहितत्
तत्र ये स्थातुमिच्छन्ति तेपिसर्वेहतांहसः । किंपुनस्तत्रतिष्ठन्तोयेपश्यन्तिगदाधरम्
अहोतत्परमंक्षेत्रं विस्तृतं दशयोजनम् । तीर्थराजस्य सलिलादुत्थितं वालुकाचितम्
नीलाचलेनमहतामध्यस्थेनविराजितम् । एकस्तनमिव पृथ्व्याः सुदूरात्परिभावितम्
वाराहरूपिणापूर्वंसमुद्धृत्यवसुन्धराम् । सर्वतः सुसमां कृत्वापर्वतैःसुस्थिरीकृताम्
सृष्ट्वा चराचरं सर्वं तीर्थानि सरिदब्धिकान् ।
क्षेत्राणि च यथास्थानं संनिवेश्य यथा पुरा ॥ १४ ॥
ब्रह्मा विचिन्तयामाससृष्टिभारनिपीडितः । पुनरेतां क्रियांगुर्वीं नारभेयकथन्त्विति:
तापत्रयाभिभूताहि मुच्यन्ते जन्तवःकथम् । एवं चिन्तयमानस्यमतिरासीत्प्रजापतेः
मुक्तयेककारणं विष्णुं स्तोष्येऽहं परमेश्वरम् ।

ब्रह्मोवाच

नमस्ते जगदाधार ! शङ्खचक्रगदाधर ॥ १७ ॥
यन्नाभिपङ्कजादेव जातोऽहं विश्वसृष्टिकृत् । परमार्थस्वरूपं ते त्वं वै वेत्सिजगन्मय
यन्मायजगत्सर्वंनिर्मितंमहदादिकम् । यन्निःश्वाससमुद्भूतं शब्दब्रह्म त्रिधाऽभवत्
उपजीव्यतदेवाऽहमसृजम्भुवनानि वै । त्वत्तोनाऽन्यः स्थूलसूक्ष्मदार्वहस्वादिकिञ्चन
विकारभेदैर्भगवंस्त्वमेवेदं चराचरम् । कटकादि यथा स्वर्णं गुणत्रयविभागशः ॥२१
स्रष्टासृज्यंत्वमेवाऽत्रपोष्टापोष्यञ्जगत्प्रभो । आधारो ध्रियमाणश्च धर्ता त्वंपरमेश्वर
त्वत्प्रेरितमतिः सर्वश्चरते च शुभाऽशुभम् ।
ततः प्राप्नोति सदृशीं त्वयैव विहितां गतिम् ॥ २३ ॥
जगतोऽस्य गतिर्भर्त्ता साक्षी त्वं परमेश्वर !। चराचरगुरो ! सर्वजीवभूतकृपामय !
प्रसीदाऽऽद्यजगन्नाथ! नित्यं त्वच्छरण्यस्य मे ॥ २४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैमिनिरुवाच

एवं संस्तूयमानश्च ब्रह्मणा गरुडध्वजः । नीलजीमूतसङ्काशःशङ्खचक्रादिचिह्नितः
पतगेन्द्रसमारूढः स्फुरद्वदनपङ्कजः । आविरासीद् द्विजश्रेष्ठा विवक्षुः स्फुरिताधरः

श्रीभगवानुवाच

यदर्थं मां स्तुषे ब्रह्मन्नशक्यः प्रतिभाति सः ॥ २७ ॥

अनाद्यविद्यासुदृढा दुश्छेद्याकर्मबन्धनैः । प्रभवन्त्यां कथं तस्यां हीयेतेमृतिजन्मनी
तथाऽपि चेदत्रकृतेव्यवसायस्तवाऽनघ । क्रमेण येन हि भवेत्तत्ते वक्ष्यामि कारणम्
अहं त्वं त्वमहं ब्रह्मन्मन्मयश्चाखिलञ्जगत् । रुचिस्ते यत्र मे तत्र नान्यथेतिविचारय
सागरस्योत्तरेतीरे महानद्यास्तु दक्षिणे । स प्रदेशः पृथिव्यां हि सर्वतीर्थफलप्रदः
तत्र ये मनुजा ब्रह्मन्निवसन्ति सुबुद्धयः । जन्मान्तरकृतानाञ्च पुण्यानां फलभागिनः
नाऽल्पपुण्याः प्रजायन्ते नाऽभक्ता मयिपद्मज । एकाम्रकाननाद्यावद्दक्षिणोदधितीरभूः
पदात्पदाच्छ्रेष्ठतमः क्रमात्परमपावनः । सिन्धुतीरे तु यो ब्रह्मन्राजते नीलपर्वतः ॥३४

पृथिव्यां गोपितं स्थानं तव चाऽऽपि सुदुर्लभम् ।
सुरासुराणां दुर्ज्ञेयं माययाऽऽच्छादितं मम ॥ ३५ ॥

सर्वसङ्गपरित्यक्तस्तत्र तिष्ठामि देहभृत् । क्षराक्षरावतिक्रम्य वर्त्तेऽहं पुरुषोत्तमे ॥
सृष्ट्यालयेननाक्रान्तंक्षेत्रम्मेपुरुषोत्तमम् । यथामां पश्यसिब्रह्मन्रूपं चक्रादिचिह्नितम्
ईदृशं तत्र गत्वैव द्रक्ष्यसे मां पितामह ! । नीलाद्रेरन्तरभुवि कल्पन्यग्रोधमूलतः ॥

वारुण्यां दिशि यत्कुण्डं रौहिणं नाम विश्रुतम् ।
तत्तीरे निवसन्तं मां पश्यन्तश्चर्मचक्षुषा ॥ ३६ ॥

तदम्भसाक्षीणपापा मम सायुज्यमाप्नुयुः । तत्र व्रज महाभाग दृष्ट्वा मां ध्यायतस्तव
प्रकाशं यास्यते तस्य क्षेत्रस्य महिमाऽपरः । आश्चर्यभूतःपरमस्तवाऽपिचभविष्यति

श्रुतिस्मृतीहासपुराणगोपितं मन्मायया तन्न हि कस्य गोचरम् ।
प्रसादतो मे स्तुवतस्तवाऽधुना प्रकाशमायास्यति सर्वगोचरम् ॥ ४२ ॥
व्रतेषु तीर्थेषु च यज्ञदानयोः पुण्यं यदुक्तं विमलात्मनां हि तत् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अहर्निवासाल्लभतेऽत्र सर्वं निःश्वासवासात्खलु चाऽऽश्वमेधिकम् ॥ ४३ ॥
इत्यादिश्य विधिं विप्रास्तदाऽसौ पुरुषोत्तमः । पश्यतस्तस्य तत्रैव प्रभुरन्तरधीयत

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनऋषिसम्वादे ब्रह्मप्रार्थनया विष्णोराविर्भाववर्णनंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

ब्रह्मणःपुरुषोत्तमक्षेत्रागमनान्तरंकाकमुक्तिपूर्वकंयमस्तुतिवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

ततो ब्रह्माऽगमत्तूर्णं यत्राऽऽस्ते भगवान्स्वयम् ।
स्तवान्तेऽसौ यथा दृष्टस्तथाऽद्राक्षीत्प्रभुं तदा ॥ १ ॥
प्रत्यभिज्ञानसंहृष्टस्तं दृष्ट्वा परमेश्वरम् । अत्यद्भुतज्ञाननिधिर्बभूवाऽसौ द्विजोत्तमाः !
यावत्स्तोतुं समारेभे हर्षसम्फुल्ललोचनः । तावदेव समागत्य कुतश्चिद्वायसोत्तमः ॥
कारुण्योदकसम्पूर्णे तस्मिन्कुण्डे निमज्य तम् ।
विलोक्य माधवं नीलरत्नकान्तिं कृपानिधिम् ॥ ४ ॥
काकदेहं समुत्सृज्यलुठमानोमुहुःक्षितौ । शङ्खचक्रगदापाणिस्तस्यपार्श्वेव्यवस्थितः
तिरश्चस्तां गतिं दृष्ट्वा योगीन्द्राणां सुदुर्लभाम् ।
मेनेऽसौ मुनयः सृष्टिः क्रमात्क्षीणा भविष्यति ॥ ६ ॥
मनुष्योऽधिकृते मुक्तौ वेदान्ते संशयोऽभवत् ।
नकिञ्चिद् दुर्लभं चेह विष्णुभक्तस्य विद्यते ॥ ७ ॥
प्रत्यक्षोऽभूद्द्विजश्रेष्ठाः पुराणपुरुषोदिते । सङ्कीर्त्ययन्नामनरःसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥८
तस्य सन्दर्शने विप्रा मुक्तिः किं खलु दुर्लभा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनसा ध्याययन्विष्णुं त्यजन्प्राणान्विमुच्यते ॥ ६ ॥
साक्षात्कृतोभगवतःकिंचित्रम्मुक्तिमेतियत् । पुरुषोत्तमसञ्ज्ञस्यक्षेत्रस्यमहिमाऽद्भुतः
यत्र काकोऽपिचहरिंसाक्षात्पश्यतिभोद्विजाः । सुदुर्लभंक्षेत्रमिदमज्ञानाश्चविमोचनम्
अहो क्षेत्रस्य माहात्म्यं काकस्याऽपि विमुक्तिदम् ।
किं पुनः सततं शान्तिवैराग्यज्ञानसंयुजाम् ॥ १२ ॥

ऋषयःऊचुः

नीलाद्रौ माधवं दृष्ट्वा किं चकार पितामहः । तद्दर्शनेक्षणान्नष्टदेहबन्धश्च वायसम् ॥

जैमिनिरुवाच

अत्यद्भुतमयंदृष्ट्वायावद्ध्यायति माधवम् । तावत्पितृपतिः स्वाऽधिकारसंयमनाकुलः
दीनाननोनिःश्वसन्वैतत्र यातस्त्वरान्वितः । नीलाद्रौमाधवंदृष्ट्वा साष्टाङ्गम्प्रणिपत्यच
तुष्टाव स जगन्नाथं स्वाधिकारदृढस्थितौ ।

यम उवाच

नमस्ते देवदेवेश ! सृष्टिस्थित्यन्तकारण !॥ १६ ॥
त्वयिप्रोतमिदंसर्वंसूत्रेमणिगणायथा । त्वयाधृतंत्वयासृष्टन्त्वयाचाऽऽप्यायितंजगत्
चन्द्रसूर्यादिरूपेण नित्यम्भासयसेऽखिलम् ।
विश्वेश्वरं जगद्योनिं विश्वावासं जगद्गुरुम् ॥ १८ ॥
विश्वसाक्षिणमाद्यन्तवर्जितं प्रणमाम्यहम् । नमः परमकारुण्यजलसम्भृतसिन्धवे ॥
परापरपरातीतविभवे विश्वसम्भवे ॥ २० ॥
भवसन्तापनीहारभानवे दीनबन्धवे । स्वमायारचिताशेषविभवे गुणरज्जवे ॥ २१ ॥
नमः कमलकिञ्जल्कपीतनिर्मलवाससे । महाहवरिपुस्कन्धकृन्तचक्राय चक्रिणे ॥२२॥
दंष्ट्रोद्धृतक्षितिभृते त्रयीमूर्तिमते नमः । नमो यज्ञवराहाय चन्द्रसूर्याग्निचक्षुषे ॥
नरसिंहाय दंष्ट्रोग्रमूर्तिद्रावितशत्रवे । यदपाङ्गविलासैकसृष्टिस्थित्युपसंहृतिः ॥
उच्चावचात्मको ह्येष भवः सम्भवते मुहुः । तममुं नीलमेघाभं नीलाश्ममणिविग्रहम्
नीलाचलगुहावासं प्रणमामि कृपानिधिम् । शङ्खचक्रगदापद्मधारिणं शुभदायिनम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणताशेषपापौघदारिणं मुरवैरिणम् । नमस्ते कमलापाङ्गसङ्गसंस्कारचक्षुषे॥ २७ ॥
श्रीवत्सकौस्तुभोद्भासिमनोहृद्व्यूढवक्षसे । यत्पादपङ्कजद्वन्द्वसंश्रयैश्वर्यभागिनी ॥
श्रीः संश्रिता जनैः शश्वत्पृथगैश्वर्यदायिनी ।
या परापरसम्भिन्ना प्रकृतिस्ते सिसृक्षया ॥ २६ ॥
निर्विकारम्परम्ब्रह्मविकारिससृजेऽञ्जसा । सर्वलक्षणसम्पूर्णां लक्षितां शुभलक्षणैः
लक्ष्मीशोरसि नित्यस्थां लक्ष्मीं ताम्प्रणमाम्यहम् ॥ ३० ॥

जैमिनिरुवाच

तदेवंधर्मराजेनश्रीकान्तःपरितोषितः । पार्श्वस्थांवल्लकीहस्तांनेत्रान्तेनादिशच्छ्रियम्
तेन सम्भाविता लक्ष्मीर्भवदुःखविनाशिनी । शुभायसर्वलोकानांयमम्प्रोवाचलीलया

लक्ष्मीरुवाच

यदर्थमावांसंस्तौषिक्षेत्रेस्मिन्दुर्लभं हि तत् । अत्याज्यमावयोरेतत्क्षेत्रंश्रीपुरुषोत्तमम्
कल्पावसानेऽप्यावां वै ध्रियेतेपरमेष्ठिना । ब्रह्मादिदिक्प्रभूणांहिस्वामित्वंनेहविद्यते
नेह कर्मपरीपाकाः सम्भवन्ति कदाचन । अत्र प्रवसतां नणां तिरश्चामपिदुष्कृतम्
दह्यते ज्वलिताग्नौ हि तूलराशिर्यथा भृशम् ।
ये वद्धा पापपुण्याभ्यां निगडाभ्यामहर्निशम् ॥ ३६ ॥
तेषां संयमितःत्वंहियमःपूर्वंविनिर्मितः । अत्र साक्षाद्वपुष्मन्तं नीलेन्द्रमणिमञ्जुलम्
दृष्ट्वा नारायणं देवं मुच्यते कर्मवन्धनात् । अतोऽन्यतः कर्मभूमौ प्रभुस्त्वंसूर्यसम्भव!
वैक्लव्यं क्षेत्रराजेऽस्मिन्मा गास्त्वंयम संयमे । तवाऽपि भगवानेषविधाताप्रपितामहः
तिर्यञ्चं विष्णुसारूप्यं प्राप्तं पश्यतिकौतुकात् । एष कर्मपरीपाकं सर्वेषांवेत्तिकञ्जजः
ज्ञात्वा क्षेत्रस्य माहात्म्यं स्तौति देवं गदाधरम् ।
त्वद्वशं गन्तुमुचिता नेह तिष्ठन्ति जन्तवः ॥ ४१ ॥
वैवस्वत! वसन्त्यत्र जीवन्मुक्ता मुमुक्षुवः ।
तया सम्बोधितस्त्वेवं विष्णुना स्त्रीस्वरूपिणा ॥ ४२ ॥
ततोऽहङ्कारलज्जाभ्यां विनीतः प्राब्रवीद्यमः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यम उवाच

मातस्त्वया यदाज्ञप्तं पुरा नैतन्मया श्रुतम् ॥ ४३ ॥
अज्ञानोपहतो वेद्मि रहस्यं कथमुत्तमम् । यस्य स्वरूपं वेदाश्च न च वेत्ति पितामहः
महिमानं कथन्तस्य वेद्म्यहङ्कार मोहितः । यदादिष्टं सुरेशानि! क्षेत्रमेतद्विमुक्तिदम्
सान्निध्याद्वासुदेवस्य ईश्वरेच्छा निरङ्कुशा । अन्यत्र बन्धदोविष्णुरत्रमोक्षंददातियत्
ममाऽपिनिरयाणाञ्चस्रष्टासौत्रिदिवस्यच । मृतानामत्रमुक्तिश्चेत्तन्मामम्बसुविस्तरम्
क्षेत्रसंस्थाप्रमाणं हि तत्र स्थितिफलं हि यत् ।
तीर्थानि कानि सन्त्यत्र किमन्यद्वा रहस्यकम् ॥ ४८ ॥
किमधिष्ठातृकं क्षेत्रं तत्सर्वंकथयस्व मे । तदहं सम्परित्यज्य निर्भयः सञ्चरे यथा ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे यमस्तुति-वर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥

तृतीयोऽध्यायः

लक्ष्म्यायमप्रबोधनावसरेमार्कण्डेयकृताभगवत्स्तुतिवर्णनम्

श्रीरुवाच

साधुते बुद्धिरुत्पन्ना विष्णोःसन्निधिमाश्रिता । अद्भुतं कथयाम्येतत्क्षेत्रस्यरविनन्दन
यथाऽहं भगवद्वक्षःस्थलस्था ददृशे पुरा । चराचरे जगत्यस्मिन्प्रलीने प्रलये यम !२
एतत्क्षेत्रमहं चैव द्वे एवोपस्थिते यदा । स तदा सप्तकल्पायुर्मृकण्डोरात्मजो मुनिः
प्रणष्टे स्थावरचरे निमग्नः प्रलयार्णवे । नावस्थानमवाप्यैव शर्म लेभे न कुत्रचित् ॥
जलार्णवे भ्राम्यमाणः प्रलये स इतस्ततः । पुरुषोत्तमसादृश्ये क्षेत्रे स वटमैक्षत ॥
उत्प्लुत्योत्प्लुत्य मूलं तु न्यग्रोधस्य समीपतः ।
शुश्राव बालवचनं मार्कण्डेय! ममाऽन्तिकम् ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रविश्य दुःखमतुलं जहीहि खलु मा शुचः । तच्छ्रुत्वा चित्रवचनमप्रतर्क्यं तदामुनिः
विस्मयं परमं लेभे स्वदुःखं नाऽव्यचिन्तयत् । वारिभिःशीर्यतेनैतद्दह्यतेकालवह्निना
सम्वर्तकादिभिर्नैतच्छोष्यते नाऽपिचाल्यते । एकार्णवे महाघोरेनौरिव क्षेत्र ीक्ष्यते
तत्राऽयं यूपसदृशो न्यग्रोधस्तिष्ठते महान् । यं गृहीत्वाक्षेत्रमिदंन्यग्रोधईशितुस्तनुः

महाप्रलयवातेन शाखा नाऽस्य हि कम्पते ।

तस्याऽधस्तात्स हि मुनिः स्थित्वा चैतदचिन्तयत् ॥ ११ ॥

एकार्णवेऽस्मिन्प्रलये नष्टे स्थावरजङ्गमे । भूप्रदेशः स्थिरतरः कथमेव विभाव्यते ॥
यत्राऽयं शाखिप्रवरः कोमलः परिदृश्यते । मार्कण्डेयाऽऽगच्छ मुहुरितिसप्रश्रयं वचः
कुतो निराश्रयमिदंचिन्तयन्निति स प्लवन् । शङ्खचक्रगदापाणिनारायणमलोकयत्
तदङ्गपद्मासनगां मां च वैवस्वतैक्षत । विवशोजलवाताभ्यांतद्वासुस्थोव्यवस्थितः
हृष्टान्तरात्मा स मुनिरावां साष्टाङ्गमानतः । प्रसादनायदेवस्य स्तोत्रमेतदुदाहरत् ॥

मार्कण्डेय उवाच

त्वत्पादपद्मानुसरानुषङ्गं रुद्रेन्द्रपद्मासनसम्पदाढ्यम् ।
त्वद्भक्तिहीनं परितः प्रतप्तं दीनं परित्राहि कृपाम्बुधे ! माम् ॥ १७ ॥
ब्रह्मादिभिर्यत्परिचर्यमाणं पदाम्बुजद्वन्द्वमचिन्त्यशक्ति ।
श्वःश्रेयसप्राप्तिनिदानतत्त्वं दीनं परित्राहि कृपाम्बुधे ! माम् ॥ १८ ॥
यदङ्गभूतं जगदण्डमेतदनेककोटिप्रगणं विभाति ।
लीलाविलासस्थितिसृष्टिलीनं तन्मां सुदीनं परिरक्ष विष्णो !॥ १६ ॥
एकं सुवर्णं कटकादिभेदैर्नाना यथा वा नभसोदितोऽर्कः ।
आधारवैषम्यजलेषु तादृग्विभाव्यसे निर्गुण एक एव ॥ २० ॥
अशेषसम्पूर्णरुचिप्रहीणोपादानसङ्कल्पविवर्जितोऽपि ।
दीनानुकम्पानुगुणं बिभर्षि युगेयुगे देहमपारशक्ते !॥ २१ ॥
त्वत्पादपद्मं जगदीश! पूर्वमसेव्यतानात्मधिया मया यत् ।
तत्कर्मणा दारुणपाकभाजं दीनं परित्राहि कृपाम्बुधे ! माम् ॥ २२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अशेषलोकस्थितिसृष्टिलीनविलासि यत्ते त्रिगुणं विभाति ।
वपुर्महात्मन्महदादिहेतुर्हेतोर्नमस्ते प्रकृतेः परस्य ॥ २३ ॥
सर्वत्र गत्वा बृहदप्रमेयं प्रवर्द्धमानं त्वयि बृहितं च ।
तद्ब्रह्मरूपं परिणामहेतुं स्वाध्यात्मविश्वात्मकमाश्रयामि ॥ २४ ॥
एकार्णवे महाघोरे नावस्थातुं प्रदेशभूः । अस्ति लक्ष्मीपते मेघवारिवातप्रकम्पनात् ॥
त्राहिविष्णोजगन्नाथमग्नंसंसारसागरे । मामुद्धरास्माद्गोविन्दकृपापाङ्गविलोकनात्

श्रीरुवाच

स्तुवन्तमेवं ब्रह्मर्षिं साक्षान्नारायणो विभुः । विलोक्याऽनुग्रहदृशावाक्यंचेदमुवाच ह

श्रीभगवानुवाच

मार्कण्डेय ! सुदीनोऽसि मामज्ञायद्विजोत्तम । दुश्चरं तुतपस्तप्तंदीर्घायुस्तेनकेवलम्
शयानं पत्रपुटके पश्य कल्पवटोर्ध्वगम् । बालस्वरूपं सर्वेषां कालात्मानं महामुने !॥
प्रविश्य विस्तृतं वक्त्रं तत्राऽवस्थातुमर्हसि ॥ २६ ॥

श्रीरुवाच

एवमुक्तो भगवता स मुनिर्विस्मिताननः ॥ ३० ॥
आरुह्य ददृशे बालरूपं तस्याऽविशन्मुखे । प्रविष्टः कण्ठमार्गेण महायामं महोदरम् ॥
तत्राऽसौ ददृशे विप्रोभुवनानि चतुर्दश । ब्रह्मादिदिक्पालसुरान्सिद्धगन्धर्वराक्षसान्
ऋषीन्दिव्यऋषींश्चैव भूतलं सागराङ्कितम् । नानातीर्थैर्नदीभिश्च पर्वतैः काननैस्तथा
लक्षितं पत्तनपुरं ग्रामखर्वटकैर्युतम् । पातालानि तथा सप्त नागकन्याः सहस्रशः ॥
महार्घ्यमणिसौधैश्च सुधापात्रैः समुज्ज्वलैः । अनर्घ्यमणिभिर्नागैःसेवितंपरमाद्भुतम्
जगतां धारिणं शेषं सहस्रफणमण्डितम् ।
व्याकर्तारमशेषाणां शास्त्राणां शिष्यमध्यगम् ॥ ३६ ॥
ब्रह्माण्डोदरगं वस्तु यत्किञ्चित्परमेष्ठिना । सृष्टं सर्वं ददृशेऽसौतत्कुक्षौसमहामुनिः
नापश्यदन्तं कुक्षेस्तु भ्रममाण इतस्ततः । ततो विनिष्क्रम्य पुनर्ददृशे च मया सह
पूर्वमालक्षितं यद्वदास्थितं पुरुषोत्तमम् । विस्मयोत्फुल्लनयनः प्रणिपत्येदमब्रवीत् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मार्कण्डेय उवाच

भगवन्देवदेवेश किमद्भुतमिदं प्रभो। महाप्रलयसंरोधे सृष्टिरत्र विभाव्यते ॥ ४० ॥

त्वन्मया दुरवच्छेद्या कथं वै ज्ञायते मया ॥ ४१ ॥

श्रीभगवानुवाच

मुने! क्षेत्रमिदं चित्रं शाश्वतं मे विभावय। न सृष्टिप्रलयावत्र विद्येते न च संसृतिः

सदैकरूपं पुरुषोत्तमाख्यं मुक्तिप्रदं मामिह सम्प्रबुध्य।

अत्र प्रविष्टो न पुनः प्रयाति गर्भस्थितिं सान्द्रसुखस्वरूपः ॥ ४३ ॥

इत्याज्ञप्तो भगवतामार्कण्डेयो महामुनिः। अत्र वासंकरिष्यामीत्यन्यतीर्थपराङ्मुखः

प्रहृष्टवदनः प्राह प्रणिपत्य जगद्गुरुम् ॥ ४४ ॥

मार्कण्डेय उवाच

उवाचस तथा विष्णुं भक्तिश्रद्धासमन्वितः। अनुगृह्णीष्वभगवन्क्षेत्रेऽस्मिन्पुरुषोत्तमे

यथा स्थितो मृत्युवशं न व्रजे पुरुषोत्तम !॥ ४५ ॥

श्रीभगवानुवाच

अत्र स्थितिं मे विप्रर्षे! क्षेत्रे मोक्षप्रसाधके ॥ ४६ ॥

करिष्यामिन सन्देहो यावदाभूतसम्प्लवम्। प्रलयावसानेतीर्थंतेरचयिष्यामिशाश्वतम्

यत्तीरे तप आस्थाय मद्वद्वितीयतनुं शिवम्।

आराध्य मदनुक्रोशान्मृत्युं जेष्यसि निश्चितम् ॥ ४८ ॥

जैमिनिरुवाच

एवं पुरा दत्तवरो मार्कण्डेयो महामुनिः। न्यग्रोधवायव्यकोणे खातं चक्रेण वै हरेः

पावनं गर्तमास्थाय पूजयित्वा महेश्वरम्। महता तपसा विप्रो जितवान्मृत्युमञ्जसा

मुनेस्तस्यैव नाम्नाऽयं प्रख्यातो गर्त्त उत्तमः। यत्रस्नात्वाशिवंदृष्ट्वावाजिमेधफलंलभेत्

श्रीरुवाच

पञ्चक्रोशमिदं क्षेत्रं समुद्रान्तर्व्यवस्थितम्। द्विक्रोशं तीर्थराजस्यतटभूमौसुनिर्मलम्

सुवर्णवालुकाकीर्णंनीलपर्वतोशोभितम्। योऽसौविश्वेश्वरोदेवःसाक्षान्नारायणात्मकः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संयम्य विषयग्रामं समुद्रतटमास्थितः । उपासितुं जगन्नाथं चतुःषष्टितमः प्रभुः ॥
यमेश्वर इति ख्यातो यमसंयमनाशनः । यं दृष्ट्वा पूजयित्वातुकोटिलिङ्गफलं लभेत्
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
यमेश्वरमाहात्म्यवर्णनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः

लक्ष्मीयमसम्वादे लक्ष्म्यापुरुषोत्तमक्षेत्रस्यतीर्थराजत्ववर्णनम्

श्रीरुवाच

सीमाप्रतीचीं क्षेत्रस्य शङ्खाकारस्य मूर्द्धनि । सर्वकामप्रदो देवः सआस्तेवृषभध्वजः
शङ्खाग्रे नीलकण्ठः स्यादेतत्क्रोशं सुदुर्लभम् । परमं पावनं क्षेत्रं साक्षान्नारायणस्य वै
सिन्धुराजस्य सलिलाद्यावन्मूलंवटस्य वै । शङ्खस्योदरभागस्तुसमुद्रोदकसम्प्लुतः
यत्सम्पर्कात्समुद्रोऽत्र तीर्थराजत्वमागतः । यथाऽयंभगवान्मुक्तिप्रदोदृष्टिपथं गतः ॥
तथेदं मरणात्क्षेत्रं सिन्धुः स्नानाद्विमुक्तिदः । चिच्छेद ब्रह्मजः पूर्वंरुद्रःक्रोधात्तुपञ्चमम्
तच्छिरो दुस्त्यजं गृह्णन्ब्रह्माण्डं परिबभ्रमे । अत्राऽऽगतोयदाब्रह्मकपालं परिमुक्तवान्
कपालमोचनं लिङ्गं द्वितीयावर्तसंस्थितम् । कपालमोचनं पश्येत्पूजयेत्प्रणमेच्च यः
ब्रह्महत्यादिपापनां कञ्चुकंविजहात्यसौ । तस्य दक्षिणपार्श्वे तु मरणं भवमोचनम्
तृतीयावर्तगामाद्यां शक्तिं मे विमलाह्वयाम् । जानीहिधर्मराजत्वंभुक्तिमुक्तिफलप्रदाम्
य इमां पूजयेद्भक्त्या प्रणमेत्कीर्तयेत्तुवा । सर्वान्कामानवाप्नोति मुक्तिंचान्तेचविन्दति
नाभिदेशे स्थितं ह्येतत्त्रयं कुण्डं वटो विभुः ।
कपालमोचनाद्यावदर्द्धांशिनी प्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मध्यं शङ्खस्य जानीयात्सुगुप्तं चक्रपाणिना । अर्द्धमश्नाति सलिलं महाप्रलयवर्द्धितम्
सृष्ट्यादौ धर्मराजेयं शक्तिर्मेऽर्द्धांशिनी स्मृता ।
तां दृष्ट्वा प्रणमेद्यस्तु भोगान्सोऽश्नाति शाश्वतान् ॥ १३ ॥
सिन्धुराजस्य सलिलाद्यावन्मूलंवटस्य वै । कीटपक्षिमनुष्याणांमरणान्मुक्तिदोमतः
अन्तर्वेदी त्वियं पुण्या वाञ्छ्यते त्रिदशैरपि ।
यत्र स्थितान् हि पश्यन्ति सर्वांश्चक्राब्जधारिणः ॥ १५ ॥
पृथिव्यां यानितीर्थानिगगनेचत्रिविष्टपे । सार्द्धत्रिकोटिसंख्यानिस्वर्गमोक्षप्रदानिवै
तेषामयं तीर्थराजः कीर्त्तितः पुरुषोत्तमः । सर्वेषां मुक्तिक्षेत्राणामिदं सायुज्यदं मतम्
अत्रस्थितानशोचन्तिजराजन्मभृतिष्वपि । कुण्डंह्येतद्रोहिणाख्यंकारुण्याख्यजलेनवै
सम्भृतं तिष्ठते नित्यं स्पर्शनाद्भवबन्धमुक्तिदम् । अत्रप्रतिष्ठितं वारि प्रलये यत्प्रवर्द्धते
अत्रैव लीयते पश्चात्तस्माद्रोहिणसञ्ज्ञितम् ।
तस्मात्ते माऽत्र चिन्ताऽस्तु स्वाधिकारविपर्यये ॥ २० ॥
मोक्षाधिकारिणामत्रनेश्वरस्त्वंपरेतराट् । धर्मराजं समादिश्यलक्ष्मीरेवंपुरः स्थितम्
ब्रह्माणमाह जगतामम्बा प्रश्रयया गिरा । पितामह! जगन्नाथ विदितं सर्वमेव यत् ॥
मोक्षदं सर्वजन्तूनामेतत्क्षेत्रं धरातले । कामाख्यं क्षेत्रपालश्च विमलस्वा तपःस्थितः
साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपोऽसौ नृसिंहो दक्षिणे विभोः ।
हिरण्यकशिपोर्वक्षो विदार्याऽयं प्रभोज्ज्वलः ॥ २४ ॥
दर्शनादस्य नश्यन्ति पातकानिन संशयः । भुक्तेर्मुक्तेश्चयोग्यःस्यान्नात्रकार्याविचारणा
अस्याऽग्रे सन्त्यजन्प्राणान्ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात् ।
यत्किञ्चित्कुरुते कर्म कोटिकोटिगुणं भवेत् ॥ २६ ॥
छायैषाकल्पवृक्षस्यनृसिंहार्केणभासिता । तत्रांनश्यत्यविद्याहिज्ञानतोऽज्ञानतोमृतौ
वेदान्तेषु प्रसिद्धैस्तैर्विज्ञानैः श्रवणादिभिः । मूढानांदुर्लभैर्विप्राविनाप्यत्रविमोचनम्
अविमुक्ते मुमुक्षोस्तु कर्णमूले महेश्वरः । दिशति ब्रह्मसञ्ज्ञानं वोधोपायं कृपानिधिः
तेन वुद्ध्या समभ्यस्य क्रमान्मोक्षमवाप्नुयात् । उपदेष्टुर्महिम्नाहितस्यज्ञानंनहीयते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्र त्यजन्तियेप्राणांस्तेषांतत्क्षणएवहि । स्वरूपाज्जायतेमुक्तिःसंशयोमाऽस्तुतेयम
गतागतप्रसक्तानां कर्मिणां मूढचेतसाम् । वैवस्वत! कदाचिन्नो विश्वासोह्यत्रजायते
उत्सृज्य वारि गाङ्गेयं स्वादु शीतंसुनिर्मलम् । पिपासुःपल्वलंयातितद्वत्तेमूढचेतसः

भ्रमन्ति तीर्थान्यन्यानि त्यक्त्वैतत्क्षेत्रमुत्तमम् ।
फलाशामोदकैस्तृप्ता लभन्ते श्रमजं फलम् ॥ ३४ ॥

स्नानादब्धिद्र्दशा देवश्छायया कल्पपादपः । यत्र कुत्रापिचक्षेत्रेमरणान्मुक्तिदं नृणाम्
यो यत्र विषये भक्त्या विश्वासं कुरुते नरः । स तु तेनैवमुच्येतनेदृशं तीर्थमस्ति वै

एतन्त्यक्त्वाऽन्यतीर्थे वै विदधाति रुचिं तु यः ।
नूनं स मायया विष्णोर्वञ्चितो लोभलालसः ॥ ३७ ॥

उपदेशेन बहुना न प्रयोजनमस्ति ते । प्रत्यक्षो ह्यनुभूतोऽयं करटो विष्णुरूपधृक् ॥
अन्तर्वेदीरक्षणार्थं शक्तयोऽष्टौ प्रकीर्तिताः । उग्रेणतपसा पूर्वमहं रुद्रेण भाविता ॥

पत्न्यर्थं सा मया सृष्टा गौरी तस्याऽथ भाविनी ।
सर्वसौन्दर्यवसतिर्वपुषो मे विनिर्गता ॥ ४० ॥

तदाऽऽदिष्टा मया भद्रे! वचनं मे प्रियं कुरु । अन्तर्वेदीं रक्षममपरितस्त्वंस्वमूर्तिभिः
सा तु तिष्ठति मत्प्रीत्या अष्टधादिक्षु संस्थिता । मङ्गलावटमूलेतुपश्चिमेविमलातथा

शङ्खस्य पृष्ठभागे तु संस्थिता सर्वमङ्गला ।
अर्द्धांशिनी तथालम्बा कुबेरदिशि संस्थिता ॥ ४३ ॥
कालरात्रिर्दक्षिणस्यां पूर्वस्यां तु मरीचिका ।
कालरात्र्यास्तथा पश्चाच्चण्डरूपा व्यवस्थिता ॥ ४४ ॥

एताभिरुग्ररूपाभिःशक्तिभिःपरिरक्षितम् । अल्पपुण्यस्यपुंसोहिस्थानमेतत्सुदुर्लभम्
एतासामष्टशक्तीनां दर्शानात्कीर्तनात्तथा । नश्यन्ति सर्वपापानि हयमेधफलं लभेत् ॥
रुद्राण्याश्चाष्टधा भेदं दृष्ट्वा रुद्रोऽपि शङ्करः । आत्मानमष्टधाभित्त्वा उपास्तेपरमेश्वरम्
आराध्य तपसा विष्णुं प्रार्थयद्वरमुत्तमम् । यत्र त्वं देवतत्राहं वसेयं हि यथासुखम्

त्वामृते कमलाकान्त! नान्यन्निर्वाणकारणम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तर्यामिन्प्रभो ! मे त्वं त्वां विना विग्रहः कुतः ॥ ४६ ॥
मूढा ये त्वां न जानन्ति हृष्यन्तिविषयेऽशुचौ । निर्मलाम्बरसङ्काशंत्वामहंशरणंगतः

जैमिनिरुवाच

भगवानपि रुद्रं तं क्षेत्रपालं तथा विभुः । स्थापयामास परितः स्वयंमध्येव्यवस्थितः
कपालमोचनं नाम क्षेत्रपालं यमेश्वरम् । मार्कण्डेयं तथेशानं विल्वेशं नीलकण्ठकम् ॥
वटमूले वटेशं च लिङ्गान्यष्टौमहेशितुः । यानि दृष्ट्वा तथा स्पृष्ट्वा पूजयित्वाविमुच्यते
अत्र क्षेत्रे मृता ये च न तेषां तु प्रभुर्यमः । यदर्थमागतस्त्वं हि तदन्यत्र प्रसाधय ॥
तथाऽप्यसौ जगन्नाथो भक्तायात्मसमर्पकः । यमेन तोषितो भक्त्याप्रपन्नार्तिहरः प्रभुः
सुदर्शनेन चक्रेण मायां च व्यवधास्यति । अत्याज्येऽस्मिन्क्षेत्रवरेस्वर्णवालुकयावृते
तं यमं वञ्चयित्वा तु प्रस्थापय्ययमालयम् । साधुमत्वाततःप्राहब्रह्माणंपुरतःस्थितम्

श्रीरुवाच

इन्द्रद्युम्नोनाम राजा युगे सत्ये भविष्यति । वैष्णवः सर्वयज्ञानामाहर्त्ताशास्त्रकोविदः
अत्राऽऽगत्य महाभक्तिं करिष्यति नृपोत्तमः । भगवत्प्रीतये येन वाजिमेधसहस्रकम्
करिष्यते प्रजानाथ तदनुग्रहकारणात् । एकदारुसमुत्पन्नश्चतुर्द्धा सम्भविष्यति ॥६०
दारवप्रतिमानानि विश्वकर्मा घटिष्यति । प्रतिष्ठापयिता त्वं हि इन्द्रद्युम्नप्रसादितः
अस्माकं सदृशानां च प्रतिमानांपितामह । तद्रूपका प्रतिष्ठा हि घटना च भविष्यति

इति श्रुत्वा श्रियो वाक्यं चतुर्वक्त्रो यमश्च सः ।
स्वं स्वं पुरं जग्मतुस्तौ मुदा परमया युतौ ॥ ६३ ॥

क्षेत्रस्य महिमानं तं संस्मृत्य च मुहुर्मुहुः । विस्मयेन च हर्षेण रोमाञ्चितविग्रहौ
साम्प्रतं मुनयस्तस्मिन्निन्द्रद्युम्नप्रसादितः । शङ्खचक्रधरः श्रीमान्नीलजीमूतसन्निभः
नीलाचलगुहान्तःस्थो बिभ्रद्दारुमयं वपुः । आस्ते लोकोपकाराय बलेन च सुभद्रया
सुदर्शनेन चक्रेण दारुणा निर्मितेन च । सहितः प्रणतार्तीनां नाशनः करुणार्णवः ॥
यं दृष्ट्वा पापबन्धेन सुदृढेन विमुच्यते । सुकर्मौघपरीपाको युगपत्समुपस्थितः ॥६८

पश्यतां भो मुनिश्रेष्ठास्तापत्रयसुधानिधिम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहवो ह्यवतारा हि विष्णोर्दिव्याश्च मानुषाः ॥ ६९ ॥
अत्यद्भुतानि कर्माणि माहात्म्यं चाऽपि वर्णितम् ।
परिचित्यान्मनुष्यांस्तु न मन्यन्ते सुरा अपि ॥ ७० ॥

देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् । तिरश्चामपि भो विप्रास्तस्मिन्दारुमयेहरौ
सर्वात्मभूते वसति चित्तं सर्वसुखावहे । उपजीवन्त्यस्यसुखंयस्याऽनन्यस्वरूपिणः
ब्रह्मणः श्रुतिवागाहेत्येतदत्राऽनुभूयते । द्यति संसारदुःखानि ददाति सुखमव्ययम् ॥
तस्माद्दारुमयं ब्रह्म वेदान्तेषु प्रगीयते । न हि काष्ठमयी मोक्षं ददाति प्रतिमा क्वचित्
कृतेनाऽकृतता विप्राः कदाचिन्नोपलभ्यते । अकृतो ह्यपवर्गस्तु कृताद्वादारुणः कथम्
अधिष्ठानं विना ब्राह्म्यमैश्वर्यं नोपलभ्यते । रहस्यमेतत्परमं विष्णोः स्थानमनुत्तमम्
अलौकिकी साप्रतिमालौकिकीतिप्रकाशिता । कुत्रश्रुतावादृष्टावाप्रतिमाव्याहरेदिति
इन्द्रद्युम्नाय स वरं तदा दारुवपुर्ददौ । दीनानाथैकशरणं तरणं भववारिधेः ॥ ७८ ॥
चराचर सदावन्द्य चरणं तं परायणम् । नारायणं जगद्योनिं सृष्टिसंहृतिकारणम् ॥
मोक्षणं सर्वपापानां दारणं सकलापदाम् । विभूतीनां विसरणं वरणं सर्वयोगिनाम्
भरणं सर्वजन्तूनां धरणं जगतामपि । भाषणं सर्वभाषाणां दूषणं सर्वदुष्कृताम् ॥
शोषणं सर्वपङ्कानां नीलाद्रिशरणं हरिम् । शरणं प्रयात मुनयो ह्यनन्यशरणं विभुम्

निश्चेष्टो दारुवर्ष्माऽपि दिव्यलीलाविलासकृत् ।
क्षमते स्वल्पभक्त्याऽपि सोऽपराधशतं नृणाम् ॥ ८३ ॥

अत्र वः कथयिष्यामि चरितं पापनाशनम् । लीलया दारुदेहस्य मुनयः परमात्मनः
कुरुक्षेत्रे समुद्भूतौ ब्राह्मणक्षत्रियावुभौ । सखायौ जग्मतुःप्रीत्याएकाहारविहारिणौ

वृत्तच्युतौ निषिद्धानामाहर्त्तारौ विमोहितौ ।
अस्वाध्यायवषट्कारौ स्वधास्वाहाविवर्जितौ ॥ ८६ ॥

अपात्रभूतौ धर्मस्य महापातकदूषितौ । मधुभक्षौ पण्ययोषित्सहवासौ मुदान्वितौ
पारलौकिकचिन्तातुतयोःस्वप्नेऽपिनाऽऽगता । एवंप्रवर्तमानौतावायुशोऽर्द्धंचनिन्यतुः
एकदा भ्रममाणौ तौ यज्ञवाटमगच्छताम् । शृण्वन्तौदूरतःस्तोत्रंशास्त्रशब्दंमनोहरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दृष्ट्वा तास्ताः क्रियाः सर्वाः श्रुतिसञ्चोदिता द्विजाः ।
तौ तदा चक्रतुः श्रद्धां धर्मे वर्त्मन्यधार्मिकौ ॥ ६० ॥
संस्मरन्तौस्वजातिंतौपुण्डरीकाम्बरीषकौ । निन्दन्तौदुश्चरित्रंस्वंपरस्परमभाषताम्
कथमावां तरिष्यावो दुष्कृतार्णवमुल्बणम् । इहैव जन्मन्यजरं बुद्धिपूर्वमुपार्जितम् ॥
न तच्छास्त्रं हि जानाति यदावाभ्यां च दुष्कृतम् ।
सञ्चितं तस्य घोरस्य प्रायश्चित्तं सुदुर्ल्लभम् ॥ ६३ ॥
तथापि ब्राह्मणानेतान्ब्रह्मिष्ठान्वै सदोगतान् ।
प्रणिपातप्रपन्नान्वै पृच्छावोऽत्र च निष्कृतिम् ॥ ६४ ॥
इति निश्चित्य तौ विप्रानभिवाद्याऽभ्यपृच्छताम् ।
यथावत्कल्मषं स्वं स्वं विज्ञाप्य च मुहुर्मुहुः ॥ ६५ ॥
ते तयोर्वचनं श्रुत्वा मीलिताक्षा द्विजोत्तमाः ।
नाऽब्रुवन्किंस्विदन्योन्यं वीक्षन्तो विस्मिताननाः ॥ ६६ ॥
अहो सुघोरकर्माणि सञ्चितानि दुरात्मनोः । येषु शास्त्रंपदं दातुं प्रायश्चित्तायनह्यलम्
शक्नुमोनवयं तस्मादनयमोर्निष्कृताचिति । तेषांमध्येसदोमुख्यःकश्चिद्वैष्णवपुङ्गवः
भगवद्भक्तिमाहात्म्यक्षपिताशेषकल्मषः । तानुवाच विहस्येदं वाक्यं वाक्यविदांवरः

वैष्णव उवाच

भो द्विजक्षत्रदायादपापराशेःसुदारुणात । मुक्तिश्चेद्वाञ्छतस्तूर्णंगच्छतंपुरुषोत्तमम्
क्षेत्रोत्तमं दारुमयो यत्राऽऽस्ते पुरुषोत्तमः । इन्द्रद्युम्नस्य राजर्षेर्भक्त्यानुग्रहकृद्विभुः॥
तमाराध्य जगन्नाथं शङ्खचक्रगदाधरम् । पापक्षयं वामुक्तिंवास्वेच्छयाप्राप्स्यथध्रुवम्
घोरदुष्कृततूलौघदावाग्निसदृशस्तु सः । तपसैतत्क्षयं नेतुं न शक्यं जन्मकोटिभिः
युगपत्संक्षयं याति यंदृष्ट्वासर्वकिल्बिषम् । तन्मा विलम्बं कुरुतंप्रयातंतत्रसत्वरम्
सुपुण्ये चोत्कले देशे दक्षिणार्णवतीरगे । नीलाद्रिशिखरावासं व्रजतं शरणं विभुम्
सोऽभीष्टसिद्धिं वां देवः प्रदास्यति कृपानिधिः ।
इत्यादिष्टौ ततो विप्रक्षत्रियौ हर्षसंयुतौ ॥ १०६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेनैव वर्त्मना विप्राः प्रयातौ पुरुषोत्तमे ॥ १०७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्येजैमिनिऋषिसम्वादे
पुण्डरीकाम्बरीषोद्धारकथावर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

ब्राह्मणक्षत्रियपुण्डरीकाम्बरीषाभ्यांविष्णुरूपदर्शनवर्णनम्

जैमिनिरुवाच ।

निर्विण्णचेतसौ तौ तु त्यक्त्वा वेश्यादिसङ्गतिम् ।
ध्यायंतौ मनसा विष्णुं शुद्धाहारव्रतावुभौ ॥ १ ॥

कालेनकियताप्राप्तौनीलाद्रिनिलयंहरेः । तीर्थराजजले स्नात्वायथावद्विधिचोदितम्
प्रासादद्वारितिष्ठन्तौलाष्टांगंप्रणिपत्यच । भगवन्तंनिरीक्षन्तौ नापश्यतां तदाद्विजाः
विवर्णवदनौ देवमदृष्ट्वा चिन्तयाऽऽकुलौ । आरभेते ह्यनशनं भगवद्दर्शनावधि ॥ ४ ॥

कीर्तयन्तौ भगवतो नाम कल्मषनाशनम् ।
तृतीयस्यां त्रियामायां ज्योतिरेकमपश्यताम् ॥ ५ ॥

त्रीण्यहानिपुनस्तौ चतदोपावसतांस्थिरौ । मध्ये सप्तमरात्रेस्तुभगवन्तमपश्यताम्
त्रिदशानांस्तुतीःश्रुत्वादिव्यज्ञानौबभूवतुः । अपास्तपापनिर्मोकौसाक्षाद्देवमपश्यताम्
शङ्खचक्रगदापाणिं दिव्यालङ्कारभूषितम् । रत्नपादुकयोःपृष्ठे विन्यस्तचरणाम्बुजम्

व्याकोशपुण्डरीकाक्षं प्रसन्नवदनं विभुम् ।
वामपार्श्वे स्थितां लक्ष्मीं वामेनाऽऽलिङ्ग्यबाहुना ॥ ६ ॥

नागवल्लीदलं बद्धमाददानं श्रिया हृतम् । रत्नवेत्रकराः काश्चित्काश्चिच्चामरपाणयः॥
गन्धतैलप्रदीपास्तुरत्नवर्तिप्रदीपिकाः । काश्चिद्दधानाः स्वकरैर्यौवनाढ्याः सुभूषिताः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पश्चाद्रत्नमयं छत्रं बिभ्रती काचिदुज्ज्वला । धूपपात्रं मुखाभ्याशेकृष्णागुरुसुधूपितम्
काचिद्दधाना प्रम्लोचां हसन्तीं विग्रहश्रिया । लीलालकदृशा देवाननुगृह्णन्तमग्रतः

बद्धाञ्जलिपुटान्नम्रकन्धरांस्तुवतः पृथक् ।
सिद्धान्मुनिगणान्दिव्यान्सनकादीन्स्मितेन च ॥ १४ ॥

नारदादींश्च गन्धर्वान्दिव्यगामनोहरान् । दत्तावधानं श्रवणे लीलयैवानुकम्पिनम् ॥

प्रह्लादादीन्वैष्णवाग्र्यान्स्वरूपं ध्यायतोऽग्रतः ।
चित्ताकर्षणसँल्लीनां विदधानं स्वविग्रहे ॥ १६ ॥
वक्षःस्थलप्रविलसत्कौस्तुभप्रतिविम्बितैः ।
देवादिभिर्विश्वरूपमूर्त्तेः स्वस्याः प्रकाशकम् ॥ १७ ॥

उपर्युपरि दिव्यायाःपुष्पवृष्टेरधः स्थितम् । श्रीसन्निधानविगतश्रियमप्सरसां गणम्
पश्यन्तं विविधं नित्यमङ्गहारमनोहरम् । दिव्यलीलाविलासं तं दृष्ट्वातौद्विजबाहुजौ
बभूवतुः क्षणात्सर्वविद्यानांपारगौ द्विजाः । त्रिः परिक्रम्य देवेशं कृताञ्जलिपुटावुभौ

साष्टाङ्गपातप्रणतौ तुष्टुवाते मुदान्वितौ ॥ २० ॥

पुण्डरीक उवाच

नमस्ते जगदाधार! सर्गस्थित्यन्तकारण !। नारायण! नमस्तेऽस्तुपरमात्मन्परायण!
परमार्थस्त्वमेवैको भवाप्यन्यविवर्जितः । नित्यानन्दस्वरूपंत्वांविदन्तिध्यानचक्षुषः
चिन्मात्रं जगतामीशमधिष्ठानं परात्परम् । कथं नु मूढहृदयास्त्वांजानन्तिसुनिर्मलम्
कामार्थलिप्सासम्भ्रान्तचेतसोऽत्यन्तदुःखिनः । गतागतपथेश्रान्ताःसुखभाजःकदाचन
अनुकम्पय मां नाथ ! सुदीनं शरणागतम् । मूढं दुष्कृतकर्माणं पतितं भवसागरे ॥
कोऽन्यस्त्वत्सदृशो बन्धुर्ब्रह्माण्डेनाथवर्त्तते । स्वकर्त्तव्यानपेक्षोयोदीनानाथदयालुकः
उच्चावचभ्रमाद्दुःखं जलयन्त्रघटीमिव । अजस्रमधिकर्त्तारं परित्राहि कृपाम्बुधे ! ॥

योगक्षेमाभिसन्धाना ये मूढास्त्वामुपासते ।
लीलाविमुक्तिदं ते वै त्वन्मायापरिमोहिताः ॥ २८ ॥

नारायणेति त्वन्नाम कीर्तितं तु यदृच्छया । त्वत्तोऽधिकं जगन्नाथचतुर्वर्गैकसाधनम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वं तु तैस्तैः पृथग्यज्ञैस्तास्ताः सिद्धीः प्रयच्छसि ।
त्वमेकः शरणं नाथ! पतितानां भवार्णवे ॥ ३० ॥

ज्ञाननौकासमारूढः करुणाक्षेपणीकरः । परम्पारं प्रभो नेतुं संसाराब्धेर्विचेतनम् ॥
त्वमेक ईशिषे भक्त्याऽनन्ययापरिचिन्ततः । येऽन्येमुक्तिप्रदादेवाःशास्त्रेषुपरिनिष्ठिताः

दुःखाब्धिकुम्भयोनिं ते त्वद्भक्तिं प्रापयन्ति वै ॥ ३३ ॥

तन्मे प्रसीद भगवन्पदकङ्कजे ते भक्तिं दृढां वितर नाथ! भवाब्धिमुच्चैः ।
घोरं सुदुस्तरममुं हि यया तरेयमष्टाङ्गयोगजनितश्रमवर्जितोऽपि ॥ ३४ ॥
धर्मार्थकामनिचयैः कुमतिप्रगृह्यैः क्षुद्रैरमीभिरहितालपसुखैर्न कार्यम् ।
आज्ञापयाऽङ्घ्रिनलिनद्वयचिन्तनेऽद्य सान्द्रानुवर्धितसुखार्णवमज्जनं मे ॥ ३५ ॥
स्तुत्वेत्थं जगदीशस्य पादपद्मान्तिके द्विजः । पपातत्राहिकृष्णेतिवदन्वाष्पार्द्रयागिरा

तस्थौ स पुनरुत्थाय कृताञ्जलिपुटः स्तुवन् ॥ ३७ ॥

अम्बरीष उवाच

प्रसीददेव! सर्वात्मन्नसङ्ख्येयशिरोभुज ।असङ्ख्यघ्राणनयनपाणिपाद! नमोऽस्तुते
षट्त्रिंशत्तत्त्वातीतोऽसि निष्प्रपञ्चप्रपञ्चकः । चतुर्विधजगद्धामविश्वमूर्त्तेनमोऽस्तु ते
एकपादस्त्रिपादश्च तीर्थपादोऽन्तरिक्षपात् । यस्यपादोद्भवागङ्गा पुनाति भुवनत्रयम्
ब्रह्महत्यादिपापानां शोधकं यस्य नाम वै । कीर्तितं सर्वशुभदं नमस्तस्मै शुभात्मने

देव! त्वन्नामकीर्त्याऽपि जायन्ते सर्वसिद्धयः ।
कौतुकात्त्वां हि मृगयन्ति विद्वांसो बुद्धिशालिनः ॥ ४१ ॥

नाथत्वत्पादसलिलं संश्रयात्तापहारकम् । तापत्रयाभिभूतस्य भक्तिं मेऽत्र दृढां कुरु

अनन्यस्वामिनो मेऽद्य नाऽस्त्यन्यत्प्रार्थनीयकम् ।
प्रणिपत्य जगन्नाथ! त्वां प्रयाचे सहस्रधा ॥ ४३ ॥

समस्तपुरुषार्थस्य वीजं त्वत्पादपङ्कजे । यावत्प्राणान्धारयामितावद्भक्तिर्दृढास्तुऽमे
सृष्टिंविनिर्ममे चेमां ययाभक्त्या पितामहः । संहरत्यखिलंरुद्रो लक्ष्मीश्चैश्वर्यदायिनी

दीनानुकम्पिस्तां भक्तिं प्रार्थये नाऽन्यमानसः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनाद्यविद्यापङ्केऽस्मिन्सुदृढे दुस्तरे भृशम् ॥ ४६ ॥

निमग्नस्य जगन्नाथ! निरालम्बं प्रणश्यतः । महामहिम्नस्त्वद्भक्तेर्नान्यदस्तिपरायणम्
श्रुतिस्मृत्यादिसम्भिन्नमार्गाः सम्मोहहेतवः । त्वद्भक्तिमपहायैते न प्रवर्त्तितुमीश्वराः
अनन्यशरणं स्वामिन्ननुकम्पय मां विभो !। इति स्तुवञ्जगन्नाथपादपद्मान्तिके मुदा
पपात दण्डवद्भूमौ प्रसीदेतिवदन्मुहुः । ततस्तेदेवताः सर्वे स्तुत्वासम्पूज्यकेशवम्
तल्लीलापाङ्गसन्तुष्टाःप्रयातास्त्रिदिवम्पुनः । तत उन्मीलितदृशौ पुण्डरीकाम्बरीषकौ

मायया मोहितौ विष्णोः स्वप्नदृष्टमवुध्यताम् ।

यां दृष्ट्वा दिव्यलीलां हि साक्षात्पललचक्षुषा ॥ ५२ ॥

पुनर्मानुषभावौ तौ दिव्यसिंहासनस्थितम् । नीलजीमूतसङ्काशं फुल्लपद्मायतेक्षणम्
शोणाधरश्चारुनासं दिव्यकुण्डलभूषितम् । शङ्खचक्रगदापद्मधारिणं वनमालिनम् ॥

पीनोरस्कश्चारुहारमनर्घ्यमुकुटोज्वलम् ।

श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं दिव्याङ्गदविभूषितम् ॥ ५५ ॥

प्रलम्बबाहुं दीनार्त्तपरित्राणसमुद्यतम् । सुवर्णसूत्रसन्नद्धमध्यग्रन्थिमणीयुतम् ॥

दिव्यपीताम्बरधरं दिव्यस्रग्गन्धभूषितम् ।

स्वर्णपद्मासनासीनं सर्वाङ्गालिङ्गितश्रियम् ॥ ५७ ॥

प्रपन्नसन्तापहरं सुधासागरमुल्वणम् । अशेषवाञ्छाफलदं कल्पवृक्षं सुपुष्पितम् ॥
दक्षपार्श्वस्थितंतस्य ददृशाते हलायुधम् । विभर्त्ति येन ब्रह्माण्डं बलेन महताविभुः
तं वलंनागराजानंफणासप्तकमण्डितम् । कैलासशिखरोत्तुङ्गं धवलं कुण्डलोज्ज्वलम्
विचित्रवनमालाढ्यं दिव्यनीलनिचोलिनम् । सततम्वारुणीक्षीवघूर्णोन्नयनपङ्कजम्
निम्नपृष्ठोन्नतोरस्कं कुण्डलीकृतविग्रहम् । शङ्खचक्रगदापद्मसमुज्ज्वलचतुर्भुजम् ॥
नानाऽलङ्काररुचिरं नतकल्मषनाशनम् । तयोर्मध्येस्थितां भद्रांसुभद्रां कुङ्कुमारुणाम्
सर्वलावण्यवसतिंसर्वदेवनमस्कृताम् । लक्ष्मींलक्ष्मीशहृदयपङ्कजस्थांपृथक्स्थिताम्
वराब्जधारिणीं देवीं दिव्यनेपथ्यभूषणाम् । प्रपन्नकल्पलतिकांसर्वकल्मषनाशिनीम्

संसारार्णवमग्नानां तारिणीं देवतारिणीम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वामपार्श्वस्थितश्विष्णोरुद्राष्टां चक्रमुत्तमम् ॥ ६६ ॥
दार्वग्रनिर्मितश्विप्राः स्वर्णभक्तिसमुज्ज्वलम् ।
चतुर्द्धावस्थितं विष्णुं दृष्ट्वा तौ द्विजवाहुजौ ॥ ६७ ॥
अरुणोदयवेलायांश्रमंसार्थममन्यताम् । संस्मृत्यतांस्वप्नलीलांविस्मयञ्जमतुस्तदा
न दारुप्रतिमाचेयं साक्षाद्ब्रह्मप्रकाशते । सदोगतानाश्विप्राणां वाक्यंश्रद्दधतुश्च तौ
क्वाऽऽवां महापातकिनौ यातनाक्रमभागिनौ ।
क्वेदं सुरसमाक्रान्तस्थितश्विष्णोः प्रदर्शनम् ?॥ ७० ॥
मूर्खयोरावयोरष्टादशविद्याप्रवीणता । यस्मात्तस्मान्नच भ्रान्तिर्ज्ञानं तत्समवादिनः
यदूचुर्दारवं ब्रह्म तीर्थराजतटे स्थितम् । वटमूले प्रकाशन्तं दृष्ट्वा जन्तुर्विमुच्यते ॥
तदेवाऽयं जगन्नाथश्चतुर्द्धा सम्व्यवस्थितः । क्षितौ यदावतरति चतूरूपः प्रकाशते॥
तदाऽस्य सन्निधावावां स्थास्यावः प्राणधारिणौ ।
यावन्नाऽन्यत्र गच्छावः क्षुद्रकामपराङ्मुखौ ॥ ७४ ॥
इति निश्चित्य मुनयो विष्णौ भक्तिपरायणौ ।
नारायणाख्यं सततं जपन्तौ मुक्तिमाऽऽगतौ ॥ ७५ ॥

जैमिनिरुवाच

प्रसङ्गात्कथितं ह्येतद्रहस्यं पापनाशनम् । श्रृण्वन्तियेतु चरितं पुण्डरीकाम्बरीषयोः
सततं कीर्तयन्तश्च मुदा परमया युताः । व्रजन्ति विष्णुनिलयं मुदा परमया युताः
व्रजन्ति विष्णुनिलयं तेऽपि निर्द्धूतकल्मषाः ॥ ७७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यांसंहितायां द्वितीयेवैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
पुण्डरीकाम्बरीषमुक्तिवर्णनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षष्ठोऽध्यायः

ओढ्र (उत्कल) देशवर्णनम्

मुनय ऊचुः

कस्मिन्देशे द्विजश्रेष्ठ! तत्क्षेत्रं पुरुषोत्तमम् । यत्र नारायणःसाक्षाद्दारुरूपी प्रकाशते

जैमिनिरुवाच

उत्कलोनाम देशोऽस्ति ख्यातःपरमपावनः । यत्रतीर्थान्यनेकानिपुण्यान्यायतनानिच
दक्षिणस्योदधेस्तीरे स तु देशःप्रतिष्ठितः । यत्रस्थितावैपुरुषाः सदाचारनिदर्शनाः
वृत्ताध्ययनसम्पन्ना यज्वानो यत्र भूसुराः । सृष्ट्यादौ क्रतवोवेदा वेदशास्त्रप्रवर्तकाः
अष्टादशानां विद्यानांनिधानं सम्प्रकीर्तितम् । गृहे गृहे निवसतिलक्ष्मीर्नारायणाज्ञया

लज्जाशीला विनीताश्च आधिव्याधि विवर्जिताः ।
पितृमातृरताः सत्यवादिनो वैष्णवा जनाः ॥ ६ ॥

नचाऽत्रावैष्णवःकश्चिन्नास्तिकोवाऽपिवर्तते । सर्वेपरहितास्तत्रनलुब्धानशठाःखलाः
दीर्घायुषस्तत्र जनाः स्त्रियश्च पतिदेवताः । सुशीला धर्मशीलाश्चत्रपाचारित्रभूषिताः
रूपयौवनगर्वाढ्याः सर्वालङ्कारभूषिताः । कुलशीलवयोवृत्तानुरूपाचारचञ्चवः ॥ ९ ॥
स्वकर्मनिरतास्तत्र प्रजारक्षणदीक्षिताः । क्षत्रिया दानशौण्डाश्चशस्त्रशास्त्रविशारदाः
यजन्ते क्रतुभिः सर्वे सततं भूरिदक्षिणैः । दीप्यन्ते चित्तयोयेषांयूपाःकाञ्चनभूषिताः

येषां गृहेष्वतिथयः कामनाधिकपूजिताः ।
वैश्याश्च कृषिवाणिज्यगोरक्षावृत्तिसंस्थिताः ॥ १२ ॥

देवान्गुरून्द्विजान्भक्त्याप्रीणयन्तिधनैरपि । एकस्यद्वारियातोऽर्थीनगच्छेदन्यवेश्मनि
गीतकाव्यकलाशिल्पकुशलाःप्रियवादिनः । शूद्राश्चधार्मिकास्तत्रस्नानदानक्रियारताः
कर्मणा मनसा वाचा धनैश्चद्विजसेवकाः । येऽन्येसङ्करजातास्तेस्वेस्वेधर्मेप्रतिष्ठिताः
न विपर्यन्ति ऋतवो नाऽकाले वर्षते घनः । न सस्यहानिर्नमरुत्क्षुन्नपीडयति प्रजाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुर्भिक्षमरके नाऽत्र राष्ट्रभङ्गः प्रजायते ।
नाऽलभ्यं तत्र वस्त्वस्ति यत्किञ्चित्पृथिवीगतम् ॥ १७ ॥

एवं सर्वगुणैर्युक्तो नानाद्रुमलताकुलः । अर्जुनाशोकपुन्नागतालहिन्तालशालकैः ॥१८
प्राचीनामलकैर्लोध्रैर्वकुलैर्नागकेशरैः । नारिकेलैः प्रियालैश्च सरलैर्देवदारुभिः ॥ १६ ॥
धवैश्च खदिरैर्बिल्वैः पनसैश्च कपित्थकैः । चम्पकैः कर्णिकारैश्चकोविदारैःसपाटलैः
कदम्बनिम्बनिचुलरसालामलकैस्तथा । नागरङ्गैश्च जम्बीरैर्नीपकैर्मातुलुङ्गकैः ॥
मन्दारैः पारिजातैश्च न्यग्रोधागुरुचन्दनैः । खर्जूराम्रातकैः सिद्धैर्मुचुकुन्दैः सकिंशुकैः
तिन्दुकैः सप्तपर्णैश्च अश्वत्थैश्च विभीतकैः । अन्यैश्च विविधैर्वृक्षैःप्रकीर्णःसुमनोहरैः
मालतीकुन्दबाणैश्च करवीरैः सितेतरैः । केतकीवनषण्डैश्च अतिमुक्तैः सकुब्जकैः ॥
एलालवङ्गकङ्कोलदाडिमैर्बीजपूरकैः । श्रेणीकृतैः पूगवनैरुद्यानैः शतशो वृतः ॥ २५ ॥
नानाद्रुमलताकीर्णःपर्वतैः सिन्धुभिर्वृतः । स एषदेशप्रवर उत्कलाख्यो द्विजोत्तमाः॥

ऋषिकुल्यां समासाद्य दक्षिणोदधिगामिनीम् ।
स्वर्णरेखामहानद्योर्मध्ये देशः प्रतिष्ठितः ॥ २७ ॥

सन्त्यत्र पुण्यायतने क्षेत्राणि सुबहून्यपि । पूर्वंवस्तीर्थयात्रायांवर्णितानिमयाद्विजाः
भूस्वर्गः साम्प्रतं ह्येष कथितः पुरुषोत्तमः ॥ २८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्य ओढ्र (उत्कल) देशवर्णनंनाम-षष्ठोऽध्यायः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तमोऽध्यायः

मालवाधिपतेरिइन्द्रद्युम्नस्यकेनचित्तीर्थाटनव्यग्रेणजटिलेनवार्तालापवर्णनम्

मुनय ऊचुः

कस्मिन्युगे स तुनृप इन्द्रद्युम्नोऽभवन्मुने । कस्मिन्देशेऽस्यनगरंकथंचापुरुषोत्तमम्
गत्वा च विष्णोःप्रतिमांकारयामासवाकथम् । एतत्सर्वंविस्तरतःकथयस्व महामुने
याथातथ्येन सर्वज्ञ ! परं कौतूहलं हि नः ॥ ३ ॥

जैमिनिरुवाच

साधु साधु द्विजश्रेष्ठा यत्पृच्छध्वं पुरातनम् । सर्वपापहरं पुण्यं भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्
चरितं तस्य वक्ष्यामि तथावृत्तं कृते युगे । शृणुध्वं मुनयःसर्वेसावधानाजितेन्द्रियाः
आसीत्कृतयुगे विप्रा इन्द्रद्युम्नो महान्नृपः । सूर्यवंशे स धर्मात्मा स्रष्टुः पञ्चमपुरुषः
सत्यवादी सदाचारोऽवदातः सात्त्विकाग्रणीः ।
न्यायात्सदा पालयति प्रजाः स्वा इव स प्रजाः ॥ ७ ॥

अध्यात्मविज्ञानशौण्डःशूरःसङ्ग्रामवर्द्धनः । सदोद्यतःसदाविप्रपूजकःपितृभक्तिमान्
अष्टादशसु विद्यासु बृहस्पतिरिवाऽपरः । ऐश्वर्येण सुराधीशः कुबेरः कोषसञ्चये ॥
रूपवान्सुभगः शीलीदाता भोक्ता प्रियम्वदः । यष्टासमस्तयज्ञानांब्रह्मण्यःसत्यसङ्गरः
वल्लभो नरनारीणां पौर्णमास्यां यथा शशी । आदित्य इव दुष्प्रेक्ष्यःशत्रुपक्षक्षयङ्करः
वैष्णवः सत्यसम्पन्नो जितक्रोधो जितेन्द्रियः । राजसूयंक्रतुवरंवाजिमेधसहस्रकम्
इयाज परमः श्रीमान्मुमुक्षुर्धर्मतत्परः । एवं सर्वगुणोपेतः स पृथ्वीं पालयन्नृपः ॥१३
अवन्तींनाम नगरीं मालवे भुवि विश्रुताम् । उवास सर्वरत्नाढ्यांद्वितीयाममरावतीम्
तत्र स्थितो नरपतिर्विष्णौभक्तिमनुत्तमाम् । चकार मनसा वाचा कर्मणापरमाद्भुताम्
एवं प्रवर्तमानोऽसौ कदाचिच्छ्रीपतेर्विभोः । पूजासमयमासाद्य देवार्चनगृहान्तरे ॥
विद्वद्भिःकविभिश्चैवतीर्थयात्राप्रसिद्धिभिः । दैवज्ञैःश्रोत्रियैःसार्द्धंपुरोहितमवस्थितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आहूतो व्याजहारेदं ज्ञायतां क्षेत्रमुत्तमम् । यत्रसाक्षाज्जगन्नाथं पश्यामोऽनेन चक्षुषा
एवमुक्तो नृपाग्र्येण वैष्णवेन पुरोहितः । तीर्थयातृव्रजं पश्यन्नुवाच प्रश्रितं वचः ॥

भोभोस्तीर्थाटनव्यग्रा धार्मिकास्तीर्थकोविदाः !।
यदादिशति देवोऽयं युष्माभिस्तच्छ्रुतं किल ॥ २० ॥

विज्ञाय तस्याऽभिप्रायं कश्चित्सुबहुतीर्थगः । उवाचवाग्मीराजानंबद्धाञ्जलिपुटं मुदा
राजन्ननेकतीर्थानिव्यचारिषमहं प्रभो !। आशैशवात्क्षितितले श्रुतान्यन्यैस्तु यानि वै
ओढदेशइतिख्यातो वर्षे भारतसञ्ज्ञिते । दक्षिणस्योदधेस्तीरेक्षेत्रं श्रीपुरुषोत्तमम्
यत्र नीलगिरिर्नामसमन्तात्काननावृतः । तस्योत्सङ्गेकल्पवृक्षःसमन्तात्क्रोशसंमितः

तस्य छायां समाक्रम्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
तस्य पश्चाद्दिशि ख्यातं कुण्डं रौहिणसञ्ज्ञितम् ॥ २५ ॥
तत्पूर्णं कारुणाम्भोभिः स्पर्शनादेव मुक्तिदम् ।
तस्य प्राक्तटमास्थाय नीलेन्द्रमणिनिर्मिता ॥ २६ ॥

तनुः श्रीवासुदेवस्य साक्षान्मुक्तिप्रदायिनी । तत्र कुण्डेतुयःस्नात्वाद्दृष्ट्वातुपुरुषोत्तमम्
अश्वमेधसहस्रस्य फलं प्राप्य विमुच्यते । तत्राऽऽस्त आश्रमश्रेष्ठःख्यातःशबरदीपकः
पश्चिमस्यां दिशिविभोर्वेष्टितःशबरालयैः । यस्मादेकपदीमार्गोयेनविष्ण्वालयंव्रजेत्

यत्र साक्षाज्जगन्नाथः शङ्खचक्रगदाधरः ।
जन्तूनां दर्शनान्मुक्तिं यो ददाति कृपानिधिः ॥ ३० ॥

तत्रोषितं मया राजन्वर्षं श्रीपुरुषोत्तमे । तुष्ट्यर्थं देवदेवस्य व्रतिना वनवासिना ॥
प्रतिरात्रं भगवतो दर्शनाय दिवौकसाम् । आगतानां महाराज! दिव्यगन्धोह्यमानुषः
नानास्तुतिवचःकल्पपुष्पवृष्टिश्चलभ्यते । महिमैष न कुत्राऽपिविष्णोःस्थानेप्रकाशते
पौराणिकी प्रवृत्तिश्च श्रुतातत्र महीपते !। वायसो माधवं दृष्ट्वा तिर्यग्देहोऽपिमुच्यते
नाऽधिकारी पुण्यकृत्येज्ञानहीनोऽपिपार्थिव !। तृषार्त्तो रौहिणेकुण्डेजलंपातुंसमागतः

त्यक्त्वा कालवशात्प्राणान्विष्णुसारूप्यमाप्तवान् ।
अहमासं पुरा मूर्खस्तत्प्रसादात्तु साम्प्रतम् ॥ ३६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टादशसुविद्यासुशेषोवास्यान्ममापरः । मतिश्चनिर्मलाजाताविष्णोःपश्यामिनापरम्
त्वं यस्माद्विष्णुभक्तोऽसिसततंचदृढव्रतः । अतस्तवोपदेशार्थमागतोऽहंतवान्तिकम्
नो धनं न चभूमिंचत्वत्तःसम्प्रार्थ्यतेऽधुना । व्यलीकमेतन्मावुद्ध्वातत्रस्थंश्रीधरंभज
एवमुक्त्वा तु जटिलः सर्वेषां पश्यतां तदा । अन्तर्द्धानंजगामाशुराजापरमविस्मयम्

अवाप्य व्याकुलमतिः कथं मे निर्वहेदिति ।
पुरोहितमुवाचेदं तस्यैवाऽर्थस्य साधने ॥ ४१ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

अमानुषमिदंवृत्तं श्रुत्वेदानीममानुषात् । बुद्धिस्त्वरयते तत्र यत्रास्तेऽसौ गदाधरः
मम धर्मार्थकामाहित्वदायत्ताद्द्विजोत्तम । अविरुद्धास्त्वत्प्रसादात्त्रिवर्गःसाधितोमया
इदानींचेद्द्विजश्रेष्ठत्वमत्रार्थेगमिष्यसि । चतुर्वर्गस्तुसम्पूर्णःप्राप्तःस्यात्साम्प्रतम्मया

पुरोहित उवाच

वाढमेतत्करिष्यामि यथा द्रक्ष्यसि केशवम् ।
चर्माच्छादितचक्षुर्भ्यां साक्षान्मुक्तिप्रदम्विभुम् ॥ ४५ ॥

एवमत्र यतिष्यामि तत्र सर्वे यथा वयम् । वत्स्यामः ससहायाश्चक्षेत्रे श्रीपुरुषोत्तमे
साफल्यंकिमतोराजन्नन्मिनोजन्मनोभवेत् । पुरुषन्तमसःपारंसाक्षाद्द्रक्ष्यसिमाधवम्
भ्राताविद्यापतिर्नामकनीयान्मे व्रजिष्यति । देशभ्रमणशीलैश्च चारैः सह तवाऽधुना॥
तत्र गत्वा जगन्नाथं दृष्ट्वा स हि गिरौयथा । कण्टकावाससंस्थानम्भूप्रदेशम्प्रमीयच
तूर्णम्प्रवृत्तिमानेताश्रेयोऽस्माकम्भविष्यति । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा पुनरुवाचह

इन्द्रद्युम्न उवाच

साधु ब्रह्मन्समाधाय व्यवसायोविचारितः । अहम्प्रथमतोऽप्येतच्छ्रुत्वैव कृतनिश्चयः
तत्र क्षेत्रे भगवतः सन्निधौ निवसाम्यहम् । तद्गच्छतु तव भ्रातायथेष्टं साधयिष्यति
इत्युक्त्वाऽन्तःपुरं राजाप्रविवेशमुदान्वितः । पुरोहितोऽपि तान्सर्वान्यथावदनुपूर्वशः
राजाज्ञया पूजयित्वा प्राहिणोत्स्वं स्वमाश्रमम् । भ्रातरंसुमुहूर्ते च दैवज्ञकृतनिश्चये॥
प्रस्थापयामासतदा कृतस्वस्त्ययनंद्विजैः । अपसर्पैःप्रत्ययिकैः पुष्पस्यन्दनमास्थितः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततः सम्प्रस्थितो विप्राः! स तु विद्यापतिर्द्विजः ।
मनसा चिन्तयामास मध्ये स्यन्दनमास्थितः ॥ ५९ ॥

अहो मे सफलं जन्म सुकल्या शर्वरी च मे । द्रक्ष्यामि यद्भगवतो मुखपद्ममघापहम् ॥
श्रवणाद्यैरुपायैर्यं यतमाना अहर्निशम् । पश्यन्ति यतयश्चेतःपुण्डरीके व्यवस्थितम्
तमद्य नीलशिखरेश्शृङ्गस्थंविभ्रतम्वपुः । वपुः सम्बन्धहरणंसाक्षाद्द्रक्ष्यामिचक्रिणम्

श्रुतिस्मृतीहासपुराणवाक्यैर्यद्रूपमास्थापयितुं न शक्यम् ।
तच्छ्रीनिधे रूपमदृष्टपूर्वं दृष्ट्वा तरिष्यामि भवाम्बुराशिम् ॥ ६० ॥
यन्नामसङ्कीर्तनतस्त्रिधांहः सङ्घः प्रणाशं स्मरतां प्रयाति ।
तमद्य विश्वेश्वरमप्रमेयं साक्षात्करिष्यामि गिरौ वसन्तम् ॥ ६१ ॥
यत्पादपद्मानन्नुसंहितस्य पदे पदे दुःखमुपार्जितस्य ।
तमः प्रकाण्डप्रभवं कदाचिन्नात्माश्रितं कर्मभिरेति नाशम् ॥ ६२ ॥
आराध्य सूक्ष्मं स्वगुहानिवासं यं पञ्चकोषावृतमात्मसंस्थम् ।
वेदान्तगीराह न चाऽपि वेद वन्दे स्वविद्यैकनिवेद्यमाद्यम् ॥ ६३ ॥
ब्रह्माण्डमालाकलितानुरोमं सहस्रमूर्द्धाङ्घ्रिदृशं पुराणम् ।
निःश्वासवातोत्थितवेदराशिं सर्वप्रपञ्चेशमहं प्रपद्ये ॥ ६४ ॥
यन्मायया निर्मितकूटमेतत्सृष्टिक्षयस्थानविलासिरूपम् ।
निरूपिताऽऽरोपितहेयरूपस्वरूपहीनं प्रणवस्वरूपम् ॥ ६५ ॥
तिर्यक्तृषाशान्तिनिमित्ततोऽपि यदृच्छया यत्सविधं प्रयातः ।
देहेन तेनैव सरूपमुक्तिमवाप तं दृष्टिपथं करिष्ये ॥ ६६ ॥
अहो अहो मे खलु भाग्यशंसी यत्कोटिजन्मार्जितपुण्य एकः ।
समुत्थितो मे खलु चर्मदृग्भ्यां विलोकयिष्ये जगदादिकन्दम् ॥ ६७ ॥

इत्थं सञ्चिन्तयन्विप्रः प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना । अतीतं बहुमध्वानं नाबुध्यद्रथवेगतः ॥
दिनमध्ये व्यतिक्रान्ते लम्बितेबहुवासरे । वर्त्मन्यदृश्यताऽग्रे तु देशो भुवनमण्डनः
ओढसञ्ज्ञस्तुभोविप्राःक्षितिमण्डलपावनः । इत्थंपश्यन्वनान्तानिगिरिदुर्गांश्चमार्गगान्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूर्यास्तमनवेलायां महानद्यास्तटेऽभवत् ॥ ७० ॥
अवरुह्य रथाद्विप्रःकृत्वाचाह्निकमादृतः । उपास्य पश्चिमांसन्ध्यांदध्यौसमधुसूदनम्
रथपृष्ठेस्थितोरात्रिं गमयित्वात्वरान्वितः । महानदीं समुत्तीर्यप्रातःकृत्यंसमाप्यसः
चिन्तयन्नेव गोविन्दं प्रतस्थे रथमास्थितः ।
पश्यन्भगवतो मार्गं श्रोत्रियाणां हि यज्वनाम् ॥ ७३ ॥
वह्निवर्चस्विनाम्विप्राग्रामान्पूगैरलंकृतान् । विलङ्घ्यैकाम्रमकवनंयावदायातिसद्विजः
शङ्खचक्रगदापद्मधारिणो ददृशे जनान् । जन्मान्तरितमात्मानं वुबुधे दिव्यरूपिणम्
अवरुह्य रथात्तूर्णं साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च । हर्षाश्रुपूर्णनयनो नाऽन्यत्किञ्चिदपश्यत ॥
केवलं मनसा विष्णुं पश्यन्वाह्ये च भो द्विजाः ! ।
एवं व्रजन्यदा विप्रो ध्यायन्पश्यन्स्तुवन्हरिम् ॥ ७७ ॥
अपश्यत्काननाकीर्णंकल्पन्यग्रोधभूषितम् । नीलाचलंलिखन्तंखं पश्यताम्पापनाशनम्
अत्यद्भुतं निवसतिं साक्षात्तनुभृतो हरेः । उपत्यकायामारूढः समन्तान्मार्गयन्द्विजः
मार्गं न लेभे विप्रोऽसौ मुकुन्दालोकनोत्सुकः ।
असुप्यत ततो भूमौ कुशानास्तीर्य वाग्यतः ॥ ८० ॥
दर्शने तस्य देवस्य तमेव शरणं ययौ । ततः शुश्राव वचनं गिरेः पश्चादमानुषम् ॥
भगवद्भक्तिविषयं सँल्लापं कुर्वताम्मिथः । ततो विद्यापतिर्हृष्टोऽनुसरंस्तञ्जगाम वै ॥
ददर्श शबरागारैर्वेष्टितं परितो द्विजाः । क्षेत्रस्य द्वीपसंस्थानं ख्यातं शबरदीपकम्
तत्र गत्वाशनैर्विप्रःप्रविश्यविनयान्वितः । ददर्श विष्णुभक्तांस्ताञ्छङ्खचक्रगदाधरान्
प्रणम्य शिरसाविप्रस्तस्थौवद्धाञ्जलिस्तदा । ततोविश्वावसुर्नाम शबरः पलिताङ्गकः
अवसायहरेः पूजांपूजाशेषोपशोभितः । सम्प्राप्तोगिरिमध्यात्तुतस्मिन्नेवक्षणेद्विजाः
आलोक्य तं द्विजो हर्षमुपयानो व्यचिन्तयत् ।
एष प्राप्तो हरेः स्थानाच्छ्रान्तो निर्माल्यभूषितः ॥ ८७ ॥
वैष्णवाग्रय इतो वार्तां विष्णोः प्राप्स्यामि दुर्लभाम् ।
चिन्तयन्नेव विप्रोऽसौ शबरेणाऽभ्यभाषत ॥ ८८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शवर उवाच

कुतः समागतो विप्र ! काननान्तं सुदुस्तरम् ।

क्षुतृड्भिरतिश्रान्तश्च सुखमत्राऽऽस्यताश्चिरम् ॥ ८६ ॥

पाद्यमासनमर्घ्यञ्च दत्त्वा विश्वावसुर्द्विजम् । उवाचप्रश्रयगिरा प्रस्तुतं प्रतिपादयन्

फलैः पाकेन वा विप्र! प्राणयात्रा भवेत्तव । यत्तुभ्यं रोचते तद्वै दीयतेऽत्रमया द्विज

भाग्यं ममाऽद्य भगवञ्जीवितं सफलञ्च मे ।

प्राप्तोऽसि मद्गृहं विप्र साक्षाद्विष्णुरिवाऽपरः ॥ ९२ ॥

इतिब्रुवाणं शवरं प्रोवाच द्विजपुङ्गवः । न मे फलैर्न पाकेन कार्यं वैष्णवपुङ्गव !॥

यदर्थमागतं दूरात्साधो! तत्सफलं कुरु । इन्द्रद्युम्नस्य नृपतेरवन्तिपुरवासिनः ॥९४

पुरोहितोऽहं सम्प्राप्तो विष्णोर्दर्शनलालसः ।

राजाऽग्रे तैर्थिकानां हि समाजावसरे श्रुतम् ॥ ९५ ॥

तीर्थक्षेत्रप्रसङ्गेन केनचित्प्रस्तुतं तदा । तथा निवेदितं क्षेत्रं राजाग्रे जटिलेन वै ॥

आनुपूर्व्याच्च तत्सर्वं कथयामास स द्विजः । एतदर्थमहं साधो राज्ञा चोत्कण्ठितेनवै

प्रेषितोऽहं हरिं द्रष्टुमत्रस्थं नीलमाधवम् ।

दृष्ट्वा यावन्नरपतेर्वार्त्तां नेष्यामि सोऽप्यहम् ॥ ९८ ॥

निराहारो ध्रुवं साधो ! तन्मां विष्णुं प्रदर्शय ॥ ९९ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे इन्द्रद्युम्न-पुरोहितस्यनीलमाधवदर्शनार्थंगमनवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

——:०:——

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टमोऽध्यायः

पुरुषोत्तमक्षेत्रेब्राह्मणस्यशबरेणसहगमनम्

जैमिनिरुवाच

इत्युक्तस्तेन विप्रेणशबरश्चिन्तयाकुलः । अस्माकमुपजीव्योऽसौरहस्यस्थोजनार्दनः
उपस्थितं नो दुर्दैवंयेनस्यात्सार्वलौकिकः । नदर्शयामिचेद्विप्रंशापंमेऽसौ प्रदास्यति
सर्वेषां ब्राह्मणो मान्यो विशेषादतिथिस्त्वयम् ।
यस्मिन्विफलकामे तु द्वौ लोकौ विफलौ मम ॥ ३ ॥
एवं विचारयन्विश्वावसुः शबरपुङ्गवः । जनप्रवादं सस्मार पुराणं शबरालये ॥ ४ ॥
अस्मिन्नन्तर्हिते देवे भूम्यन्तर्लीनमाधवे । इन्द्रद्युम्नो नरपतिः शक्रतुल्यपराक्रमः ॥ ५
मनुष्यवपुषा यो वै ब्रह्मलोकं व्रजेदपि । सोऽस्मिन्प्रजाभिरागत्य वाजिमेधशतेन च
इष्ट्वादारुमयंविष्णुंचतुर्द्धास्थापयिष्यति । अस्यचेद्भाग्यमुत्पन्नंब्राह्मणस्याऽतिथेर्भृशम्
अन्तर्द्धानं भगवतः सन्निधानमथो भवेत् । तदेनंदर्शयिष्यामिनीलेन्द्रमणिमच्युतम्
न पौरुषेयं कस्याऽपि कर्तव्ये दैवनिर्मिते । इत्थं विचार्य मनसा शबरश्च पुनः पुनः ॥
उवाच विप्रं पुरतो ध्यायन्तं विष्णुमव्ययम् ॥ १० ॥

शबर उवाच

अस्माभिः पूर्वतोऽप्येष उदन्तः श्रुत एव हि । इन्द्रद्युम्नोनरपतिरत्र वासं करिष्यति
ततोऽपिभाग्यवांस्त्वंहियदग्रेनीलमाधवम् । चक्षुषापश्यसेब्रह्मन्नेहियामोह्यधित्यकाम्
इत्युक्त्वा तं करे धृत्वा वर्त्मना गहनं ययौ । उपर्युपर्युपारुह्य शिलाविषमवर्त्मनि ॥
एकैकनरगम्ये च कण्टकाचितदुर्गमे । तमः प्राये पथि गतं बोधयन्वचसा द्विजम् ॥
मुहूर्ताभ्यांरौहिणस्यकुण्डस्याविशतांतटे । तंदृष्ट्वासोऽब्रवीद्विप्रंकुण्डमेतद्द्विजोत्तम
रौहिणाख्यं महत्तीर्थं कारणं सर्वपाथसाम् । अत्रस्नात्वा नरो यातिवैकुण्ठभवनंद्विज
एतस्यपूर्वभागेऽसौकल्पच्छायावटोमहान् । छायांयस्यसमाक्रम्यब्रह्महत्यांव्यपोहति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एतयोरन्तरे ब्रह्मन्निकुञ्जाभ्यन्तरे स्थितम् । पश्यसाक्षाज्जगन्नाथं वेदान्तप्रतिपादितम्
दृष्ट्वा जहीहि सकलं विविधं पापसञ्चयम् । इत ऊर्ध्वं न शोचस्वपतितो भवसागरे

जैमिनिरुवाच

सतु कुण्डेद्विजःस्नात्वासम्प्रहृष्टमनाः सुधीः । दूरात्प्रणम्यशिरसामनसावचसाहरिम्
तुष्टाव चैकाग्रमना हर्षगद्गदया गिरा ॥ २१ ॥

विद्यापतिरुवाच

प्रधानपुरुषातीत! सर्वव्यापिन्परात्पर !। चराचरपरीणाम ! परमार्थ ! नमोऽस्तु ते ॥
श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहाससम्प्रतिपादितैः । कर्मभिस्त्वं समाराध्य एक एव जगत्पते
त्वत्त एतज्जगत्सर्वं सृष्टौ सम्पद्यतेविभो !। त्वदाधारमिदं देव ! त्वयैव परिपाल्यते
कल्पान्ते संहृतं सर्वं त्वत्कुक्षौ सावकाशकम् ।
सुखं वसति सर्वात्मन्नन्तर्यामिन्नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥
नमस्ते देवदेवाय त्रयीरूपाय ते नमः । चन्द्रसूर्यादिरूपेण जगद्भासयते सदा ॥ २६॥
सर्वतीर्थमयीगङ्गायस्य पादाब्जसङ्गमात् । पुनाति सकलाँल्लोकांस्तस्मै पावयतेनमः
हवींषि मन्त्रपूतानि सम्यग्दत्तानि वह्निषु । परिणामकृते तुभ्यं जगज्जीवयते नमः ॥
यदंशमुपजीवन्ति जगन्त्यानन्दरूपिणः । सर्वकल्मषहीनाय तस्मै ब्रह्मात्मने नमः ॥
निर्मलाय स्वरूपाय शुभरूपायमायिने । सर्वसङ्गविहीनाय नमस्ते विश्वसाक्षिणे ॥
बहुपादाक्षिशीर्षास्यबाहवे सर्वजिष्णवे ।
सर्वजीवस्वरूपाय नमस्ते सर्वरूपिणे ॥ ३१ ॥
नमस्ते कमलाकान्त नमस्ते कमलासन !। नमः कमलपत्राक्ष त्राहि मां पुरुषोत्तम !॥
असारसंसारपरिभ्रमेण निपीड्यमानं खलु रोगशोकैः ।
मामुद्धराऽस्माद्भवदुःखजातात्पादाब्जयोस्ते शरणं प्रपन्नम् ॥ ३३ ॥

जैमिनिरुवाच

इति स्तुत्वा सुरेशानं देवं प्रणवरूपिणम् । प्रणतः प्रणवं मन्त्रं जजाप पुरतो हरेः ॥
जपान्ते शान्तमनसं कृताञ्जलिमुपस्थितम् । मन्यमानं कृतार्थंस्वंप्रोवाचशबरोद्विजम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विश्वावसुरुवाच

कृतार्थस्त्वं प्रभुं दृष्ट्वा साम्प्रतं द्विजपुङ्गव !।
दिनान्तोऽभूद्गृहं यावः क्षुधितोऽसि श्रमान्वितः ॥ ३६ ॥
वासोऽप्यरण्ये हिंस्राणां नाऽस्माकमुचिता स्थितिः ।
यावद्भानोर्भान्ति भासस्तावद्यामो निजालयम् ॥ ३७ ॥

इत्युक्त्वा ब्राह्मणंपाणौगृहीत्वाशवरःपुनः । आजगामद्विजश्रेष्ठाःस्वाश्रमंत्वरयान्वितः
ब्राह्मणोऽपि जगन्नाथं ध्यायन्नानन्दसागरम् । क्षुत्तृषाश्रमजातानि दुःखानि वुबुधेनहि
शिलाविषममार्गेऽपि कण्टकोत्करदुर्गमे । व्रजन्न दुःखं लेभेऽसौ शरीरानास्थयामुदा
एवं व्रजन्तौ तौ विप्रशवरौ शवरालयम् । सायाह्नेतमनुप्राप्तौवैष्णवाग्र्यौतुभोद्विजाः

तत्राऽतिथिमनुप्राप्तं ब्राह्मणं शवरोत्तमः ।
भक्ष्यभोज्यविधानैश्च विविधैः समपूजयत् ॥ ४२ ॥

ततोऽभितृप्तस्तद्दत्तैरुपचारैर्नृपोचितैः । विस्मयं परमं लेभे शवरस्य सुदुर्लभैः ॥४३
शवरोऽयं निवसति विषमे काननान्तरे । आरण्यकैर्वर्त्तमानः कथमस्य गृहान्तरे ॥
राजार्हभक्ष्यभोज्यानि सुलभान्यद्भुतं महत् । इति विस्मयमापन्नं ब्राह्मणं शवरस्तदा

प्रोवाच स्निग्धवचसा विनयावनतो भृशम् ॥ ४६ ॥

शवर उवाच

भो विप्र ! श्रमहीनोऽसि कच्चित्क्षुत्तृड्विवर्जितः ।
आरण्यकानां भवने नागराणां कुतः सुखम् ॥ ४७ ॥

अज्ञाता नागरी वृत्तिः शवरैस्तु विशेषतः । राजोपजीविनांश्रेष्ठौराजामात्यपुरोहितौ
तयोराजसमः पूज्यः पुरोधाः शास्त्रसम्मतः । इन्द्रद्युम्नो नरपतिःसार्वभौमःप्रतापवान्
त्वयि तुष्टे स सन्तुष्टोध्रुवंविप्रभविष्यति । इत्युक्तवत्यरण्यस्थे सतु प्रीततरोद्विजः

उवाच शवरम्प्रीत्या विनयाद्भुतवादिनम् ॥ ५० ॥

विद्यापतिरुवाच

साधो मदुपचाराय हृतान्येतानियानि ते । वस्तून्यमानुषाणीह यान्यदृष्टानिराजभिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चित्रमेतद्दिव्यवस्तुसञ्चयः शबरालये । एतत्ख्यातुं कौतुकं मे साधो!सम्वर्द्धतेमहत्

शबर उवाच

एतत्प्रकाशितुंविप्रमतिर्नोत्सहते मम । तथापि ते द्विजश्रेष्ठाऽतिथिभक्त्यावदाम्यहम्
शक्रादयो देवगणाः समायान्त्यन्वहं द्विज !। दिव्योपचारानादाय पूजनाय जगत्पतेः
पूजयित्वाजगन्नाथंस्तुत्वानत्वाचभक्तितः । गीतवादित्रनृत्यैश्चसन्तोष्यपुरुषोत्तमम्
पुनः प्रयान्ति सततं त्रिदिवं सुरसत्तमाः ।
दिव्यान्येतानि वस्तूनि निर्माल्यानि जगत्पतेः ॥ ५६ ॥
दत्तानितुभ्यम्विदुषेकथंविस्मयतेभवान् । विष्णोनिर्माल्यभोगेन क्षीणरोगजरावयम्
सपुत्रबान्धवाः सर्वे निवसामोऽयुतायुषः । विष्णुनिर्माल्यभोगेन क्षीयते पापसंहतिः
न तच्चित्रं द्विजश्रेष्ठ येन स्यान्मुक्तिभाजनम् । श्रुत्वैतद्दुर्लभं कर्म ब्राह्मणोरोमहर्षणः
आनन्दाश्रुविलुप्ताक्षः स्वं कृतार्थममन्यत । अहोशबरजन्माऽसौ पश्यत्यव्ययमीश्वरम्
तदुच्छिष्टं दिव्यभोगमुपभुङ्क्ते दिवानिशम् ।
नान्योऽस्य सदृशो लोके पृथिव्यां सचराचरे ॥ ६१ ॥
यादृशो विष्णुभक्तोऽयं शबरो नीलपर्वते । किंगत्वास्वगृहेमेऽद्यकुटुम्बेनाऽसुखात्मना
अनेन सख्यं निष्पाद्य स्थास्याम्यत्र वनान्तरे ।
चिन्तयित्वा चिरं विप्रः श्रीकृष्णासक्तमानसः ॥ ६३ ॥
पुनः प्रोवाच शबरं मयि ते चेदनुग्रहः । साधो! सख्यंत्वयाकार्यमितिमेनिश्चयोमहान्
किं गत्वा सेवयाराज्ञः परत्राऽसुखहेतुना । अत्र स्थित्वा त्वयासार्धमुपास्यमधुसूदनम्
यथा पुनर्देहबन्धो यतिष्ये न भवेन्मम । साधु मित्रत्वयासार्द्धंभाग्यान्मेसङ्गमोऽभवत्
दुस्तारं भवसंसारं तरिष्ये त्वत्प्रसादतः । सारमेतत्प्रशंसन्ति संसारे भवसागरे ॥
यद्वैष्णवेन मित्रत्वं दुःखसंसारपारदम् । मित्रस्य सहवासेन पुनः प्रत्यक्षमेष्यति ॥
भगवान्पुण्डरीकाक्षः शङ्खचक्रगदाधरः । इन्द्रद्युम्नो नरपतिर्मयि प्रत्यागते सखे ॥६८॥
भगवन्तं समाराद्धुमिहैव स निवत्स्यति । प्रासादं विपुलं चात्रचिकीर्षुर्भगवत्प्रियम्
सहस्रमुपचाराणां पूजनाय जगत्पतेः । रचयिष्यामीति महत्प्रतिज्ञाऽऽसीन्महीपतेः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रतिश्रुतं तत्पुरतः प्रीतस्तन्मेऽनुमन्यताम् ॥ ७२ ॥

शवर उवाच

सखे ! पुरातनी वार्त्ता प्रसिद्धैवाऽत्र तादृशी ॥ ७३ ॥

त्वया यथैव कथित इन्द्रद्युम्नसमागमः । केवलं माधवं तत्र न द्रक्ष्यति महीपतिः ॥
अचिरादेव भगवान्स्वर्णवालुकयावृतः । प्रतिजज्ञे यमायैतदन्तर्द्धानं गमिष्यति ॥७५
महाभाग्यपरीपाकात्प्रत्यक्षोऽयं त्वया कृतः । इन्द्रद्युम्नागमाभ्यासेध्रुवंसव्यवधास्यति
एषोऽर्थस्तु त्वया मित्र न वक्तव्यो नृपाग्रतः । आगत्य सोऽत्र नृपतिरदृष्ट्वापरमेश्वरम्
प्रायोपवेशव्रतवान्स्वप्ने दृष्टा गदाधरम् । तदादेशाद्दारुमयं प्रभोर्लिङ्गचतुष्टयम् ॥ ७८॥
पूजयिष्यतिभक्त्याचप्रतिष्ठाप्यस्वयम्भुवा । स्थितिरत्रहरेर्यावदावयोर्वंशसंस्थितिः
अनुग्रहाद्भगवतो नात्र कार्या विचारणा । तदत्राऽर्थे सखे! खेदं मा व्रज क्षिप्रमेव हि ॥
निर्वत्स्यर्यतेऽचिरादेव मित्रेदानीं सुखं स्वप । प्रातर्दृष्ट्वा पुनर्देवंनीलेन्द्राश्ममयंविभुम्

सिन्धौ स्नात्वा तस्य तटे निवासाय महीपतेः ।

द्रक्ष्यामः साधु संस्थानं यथाऽभिलषितं सखे !॥ ८२ ॥

इत्यन्याश्च कथाः पुण्याःकृत्वातौचपरस्परम् । शुभस्थानेचास्वपतांशयनेपल्लवास्तृते
प्रभातायां तु शर्वर्यां तीर्थराजोदकेन तौ । स्नानं निर्वर्त्य विधिवन्माधवं प्रणिपत्य च
राजार्हस्थानं निर्णीयनिवासायगतौपुनः । तत्रमित्रेणाऽभिमन्त्र्यराज्ञोनिर्देशकारणात्

रथमारुह्य विप्रः स त्ववन्तीपुरमाययौ ॥ ८६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
पुरुषोत्तमदर्शनमनुइन्द्रद्युम्नपुरोहितस्यावन्तीपुरींप्रत्यागमनवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नवमोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्ननृपतेर्विद्यापतिम्प्रतिपुरुषोत्तमक्षेत्रविषयकप्रश्नवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

प्रत्यागते ततो विप्रे सायाह्ने सुरसङ्कुले। माधवार्चनवेलायां वातश्चण्डगतिर्ववौ ॥१
सुवर्णवालुकाश्चाऽसौ विचकार च सर्वशः। तेनाकुलदृशोदेवा न शेकुरवलोकने ॥२
श्रीकान्तस्यतदा विप्राद्ध्युस्तेपुरुषोत्तमम्। यावद्ध्यानस्थिरदृशोमुहूर्ततेदिवौकसः
ध्यानान्तेवालुकाराशिंददृशुस्ते नमाधवम्। रौहिणंचतथाकुण्डंबभूवुर्व्याकुलेन्द्रियाः
चिन्तामवापुर्महतीं हाहेति रुरुदुर्भृशम्। किमेतन्नो हि दुर्दैवमेकदा समुपस्थितम् ॥
दृशां सेचनकः श्रीशः क्षणाद्यन्नोपलभ्यते। अपराधं किमस्माकं लक्षितं पुरुषोत्तम!॥
युगपत्सेवकान्सर्वानपहाय न दृश्यसे। येषामर्थं जगन्नाथ! स्वीचकर्थ कलेवरम् ॥७॥

तानन्नाथान्परित्यज्य कानने किमुपेक्षसे।
स्वशरीरविभूतीर्नो विहाय कमलेक्षण !॥ ८

किमकाण्डंरचयसि कथाशेषान्दिवौकसः। तवांशभूतान्नः सर्वान्यज्वानःप्रयजन्तिवै
त्वत्प्रीत्यै यज्ञपुरुष त्वदादिष्टफलप्रदान्। त्वदहङ्कारवर्ष्माणस्त्वदनुग्रहजीवनाः ॥

कान्दिशीकाः कुत्र यामः साम्प्रतं त्वदुपेक्षिताः।
दिवि स्थानैश्च किं कार्यं त्वामनालोक्य माधव !॥ ११ ॥

अकृतार्थास्त्वयाहीना भविष्यामो वनेचराः। निष्कलङ्कसुधाभानुंसुषमापरिभावुकम्
त्वदास्यं चेन्न पश्यामो न यास्यामःसुरालयन्। तपआस्थायपरममत्रैवसंशितव्रताः
वर्त्तामहे वन्यवृत्त्याजटावल्कलधारिणः। यावत्त्वांपुण्डरीकाक्षविलोकिष्यामहेवयम्
निसर्गकरुणाम्भोधे दीनान्नस्त्रातुर्महसि। अनाथान्दीनहृदयांस्त्वामेव शरणं गतान्
त्वदनालोकशोकैकपारावारे निमज्जतः। शुभदृष्टितरण्या नः समुद्धर जगत्पते !॥१६
एवम्प्रलपतां तत्र सर्वेषां त्रिदिवौकसाम्। अशरीरा तदा वाणी पुनः प्रादुर्बभूवह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्राऽर्थे भोः सुरा यत्नं कर्तुमर्हथ नो वृथा। अद्यप्रभृति देवस्य दर्शनं दुर्लभं भुवि॥
अत्रस्थानेऽपितंनत्वातद्दर्शनफलंलभेत् । स्वयंभुवोऽन्तिकंगत्वाहेतुंज्ञास्यथनिश्चितम्
तच्छ्रुत्वा त्रिदशाः सर्वे ब्रह्मणोऽन्तिकमागताः । यमानुग्रहवृत्तान्तमवतारं च दारुणः
श्रुत्वा सन्तुष्टमनसःसर्वेतेत्रिदिवंगताः । स तुविद्यापतिर्विप्रोरथारूढोऽभ्यचिन्तयत्
ममकार्यं तु निष्पन्नं यद्दृष्टो नीलमाधवः । आसमन्तात्क्षेत्रमिदंपरिभ्रम्याऽवलोकये

अदृष्टपूर्वं परमंसुपुण्यं सङ्कीर्तनं यस्य मलापहारि ।
क्षेत्रोत्तमं श्रीपुरुषोत्तमाख्यं प्रदक्षिणीकृत्य व्रजामि तूर्णम् ॥ २३ ॥
पृथ्वीप्रदक्षिणफलं शतधा भजन्ते पर्यन्ति ये सकलकल्मषदार्यरण्यम् ।
नीलाद्रिमण्डितमिदं पुरुषोत्तमाख्यं मित्रं ममोपदिशति स्म समुद्रतीरे

विचिन्त्येत्थं द्विजश्रेष्ठः परिबभ्राम वै तदा । क्षेत्रं पश्यन्वनं चैवनानाद्रुमगणान्वितम्
नानापक्षिगणाघुष्टंकूजद्भ्रमरगुम्फितम् । अप्रविष्टार्ककिरणं छायातरुगणावृतम् ॥
सर्वर्तुकुसुमोपेतं लतागुल्मोपशोभितम् । नानाजलाशयाधारकूजत्सारससङ्कुलम् ॥
पद्मकह्लारकुमुदविकचोत्पलराजितम् । न जलं तत्र कुसुमपरिहीनं लतादिकम् ॥२८॥
परीत्यवेगात्तत्क्षेत्रंजगामाऽथद्विजोत्तमः । ध्यायन्निरशनःप्राज्ञःप्राप्याऽवन्तींदिनात्यये
दूतैरावेदितं पूर्वं दूरस्थस्याऽऽगतं द्विजाः । श्रुत्वेन्द्रद्युम्नोनृपतिः प्रहर्षं परमं ययौ ॥
तदागमनमाकाङ्क्षन्पूजयित्वा जनार्द्दनम् । विद्वद्भिर्ब्राह्मणैः सार्द्धं तस्थौ संहृष्टमानसः
एतस्मिन्नन्तरे विप्राः स तु विद्यापतिर्द्विजः । प्रावेशिकैर्वेत्रहस्तैर्दौवारिकपुरःसरैः

निर्दिष्टमार्गः पौरैश्चाऽनुमतः कौतुकान्वितैः ।
निर्माल्यमालां नीलाख्यमाधवस्य सुशोभनाम् ॥ ३३ ॥
निधाय पाणौ राजाग्रे प्रविवेश त्वरान्वितः ।
तं दृष्ट्वा नृपतिः सोऽथ समुत्थाय वरासनात् ।
प्रसीद जगदीशेति वदन्नन्तिकमभ्यगात् ॥ ३४ ॥

अद्य मे जीवितं जातं सफलं जन्मकर्मणा । निर्माल्यमालावपुषं यत्पश्यामीहमाधवम्
मालां मुकुन्दशिरसोऽनुपमप्रमोदलाभाधरीकृतसुरद्रुम कान्तगन्धाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्धीकृतालिनिचयां पवनप्रसारिगन्धप्रणाशितजगत्कलुषां नमामि ॥ ३६ ॥
यत्पादपङ्कजगलद्रजसोऽनुषङ्गा ब्रह्मादयः परमसम्पदमापुरस्य ।
विष्णोः कलेवरसमुज्ज्वलिताङ्गरागसंसक्तपुष्पनिलयां प्रणतोऽस्मि मालाम् ॥
पद्मांहृत्पद्मवसतिंसपत्नींयाहसत्यसौ । विकस्वरैःसुकुसुमैर्विष्णवङ्कस्थितिगर्विताम्
कुत्रस्थितेयमाहार्यैन्महिमानंस्रगुज्ज्वला । याश्रीनिधेःशरीरेभूत्सर्वाङ्गव्यापिनीचिरम्
जय नीलाद्रिशिखरभूषणाघप्रदूषण !। प्रणतार्त्तिहर ! श्रीमँस्त्राहि मां शरणागतम् ॥
इति ब्रुवाणः क्षितिपो वाष्पगद्गदया गिरा । जगाम शिरसा भूमिंस्फुरद्रोमाञ्चकञ्चुकः
सोऽपिविद्यापतिर्विप्रःक्षपिताशेषकल्मषः । दिव्यदेहोनृपस्याग्रेध्यायन्माधवमास्थितः
तेजसा सर्वलोकानां पापानिक्षालयन्सुधीः । अनुगृह्णातुदेवस्त्वांनीलाद्रिशिखरालयः
श्रीपतेरियमाज्ञातेमालारूपाप्रकाशिता । द्रष्टुं क्षेत्रोत्तमगतंस्वंसाक्षान्मुक्तिदायकम्
इत्युच्चरन्नरपतेरामुमोच गले स्रजम् । सोऽप्युत्थाय क्षितिपतिर्मालांहृदयलम्बिनीम्
दृष्ट्वा मेने श्रियः कान्तं साक्षाद्धृदयगामिनम् । निधायपाणीशिरसिदरमीलितलोचनः
आनन्दाऽश्रुजलक्लिन्नवदनस्तुष्टुवे हरिम् ॥ ४७ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

जयाऽखिलजगत्सृष्टिस्थितिसंहारशिल्पकृत् !।
लीलाविश्ववपुर्लोमसङ्ख्यब्रह्माण्डभारभृत् !॥ ४८ ॥
अन्तर्यामिन्नशेषाणां प्रणतार्तिहर! प्रभो । ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुकुटकिर्मीरितपदाम्बुज !॥४९॥
दीनानाथविपन्नैकसततत्राणतत्पर !। निर्व्याजकरुणावारिपारावार! परात्पर !॥ ५०॥
त्वदेकशरणं दीनमनादिभ्रमनिर्भरम् । परित्राहि जगन्नाथ भक्ताविरतवत्सल ॥ ५१॥
इति स्तुवन्नरपतिः स्वासने समुपाविशत् । गृहमेधिब्रह्मचारियतिवैखानसैर्वृतः ॥
अष्टादशसु विद्यासु कुशलैर्यज्वभिर्द्विजैः । मौनैःस्थविरभृत्यैश्चसार्द्धंमन्त्रिपुरःसरैः
विद्यापतिं पूजयित्वा बहुमानपुरःसरम् । उपवेश्याऽग्रतः पीठे पृष्ट्वा कुशलमादितः ॥
पुरुषोत्तमक्षेत्रस्य विष्णोर्नीलाश्मवर्ष्मणः । महिमानं स्वरूपं चपप्रच्छाऽवहितोमुदा
ब्राह्मणः क्षत्रियेणाऽसौ पृष्टोऽनुभवमात्मनः । भिल्लद्वीपप्रवेशादिमज्जनान्तं सरित्पतेः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षेत्रोत्तमस्य वृत्तान्तंकथयामासविस्तरात् । नीलान्द्रिरोहणंनीलमाधवस्यचदर्शनम्
स्नानं चरौहिणेकुण्डे महिमानंवटस्य च । नृसिंहाद्यष्टशम्भूनांशक्तीनांमष्टसंस्थितिम्
रथेनाऽऽक्रमणाद्दृष्टौक्षेत्रस्याऽऽयामविस्तरौ । तत्सर्वं वर्णयामास यथावदनुपूर्वशः

तच्छ्रुत्वा चित्रमतुलं तैर्थिकावेदितं पुरा ।
सम्प्रतीतो हृष्टमनाः पुनस्तं क्षितिपोऽब्रवीत् ॥ ६० ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

श्रुतपूर्वन्तु भगवंस्त्वत्तोऽश्रौषं सुदुर्लभम् । क्षेत्रोत्तमं द्विजश्रेष्ठ! साम्प्रतं वर्णयस्वमे
नीलेन्द्रमणिमूर्तेस्तु विष्णो रूपं यथातथम् ।

विद्यापतिरुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्यां मूर्ति जगत्पतेः ॥ ६२ ॥

यां चर्मचक्षुषा दृष्ट्वा जायते मुक्तिभाजनम् । नीलेन्द्रमणिपाषाणमयी मूर्तिः पुरातनी
यान्वहं ब्रह्मरुद्रेन्द्रपुरोगैरर्चिता सुरैः । आरोपितेयं दिव्या स्रक्पूजायांहि सुपर्वभिः
सेयंन म्लायति नृप न च गन्धेन रिच्यते । दिने बहुतिथे यातेऽपीदृशी स्रग्धरोद्भवा
दिव्योपहारनिर्माल्यभक्षणात्क्षीणकल्मषम् । मांनपश्यसिकिंराजन्नतिमानुषवर्चसम्
सकृदप्यशनाद्यस्य क्षुत्पिपासावलक्षयाः । न बाधन्ते नृपश्रेष्ठ! दृष्टेनाऽदृष्टकल्पनम् ॥
भुक्तिर्मुक्तिश्च वै राजन्द्वे तत्र युगपत्स्थिते । न जरारोगशोकादि दुःखंतत्रहिविद्यते
यत्र साक्षाज्जगन्नाथः प्रसन्नवदनो विभुः । फुल्लेन्दीवरपत्राक्षः प्रपन्नामृतमुक्तिदः ॥

इति श्रीस्कन्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
विद्यापतिनेन्द्रद्युम्नायदिव्यमालावर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दशमोऽध्यायः

विद्यापतिनेन्द्रद्युम्नायभगवतःपुरुषोत्तमस्यस्वरूपवर्णनम्

इन्द्रद्युम्न उवाच

जन्मप्रभृति तत्र त्वं न प्रयातोद्विजोत्तम !। कथम्विद्याद्भवान्दिव्यवृत्तान्तं पुरुषोत्तमे

विद्यापतिरुवाच

तत्र स्थितोऽहं सायाह्ने भगवन्तमुपागमम् ।
तस्मिन्काले दिव्यगन्धो ववौ च शिशिरो मरुत् ॥ २ ॥

उद्यतःसङ्कुलःशब्दःश्रूयतेस्म वियत्पथे । क्रमाद्याहि प्रयाहीति स तु वर्णमयःस्वनः
दिविष्ठानां पतत्पुष्पवृष्ट्याच्छादितपर्वतः समागमोऽभूत्सान्निध्येवैकुण्ठस्यमहीपते
वीणावेणुमृदङ्गानांचर्चरीणाञ्चनिःस्वनः । अभूतपूर्वस्तत्राऽऽसीद्दिव्यगानविमिश्रितः
सहस्रमुपचाराणां प्रीतये परमेशितुः । देवैः समर्पितं तत्र मनुष्याऽदृष्टपूर्वकम् ॥ ६ ॥
सम्पूज्यविधिवद्देवंकरमात्रोपलक्षिताः । जयपूर्वैश्च तं स्तोत्रैः सन्तोष्य मधुसूदनम्
यथागतन्ते त्रिदशाः प्रययुस्त्रिदशालयम् । तेषु यातेषु शवरः सखा विश्वावसुर्मम
दिव्योपहारभोज्यान्निर्माल्यं चेदं ददौ मम । अनर्घ्यमेतदम्लानं श्रीराज्यसुखदायकम्
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंयोग्यंतेनाऽऽहृतंमया । शृणुष्वतस्यसंस्थानंविष्णोर्यत्क्षेत्रमुत्तमम्

अपूर्वशिल्पनैपुण्यं रूपं चाऽस्य मनोहरम् ।
न भूमिजन्मना पुंसा शक्यते गदितुं हि तत् ॥ ११ ॥

त्वद्भाग्यपौरुषाभ्यां तल्लक्षितं कथयामि ते । समन्ताद्गहनाकीर्णं नीलाद्रिनाभिकम्

आयामविस्तृतिभ्यां च विख्यातं क्रोशपञ्चकम् ।
तीर्थराजस्य वेलायां स्वर्णवालुकयावृतम् ॥ १३ ॥

अद्रेःशृङ्गे महानुच्चःकल्पस्थायीवटोमहान् । क्रोशायतः पुष्पफलवर्जितःपल्लवोज्ज्वलः
सूर्यापक्रमणे तस्य छायां नापक्रमेत वै । तस्य पश्चात्प्रदेशेहिकुण्डंरौहिणसञ्ज्ञकम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जलोद्गमान्नीलहृत्स्वदारोहण विभूषितम् । वहिः स्फटिकवेदीभिश्चतुर्दिक्षु परीवृतम् ॥
अग्रसङ्घातहारीभिरद्भिः पूर्णं मनोरमम् । तत्पूर्ववेदिकामध्ये न्यग्रोधच्छायशीतले ॥
इन्द्रनीलमयो देव आस्ते चक्रगदाधरः । एकाशीत्यङ्गुलमितःस्वर्णपद्मोपरि स्थितः
अष्टमीचन्द्रशकलशोभाविजयि भालभूः । स्मेरेन्दीवरयुगमश्रीधिक्कारोद्यतलोचनः ॥
आननामृतभानूद्यत्सन्तापत्रयमोचनः । नासापुटद्वयोद्भासितिलपुष्पप्रशोभनः ॥ २० ॥
वपुषोऽश्ममयत्वेऽपिसुस्मितस्नपिताधरः । हाससम्फुल्लगण्डाभ्यां रुचिरश्चिवुकंहनुः
अनन्यपूर्वघटितं सृक्किणीयुगमञ्जसा । हासनिम्नाधरौ गण्डौ चिवुकं सृक्किणी शुभे
वहन्निदर्शनं देवो विश्वकर्मादि शिल्पिनाम् । मकरास्यकर्णभूषाशोभिश्रुतियुगेन सः
गुरुभार्गवयोर्मध्ये पूर्णचन्द्रोपहासकः । ग्रैवेयशोभाजनककण्ठदेशेन पश्यताम् ॥२४॥
दक्षिणावर्त्तशङ्खस्य मुक्ताजन्माभिशङ्ककृत् । पीनायतस्कन्धयुगजानुदीर्घचतुर्भुजः ॥
स्वच्छनिर्मलहारोपशोभकोरःस्थलोविभुः । धत्तेचतुर्दशजगद्दिव्यकौस्तुभविम्बितम्
निम्ननाभिहृदाविष्टतनुरोमालिमञ्जुलः । हारं त्रिवलिमध्येन स्थाणुत्वपरिणामकः
सुरत्नमेखलादाम्ना किङ्किणीमौक्तिकस्रजा । जगल्लावण्यपुटके स्फिचौदेवस्यशोभतः
जघनालम्बिमुक्तास्रक्पीतचैलोपशोभितम् । जङ्घास्तम्भयुगंमोक्षमाङ्गल्यतोरणाश्रयम्
वृत्तानुपूर्वजानुभ्यां मालया प्रपदीनया । रत्नाढ्यवलयाभ्यां च शोभेते चरणौविभोः
हारकङ्कणकेयूरमुकुटाद्यैरलङ्कृतम् । ज्ञानाऽहङ्कारकैश्वर्यशब्दब्रह्मणि केशवः ॥३१ ॥
चक्रपद्मगदाशङ्खे परिणामानि धारयन् । सर्वाशाद्योतको देवो नीलाद्रेरुपरि स्थितः
भक्त्याप्रणम्यदृष्ट्वाऽयंदेहबन्धात्प्रमुच्यते । वामपार्श्वगतालक्ष्मीराश्लिष्टापद्मपाणिना
वल्लकीवादनपरा भगवन्मुखलोचना । सर्वलावण्यवसतिः सर्वालङ्कारभूषिता ॥३४॥
तावपश्यं हि जगतः पितरावचलस्थितौ । तूष्णींभूतौस्मेरदृशाऽनुगृह्णन्तौचपश्यतः
सजीवौ तावबुधं भो दीनानुग्रहकारणात् । छत्रीभूतफणावृन्दः शेषःपश्चादवस्थितः
अग्रे व्यवस्थितं दृष्टं वपुर्बिभ्रत्सुदर्शनम् । कृताञ्जलिपुटं तस्य पश्चाद्गरुडमास्थितम्
एवमद्भुतरूपन्तं दृष्ट्वा साक्षाच्छ्रियः पतिम् । चेतो रज्जुभिराकृष्टमिव तत्रैव धावति ॥
अनेकजन्मसाहस्रैः सुकर्माण्यर्जितानि चेत् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युगपत्परिपक्कानि यस्याऽसौ तं हि पश्यति ॥ ३३ ॥
तीर्थस्नानतपोदानदेवयज्ञव्रतैरपि । नाऽलमालोकितुं मर्त्यस्तादृशं पुरुषोत्तमम् ॥४०॥
ये नीलमूर्तिं विमलाम्बराभं ध्यायन्ति विष्णुं पुरुषोत्तमस्थम् ।
ते क्षीणबन्धाः प्रविशन्ति विष्णोः पुरं हि यत्प्राप्य न शोचतीह ॥ ४१ ॥
विद्याभिरष्टादशभिः प्रणीतं नानाविधं कर्मफलं नृणां यत् ।
एकत्र तत्सर्वममुष्य विष्णोः सन्दर्शनस्यैति शतांशमानम् ॥ ४२ ॥
किमत्र वाच्यं त्वधिकं क्षितीन्द्र! पुंसोमतिर्यावदुपैति कामान् ।
लभेत नीलाद्रिपतिं प्रणम्य ततोऽधिकं क्षेत्रभुवो महिम्ना ॥ ४३ ॥
स एव दाता क्रतुभिः स यष्टा सत्यप्रवक्ता स तु धर्मशीलः ।
सर्वैर्गुणैः सर्वभवैर्वरिष्ठो नीलाद्रिनाथः खलु येन दृष्टः ॥ ४४ ॥
तत्र ये सेवकाः सन्तिमाधवस्यजगत्पतेः । तेभ्यःसकाशान्माहात्म्यमिदंज्ञातंमयानृप
तस्मिन्परम्परायातमादिसृष्टेः पुरातनम् । प्रसिद्धमिदमाख्यानंश्रुत्वातत्राऽऽगतोह्यहम्
त्वदाज्ञया तत्र गत्वा दृष्ट्वा श्रीपुरुषोत्तमम् । निवेदितं ते राजेन्द्र!यथेच्छसितथा कुरु

इन्द्रद्युम्न उवाच

आप्तवाक्याद्भगवतः श्रुत्वा रूपमघापहम् ।
कृतकृत्योऽस्मि भगवन्दिव्यनिर्माल्यसङ्गमात् ॥ ४८ ॥
बहुजन्मस्वर्जितानि क्षीणानि दुरितानि मे । अधिकारी त्वहंजातोदर्शने श्रीपतेरिह
सर्वात्मनाऽहं यास्यामि राज्येनसुसमृद्धिना । तत्रावासंकरिष्यामिपुरदुर्गाणिचैवहि
क्रतुना हयमेधेन यक्ष्ये प्रीत्यै मुरद्विषः । शतोपचारैः श्रीनाथं पूजयिष्ये दिनेदिने ॥
व्रतोपवासनियमैः प्रीणयिष्ये जगद्गुरुम् । वाक्यामृतेन सन्तप्तं यथामामभिषेक्ष्यति
दीनानुकम्पीभगवान्साक्षान्नारायणो विभुः । एवंसश्रद्धयाभक्त्यासंस्तुतेयावदीश्वरम्
नारदस्तत्र सम्प्राप्तो भुवनालोककौतुकी । तमायान्तमृषिंदृष्ट्वावैष्णवाग्र्यंविधेःसुतम्
आशशंस स्वकार्यस्यसिद्धिंनरपतिस्तदा । उत्थायसहसाविप्राःपाद्यार्घ्याचमनीयकैः
वरासनस्थं प्रणतः प्रोवाचेदं कृताञ्जलिः ॥ ५५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रद्युम्न उवाच

अद्य मे सफला यज्ञा दानमध्ययनं तपः ॥ ५६ ॥
यन्मे गृहं समागच्छद्द्वितीयाब्रह्मणस्तनुः । कृतार्थो यद्यपि मुने आगमानुग्रहात्तव
तथाऽपि त्वत्प्रसादायकिमाज्ञां करवाणिते । किम्प्रयोजनमुद्दिश्यभवनंमेपवित्रितम्

जैमिनिरुवाच

तच्छ्रुत्वा नृपतेर्वाक्यं भक्तिप्रश्रयकोमलम् । उवाचब्रह्मणः पुत्रः स्मितपूर्वंमहीपतिम्

नारद उवाच

इन्द्रद्युम्न! नृपश्रेष्ठ! विमलैस्त्वद्गुणोत्करैः । प्रीणितादेवतासिद्धाःमुनयोब्रह्मणासह
स्वप्रतिष्ठा पृथग्योग्यागुणाएकैकशस्तव । ब्रह्मणःसदनेस्थित्यैपर्याप्तास्तुसमीहिताः
अवतीर्णो नरं द्रष्टुं तिष्ठन्तं बदराश्रमे । तद्ध्यानावसरेज्ञातो व्यवसायस्तवेदृशः ॥
साधुव्यवसितं राजन्याऽभूत्ते बुद्धिरीदृशी । सहस्रजन्मस्वभ्यासाद्भक्तिर्भवति भूपते
नीलाचलगुहावासे माधवे जगतां धवे । पितामहो महाप्राज्ञो यमाराध्य जगत्पतिम्
विनिर्ममे सृष्टिमिमां लेभे पैतामहं पदम् । तदन्वयप्रसूतोऽसि युक्ता ते भक्तिरीदृशी
चतुर्वर्गफलाभक्तिर्विष्णौ नाऽल्पतपःफलम् । अनाद्यविद्यासुदृढपञ्चक्लेशविवर्द्धिनी
एकैवेयं विष्णुभक्तिस्तदुच्छेदाय जायते । भवारण्ये प्रतिपदं दुःखसङ्कटसङ्कुले ॥
नराणां भ्रमतां विष्णुभक्तिरेकासुखप्रदा । निरालम्बेद्वन्द्ववातप्रोद्यतेऽस्मिन्सुदुस्तरे

निमग्नानां भवाम्भोधौ विष्णुभक्तिस्तरिः स्मृता ।
आश्रित्यैकां भगवतीं विष्णुभक्तिं तु मातरम् ॥ ६६ ॥
सन्तः सन्तुष्टमनसो न तु शोचन्ति जातुचित् ।
विष्णुभक्तिसुधापानसंहृष्टानां महात्मनाम् ॥ ७० ॥
ब्राह्म्यं पदं स्वल्पलाभो भाजनानां विमुक्तये ।
त्रिविधो योंऽहसां राशिः सुमहाञ्जन्मिनां नृप ! ॥ ७१ ॥

विष्णुभक्तिमहादाववह्नौ स :शलभायते । प्रयागगङ्गाप्रमुखतीर्थानि च तपांसि च
अश्वमेधः क्रतुवरो दानानि सुमहान्ति च । व्रतोपवासनियमाःसहस्राण्यर्जिताअपि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समूह एषामेकत्र गुणितः कोटिकोटिभिः ।
विष्णुभक्तेः सहस्रांशसमोऽसौ न हि कीर्तितः ॥ ७४ ॥

जैमिनिरुवाच

विष्णुभक्तेस्तु माहात्म्यं श्रुत्वा ब्रह्मर्षिणोदितम् ।
विष्णुभक्तेः स्वरूपं हि ज्ञातुकामः क्षितीश्वरः ॥ ७५ ॥
नारदं पुनराहेदं वाक्यं सत्कारयुक्तिमान् ॥ ७६ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

महिमाविष्णुभक्तेस्तुसाधुप्रोक्तोमहामुने । तस्याः स्वरूपजिज्ञासाचिरान्मेहृदिवर्त्तते
लक्षणंवर्णयेदानीं भक्तेर्वैष्णवपुङ्गव । त्वदन्यो न हि वक्ता स्याद्विज्ञातो मे महीतले

नारद उवाच

साधुराजंस्त्वया पृष्टं भक्तिलक्षणमुत्तमम् । कथयिष्ये यथार्थंत्वांभक्तिभाजनमुत्तमम्
अपात्रे न हिवाच्येयंनरेऽन्धेमलिनान्तरे । शृणुष्वाऽवहितोराजन्प्रोच्यमानांमयाऽनघ
सामान्यतो विशेषाच्च विष्णोर्भक्तिं सनातनीम् ।
अत्यन्तसुखसम्प्राप्तौ विच्छेदे दुःखसन्ततेः ॥ ८१ ॥
हेतुरेकोऽयमेवेति संश्रयाद्भक्तिरुच्यते । त्रिधा सा गुणभेदेन तुरीयानिर्गुणा मता ॥
कामक्रोधाभिभूतानां दृष्ट्वा याऽन्यं न पश्यताम् ।
लब्धये चाऽभिचाराय भक्तिःस्यान्नृप तामसी ॥ ८३ ॥
यशसेचाऽतिरिक्तायपरस्यस्पर्द्धयापिवा । प्रसङ्गात्परलोकायभक्तिःसाराजसीस्मृता
आमुष्मिकंस्थिरतरंदृष्ट्वाभावान्विनश्वरान् । पश्यताऽऽश्रमवर्णोक्तान्धर्मान्नैवजिहासता
आत्मज्ञानाय या भक्तिः क्रियते सा तु सात्त्विकी ।
जगच्चेदं जगन्नाथो नाऽन्यं चाऽपि च कारणम् ॥ ८६ ॥
अहं च नततोभिन्नोमत्तोऽसौनपृथक्स्थितः । हीनंचहिरुपाधीनांप्रेमोत्कर्षेणभावनम्
दुर्लभा भक्तिरेषा हि मुक्तयेऽद्वैतसञ्ज्ञिता ।
सात्त्विक्या ब्रह्मणः स्थानं राजस्या शक्रलोकताम् ॥ ८८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रयान्ति भुक्त्वा भोगान्हि तामस्यापितृलोकताम् ।
पुनरागत्य भूर्लोकं भक्तिं तां वैपरीत्यतः ॥ ८६ ॥
तामसो राजसीं कुर्याद्राजसः सात्त्विकीं तथा ।
सात्त्विको मुक्तिमाप्नोति कृत्वा चाऽद्वैतभावनाम् ॥ ६० ॥
एकामपि समाश्रित्य क्रमान्मुक्तिपथं व्रजेत् ।
विष्णुभक्तिविहीनस्य श्रौतस्मार्ताश्च याः क्रियाः ॥ ६१ ॥
प्रायश्चित्तादिकंतीर्थयात्राकृच्छ्रादिकंतपः । कुलेप्रसूतिःशिल्पानिसर्वंलौकिकभूषणम्
कायक्लेशः फलं तेषां स्वैरिणीव्यभिचारवत् ।
कुलाचारविहीनोऽपि दृढभक्तिर्जितेन्द्रियः ॥ ६३ ॥
प्रशस्यः सर्वलोकानांन त्वष्टादशविद्यकः । भक्तिहीनोनृपश्रेष्ठ! सज्जातिर्धार्मिकस्तथा
नाऽल्पभाग्यस्य पुंसो हि विष्णौ भक्तिः प्रजायते ।
यां तु सम्पाद्य यत्नेन कृतकृत्यो न सीदति ॥ ६५ ॥
यया वेत्तिजगन्नाथंसाविद्यापरिकीर्तिता । येन प्रीणाति भगवांस्तत्कर्माशुभनाशनम्
विष्णुभक्तश्च सम्प्रोक्तस्ताभ्यांयुक्तोदृढव्रतः । यत्पादपांसुनाविश्वं पूयतेसचराचरम्
सृष्टिस्थितिविनाशानां स्वेच्छया प्रभवत्यसौ ।
किम्पुनः क्षुद्रकामानां भूमिस्वर्गादिसम्पदाम् ॥ ६८ ॥
वासुदेवस्यभक्तस्यनभेदोविद्यतेऽनयोः । वासुदेवस्य ये भक्तास्तेषांवक्ष्यामिलक्षणम्
प्रशान्तचित्ताःसर्वेषांसौम्याःकामजितेन्द्रियाः । कर्मणामनसावाचापरद्रोहमनिच्छवः
दयाऽऽर्द्रमनसो नित्यं स्तेयहिंसापराङ्मुखाः । गुणेषु परकार्येषु पक्षपातमुदान्विताः
सदाचारावदाताश्च परोत्सवनिजोत्सवाः । पश्यन्तः सर्वभूतस्थं वासुदेवममत्सराः
दीनानुकम्पिनो नित्यं भृशंपरहितैषिणः । राजोपचारपूजायां लालनाः स्वकुमारवत्
कृष्णसर्पादिव भयं बाह्ये परिचरन्ति ते । विषयेष्वविवेकानां या प्रीतिरुपजायते ॥
वितन्वतेतुतांप्रीतिंशतकोटिगुणांहरौ । नित्यकर्तव्यताबुद्ध्यायजन्तः शङ्करादिकान्
विष्णुस्वरूपान्ध्यायन्ति भक्त्या पितृगणेष्वपि ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विष्णोरन्यं न पश्यन्ति विष्णुं नान्यत्पृथग्गतम् ॥ १०६ ॥
पार्थक्यं न च पार्थक्यं समष्टिव्यष्टिरूपिणः ।
जगन्नाथ! तवाऽस्मीति दासस्त्वं चाऽस्मि नो पृथक् ॥ १०७ ॥
अन्तर्यामी यदा देवः सर्वेषां हृदि संस्थितः ।
सेव्यो वा सेवको वाऽपि त्वत्तो नान्योऽस्ति कश्चन ॥ १०८ ॥
इति भावनया कृतावधानाः प्रणमन्तः सततञ्च कीर्त्तयन्तः ।
हरिमब्जजवन्द्यपादपद्मं प्रभजन्तस्तृणवज्जगज्जनेषु ॥ १०९ ॥
उपकृतिकुशला जगत्स्वजस्रं परकुशलानि निजानि मन्यमानाः ।
अपि परपरिभावने दयार्द्राः शिवमनसः खलु वैष्णवाः प्रसिद्धाः ॥११०॥
दृषदि परधने च लोष्टखण्डे परवनितासु च कूटशाल्मलीषु ।
सखिरिपुसहजेषु बन्धुवर्गे सममतयः खलु वैष्णवाः प्रसिद्धाः ॥ १११ ॥
गुणगणसुमुखाः परस्य मर्मच्छदनपराः परिणामसौख्यदा हि ।
भगवतिसततं प्रदत्तचित्ताः प्रियवचसःखलु वैष्णवाः प्रसिद्धाः ॥ ११२ ॥
स्फुटमधुरपदं हि कंसहन्तुः कलुषमुषं शुभनाम चाऽऽमनन्तः ।
जयजयपरिघोषणां रटन्तः किमु विभवाः खलु वैष्णवाः प्रसिद्धाः ॥ ११३ ॥
हरिचरणसरोजयुग्मचित्ता जडिमधियः सुखदुःखसाम्यरूपाः ।
अपचितिचतुरा हरौ निजात्मनतवचसः खलु वैष्णवाः प्रसिद्धाः ॥ ११४ ॥
रथचरणगदाऽब्जशङ्खमुद्राकृतितिलकाङ्कितबाहुमूलमध्याः ।
मुररिपुचरणप्रणामधूलीधृतकवचाः खलु वैष्णवा जयन्ति ॥ ११५ ॥
मुरजिदपघनापकृष्टगन्धोत्तमतुलसीदलमाल्यचन्दनैर्ये ।
वरयितुमिव मुक्तिमाप्तभूषाकृतिरुचिराः खलु वैष्णवा जयन्ति ॥ ११६ ॥
विगलितमदमानशुद्धचित्ताः प्रसभविनश्यदहङ्कृतिप्रशान्ताः ।
नरहरिममराप्तबन्धुमिष्ट्वा क्षयितशुचः खलु वैष्णवा जयन्ति ॥ ११७ ॥
भगवति सततं प्रभक्तिभाजां शुभचरितं तव लक्ष्म नोऽभ्यधायि ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रुतिपथमवतीर्णमाऽऽशु पुंसां हरति मलं चिरसञ्चितं यदेतत् ॥ ११८ ॥
न हि धनमऽपि मृग्यते कदाचिन्न खलु शरीरजखेदसम्प्रयोगः ।
मृदुलघुवचसाभिधानकीर्ति भजनमहं तव दास्य एव चिन्ता ॥ ११६ ॥
शुभचरितमपि द्विषन्ति पुंसां स्वयमिह दुश्चरितानुबन्धचित्ताः ।
महदकुशलमप्यवाप्य सुस्था भगरसरसिका अवैष्णवास्ते ॥१२० ॥
परमसुखपदं हृदम्बुजस्थं क्षणमपि नाऽनुसजन्ति मत्तभावाः ।
वितथवचनजालकैरजस्रं पिदधति नाम हरेरवैष्णवास्ते ॥ १२१ ॥
परयुवतिधनेषु नित्यलुब्धाः कृपणधियो निजकुक्षिभारपूर्णाः ।
नियतपरमहत्त्वमन्यमाना नरपशवः खलु विष्णुभक्तिहीनाः ॥ १२२ ॥
अनवरतमनार्यसङ्गरक्ताः परपरिभावकहिंसकाऽतिरौद्राः ।
नरहरिचरणस्मृतौविरक्ता नरमलिनाः खलु दूरतो हि वर्ज्याः ॥ १२३ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
नारदेनेन्द्रद्युम्नायभगवद्भक्तिवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नस्यनारदेनसहपुरुषोत्तमक्षेत्रगमनार्थम्परामर्शवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

नारदाद्ब्रह्मणः पुत्राद्भगवद्भक्तिमुत्तमाम् । श्रुत्वेत्थं परमप्रीतइन्द्रद्युम्नोऽप्युवाचतम् ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

साधुसङ्गस्तु विद्वद्भिर्भवव्याधिविनाशनः । ममोपदिष्टोभगवन्सोऽभूत्साम्प्रतमेवमे
येन साक्षात्कृतो विष्णुः परमात्मा परात्परः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स त्वं यन्मन्दिरायातस्त्वदन्यः साधुरत्र कः ॥ ३ ॥
त्वत्सन्निधानाद्भगवंस्तमो मे नाशमभ्यगात् । यन्मेत्वरयते चित्तमर्चितुं नीलमाधवम्
वेत्सि ब्रह्माण्डवृत्तान्तं पर्यटन्सार्वलौकिकः ।
तदावां रथमास्थाय पश्यावो नीलमाधवम् ॥ ५ ॥
पुरुषोत्तमसञ्ज्ञस्यक्षेत्रस्याऽलङ्कृतंशुभम् । तत्रतीर्थानिसन्तीतिबहुभिःकथितानिमे
त्वद्वाक्याद्यदि जानामि भवेयुः सफलानि मे ॥ ६ ॥

नारद उवाच

हन्त ते दर्शयिष्यामिक्षेत्रंक्षेत्रस्थितानि च । तीर्थानिशक्तिशम्भूंश्चक्षेत्रमाहात्म्यमेवच
साक्षाद् द्रक्ष्यसि देवेशं भक्तस्याऽऽत्मसमर्पकम् ।
तवाऽनुग्रहतः शीघ्रं चतुर्द्धा सम्व्यवस्थितम् ॥ ८ ॥
यस्यसन्दर्शनान्मर्त्या जायतेभक्तिभाजनम् । एवं कथान्तेतौप्रीतावहःकृत्यंसमाप्यच
यात्राऽनुकूलं निर्णीय पञ्चम्यां बुधवासरे । ज्येष्ठकृष्णेतरे पक्षे पुष्यर्क्षे लग्न उत्तमे॥
एकत्र शयितौ रात्रिं निन्यतुर्नृपनारदौ ॥ १० ॥
ततः प्रभाते विमलइन्द्रद्युम्नो नृपोत्तमः । घोषणां कारयामास राज्यस्यसहबन्धुभिः
यथाविभवतः सैन्यैर्नीलाद्रिगमनम्प्रति । यावज्जीवंतत्रवासं करिष्यामोविनिश्चितम्
यावृत्तिःकल्पितायस्यसतयातत्रजीवतु । राजानःसावरोधाश्चसामात्याःसपरिच्छदाः
रथैर्गजैस्तुरङ्गैश्च कोषैः सह पदातिभिः ॥ १४ ॥
व्रजन्तु सज्जितास्तत्र ब्राह्मणाः साऽग्निहोत्रिणः ।
वणिजः सह भाण्डैश्च सपण्याः पण्यजीविनः ॥ १५ ॥
राष्ट्रकर्मणिनिष्णाताःकुशलाराजवर्त्मसु । ज्योतिर्विदोनृत्यविदोदण्डनीतौप्रवीणकाः
नृत्यगायनवादित्रचतुर्विधसुबुद्धयः । गजवाजिनराणाञ्च भैषज्ये शास्त्रउत्तमे ॥१७
कुशला दृष्टकर्माणो विद्यास्वष्टादशस्वपि । उपाङ्गविद्यासु तथा कुहकार्थकुतूहलाः ॥
वाटसाहसिकाश्चोरास्तथान्येपश्यतोहराः । विचित्रकथनाजीवाश्चाटुकाराश्चमागधाः
शास्त्रोपजीविनश्चैवतथाऽन्येशल्यहारकाः द्यूतकाराश्च पुंश्चल्योवेश्यावेशानुगाविटाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृषीवलाश्च गोमेषच्छागोष्ट्रखररक्षकाः। शकुन्तपालाश्च कपिव्याघ्रशार्दूलरक्षकाः॥
आहितुण्डिकगोरक्ष्यशबरा म्लेच्छजातयः ॥२२॥
अन्ये च ये मालवदेशजाता आज्ञाम्मदीयामनुपालयन्ति।
ते यान्तु सर्वे वसतौ हि नीलाचले यथा स्वं कृतवास्तुभागाः॥ २३॥
एवमाज्ञाप्य नृपतिर्यात्रायां च कृतक्षणः। नारदेन समागम्य दैवज्ञमिदमाह सः ॥२४
साम्वत्सरमुहूर्त्तं मे निर्णीतं ते यथा पुरा। तावन्माङ्गलिकं वस्तुजातं सम्यगुपानय
पुरोहितमतेनाऽस्मिन्क्षणेयावद्विमृग्यते। तेनाऽऽदिष्टःस गणकः पुरोहितसहायवान्
आजहार समस्तानि माङ्गल्यानि द्विजोत्तमाः।
अत्रान्तरे स राजर्षिर्दिव्यसिंहासनस्थितः॥ २७॥
यात्राभिषेकमाङ्गल्यं विप्रैःप्रागनुभावितम्। श्रीसूक्तवह्निसूक्ताभ्यां सूक्तेनाऽब्दैवतेनच
पावमान्याब्धिसूक्तेनपृथङ्माङ्गल्यवर्द्धकैः। तीर्थाद्भिरौषधीभिश्चसर्वगन्धैःपृथक्पृथक्
अभिषिक्तस्ततो राजा चीनांशुकहृताम्भसा। रराज वपुषा दीप्तो निर्धूमःपावकोयथा
आमुक्तशुक्लवसनःस्वाचान्तःसपवित्रकः। नान्दीमुखान्पितृगणान्पूजयित्वायथाविधि
जयाराष्ट्रभृतो हुत्वा गणहोमांश्च यत्नतः। शङ्खध्वनिसुगन्धाढ्यं श्वेतवर्णं विधूमकम्
वह्निं प्रदक्षिणं चक्रे दक्षिणावर्त्तगार्चिषा। साक्षात्कारेण ददतं जयं राज्ञे जयार्थिने॥
नवग्रहमखान्ते च ग्रहकुम्भेनसेवितः। ग्रहाणांदौष्ट्यनाशायसौस्थ्यस्याऽपिविवृद्धये
ज्योतिःशास्त्रोदितैर्मन्त्रैर्दैवज्ञविधिचोदितैः। ततो माङ्गल्यनेपथ्यविधानमुपचक्रमे॥
चीनांशुकप्रावरणे विधाय कवचं निजम्। शिरोवेष्टनकं शुभ्रं सुरत्नमुकुटोज्ज्वलम्॥
सावतंसे श्रुतियुगे रत्नकुण्डलभूषिते। ग्रैवेयकं महार्घं तु हारं तरलभूषितम्॥ ३७॥
दधाराऽथ नृपश्रेष्ठः केयूराङ्गदमुद्रिकाः। मध्येन त्रिवलीसक्तं स्वर्णसूत्रं त्रिवृद्दधौ॥
हिरण्यकिङ्किणीयुक्तमुक्तातोरणमालिकम्। नानारत्नैःसुघटितांदधाराऽथसुमेखलाम्
अनर्घ्ये पादकटके पादयोः संन्यवेशत्। सम्मुखादर्शिताऽऽदर्शेदद्दृशे स्वं विभूषितम्
मङ्गलारोपणार्थाय हैमपीठमुपाविशत्। प्राङ्मुखः श्रीधरं देवं संस्मरन्मधुसूदनम्॥
मङ्गलायतनं विष्णुं सर्वमाङ्गल्यकारणम्। स्मरणादस्य नश्यन्ति पातकानिबहून्यपि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सौमन्यस्यामथो मालामार्त्तवीं गन्धवर्णिताम् ।
दधार प्रथमं राजा मन्त्रितां स्वपुरोधसा ॥ ४३ ॥

मृदं दीपं फलं दूर्वादधिगोरोचनांततः । मन्त्राभिमन्त्रितान्सर्वान्सिद्धार्थैरभिरक्षितः
आत्मानं ददृशे राजा सौरभेये हविष्यथ । मुकुरे मन्त्रिते पश्चात्स्वं दृष्ट्वा नृपकेसरी
बह्वृचैः शान्तिघोषेणसमुदीर्णशुभायतिः । याजुष्कैःपथिसूक्तेनव्रजन्मार्गेऽभिरक्षितः
पौराणैर्मङ्गलैर्वाक्यैः कृतवीर्यधृतिर्नृपः । मागधैः स्तुतिपाठेन प्रादुर्भूतपराक्रमः ॥४७
पारिजातहरं सत्यासहितं गरुडध्वजम् । ध्यायन्हृत्पङ्कजे राजा दक्षिणं पादमुद्दधौ
प्रदक्षिणीकृत्य मुनिं नारदं पुरतः स्थितम् । मध्यद्वारमुपागच्छद्वेत्रपाणिभिरावृतः ॥
आदिष्टपदमार्गोऽसावग्निहोत्रपुरःसरः । तत्राऽपश्यत्स्थितान्विप्रानात्मनोदक्षिणेनवै

माङ्गल्यसूक्तं पठतः शुभ्राभान्पाण्डुरांऽशुकान् ।
लाजाः सपुष्पा राजाऽग्रे क्षिपतः शंसतः शुभम् ॥ ५१ ॥

वामपार्श्वस्थिता वेश्याश्चामरव्यग्रपाणयः । शुभ्रालङ्कारवसनाः स्मेरपद्मानना: शुभाः
ब्राह्मणान्पूजयामास भक्तिनम्रोद्विजोत्तमाः ॥ वस्त्राऽलङ्कारमाल्यैश्च सुगन्धैरनुलेपनैः

तोषयामास तान्विप्रान्भगवद्बुद्धिभावितान् ।
वेश्याभ्यो मागधेभ्यश्च दीनानाथेभ्य एव च ॥ ५४ ॥
राजानुमत्या सचिवो यथार्हं प्रददौ धनम् ।
श्वेतान्पारावतान्हंसाञ्छ्वेताश्वं श्वेतकुञ्जरम् ॥ ५५ ॥

सच्चूतपल्लवं श्वेतमालाफलविभूषितम् । कदलीकाण्डसन्नद्धतोरणाधःस्थितं नृपः ॥
पूर्णकुम्भं स पश्यन्वै मङ्गलानि बहून्यपि । सितातपत्रेण शिरःप्रदेशे वारितातपः ॥
युगपत्पूर्यमाणैस्तुकम्बुभिःशतसङ्ख्यकैः । सम्मिश्रितानिशुश्रावववादित्राणिबहूनिसः
तथा मङ्गलगीतानि जयशब्दांश्च भूपतिः । ततो विवेश प्रासादं नृसिंहमवलोकितुम्
यं स्मृत्वाजायतेमर्त्यःसर्वकल्याणभाजनम् । दृष्ट्वासदूरान्नृहरिंदिव्यसिंहासनस्थितम्
प्रणम्य साष्टावयवंसन्तोष्योपनिषद्गिरा । दक्षपार्श्वस्थितांदुर्गांसर्वदुर्गतिमोचिनीम्
ववन्दे चरणाभ्याशे पश्यन्तीं कृपया नृपः । ततः पुरोधा देवाङ्गादवरोप्य शुभांस्रजम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आसञ्जयामास गले सुगन्धेनाऽन्वलेपयत् । नीराजयामास राज्ञः शिरश्चावेष्टयन्मुदा
पुनः प्रदक्षिणीकृत्य तौ देवौ नृपसत्तमः । शिविकायां समारोप्य प्रतस्थेचपुरस्कृतौ
प्रादुर्भूय बहिर्द्वारे रथं दृष्ट्वा सुसज्जितम् । तुरङ्गमैर्वातजवैर्दशभिः परयोजितम् ॥६४
प्रदक्षिणीकृत्य नृपो नारदेन समाविशत् । ढक्काम्रृदङ्गनिःसाणभेरीपणवगोमुखाः ॥

मधुरीचर्चरीशङ्खा अवाद्यन्त सहस्रशः ।
स्यन्दनाः कोटिशस्तत्र नृपाणामनुजीविनाम् ॥ ६६ ॥

चकाशिरे श्रेणिकृता इन्द्रद्युम्नरथाभितः । नानाप्रहरणोपेताः पताकाभिरलङ्कृताः ॥

ध्वजोच्छ्रिताः स्वर्णरौप्यैः किङ्किणीजालदर्पणैः ।
यन्त्रैर्नानाविधैर्युक्ता गम्भीरस्निग्धनिःस्वनाः ॥ ६८ ॥

पदातीनां कुञ्जराणांहयानां वातरंहसाम् । पत्तिसंस्फोटनैर्हस्तिबृंहितैर्हयहेषितैः ॥
बहुले रथनिर्घोषैर्मिश्रितावाद्यनिःस्वनाः । युगान्तार्णवनिस्वानतुल्याः शुश्रुविरे जनैः

तस्मिन्क्षणे पौरजनाः स्वस्वसम्भारसज्जिताः ।
अश्वकै रासभैरुष्ट्रैर्वाहकैः प्रतितस्थिरे ॥ ७१ ॥

आन्दोलिकाश्च पल्यङ्काःकोटिशश्चतुरङ्गकाः । श्रेणीभूताश्चदृश्यन्तेराज्ञप्रस्थानसङ्कुले
राजावरोधाःशतशो वृतावर्षवरैस्ततः । नानायानसमारूढाःपालिताश्चाऽधिकारिभिः
महासैन्यैश्चसंरुद्धा राजागाराद्विनिर्ययुः । यज्वानश्चाग्निहोत्राणिशम्यारूढानिवृन्दशः
शकटेषु समारोप्य सपत्नीकाः प्रतस्थिरे । तथा पुस्तकभारांश्चदेवतार्चाकरण्डकान्
इध्मबर्हिकुशान्पात्रीः सम्भारान्होमसम्भृतान् । वाहयामासुरन्यैश्चशकटावाहकद्विजैः
सामन्तामात्यभृत्याश्चपुरोधाऋत्विजश्च ये । राज्ञः प्रकृतदासाश्चउपचारनियोगिनः
सर्वोपचारसम्भारानासतेऽन्ये प्रयायिनः । कोषागारनियुक्ताश्च कोषजातमशेषतः ॥
समादाय ययुस्तूर्णं राज्ञोऽवसरसेवकाः । मालाकारादयः सर्वे पण्यजीवादयस्तथा
स्वंस्वं पण्यं समादाय ययूराजनियोगिनः । श्रेष्ठश्रेण्यादयः सर्वे पुरखर्वटवासिभिः
समं विनिर्ययुः स्वस्वव्यवहारविलासकाः । इन्द्रद्युम्नस्यनृपतेर्यात्रासमयवादितान्
भेरीमृदङ्गपटहान्व्यश्नुवानान्दिगन्तरम् । श्रुत्वा जनपदावासिजनाः सर्वेससम्भ्रमाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राजाज्ञां मूर्ध्नि सम्मान्य निर्गता नीलपर्वतम् । यस्य यश्चक्र ऋजुः पन्थाः स च तेनैव जग्मिवान्
न राजमार्गं प्रजवाद्‌ व्यमृग्यन्त नृपाज्ञया । नीलाद्रिप्राप्तिमार्गेण दुर्गमेणाऽपि ते ययुः ॥
इन्द्रद्युम्नोऽपि राजेन्द्रः समस्तपुरवासिभिः । चतुरङ्गानीकिनीभिः सहर्षाभिश्च वेष्टितः
श्रेणीभूतक्षितिपतिस्यन्दनावलिमध्यगे । रथे रराज राजर्षिः शक्रतुल्यपरिच्छदः ॥
पुरस्त्रीमङ्गलाचारगीतलाजप्रसूनकैः । मङ्गलाचारशोभाभिः प्रसन्नशुभचेतनः ॥ ८७ ॥
वातरंहैर्हयैर्युक्तरथेन प्रययौ मुदा । अनुकूलानिलप्रोद्यद्घनच्छायसुशीतले ॥ ८८ ॥
नीरजस्के महीपृष्ठे समीकृतचतुष्पथे । देशाऽध्वनीनैः पुरुषैः काननान्तरवेदिभिः॥

आदिष्टवर्त्मा नृपतिर्मार्गस्योभयपार्श्वगान् ।
देशानरण्यानि मुहुः पश्यन्नाऽऽनन्दलोचनः ॥ ९० ॥

सीमामुत्कलदेशस्य विभजन्तीं वनान्तरे । मार्गस्थां चर्चिकाम्प्राप चर्चितां मुण्डमालया
अवतीर्य रथाद्राजा विनतो नारदाऽऽज्ञया । साष्टाङ्गपातं तां नत्वा तुष्टावाऽऽनन्दचेतनः

इन्द्रद्युम्न उवाच

नमस्ते त्रिदशेशानि सर्वापद्विनिवारिणि । ब्रह्मविष्णुशिवाद्याभिः कल्पनाभिरुदीरिते
कारणं जगतामाद्ये प्रसीद परमेश्वरि !। त्वया विना जगन्नैतत्क्षणमुत्सहते शिवे॥९४
सिद्धयः सर्वकार्याणां मङ्गलानि च शाश्वते । त्वत्पादाराधनफलं मर्त्यलोके हि नाऽन्यथा
चराचरपतेर्विष्णोः शक्तिस्त्वं परमेश्वरि !। यया सृजत्यवति च जगत्संहरते विभुः॥
चराचरगुरुं देवं नीलाचलनिवासिनम् । अनुगृह्णीष्व मां देवि यथा पश्ये स्वचक्षुषा

जैमिनिरुवाच

नारदस्योपदेशेन स्तुत्वा देवीं नराधिपः । आरुरोह रथं तूर्णं विवस्वानुदयं यथा
ततः प्रतस्थे तरसा स राजा श्रान्तवाहनः । चित्रोत्पलमहानद्यास्तीरे विरलकानने ॥
धातुकन्दरविख्याते न्यवेशयदनीकिनीम् । अपराह्णक्रियां कर्तुं यावदाह्निकमादृतः ॥
जलावतरणे नद्यां विवेश स्वपुरोधसा । पूर्वं संशोधिते प्राज्ञैर्विषकण्टकवर्जिते ॥

स्नात्वा सन्तर्प्य देवांश्च पितॄनथ विशाम्पतिः ।
सम्पूज्य विधिवद्विष्णुं नृपतीन्प्रकृतीस्ततः ॥ १०२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्मानयामास नृपः सन्निवेशासनादिभिः। नारदेन सह श्रीमान्प्रविश्यान्तःपुरन्ततः
सुधारसानिभोज्यानिबुभुजेप्रीतमानसः। पश्चिमाद्रिंततोयाते विवस्वतिविशाम्पतिः
सायंविधिंसमाप्याशुशीतभानौ समुद्यते। अनुजीविविशांनाथःसभामध्यउपाविशत्
तत्र तस्मिन्नरपतिर्बभौसाम्राज्यलक्षणः। सम्पूर्णमण्डलश्चन्द्रो ज्योतिषामिवशारदः

कवयः कवयाञ्चक्रुः कीर्तिं तस्य सुधामलाम्।
जगुर्गाथां सुग्रथितां गायकाः कलसुस्वराः॥ १०७॥

रूपयौवनलावण्यगर्विता गणिकास्ततः। लयतानाङ्गहारैश्च सुशुद्धैर्ननृतु पुरः॥१०८
मागधास्तुष्टुवुश्चैनं लोकोत्तरशुभाकृतिम्। गद्यपद्यप्रबन्धाद्यैश्चित्रैः पदकदम्बकैः॥
ततः स राजा प्रानर्च वैष्णवाग्र्यान्सभासदः। सुसंमतैर्गन्धमाल्यताम्बूलैरतिशोभनैः
नृपांश्च शतशस्तत्र सुखासीनान्नृपाज्ञया। सम्भावयामास यथायोग्यं नृपतिभाजनैः
अथाऽपृच्छन्मुनिवरं नारदं भगवत्प्रियम्। सिंहासनार्हे स्वासीनं बहुमानपुरःसरम्

भगवच्चरितं श्रोतुं सर्वपापापनोदनम्॥ ११२॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

भगवन्वेदवेदाङ्गनिधान! भगवत्प्रिय। त्वमेव चरितं विष्णोर्जानासि ज्ञानचक्षुषा॥
हरेश्चारित्रसुधया दृढपङ्कमलीमसम्। क्षालयाऽन्तर्मम मुने यद्यनुक्रोशको मयि ११४
इत्थमालापसंमिश्रे मुनिराज्ञोः कथान्तरे। प्रविवेश नृपं द्वाःस्थ उत्कलेशप्रसेवकः॥
उवाच देवद्वारान्ते तिष्ठत्युत्कलभूमिपः। सोपायनो देवपादपद्मं द्रष्टुं समौलिकः॥
विज्ञापितःसराजर्षिर्द्वाःस्थेनैवंससम्भ्रमः। उवाचतंहिभो विप्राःश्रुत्वातद्देशमण्डलम्
क्षेत्रं श्रीपुरुषेशस्य तद्वार्त्ताकर्णनोत्सुकः। प्रवेशया विलम्बं तं श्रीमदोढ्रमहीपतिम्

स हि नीलगिरौ विष्णुं समाराध्य सुनिर्मलः।
यस्य सन्दर्शनात्सर्वे भविष्यामो हतांहसः॥ ११६॥

श्रुत्वा तद्वचनं सद्यो द्वारपालो महीपतिम्। प्रवेशयामास सभामिन्द्रद्युम्नस्यभूपतेः
विवेशोढ्रपतिस्तूर्णंसचिवैर्वैष्णवैःसह। ननामाऽङ्घ्रियुगंवन्द्यमिन्द्रद्युम्नस्यसादरम्

तमुत्थाप्य च राजेन्द्रं पुरस्कृत्य स वैष्णवम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वाऽऽसनान्ते निवेश्याऽथ प्रोचे सप्रश्रयम्वचः ॥ १२२ ॥
राजन्सर्वत्र कुशली भवानोढ्रपते! किल । अपि देवो विजयते नीलाद्रिशिखरालयः॥
कच्चित्ते निर्मलाबुद्धिर्भगवत्पादपद्मयोः । उपैति समचित्तस्य सर्वभूतेषु ते हरौ ॥
ओढ्राधीशस्तदा तस्य वचः श्रुत्वा कृताञ्जलिः ।
उवाच प्रश्रितं वाक्यं हर्षविस्मयचञ्चुकः ॥ १२५ ॥
स्वामिन्सर्वत्र कुशलं त्वत्पादानुग्रहान्मम । तूर्ये तपत्यन्धकारः कथम्वाप्रभविष्यति
निसर्गगुणसंसर्गवशीकृतमहीभुजा । त्वया सनाथा पृथिवी जिष्णुनेवाऽमरावती ॥
सदा धर्मश्चतुष्पादस्त्वयि शासति मेदिनीम् ।
निषेधाचरणं राजन्केवलं श्रूयते श्रुतौ ॥ १२८॥
राजनीतिषुयेराज्ञांगुणाःसमुदितास्त्वयि । त एकैकंक्षितिभुजांगतादार्ष्टान्तिकंविभो
एतावदपि साम्राज्यं दुर्लभं ते नृपोत्तम । अष्टादशद्वीपवतीक्षितिरेकगृहोपमा ॥१३०
यदित्वांनाऽसृजद्ब्रह्मावत्सलंसर्वजन्तुषु । कथंशोकविहीनाःस्युर्मर्त्तेष्वात्मजबन्धुषु
साधारणा नृपतयो विष्णोरंशा इति श्रुतिः ।
भवान्साक्षात्तु भगवान्कोऽन्य ईदृग्गुणाकरः॥ १३२ ॥
दक्षिणोदधितीरेऽस्तिनीलाद्रिःकाननावृतः । नतत्रलोकसञ्चारस्तत्रास्तेसाऽपिदेवता
चात्यया वालुकाकीर्णःसाम्प्रतंश्रूयतेतु सः । तद्वशान्ममराज्येऽपिदुर्भिक्षमरकादिकम्
त्वय्यागते तु सर्वस्मिन्कुशलं मे भविष्यति ।
इत्युक्तवन्तं नृपतिरुत्कलेशं द्विजोत्तमाः !॥ १३५ ॥
विसर्जयामास तदा संनिवेशायमानयन् । नारदम्प्रेक्ष्यनिर्विण्णः किमेतदितिभोमुने!
यदर्थं मे श्रमस्तश्च विफलं हि वितर्कये । इत्युक्तवन्तं तं प्राह नारदस्तुत्रिकालवित्
न कार्या विस्मयस्तेऽत्र भाग्यवान्वैष्णवोत्तमः ।
वैष्णवानां न वाञ्छा हि विफला जायते क्वचित् ॥ १३८ ॥
अवश्यं प्रेक्षसे राजन्बिभ्रतं पार्थिवं वपुः । कारणं जगतामादिं नारायणमनामयम् ॥
त्वदनुग्रहहेतोर्वै क्षितावव्रतरिष्यति । जगच्चराचरं सर्वं विष्णोर्वशमुपागतम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न कस्याऽपि वशे सोऽपि परमात्मा सनातनः ।
केवलम्भक्तिवशगोभगवान्भक्तवत्सलः ॥ १४१ ॥
ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं सुगुप्तं यस्य मायया । स कथं परतन्त्रः स्याद्दृते भक्तजनान्नृप ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां मूलं भक्तिर्मुरद्विषः । सैव तद्ग्रहणोपायस्तामृतेनास्तिकिञ्चन
एक एव यदा विष्णुर्बहुधा स्वस्य मायया । तमृते परमात्मानं सुखहेतुर्न विद्यते ॥
येऽप्यन्ये शिवदुर्गाद्यास्तैस्तैः कमभिरावृताः ।
यच्छन्ति पूजिताः कामं तेऽपि विष्णुपरायणाः ॥ १४५ ॥
अन्तर्यामी स भगवान्देवानामपि हृत्स्थितः । यावत्फलम्प्रेरयति तावदेव ददत्यमी
वैष्णवस्त्वञ्चराजेन्द्र! पद्मयोनेश्च पञ्चमः । अष्टादशानां विद्यानां पारगोवृत्तसंस्थितः
न्यायेन रक्षितापृथ्वीं विशेषाद्‌ब्राह्मणार्चकः । अवश्यंद्रक्ष्यसिक्षेत्रे वैकुण्ठं चर्मचक्षुषा
पितामहोऽप्यत्रकार्येभवतोमांनियुक्तवान् । सर्वं ते कथयिष्यामि प्राप्तेक्षेत्रोत्तमे नृप
साम्प्रतं रात्रिशेषो हि तृतीयं याममृच्छति ।
स्वान्स्वान्निवेशान्निर्गन्तुं राज्ञ आज्ञापयाऽधुना ॥ १५० ॥
त्वमप्यन्तर्गृहं याहि निद्राया वशमागतः ॥ १५१ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीति साहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
इन्द्रद्युम्नस्यपुरुषोत्तमक्षेत्रगमनंनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वादशोऽध्यायः

नारदेन्द्रद्युम्नसम्वादएकाम्रकस्थानविषयिणीवार्त्तावर्णनम्

जैमिनिरुवाच

उक्ते ब्रह्मसुतेनेत्थमिन्द्रद्युम्नो महीमतिः। मुनेस्तु वचनं श्रुत्वा प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना
विचार्य परया बुद्ध्या श्रमं मेने फलावहम् ॥ १ ॥
अहो मे परमं भाग्यं बहुजन्मान्तरार्जितम्। व्यवसाये ममोद्युक्तःसर्वलोकपितामहः॥
जीवन्मुक्तं स्वंतनुजंमत्सहायमकारयत्। सहायो यादृशःपुंसांभवेत्कार्यं हि तादृशम्
श्रुतं सभासुसर्वासुइति वृद्धानुशासनम्। स इत्थं चिन्तयन्राजा विसृज्यचसभासदः
ततो मुनिं करे धृत्वा विवेशाऽन्तःपुरेद्विजाः!। तमर्चयित्वाविधिवत्पल्यङ्केसहतेनवै
निशावशेषं नृपतिर्निनाय सँल्लपन्मिथः। ततः प्रभाते विमले नित्यं कर्म समाप्य वै
पूजयित्वा जगन्नाथं सन्ततार महानदीम्। ओढ्रदेशाधिपेनाऽग्रे गच्छतादिष्टपद्धतिः
एकाम्रवनकं क्षेत्रमभियातो बलान्वितः।
स गत्वा किञ्चिदध्वानम्प्राप्य गन्धवहाभिधाम् ॥ ८ ॥
नदीं वेगवतीं शीततोयामाक्रम्य वेगवान्। पूर्वाह्णपूजासमये कोटिलिङ्गेश्वरस्य वै ॥
चर्चरीशङ्खकाहालमृदङ्गमुरजध्वनिम्। व्यश्नुवानं महारण्यं दूराच्छुश्राव भूपतिः ॥
मन्यमानो भगवतो नीलाचलनिवासिनः। उवाच नारदम्प्रीतो ध्वनिः कुत्रमहामुने
निलाद्रिशिखरावासः प्राप्तः किं परमेश्वरः। यदर्चा समयेह्येष श्रूयते सङ्कुलध्वनिः ॥
उताऽहोप्यन्यदेवो वा निकटे वर्त्तते मुने। इति पृष्टस्तदा राज्ञा प्रोवाच मुनिपुङ्गवः
राजन्सुदुर्लभं क्षेत्रं गोपितं मुरवैरिणा। न तत्रास्तीति भगवान्कैरपि ज्ञायते नृभिः
त्वं हि भाग्यवतांश्रेष्ठस्त्वद्भाग्यात्तेपुरोधसा। दृष्टः कथञ्चिद्भगवान्संयतेन्द्रियवर्त्मना
त्वं हि तादृग्बलैर्युक्तः षडङ्गैर्नृपसत्तम !। साहसेऽतिप्रवृत्तोऽसि संशयो मे महीपते
सम्वर्त्तते नीलगिरिर्योजने तु तृतीयके। इदन्त्वेकाम्रकवनंक्षेत्रं गौरीपतेर्विभोः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाऽतिदूरे महीपाल ! भीतः स शरणागतः ॥ १७ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

कथं स भीतो गौरीशः कस्वा शरणमागतः ॥ १८ ॥

ददाह त्रिपुरं घोरं शरेणैकेन यः पुराः । अत्र मे विस्मयोजातःश्रोतुमिच्छामिदुर्लभम्

राक्षताभवभीतानांभवःपरमपावनः । किमर्थं भयभीतोऽसौ कः समर्थोऽस्य वै जये

नारद उवाच

अत्र ते कथयिष्यामि पुरावृत्तस्महीपते । उपयेमे पुरा गौरीं तपसा वशमागतः ॥

ब्रह्मचारी हिमगिरौ भगवान्नीललोहितः । उत्सृज्य ब्रह्मचर्यं तु सोऽनङ्गशरपीडितः

तया रेमे रुचिरया यौवनोन्मत्तया नृप !। तत्पितुर्विषये भोगान्बुभुजेदेवकाङ्क्षितान्

कदाचिदथ निर्यातीस्ववासभवनात्सती । सामपूर्वं कुलस्त्रीभिर्मात्रोक्तासस्मितंवचः

आर्ये महत्तपस्तप्तं वरार्थं गहने वने । निष्कुलो निर्गुणो वृद्धो वरः प्राप्तो वरानने ॥

दिवारात्रिं न त्यजसि सन्निधिं तादृशस्य वै ।

को गुणः कथ्यतां वत्से! किम्वा पत्युः प्रसादजम् ॥ २६ ॥

भूषणाच्छाददं प्राप्तं ममैव गृहवासिनी । चिरं तिष्ठसि भद्रे त्वं पितृभोगोपलालिता

त्रैलोक्ये यास्तु कन्या वै परिणीता पितुर्गृहात् ।

प्रयान्त्यलङ्कृता भर्त्रा भर्तृवेश्मनि शुश्रुम ॥ २८ ॥

अहं तु मानसी कन्यापितृणां पितृलोकतः । आगतातुमहाभागेपरिणीताहिमाद्रिणा

इत्थमुक्ता मया हास्यान्न क्रोधाच्चललोचने । जामातुरग्रेनोवाच्यंसहिविष्णुसमोमतः

नारद उवाच

मातुरित्थं वचः श्रुत्वा भर्तृनिन्दाप्रपीडिता । कोपप्रस्फुरदोष्ठीसावाचंनोचेमनागपि

प्रययावन्तिकं भर्तुर्निह्नुवानाऽम्बिकावचः । जगाद परुषं वाक्यंस्नेहगर्भमिताक्षरम्

स्वामिन्न साम्प्रतं चैतद्यद्वासः श्वशुरालये । क्षौद्रीयसामपिगुरोस्त्रैलोक्यस्यकथंनुते

तदावयोर्नाऽत्र योग्या वसतिर्मे प्रिया विभो !।

न सन्ति किं ते वासाय योग्या वै भूमयः प्रभोः ॥ ३४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इत्युक्तः शिवया सोऽथ भगवान्वृषभध्वजः । तया सार्द्धं वृषारूढोमध्यदेशंययौत्वरम्
विलङ्घ्य सर्वतीर्थानि प्रयागं पावनं महत् । पूर्वसागरगामिन्या गङ्गाया उत्तरे तटे
वाराणसींनाम पुरीं गौर्या वासाय निर्ममे । पञ्चक्रोशमितांरम्यांवरप्रासादशोभिताम्
अट्टालकशतैर्युक्तामसंख्योपवनैर्युताम् । नानातीर्थसमायुक्तां नानाजनसमाकुलाम् ॥
आज्ञया धूर्जटेः शुभ्रां निर्मितां विश्वकर्मणा । पावनैः शीतलैर्गङ्गातरङ्गैःक्षपितांहसाम्
तत्र मध्ये पुरे स्वर्णप्राकाराट्टालशोभिते । रत्नस्तम्भैः सुघटिते सर्वाशापरिपूरके ॥
तया रेमे पशुपतिः श्रियेव मधुसूदनः । सा पुरी विश्वनाथेन कदाचिन्नैव मुच्यते ॥४१
अविमुक्तेतिसाख्यातानृणांमुक्तिप्रदायिनी । पुराऽऽसीन्मनुजाधीशसेविताभवभीरुभिः
तत्रोषिता तदा गौरी तेन भर्त्रा स्वलङ्कृता । मातरं पितरञ्चापि न सस्मारमहीपते!

एवं बहुयुगेऽतीते कैलासाद्रिं स जग्मिवान् ।
आत्मनः कोटिलिङ्गानि तत्र संस्थाप्य वै प्रभुः ॥ ४४ ॥

राजानःपालयामासुस्तांपुरींबहुशो नृप । तत्राऽऽसीत्काशिराजाख्यः पुरा द्वापरकेयुगे
शम्भुं सन्तोषयामास तपसोग्रेण वै प्रभुम् । जरासन्धपुरोगाणां राज्ञांजेतारमच्युतम्

सङ्ग्रामे प्रभविष्यामीत्यभिसन्धाय पार्थिवः ।
प्रादात्तस्मै वरं सोऽपि पिनाकी परितोषितः ॥ ४७ ॥

जेतासि कंसहन्तारं सङ्ग्रामे त्वमरिन्दम । तवार्थे प्रमथैः सार्द्धमहंयोत्स्येवृषेस्थितः
शम्भोरिति वरं लब्ध्वा प्रमत्तः स नराधिपः । शङ्खचक्रधरंसङ्ख्येहरिमाह्वतवीर्यवान्
अन्तर्यामी सभगवाञ्ज्ञात्वा वृत्तान्तमीदृशम् । चक्रंप्रस्थापयामासकाशिराजस्यसूदने
तदुग्रदर्शनं चक्रं सहस्रादित्यवर्चसम् । काशिराजशिरश्छित्त्वा तद्बलं तां पुरीं ततः
ददाह कुपितं राजन्विष्णोराशयवीर्यवित् । तद्दृष्ट्वा सुमहत्कर्म क्रुद्धः पशुपतिस्तदा
गणैर्वृतो वृषारूढः पिनाकी तदुपाद्रवत् । ततः सुदर्शनं चक्रं दृष्ट्वा तं प्रथमं पुरः ॥५३
शम्भुः पाशुपतास्त्रंतच्चकारोत्पातसन्निभम् । पुराविष्णोर्वरंप्राप्तंशम्भुनाभक्तितोषितात्

बलेनाऽऽप्याययिष्यामि तवाऽस्त्रं संस्मृतस्त्वया ।
मयि चेत्प्रतिकूलस्त्वं भविष्यति च निष्प्रभम् ॥ ५५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घोरे पाशुपतेचाऽस्मिन्नस्त्रेचविफलीकृते । वाराणस्यांचदग्धायांभयत्रस्तोवृषध्वजः
तुष्टाव जगतामादिमनादिं पुरुषोत्तमम् ॥ ५७ ॥

महादेव उवाच

नारायण! परंधाम ! परमात्मन्परात्पर !। सच्चिदानन्दविभव! निरञ्जन नमोऽस्तु ते ॥
जगत्कारणसृष्ट्यादिकर्मकृद्गुणभेदतः । मायया निजया गुप्त स्वप्रकाश नमोऽस्तुते
नाऽन्तर्बहिर्वहिश्चाऽन्तर्दूरस्थो निकटाश्रयः ।
गुरुर्लघुः स्थिरोऽणीयान्स्थवीयांश्च नमोस्तु ते ॥ ६० ॥
कोटयश्चतुरास्यस्य पलार्द्धं मम चाऽतुल !। यदपाङ्गविलासोत्थंतस्मैकालात्मने नमः
एकैकरोमाकलितब्रह्माण्डगणसम्भृतम् । मानातीतं वपुर्यस्य तस्मै विश्वात्मने नमः
स्वकालपरिमाणेन वेधसः प्रलयोद्भवौ । मन्वन्तरादिघटनाकलनाय नमोऽस्तु ते ॥
सृष्टोऽहं तमसानाथ त्वत्प्रभावानभिज्ञकः । तत्क्षमस्वाऽपराधं मेत्राहिमांशरणागतम्
स्तुतिमित्थं प्रकुर्वाणे तस्मिंस्त्रिपुरदाहिनि । चक्ररूपंपरित्यज्यआविरासीदधोक्षजः
प्रसन्नवदनः श्रीमाञ्छङ्खचक्रगदाधरः । तार्क्ष्यपद्मासनगतो वनमालाविभूषणः ॥ ६६॥
हारकुण्डलकेयूरमुकुटादिभिरुज्ज्वलः । वामोत्सङ्गगतांलक्ष्मींसत्यांदक्षिणपार्श्वगाम्
विभ्राणःकृष्णजीमूतकान्तदेहंकृपाम्बुधिः । क्रोधाविष्टइवोवाचविभ्यन्तंगिरिजापतिम्

श्रीभगवानुवाच

कालेनैतावताशम्भो! दुर्बुद्धिःकथमागता । हेतोर्नृपतिकीटस्यमयायोद्धुमुपस्थितः
कति वा मत्प्रभावास्ते नो ज्ञाता धूर्जटे! त्वया । सत्यंपाशुपतंतेऽस्त्रंदुर्जयंससुरासुरैः
मत्क्रोधरूपं तच्चक्रं त्वामपि क्षमते न यत् । मामवज्ञाय जगति भ्रमति त्वामृतेहि कः
तपोभिर्बहुभिःपूर्वं मच्छरीरतयोर्जितः । साम्प्रतं चेच्चिरं रन्तुं गौर्यासार्द्धमिहेच्छसि
पुरीं वाराणसीं चेमां यदीच्छसि चिरस्थिताम् ।
मन्नाम्ना भुवि विख्यातं क्षेत्रं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥ ७२ ॥
दक्षिणस्योदधेस्तीरे नीलाचलविभूषितम् । दशयोजनविस्तीर्णं यावद्विरजमण्डलम्
क्रमशः पावनं क्षेत्रं यावच्चित्रोत्पला नदी । ततःप्रभृतियो देशोयावत्स्याद्दक्षिणार्णवः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पदात्पदाच्छ्रेष्ठतमो नीलाद्रिरपवर्गदः । चतुर्देहस्थितोऽहं वै यत्र नीलमणीमयः ॥
तस्योत्तरस्यां विख्यातं वनमेकाम्रकाह्वतम् । पार्वत्या तत्र निवसनिर्भयस्त्रिपुरान्तक

सृजता सर्वलोकानां मन्निदेशात्स्वयम्भुवा ।
तत्राऽपि कोटिलिङ्गानां राजा त्वमभिषेक्ष्यसे ॥ ७८ ॥

सर्वतीर्थमयं चेदं तीर्थं यन्मणिकर्णिकम् । इहाऽहङ्कारमुत्सृज्य व्रज त्वं सपरिच्छदः

नारद उवाच

इत्युक्तो वासुदेवेन त्र्यम्बको नतकन्धरः । कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्रोवाच मधुसूदनम् ॥

महादेव उवाच

देवदेव! जगन्नाथ! प्रणतार्तिहर! प्रभो !। त्वदाऽऽज्ञापालनं श्रेयः कारणं मे जगत्पते!॥
यत्तु मूढतया देव! अवलेपः कृतो मया । तवैवाऽनुग्रहस्तत्र प्रभो! चाञ्चल्यकारणम् ॥
यदादिशसि देवेश प्रयाणं पुरुषोत्तमम् । तन्मूर्ध्नि कृत्वायास्यामिक्षेत्रंमुक्तिप्रदंशिवम्
अभिसन्धि कुरुष्वाऽद्य ममानुग्रहकारणम् । पुरुषोत्तमं मम क्षेत्रं त्वमेव परिपालय ॥
यथा पुनर्नेदृशं तद्विनाशमुपयास्यति । इत्थमेतत्पुरा क्षेत्रं महादेवेन निर्मितम् ॥ ८५॥
बलश्रीसहितं देवमर्चयन्पुरुषोत्तमम् । अत्र साक्षादुमाकान्तः स्थापितः परमेष्ठिना ॥
वयंतत्र व्रजिष्यामोद्रक्ष्यामःपुरनाशनम् । सुदूढान्तस्तमःस्तोमभास्वतंगिरिजापतिम्
यदेतच्छाम्भवं क्षेत्रं तमसो नाशनं परम् । रजःप्रक्षालनं श्रेयः ख्यातं विरजमण्डलम्

सत्त्वोद्रिक्ततया ख्यातं मुक्तिदं पुरुषोत्तमम् ।
यावन्त्यन्यानि क्षेत्राणि मुक्तिदानि श्रुतानि ते ॥ ८९ ॥

तानि सर्वाणि राजेन्द्र! ददतेमुक्तिमत्र वै । एतत्क्षेत्रं महाराज! दुष्कृताविलचेतसाम्

न विश्वासपथं याति रहस्यं चक्रपाणिनः ॥ ९१ ॥

जैमिनिरुवाच

नारदस्य वचः श्रुत्वा प्रहृष्टहृदयो नृपः । उवाच मुनिशार्दूलं विस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥

साधु मे कथितं ब्रह्मन्क्षेत्रं परमपावनम् ॥ ९२ ॥

यत्रोमापतिरास्तेऽसौ पालकः पुरुषोत्तमः । अवश्यं तत्र गच्छामःपन्थायद्यपिवक्रभूः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उद्दिष्टेष्टपरिप्राप्तौ यदिदं कारणं महत् ॥ ९३

जैमिनिरुवाच

ततस्तौ मुनिभूपालौ मध्याह्नसमये द्विजाः । प्रापतुः सबलौ क्षेत्रमेकाम्रवनसञ्ज्ञकम्
बिन्दुतीर्थे नृपःस्नात्वातीरस्थंपुरुषोत्तमम् । सम्पूज्यविधिवद्यातःकोटीश्वरमहालयम्
तद्वारि सम्यगाचान्तस्तत्प्रीत्यै सुबहूनि सः । गजाश्वधनरत्नानि वस्त्रालङ्करणानि च
द्विजेभ्यः प्रददौ राजा सात्त्विकं धर्ममास्थितः। लिङ्गंत्रिभुवनेशंतंमहास्नानेनपूजयन्

अतुलां प्रीतिमालेभे विष्णोरद्वैतदर्शनः ।

स्तुत्वा प्रणम्य भक्त्याऽसौ वीणया चोपगाय्य च ॥ ९८ ॥

कृताञ्जलिपुटो देवप्रसादनकृतोद्यमः । अनन्यमनसा तस्थौ चिन्तयन्वृषभध्वजम् ॥
ततः प्रसन्नो भगवांस्त्र्यम्बकः परमेश्वरः । साक्षान्नृपमुवाचेदं स्पष्टाक्षरपदं द्विजाः ॥

कोटिलिङ्गेश उवाच

इन्द्रद्युम्न! महाराज! वैष्णवस्त्वादृशो भुवि ।

दुर्लभः खलु ते वाञ्छा चिरात्सम्यग्भविष्यति ॥ १०१ ॥

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे शम्भुः पश्यतस्तु महीक्षितः । नारदं पुनराहेदं यदादिष्टं स्वयम्भुवा
तत्कल्पय महाभाग वाजिमेधपुरःसरम् । विष्णोः कलेवरे तस्मिन्क्षेत्रे श्रीपुरुषोत्तमे

अन्तर्वेदी महापुण्या विष्णोर्हृदयसन्निभा ।

तस्याः संरक्षणायाऽहं स्थापितो विष्णुनाऽग्रधा ॥ १०४ ॥

शङ्खाकृतेरग्रभागे नीलकण्ठोऽहमास्थितः । दुर्गया सह विप्रेन्द्र ! तत्रेमं भूपतिं नय ॥
अन्तर्हितः खल्विदानीं नीलरत्नतनुर्हरिः । तत्र श्रीनरसिंहस्य क्षेत्रं कुरु मदाज्ञया ॥
तत्र नः सन्निधौ वाजिमेधेन यजतामयम् । सहस्रेण नृपश्रेष्ठः तदन्ते तरुमद्भुतम् ॥
दर्शयैनं द्विजश्रेष्ठ ब्रह्मरूपमकल्मषम् । चतस्रः प्रतिमास्तेन विश्वकर्मा घटिष्यति ॥
तासां प्रतिष्ठितौब्रह्मास्वयमेवागमिष्यति । यथायंक्षीणपापःस्याद्वाजिमेधैर्यजन्हरिम्
तिष्ठत्वब्दसहस्रं वै तदन्ते लोकयिष्यति । समस्तजगदाधारं सर्वकल्मषनाशनम्
दारवीं तनुमास्थाय दर्शनादपवर्गदम् । न तस्य चरितं वेत्ति ब्रह्माऽहं त्वं च नारद!॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आज्ञानुष्ठानतो भक्त्या प्रसीदति स केवलम् । नारदोऽपिमहादेवंप्रणिपत्यजगद्गुरुम्

उवाच प्राञ्जलिर्भूत्वा यदादिष्टं त्वया विभो !॥ ११२ ॥

पितामहोऽपि मामित्थं निर्दिदेशाऽस्य कल्पनम् ।

पितामहश्च त्वं नाथ नो भिन्नौ परमात्मनः ॥ ११३ ॥

नृपतेरस्य भाग्यर्द्धिरीदृशी यत्कृते विभो !। अगोचरोऽसौ मनसस्त्रयाणामप्यनुग्रहः

यत्प्रसङ्गेन तरणं भवाब्धेरपि दुष्कृताम् । अचिन्त्यमहिमा ह्येष भगवान्भूतभावनः ॥

न बुद्धिगोचरे भक्तिर्यावत्या प्रीयते ह्यसौ । चिरंयतन्तस्तिष्ठन्तिवेदानुवचनादिभिः

क्षुद्रोऽपि लभते मुक्तिमनायासेन कर्मणा ॥ ११६ ॥

गव्योपजीव्या गोप्यस्तुवनचारगृहोषिताः । आरण्यजीवनाःप्रापुर्मुक्तिकामोपभोगतः

द्रुहन्निरन्तरं प्राप शिशुपालः सभान्तरे । व्याधोहृदयमाविध्य गतिं प्रापसुदुर्लभाम्

वस्त्राकर्षं गृहं नीत्वा कुब्जैनं बुभुजे पुरा । यं ध्यानलयमापन्ना लभन्ते न सुरस्त्रियः

चाण्डालायददौ मुक्तिंदूरस्थायापिनोपुनः । आसन्नायाऽतिभक्तायश्रोत्रियायपुराविभुः

मायाभिर्वञ्चयेत्त्वां हि पितामहमपि प्रभुः । तिष्ठन्ति दुःखबहुलास्तपोभिर्देहबन्धनाः

गौतमाद्या ब्रह्मचर्यनिष्ठाः कल्पान्तवासिनः ।

ईदृक्तादृक्परिच्छेद गोचरं नाऽस्य चेष्टितम् ॥ १२२ ॥

व्यवसायेन बहुना कालेन महता तथा । निर्णेतुं शक्यते नाऽस्य चरितं वा सुमेधसः

उपाया बहवः सन्ति ये शास्त्रपरिनिष्ठिताः । विदुषां मोचनायेह बहुशस्तैर्यजन्ति वै

सर्वेषामुत्तमोपायोवसतिः पुरुषोत्तमे । याऽवश्यं स्वामिसायुज्यंप्रापयेत्सुसखा यथा

तदेनं मायिनं प्राप्तुमुपायो नान्तरीयकः । स्वयं निधाय हरिणा यत्र वासः सुरक्षितः

इन्द्रद्युम्नप्रसङ्गेन जायते सार्वलौकिकः । तदाज्ञापय देवेश गृहीत्वैनं बलान्वितम् ॥

उपत्यकायां संस्थाप्य दीक्षयित्वा महाक्रतौ ।

आगमिष्यामि पादाब्जसमीपं ते वृषध्वज !॥ १२८ ॥

जैमिनिरुवाच

तथेत्युक्त्वा महादेवः क्षणान्तर्दधे मुनेः । सोऽपि राज्ञो रथेतिष्ठन्प्रययौक्षेत्रमुत्तमम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीयेऽह्निकपोतेशस्थलीमासेदिवान्नृपः । दैर्घ्यायामसमायुक्तां जलाशयद्रुमाकुलाम्

विल्वेशः पूर्वसीमायां समुद्रतटमास्थितः ।

सेनानिवेशयोग्यां तां मन्त्रिणा सन्निवेदिताम् ॥ १३१ ॥

यथायोग्यं यथास्थानं स्थापयित्वान्नृपोत्तमः । विल्वेश्वरकपोतेशंनमस्कृत्यप्रपूज्यच

रथमास्थाय मतिमान्सहितो ब्रह्मसूनुना । मनसा वचसाविष्णुंनीलाचलनिवासिनम्

चिन्तयन्कीर्तयन्विप्रा जगाम सन्निधिं हरेः ॥ १३२ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-

खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे

विल्वेश्वरकपोतेश्वरगमनवर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः

कपोतेशविल्वेशयोर्माहात्म्यवर्णनम्

मुनय ऊचुः

कपोतेशस्थलीचाऽपि कथं ख्याता महामुने !। को वाकपोतःकश्चेशएतन्नोवक्तुर्महसि

जैमिनिरुवाच

पुराकुशस्थलीसावैअसेव्यासर्वजन्तुभिः । तीक्ष्णधारैःकुशाग्रैस्तुपरितःकण्टकैश्चिता

निस्तरुर्निर्जलाधारा पिशाचवसतिर्यथा । यदा पूर्वं भगवतो नाऽन्योदेवोऽपिपूज्यते

पूज्यः स्यामहमप्येवं स्पर्धाऽऽसीद् धूर्जटेस्तदा ।

चिन्तयन्निति तस्यैव विष्णोर्भक्तौ मनोऽदधत् ॥ ४ ॥

सर्वनिर्विषये देशे स्थित्वाऽहंनिष्परिग्रहः । सुमहत्तपआस्थायतोषयिष्यामितंहरिम्

किं वदेयं रमेशाय का स्तुतिःशारदापतेः । सर्वब्रह्माण्डनाथस्यकिंवान्यत्तुष्टिकारकम्

तस्मान्न बाह्यं वस्त्वन्यदुपयोगायतस्य वै । अन्तर्यागंसमास्थायनिर्व्यलीकेनचेतसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तेभ्य आत्मप्रददं चराचरगुरुं हरिम् । आराधयिष्ये सर्वेषां पूज्यःस्यां तत्प्रसादतः
तत इत्यभिसन्धायययौ पुण्यांकुशस्थलीम् । समीपेनीलगोत्रस्यसर्वद्वन्द्वविवर्जितः
ततस्तेपे तपस्तीव्रं वायुभक्षो महेश्वरः । कपोत इव सूक्ष्मोऽभूदष्टमूर्तिरपि प्रभुः ॥
ततः प्रसन्नो भगवानैश्वर्यं प्रददौ तदा । येनात्मतुल्यः सञ्जातः पूजासम्माननादिषु ॥
तपःप्रभावात्तस्यासीत्स्थलीवृन्दावनोपमा । सरस्तडागसरसीनदीभिःशोभितान्तरा
नानाद्रुमैर्लताभिश्च सर्वर्तुफलपुष्पकैः । मधुमत्तद्विरेफाणां झङ्कारैर्मुखराशया ॥ १३॥
नानापक्षिगणाकीर्णा सर्वजन्तुसुखाश्रया । कपोतसदृशो जातो यतः सतपसाशिवः
मुरारेराज्ञया सोऽत्र कपोतेश्वरतांगतः । तदाज्ञयाऽत्रवसति मृडान्या त्र्यम्बकः सदा
येऽर्चयन्ति कपोतेशं स्तुवन्तिप्रणमन्ति वा । निर्धूतकल्मषास्तेवैप्रयान्तिपुरुषोत्तमम्

अतः परं प्रवक्ष्यामि विल्वेशमहिमां द्विजाः !।
पातालवासिनः पूर्वं दैत्या भित्त्वा महीतलम् ॥ १७ ॥

उपद्रवन्ति भूर्लोकं भक्षयन्ति जनांस्तथा । भारावतरणार्थाय देवकीगर्भसम्भवः ॥
पालयामास पृथिवीं यदा स भगवान्प्रभुः । यादवैःपाण्डवैःसार्द्धंतदातत्स्थानमागतः
तीर्थराजस्य सलिलेस्नात्वा तं नीलमाधवम् । दूरात्प्रणम्य मनसा दैत्यद्वारमुपागतः
दृष्ट्वा तद्विवरं घोरमप्रवेश्यं तु मानवैः । भ्रान्त्यासंमोहयँल्लोकान्प्रथयञ्छिवपूज्यताम्
बैल्वं फलं समादाय तत्राऽऽवाह्यत्रिलोचनम् । पूजयित्वापुरारातिं तुष्टावाऽसुरसूदनः

श्रीभगवानुवाच

नमस्तेत्रिगुणातीत! गुणत्रयविभागकृत् !। त्रयीमय! त्रयातीत! त्रिकालज्ञानिने नमः
शशिसूर्याऽग्निनेत्राय ब्रह्मण्याय वरात्मने । अष्टैश्वर्यनिधानाय तुभ्यमष्टात्मने नमः ॥
यस्य रूपं तमःपारे तमोनाशनमव्ययम् । अज्ञानानां तमश्छिन्नं तस्मै वितमसे नमः ॥
एवंस्वमाऽऽत्मनात्मानंस्तुत्वा स भगवान्प्रभुः । तस्यप्रसादाद्विवरं सुप्रवेशमपश्यत
तेन मार्गेण पातालंससैन्योऽभ्यगमत्प्रभुः । हत्वा तत्रबलोदग्रान्दैत्यान्भारावतारणः
पुनरागम्य तत्रैवस्थित्वासवृषभध्वजम् । सम्पूज्यभगवान्द्वाररोधायस्थापयञ्छिवम्
इदमाह महाबुद्धिर्भक्तिवश्यो गदाधरः । धूर्जटे! तिष्ठ प्रासादेरुन्धानोऽसुरनिर्गमम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वदन्यः कः क्षमः शम्भो कर्बूरबलनाशने । स्थापयित्वा महादेवं ततोद्वारावतींययौ

ततः प्रभृति बिल्वेशः पृथिव्यां ख्यातिमागतः ।

पूर्वविधिः स बिल्वेशः क्षेत्रराजस्य भो द्विजाः !॥ ३१ ॥

तं दृष्ट्वा पापहन्तारं मृडानीपतिमव्ययम् । सर्वान्कामानवाप्नोति विपत्तिदुस्तरांजयेत्

कपोतबिल्वेश्वरयोर्माहात्म्यंकथितं तु वः । अतःपरंभोमुनयः किमन्यच्छ्रोतुमिच्छथ

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनऋषिसम्वादे
कपोतेशबिल्वेशयोर्माहात्म्यवर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चतुर्दशोऽध्यायः

विद्यापतिना साकंनारदपार्थिवयोर्गमनवर्णनम्

मुनय ऊचुः

रथमारुह्य तौ यातौ यदा नारदपार्थिवौ । क यातौ चक्रतुः किं वा तन्नो वदमहामुने

जैमिनिरुवाच

सार्द्धं च विद्यापतिना पुरोहितकनीयसा । क्षेत्रान्ते नीलकण्ठस्य समीपमुपजग्मतुः

दुर्निमित्तमभून्मार्गे व्रजतोऽस्यमहीक्षितः । वामाक्षिभुजयोःस्पन्दःस्फुरणंचमुहुर्मुहुः

तद्दृष्ट्वा नृपशार्दूलोविषादमुपसेदिवान् । पप्रच्छ कारणं चाऽस्यसर्वज्ञाननिधिंमुनिम्

अव्याहतं मे साम्राज्यं प्राप्तं क्षेत्रोत्तमं त्विदम् । दर्शनार्थंमाधवस्ययात्रेयं तु शुभावहा

अकार्यं मे भवेदद्य किं मुने ब्रूहि तत्त्वतः । स्पन्दतेवामनेत्रंतुस्फुरते च भुजोऽसकृत्

तच्छ्रुत्वा नारदः प्राह भावि कार्यं च सूचयन् । श्रावयन्कुशलं वाक्यंयदुक्तंपद्मयोनिना

नारद उवाच

मा भूद्विषादस्ते भूप सविघ्नं प्रायशः शुभम् । विघ्नान्ते चशुभंपुंसांपुनर्भाग्यवतांनृप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सत्यं त्वं सार्वभौमोऽसि क्षेत्रं विष्णोर्वपुस्त्विदम् ।
यात्रा तेऽत्र यदर्थेयं सोऽन्तर्द्धानमुपागमत् ॥ ६ ॥
एष विद्यापतिर्विप्रो दिनेयस्मिन्ददर्शतम् । सायंकालेततोऽन्येद्युः स्वर्णवालुकयावृतः
ययौ पातालनिलयं मर्त्यलोके सुदुर्लभः ॥ १० ॥

जैमिनिरुवाच

तच्छ्रुत्वा घोरवचनं वज्रपातसमं नृपः । पपात धरणीपृष्ठे निःसञ्ज्ञः स द्विजोत्तमाः
तं तथा पतितं दृष्ट्वा पुरोहितपुरोगमाः । स्निग्धाःसखायः सर्वे ते हाहाकारमुपाद्रवन्
कर्पूरशीतलंवारि मुखे सिक्त्वा पुनःपुनः । चन्दनागुरुकर्पूरैः सर्वाङ्गं लिलिपुश्च ते ॥
चामरैस्तालवृन्तैश्चवीजयामासुराशुतम् । नारदोऽपिचसम्भ्रान्तोधारयन्योगधारणम्
प्राणानरक्षन्नृपतेर्जानंस्तत्र शुभायतिम् । सोऽपिराजा चिरात्संज्ञां लेभेयत्नैरनुत्तमैः
उत्थायपादयोर्विप्रा नारदस्याऽपतत्पुनः । किमकार्षं मुने! पापं कस्मिञ्जन्मान्तरेदृढम्
यस्यपाकदशायाम्वैदुःखमासीत्सुदारुणम् । कर्मणामनसावाचानो द्विजानां गवामपि
अपराधः कृतः कश्चित्स्वप्नेऽपि मुनिपुङ्गव !॥ १७ ॥
नित्यं नैमित्तिकं काम्यं कर्म यत्परिकीर्तितम् ।
राज्ञस्तन्मुनिशार्दूल! न त्यक्तं वै मया क्वचित् ॥ १८ ॥
देवतातिथिभृत्यानां पितॄणां च महामुने । तथाश्रितानां बन्धूनां नापमानःकृतोमया
पञ्चाशदपराधा ये विष्णोर्वैष्णवपुङ्गव !। त्यक्ताः प्रयत्नात्ते सर्वे क्रुद्धा इव महोरगाः
किं भाग्यं चरितं नेन पुरोहितकनीयसा । यच्चर्म चक्षुषा दृष्टो भगवान्नीलमाधवः ॥
किमर्थं राज्यविभ्रंशो जानतैव त्वयाकृतः । यात्रासमय एवैतत्कथं वा न प्रकीर्तितम्
किमर्थम्वाश्रोत्रियाणांस्थानभ्रंशोमयाकृतः । कथमेतैःपरित्यक्ताश्चिरात्संस्कृतभूमयः
आवंशभूतेर्वृत्तिर्याप्रजाभिःपरिपालिता । मदर्थं सा परित्यक्ताजीविष्यन्तिकथंनुताः
प्राणान्न धारयिष्यामि न द्रक्ष्यामि यदा हरिम् ।
एष मे निश्चयो ब्रह्मन्मयि नष्टे कुतः प्रजाः ॥ २५ ॥
मुने सदासकरुणस्त्वंमांशास्सिशुभाशुभम् । साम्प्रतंमत्सुतंनीत्वामालवेष्वभिषेचय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स पालयतु न्यायेन न शोचन्तु इमाःप्रजाः । राजानो ये समायातास्तेसर्वेमन्निदेशतः
मत्सूनोर्मालवेशस्यप्रयान्तुवचने स्थिताः । प्रायोपवेशविधिना चिन्तयन्नीलमाधवम्
आयुः शेषं करिष्यामि सफलं क्षेत्रसंस्थितः ॥ २६ ॥

जैमिनिरुवाच

विलपन्तमिन्द्रद्युम्नं राजानं ब्रह्मणः सुतः । उत्थाप्य प्रश्रयगिरासान्त्वयन्निदमब्रवीत्

नारद उवाच

राजन्पण्डितमूर्द्धन्यो वैष्णवो धैर्यसागरः । श्रेयः सविघ्नंसततं कथं वा नाऽवधारयेः
इदं तु परमं श्रेयः पुंसो जन्मशतार्जितम् । शरीरधारिणं पश्येच्चर्मचक्षुर्गदाधरम् ॥
निरङ्कुशा हरेर्लीला केनवाप्यवधार्यते । जीवन्मुक्तोऽप्यहं राजंस्तल्लीलांनाऽतिवर्तये
कियता वञ्चितो नाऽहं दृढभक्तोऽन्तिकस्थितः ।
दुरत्यया तस्य माया बहुजन्मशतैरपि ॥ ३४ ॥
अनन्ता तस्यमायेयंदुर्ज्ञेयापद्मयोनिना । नाभिपद्मास्थितेनाऽपिनित्यञ्चस्तुतिशालिना
स्वभाव एवं कथितस्तस्यमायाविनोनृप । विशेषं कथयाम्येवं त्वन्तु भाग्यवताम्वरः
तिस्रोऽपि मूर्तयस्तस्य त्वदनुग्रहबुद्धयः । चराचराणांस्रष्टायः साक्षाल्लोकपितामहः
मामुवाच व्रजाऽऽशु त्वमिन्द्रद्युम्नस्य चाऽन्तिकम् ॥ ३७ ॥
नीलाचलम्प्रयात्येष दिदृक्षुर्नीलमाधवम् । अन्तर्द्धानं गतो ह्येष यमेन प्रार्थितो विभुः
न तत्र शोकः कर्तव्यः शक्यतेतत्र नान्यथा । वाच्यो मद्वचनाद्राजापञ्चमीममसन्ततिः
तत्कृते परमात्मानं प्रसाद्य पुरुषोत्तमम् । श्वेतद्वीपान्नयिष्यामि सहस्रान्ते महाक्रतोः
इन्द्रद्युम्नः स इदानीं क्षेत्रे श्रीपुरुषोत्तमे । अश्वमेधसहस्रैस्तु यजन्विष्णुं स तिष्ठतु
तदन्ते दारुवतनुं विष्णुं द्रक्षतिचक्षुषा । सोऽवतारो हरेः ख्यातिंतस्यद्वारागमिष्यति
तदा तु तनवो विष्णोः प्रतिष्ठाप्या मया ध्रुवम् ।
पुरा स्म मणिमूर्तिस्तु चतुर्द्धाऽवस्थितो हरिः ॥ ४२ ॥
दृष्ट्वा पुरोधसा तस्य साक्षादग्रे निवेदितः । दिव्यदारुवपुर्भूयश्चतुर्द्धाऽवतरिष्यति ॥
तस्मान्माऽथराजेन्द्रवाञ्छातेसफलाध्रुवम् । भविष्यतिनसन्देहोनिर्व्यलीकोवसेहवै

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैमिनिरुवाच

सान्त्वयित्वा निनायेत्थं राजानं नारदस्तदा । विश्वासपदवीं विप्राःपुनर्वाक्यमुवाचह

नारद उवाच

शङ्खाकृतेः क्षेत्रवरस्य चाऽग्रे यो नीलकण्ठः खलु दुर्गयाऽऽस्ते ।
यामो वयं तत्र च वाजिमेधक्रतूपयोग्या सुसमा स्थली सा ॥ ४७ ॥
तस्यां विनिर्माय सहस्रवर्षस्थिरां सुशालां हयमेधनाय ।
नीलाद्रिवासस्य नृसिंहमूर्तिं दृष्ट्वा कृतार्थं विरचय्य जन्म ॥ ४८ ॥
तस्यैव मूर्तिं प्रतियातनान्ते नित्याऽर्चनीयां तव पूजनीयाम् ।
प्रत्यक्प्रतिष्ठाप्य समस्तविघ्नविनाशहेतोः फलबृंहणाय ॥ ४९ ॥

आरप्स्यामःक्रतुवरंमुनिवर्यैर्यथोचितम् । विलम्बोऽत्र न हि श्रेयानितिपैतामहम्वचः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णखण्डा-
न्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
शोकार्त्तस्येन्द्रद्युम्नस्यनारदकर्तृकंसान्त्वनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोऽध्यायः

भगवतःपुनराविर्भावशंसिनभोवाण्याराज्ञःप्रसादवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

ततस्ते प्रस्थिता विप्रा नीलकण्ठान्तिकम्मुदा । प्रपूज्यतं महादेवंश्रीदुर्गांप्रणिपत्यच
विमुच्य स्यन्दनवरंपादचाराः सहानुगाः । आरोढुं नीलभूमिध्रंप्रयाताः संयतेन्द्रियाः
नानाद्रुमलताकीर्णं नागापक्षिगणाकुलम् । शिलाविषमसंरोधममितं परिवेषकम् ॥
भ्रमद्भ्रमरसम्भूतभ्रमकृद्गण्डशैलकम् । दक्षिणाम्भोधिकल्लोलजलावृतनितम्बकम् ॥
अप्रतर्क्यं सदा मर्त्यैर्दुष्प्रवेश्यं महोरगैः । मत्तमात्तङ्गकवटा बृंहितैर्भीषणान्तरम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्वापदैश्चिरसम्वासैः शस्त्राघातमवेदिभिः । निर्भयैःपरितः कीर्णं मृगयूथैरनेकशः ॥

प्रवेष्टुकामा न प्रापुर्यदा ते मार्गमन्तरम् ।

तदा नारदसंसर्गाद्विदित्वा तु गिरेः शिरः ॥ ७ ॥

आसेदुर्यत्र वसति कृष्णागुरुतरोरधः । सर्वापद्भयसंहर्ता दिव्यसिंहवपुर्विभुः ॥ ८॥

यं दृष्ट्वा ब्रह्महत्याया लीयन्तेकोटयोनृणाम् । व्यात्तास्यंभीमदशनमापिङ्गलसटाकुलम्

उग्रं त्रिनेत्रं दैत्यस्य स्वोरावुत्तानशायिनः । वक्षःस्थलं दारयन्तं नखरैर्वज्रदारुणैः ॥

अरुणाभं लसज्जिह्वं साट्टहासमुखं विभुम् । शङ्खचक्रलसद्बाहुंकिरीटमुकुटोज्ज्वलम्

नेत्रोच्छलद्वह्निकणसन्त्रासितदिगन्तरम् । प्रचण्डाघातभूम्यन्तप्रविष्टपदपङ्कजम् ॥

तमादिमूर्तिं ते दृष्ट्वा नारदाऽग्रे तदा हरिम् । निर्भया ददृशुर्दूरात्प्रणेमुर्विगतज्वराः॥१२

इन्द्रद्युम्नोऽपि तं दृष्ट्वा ारदोक्तौ विशश्वसे । भाविकार्यप्रत्ययवानिदमाहमहामुनिम्

महर्षे ! कृतकृत्योऽस्मि त्वं हि ज्ञाननिधिः परम् ।

दुराराध्यो नृसिंहोऽयं दर्शनेऽपि भयावहः ॥ १५ ॥

भवादृशैः सुसेव्योऽयंमादृशैर्दूरतोऽपिसः । दर्शनात्कृतकृत्योऽस्मिसंलीनाशेषपातकः

त्वत्सन्निधानादेवाऽत्रतिष्ठामोनिर्भया मुने । अत्युग्रमूर्तिर्भगवान्स्वल्पवीर्यैर्नरैः कथम्

आराध्यतेदैत्यराजंत्रिलोकेशं विदारयन् । यस्यनीलमयीमूर्त्तिःकृपासिन्धोःस्थितातुवै

कस्मिन्स्थले मुनिश्रेष्ठ दर्शनाद्या विमुक्तिदा । तन्मे दर्शय विप्रेन्द्रयन्मेमुक्तिप्रदंमतम्

इत्युक्तो नारदस्तस्मै दर्शयामास पावनम् । स्थानंयत्रस्थितोदेवःस्वर्णसैकतसम्वृतः

पश्यैतं योजनायामंयोजनद्वयमुच्छ्रितम् । कल्पान्तस्थायिनं भूपन्यग्रोधंमुक्तिदंनृणाम्

छायायां क्रमणाद्यस्य मुच्यते पापकञ्चुकात् ।

अस्य मूले नरः प्राणांस्त्यजन्मुक्तिमवाप्नुयात् ॥ २२ ॥

न्यग्रोधरूपं दृष्ट्वाऽपि नारायणमकल्मषम् । निष्पापोजायते मर्त्यःकिमुतंपूजयंस्तुवन्

अस्य मूलात्प्रतीच्यां हि नृसिंहस्योत्तरेनृप !। अतिष्ठन्माधवोयत्रचतुर्मूर्तिधरोविभुः

अनुग्रहीतुं त्वामेव पुनरत्रोद्भविष्यति । श्वेतद्वीपे यथा विष्णुर्भोगभूमौ निजालयः

जम्बूद्वीपे कर्मभूमौ निजं स्थानमिदं स्मृतम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वस्यैवाऽतिरहस्यत्वान्न प्रकाशोऽस्य सम्मतः ॥ २६ ॥
मोक्षाधिकारी जानातिस्थलमेतन्महीपते । अविश्वासपदं नृणां दुष्कृतांहिविशेषतः
अत्र याऽन्या प्रतिकृतिः पौरैर्विष्णोः प्रतिष्ठिता ।
साऽपि मुक्तिप्रदा भूप ! किं पुनः सा स्वयम्भुवा ॥ २८ ॥
अन्तर्द्धानतिरोधाने सनिमित्ते जगत्प्रभोः । अनुग्रहार्थं साधूनां जायते च युगेयुगे ॥
नानावतारैर्भगवान्मत्स्यकूर्मादिकैर्नृप । निमित्तनाशे च तिरोदधाति परमेश्वरः ॥
निर्निमित्तंस्थितोनित्यमिहकारुण्यसागरः। श्वेतद्वीपाद्यथाविष्णुरन्यत्राऽवतरेत्प्रभुः
अत्र स्थितोऽपि स द्वारकाकाञ्चीपुष्करादिषु ।
प्रकाशं याति कृपया तरुमूलप्ररोहवत् ॥ ३२ ॥
नानातीर्थेषु देशेषु क्षेत्रेष्वायतनेषु च । अंशावतारास्तस्यैव मा भूत्ते संशयो नृप !॥
क्षणंनत्यजतीशानःक्षेत्रंक्षेत्रमिवस्वकम् । त्वदुपज्ञस्तुभूपाल! प्रकाशोऽन्योभविष्यति
इति संदर्शितं स्थानं नारदेन महात्मना । साष्टाङ्गपातं भूमौ तदिन्द्रद्युम्नो ननाम ह
मन्वानस्तु स्थितं देवं प्रकाशमिव तुष्टुवे ॥ ३६ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

देवदेव जगन्नाथ! प्रणतार्तिविनाशन !। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष! पतितं भवसागरे ॥
त्वमेक एवदुःखौघध्वंसकःपरमेश्वरः । क्षुद्राः क्षुद्रान्हि सेवन्ते सुखलेशस्यलिप्सया
अनादित्रिविधौघस्य राशेः स्वस्य महांहसः ।
दुरुच्छेद्यस्य सततं पूर्यमाणस्य जन्मनः ॥ ३९ ॥
किंपुनर्भक्तिभावेनसाक्षान्मुक्तिप्रदंनृणाम् । कर्माधीनन्तुयेमूढावदन्तित्वांकृपानिधिम्
ते न जानन्तिभगवन्कर्मैवंप्रेरितंत्वया । अजामिलेनविप्रेण त्यक्त्वा वर्णाश्रमोदितम्
किं न पापं कृतं स्वामिन्सोऽपि त्वन्नामकीर्तनात् ।
मुक्तोऽभूत्स्मरणादेव पाशहस्तैर्विमोचितः ॥ ४२ ॥
सर्वेऽप्युपाया देवेशकीर्तितास्तवदर्शने । त्वयि दृष्टे हि भिद्यन्तेसंशयाहृदिसंस्थिताः
निःसंशयो भवेत्सद्यः पापपुण्यक्षयो ध्रुवम् । त्वमेव शरणं दीनमनुगृह्णीष्वमांविभो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निश्चितानि त्वया देव ! गर्भस्थस्य च यानि मे ।
तैरेव मे जनिर्जातु याचे त्वां केवलं त्विदम् ॥ ४५ ॥
तिरश्चो मुक्तिदा मूर्तिः स्थिता ते याऽत्र ताम्पुनः ।
अनेन चक्षुषा पश्यामीश! नाऽन्यत्प्रयोजनम् ॥ ४६ ॥

कृताञ्जलिपुटोराजा स्तुत्वैवं मधुसूदनम् । पुनर्ननाम धरणीपृष्ठे साऽश्रुविलोचनः ॥
ततोऽन्तरिक्षगावाणीसामसुस्वरभाषिणी । उच्चचारनभोमध्येइन्द्रद्युम्नस्यश्रृण्वतः
माचिन्तांव्रजभूपाल! व्रजिष्येत्वद्दृशोःपथम् । पैतामहस्वचःप्राहनारदोयत्कुरुष्वतत्
तच्छ्रुत्वा दिव्यवचनं नारदस्य च भाषितम् । श्रद्दधेवाजिमेधाय भगवत्प्रीतिकारकः
नारदं च पुनः प्राह हर्षगद्गदया गिरा । मुने त्वया यदादिष्टं चतुर्मुखनिदेशतः ॥५१॥
अशरीरा त्वियंवाणीअनुजज्ञे तदेव हि । पितामहोजगन्नाथो भेदोवैनाऽनयोःक्वचित्
पद्मयोनेः सुतस्त्वं हि वचस्ते भगवद्वचः । तत्कर्तव्यं प्रयत्नेन यच्छ्रेय उपपादकम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्येजैमिनिऋषिसस्वादे
इन्द्रद्युम्नस्यशोकनाशोनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः

आद्यमूर्तिनृसिंहस्थापनायराजोद्योगवर्णनम्

जैमिनिरुवाच ।

नृपं सुमनसं दृष्ट्वा श्रद्दधानं महाक्रतौ । उवाच परमप्रीत्या नारदो लोकहर्षणः ॥
व्यवसाये सुकृतिनां देवायान्तिसहायताम् । तत्रोदाहरणं त्वं हि यत्सहायश्चतुर्मुखः
तदेहि यामस्तत्रैव नीलकण्ठस्य सन्निधौ । सर्वराक्षससंहारं सर्वविघ्ननिवारणम् ॥
स्थापयाम्यग्रतो राजन्नृसिंहं वारुणीमुखम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तर्हितो हि भगवान्प्रत्यक्षोऽसौ नृकेसरी ॥ ४ ॥
सन्निधावस्य यागस्तु फलातिशयवान्भवेत् । त्वमग्रतो गच्छशीघ्रं प्रासादंतत्रकारय
स्मरणान्मम चागत्यसुतो वै विश्वकर्मणः । प्रत्यङ्मुखं तुप्रासादंसतूर्णं घटयिष्यति
दक्षिणे नीलकण्ठस्य यो महांश्चन्दनद्रुमः । धनुः शतान्तरे राजंश्चिररूढस्तु तिष्ठति
तस्य पश्चिमदेशस्थंक्षेत्रं राजन्भविष्यति । वाजिमेधसहस्रेण तस्याऽग्रेयजतांभवान्
गच्छत्वमहमत्रैवस्थास्यामिदिनपञ्चकम् । आराध्यैनंदिव्यसिंहं ज्योतीरूपमनन्तकम्
प्रत्यर्चायां प्रतिष्ठाप्यप्राणेन्द्रियमनोयुतम् । दीपाद्दीपंयथाराजन्नयिष्येशोभनाकृतिम्
नारदस्येति वचनं प्रतिश्रुत्य नृपोत्तमः । जगाम तत्र वेगेन चन्दनद्रुमसन्निधिम् ॥ ११
तत्राऽपश्यत्सुघटकंशिल्पशास्त्रविशारदम् । नारदस्याऽऽज्ञया प्राप्तंपुत्रं वैदेवशिल्पिनः
मनुष्यरूपमास्थाय शस्त्रसूत्रधरं स्थितम् ।
राजानं स तु दृष्ट्वा वै चिकीर्षन्तं सुरालयम् ॥ १३ ॥
कृताञ्जलिपुटः प्रोचेदेवाहंशिल्पशास्त्रवित् । नरसिंहालयं तेऽद्यघटयिष्यामिशोभनम्
राजाऽपि तमुवाचेदं प्रहसन्भो द्विजोत्तमाः ! ॥ १४ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

न शिल्पीत्वंहिसामान्यःशिल्पशास्त्रप्रणेतृकः । कथितो नारदेनैवत्वष्टुःपुत्रो महायशाः
निर्जनेऽस्मिन्महारण्येनेतःपूर्वंजनाश्रयः । वयमद्यागताःशिल्पिन्सम्यन्वःकिंनिमित्तकः
देवशिल्पी भवानेव विष्णोरमिततेजसः । सदाऽनुध्यायिनस्तस्य निदेशवशवर्तिनः
येन स्मृतस्त्वंमुनिनासएवाऽऽत्रागमिष्यति । प्रत्यर्चानरसिंहस्यगृहीत्वातुदिनान्तरे
तदाशु घटयस्वाऽद्य सप्राकारं सतोरणम् । प्रासादं नरसिंहस्य प्रतीचीवदनं शुभम्
तं पूजयित्वा विधिवन्नियोज्यघटनेनृपः । शिलासञ्चयकान्भृत्यान्बहुवित्तैरयोजयत्
चतुर्थे दिवसे विप्राःप्रासादोऽभूदनुत्तमः । बहुकालप्रसाध्योऽपिमहिम्नादेवशिल्पिनः
ततः प्रभाते विमले नित्यकर्मावसानतः । प्रतिष्ठाविधिसम्भारं गृहीत्वासपरिच्छदः
नारदागमनं प्रेक्ष्ययावत्तिष्ठति भूपतिः । तावच्छुश्रुविरे शङ्खा मृदङ्गा मुरजास्तथा ॥
गीतमङ्गलवाद्यानिघण्टानांकरिणांस्वनाः । तथा जयजयेत्युच्चैःशब्दाआकाशमण्डले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताञ्छ्रुत्वाविस्मयापन्नाइन्द्रद्युम्नपुरोगमाः। राजानःश्रोतियाविप्रावैष्णवाश्चसहस्रशः
निराधारास्त्विमे शब्दा अद्भुतानि न संशयः।
विचारयन्तस्ते यावत्तावद्दक्षिणतो मरुत् ॥ २६ ॥
गन्धान्वितद्विरेफौघशब्दिताःपुष्पवृष्टयः। आविर्भूतास्त्रिपथगावारिणार्द्रीकृताद्विजाः
तदनन्तरमेवाऽसौ नारदो ब्रह्मणः सुतः। तपः प्रभावनिर्व्यूढविमानवरशायिनीम् ॥
रत्नचामरहस्ताभिर्दिव्यस्त्रीभिः सुशोभिताम्।
अलङ्कृतां बहुविधैर्मणिरत्नप्रसाधनैः ॥ २६ ॥
दिव्यमाल्याम्बरधरांदिव्यगन्धानुलेपनाम् । रम्यांप्रतिष्ठितप्राणांघटितांविश्वकर्मणा
तेजोमण्डलसम्वीतां परितो हर्षदामपि। आदाय नरसिंहस्य प्रत्यर्चांप्रत्युपस्थितः
तां दृष्ट्वा हर्षिताःसर्वेराजाराजानुयायिनः। अन्तर्द्धानं गतो देवो नारदेनोद्धृतः किमु
मेनिरे हर्षितात्मानःप्रशशंसुश्च तं मुनिम्।
निरूप्य सन्निधिस्थां तु नरसिंहाकृतिं द्विजाः ॥
आद्यमूर्तेर्नृसिंहस्य प्रतिमामथ मेनिरे ॥ ३३ ॥
प्रत्युत्थायततोराजा प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना। प्रदक्षिणीकृत्य हरिं जगामशिरसा महीम्
श्रद्धासम्पत्तियोग्येन सम्भारेण नृपाज्ञया।
प्रस्थापयामास मुनिः प्रासादं शुभलक्षणम् ॥ ३५ ॥
प्रतिमां देवदेवस्य सुमुहूर्तेद्विजोत्तमाः। धरारमाभ्यां सहितां रत्नवेद्यां प्रतिष्ठिताम्
योगारूढतनुं राजा इन्द्रद्युम्नोऽथ तुष्टुवे ॥ ३६ ॥
वैष्णवैर्ब्राह्मणैर्भूपैर्नारदेनच धीमता। गुह्योपनिषदैः स्मार्तैः स्तोत्रैःशास्त्रैर्मुदान्वितैः

इन्द्रद्युम्न उवाच

एकानेकस्थूलसूक्ष्माणुमूर्ते! व्योमातीत! व्योमरूपैकरूप!।
व्योमाकार! व्यापक! व्योमसंस्थ! व्योमारूढ! व्योमकेशाब्जयोने! ॥
दुःखाम्भोधेस्त्राहि मां दिव्यसिंह! प्रादुर्भूतानेककोट्यर्कधामन्!।
नित्यासन्नो दूरसंस्थो न दूरो नाऽऽसन्नो वा बोध्यबोधात्मभाव!॥ ३६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ज्ञेयज्ञेयो ज्ञानगम्योऽप्यगम्यो मायातीतो मानमेयोऽनुमानात् ।
कृत्स्नस्याऽऽदिः कृत्स्नकर्त्ताऽनुमन्ता पाताहर्त्ता विश्वसाक्षिन्नमस्ते ॥४०
दुःखध्वंसस्यैकहेतुं न हेतुं भेत्तुं छेत्तुं संशयानग्रजातम् ।
ज्योतीरूप! ज्ञानरूप! प्रकाश! स्तोमव्यूहाकारनिर्माणहेतो !॥ ४१ ॥
त्वत्पादाब्जे भक्तिमग्र्यां सदा मे देहि स्वामिन्मूलभूतां चतुर्णाम् ।
श्रौतैः स्मार्तैर्नित्ययुक्ता जनास्ते दीनास्तिष्ठन्त्यत्र बद्धा भवाब्धौ ॥ ४२ ॥
अनन्तपादं बहुहस्तनेत्रमनन्तकर्णं ककुभौघवस्त्रम् ।
दिवानिशानाथसुकुण्डलाढ्यं नक्षत्रमालाकृतचारुहारम् ॥ ४३ ॥
त्वामद्भुतं दिव्यनृसिंहमूर्तिं भक्त्येष्टपूर्तिं शरणम्प्रपद्ये ।
यत्पादपद्मं हि पितामहस्य किरीटरत्नैर्विकचत्वमेति ॥ ४४ ॥
यदीयपादाब्जयुगान्तभूमौ लुठेच्छिरो यस्य हि पाञ्चभौतम् ।
तद्दिव्यपादं शिरसा वहन्ति सुरेन्द्रनार्यः खलु तं नमामि ॥ ४५ ॥
तद्दिव्यसिंहं हतपापसङ्घं पादाश्रितानां करुणाब्धिसिंहम् ।
पादाऽब्जसङ्घट्टविघट्टमानब्रह्माण्डभाण्डं प्रणमामि चण्डम् ॥ ४६ ॥
सटाच्छटाकम्पनशीर्यमाणघनौघविद्रावितपापसङ्घम् ।
चण्डाट्टहासान्तरिताब्दशब्दं त्रिलोकगर्भं नृहरिं नमामि ॥ ४७ ॥
नमस्ते नमस्ते नमस्तेऽद्य विष्णो! परित्राहि दीनानुकम्पिन्ननाथम् ।
भवन्तं समासाद्य मे देहबन्धो मुरारे ! न संसारकारागृहेऽस्तु ॥ ४८ ॥
हयमेधसहस्रान्ते यथा त्वां चर्मचक्षुषा । दिव्यरूपं प्रपश्यामितथाऽनुक्रोशय प्रभो!
यथा चेज्यासहस्रं मे निर्विघ्नं तत्समाप्यते ।
यज्ञेशत्वत्प्रसादान्मे तथा सान्निध्यमस्तु ते ॥ ४९ ॥
कोट्यःपापराशानांक्षयंयान्तियथाप्रभो !। धर्मार्थकामाहस्तस्थानेषांचित्रंस्तुवन्तिये
मोक्षस्य भाजनं विष्णो ते नरा ये तवाऽऽश्रयाः ॥ ५१ ॥
स्तुत्वेत्थं दिव्यसिंहं तं भूपतिर्हृष्टमानसः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दण्डपातप्रणामेन जगाम धरणीं मुहुः ॥ ५२ ॥

जैमिनिरुवाच

क्षेत्रं तन्नरसिंहस्य ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । इन्द्रद्युम्नानुग्रहाय सर्वलोकहिताय च ॥५३॥
पश्यन्ति ये नृसिंहं तं शम्भुनासहसंस्थितम् । नदेहबन्धं तेविप्राःप्राप्नुवन्तिनसंशयः
मनसा वाञ्छितं यद्यत्प्राप्नुवन्ति ततोऽधिकम् ।
स्तोत्रेणाऽनेन ये दिव्यसिंहरूपं स्तुवन्ति वै ॥ ५५ ॥
सर्वकामप्रदो देवस्तस्य मुक्तिं प्रयच्छति । ज्येष्ठशुक्लद्वादशी या स्वातीनक्षत्रसंयुता
तस्यां प्रतिष्ठितः क्षेत्रे दिव्यसिंहोमहर्षिणा । सुतेनब्रह्मणःसाक्षात्तत्रपश्यन्तितं च ये
वाजिमेधसहस्रस्य फलं साग्रं लभन्ति ते । पञ्चामृतैर्वा क्षीरेण नारिकेलरसेन वा ॥
स्नापयन्ति नरा ये वै, अथवा गन्धवारिणा । पूजयित्वा महासिंहमुपचारैः सपायसैः
जपाकुसुममाल्यैश्च गन्धमाल्यैः सुशोभनैः । धूपदीपैः सकर्पूरैस्ताम्बूलैरतिशोभनैः
सुगीर्भिः स्तुतिपाठैश्च जयशब्दैस्तथोच्चकैः । प्रदक्षिणप्रणामैश्च दानैर्ब्राह्मणतर्पणैः
सन्तोष्य नरसिंहं तं ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥ ६१ ॥
वैशाखस्य चतुर्दश्यां सौरिवारेऽनिलर्क्षके । आद्यावतारः सिंहस्य प्रदोषसमयेद्विजाः
तस्यां सम्पूज्य विधिवन्नरसिंहंसमाहितः । जन्मकोटिसहस्रैस्तुपापराशिःसुसञ्चितः
दह्यते तत्क्षणादेव तूलराशिरिवाऽग्निना ॥ ६३ ॥
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा नमस्कृत्वा प्रणिपत्यचभक्तितः । स्तुत्वाविमुच्यतेपापैर्निर्मोकेनभुजङ्गवत्
न तस्यव्याधयःसन्तिन शोकानाऽऽधयस्तथा । सर्वान्कामानवाप्नोतिहयमेधफलंतथा
समीपे तस्य भो विप्रा यजनं दानमेव च । अन्यानि पुण्यकर्माणि कृतानिचसकृन्नरैः
कोटिकोटिगुणानि स्युर्नरसिंहप्रसादतः ॥ ६६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे नृसिंहमूर्तिप्रतिष्ठानाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तदशोऽध्यायः

राज्ञःइन्द्रद्युम्नस्यसहस्रहयमेधानुष्ठानवर्णनम्

मुनय ऊचुः

प्रतिष्ठिते नारसिंहे क्षेत्रे तस्मिन्नराधिपः । किं चकारमुने! ब्रूहि परं कौतूहलं तु तत्

जैमिनिरुवाच

इन्द्रादींस्त्रिदशान्सर्वान्न्यमन्त्रयत पूर्वतः । ततः स मन्त्रयामासऋषीन्विप्रान्सहस्रशः
अध्येतृंश्चतुरो वेदान्सषडङ्गपदक्रमैः । यज्ञविद्यासु कुशलान्मीमांसापरिनिष्ठितान् ॥
सभाष्यकल्पसूत्रैस्तु परिनिष्ठितकर्मिणः । अष्टादशसु विद्यासु कुशलान्धर्मकोविदान्
सदाचारावदातांश्च कुलीनान्सत्यवादिनः । वैष्णवांश्च विशेषेण मन्त्रयामाससादरम्

त्रैलोक्ये ये च राजानः सिद्धाः सप्तर्षयो द्विजाः ।
सच्छूद्रा वणिजो द्वीपपतयश्च निमन्त्रिताः ॥ ६ ॥
क्रोशद्वयमिता विप्राः सभाऽऽसीत्तस्य भूपतेः ।
पाषाणघटिता सोच्चा सुधयासानुलेपिता ॥ ७ ॥

क्वचिद्रत्नमयी भूमिःक्वचित्काञ्चननिर्मिता । स्फाटिकीराजतीचैवयथायोग्यंकृतस्थली
स्तम्भै रत्नमयैः प्रोच्चैर्दुकूलपरिवेष्टितैः । चारुचन्द्रातपाढ्या तुगन्धमाल्यैःसचामरैः
मुक्तादामान्तरस्थैश्च चारुवातायनाशुभा । कृष्णागुरुस्नेहसिक्ताश्रीखण्डसलिलोक्षिता
सर्वर्त्तुकुसुमाकीर्णाप्रान्तोपवनसम्वृता । वाप्यः स्फटिकसोपानाःपद्मकह्लारमण्डिताः
चक्रवाकैः प्लवैर्हंसैः सारसैर्मधुरस्वनैः । व्याप्तान्तराः स्वच्छशीतसुगन्धमधुराम्भसः॥
परितः शतशस्तस्याःसुखावतरणा द्विजाः । उपच्छायाविरचनाःशोभमानाःसमन्ततः
यज्ञशाला मरुत्तस्य यथाऽऽसीद्वोद्विजोत्तमाः !। तथेन्द्रद्युम्नभूपस्यरचिताविश्वकर्मणा
शुभेऽह्निशुभनक्षत्रेवासयित्वासभासदः । राज्ञः सिंहासनासीनान्दृष्ट्वाऽऽसीनानृषीनपि
सिद्धान्ब्रह्मर्षिगणान्बहुमूल्यकुथस्थितान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवान्काञ्चनपीठस्थान्यथायोग्यमथ द्विजान् ॥ १६ ॥
वरासनस्थानन्यांश्च यथादेशं सुखस्थितान् ।
मध्ये नृपाणां देवानामृषीणां च शचीपतिम् ॥ १७ ॥
साम्राज्यलक्षणे स्वस्य रत्नसिंहासने स्थितम् ।
दिव्यैर्माल्यैस्तथा गन्धैर्वासोभिर्विघ्नरादिभिः ॥ १८ ॥

पुरोधसा समं पूर्वमर्चयामास ऋद्धिमत् । विनीतो दीनवत्तस्य चक्रे पूजांतथानृपः ॥
आश्चर्यं मन्यतेऽस्यासौत्रैलोक्येशोऽपितद्यथा । ततःसिद्धान्देवमुनीनचर्यन्निन्द्रवत्तदा
विस्मयं जनयामास कुवेरस्याप्यधिश्रियः । ततो देवान्समानर्च प्रभूतस्वस्वसम्पदः
उपचारैर्महीनाथः सम्यगव्यग्रमानसः । राज्ञः सम्पूजयामास राजयोग्यैःपरिच्छदैः ॥
तथा ते मेनिरे भूपा भवामः साम्प्रतं वयम् । सत्यं राज्यंक्रमात्प्राप्तंनेदृशश्चपरिच्छदः
आनर्च वैष्णवान्भूय उपचारैः समानयन् । शान्ता अपि यथा चित्रंमेनिरेविषयागमम्

ततो विप्रान्वाहुजातान्वैश्यान्मुनिपुरःसरम् ।
सम्यक्प्रपूजयामास सत्त्वोद्रिक्तो महीपतिः ॥ २० ॥

अन्यांश्च सचिवद्वारा पूजयित्वा ससंभ्रमः । हृष्टः स विनयान्नम्रःकृताञ्जलिपुटस्तथा
महेन्द्रमुच्चैराहेदं नारदेन पुरोधसा ॥ २७ ॥

इन्द्रद्युम्न उवाच

तव प्रसादाद्देवेश इच्छामीदं प्रसीद मे । क्रतुना हयमेधेन प्रयक्ष्ये यज्ञपूरुषम् ॥ २८॥
अजुनानीहि मां देव क्रतूनामीश्वरोभवान् । त्वदाज्ञापालकाःसर्वेत्रैलोक्येनिवसन्तिये
यावत्क्रतुसहस्रस्य संस्था च भवति प्रभो । तावत्त्वं त्रिदशैः सार्द्धंसदोमध्यगतोवस
यष्टुमिच्छामि देवेश! नाऽहंत्वत्पदलिप्सया । सर्वेषांवेत्सिदेवेश! मनोवृत्तिसदाप्रभो
युष्माकं पूर्वदृष्टोऽत्रवपुष्मान्माधवःप्रभुः । उपासनायांसोऽयंयोवालुकाभिस्तिरोदधे
तस्य भूयः प्रकाशार्थंवाजिमेधसहस्रकम् । करिष्येवचनादिन्द्रचतुरास्यस्यशासनात्

पुनः प्रकाशिते तस्मिञ्छ्रेयो वोऽपि भविष्यति ॥ ३३ ॥

इति विज्ञापिते राज्ञा महेन्द्रप्रमुखाः सुराः । अन्तर्द्धानोत्तरं या चश्रुत्वापूर्वंसरस्वती

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अशरीरां स्मरन्तस्तामिदं प्रोचुः प्रहर्षिताः ।
इन्द्रद्युम्न ! महात्माऽसि सत्यं सत्यव्रतो भुवि ॥ ३५ ॥
त्वच्चेष्टितं पुराऽस्माभिरन्वभावि भविष्यकम् ।
सहायास्ते भविष्यामः कार्ये त्रैलोक्यपावने ॥ ३६ ॥

स्रष्टा स जगतां यत्र उद्युक्तः स्वयमेव हि । अत्रैवोवाच भगवानस्माकमपि भूतले ॥
प्रविशंस्तदनुक्रोशवशाद्भूयः प्रकाशनम् । करिष्ये दारवं देहमित्येतत्परिनिष्ठितम् ॥
नाऽत्राऽस्माकंव्यलीकं तुनेन्द्रस्यच महीपते । अस्मद्विघ्नसमुद्योगस्तवनःप्रीतिकारकः
सुखं यजस्व राजेन्द्र! वैकुण्ठं भक्तवत्सलम् । क्रतुना हयमेधेन सहस्रपरिवर्तिना ॥
दुराराध्यो हि भगवानस्माकं भक्तवत्सलः । वयमप्यत्र देवत्वंत्यक्त्वा भक्तिपरायणाः
आराधयामः क्षेत्रेस्मिन्विनीता नररूपिणः । प्रियं हिमानुषेलोकेकर्मसिद्ध्यतिवैकृतम्

जैमिनिरुवाच

इत्युक्ते त्रिदशैःसेन्द्रैः परितुष्टान्तरात्मना । आरम्भार्थं क्रतोराजाभगवन्तमपूजयत् ॥
उपचारसहस्रैस्तु यथावत्प्रतिपादितैः । ततः पितृगणान्राजा निरूप्य श्रद्धयाऽन्वितः
सदोगृहगतान्विप्रान्याज्ञिकान्समलङ्कृतान् । कृत्वेष्टदेवंपुरतोवैकुण्ठंसाऽग्निहोत्रकम्
आकाङ्क्षन्कल्पितंलग्नंसम्वृत्तेस्वस्तिवाचने । उपस्थितःसपत्नीकःशुद्धमाङ्गल्यवेषधृक्

स्वस्तिवाच्य द्विजाञ्छुद्धान्पुण्याहं वृद्धिकर्म च ।
ततः सम्भृतसम्भारो वरयामास ऋत्विजः ॥ ४७ ॥
वृतास्ते तु सपत्नीकं दीक्षयन्तो नृपोत्तमम् ।
विहृत्य दीक्षणायेष्टान्न्ययजन्सभ्यचोदिताः ॥ ४८ ॥

प्रणीय तंप्रज्वलन्तं वेद्यामाहवनीयकम् । त्रैलोक्यमङ्गलकरं किं साक्षाद्वैष्णवं महः ॥
सुप्रोक्षितं चाऽभिमन्त्र्य अनुज्ञाप्यदिगीश्वरान् । मुमुचुस्तेहयंमुख्यमङ्गेषुशुभलक्षणम्
ततः सदीक्षितो राजावाग्यतोरौरवींत्वचम् । अधिष्ठायसदोमध्येमृत्युञ्जयइवस्थितः
निमन्त्रितानां भुक्त्यर्थं चक्षुषा सन्दिदेश वै । सुराणां रत्नपात्राणिमहार्घाणिनृपाज्ञया
सचिवः कारयामासभोजनायसमृद्धिमत् । शुद्धसौवर्णपात्राणिमुनीनांचमहीक्षिताम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्विजानां भोजनार्थायनवानिप्रत्यहंद्विजाः । क्षत्रियाणांविशांविप्राराजतानिशुभानिच
कांस्यनिर्मलपात्राणिशूद्राणांभोजनाय वै । अहन्यहनिपात्राणिभोजनान्तेद्विजोत्तमाः
आकरेषु प्रपात्यन्तेप्रोच्छिष्टदलवर्ज्जनैः । तत्र यज्ञोत्सवे ये वै भोजनाय निमन्त्रिताः
तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च प्रपौत्राश्चैव सन्ततिः । नित्यं पञ्चरसान्नानि बहुमानपुरःसरम्

आदृतैर्भोजिता राज्ञ इन्द्रद्युम्नस्य शासनात् ।
कुटुम्बवत्स्थितास्तत्रसंस्थायावन्महाक्रतोः ॥ ५८ ॥
यद्देशीया जनास्तेषामधिष्ठाता च तान्नृपः ।
नृपाणामनुसन्धाता इन्द्रद्युम्नप्रयाचितः ॥ ५९ ॥

नारदः समदर्शी तु परोपकृतिलोलुपः । इन्द्रादीनां सुरेन्द्राणां देवर्षीणां नृपोत्तमः
स्वयं नरपतिश्चर्यां चकार क्रतुपूर्त्तये । षड्विधान्यन्नपानानि संस्कृतानि द्विधा नरैः
देवानां भोजने तत्र मन्त्रतन्त्रविशारदैः । मर्त्यानां नलविद्यायांकुशलैःसंस्कृतानि वै
क्षुत्पिपासानभिज्ञा हि सुधाहारा दिवौकसः । तेषामपिअपूर्वत्वादाश्चर्यंतद्धिभोजनम्
नराणां दुर्लभं मर्त्त्ये इन्द्रद्युम्नगृहेऽशनम् । इन्द्रद्युम्नस्य चेन्द्रस्यविशेषोमर्त्यवासिता
अत्यद्भुतकरं ह्येतत्प्रत्यहं च नवं नवम् । सम्माननादरावृद्धिर्भोज्यस्य द्विजसत्तमाः ॥
अन्योन्यस्पर्द्धयैवात्र प्रवर्द्धन्ते परस्परम् । सुगन्धसुमनोमाल्यकस्तूर्यादिप्रलेपनम् ॥
चित्रसूक्ष्मदुकूलानि सोपधानासनानि च । रत्नपल्यङ्किकाशय्यारत्नदण्डप्रकीर्णकम्
जातीलवङ्गकर्पूरैर्नागवल्लीदलानि च । मनोहराणि गीतानि नृत्यानि विविधानि च

भरतस्य मुनेः शिक्षापण्डितै रचितानि च ।
स्वस्ववंशयशोऽभिज्ञाः शतशः सूतमागधाः ॥ ६६ ॥

एतान्यन्यानिवस्तूनिदुर्लभान्यपियानिवै । त्रिदशाश्चापिमर्त्याश्चान्वभुज्यन्तसुसादरम्
एकतोऽन्यत्रचित्राणिनचहीनानिकुत्रचित् । पातालवासिनांचापिभोजनंवैसुधाधिकम्
यद्भुक्त्वा नाऽनुवाञ्छन्ति पातालगमनंहि ते । पुराणियानिपातालेरत्नौघालोकितानिच
विना सूर्यप्रकाशेन तादृशान्येव भूपतिः । ददौ तेषां निवासाय येषु पातालबुद्धयः ॥
सुखासीनाश्च क्रीडन्तो भुञ्जानाः शेरतेमुदा । देवानामपि नान्यत्रभूमिस्पर्शनमस्तिवै

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रद्युम्नपुरे तत्र स्वर्गादपि मनोहरे। यदृच्छया सुखक्रीडासक्ता नो तत्यजुर्भुवम्
अभिलाषोपजातं तु सुखंस्वर्गेवदन्तिहि। अनिच्छयाऽपिभोविप्राःसुखंसर्वत्र तत्र वै

आदृत्य यत्नान्मन्यन्ते भोज्यन्ते सादरं नराः।
न याचितः कोऽपि जनः कुतो वा स्यात्पराङ्मुखः॥ ७७॥

राजाधिराजवेश्मानि जनानां स्वगृहैःसमम्। तदासीत्स्वगृहेतेषांनसदासर्वसम्भवः
तत्र यत्कामनातीतं तद्वस्तु सुलभं बहु। इत्थं प्रवर्तिते यज्ञे यज्ञेशप्रीतये मुदा॥ ७६॥
पृथिवी हृतसर्वस्वा वाजिमेधेस्य भूपतेः। या पूर्वं साभवद्भूयःस्वर्णवृष्टिसुभूषिता

इत्थं प्रवृत्ते लोकानां तत्र त्रैलोक्यवासिनाम्।
दानसम्मानभोज्यानां विधौ विधिवतोऽन्वहम्॥ ८१॥

अश्वमेधं प्रति जना जगुर्गाथाःपरस्परम्। नेदृग्यागस्यसम्भारोविधेःशास्त्रप्रचोदितः
इन्द्रद्युम्नस्य राजर्षेर्न भूतो नभविष्यति। नयाचितारोऽदातारोमिथोयत्रनिमन्त्रिताः
नकामभङ्गोयत्राऽऽसीद्देवानामपिभोद्विजाः। ईदृक्समृद्धिःक्रतुराट् प्रवृत्तोभूपतेस्तदा
अधिश्रद्धःसुसम्पन्नःपूर्वस्मादपरोऽभवत्। स्मृतिकाराःकल्पकारास्तथाशास्त्रप्रणेतृकाः
यज्ञानुष्ठानकुशलाः सदाचारावतंसकाः। अग्न्याधानाद्यवभृथप्रचारमनुपूर्वशः॥ ८६॥
क्रतुः सदस्यानुमते नृपतेःप्रीतयेद्विजाः। नमन्त्राःस्वरतोहीनावर्णतोवाऽपिकर्हिचित्
ये वै विधिविधातारस्ते वै कर्मप्रचारकाः। प्रायश्चित्तनिमित्तेनप्रायश्चित्तनिवन्धनात्

कर्मोपघातो नो तत्र योगिनः कर्मयोगिनः।
यत्र सप्तर्षयो दिव्याः सदस्याः क्रतुसाक्षिणः॥ ८६॥
प्रचारयन्ति कर्माणि गुणदोषविभागिनः।
याज्ञवल्क्यादयस्तेऽत्र मुनयस्त्वृत्विजो वृताः॥ ६०॥

सदोगतास्ते मुनयः परस्परकथान्तरे। वाकोवाक्यानि सूक्तानि गुह्योपनिषदानि च
गाथाः पौराणिकीर्विप्रा विष्णुभक्तिपुरःसराः। चरितानि हरेः सर्वकलमषौघहराणिच
तत्र सम्वर्तयामासुस्ते सभायां महीक्षितः। तस्य यज्ञेहविःप्राशुःप्रत्यक्षंवह्निमध्यगाः

मुदितास्त्रिदशा विप्रा महेन्द्रप्रमुखा मखे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिरप्रवासिनो देवा नाऽस्मरन्तामरावतीम् ॥ ६४ ॥

अमृतं हि हविस्तेषां कल्पितं ब्रह्मणा पुरा । तत्प्राश्यमुदितादेवावीर्यवन्तश्चिरायुषः

यागानुष्ठानविषयादन्यत्र विषयान्बहून् । इन्द्रद्युम्नेन रचितान्समस्तानुपभुञ्जते ॥६६

तत्र ये नागराजानः पातालतलवासिनः । ततोऽधिकान्मर्त्यलोके विषयानुपभुञ्जते ॥

पातालगमनं ते वै नेहन्ते मनसा ध्रुवम् । इत्थं प्रवर्तितो यज्ञस्त्रैलोक्यप्रीतिकारकः ॥

इन्द्रद्युम्नस्य नृपतेः क्षेत्रेऽस्मिन्पुरुषोत्तमे । जगदीशप्रसादाय पितामहनिदेशतः ॥६६॥

एकोनं क्रमतः संस्थामवाप पृथिवीपतिः ।

सहस्रं हयमेधस्य यथावद्विधिचोदितम् ॥ १०० ॥

ततः साहस्त्रिके यज्ञे वाजिमेधे महीपतिः । दिनेदिने दिव्यगतिर्बभूव नृपतिस्तदा ॥

सुत्यायाः सप्तदिवसाद्या रात्रिरभवत्पुरा । तस्यास्तुरीयप्रहरेदध्यौसविष्णुमव्ययम्

ध्यने तस्मिन्ददर्शाऽसौ महाभाग्यवशान्नृपः ।

प्रत्यक्षमिव स श्वेतद्वीपं स्फटिकनिर्मितम् ॥ १०३ ॥

समन्तात्परिवार्यैनं तिष्ठन्तं क्षीरसागरम् । महाकल्पद्रुमैः पुष्पगन्धामोदिदिगन्तरैः

फलपल्लवल्केषु बहिरन्तश्च सर्वशः । शङ्खचक्राङ्कितैः शुभ्रैः सर्वालङ्कारभूषितः ॥

महामञ्जिष्ठवर्णैश्च मूर्तिभिस्तैर्मुरद्विषः । तन्मध्ये घटितं दिव्यमणिभिर्मण्डपोत्तमम् ॥

मध्यस्थसूर्यवद्भासि रत्नसिंहासनोज्ज्वलम् ।

क्षीराब्धिशीतकल्लोलमन्दवातमनोहरम् ॥ १०७ ॥

तन्मध्ये ददृशे देवं! शङ्खचक्रगदाधरम् । नीलजीमूतसङ्काशं वनमालाविभूषितम्॥

सर्वलावण्यभवनं सौन्दर्यश्रीनिकेतनम् । निर्भर्त्सयन्तं वपुषा पिनद्धं दिव्यभूषणम् ॥

दक्षपार्श्वे स्थितं तत्र अनन्तं धरणीधरम् । कोटिचन्द्रप्रतीकाशं हिमाद्रिसदृशप्रभम्

फणामुकुटविस्तारच्छत्रीभूतंमनोहरम् । मणिकुण्डलयुग्माङ्कं चारुनीलनिचोलकम्

हललाङ्गलशङ्खारिस्फुरद्‌बाहुचतुष्टयम् । हारकेयूरवलयमुद्रिकाभिरलङ्कृतम् ॥ ११२॥

मेखलाकटिसूत्राढ्यं दिव्यरत्नप्रसाधनम् । दिव्यहालाक्षीवमूर्ति चारुहासं सुनेत्रकम् ॥

दक्षपार्श्वस्थितां चाऽस्य लक्ष्मीं तां शुभलक्षणाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वराभयाब्जहस्तां वै कुङ्कुमाभां सुलोचनाम् ॥ ११४ ॥
त्रैलोक्ययुवतीवृन्ददृष्टान्ताऽद्भुतविग्रहाम् । ददर्श पद्मासनगांलावण्याम्बुधिपुत्रिकाम्
पितामहंच ददृशेपुरतोऽस्यकृताञ्जलिम् । वामपार्श्वस्थितंचक्रंनानामणिमयं विभोः
सनकाद्यैर्मुनीन्द्रैस्तं स्तूयमानं जगद्गुरुम् । दृष्ट्वा स्वप्ने सराजावैप्रहृष्टोद्विजसत्तमाः
अदृष्टपूर्वरूपं तं ज्योतिर्मयमनन्तकम् । तुष्टाव तत्र ध्यानस्थो हर्षगद्गदया गिरा ११८

इन्द्रद्युम्न उवाच

नमस्ते जगदाधार जगदात्मन्नमोऽस्तु ते । कैवल्यत्रिगुणातीत गुणाञ्जन नमोऽस्तुते
सुशुद्धनिर्मलज्ञानस्वरूपाय नमोऽस्तु ते । शब्दब्रह्माभिधानाय जगद्रूपाय ते नमः ॥
संसारपतितश्रान्तदुःखध्वंस! नमोऽस्तुते । दुर्भेद्यहृदयग्रन्थिभेदकाय नमोऽस्तु ते ॥
द्विसप्तभुवनागारमूलस्तम्भाय ते नमः । ब्रह्माण्डकोटिघटनाशिल्पिने चक्रिणे नमः ॥
करुणाऽमृतपाथोधिसुधाधाम्ने नमो नमः । दीनोद्धारैकगुह्याय कृपापाथोधये नमः ॥
प्रकाशकानां सूर्यादिज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
प्रतिस्वस्वनदीप्ताय अन्तःपापाग्नयेनमः ॥ १२४ ॥
पावकाय पवित्राय पवित्राणां नमो नमः । गरिष्ठाय वरिष्ठाय द्राविष्ठाय नमो नमः ॥
नेदिष्ठाय दविष्ठाय क्षोदिष्ठाय नमो नमः । वरेण्याय सुपुण्याय नारायण नमोऽस्तु ते
परित्राहि जगन्नाथ! दीनबन्धो! नमोऽस्तु ते ।
निस्तीर्णोऽहं भवाम्भोधिं प्राप्य त्वां तरणिं सुखाम् ॥ १२७ ॥
त्वयि दृष्टे रमानाथ क्लेशा व्यपगता मम । चिदानन्दस्वरूपंत्वांप्राप्तानांदुःखसंक्षयः
ध्रुवं नाथ समुत्पन्नपरमानन्ददेहेतुकम् । त्राहि त्राहि भवाम्भोधिमग्नं मांदीनचेतसम्
मध्याह्नाऽर्कोदिते व्योम्नि कुतः सन्तमसोदयः ।
ध्यानस्थितः स्तुवन्नेवं प्रणम्य जगदीश्वरम् ॥ १३० ॥
ध्यानाव सानेसपुनःस्वयंजाग्रद्बुध्यत। स्वप्नान्तइन्द्रद्युम्नोऽपिसस्माराऽऽत्मानमात्मना
अत्यद्भुतमिदं स्वप्नं दृष्ट्वा च नृपकुञ्जरः । मेने कृतार्थमात्मानं :हयमेधक्रतोस्तथा ॥
सहस्रं सफलं चैव स्वभाग्यं समुपस्थितम् । न हि देवर्षिवचनं वृथाभवतिकर्हिचित्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रत्यक्षं मे कथं नाथः स्वयमत्र भविष्यति ।
इति चिन्ताऽऽकुलो रात्रिशेषं नीत्वा विशाम्पतिः ॥ १३४ ॥
शशंस नारदस्याऽग्रे यथा स्वप्नोऽन्वभूयत । स चापि नारदःप्राह शोकस्तेविगतोनृप
अरुणोदयकाले हि भगवन्तं ददर्श यत् । दशाहात्फलदःस्वप्नस्तस्मिन्कालेनृपोत्तम
क्रत्वन्ते भगवानत्र प्रत्यक्षस्ते भविष्यति । यदाह मद्गिरा त्वां हि चराचरगुरुर्विधिः
सोऽपि त्वया जगत्स्रष्टा स्वप्नेऽस्मिन्नवलोकितः । तदनुष्ठीयतांयज्ञःपराग्रेनप्रकाशय
स्वप्नोऽयं नृपशार्दूल! दुर्बोधाचरितोहरेः । किन्तुभाग्यवतस्त्वेवस्वप्नस्तादृक्प्रजायते

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
सहस्रयज्ञेस्वप्नेभगवद्दर्शनवर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अष्टादशोऽध्यायः

अक्षयवटोत्पत्तिवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

ततः प्रववृते सुत्या नृपतेर्वाजिमेधिका । तस्यां त्रैलोक्यमभवदेकसद्मनिभं द्विजाः ॥
शास्त्रैः स्तोत्रैर्दिवस्पृग्भिर्वर्णक्रमसमुज्ज्वलैः ।
यथापदस्वरन्यासैरन्ये शब्दास्तिरोहिताः ॥ २ ॥
दीनेभ्योऽवारितंतत्र दीयन्तेवाञ्छितानि वै । नटनर्त्तकसूतानां साऽभूत्कल्पद्रुमोपमा
तन्मध्येऽवभृथे स्नातुं कृता यत्रोपकारिका । दक्षिणे तटभूदेशे विल्वेश्वरसमीपतः ॥
नियुक्ताः सेवकाराज्ञा ससम्भ्रममुपस्थिताः । न्यवेदयन्त नृपतिं कृताञ्जलिपुटाद्विजाः
देव दृष्टो महान्वृक्षस्तटभूमौ महोदधेः । प्रविष्टाग्रसमुद्रान्तःकल्लोलप्लवमूलकः ॥६
मञ्जिष्ठवर्णःसर्वत्रशङ्खचक्राङ्कितः प्लवन् । स्नानवेशमसमीपेऽसौदृष्टोऽस्माभिःपरोऽद्भुतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न दृष्टपूर्वो वृक्षोऽयमुद्यत्सूर्यनिभोऽङ्शुना । गन्धेनवासयन्सर्वां तटभूमिं सुगन्धिना
द्रुमः साधारणो नाऽयंलक्ष्यते देवभूरुहः । कश्चिद्देवस्तरुर्व्याजादागतो लक्ष्यतेध्रुवम्

नियुक्तानां वचः श्रुत्वा राजा नारदमब्रवीत् ।
तत्किं निमित्तं यद्द दृष्टं तरुश्रेष्ठं वदन्ति ते ॥ १० ॥

नारदः प्रहसन्वाक्यमुवाच नृपसत्तमम् । पूर्णाहुतिः समाप्नोतु यथा स्यात्सफलःक्रतुः
उपस्थितंते तद्भाग्यंस्वप्नेयद्दृष्टवान्पुरा । श्वेतद्वीपे विश्वमूर्तिर्दृष्टो योविष्णुरव्ययः
तदङ्गस्खलितं रोम तरुत्वमुपपद्यते । अंशावतारः स्थास्नुर्यः पृथिव्यां परमेष्ठिनः ॥
तद्रूपावतरं यातिभगवान्भक्तवत्सलः । द्रुमो ह्यपौरुषो योऽसौभाजनंनाऽस्य दर्शने
त्वामृते पुरुषव्याघ्र पृथिव्यां नृपसत्तम । त्वद्भाग्यवशतःसर्वलोकानां नयनाऽतिथिः
भविष्यति महाराज सर्वकल्मषनाशनः । समाप्याऽवभृथस्नानं तटान्ते सरिताम्पतेः
उत्सवं सुमहत्कृत्वा कृतकौतुकमङ्गलम् । महावेद्यां स्थापयात्र यज्ञेशं तरुरूपिणम् ॥
विचार्येत्थंमुदायुक्तौ तावुभौनृपनारदौ । सुसमृद्धौतत्र यातौ यत्राऽसौ भगवद्द्रुमः
तंदृष्ट्वाःहर्षिताःसर्वेब्रह्मसाक्षादुपस्थितम् । मेनिरे जन्मसाफल्यं जीवन्मुक्ता महोदयाः
इन्द्रद्युम्नोऽपिनृपतिर्ममज्जाऽमृतसागरे । स्वप्ने दृष्ट्वा जगन्नाथं यथाऽसौ भगवत्प्रियः
तथा ददर्श तं वृक्षं चतुःशाखं चतुर्भुजम् । स्वकं श्रमं मन्यमानः सफलं नृपसत्तमः
जहौशोकं नीलमणिमाधवान्तर्धिजं द्विजाः । पुनः पुनः प्रणम्यैनं हर्षाश्रुनयनो नृपः
द्विजैराहारयामास तरुं कल्लोललोलितम् । शङ्खकाहालमुरजढक्कापटहनिःस्वनैः ॥२३
गीतवादित्रनिनदैर्जयशब्दैःसहस्रशः । सुगन्धिपुष्पाञ्जलिभिराकाशात्पतितैर्मुहुः ॥२४
परितोधूपपात्रैश्च कृष्णागुरुसुधूपितैः । वेश्याभिर्यौवनोन्मत्तसुरूपाभिः प्रचालितैः ॥
रत्नदण्डप्रकीर्णैश्च वीज्यमानं समन्ततः । पताकाभिर्दिव्यपट्टदुकूलाभिः सुशोभितम्
राजर्षिराजवृन्दैश्च तुरङ्गैः पत्तिभिर्वृतम् । मागधैर्वन्द्यमानं तु स्तूयमानं महर्षिभिः ॥

ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैश्चैव विद्वद्भिः श्रोत्रियैस्तथा ।
राजन्यैर्वैश्यकुलजैः सच्छूद्रैःपरिचारितम् ॥ २८ ॥

स्तोत्रैर्बहुविधैः स्मार्त्तैःपौराणिकैस्तथा । स्तूयमानं तरुं विष्णोर्भूलोकेपरिवेष्टितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्रग्गन्धालङ्कृतंदिव्यंमहावेदीं विनिन्यतुः । वितानवरचित्रायांवेष्टितायांनिरन्तरम्
वेद्यां तं स्थापयामासुरिन्द्रद्युम्नस्य शासनात् । वचसा नारदस्यैनंपूजयामासपार्थिवः
सहस्रैरुपचाराणां दिव्यरूपैर्नृपोत्तमः । पूजावसाने पप्रच्छ नारदं मुनिसत्तमम् ॥३२

कीदृश्यः प्रतिमा विष्णोर्घटयिष्यति कः पुनः ।
तच्छ्रुत्वा तं मुनिः प्राह अचिन्त्यमहिमागुरुः ॥ ३३ ॥

को वेद तस्यचेष्टास्त्वैसर्वलोकोत्तरां नृप । स्रष्टायोजगतां तस्याऽप्येषासंशयगोचरा
विचारयन्तौ तावित्थं यावन्नारदपार्थिवौ । अशरीरा ततोवाणी शुश्रुवेचाऽन्तरिक्षतः
तत्र विस्मयमानानां सर्वेषामेव शृण्वताम् । अपौरुषेयो भगवानविचारपथे स्थितः
सुगुप्तायां महावेद्यांस्वयंसोऽवतरिष्यति । प्रच्छाद्यतां दिनान्येषायावत्पञ्चदशानिवै
उपस्थितोऽयं यो वृद्धःशास्त्रपाणिस्तु वर्द्धकिः । एनमन्तःप्रवेश्यैवद्वारंवध्नन्तुयत्नतः
बहिर्वाद्यानि कुर्वन्तु यावत्तुघटनाभवेत् । श्रुतो हि घटनाशब्दोवाधिर्यान्धत्वदायकः
नरके वसतिश्चैव कुर्यात्सन्ताननाशनम् । नान्तः प्रवेशनं कुर्यान्न पश्येच्च कदाचन ॥

नियुक्तादन्यः पश्येच्चेद्राज्ञो राष्ट्रस्य चैव ह ।
द्रष्टुश्चाऽपि महाभीतिरन्धता चक्षुषोर्युगे ॥ ४१ ॥

तस्मान्नावेक्षणंकार्यंयावत्प्रतिमनिर्मितिः । निर्व्यूढस्तुस्वयंदेवः कृत्यान्तेतुवदिष्यति
यद्यत्कार्यं प्रयत्नेनसर्वलोकसुखावहम् । तच्छ्रुत्वानारदाद्यास्तेयथोक्तंविष्णुनास्वयम्

चिकीर्षन्ति तथा कर्त्तुं तत्राऽऽयातश्च वर्द्धकिः ।
प्रोवाच नृपतिं सोऽथ स्वप्ने दृष्टास्तु यास्त्वया ॥ ४४ ॥

ताएवाऽहंघटिष्यामिदारुणादिव्यरूपिणा । इत्युक्त्वाऽन्तर्दधेवेद्यांवृद्धवर्द्धकिरूपधृक्

वञ्चनार्थं मनुष्याणां साक्षान्नारायणो विभुः ॥ ४६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे श्रीपुरुषोत्तक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
मूर्तिघटनार्थंवृद्धवर्द्धकिसमागमोनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकोनविंशोऽध्यायः

विष्णोर्दारुमयमूर्त्याविर्भाववर्णनम्

जैमिनिरुवाच

ततः स पृथिवीपालस्तथा कृत्वाऽन्तरिक्षगा । यदुवाच गिरां देवी तद्वत्परिचचारह
एवं दिनेदिने याते दिव्यगन्धोऽनुभूयते । पारिजातप्रसूनानां वृष्टिर्मर्त्येषु दुर्लभा ॥
दिव्यसङ्गीतनादश्च गीतानि रुचिराणि च । स्वर्गङ्गाजलवृष्टिश्चसूक्ष्मबिन्दुसुशोभना
ऐरावतादिनागानां मदगन्धो वनद्विपैः । दुःसहः सर्वभूतानां सुखकार्यनुभूयते ॥४॥
यज्ञार्थमागतादेवास्ते सर्वे विगतज्वराः । आविर्भूतं हरिं दृष्ट्वा उपासाञ्चक्रिरेद्विजाः

यथा हि माधवं पूर्वं तथा तं विष्णुशाखिनम् ।
उपासनासु देवानां दिव्यचिह्नानि जज्ञिरे ॥ ६ ॥

निर्ववाह स्वयं देवः क्रमात्पञ्चदशे दिने । चतुर्मूर्तिः स भगवान्यथा पूर्वं मयोदितः
तादृगाविर्बभूवाऽसौ युष्माकं वर्णितः पुरा । दिव्यसिंहासनगतो बलभद्रसुदर्शनैः ॥
शङ्खचक्रगदापद्मलसद्बाहुर्जनार्दनः । गदामुसलचक्राब्जं धारयन्पन्नगाकृतिः ॥ ९ ॥
छत्राकृतिफणासप्तमुकुटोज्ज्वलकुण्डलः । सुभद्रा चारुवदना वराब्जाभयधारिणी ॥
लक्ष्मीःप्रादुर्बभूवेयं सर्वचैतन्यरूपिणी । इयं कृष्णावतारे हि रोहिणीगर्भसम्भवा ॥
बलभद्राकृतिर्जाता बलरूपस्य चिन्तनात् । क्षणं न सहतेसाहिमोक्तुंलीलावतारिणम्

न भेदोऽस्तीह को विप्राः कृष्णस्य च बलस्य च ।
एकगर्भप्रसूतत्वाद्व्यवहारोऽथ लौकिकः ॥ १३ ॥

भगिनी बलदेवस्येत्येषा पौराणिकी कथा । पुंरूपे स्त्रीस्वरूपेण लक्ष्मीःसर्वत्रतिष्ठति
पुन्नाम्ना भगवान्विष्णुःस्त्रीनाम्नाकमलालया । देवतिर्यङ्मनुष्याद्यौविद्यतेनतयोःपरम्
कोह्यन्यः पुण्डरीकाक्षाद्भुवनानि चतुर्दश । धारयेत्तु फणाग्रेण सोऽनन्तोबलसञ्ज्ञितः
तस्य शक्तिस्वरूपेयं भगिनीश्रीःप्रकीर्तिता । सुदर्शनंतुयच्चक्रंसदाविष्णोःकरेस्थितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शाखाग्रस्तम्भमध्यस्थं तद्रूपं तत्तुरीयकम् । एवं तु मूर्त्तयस्तेन चतस्रो वै प्रकाशिताः
निर्वृत्ते भगवद्रूपे चतुर्द्धा दिव्यरूपिणि । लोकानामुपकाराय पुनराहाऽन्तरिक्षगा १६
पटैराच्छाद्यसुदृढंनृपतेप्रतिमास्त्विमाः । स्वं स्वं वर्णंप्रापयाऽऽशुवर्णकैश्चित्रकर्मणा
नीलाभ्रश्यामलं विष्णुं शङ्खेन्दुधवलं बलम् । रक्तं सुदर्शनंचक्रंसुभद्रांकुङ्कुमारुणाम्
नानालङ्काररुचिरां नानाभङ्गिविभागशः । अमी दारुस्वरूपेण दृष्टाः पापाय हेतवे ॥
गोपनीयाः प्रयत्नेन पटनिर्यासवल्कलैः । तस्मात्प्रथममेवैतांस्तरोरेवाऽस्य वल्कलैः
शिल्पिभिःकर्मकुशलैर्दृढमाच्छादयाऽग्रतः । वर्षे वर्षेचसंस्कार्याःपूर्वसंस्कारमोचनात्
ऋते वल्कललेपं तु स तु दिव्यश्चिरन्तनः । प्रमादाद्य इमं लेपमपनीयेत कश्चन ॥२५
दुर्भिक्षं मरकंराष्ट्रे सन्ततिश्चाऽस्यहीयते । नेक्षितव्यास्त्वयाराजन्कदाचिदपवारणाः
मनुष्यैश्चापिराजेन्द्र! दृष्टाः स्युर्भयहेतवः । तस्मात्सचित्रा द्रष्टव्यावहुलेपविलेपिताः
सुचित्रं पुण्डरीकाक्षं सविलासं सविभ्रमम् । दृष्ट्वा विमुच्यतेपापैःकल्पकोटिसमुद्भवैः
सुचित्रान्कुरुराजेन्द्र! चित्रान्कामानवाप्स्यति । आविर्बभूवभगवांस्तवानुग्रहकाम्यया
तव प्रसादाज्जन्तूनां चतुर्वर्गं प्रसादास्यति । नीलाद्रौकल्पवृक्षस्यवायव्यांशतहस्ततः
प्रदेशे सुमहत्स्थाने प्रासादं सुदृढायतम् । उत्तरे नरसिंहस्य सहस्रकरमुच्छ्रितम् ॥

कारयित्वा प्रतिष्ठाप्य तत्रैनं विनिवेशय ।
पुरा स्थितं पर्वतेऽस्मिन्योऽभ्यर्चयति माधवम् ॥ ३२ ॥

नाम्ना विश्वावसुर्नाम शबरो वैष्णवोत्तमः । पुरोधसः सख्यमासीत्तेन सार्द्धं पुरा चते
तयोः सन्ततिरेवाऽस्य लेपसंस्कारकर्मणि । नियुज्यतां महाराजभविष्यत्सूत्सवेषुच
विररामैतदाभाष्य सा तु दिव्या सरस्वती । तयोपदिष्टमाकर्ण्य प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना
वेष्टनं मोचयामास महावेद्या नृपोत्तमः । ददृशुस्ते तदा सर्वे रत्नसिंहासने स्थितम् ॥
रामं कृष्णं सुभद्रां च वासुदेवं सुदर्शनम् । यथोपदिष्टलेप्यादिसंस्कारैरुचिराकृतिम्
कृपया स्मेरवदनमुन्नतायतवक्षसम् । दीनानामुद्धृतौ नाथं प्रलम्बभुजपञ्जरम् ॥ ३८ ॥
प्रवुद्धपुण्डरीकाक्षं हासशोणायताधरम् । पश्यतां दृष्टिमात्रेण हर्तारं पापसञ्चयम् ॥
पद्मासनस्थितं कृष्णं दिव्यालङ्कारभूषितम् । स्वतेजसा परिवृतं दारुदेहेऽपिनिर्मलम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नीलजीमूतसङ्काशं सर्वसन्तापनाशनम् । ददर्शबलदेवं च साट्टहासमुखाम्बुजम् ॥४१॥
फणामण्डलविस्तीर्णं वारुणीघूर्णितेक्षणम् । प्रोत्थितं नागराजानंपीनोन्नतसुवक्षसम्
किञ्चिन्नतं पृष्ठदेशे कुण्डलीकृतविग्रहम् ।अग्रसम्फुल्लककुभं कैलासशिखरं यथा ॥४३
हलचक्राब्जमुसलधारिणं वनमालिनम् । हारकुण्डलकेयूरकिरीटमुकुटोज्ज्वलम् ॥

तयोर्मध्ये स्थितां लक्ष्मीं सुभद्रां भद्ररूपिणीम् ॥ ४५ ॥

सर्वदेवारणीं पापसागरोत्तारकारिणीम् । विकचाम्भोजवदनां वराब्जाभयधारिणीम्
रूपलावण्यवसतिं शोभमानां प्रसाधनैः । कुङ्कुमारुणदेहांतांसाक्षाल्लक्ष्मीमिवाऽपराम्

ददर्श विष्णोर्वामस्थां चक्रशाखाग्रनिर्मिताम् ।

वालार्कसदृशीं तीक्ष्णधारां तेजोमयीं द्विजाः !॥ ४८ ॥

तां दृष्ट्वानन्दपाथोधिनिमग्नः पृथिवीपतिः । कर्तव्यमूढः स्वतनौ स्वयं न प्रबभूव ह
दरमीलितनेत्रःसन्सृजन्वाष्पाम्बुकेवलम् । कृताञ्जलिपुटस्तस्थौस्थूणाकारोनृपोत्तमः
उवाच तं मुनिवरः स्मितवक्त्रः क्षितीश्वरम् । यदर्थं श्रममापन्नस्तत्साम्प्रतमभूत्तव
प्रत्यक्षं नृपशार्दूल! एकस्त्वंभाग्यवान्भुवि । अमुं पश्य जगन्नाथं पुण्डरीकायतेक्षणम्
भक्तानुग्रहपाथोधिं सर्वज्ञाननिधिं हरिम् । यं द्रष्टुं योगिनो नित्यं यतन्ति यतमानसाः
अवधानेन महता क्षणं पश्यन्ति मानवाः । सोऽयं दारुमयं देहं समास्थाय जनार्दनः
अनुग्रहीतुं त्वां भूप! प्रत्यक्षत्वमुपागतः । भजैनं धरणीनाथं स्तुहि कारुण्यसागरम्

ददाति संस्तुतः कामान्सर्वान्नृप ! मनोगतान् ॥ ५६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
विष्णोर्दारुमूर्त्याविर्भावोनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विंशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नकृताभगवत्स्तुतिस्तस्यनाम्नासरोवरोत्पत्तिवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

इत्थं प्रबोधितस्तेन नारदेन क्षितीश्वरः । तुष्टाव जगतांनाथं वचोभिः करुणान्वित

इन्द्रद्युम्न उवाच

त्वदङ्घ्रिपाथोजयुगं मुरारे ! नोपासितं जन्मखु पूर्वजेषु ।
तत्कर्मणां दारुणपाकभाजं दीनं परित्राहि कृपाम्बुधे! माम् ॥ २ ॥
क्व निर्मलं त्वच्चरणाब्जयुग्मं विरिञ्चिरुद्रेन्द्रकिरीटमग्नम् ।
काऽहं कुदीनः शकृदस्रमांसमूत्रास्थिसङ्घैः पिहितस्त्वचा वै ॥ ३ ॥
असारसंसारपरिभ्रमेण श्रमातुरस्त्वां कथमीश! जाने ।
जानन्ति ते त्वां खलु देवदेव येषां भवो दुःखभवप्रकाशः ॥ ४ ॥
प्रभो मया दुःखमनेकजन्मपापार्जितं भुक्तमनेकभावम् ।
शुभार्जितो यः सुखलेशभावो निदर्शनं यन्मधुपृक्ततिक्ते ॥ ५ ॥
यदेव सौख्यानुभवाय देव! कर्मार्जितो मे विषयोपभोगः ।
स एव दुःखं परिणामतो मे न मद्विधो दुःखिजनोऽस्ति चाऽन्यः ॥ ६ ॥
विभो ! यदि त्वां मनसाऽपि पूर्वमुपास्तमन्यद्विषयेक्षणोऽहम् ।
कथं तदालप्स्यमनेकजन्म पुनः पुनर्भोग्यमशेषदुःखम् ॥ ७ ॥
विभुत्वदासत्वपितृत्वपुत्रप्रियत्वमातृत्वधनित्वभावैः ।
वध्यत्वहिंस्रत्वपतित्वजायाभावैश्च तिर्यक्त्वसुरादिभावैः ॥ ८ ॥
नीचोद्ध्र्वभावं बहुशः सकृद्वा भवाङ्गणेऽस्मिँल्लुठतानुभूतम् ।
न वा मुरारे तव पादपद्मदूरीभवस्येष्टफलं हि चैतत् ॥ ९ ॥
कोशं बलं चैतदशेषपृथ्वीधनैर्वृतं यौवनरूपरूप्यः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनोऽनुकूलाः शतशः स्त्रियश्च निष्कण्टकं मे नृपमण्डलं च ॥ १० ॥
साम्राज्यता चाऽपि भरो महान्मे त्वज्ज्ञानहीनस्य पशोरिवाऽयम् ।
भारावतारं कुरु मे कृपाब्धे! सदैव तत्रोदित खेदयोगः ॥ ११ ॥
दीनानुकम्पिन्! करिणो विमुक्तिः कृता विभो त्वत्स्मृतिमात्रकेण ।
भ्रान्तं घटीयन्त्रवदत्र नाथ! मां त्रातुमर्हस्यनुकम्पिभावात् ॥ १२ ॥
न मे त्वदन्यः खलु बन्धुरत्र प्रवाहविभ्रष्टतरुस्वभावे ।
पापीयसी बुद्धिरुपेतभावा स्नेहानुबन्धा विषयेऽभिभेद्या ॥ १३ ॥
अहर्निशं मे तव पादपद्मान्माऽपैतु मत्प्रार्थितमेतदेव ।
त्वां सच्चिदानन्दसुपूर्णसिन्धुं प्राप्तास्तु ये जन्मसहस्रभाग्यैः ॥ १४ ॥
किं ते हि पश्यन्ति लवैकसौख्यमनेकदुःखं विषयेन्द्रजालम् ।
क्व बन्धनं कर्मभिरिष्टलेशदुःखाकरग्रन्थिशतैरभेद्यम् ॥ १५ ॥
अनन्तमाद्यन्तविहीनमेकमानन्ददं त्वत्पदपङ्कजं क्व ।
मायाम्बुधौ ते ममताभ्रमौ च कुकर्मनक्रायितगर्तमध्ये ॥ १६ ॥
निराश्रयं मे पतितं विलासकटाक्षपातेन नयाऽद्य तीरम् ।
स्वकार्यसंसाधनयाश्रितानां सम्पादनायेष्टविधेरजस्रम् ॥ १७ ॥
भ्राम्यन्तमात्मीयहितं विसृज्य मां त्राहि मूढं सहजानुकम्पिन् !।
क्षुद्राय कार्याय बहु भ्रमन्तमप्राप्य मूलं परमेश्वरं त्वाम् ॥ १८ ॥
आयासपात्रं परमं सुदीनं मां त्राहि विष्णो जगदेकवन्द्य !।
वेदान्तवेद्याऽव्यय! विश्वनाथ! त्वमीशिषे हन्तुमघौघराशीन् ॥ १९ ॥
तं त्वां परित्यज्य सुखैकहेतुं क्षुद्राशयं मां परिपाहि विष्णो !।
प्रसुप्त एषोऽखिलभूतसङ्घश्चतुर्विधो यत्कृतमोहरात्रौ ॥ २० ॥
त्वज्ज्ञानभानूदयमेत्य चाऽन्ते प्रबोध्यते त्वां शरणं प्रपद्ये ।
त्वमेक एवाखिललोककर्त्ता फणासहस्रैः परिवीतमूर्तिः ॥ २१ ॥
पर्यायवृत्त्या बलिनांवरिष्ठ! त्वामीशितारं शरणं प्रपद्ये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यया सृजस्यत्सि जगन्ति नाथ वक्षःसरोजासनया स्वशक्त्या ॥ २२ ॥

तां भद्ररूपां जगदाश्रयां ते देवारणिं पादयुगे नतोऽस्मि ।

यदंशुजालप्रतिसृष्टमेतद्ब्रह्माण्डजालं करसङ्गि नाथ !॥ २३ ॥

सुदर्शनं दैत्यबलस्य हन्तृ चक्राभिधं त्वां प्रणतः सुदर्शनम् ।

स्तुत्वेत्थं नृपतिश्रेष्ठः साष्टाङ्गं प्रणनाम सः ॥ २४ ॥

परित्राहि जगन्नाथमग्नं संसारसागरे। अनाथबन्धो! कृपया दीनं मां तमसाकुलम्

नारद उवाच

जय जय नारायण अपारभवसागरोत्तारपरायण सनकसनन्दनसनातनप्रभृतियोगिवरविचिन्त्यमानदिव्यतत्त्व स्वामायाविलसिताध्यासपरिणमिताशेषभूततत्त्वत्रितत्व त्रिदण्डधरत्रिणाचिकेतत्रिमधुत्रिसुपर्णोपगीयमानदिव्यज्ञानच्छन्दोमय स्वासनसुपर्णप्रिय भक्तप्रिय भक्तजनैकवत्सल स्वमायाजालव्यवहितस्वरूप विश्वरूप विश्वप्रकाश विश्वतोमुख विश्वतोक्षि विश्वतः श्रवण विश्वतः पादशिरोग्रीव विश्वहस्तनासारसनात्वक्केशलोमलिङ्ग सर्वलोकात्मक सर्वलोकसुखावह सर्वलोकोपकारक सर्वलोकनमस्कृत लीलाविलसितकोटिपद्मोद्भवरुद्रेन्द्रमरुदश्विसाध्यसिद्धगणप्रणताशेषसुरासुरत्रिभुवनगुरो न कस्याऽपि ज्ञानगोचर! नमस्ते नमस्ते ॥२६ ॥

जैमिनिरुवाच

अन्ये चयेनृपतयःश्रोत्रियावेदपारगाः । मुनयोद्विजाःक्षत्रियाश्चविद्वांसोवैश्यजातयः

अस्तुवन्पुण्डरीकाक्षं बलिनंभद्रयासह । सूक्तैः स्तोत्रैः पुराणैश्चकविताभिर्यथातथा

अथेन्द्रद्युम्नः प्रोवाच पुरोधसमकल्मषम् । पूजार्थं वासुदेवस्य उपाचारोपसंस्कृतम्

स्वयं स नृपतिश्रेष्ठः पूजयामास तान्क्रमात् ।

नारदस्योपदेशेन विधिना मन्त्रतस्तथा ॥ ३० ॥

द्वादशाक्षरमन्त्रेण बलभद्रमपूजयत् । यमुपास्यध्रुवःस्थानं प्राप्तवानुत्तमोत्तमम् ॥

त्रयीप्रसिद्धंयत्सूक्तं पावनं पौरुषं महत् । तेन नारायणं भूपः पूजयामास शक्तितः

देव्याः सूक्तेन भद्रां तां सौदर्शन्या सुदर्शनम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यथासमृद्धि भक्त्या तान्पूजयित्वा नृपोत्तमः ॥ ३३ ॥
तत्प्रीत्यै द्विजमुख्येभ्यो ददौ दानानिभक्तितः । तुलापुरुषदानानिमहादानानिपार्थिव
अश्वमेधाङ्गभूताश्चकोटिशो गा ददौतदा । अलङ्कृतास्तथान्याश्चददौगाबहुदक्षिणाः
तासां खुरोद्धृतैर्योगाद्गर्तोऽभूद्द्विजसत्तमाः !।
दानाम्बुना स पूर्णो वै तीर्थमासीन्महाफलम् ॥ ३६ ॥
तस्मिन्स्नात्वा पितॄन्देवान्सन्तर्प्य विधिवन्नरः ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोत्यसंशयः ॥ ३७ ॥
नाम्ना ख्यातं सरस्तस्यइन्द्रद्युम्नस्यभूपतेः । निर्वपत्यत्रपिण्डांश्चपितॄनुद्दिश्यमानवः
कुलैकविंशमुद्धृत्य ब्रह्मलोके महीयते । नाऽतः परतरं तीर्थं हयमेधाङ्गसम्भवात् ॥
इन्द्रद्युम्नस्य सरसः स्याद्वात्रिपथगा समा । ततःप्रासादघटनामुपचक्राम भूपतिः ॥
शभे काले सुनक्षत्रे दैवज्ञविधिचोदिते । सुमुहूर्ते नारदादीन्ब्राह्मणाग्र्यान्प्रपूज्य च
स्वस्तिवाचं च कर्मर्द्धि वाचयित्वा नृपोत्तमः ।
अर्घ्यं ददौ जगन्नाथं स्मरन्प्रासादवेश्मनि ॥ ४२ ॥
वसुधां प्रार्थयित्वा तु स्थानमाचन्द्रतारकम् ।
शिल्पिनः पूजयामास वास्तुयागपुरःसरम् ॥ ४३ ॥
महोत्सवं तथाचक्रे गीतवाद्यैः प्रभूतकैः । दीनानाथविपन्नेभ्योददौ वस्तुयथेप्सितम्
राज्ञोविसर्जयामास बहुमानपुरःसरम् । कृतार्थानवतारं तं हरेर्द्रष्टुं हतांहसः ॥४५॥
ततः स कोटिशो वित्तं ददौपाषाणदारके । आहृतौ बहुदेशेभ्यो दृषदां पार्थिवोत्तमः
उवाचेदंमुदायुक्तःसभायांपृथिवीश्वरः । अष्टादशभ्योद्वीपेभ्यो यन्मयापौरुषार्जितम्
तत्सर्वं जगदीशस्य प्रासादायाऽपवर्जितम् । जैत्रयात्राप्रसङ्गेनश्रमोलब्धस्तु योमया
सफलोऽस्तु स मे विष्णोः प्रासादायाऽर्थयोगतः ।
अतः परं मे किं भाग्यं चराचरगुरुं हरिम् ॥ ४६ ॥
प्रसादयिष्ये सम्पत्त्या भुजद्वन्द्वार्जितश्रिया । श्रीःसदापुण्डरीकाक्षेश्रियोनुग्रहजाममम
किं कर्तुमीशस्तस्यां वै देवदेवस्य चक्रिणः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कटाक्षपातो यस्य स्यात्तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ५१ ॥
अष्टादशात्मिका देवी जिह्वाग्रे चाऽस्य नृत्यति ।
यमाराध्य जगन्नाथं ब्रह्मत्वं प्राप्तवान्विधिः ॥ ५२ ॥

रुद्रो महेश्वरत्वं च शक्रस्त्रिदिवराजताम् । लेभेतमर्च्यं जगतामर्चयिष्यामिशाश्वतम्
जितं तेन त्रिधाराशीभूतमंहो महात्मना । साङ्गोपाङ्गेन विधिना येनकृष्णःसमर्चितः

कलेवरमिदं क्षेत्रं यत्राऽहङ्कारवान्विभुः ।
आविर्भावतिरोभावौ स्थितिर्नित्या हि यत्प्रभुः ॥ ५५ ॥
अत्र साक्षाद्वपुष्मन्तं सम्पूज्य जगतां गुरुम् ।
साक्षात्कृतार्थो भवति चतुर्वर्गस्य भाजनम् ॥ ५६ ॥
बहुव्ययाऽऽयासतो या राज्यऋद्धिर्मयाऽर्जिता ।
अस्यैवाऽनुग्रहात्सा तु सफलाऽस्तु पदाऽम्बुजे ॥ ५७ ॥

सर्वोपचारैः परिपूज्य देवं द्रव्यैर्ह्द तैः सागरमेखलायाः ।
यावत्समाप्नोति हि कर्मपाकः साम्राज्ययात्रा सफला हि माऽस्तु ॥ ५८ ॥
किं द्रव्यजातं खलु येन विष्णुं नोपाहरेत्साङ्गमपेतकल्मषः ।
किं पौरुषेयं यदि वासुदेवपरिच्छदो येन न साधितो मे ॥ ५९ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशातिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
इन्द्रद्युम्नसरोवरोत्पत्तिविवरणंनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकविंशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नेनदारुवृक्षेणप्रासादनिर्माणवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

इति ब्रुवाणं राजर्षिकश्चिदृग्वेदपारगः। वेदान्तविज्ञानशीलोद्विजोवाक्यंमुदाजगौ

अहो तवाऽयं खलु भाग्यराशिर्येनाऽऽविरासीद्भुवि दारुमूर्तिः।

यस्यात्युपास्ति श्रुतिराह मुक्तिप्रदामनात्मज्ञविमोहितानाम् ॥ २ ॥

य एष प्लवते दारुः सिन्धोः पारे ह्यपौरुषम्।

तमुपास्य दुराराध्यं मुक्तिं यान्ति सुदुर्लभाम् ॥ ३ ॥

ब्रह्मज्ञाननिधिःसाक्षान्नारदःप्रत्युवाच यत्। न हि वेदान्तवचसोऽपरस्माज्ज्ञानमस्यवै

न हिप्रवृत्तिर्विष्णोस्तुविनावेदंप्रवर्त्तते। परेषांस्वस्यवासृष्टौ श्रुतिप्रामाण्यवान्प्रभुः

विना श्रुतिं प्रवर्तेच्चेत्कस्तत्प्रामाण्यमृच्छति।

तस्माच्छ्रुतिप्रसिद्धोऽयमवतारोऽत्र भूपते !॥ ६ ॥

वेदान्तवेद्यं पुरुषं गीतं तं सामगीतिषु। प्रतिमां न तु जानीहिनिःश्रेयसकरंनृणाम्

दर्शनादेव नः शान्तं सुदृढं तम उत्तमम्। सन्त्येव श्रुतयः पूर्वमेतदर्चाप्रकाशिकाः ॥

एतदर्चा प्रशस्ता वै सदर्थेविनियोजिता। अहोभारतवर्षस्थामनुष्याःक्षीणकल्मषाः

अपवर्गप्रदो येषामाविरासीज्जनार्दनः। तत्राऽप्ययं चोढ्रदेशःसर्वेषामुत्तमोत्तमः ॥ १०

यत्रस्थाश्चर्मनेत्रेण पश्यन्ति ब्रह्मरूपिणम्। श्रुतिस्मृतीनांगहनःपन्थाःकर्मभिराकुलः

येन याता भ्रमन्तीह घटीयन्त्रवदाकुलाः। निर्व्यलीकपदप्राप्तिहेतुरेष स चिन्मयः ॥

श्रुत्यादिभिर्विनोपायैः परमानन्दमुक्तिदः। निरन्तरगतायातदुःस्थितानांदुरात्मनाम्

एष दारुवपुर्विष्णुः सुखदाता सुवान्धवः। श्रुतिस्मृत्युक्तनियमा वर्तन्ते नेह पार्थिव

यथा तथा दृष्टिपथमाचाण्डालाद्विमुक्तिदः। अभक्तश्चेदमुं पश्येद्गतानुगतिको नरः

अश्वमेधसहस्राणांफलं ह्यविकलंलभेत्। भजेच्चेन्नियमस्थो हि भक्तिमान्दृढमानसः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

असंशयंस सायुज्यं ब्रह्मणा लभते नरः । कः दुःखायासबहुलमनायासविनश्वरम् ॥
अचिरस्थं क्षुद्रफलं पुनरावृत्तिलक्षणम् । क्वेदं दारुमयं ब्रह्म पापराशिदवानलम् ॥
सच्चिदानन्दकैवल्यमुक्तिदं दर्शनादपि । वेदानुवचनादीनि दुष्कराणि दुरात्मनाम् ॥
महात्मभिस्तैर्यत्प्राप्यं तदव्यग्रमयं ददेत् । अन्यक्षेत्रेषु भगवान्सुदूरो मर्त्यवासिनाम्
स्वक्षेत्रेऽस्मिन्निवसति नित्यं मुक्तिप्रदोविभुः । अस्मादत्रमहाभागतिष्ठस्वबलपौरुषः
विद्वत्तमोऽसि भक्तश्च साङ्गोपाङ्गममुं भज ॥ २२ ॥

जैमिनिरुवाच

द्विजस्य तद्वचः श्रुत्वा नारदो हृष्टमानसः । साधूक्तं द्विजवर्येण श्रौतमार्गानुसारिणा
सृष्ट्यादौ ब्रह्मनिश्वासैरभवद्वेदसंहतिः । तत्रोपनिषदर्थोऽयं साम्प्रतं व्यक्तिमागतः ॥
वेत्त्येतदर्थं भगवान्पद्मयोनिः प्रजापतिः । अज्ञासिषं च भूपाल साम्प्रतं तन्मुखादहम्
तस्याऽऽज्ञयाकृतंसर्वंयथाभिलषितं एव । एनमाराध्यतिष्ठात्रयास्यहंब्रह्मणोऽन्तिकम्
कृतं निवेदयिष्यामि प्रकाशश्च मुरद्विषः । प्रासादं कुरु भूपाल! धनेन महता तथा ॥
प्रासादे नरसिंहं तु प्रतिष्ठाप्य विमुच्यसे ॥ २८ ॥

जैमिनिरुवाच

तच्छ्रुत्वा स तु भूमीन्द्रः प्रत्युवाच मुनिं तदा ।
महर्षेऽहं त्वया सार्द्धं यियासुर्ब्रह्मणोऽन्तिकम् ॥ २६ ॥
यत्प्रसादाज्जगन्नाथश्चक्रेऽयं लोचनातिथिः । निवेद्य तं च प्रासादं प्रतिष्ठार्थं मुरद्विषः
विज्ञापयिष्ये सान्निध्ये प्रासादस्थापनोत्सवम् ।
यथा स्वयं समागम्य ब्रह्मलोकात्पितामहः ॥ ३१ ॥
महोत्सवं भगवतः प्रासादेऽत्र करिष्यति । तन्मुने! मामपिविधेःसंनिधिंप्रापयस्व च
गर्भप्रतिष्ठां प्रासादे समाप्येह स्थितो मुने ! ।
पश्चादावां गमिष्यावः कञ्चित्कालं प्रतीक्ष मे ॥ ३३ ॥
ततः स नृपतिः सर्वाञ्छिल्पशास्त्रविशारदान् । पाषाणखण्डघटनाकर्मण्येकैकयोगतः
सत्कारैर्दानमानैश्च योजयामास सादरम् । दिने दिने सुघटितःप्रासादोववृधे द्विजाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परितः पूर्यमाणस्तु शुक्लपक्षे यथा शशी। एवंसम्वर्ध्यमानोऽपिप्रासादः परिवर्द्धितः
महोच्छ्रयत्वादल्पेननकालेनाभिलक्ष्यते। पाषाणसङ्ख्याशक्यावाकथञ्चिद्घटनाक्रमात्

वित्तव्ययस्तु कोटीनां न सङ्ख्यातुं च शक्यते।

यावन्तो भारते वर्षे लोकाः समयवर्तिनः ॥ ३८ ॥

इन्द्रद्युम्नस्य नृपतेर्नियुक्तास्ते महीभृतः। एकैकशो नियुक्ता ये परस्परसमन्विताः॥
तेऽपि चान्यैर्नियुक्तास्तेसर्वे तत्रप्रवर्तिताः। अजस्रं तन्नियुक्तानां योहर्षोत्थोमहारवः
आकाशमश्नुवानोऽसौदिशांभागानपूरयत्। नृपतेःश्रद्धयाभक्तया सात्त्विकेनप्रसादिता

श्रीः समृद्धाऽभवद्विप्राः कीर्त्या सह महीपतेः।

क्वचित्काञ्चनविन्यस्तनानारत्नमहोज्ज्वलः ॥ ४२ ॥

क्वचित्स्फटिकमागान्तशारदाभ्रनिभच्छविः।

क्वचिन्नीलाश्मघटिता भित्तिःकालाभ्रमेदुरा ॥ ४३ ॥

एवं सुघटिते विष्णोः प्रासादे सुमनोहरे। गर्भप्रतिष्ठां विधिवत्कृत्वा स नृपसत्तमः
वज्रपातादिभङ्गादिवारणार्थंयथोचितम्। शिल्पशास्त्रेषुमण्यादिविन्यस्यपौरुषाहृतम्
पुनः प्रासादघटनासम्भारोचितमेव वै। वहुमूल्यं वस्तुजातं यत्नात्तत्र न्यवेशयत्॥
ततोविरच्यमानेऽस्मिन्प्रासादेकीर्तिवर्द्धने। मनसापिनसम्भाव्येत्रिषुलोकेषुभूभुजाम्

देवानामपि नो लक्ष्ये द्विजाः कल्पान्तवासिनाम।

प्रासाद ईदृशो भूमौ क्वचिच्च घटितो न हि ॥ ४८ ॥

स्वर्गेवाइत्थमादित्याआलपन्तिपरस्परम्। अहो सुवुद्धिरस्योच्चैर्यमीदृक्परीणता

श्रद्धया भगवत्पादपद्मयोः साभिलाषिणी।

अलौकिकानि कर्माणि पश्यन्ति हि रचन्त्यपि ॥ ५० ॥

केवाऽत्रभूमौराजानोवभूवुर्नीतिशालिनः। सार्वभौमास्तुसाम्राज्यजेतारःसर्वविद्विषाम्
वित्तानि यैः सञ्चितानि सुवहूनिचकोटिशः। अश्वमेधसहस्रन्तु यत्कृतंत्रिदिवेशितुः
शक्यं वा स्याद्भूभुजां तुनातःपूर्वमनुष्ठितम्। न दृष्टंनश्रुतस्वापि वाजिमेधसहस्रकम्
महाक्षितानुष्ठितंवै यत्रत्रैलोक्यवासिनः। पृथिव्यामस्यनृपतेः सहस्थाभोगभोगिनः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रह्मलोक इवाभातिसभार्यस्य च यज्विनः । मूर्तिमन्तस्त्रयो वेदाश्चतुष्पादोवृषस्तथा
सुराः सङ्कल्पकामास्तुयत्राद्भुतश्रियोऽभवन् । अयं प्रासादवर्योवैवुद्धेर्विषयताङ्गतः ॥

मनोऽपि यत्र भवति न वा त्रैलोक्यवासिनाम् ।
भूपतेर्दुर्लभं किं स्यात्सहायो यस्य नारदः ॥ ५७ ॥

पितामहश्च जगतांस्रष्टासर्वामरेश्वरः । अथवा विष्णुभक्तस्य नाऽतिदूरं चिकीर्षितम्
विष्णोस्तद्भक्तलोकस्यनाऽन्तरं विद्यतेद्विजाः । ततःसनारदम्प्राहप्रासादान्तेमुनीश्वरम्
सर्वं सम्पन्नमासीन्मे यदशक्यं सुरासुरैः । साक्षाद्भगवतो विष्णोरद्धैतोपासनारतः
भगवद्वपुराभाषि प्रासादस्तु चिरं मयि । इत्युक्त्वापादयोर्मूर्ध्ना प्रणनाम स नारदम्

नारदोऽपि तमुत्थाप्य परिपूज्य नृपोत्तमम् ।
त्वत्तो न भेदो नृपते ममाऽस्ति खलु तत्त्वतः ॥ ६२ ॥

यस्तुसाक्षाज्जगन्नाथआविर्भूतःकृतेनवा । अवश्यमर्चयस्वैनंजीवन्मुक्तोऽसिसाम्प्रतम्
तत्पादपद्मे याद्भक्ते चेतः प्रणवतान्वितम् । भक्त्याह्यनन्ययापुंसः किमतःपरमस्तिवै
तीर्थैर्मन्त्रैर्जपैर्दानैः क्रतुभिर्भूरिदक्षिणैः । व्रतैरध्ययनैर्भूप! तपोभिश्च यदर्जितुम् ॥
न शक्यंतवराजेन्द्रभक्त्या तत्करमागतम् । अतः परं न शोचस्वभक्तियोगेनमोऽस्तुते
प्रकर्षं बहुराजेन्द्र स्थित्वा चाऽस्मिंश्चिरम्भुवि । आराधयजगन्नाथमुपचारैर्महोत्सवैः

पितामहं द्रष्टुकामो गन्ता चेदन्तिकं विभोः ।
उपदेक्ष्यति सोऽप्यस्य यात्रास्तास्ता महोत्सवाः ॥ ६८ ॥

स्वयं च भगवानेववरं तुभ्यंप्रदास्यति । प्रतिष्ठापितेप्रासादेतस्मिन्कालेस्वयम्भुवा
अहमप्यागमिष्यामि तदा सप्तर्षिभिःसह । तदावांतत्र गच्छावो ब्रह्मलोकमकल्मषम्

त्वां विना भुवि कः शक्तो ब्रह्मलोकगतिम्प्रति ।
इत्युक्त्वा नारदो भूपं समुत्तस्थौ नभस्तलम् ॥ ७१ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
श्रीनारदेनराजानम्प्रतिभगवत्प्रासादनिर्मापणार्थमुद्बोधवचनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वाविंशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नस्यब्रह्मलोकेनारदेनसहगमनवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

राजाऽथ तमुवाचेदं निर्लक्ष्य गमनं कथम्। अयं पुष्परथोऽस्त्येव मनसोवेगवान्मुने
एनमारुह्य यास्यावः क्षणं तावत्प्रतीक्ष्यताम्। यावदेताननुज्ञाप्य प्रासादेह्यधिकारिणः
प्रदक्षिणीकृत्य विभुमायामि मुनिसत्तम!। नारदोऽपिवचः श्रुत्वा श्रद्दधानोनृपोक्तिषु
करेण धृत्वा राजानं महावेदीं प्रविश्य च। सहितं रामभद्राभ्यां नत्वा कृष्णंमुहुर्मुहुः
अनुज्ञां प्रार्थयामास ब्रह्मलोकगतिम्प्रति ॥ ४ ॥

इन्द्रद्युम्नोऽपि वचसा मनसा वपुषा हरिम्। प्रदक्षिणीकृत्यपुनर्नत्वा साष्टाङ्गमुन्मनाः
ब्रह्मलोकगतिं विप्रा! याचते स्म कृताञ्जलिः ॥ ५ ॥

उभौ तौ दिव्ययानेन जग्मतुर्मुनिभूभृतौ। प्रदक्षिणीकृत्यरविं व्योममण्डलमध्यगम्
उपर्युपरि जग्माते व्यतीत्य ध्रुवमण्डलम् ॥ ६ ॥

जनलोकगतैःसिद्धैः सत्वरावनतोन्मुखैः। वीक्ष्यमाणौमुदायुक्तौ सँल्लपन्तौपरस्परम्
भगवच्चरितम्विप्रा मनोमलविशोधनम्। जीवन्मुक्तो मुनिश्रेष्ठः सर्वलोकान्भ्रमन्नयम्
यथानुपहतव्रज्यस्तथाऽयं मर्त्यवास्यपि ॥ ८ ॥

भूपतिः प्रययौ शीघ्रं विष्णुभक्तिप्रसादतः। ब्रह्माण्डविषयेनैतद्दुष्प्राप्यंवस्तुविद्यते
विष्णुभक्तेन यल्लभ्यमथवामुक्तिमेति सः। महर्लोकगतैः सिद्धैः सादराभ्यर्चितौचतौ
इन्द्रद्युम्नो न सस्मार पार्थिवं वासमात्मनः।
क्रमादूर्ध्वगतिर्गच्छन्पश्यन्सौख्यैकभाजनान् ॥ ११ ॥

निर्द्वन्द्वानभिलाषोत्थतत्क्षणानेकपौरुषान्। केवलम्भगवत्प्रीत्यै कर्मभूमौचकार यत्
प्रासादंचिन्तयामास सम्पूर्णोवा न वा भवेत्। मध्यागतेब्रह्मलोकंशत्रुभिर्वाऽभिभूयते
श्लथादरावाभूयासुःसेवकाद्द्रव्यलोभतः। गृहीतवेतनाः शिल्पिवृन्दा मन्दक्रियास्तथा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न शीघ्रं घटयिष्यन्ति मयि ब्रह्मक्षयागते ॥ १४ ॥

यावद्गमिष्ये धातारं गृहीत्वाऽहं चतुर्मुखम् । तावन्नपुनरेवस्यात्प्रासादोमयि दूरगे
इहायातास्तु ये पूर्वे न पुनस्तेक्षितिंगताः । मन्वानाममसामन्ताइत्थं वा दुष्टमानसाः
राज्यं ममाहरिष्यन्ति द्विषन्तः किमु साम्प्रतम् ॥ १६ ॥

इत्थं सुविग्नमनसा चिन्तयानं महीपतिम् । अतीतानागतज्ञाननिधिर्मुनिरुवाचतम् ॥
किंचिन्तयसिराजेन्द्रत्वमेवंदीनमानसः । यत्र चाभ्यागतावावां नचिन्ताविषयोह्ययम्
नाऽऽधयोव्याधयश्चाऽत्र प्रभवन्तिकदाचन । नजरानचवामृत्युःकिमन्यद्दुःखहेतुकम्
कृतार्थोऽसिमहाभाग! यन्मानुषवपुः स्वयम् । ब्रह्मलोकमिहायातःप्रत्यक्षंद्रष्टवान्हरिम्
इहायाता न शोचन्ति हेये संसारकल्पके । ब्रुवाणमित्थं भूपालस्तमुवाच मुनीश्वरम्
न हि शोचामि भगवन्राज्ञःस्वजनबन्धुषु । समारब्धो भगवतः प्रसादो यो मयाधुना
अत्रागतं मां तेज्ञात्वा नानुतिष्ठन्तिसेवकाः । आरब्धस्यप्रतिष्ठाहिकर्तव्यानिश्चितामुने
तस्यान्तरायं सम्भाव्य दुःखितं मेमनः प्रभो । तस्य तद्वचनंश्रुत्वाप्रहस्यमुनिरब्रवीत्
प्रजापतिसमस्त्वं हि न तु सामान्यभूपतिः । केनाऽप्यकृतं नैव भूमौ पूर्वैरनुष्ठितम् ॥
किं पुनस्तव कृत्यं तु यः सृष्टिस्थितिहानिकृत् ।
ब्रह्मलोकं गतस्याऽद्य प्रतापयशसा तव ॥ २६ ॥

त्रैलोक्ये भ्रमतोनित्यंयथासूर्यनिशाकरौ । यस्यकार्येषुभगवान्सहायोऽसौ चतुर्मुखः
तेषुकिंराजशार्दूल! विघ्नशङ्काऽपिजायते । एवमदूरेऽस्तिराजेन्द्रप्रत्यक्षंयस्तवद्विषाम्
सदोमध्यगतः शक्रः साक्षात्त्रिजगतीपतिः । विशेषतो जगन्नाथप्रासादे कः पुमान्नृप
निहन्तु मनसाऽपीच्छेत्तत्र शङ्कास्तु मा तव । तदग्रतःपश्यभूप चन्द्रकोटिसमत्विषा
परितो ह्लादजनकः सुधासागरकोटिवत् । यश्चाऽयं तेजसां राशिर्जानीहि ब्रह्मसद्मनः
इत्थमालपतस्तौ तुब्रह्मलोकान्तिकंगतौ । शुश्रुवाते सुदूरात्तौब्रह्मर्षीणां मुखोद्गतम्
स्वाध्यायशब्दंसुपदंस्पष्टवर्णक्रमस्वरम् । इतिहासपुराणानिच्छन्दःकल्पानिगाथिकाः
असङ्कीर्णोज्ज्वलपदंश्रूयते प्रविभागशः । अत्रैतद्राजशार्दूल! जानीहि ब्रह्मणः पुरम्
सभाहि दृश्यते चैषा यत्रलोकपितामहः । सार्द्धंब्रह्मर्षिमुख्यैश्च सुखासीनश्चतुर्मुखः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नानाचैतन्यशबलैर्जीवन्मुक्तैरुपासितः ।
यत्राऽऽगतानि वर्त्तन्ते न संसाराऽब्धिसङ्कटे ॥ ३६ ॥

सदिति ब्रह्मणो नामतस्यायंभुवनोत्तमः । सत्यलोकइतिख्यातस्तदूर्ध्वंनास्तिकिञ्चन
अस्यैव किञ्चिदुपरि अधश्चाऽण्डकपालतः । वैकुण्ठभुवनं राजन्मुक्तायत्रवसन्ति हि
यत्र योगीश्वरःसाक्षाद्योगिचिन्त्योजनार्दनः । चैतन्यवपुरास्तेवैसान्द्रानन्दात्मकःप्रभुः
यं प्राप्यन निवर्त्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि । यमुपास्ते सदा ब्रह्माजीवन्मुक्तैः स्वमुक्तये
कल्पितस्यायुषोन्तेऽसावेभिःसार्द्धंप्रपद्यते । सएवस्रष्टालोकानांमत्स्यकूर्मादिरूपधृक
रक्षिता रौद्ररूपेण संहर्त्ता लोकभावनः । इन्द्रद्युम्नं वदन्नित्थं प्राप ब्रह्मनिकेतनम् ॥
क्षणेन च सभाद्वारि प्रकोष्ठे स न्यवर्तत । यत्रतिष्ठन्तिदिक्पालाःशक्राद्याःपरितस्तथा
चिरकालंध्यानपरास्तथामन्वन्तराधिपाः । पृथग्जननिभाद्वाःस्थनिषिद्धान्तःप्रवेशनाः
इन्द्रद्युम्नेन सहितं नारदं प्रविलोक्य सः । द्वारपालः सविनयं ननामाऽऽनतकन्धरः ॥
चतुर्दशानां लोकानांभ्रमणेरसिक! प्रभो । त्वयाविनाशोभतेनोस्वामिंस्तवपितुःसभा

सन्त्येव मुनयः श्रेष्ठा ब्राह्मणा ब्रह्मविद्वराः ।
गौतमाद्यास्तथाऽप्येषा न रम्या ब्रह्मणः सभा ॥ ४७ ॥

बहुतारासु रजनी चन्द्रेणेव प्रकाशते । इति स्तुवन्ददौ तस्य प्रवेशं विनयान्वितः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
राज्ञइन्द्रद्युम्नस्यनारदेनसाकंब्रह्मसदनगमनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

—::०::—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रयोविंशोऽध्यायः

राज्ञाब्रह्मदर्शनवर्णनंब्रह्मवैभवदर्शनञ्च

नारद उवाच

दौवारिकाऽयंराजर्षिरिन्द्रद्युम्नोमहायशाः । सार्वभौमोवैष्णवाग्र्योधातारंद्रष्टुमागतः
यात्वयं पुरतस्तस्य यदि त्वमनुमन्यसे । इत्युक्तस्तं पुनः प्राह नारदं मणिकोदरः ॥

स्वामिंस्त्वयाऽऽगतो योऽसौ न सामान्यो हि बुध्यते ।

यत्र पश्यसि दिक्पालान्पितॄन्मन्वन्तराधिपान् ॥ ३ ॥

तत्राऽयं मर्त्यनिलयस्तिष्ठेदपि हि पौरुषम् । भवान्गत्वा पद्मयोनिंविज्ञाप्यैनंप्रवेशय
सभाद्वारगतो योऽसौदिक्पालैःसह यास्यति । एकाग्रचित्तोभगवान्गायनेचतुराननः
अस्माकंद्वारियुक्तानांप्रतीक्ष्योऽवसरोध्रुवम् । नक्रोधोमयिकर्त्तव्योदासेतवपितुश्चते
इत्युक्तो नारदो गत्वा ब्रह्माणं जगतां पतिम् । नत्वासाष्टाङ्गपतनंविज्ञप्तोवसुधाधिपः
कटाक्षेणाऽदिशत्सोऽथ इन्द्रद्युम्नप्रवेशनम् । नोवाच किञ्चिद्भगवान्गानेदत्तावधानतः
दिव्यगायनसङ्गीते कौतुकाविष्टमानसः । ज्ञात्वेङ्गितं नारदोऽथ इन्द्रद्युम्नंनृपोत्तमम्

प्रवेशयामास ततः शक्राद्यैः सुनिरीक्षितः ॥ ६ ॥

दृष्ट्वा पितामहं दूरात्स्रष्टारं जगतां नृपः । अमन्यत द्विजश्रेष्ठाः साक्षाद्दारुमयं हरिम् ॥
शनैः शनैर्ययौ भूपः प्रणमंश्च कृताञ्जलिः । स्तुवन्नमन्प्रणिपतन्साध्वसस्खलितंव्रजन्

किञ्चिद्दूरे स्थितो भूपो नारदस्य निदेशतः ॥ ११ ॥

ततः पुण्यं गीयमानं चरितं सिन्धुजापतेः । शृण्वंश्चतुर्मुखस्तस्थौमुहूर्त्तंद्विजपुङ्गवाः
सावित्रीशारदाभ्यांचवीज्यमानस्तुपार्श्वयोः । शुद्धदेहधरैर्वेदैःस्तूयमानःस्वयम्भुवः
कलाकाष्ठानिमेषादि कल्पयन्युगपर्ययम् । न जराजन्ममरणं रूपादिपरिणामनम् ॥१४
यस्य लोकगतानां वै नाऽऽधयोव्याधयस्तथा । मन्वन्तरादयोयत्रयुगावर्त्तादयस्तथा
कल्पान्ताद्या न विद्यन्ते स साक्षात्परमेश्वरः । गीतावसानेतं भूपमुवाच प्रहसन्निव॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रद्युम्नमहासत्त्वसाक्षात्त्वंभगवत्प्रियः। अन्यस्यदुर्लभोलोकःसत्याख्योविदितस्तव
अत्रागतिंहिवाञ्छन्तोमुनयःक्षीणकल्मषाः। तपोनिष्ठाश्चतिष्ठन्तियावदाभूतसम्प्लवम्
चतुर्दशसुलोकेषुसृष्टानांप्राणिनांहियत्। चैतन्यादिविचित्राणिसर्वेषामाश्रयोह्यसौ
जानन्नपि हि तत्कार्यं मानयन्नृपसत्तमम्। उवाच परमप्रीत इन्द्रद्युम्नं पितामहः॥
किमर्थमागतोऽस्यत्रतद्ब्रूहिहृदयस्थितम्। मयि दृष्टेन दुष्प्रापममृतंकिन्नुवाञ्छितम्

इन्द्रद्युम्न उवाच

अन्तर्यामिन्हि भगवंस्त्वदज्ञातंकुतो भवेत्। तथाऽपि प्रश्नोयोनाथमय्यनुक्रोशएवसः
मूर्ध्न्याधाय तवाऽनुज्ञां कथितं तव सूनुना। इष्टाः सहस्रं क्रतवस्तदन्ते दारुदेहभृत्
आविर्बभूव भगवान्भूतभव्यभवत्प्रभुः। त्वदनुग्रहसम्पत्तिवशादेवाऽवलोकयन्॥२४
तादृशं पुण्डरीकाक्षं येन त्वल्लोकमागतः। यस्यारब्धोमयादेवप्रासादस्तत्रचेत्स्वयम्
गत्वा देवं जगन्नाथंस्थापयिष्यसिचेत्प्रभो!। त्वदनुग्रहस्तुसफलोभवेन्मेलोकभावन
एतदर्थं जगत्स्वामिन्नारदेन सहाऽधुना। त्वत्पादमपद्मयुगलं द्रष्टुं त्वल्लोकमागतः॥

प्रसीद मां कुरुष्वेदं जगन्नाथस्त्वमेव हि।
त्वमेव स जगन्नाथो न भेदो युवयोर्विभो!॥ २८॥
स्थाप्यः स्थापयिता चाऽसि वेद्यो वेदयिता भवान्॥ २६॥

जैमिनिरुवाच

एवंविज्ञापनान्ते तु दुर्वासाः स महामुनिः। प्रणम्यसाष्टाङ्गपातं कृताञ्जलिरुपस्थितः
प्रोवाच विनयान्नीचो धातारं जगतां गुरुम्॥ ३०॥

विभो! द्वारप्रवेशेऽत्रदौवारिकनिवारिताः। लोकपालाःसपितरस्तथामन्वन्तराधिपाः
तिष्ठन्ति दीनजनवत्सुचिराल्लोकभावन!। तदाज्ञापय पश्यन्तु तव पादसरोरुहम् ३२
तच्छ्रुत्वा देवदेवस्तु तदा दुर्वाससो वचः। प्रहस्य वचनम्प्राह नैषां प्रस्ताव एवहि
इन्द्रद्युम्नेनस्पर्द्धन्तेकिन्तु मोहवशानुगाः। जीवन्मुक्तोऽयंनृपतिःक्षीणकर्माऽघसंहतिः
मत्सन्ततेः पञ्चमोऽयं वैष्णवोविष्णुतत्परः। एतेहिसुखभोगायकर्मणा प्राप्तपौरुषाः
अत्राऽगतिं प्रार्थयन्तस्तपस्तप्त्वा हि देवताः। ममानुग्रहत एते आयाता मदुपासने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथापि त्वदनुज्ञाता आयान्तु मम दर्शने । ततः प्रविष्टास्ते देवा दुर्वासोवचनेन वै ॥
दूरात्प्रणेमुर्ब्रह्माणं गायनानां समीपतः । इन्द्रद्युम्नं नरपतिं सँल्लपन्तं कृताञ्जलिम् ॥
ताँल्लोकपालान्प्रणतान्कटाक्षेण जगत्प्रभुः । अनुजग्राह कथयन्निन्द्रद्युम्नं ससादरम् ॥

राजन्कृतस्त्वया सत्यं प्रासादो भगवत्स्थितौ ।
नाऽयं कालस्तथा राज्यं न वा त्वत्सन्ततिर्नृप !॥ ४० ॥

गीतगानावसरतो भूयान्कालोगतस्तव । मन्वन्तरो हि दिव्यानांयुगानामेकसप्ततिः

तव वंशोऽपि विच्छिन्नः कोटिशः क्षितिपा गताः ।
देवोऽन्तिमश्च प्रासादो द्वयमत्राऽवशिष्यते ॥ ४२ ॥

द्वितीयस्य मनोरादियुगं स्वारोचिषस्य तु । ममान्तिकेऽत्रवसतोमृत्युर्वानजरातथा
विपर्ययमृतूनां वा न कालपरिणामता । तद्गच्छ भूमौ राजेन्द्र! देवं प्रासादमेव च ॥
आत्मसम्बन्धिनं कृत्वा पुनरायाहि वेगवान् । अथवाऽहं प्रयास्यामितवानुपदमेव हि

त्वमग्रतो धरां गत्वा यावत्सम्भारमृद्धिमत् ।
करिष्यसि महाभाग! तावदेव व्रजास्यहम् ॥ ४६ ॥

इत्याज्ञाप्येन्द्रद्युम्नं तं भगवान्सपितामहः । देवान्पुरःस्थितानाह विनयानतकन्धरान्

बद्धाञ्जलीन्साध्वसांस्तांस्तत्पादन्यस्तवीक्षणान् ।
उवाच भगवान्स्निग्धगम्भीरवचसा द्विजाः !॥ ४८ ॥

किमर्थमागताः सर्वे युगपत्तुदिवौकसः । यत्कार्यं वो मया कार्यं विज्ञापयतमाचिरम्

जैमिनिरुवाच

इति श्रुत्वा वचो धातुस्त्रिदशाविगतज्वराः । प्रत्यूचुर्हर्षिताःसर्वे भगवन्तं पितामहम्

देवा ऊचुः

उपासितः पुराऽस्माभिर्यानीलाद्रौमणीमयः । अन्तर्हितःकथन्देव इदानीं दारुदेहधृक्
आविर्भूतः क्रतोरन्त इन्द्रद्युम्नस्य भूपतेः । एतस्य कारणं ज्ञातुं भवतः पादपङ्कजम्
आराधितुमिहाऽऽयाताः प्रसीद कथयस्व तत् । इत्युक्तेत्रिदशैर्देवोभगवान्पङ्कजासनः
रहस्यमेतद्वो देवाः कस्यचिन्नोदितं पुरा । सर्वे समुदिता यस्मादपृच्छत चिरागताः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततो वः कथयिष्यामि सुराणांगुह्यमुत्तमम् । पूर्वेपरार्द्धे भो देवाःक्षेत्रंश्रीपुरुषोत्तमम्
नीलाश्मवपुरास्थाय न तत्याज जनार्दनः । साम्प्रतं मे द्वितीयन्तुपरार्द्धंसमुपस्थितम्
मनुःस्वायम्भुवो नाम श्वेतवाराहकल्पके । प्रवर्त्ततेऽयं कालो वै प्रातराद्यदिनस्य च॥
दारुमूर्तिरयं देवो भुवनानां हि मध्यमे । ममाऽऽयुषः प्रमाणन्तुस्थास्यतेमानयन्प्रभुः

ममाऽऽत्मा एव भगवानहमेतन्मयः सुराः ।
नावयोर्विद्यते किञ्चिदस्मिन्स्थावरजङ्गमे ॥ ५६ ॥

क्षीरोदार्णवमध्येहि श्वेतद्वीपेहि तल्पके । यः शेते योगनिद्रां तां मानयन्पुरुषोत्तमः
समूलंजगतामादिस्तस्यरोमाणियानिवै । तानि कल्पद्रुमाख्यानिशङ्खचक्राङ्कितानिवै
तन्मध्यस्थोह्ययंवृक्षश्चैतन्याधिष्ठितःसुराः । स्वयमुत्पतितःसिन्धोःसलिलेसत्यपूरुषः
भोगान्भोक्तुंत्रिलोकस्थान्दारुवर्ष्मा जनार्दनः । अनेकजन्मसाहस्रैर्भक्तियोगेनभावितः
घोरसंसारनाशाय मया पूर्वं प्रयाचितः । पुनः पुनः सृष्टिलीनपालनोद्विग्नचेतसा ॥६४
अशेषकर्मनाशाय जगतां सर्वमुक्तये । धारणाध्यानयोगानां दुष्कराणां विनाऽपि सः
मोक्षाय भगवानाविर्बभूव पुरुषोत्तमः । प्रच्छन्नं वपुरेतस्य क्षेत्रं नाऽस्य विचारयेत्
धर्मिग्राहप्रमाणेन यादृग्दृष्टः स एव सः । चतुर्वर्गप्रदो देवो यो यथा तं विभावयेत्
तद्दर्शनपरिक्षीणपापसङ्घाः क्रमाद्भुवि । भवन्ति निर्मलात्मानः पुरुषा मुक्तिभाजनम् ॥

जैमिनिरुवाच

एवमुक्त्वा तुते देवाः पद्मयोनेर्वचोऽमृतम् । हृष्टा सञ्चिन्तयामासुःप्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना
अचिरस्थायि देवत्वं विहायैतद्भुवं गताः । अस्मिन्क्षेत्रवरे देवमाराध्यामः सुसंयताः
हर्षप्रफुल्लवदनान्सुरान्दृष्ट्वा पितामहः । इन्द्रद्युम्नानुग्रहाय यः प्रकाशं गतः प्रभुः ॥
याताऽत्र प्रतिमा त्वस्यस्वयमेववदिष्यति । वरान्प्रदास्यतिबहून्भगवान्भक्तवत्सलः
प्रासादमिन्द्रद्युम्नस्य प्रतिष्ठापयितुं विभुम् । अहञ्चाऽपिगमिष्यामियूयंतत्र प्रयात वै
इन्द्रद्युम्नोऽग्रतो यातु प्रतिष्ठावस्तुसम्भृतौ । सहायास्तत्रभवतयूयंक्षीणाधिकारिणः
मन्वन्तरं व्यतीतं वै प्रथमं साम्प्रतं सुराः । इन्द्युम्नेन सहितास्तत्र गत्वा सुरोत्तमाः

प्रासादप्रतिमानां च विधर्ता स्वाम्यमस्य वै ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मात्सम्भृत सम्भारः ससहायोऽधुना ह्यसौ ॥ ७६ ॥
अस्यसन्ततिसम्बन्धस्मरणादपि भूतले । मदाज्ञया पद्मनिधिः सह यास्यतिभूतलम्
प्रतिष्ठायै भगवतःसंयतौ सर्ववस्तुनः । इन्द्रद्युम्नोऽपि हृष्टात्मा दृष्ट्वाब्राह्मींश्रियंद्विजाः
महदाश्चर्यसम्पन्नः प्रणिपत्यजगद्गुरुम् । तदाज्ञांशिरसाधृत्वादेवैःक्षीणाधिकारिभिः
आजगाम भुवं विप्रा विधिना चाऽनुमोदिताः ॥ ८० ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
राज्ञाब्रह्मदर्शनमनुपृथ्वीसमागमनवर्णनंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चतुर्विंशोऽध्यायः

भूलोकेसमागतदेवैःश्रीविष्णुस्तववर्णनम्

जैमिनिरुवाच

आगत्य च जगन्नाथं चिरादुत्कण्ठमानसः । दण्डवत्प्रणनामाऽसौवनरोमाञ्चकञ्चुकः
नमोब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । प्रणतार्तिविनाशाय चतुर्वर्गैकहेतवे ॥ २ ॥
हिरण्यगर्भपुरुषप्रधानव्यक्तरूपिणे । ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ ३ ॥
इत्युच्चरन्स्तुतिं भूपः सानन्दाश्रुविलोचनः । प्रदक्षिणं पुनःकुर्वन्ननाम च पुनः पुनः ॥
ततोऽन्या देवता या वैतत्राऽगच्छन्मुदान्विताः । तुष्टुवुःप्रणतादेवंकृताञ्जलिपुटा मुदा

देवा ऊचुः

सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिं सर्वतोव्याप्यअध्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्
यः पुमान्परमं ब्रह्म परमात्मेति गीयते । भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं पुरुष एव तत्
एतावानस्य महिमा ज्यायानेष पुमान्प्रभुः ।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्याऽमृतं दिवि ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छन्दांसिजज्ञिरेत्वत्तस्त्वत्तोयज्ञपुमानपि । त्वत्तोऽश्वाश्वव्यजायन्तगावोमेषादयस्तथा
ब्राह्मणामुखतोजाताबाहुजाक्षत्रियास्तव । विशस्तवोरुजापद्भ्यांतथाशूद्राःसमागताः
मनसश्चन्द्रमा जातश्चक्षुषस्ते दिवाकरः । कर्णाभ्यां श्वसनः प्राणैर्जिह्वायाहव्यवाडपि
नाभितो गगनंद्यौश्चमूर्ध्नस्तेसमवर्तत । पादाभ्यां तेधराजातादिशश्चाऽष्टौश्रुतेर्गताः
सप्ताऽऽसन्परिधयस्त्वत्तएकविंशत्समिच्चवै । चराचराःसर्वभावास्त्वत्तएवहिजज्ञिरे
त्वमेवजगतां नाथस्त्वमेव परिपालकः । उग्ररूपश्च संहर्ता त्वमेव परमेश्वर !॥१४॥
त्वमेव यज्ञो यज्ञांशस्त्वंयज्ञेशःपरात्परः । शब्दब्रह्मपरं त्वं हि शब्दब्रह्माऽसिविश्वराट्
स्वराट् सम्राड् जगन्नाथ! विराडसि जगत्पते !।
अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्त्वं त्वया व्याप्तं जगन्मय !॥ १६ ॥
प्राप्नुवन्ति परंस्थानंत्वांयजन्तश्चयाज्ञिकाः । भोज्यंभोक्ताहविर्होताहवनंत्वंफलप्रदः
समस्तकर्मभोक्तात्वं सर्वकर्मात्मकः प्रभो !। सर्वकर्मोपकरणं सर्वकर्मफलप्रदः ॥१८
कर्मप्रेरयिता त्वं हि धर्मकामार्थसिद्धिदः । त्वामृतेमुक्तिदःकोऽन्योहृषीकेशनमोस्तुते
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ २० ॥
वयं च्युताधिकारास्त्वां प्रपन्नाःशरणंप्रभो !। त्राहिनःपुण्डरीकाक्षअगतीनांगतिर्भव
संसारपतितस्यैकोजन्तोस्त्वंशरणंप्रभो !। त्वत्स्रष्टौत्वादृशोनास्तियोदीनपरिपालकः
दीनानाथैकशरणं पिता त्वं जगतः प्रभो !। पातापोष्टा त्वमेवेश सर्वापद्विनिवारकः
त्राहि विष्णो जगन्नाथ! त्राहि नःपरमेश्वर !। त्वामृते कमलाकान्तकःशक्तःपरिरक्षणे
अन्तर्यामिन्नमस्तेऽस्तु सर्वतेजोनिधे नमः ।
इतिस्तुवन्तस्ते देवाः प्रणिपत्य पुनः पुनः । इन्द्रद्युम्नेनसहिता बहिर्भूय द्विजोत्तमाः
क्षेत्रं श्रीनरसिंहस्यगत्वातं प्रणिपत्य च । नमस्कृत्यपरांभक्तिंकृत्वाऽभ्यर्च्यनृकेसरिम्
नीलाचलाद्रेः शिखरं यत्रप्रासासादउत्तमः । ययुस्तेपद्मनिधिनासार्द्धंसम्भारकारणात्
ददृशुस्ते महाप्रांशुं व्याप्तंगगनमण्डले । उत्तिष्ठन्तंविन्ध्यगिरिंरोद्धुंभानोर्गतिंकिमु
व्यश्नुवानं दिशः सर्वा विचित्रघटनोज्ज्वलम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुकालव्यतिक्रान्तस्वस्तिभङ्गिविचित्रकम् ॥ ३० ॥
ततश्च चिन्तयामास इन्द्रद्युम्नः स वैष्णवः । घटनार्थे मया यातःसत्यलोकमितःपुरा
सुचिराद्दृष्टिपथगः पूर्णःप्रासाद उत्तमः । अनुग्रहाद्धै देवस्य नाऽत्र मानुषपौरुषम् ॥
मन्वन्तरसमाप्तिः क्व सूर्यचन्द्रेन्द्ररोधिका । तथापितिष्ठतेचायंप्रासादोह्येषदुर्लभः ॥

वल्मीकसदृशा ह्येते प्रासादा मानुषैः कृताः ।
शीर्यन्ति रोहणैर्वृक्षैः स्वल्पकालगतायुषः ॥ ३४ ॥

मदनुक्रोशबुद्धया तु रक्षितं भवनं हरेः । ततस्तान्स सहायान्वै जगाद प्रश्रयं वचः॥
जानीत जगदीशस्य प्रासादं कारितं मया । आविर्बभूव भगवान्दारुरूपवपुःस्वयम् ॥

तदान्तरिक्षगा वाणी मामुवाचाऽशरीरिणी ॥ ३६ ॥

सहस्रपाणिसंमितं नीलाद्रेः शिखरोपरि । प्रासादं कारयस्वेति स्थितये जगदीशितुः
एतत्प्रतिष्ठानविधौ स्वयमत्राऽऽगमिष्यति । पद्मयोनिःस्वयंसार्द्धंसिद्धब्रह्मर्षिदैवतैः

तदत्र क्रियते को वा सम्भारो ज्ञायते कथम् ।
इत्युक्तवन्तं ते प्रोचुर्देवा भक्ताधिकारिणः ॥ ३९ ॥

देवा ऊचुः

न जानीमो वयमपि तदस्माकं गुरुर्गुरुः । इदानीं न वशेऽस्माकं सहि स्वर्गपुरोहितः

पद्मनिधिरुवाच

स्वामिन्विधेरनुज्ञानादागतोऽस्मि त्वया सह ।
कर्त्तव्यं किं मया चाऽत्र किम्वा वस्तु प्रतीक्ष्यते ॥ ४१ ॥

जैमिनिरुवाच

इतिह्यालप्यमानानां नारदः पुरतः स्थितः । ब्रह्मणा प्रेषितः पूर्वं सर्वशास्त्रविशारदः
सर्वसम्भारवस्तूनि यथाशास्त्रंमुने कुरु । सम्पादयिष्यति तव शासनात्पद्मकोनिधिः
तं दृष्ट्वा ते मुदा युक्ता उत्तस्थुर्ब्रह्मणः सुतम् । षडर्घ्यपूजया तस्यपूजांचक्रे नृपोत्तमः

प्रणेमुस्तेऽपि तं देवा मनुष्याकारधारिणः ।
ऊचे तमिन्द्रद्युम्नोऽपि प्रतिष्ठाविधिवस्तुनि ॥ ४५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाऽहंवेद्मि मुनिश्रेष्ठ! चिरात्त्यक्तः पुरोधसा। आदेशयक्रमाद्ब्रह्मन्सम्पाद्यं यद्यदेव हि

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डेपुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
इन्द्रद्युम्नराजकृतभगवत्स्तुतिनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

पञ्चविंशोऽध्यायः

रथनिर्माणवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

इत्युक्ते नारदः सोऽथ यथाशास्त्रं विचार्यवै। आलेख्यक्रमशः पत्रे राज्ञेतस्मै न्यवेदयत्
राजाऽपि पत्रं तच्छ्रुत्वासोऽवधार्य पुनःपुनः। प्रददौपद्मनिधयेलिखितान्यत्रयानिवै
सम्पादय पद्मनिधेशालां स्वर्णमयीं कुरु। ब्रह्मणः सदनं दिव्यं ब्रह्मर्षीणाञ्चनिर्मलम्

इन्द्रादीनां सुराणां च सिद्धानां मर्त्यवासिनाम्।
मुनीन्द्राणां निवासाय राज्ञां पातालवासिनाम् ॥ ४ ॥

तथा च नागराजानां निधे! त्रैलोक्यवासिनाम्। यथायोग्यासनैर्युक्तंगृहंगृहमतन्द्रितः
कारयाऽऽशु निधे! द्रव्यसम्भारंयावदेवतु। विश्वकर्माऽपिचतवसाहाय्यंरचयिष्यति
इत्यादिशन्तं स मुनिरिन्द्रद्युम्नमुवाच वै। सम्भारान्पृथगेतद्धि कर्त्तव्यं व्यवधानतः
स्वर्णैः सुघटितं साधुरथत्रयमलङ्कृतम्। दुकूलरत्नमालाद्यैर्बहुमूल्यैर्दृढं महत् ॥ ८
श्रीवासुदेवस्य रथो गरुडध्वजचिह्नितः। पद्मध्वजः सुभद्राया रथमूर्द्धनि धार्यताम्
रथः षोडशचक्रस्तु विष्णोः कार्यः प्रयत्नतः। चतुर्दश बलस्यैव सुभद्रायास्तु द्वादश
हस्तषोडशविस्तारो रथश्चक्रधरस्य तु। चतुर्दश बलस्यैव सुभद्रायास्तु द्वादश ॥

आसनं जगतां भूयः स्वयं स्वासनविग्रहः।
तद्याने जगतां नाशस्ततो यानं न विद्यते ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पश्येच्चराचरं विश्वं ज्ञानादथ सुनिर्मले । स्थितो हस्ततले नित्यं निर्मलस्तस्यदर्पणः

तलस्थत्वादसौ तालः सदा तेनाऽङ्कितः प्रभुः ।

ततः स एव शेषस्य बलभद्रावतारिणः ॥ १४ ॥

अथवासीरिणःकार्यंसीरमेवध्वजोत्तमम् । ध्वजःसुनिर्मलःकार्यस्तस्मात्तालध्वजोमतः

न वासितव्यो देवोऽसावप्रतिष्ठे रथे नृप !। प्रासादेमण्डपे वापिपुरेतन्निष्फलंभवेत्

तस्मात्प्रतिष्ठा प्रथमं हरेः कार्यारथस्य वै । सम्भारःक्रियतांतस्यह्यनुष्ठेयामयातुसा

इत्याज्ञांमत्पितुर्लब्ध्वा शीघ्रमायास्यहं नृप !। तस्य तद्वचनंश्रुत्वाघटितंस्यन्दनत्रयम्

निधिसम्पादितैर्द्रव्यैरेकाह्नाद्विश्वकर्मणा ।

स्वक्षं सुचक्रं सुस्तम्भं सुविस्तीर्णं सुतोरणम् ॥ १६ ॥

सुध्वजं सुपताकं च नानाचित्रमनोहरम् । विचित्रबन्धमिथुनपुत्तलीवलयान्वितम्

अर्द्धहाटकनिर्व्यूढं साक्षाद्रविरथोपमम् । मेघगम्भीरनिर्घोषं दृष्ट्वा कर्षगुणैर्युतम्

वातरंहोहयैर्युक्तं शतसङ्ख्यैः सितप्रभैः ॥ २१ ॥

यथाशास्त्रविधानेन नारदेन प्रतिष्ठितम् । सुलग्ने सुमुहूर्त्ते च सुतिथौ ज्योतिषोदिते

मुनय ऊचुः

भगवञ्जैमिने! ब्रूहि सर्वज्ञोऽसि मतो हि नः ॥ २३ ॥

विधिना केन हि रथः प्रतिष्ठाप्योहरेरयम् । यथावद्वद नोयेनजानीमोविधिविस्तरम्

जैमिनिरुवाच

यथाप्रतिष्ठितं तेन नारदेन महात्मना । तद्वो वदिष्यामि विधिं यथा दृष्टं पुरा मया

रथस्येशानदिग्भागेशालांकृत्वासुशोभनाम् । तन्मध्येमण्डपंकृत्वावेदिंतत्रसुनिर्मलाम्

चतुरस्रां चतुर्हस्तमितां हस्तोच्छ्रितां द्विजाः । प्रतिष्ठापूर्वदिवसेरात्रावुत्तरतःशुभे

मुहूर्ते स्वस्तिवाच्याऽथ कारयेदङ्कुरार्पणम् । द्वात्रिंशद्देवताभ्यश्चबलिंदत्त्वायथाविधि

प्रातस्ततो वेदिकायां मध्ये मण्डलमालिखेत् ।

पद्मं वा स्वस्तिकं वाऽपि कुम्भं तत्र निधापयेत् ॥ २६ ॥

पञ्चद्रुमकषायं च तन्मध्ये पूरयेत्सुधीः । गङ्गादिपुण्यतोयानि पल्लवान्स सम्मृत्तिकाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वगन्धान्पञ्चरत्नसर्वौषधिगणं तथा । पूरयित्वा विधानेन आचार्यः प्राङ्मुखःशुचिः
विष्णुं स्मरन्पञ्चगव्यं पश्चादपि प्रपूरयेत् । दुकूलवेष्टितंकण्ठे माल्यैर्गन्धैःसुशोभनैः
फलपल्लवसंयुक्तं कृतकौतुकमङ्गलम् । पूरयेत्तत्र देवेशं नरसिंहमनामयम् ॥ ३३ ॥
मन्त्रराजेन विधिवदुपचारैस्तथान्तरैः । प्रार्थयित्वाप्रसादायतस्मिन्नावाह्य तं हरिम्
बाह्योपचारैर्विविधैःपूजयेद्विधिवद्द्विजाः । वायव्यांतस्यकुम्भस्यसमिदाज्यचरुंतथा
अष्टोत्तरसहस्रं च जुहुयाद्विधिवद्गुरुः । सम्पातान्प्रापयेत्तत्र कुम्भमध्ये तदन्ततः ॥
रथं सुशोभनं कृत्वा पताकागन्धमाल्यकैः । सर्वाङ्गंसेचयेत्तस्यगन्धचन्दनवारिभिः

धूपयेत्कालागुरुणा शङ्खकाहालनिस्वनैः ।
ध्वजे तस्य नृसिंहस्य प्रतिष्ठाप्य समीरणम् ॥ ३८ ॥

पूजयित्वा विधानेन रक्तस्रग्गन्धमाल्यकैः । इमं मन्त्रं समुच्चार्य सुपर्णम्प्रार्थयेत्ततः ॥

यो विश्वप्राणहेतुस्तनुरपि च हरेर्यानकेतुस्वरूपो,
यं सञ्चिन्त्यैव सद्यः स्वयमुरगवधूवर्गगर्भाः पतन्ति ।
चञ्चच्चण्डोरुतुण्डत्रुटितफणिवसारक्तपङ्काङ्कितास्यं,
वन्दे छन्दोमयं तं खगपतिममलं स्वर्णवर्णं सुपर्णम् ॥ ४० ॥

ब्रह्मघोषैः शङ्खनादैर्नानावाद्यसुविस्तरैः । रथमूर्ध्नि स्थापयेत्तं चारुसूक्तं समुच्चरन् ॥
तस्योपरिष्टात्तं कुम्भं समन्तात्प्लावयन्रथम् । त्रिरुच्चरन्मन्त्रराजं सेचयेद्ब्रह्मणा सह
ततः पूर्णाहुतिं दत्त्वा ब्रह्मणेदक्षिणां ददेत् । आचार्यंदक्षिणांदद्याद्येनतुष्यतितद्गुरुः
ब्राह्मणान्भोजयेदन्ते पायसैर्मधुसर्पिषा । द्वादशाक्षरमन्त्रेणबलभद्रस्य कारयेत् ॥ ४४
लाङ्गलं च पविरवन्मन्त्रःस्याल्लाङ्गलध्वजे । अथवाद्विषड्वर्णोपिमूलमन्त्रः प्रकीर्तितः
लक्ष्मीसूक्तेनभद्रायाःप्रतिष्ठाप्योरथस्तथा । नाभिह्रदान्मुरारेस्त्वंब्रह्माण्डावलिरूपधृक्

आसनं चतुरास्यस्य श्रियो वास! स्थिरो भव ।
इमं मन्त्रं समुच्चार्य ध्वजपद्मं समुच्छ्रयेत् ॥ ४७ ॥

इयान्विशेषो हविषा त्रयाणां च पृथक्पृथक् । पञ्चपञ्चभिर्होतव्यमेकैकं तु विभागशः
इत्थं रथान्प्रतिष्ठाप्यसुवर्णंगांचवस्त्रकम् । धान्यंचदक्षिणांदद्यात्सम्यग्देवस्यभक्तितः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं प्रतिष्ठिते तत्र स्यन्दनेऽथ सुभूषिते । आरोप्य देवं विधिवद्ब्रह्मघोषपुरःसरम् ॥
जयमङ्गलशब्दैश्च नानावाद्यपुरःसरैः । चामरान्दोलनैर्धूपैः पुष्पवृष्टिभिरेव च ॥ ५१ ॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैर्नीयते स्म रथं प्रति । हयैः सुलक्षणैर्दान्तैर्बलीवर्दैरथापि वा ॥
पुरुषैर्विष्णुभक्तैर्वा नेतव्या ह्यप्रमादतः । प्रीणयित्वा जनं सर्वं भक्ष्यभोज्यादिलेपनैः
रथस्योपरि देवेभ्यो बलिमन्त्रेणभोद्विजाः । बलिंगृह्णन्तुभोदेवाआदित्यावसवस्तथा
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः । असुरायातुधानाश्च रथस्थाश्चैव देवताः
दिक्पाला लोकपालाश्चयेचविघ्नविनायकाः । जगतःस्वस्तिकुर्वन्तुदिव्यामहर्षयस्तथा
अविघ्नमाचरन्त्वेतेमा सन्तु परिपन्थिनः । सौम्या भवन्तुतृप्ताश्चदैत्याभूतगणास्तथा
ततस्तु नीयते देवः समभूमौ समुच्चरन् । मन्त्रंवैष्णवगायत्रीं विष्णोःसूक्तंपवित्रकम्
वामदेव्यैः पवित्रैश्च मानस्तोक्यै रथन्तरैः । ततःपुण्याहघोषेणकृतवादित्रनिःस्वनम्
शनैः शनैरथो नेयो रथःस्नेहात्तुचक्रिणः । तत्रोत्पातान्प्रवक्ष्यामिरथेऽत्रद्विजसत्तमाः
ईषाभङ्गे द्विजभयं भग्नेऽक्षे क्षत्रियक्षयः । तुलाभङ्गे वैश्यनाशः शम्या शूद्रभयं भवेत्
धुराभङ्गे त्वनावृष्टिः पीठभङ्गे प्रजाभयम् । परचक्रागमं विद्याच्चक्रभङ्गे रथस्य तु ॥
ध्वजस्य पतने विप्रा नृपोऽन्यो जायतेध्रुवम् । प्रतिमाभङ्गतायांतुराज्ञोमरणमादिशेत्
पर्यस्ते तु रथे विप्राः सर्वजानपदक्षयः । उत्पन्नेष्वेवमाद्येषु उत्पातेष्वशुभेषु च ॥६४
बलिकर्म पुनः कुर्याच्छान्तिहोमं तथैवच । ब्राह्मणान्भोजयेद्भूयो दद्याद्दानानिचैवहि

पूर्वोत्तरे च दिग्भागे रथस्याऽग्निं प्रकल्पयेत् ।
समिद्भिर्घृतमध्वाज्यमूलाग्राभिश्च होमयेत् ॥ ६६ ॥

पालाशाभिर्द्विजश्रेष्ठा मन्त्रराजेन दीक्षितः । सोमायाऽग्नयेप्रजाभ्यःप्रजानां पतये तथा
ग्रहेभ्यश्च ब्रह्मणे च दिक्पालेभ्यस्तदन्ततः । यत्र यत्र रथे दोषास्तत्र तत्र चदीक्षितः

जुहुयात्प्रतिष्ठामन्त्रेण विशेषः सर्वतो भवेत् ।
ब्राह्मणैः सहितः कुर्याद्धोमान्ते शान्तिवाचनम् ॥ ६८ ॥
स्वस्ति भवतु विप्रेभ्यः स्वस्ति राज्ञेऽस्तु नित्यशः ।
गोभ्यः स्वस्ति प्रजाभ्यस्तु जगतः शान्तिरस्तु वै ॥ ७० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वस्त्यस्तु द्विपदे नित्यं शान्तिरस्तु चतुष्पदे ।
शं प्रजाभ्यस्तथैवाऽस्तु शं तथाऽऽत्मनि चास्तु नः ॥ ७१ ॥
शान्तिरस्तु च देवस्य भूर्भुवःस्वःशिवं तथा ।
शान्तिरस्तु शिवं चाऽस्तु सर्वतः स्वस्तिरस्तु नः ॥ ७२ ॥

त्वं देव! जगतः स्रष्टापोष्टाचैव त्वमेव हि । प्रजाः पालय देवेश! शान्तिकुरु जगत्पते
यात्राकारणभूतस्य पुरुषस्य च भूपते !। दुष्टान्ग्रहांस्तु विज्ञायग्रहशान्तिं समाचरेत्॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्ये जैमिनिऋषिसस्वाद-
इन्द्रद्युम्नस्यभगवद्रथप्रतिष्ठाविधानंनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

षड्विंशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नद्वाराभगवत्प्रतिष्ठायोजनवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

निरुत्पातं स मे देशे विधिवर्त्तनयाऽपि च । प्रासादनिकटं देवाः प्रापिताः सुमुहूर्त्तके
ततः शालासुमहती रत्नवर्णविनिर्मिता । निदेशादिन्द्रद्युम्नस्य निर्मिता विश्वकर्मणा ॥

सभार्चनायां वस्तूनि हवींषि च समित्कुशाः ।
भोज्यं नानाविधं गीतनृत्यांश्च विविधांस्तथा ॥ ३ ॥

साम्राज्ये यादृशी पूर्वं सम्पत्तिरभवत्क्षितौ । ततः श्रेष्ठतरा विप्राः प्रतिष्ठायांबभूवह

गालोनाम महीपालस्तदा क्षितितलेऽभवत् ।
सोऽप्यत्र प्रतिमां कृत्वा माधवाख्यां दृषन्मयीम् ॥ ५ ॥

स्थापयित्वाऽत्र प्रासादे पूजयामासऋद्धिमत् । कनीयांसंच प्रासादं निर्मायनृपसत्तमः
तत्रतांस्थापयामासततोनिष्कृष्यसादरम् । ततोऽस्यनृपतिर्दूतमुखाच्छ्रुत्वास्यकर्मतत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गालोऽप्यागात्ससैन्यः सन्क्रुद्धस्तं नीलपर्वतम् ।
दृष्ट्वा प्रतिष्ठासम्भारं मर्त्यैः स्वप्नेऽपि दुर्लभम् ॥ ८ ॥

विस्मयताविष्टचेताःसतस्थौगालोनराधिपः । किमेतदितिवृत्तान्तंकोवाकारयतीदृशम्
यत्नाद्दिव्यं स विज्ञाय इन्द्रद्युम्नं नराधिपम् । ब्रह्मलोकादागतं तं कर्त्तारं देववेश्मनः
प्रतिष्ठापयितुं देवैः सार्द्धं सम्भारकारकम् । सहितं पद्मनिधिना गुरुणा नारदेन च ॥
ब्रह्माणंचाऽऽगमिष्यन्तंप्रतिष्ठायैसुरोत्तमम् । श्रुत्वासर्वंचवृतान्तंतद्राजादिव्यचेष्टितम्
मेने कृतार्थमात्मानं तद्राज्ये परमाद्भुतम् । इतः श्रेयस्करं कर्म न भूतं न भविष्यति

तदस्य निकटे स्थित्वा ज्ञात्वा कर्मक्रमं विधिम् ।
उत्सवांश्चाऽपि विज्ञाय करिष्ये प्रतिवत्सरम् ॥ १४ ॥

अमुं दारुमयं साक्षाद्ब्रह्मरूपं जनार्दनम् । अभाग्योपचयादेतावन्तं कालं न जानता ॥
असेव्यमानेन कृतं जन्मैव विफलं मया । तदेनमिन्द्रद्युम्नं वै प्रणिपत्य जगद्गुरुम् ॥
महाभागवतश्रेष्ठं ब्रह्मलोकादिहागतम् । उपेत्य शरणं साक्षाद्दृष्ट्वा नारायणं विभुम् ॥
प्रतिष्ठितं वै प्रासादे मुक्तिमेष्यामिनिश्चयम् । वैकुण्ठंसप्रतिष्ठाप्यमर्च्येवारोपयिष्यति
ब्रह्मलोकं गतो योवैकिंक्षितौसोऽवतिष्ठते । उपचारान्समादिश्यकोपंसम्भृत्यचप्रभोः

ब्रह्मणा सहितोऽवश्यं पुनर्यास्यति तत्क्षयम् ।
विचार्य मन्त्रिभिः सार्द्धं ततो गालोऽपि वैष्णवः ॥ २० ॥

इन्द्रद्युम्नस्य निकटं विनीतः प्रययौ मुदा । गत्वा तं दूरतो दृष्ट्वा प्रणिपातपुरःसरम्
बद्धाञ्जलिपुटो राजा मूर्ध्निवीक्षन्ससाध्वसम् । शनैःशनैर्ययौतस्यनिकटंगालपार्थिवः

देव ! त्वं राजराजोऽसि मर्त्योऽसि ब्रह्मलोकगः ।
किं स्तौमि नृपकीटोऽहं त्वां जीवन्मुक्तमीश्वरम् ॥ २३ ॥

अज्ञात्वामहिमानं ते सचिवैर्मन्त्रयन्मुहुः । योद्धुमभ्यागतो देव! दृष्ट्वा ते पौरुषं महत्
अतिमानुषमाश्चर्यं पदं चाऽपि शचीपतेः । दृष्टं तन्निश्चितं देव! ब्रह्मलोकागतस्य हि॥
ईदृशं हि महत्कर्म यदाज्ञाकृन्महानिधिः । चेतः प्रसादप्रवणं मयि धेहि सुरोत्तम !॥

त्रैलोक्यवासिनो देवा यदाज्ञावशवर्तिनः ॥ २७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैमिनिरुवाच

इत्थं विज्ञापयन्तं तं गालं नृपतिकुञ्जरम् । स्मयमान उवाचेदं राजन्कि बहुभाषसे ॥
भवानपि हरेर्भक्तः सार्वभौमोमहीपतिः । सामान्यमेतद्राज्ञांवैभूस्वाम्यंभुवि वर्त्तताम्
साम्प्रतं हि भवानत्र पृथिव्यामेकपार्थिवः । नृपायत्ताःक्रियाःसर्वामर्त्यानांमरुतामपि
अष्टदिक्पालकांशैस्तु ब्रह्मणा निर्मितो नृपः । न ह्यल्पपुण्यकृद्राजा प्रजापालनतत्परः
इह कीर्तिं च धर्मं च यत्रगच्छन्नुवर्त्मनि । प्राप्नोति राजशार्दूलविशेषात्त्वंतुवैष्णवः
प्रासादे स्थापयेद्यस्तु हरेरर्चां विधानतः । न देहबन्धमाप्नोति यातिविष्णोःपरंपदम्
माधवप्रतिमामेतां दारवीं शुभलक्षणाम् । साक्षान्मुक्तिप्रदांभूपस्वयंस्थापितवानसि
निर्विघ्नं कर्म ते जातं मममन्वन्तरं गतम् । भवेद्वा संशयो मेऽत्र नस्वतन्त्रश्चतुर्मुखः
प्रतिष्ठायै प्रार्थितोऽयं तदन्यः स्थापयेत्कथम् ।
साक्षाद्दार्ववतारस्य प्रासादस्य नृपोत्तम !॥ ३६ ॥
सन्निधानेन चेदत्र विधाताऽनुग्रहिष्यति । तदेनं स्थापयित्वा तु चतूरूपं जनार्दनम्
समर्प्य त्वांगमिष्यामित्वमेवोपचरिष्यसि । नित्योपहारंयात्राश्च उत्सवांश्चजगत्पतेः
यानेवोपदिशेद्देवः स्वयं वा प्रपितामहः । तांस्तान्प्रयत्नात्कुर्वीतराजा वै धर्मपालकः
ततःसगालोनृपतिःश्रुत्वातच्चिन्तितंस्वयम् । इन्द्रद्युम्नादिष्टमेतदितिप्राप परांमुदम्
तस्थौ तस्याऽन्तिकेगालआज्ञाकारइवस्वयम् । तत्तदाशुकरोत्येषइन्द्रद्युम्नोयदादिशत्
एवं सम्भृतसम्भारः सिंहासनगतः प्रभुः । देवैःपरिवृतश्चेन्द्रद्युम्नः शक्र इवाऽऽबभौ
ततोऽश्रूयन्तनिनदादिव्यदुन्दुभिजाःशुभाः । मृदङ्गवेणुवीणादितालकाहालनिःस्वनाः
ऐरावतादिकरिणां बृंहितानि बहूनि खे । समन्ताज्जयशब्दाश्चपुष्पवृष्टिविमिश्रिताः
आकाशगङ्गासलिलकणा मन्दारमिश्रिताः ।
दिव्यस्रग्लेपधूपानां गन्धा दिग्व्यापिनस्तथा ।
वैमानिकानां देवानां किङ्किणीजालनिःस्वनाः ॥ ४५ ॥
ततश्चतेजसां राशी रोदसीमध्यपूरकः । आविरासीत्क्षितिगतनयनाच्छादकोद्विजाः
उत्तोलिताक्षिमालाभिःप्रजाभिर्वीक्षितःपुरः । ततःक्रमात्सन्ददृशेविमानाग्र्यंप्रजापतेः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वर्णहंसशतैः स्कन्धेनोह्यमानः समन्ततः । दिक्पालैश्चामरव्यग्रहस्तैरासेवितः पुरः
जाह्नवीयमुनानीरप्रकीर्णककरेऽभितः । पार्श्वयोश्चन्द्रसूर्याभ्यामुभाभ्यामातपत्रके ॥
धार्यमाणे शनैर्वायोर्गतिचञ्चलचोलके । ब्रह्मर्षिभिर्गौतमाद्यैः स्तूयमानो रहस्यकैः ॥

तन्मध्यस्थः प्रजानाथ! इन्द्रद्युम्नादिभिः स्तुतः ।
आलुलोके देवगणैर्जयशब्दैरभिष्टुतः ॥ ५१ ॥

रम्भादिकाभिर्वेश्याभिर्नृत्यतेस्मससाध्वसम् । हाहाहूहूप्रभृतिभिर्गीयमानश्चगायकैः
सिद्धविद्याधरगणैः सादरं चोपवीणितः । कृताञ्जलिपुटैर्दूरात्तपस्विभिरुपासितः ॥

सावित्रीशारदे तस्य वाक्प्रबन्धैर्विचित्रकैः ।
तोषमासादयन्त्यौ च कोऽन्यस्तत्तोषणे क्षमः ॥ ५४ ॥

जाह्नवीयमुनानीरप्रकीर्णितकलेवरः । ये च गन्धर्वसिद्धाद्या नारदप्रमुखा द्विजाः ॥५५
वेत्रहस्ताःसविनयादिव्यसोपानदर्शनाः । सम्मर्दःसमहानासीद्देवानां दिविगच्छताम्
नकोऽपिगण्यतेदेवःकोवाकेनपथाव्रजेत् । अहंपूर्विकया तेषां व्रजतां त्रिदिवौकसाम्
सम्मर्दातिशयात्तेषां विभ्रंशोऽभूत्स्ववाहनैः । स्रष्टा पाताचसंहर्त्ताजगतांयोजगन्मयः
साक्षाद्व्रजतितत्रैषांसुराणांमहिमाकुतः । तं दृष्ट्वासाध्वसान्नम्रोभक्त्याबद्धाञ्जलिर्नृपः
तैर्देवैर्गालराजेन नारदप्रमुखेन च । सहितो धरणीं प्रायात्साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च ॥ ६०
उत्थाय परया भक्त्या प्रहृष्टेनान्तरात्मना । पुलकाङ्कितसर्वाङ्गं स्वं मन्वानःकृतार्थकम्
पुरतो जगदीशस्य पश्यञ्छुद्धंपितामहम् । कृताञ्जलिपुटो राजा ममज्जाऽऽनन्दसागरे

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णव-
खण्डान्तर्गतोत्कलखण्डे पुरुषोत्तमक्षेत्रमहात्म्ये जैमिनिऋषिसम्वादे
भगवत्प्रतिष्ठायोजनंनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तविंशोऽध्यायः

इन्द्रद्युम्नद्वाराभगवन्मूर्त्तिचतुष्टयप्रतिष्ठापनवर्णनम्

जैमिनिरुवाच

अथाऽन्तरिक्षान्निःश्रेणी रत्नकाञ्चननिर्मिता। संलग्ना पादसम्पीठे पद्मयोनेर्विमानगा
सा क्षितिस्पृष्टमूला वै विधातुरवरोहणे। चतुर्व्यासायतापीनसोपानश्रेणिसंयुता॥
रथप्रासादयोर्मध्ये शक्रचापइवांऽशुमान्। आविर्बभूव सहसासाऽद्भुतं वीक्षितो जनैः
ततो गन्धर्वराजैस्तु रत्नवेत्रकरैर्द्विजाः। एषपन्थाः प्रभो ह्येहि इत्यादेशितमार्गकैः॥
दुर्वाससो नारदस्य करयोर्दत्तहस्तकः। सोपानैरवतीर्णाऽथ पुनानश्चक्षुषा जगत्॥

स्मयमानो रथान्दृष्ट्वा प्रासादं समलङ्कृतम्।
दिगन्तव्यापिनींशालां रत्नस्तम्भोपशोभिताम्॥ ६॥

शक्रस्याऽप्यद्भुतकरीं सर्वसम्भारसम्भृताम्। अवातरद्विमानात्स देवब्रह्मर्षिराजभिः

किरीटदत्ताञ्जलिभिः स्तूयमानः समन्ततः।
कटाक्षेणाऽनुगृह्णाति यां दिशं स पितामहः॥ ८॥

तत्राऽञ्जलीनां सम्मर्दाः कोटयः शिरसा धृताः। पादाब्जप्रणतंदृष्ट्वाइन्द्रद्युम्नंप्रजापतिः
उवाच प्रश्रयगिरास्मितभिन्नोष्ठसम्पुटः। अङ्गुल्यानिर्दिशन्देवान्पितॄन्ब्रह्मर्षितापसान्
सिद्धविद्याधरान्यक्षगन्धर्वाप्सरस्तथा। एकत्र मिलितान्सर्वान्युगपन्मोदनिर्भरान्॥
पश्येन्द्रद्युम्नभाग्यं ते सर्वलोकवशीकरम्। त्वदर्थमेकदा सर्वे मां पुरस्कृत्य सङ्गताः

इत्युक्त्वा प्रययौ शीघ्रं नारायणरथं ततः।
प्रणिपत्य जगन्नाथं त्रिः परीत्य पितामहः॥ १३॥

आनन्दसिन्धुसम्मग्नःसरोमाञ्चवपुःस्वयम्। स्वमात्मानंनुनावाऽथप्रत्यक्षंस्वरगद्गदम्

ब्रह्मोवाच

नमस्तुभ्यं नमोमह्यं तुभ्यं मह्यं नमोनमः। अहं त्वंत्वमहंसर्वं जगदेतच्चराचरम्॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महदादि जगत्सर्वंमायाविलसितंतव । अध्यस्तंत्वयिविश्वात्मंस्त्वयैवपरिणामितम
यदेतदखिलाभासं तत्त्वदज्ञानसम्भवम् । ज्ञाते त्वयिविलीयेत रज्जुसर्पादिबोधवत्
अनिर्वक्तव्यमेवेदं सत्त्वात्सत्त्वविवेकतः । अद्वितीय जगद्भास स्वप्रकाशनमोऽस्तु ते
विषयानन्दमखिलं सहजानन्दरूपिणः । अंशं तवोपजीवन्ति येन जीवन्ति जन्तवः

निष्प्रपञ्च! निराकार! निर्विकार! निराश्रय !।
स्थूलसूक्ष्माणुमहिमन्स्थौल्यसूक्ष्मविवर्जितः !॥ २०॥
गुणातीत! गुणाधार! त्रिगुणात्मन्नमोऽस्तु ते ॥ २१॥

त्वन्माययामोहितोऽहंसृष्टिमात्रपरायणः । अद्याऽपिनलभेशर्मअन्तर्यामिन्नमोऽस्तुते

त्वन्नाभिपङ्कजाज्जातो नित्यं तत्रैव संस्तुवन् ।
नाऽतिक्रमितुमीशोऽस्मि मायां ते कोऽन्य ईश्वरः ॥ २३॥

अहं यथाऽण्डमध्येऽस्मिन्नचितःसृष्टिकर्मणि । तथानुलोमकलिताब्रह्माण्डेब्रह्मकोटयः

सार्द्धत्रिकोटिसङ्ख्यानां विरिञ्चीनामपि प्रभो !।
नैकोऽपि तत्त्वतो वेत्ति यथाऽहं त्वत्पुरः स्थितः ॥ २५॥

नमोऽचिन्त्यमहिम्ने ते चिद्रूपाय नमोनमः । नमोदेवाऽधिदेवाय देवदेवाय ते नमः ॥
दिव्यादिव्यस्वरूपाय दिव्यरूपाय ते नमः । जरामृत्युविहीनायमृत्युरूपाय ते नमः
ज्वलदग्निस्वरूपाय मृत्योरपि च मृत्यवे । प्रपन्नमृत्युनाशायसहजानन्दरूपिणे ॥

भक्तिप्रियाय जगतां मात्रे पित्रे नमोनमः ॥ २८॥

प्रणतार्तिविनाशाय नित्योद्योगिन्नमोस्तुते । नमोनमस्तेदीनानां कृपासहजसिन्धवे
पराय पररूपाय परम्पाराय ते नमः । अपारपारभूताय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥ ३०॥
परमार्थस्वरूपाय नमस्ते परहेतवे । परम्परापरिव्याप्तपरतत्त्वपराय ते ॥ ३१॥
प्रणतार्तिविनाशाय नमः स्वात्मैकभानवे । पुरायत्प्रर्थितं स्वास्मिन्सृष्टिभारावतारणे
तत्कुरुष्व जगन्नाथ सहजानन्दरूपभाक् । त्वयिप्रसन्ने किं नाथ दुर्लभं मयि विद्यते॥
त्वयैवाऽहं पृथग्लीलाभेदाद्भिन्नः कृपाऽम्बुधे । अज्ञानतिमिरच्छन्ने जगत्कारागृहान्तरे

भ्राम्यन्न द्वारमाप्नोति त्वामृते मुक्तिहेतवे ॥ ३५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नमो नमस्ते जगदेकवन्द्य! सुरासुराभ्यर्चितपादपद्म !।
नमोनमस्तापहरैकचन्द्र! नमोनमः शर्मसुबोधसान्द्र !॥ ३६ ॥
नमोनमः कल्पकदूरभूत दुष्प्राप्यकामप्रदकल्पवृक्ष !।
दीनाशरण्यप्रणतैकदुःखसङ्घोद्धृतौ नित्यसुबद्धपक्ष !॥ ३७ ॥

प्रसीद जगतांनाथ! मग्नानां दुःखसागरे । कटाक्षलीलापातेनत्रायस्व करुणाकर!
स्तुत्वेत्थं श्रीजगन्नाथं वेदार्थैः स पितामहः । जगाम सीरिणंद्रष्टुमवतीर्णंधराधरम्
प्रणम्यपरया भक्त्या तुष्टाव वलिनं मुदा । नमः शिरस्तेदेवेश आपस्तेविग्रहः प्रभो
पादौक्षितिर्मुखं वह्निः श्वसितानि समीरणः । मनस्तेह्योषधीनाथश्चक्षुषीतेदिवाकरः
बाहवः ककुभोनाथ नमस्तेज्ञानदर्पण !। चतुर्दशानां लोकानांमूलस्तंभायसीरिणे ॥
पदाम्भोजप्रपन्नानां नमः पापौघदारिणे । अनन्तवक्त्रनयनश्रोत्रपादाक्षिबाहवे ॥
नमोऽनादिमहामूलतमःस्तोमौघभानवे । त्रयीमयत्रिधादोषनाशायत्र्यवतारिणे ॥
फणामणिफणाकारक्षितिमण्डलधारिणे । नमः कालाऽग्निरुद्राय महारुद्राय ते नमः
भोगतल्पफणाच्छत्रमध्यसुप्ताय ते नमः । महार्णवजलैर्वृद्ध एकीभूते जगत्त्रये ॥
त्वमेवशेषोभगवन्सहस्रफणमण्डितः । फणामणिगणव्याजसम्भृताखिलभौतिकः

त्वमेव नाथः सर्वेषां स्रष्टा पालयिता विभो !।
अत्ता धारयिता नित्यं मदाद्यास्त्वन्निमित्तकाः ॥ ४८ ॥

एषनारायणो देवो वेदान्तेपूषगीयते । त्वत्तो न भिन्नोभगवन्कारणाद्भेदभागसि ॥

शय्या त्वं शयिता ह्येष छाद्यः सञ्छादको भवान् ।
यो वै विष्णुः स वै रामो यो रामः कृष्ण एव सः ॥ ५० ॥

युवयोरन्तरं नास्ति प्रसीदत्वं जगन्मय । इतिस्तवन्ते वलिनं प्रणम्य परमेश्वरम्
ईश्वरीं जगतां द्रष्टुं सुभद्रास्यन्दनं ययौ । जय देवि! जगन्मातः! प्रसीदपरमेश्वरि!
कार्यकारणकर्त्रीत्वं सर्वशक्त्यै नमोऽस्तुते । सर्वस्यहृदिसन्निविष्टेज्ञानमोहात्मिकेसदा

कैवल्यमुक्तिदे भद्रे! त्वां! नमामि सुरारणिम् ।
देवि! त्वं विष्णुमायाऽसि मोहयन्ती चराचरम् ॥ ५४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हृत्पद्मासनसंस्थासि विष्णुभावानुसारिणी ।
त्वमेव लक्ष्मीर्गौरी च शची कात्यायनी तथा ॥ ५५ ॥
यच्च किं चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वा खिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य शक्तिस्त्वं स्तोतुं त्वां कस्तु शक्तिमान् ॥ ५६ ॥

जय भद्रे! सुभद्रे! त्वं सर्वेषां भद्रदायिनि !। भद्राभद्रस्वरूपेत्वंभद्राकालिनमोऽस्तु ते
त्वं माता जगतां देवि! पिता नारायणो हिसः । स्त्रीरूपंत्वंसर्वमेवपुंरूपोजगदीश्वरः

युवयोर्न हि भेदोऽस्ति नास्त्यन्यत्परमेव हि ।
यथा वयं नियुक्ता हि त्वया वै विष्णुमायया ॥ ५६ ॥

निर्देशकारिणो नित्यं भ्रमामः परमेश्वरि !। वृत्तिः प्रवृत्तिः परमाक्षुधानिद्रा त्वमेव च
आशात्वमाशापूर्णा च सर्वाशापरिपूरिका । मुक्तिहेतुस्त्वमेवेशिवन्धहेतुस्त्वमेवहि
सर्वज्ञानप्रदे नित्ये भक्तानां कल्पवल्लरी । त्राहिपादाब्जनम्रं मां कृपापाङ्गविलोकनैः
स्तुत्वेत्थं भद्ररूपां तां तत्समीपस्थितं रथे । चक्रंसुदर्शनंविष्णोश्चतुर्थंवपुरास्थितम्
प्रणम्यपरया भक्त्या इमांस्तुतिमुदाहरत् । सुदर्शन! महाज्वाल! कोटिसूर्यसमप्रभ !॥
अज्ञानतिमिरान्धानां वैकुण्ठाध्वप्रदर्शक । नमस्ते नित्यविलसद्वैष्णवस्वनिकेतन
अवार्यवीर्यंयद्रूपं विष्णोस्तत्प्रणमाम्यहम् । प्रणम्यस्तुत्वादेवान्सरथेभ्यःपरिवृत्य च
इन्द्रद्युम्ननारदाभ्यामादिष्टपदपद्धतिः । नीलाचलमथारोहत्प्रासादं द्रष्टुमुत्सुकः ॥६७
ततः स गत्वा प्रासादसमीपं दैवतैः सह । ददर्शशालांरुचिरांस्वचित्ताभिमतांद्विजाः
तन्मध्ये स्थापयामासदैवतोरगभूपतीन् । ब्रह्मर्षीन्योगिनोविप्रान्वैष्णवांश्चतपस्विनः
दिव्यसिंहासनवरे नृपेण प्रतिपादिते। स पादपीठे भगवानुपविष्टः स्वयं विभुः ॥
शान्तिकं पौष्टिकं कर्तुं भारद्वाजं महामुनिम् । पितामहाज्ञयाभूपोवरयामासऋद्धिमत्
प्रतिष्ठायां तु ये देवा बलिपूजाविधौ मताः । होमेषु च तथा तेवैध्यानरूपमुपाश्रिताः
आज्ञया पद्मयोनेस्तु चतुर्दिग्भागमाश्रिताः । सुपूजिता गन्धपुष्पमालाऽलङ्कारभूषणैः
ततः कर्म प्रववृते भारद्वाजेन धीमता । प्रत्यक्षं देवदेवस्य सर्वेषां च दिवौकसाम् ॥
त्रैलोक्यवासिनां पूजां चकार नृपतिर्मुदा । साङ्गोपाङ्गं समभ्यर्च्य जगत्स्रष्टारमग्रतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततः सम्पूजिताः सर्वे तेन त्रैलोक्यवासिनः ।
पश्यन्तोऽवस्थितं मध्ये साक्षाद्ब्रह्माणमव्ययम् ॥ ७६ ॥

वपुष्मन्तं जगन्नाथं प्रत्यक्षं ब्रह्मरूपिणम् । इन्द्रद्युम्नप्रसादेन जीवन्मुक्तत्वमाप्नुवन्
कलेवरं भगवतः प्रासादं सुमनोहरम् । प्रतिष्ठाय भरद्वाजः समुच्छ्रितमहाध्वजम् ॥

व्यज्ञापयत्प्रतिष्ठायै जीवस्याऽथ पितामहम् ।
समुत्तस्थौ ततो ब्रह्मा कृतस्वस्त्ययनः स्वयम् ॥ ७९ ॥

ऋषिभिर्नारदाद्यैश्च विद्वद्भिर्ब्राह्मणैस्तथा । राजभिः क्षत्रियैर्नागैः सहितःपरमर्षिभिः
गन्धर्वैर्गायमानेषु दिव्यगानेषु सुस्वरम् । माङ्गल्योचितरागेषु नृत्यन्तीष्वप्सरःसु च
शाकुनेषु च सूक्तेषु पठ्यमानेषु च द्विजैः । शङ्खकाहालमुरजभेरीवादित्रवैणवे ॥ ८२ ॥
शब्दे प्रमूर्च्छति ततः सर्वे ते स्यन्दनोपरि । गत्वाऽवतारयामासूरथात्सोपानवर्त्मनि

सावधानाः समाधिस्था भक्त्या संयमितात्मकाः ।
पार्श्वयोर्भजयोर्मूर्ध्नि पादयोर्न्यस्तपाणयः ॥ ८४ ॥

शनैः शनैः सलीलं तेनारायणनामयम् । वासंवासंतूलिकासुनिन्युःप्रासादसन्निधिम्
उपर्युपरि सन्तानवृष्टिबूत्पतितासु च । जय कृष्ण! जगन्नाथ! जय सर्वाऽवनाशन !॥
जय लीलादारुतनो! जय वाञ्छाफलप्रद !। जय संसारसम्मग्नलीलोद्धार! जयाऽव्यय
जयानुकम्पापाथोधे! जयदीनपरायण !। जयाऽच्युतजयाऽनन्तजयेशान! नमोऽस्तु ते
एभिः स्तवैः स्तूयमानोब्रह्मणाचस्वयम्भुवा । तुष्टावसमुदायुक्तोनारदश्चोपवीणयन्
रत्नच्छत्रयुगे मूर्ध्नि धार्यमाणेऽथ पृष्ठतः । शशिनाभास्वताभक्त्या दिव्यधूपेनधूपिताः
श्रेणीकृता ह्यभयतः पार्श्वयोश्चामरग्रहाः । सलीलान्दोलनव्यग्रायौवनालङ्कृतास्तथा
एवं च सहिताः सर्वे कौतूहलसमन्विताः । सुदर्शनं सुभद्रां च बलभद्रमनैषिषुः ॥

प्रासादद्वारि रचिते रत्नस्तम्भेऽथ मण्डपे ।
वासयित्वाऽभिषेकाय सम्मुखाऽऽदर्शमण्डले ॥ ९३ ॥

अधिवासितै रत्नकुम्भैस्तीर्थवार्युपसम्भृतैः । सूक्ताभ्यां श्रीपुरुषयोरभिषेकंपितामहः
चकार भगवाँल्लोकसंग्रहार्थं द्विजोत्तमाः ॥ ९४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खगेन्द्रनतानन्दनारूढो वनमालाविभूषितः । पापनाशस्य तीरे तु भूदानस्य प्रभावतः
तदा भद्रमतिः सौम्यः स्तोतुं समुपक्रमे ॥ ७४ ॥
नमोनमस्तेऽखिलकारणाय नमो नमस्तेऽखिलपालकाय ।
नमोनमस्तेऽमरनायकाय नमोनमो दैत्यविमर्दनाय ॥ ७५ ॥
नमोनमो भक्तजनप्रियाय नमोनमः पापविदारणाय ।
नमोनमो दुर्जननाशकाय नमोऽस्तु तस्मै जगदीश्वराय ॥ ७६ ॥
नमो नमः कारणवामनाय नारायणायाऽमितविक्रमाय ।
श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥ ७७ ॥
नमः पयोराशिनिवासकाय नमोऽस्तु लक्ष्मीपतयेऽव्ययाय ।
नमोऽस्तु सूर्याद्यमितप्रभाय नमोनमः पुण्यगतागताय ॥ ७८ ॥
नमोनमोऽर्केन्दुविलोचनाय नमोऽस्तु ते यज्ञफलप्रदाय ।
नमोऽस्तु यज्ञाङ्गविराजिताय नमोऽस्तु ते सज्जनवल्लभाय ॥ ७९ ॥
नमोनमः कारणकारणाय नमोऽस्तु शब्दादिविवर्जिताय ।
नमोऽस्तु तेऽभीष्टसुखप्रदाय नमोनमो भक्तमनोरमाय ॥ ८० ॥
नमोनमस्तेऽद्भुतकारणाय नमोऽस्तु ते मन्दरधारकाय ।
नमोऽस्तु ते यज्ञवराहनाम्ने नमो हिरण्याक्षविदारकाय ॥ ८१ ॥
नमोऽस्तु ते वामनरूपभाजे नमोऽस्तुते क्षत्त्रकुलान्तकाय ।
नमोऽस्तु ते रावणमर्दनाय नमोऽस्तु ते नन्दसुताग्रजाय ॥ ८२ ॥
नमस्ते कमलाकान्त नमस्ते सुखदायिने । श्रितार्तिनाशिने तुभ्यं भूयोभूयो नमोनमः
विप्रेण संस्तुतो देवो भगवान्भक्तवत्सलः ।
वात्सल्येनाऽब्रवीद्वाक्यं श्रीनिवासोदयानिधिः ॥ ८४ ॥
तात तुष्टोऽस्मि भद्रंतेस्तोत्रेणमहताद्विज । सर्वभोगसमायुक्तः पुत्रपौत्रादिभिर्युतः
इहलोके सुखं प्राप्य देहान्ते मुक्तिमाप्नुहि ।
इत्युक्त्वा भगवान्विष्णुस्तत्रैवान्तरधीयत ॥ ८६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं वः कथितं विप्राः पापनाशनवैभवम् । तत्तीरेभूप्रदानस्यमाहात्म्यंचाऽपिवर्णितम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे ·श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये पापविनाशनतीर्थे भूदानफलानु- वर्णनंनाम विंशतितमोऽध्यायः

एकविंशोऽध्यायः

रामानुजाख्यद्विजवृत्तान्तवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

भोभोस्तपोधनाःसर्वेनैमिषारण्यवासिनः । आकाशगङ्गातीर्थस्यमाहात्म्यंप्रवदाम्यहम्
आकाशगङ्गानिकटे सर्वशास्त्रार्थपारगः । रामानुज इतिख्यातोविष्णुभक्तो जितेन्द्रियः
तपश्चकार धर्मात्मावैखानसमतेस्थितः । ग्रीष्मेपञ्चाग्निमध्येस्थोविष्णुध्यानपरायणः
जपन्नष्टाक्षरं मन्त्रं ध्यायन्हृदि जनार्दनम् । वर्षास्वाकाशगो नित्यं हेमन्तेषु जलेशयः
सर्वभूतहितोदान्तःसर्वद्वन्द्वविवर्जितः । वर्षाणिकतिचित्सोऽयंजीर्णपर्णाशनोभवत्
कञ्चित्कालं जलाहारो वायुभक्षः कियत्समाः ।
अथ तत्तपसा तुष्टोभगवान्भक्तवत्सलः । प्रत्यक्षतामगात्तस्य शङ्खचक्रगदाधरः ॥७
विकचाम्बुजपत्राक्षः सूर्यकोटिसमप्रभः । विनतानन्दनाऽऽरूढश्छत्रचामरशोभितः ॥८
हारकेयूरमुकुटः कटकादिविभूषितः । विष्वक्सेनसुनन्दादिकिङ्करैः परिवारितः ॥९॥
वीणावेणुमृदङ्गादिवादकैर्नारदादिभिः । गीयमानः सुविभवःपीताम्बरविराजितः॥१०
लक्ष्मीविराजितोरस्को नीलमेघनिभच्छविः ।
सनकादिमहायोगिसेवितः पार्श्वयोर्द्वयोः ॥ ११ ॥
मन्दस्मितेन सकलं मोहयन्भुवनत्रयम् । स्वभासा मानयन्सर्वादिशोदश विराजयन्
सुभक्तसुलभो देवो वेङ्कटेशो दयानिधिः । पुनः सन्निदधे तस्य रामानुजमहामुनेः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आविर्भूतं तदा दृष्ट्वा श्रीनिवासं कृपानिधिम् । पीताम्बरधरं देवं तुष्टिं प्राप महामुनिः
भक्त्या परमया युक्तस्तुष्टाव जगदीश्वरम् ॥ १५ ॥

रामानुज उवाच

नमो देवाधिदेवाय शङ्खचक्रगदाभृते । नमो नित्याय शुद्धाय वेङ्कटेशाय ते नमः ॥१६
नमो भक्तार्तिहन्त्रेते हव्यकव्यस्वरूपिणे । नमस्त्रिमूर्तयेतुभ्यं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे

नमः परेशाय नमोऽतिभूम्ने नमोऽस्तु लक्ष्मीपतये विधात्रे ।
नमोऽस्तु सूर्येन्दुविलोचनाय नमो विरिञ्च्याद्यभिन्दिताय ॥ १८ ॥
यो नाम जात्यादिविकल्पहीनः समस्तदोषैरपि वर्जितो यः ।
समस्तसंसारभयापहारिणे तस्मै नमो दैत्यविनाशकाय ॥ १६ ॥
वेदान्तवेद्याय रमेश्वराय वृषाद्रिवासाय विधातृपित्रे ।
नमोनमः सर्वजनार्तिहारिणे नारायणायाऽमितविक्रमाय ॥ २० ॥

नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय शार्ङ्गिणे । भूयोभूयो नमस्तुभ्यं वेङ्कटाद्रिनिवासिने
इतिस्तुत्वावेङ्कटेशंश्रीनिवासंजगद्गुरुम् । रामानुजोमुनिस्तूष्णीमास्तेविप्रवरोत्तमः
श्रुत्वा स्तुतिं श्रुतिसुखां स्तुतस्तस्य महात्मनः । अवापपरमंतोषं वेङ्कटाचलनायकः
अथालिङ्ग्य मुनिं शौरिश्चतुर्भिर्बाहुभिस्तदा । बभाषे प्रीतिसंयुक्तोवरंवैव्रियतामिति
तुष्टोऽस्मि तपसा तेऽद्यस्तोत्रेणाऽपिमहामुने । नमस्कारेणचप्रीतोवरदोऽहंतवागतः

रामानुज उवाच

नारायण रमानाथ श्रीनिवास जगन्मय । जनार्दन जगद्धाम गोविन्द नरकान्तक ॥२६

त्वद्दर्शनात्कृतार्थोऽस्मिवेङ्कटाद्रिशिरोमणे !।
त्वां नमस्यन्ति धर्मिष्ठा यतस्त्वं धर्मपालकः ॥ २७ ॥

यं न वेत्ति भवोब्रह्मायंनवेत्तित्रयीतथा । त्वांवेद्मिपरमात्मानं किमस्मादधिकं परम्
योगिनोयं नपश्यन्तियंनपश्यन्तिकर्मठाः । पश्यामिपरमात्मानंकिमस्मादधिकम्परम्
एतेन च कृतार्थोऽस्मि वेङ्कटेश जगत्पते !। यन्नामस्मृतिमात्रेण महापातकिनोऽपिच
मुक्तिं प्रयान्ति मनुजास्तं पश्यामि जनार्दनम् । त्वत्पादपद्मयुगले निश्चलाभक्तिरस्तुमे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभगवानुवाच

मयि भक्तिर्दृढा तेऽस्तु रामानुजमहामते!। शृणु चाऽप्यपरंवाक्यमुच्यतेते मया द्विज
मेषसङ्क्रमणेभानोश्चित्रानक्षत्रसंयुते । पौर्णमास्यां च गङ्गायां स्नानंकुर्वन्ति येजनाः
मेषसंक्रमणेभानोश्चित्रानक्षत्रसंयुते । पौर्णमास्यां च गङ्गायां स्नानं कुर्वन्ति ये जनाः
ते यान्ति परमं धाम पुनरावृत्तिवर्जितम् । वियद्गङ्गासमीपे त्वं वस रामानुज! द्विज!
एतत्प्रारब्धदेहान्ते यत्स्वरूपमवाप्स्यसि । वहुना किमिहोक्तेन वियद्गङ्गाजले शुभे ॥
स्नान्तिये वै जनाः सर्वेते वै भागवतोत्तमाः । भवन्तिमुनिशार्दूल!न त्रकार्याविचारणा

रामानुज उवाच

किंलक्षणा भागवता ज्ञायन्ते केन कर्मणा । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कौतूहलपरो यतः

श्रीवेङ्कटेश उवाच

लक्ष्म भागवतानां तु शृणुष्व मुनिसत्तम !॥ ३८ ॥
वक्तुं तेषां प्रभावं तु शक्यते नाऽब्दकोटिभिः ॥ ३९ ॥

येहिताःसर्वजन्तूनांगतासूयाविमत्सराः । ज्ञानिनोनिःस्पृहाःशान्तास्तेवैभागवतोत्तमाः
कर्मणा मनसा वाचा परपीडां न कुर्वते । अपरिग्रहशीलाश्च ते वै भागवतोत्तमाः ॥
सत्कथाश्रवणे येषां वर्तते सात्त्विकी मतिः । मत्पादाम्बुजभक्तायेतेवैभागवतोत्तमाः

मातापित्रोश्च शुश्रूषां कुर्वते ये नरोत्तमाः ।
ये तु देवार्चनरता ये तु तत्साधका नराः ॥
पूजां दृष्ट्वा तु मोदन्ते ते वै भागवतोत्तमाः ॥ ४३ ॥

वर्णिनां च यतीनां च परिचर्यापराश्च ये । परनिन्दामकुर्वाणास्ते वै भागवतोत्तमाः
सर्वेषां हितवाक्यानि ये वदन्ति नरोत्तमाः । येगुणग्राहिणो लोकेतेवैभागवतोत्तमाः
आत्मवत्सर्वभूतानि ये पश्यन्ति नरोत्तमाः । तुल्याःशत्रुषु मित्रेषु तेवैभागवताःस्मृताः
धर्मशास्त्रप्रवक्तारः सत्यवाक्यरताश्च ये । तेषां शुश्रूषवो ये च ते वै भागवतोत्तमाः ॥
व्याकुर्वन्ति पुराणानि तानि शृण्वन्ति ये तथा । तद्वक्तरि चभक्तायेतेवैभागवतोत्तमाः
ये गोब्राह्मणशुश्रूषां कुर्वन्ति सततं नराः । तीर्थयात्रापरा ये च ते वै भागवतोत्तमाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्येषामुदयं दृष्ट्वा येऽभिनन्दन्ति मानवाः । हरिनामपर ये च ते वै भागवतोत्तमाः॥
आरामारोपणरतास्तटाकपरिरक्षकाः । कासारकूपकर्तारस्ते वै भागवतोत्तमाः ॥५१॥
ये वै तटाककर्तारो देवसद्मानि कुर्वते । गायत्रीनिरता ये च ते वै भागवतोत्तमाः ॥
येऽभिनन्दन्ति नामानि हरेःश्रुत्वाऽतिहर्षिताः । रोमाञ्चितशरीराश्चतेवैभागवतोत्तमाः
तुलसीकाननं दृष्ट्वा ये नमस्कुर्वते नराः । तत्काष्ठाङ्कितकर्णा ये ते वै भागवतोत्तमाः॥
तुलसीगन्धमाघ्राय सन्तोषं कुर्वते तु ये । तन्मूलमृद्धरा ये च ते वै भागवतोत्तमाः ॥
स्वाश्रमाचारनिरतास्तथैवाऽतिथिपूजकाः । ये च वेदार्थवक्तारस्ते वै भागवतोत्तमाः
विदितानि च शास्त्राणि परार्थंप्रवदन्तिये । सर्वत्र गुणभाजो ये ते वै भागवतोत्तमाः
पानीयदाननिरता ह्यन्नदानरताश्च ये । एकादशीव्रतपरास्ते वै भागवतोत्तमाः ॥ ५८॥
गोदाननिरता ये च कन्यादानरताश्च ये । मदर्थं कर्मकर्तारस्ते वै भागवतोत्तमाः ॥
मन्मानसाश्च मद्भक्ता ये मद्भजनलोलुपाः । मन्नामस्मरणासक्तास्ते वै भागवतोत्तमाः
बहुनाऽत्र किमुक्तेन संक्षेपात्ते ब्रवीम्यहम् । सद्गुणायप्रवर्तन्ते ते वै भागवतोत्तमाः॥

एते भागवता विप्राः केचिदत्र प्रकीर्तिताः ।
ममाऽपि गदितुं शक्या नाऽब्दकोटिशतैरपि ॥ ६२ ॥

रामानुज! महाभाग! मद्भक्तानां च लक्षणम् । मयिभक्तेत्वयिप्रीत्यायुक्तंकिलमहामते

श्रीसूत उवाच

एवं वः कथितं विप्राः शौनकाद्यामहौजसः । वृषाद्रौचवियद्गङ्गातीर्थमाहात्म्यमुत्तमम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशातिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये आकाशगङ्गामाहात्म्यरामानुजविप्रव्रतचर्यादिवर्णनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वाविंशोऽध्यायः

दानार्हसत्पात्रनिर्णयवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

भगवन्सूत सर्वज्ञ वेदवेदान्तकोविद !। दानानि कस्मै देयानि दानकालश्च कीदृशः ॥१

कश्च तत्प्रतिगृह्णीयात्सर्वं नो वक्तुमर्हसि ॥ २ ॥

श्रीसूत उवाच

महापुण्यप्रदे क्षेत्रे वेङ्कटाख्ये द्विजोत्तमाः। सर्वेषामेव वर्णानां ब्राह्मणः परमो गुरुः ॥

तस्मै दानानि देयानिस तारयति पण्डितः। ब्राह्मणःप्रतिगृह्णीयाद्वर्जयित्वात्ववर्णकम्

षण्ढस्य पुत्रहीनस्य दम्भाचाररतस्य च। वेदविद्वेषिणश्चैव द्विजविद्वेषिणस्तथा ॥५

स्वकर्मत्यागिनश्चाऽपि दत्तं भवति निष्फलम्। परदाररतस्याऽपि परद्रव्यरतस्य च

गायकस्याऽपि विप्रस्य दत्तं भवति निष्फलम्। असूयाविष्टमनसःकृतघ्नस्यचमायिनः

ज्ञानशून्यस्यविप्रस्यदत्तंभवतिनिष्फलम्। नित्यंयाच्ञापरस्याधिहिंसकस्यावलस्यच

नामविक्रयिणश्चैव वेदविक्रयिणस्तथा। स्मृतिविक्रयिणश्चैव धर्मविक्रयिणस्तथा ॥

परोपतापशीलस्य दत्तं भवति निष्फलम्। ये केचित्पापनिरता निन्दिताःसुकृतैस्तथा

न तेभ्यः प्रतिगृह्णीयान्न देयं वाऽपिकिञ्चन। सत्कर्मनिरतायैवश्रोत्रियायाऽऽहिताग्नये

वृत्तिहीनाय वै देयं दरिद्रायकुटुम्बिने। देवपूजासु सक्ताय पुराणकथकाय च ॥ १२ ॥

देयं प्रयत्नतो विप्रा दरिद्रस्य विशेषतः। वहुना किमिहोक्तेन शृणुध्वं द्विजसत्तमाः

सर्वेषां ब्राह्मणानां च प्रदातुं शक्यते सदा। वन्ध्याभर्त्रे प्रदत्तश्चेद्रासभो जायते नरः

नास्तिकं भिन्नमर्यादं पुत्रहीनं जडं खलम्। स्तेयिनं कितवं चैवकदाचिन्नाभिवादयेत्

पाषण्डं पतितं व्रात्यं वेदविक्रयिणं तथा। कृतघ्नं पापनिरतं कदाचिन्नाऽभिवादयेत्

तथा स्नानं प्रकुर्वन्तं समित्पुष्पकरं तथा।

उदपात्रधरश्चैव भुञ्जन्तं नाऽभिवादयेत् ॥ १७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विवादशालिनं चण्डं वमन्तं जनमध्यगम् । भिक्षान्नधारिणं चैवशयानं नाऽभिवादयेत्

वन्ध्याश्च पुष्पिणीं जारां सूतिकां गर्भपातिनीम् ।

व्रतघ्नींश्च तथा चण्डीं कदाचिन्नाऽभिवादयेत् ॥ १६ ॥

सभायां यज्ञशालायां देवतायतनेष्वपि । प्रत्येकं तु नमस्कारो हन्ति पुण्यंपुरातनम्

श्राद्धव्रते नियुक्तश्च देवताऽभ्यर्चकं तथा । यज्ञश्च तर्पणश्चैव कुर्वन्तं नाऽभिवादयेत्

कुर्वते वन्दनं यस्तु न कुर्यात्प्रतिवन्दनम् । नाभिवाद्यः स विज्ञेयोयथाशूद्रस्तथैवच

तस्मात्सर्वेषु कालेषु बुद्धिमान्ब्राह्मणोत्तमः ।

वन्ध्यापतिं द्विजं क्रूरं कदाचिन्नाऽभिवादयेत् ॥ २३ ॥

सूत उवाच

अत्रेतिहासं वक्ष्यामि पुण्यशीलस्य धीमतः । सनत्कुमारमुनये नारदेन प्रभाषितम्

तद्वक्ष्यामि मुनिश्रेष्ठाः! शृणुध्वं सुसमाहिताः ।

पुरा गोदावरीतीरे सर्वधर्मपरायणः ॥ २५ ॥

पुण्यशीलो द्विजवरः सत्यवादी जितेन्द्रियः । दयावान्सर्वभूतेषुदेवाग्निद्विजपूजकः

कर्मणा जन्मशुद्धश्च मातापितृहिते रतः । गुरुभक्तिसदाक्षिण्यो ब्रह्मण्यःसाधुसम्मतः

एतादृशगुणैर्युक्तः पुण्यशीलस्य धीमतः ॥ २८ ॥

गृहं सम्प्राप्तवान्विप्रो वेदवेदाङ्गपारगः । प्रार्थितः पुण्यशालेन पितृश्राद्धेऽतिवेगतः ॥

तं विप्रं श्रोत्रियं शान्तं पितृश्राद्धे नियोज्य वै ।

श्राद्धं चकार धर्मात्मा प्रत्याब्दिकमनुत्तमम् ॥ ३० ॥

ततः कालान्तरे तस्य पुण्यशीलस्य चाऽऽनने । वैरूपं प्राप्तमत्युग्रं रासभाननवत्तदा॥

ततः खिन्नमना भूत्वा पुण्यशीलोऽतिधार्मिकः ।

निःश्वस्य बहुधा खिन्नःप्रपेदेऽगस्त्ययोगिनः ॥ ३२ ॥

सुवर्णमुखरीतीरे ऋषिसङ्घनिषेविते । आश्रमं परमं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥

तत्राऽऽश्रमेमुनिवरैः सेव्यमानमहर्निशम् । दृष्ट्वाऽगस्त्यंमहात्मानंसर्वलोकहितैषिणम्

प्रणाममकरोत्तस्मै गार्दभास्योऽतिदुःखितः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुण्यशील उवाच

तपोनिधे! नमस्तुभ्यमगस्त्य! मुनिसेवित !। कुत्सितास्यंमहापापंरक्षरक्षदयानिधे !

केन दोषेण मे चाऽत्र मुखस्याऽऽसीत्कुरूपता ॥ ३७ ॥

मयि प्रीत्या महाभाग! वदस्व मुनिसत्तम !॥ ३८ ॥

अगस्त्य उवाच

विप्रवर्य! महाभाग! पुण्यशील! महामते! । आननस्य विरूपं वै शृणु नान्यमना द्विज

किञ्चिद्विप्रं गुणनिधिंवेदवेदाङ्गपारगम् । श्रोत्रियं पुत्ररहितं श्राद्धे त्वं विनियुक्तवान्

तेन दोषेण महता मुखे तव विरूपता ।

ये लोके हव्यकव्यादौ वन्ध्यायाः स्वामिनं द्विजम् ॥ ४१ ॥

नियोजयन्ति ते यान्ति मुखेगर्दभरूपताम् । शुभकर्मणि वा विप्रपैतृकेवाऽपिकर्मणि

वन्ध्यापतिं महापापं कदाचिन्न निमन्त्रयेत् । वन्ध्यापतिं महाक्रूरंवृषलीपतिमेव वा

श्रेयस्कामी हि विप्रेन्द्र! श्राद्धे तु न निमन्त्रयेत् ।

वेदशास्त्रादियुक्तोऽपि कुलीनः कर्मठोऽपि वा ॥ ४४ ॥

वन्ध्याभर्ता द्विजश्रेष्ठ श्राद्धेत्याज्यः कथञ्चन । ज्योतिष्टोमादियज्ञेषुव्रतेषुचतपःसु च

समर्थोऽपि द्विजश्रेष्ठः श्राद्धे वन्ध्यापतिं त्यजेत् ।

अलभ्ये तु द्विजे पात्रे तन्तुमात्रोपजीविनम् ॥ ४६ ॥

पुत्रवन्तं सदाचारं श्राद्धार्थं तु निमन्त्रयेत् । तदभावे द्विजश्रेष्ठपुत्रं वाऽनुजमेव वा ॥

आत्मानं वा नियुञ्जीत श्राद्धे वन्ध्यापतिं त्यजेत् ।

पुण्यशील! महाभाग ! चोद्धृत्य भुजमुच्यते ॥ ४८ ॥

सर्वथा पुत्रहीनंतुश्राद्धार्थंननियोजयेत् । वन्ध्यापतिंद्विजंयस्तुश्राद्धकर्तानियोक्ष्यति

तच्छ्राद्धमासुरं ज्ञेयं कर्ता च नरकं व्रजेत् ॥ ५० ॥

बहुनाऽत्र किमुक्तेन तद्दोषविनिवृत्तये । उपायं ते प्रवक्ष्यामि स्वर्णमुख्यास्तटे शुभे॥

वर्तते देवसङ्घैश्च सेवितो वेङ्कटाचलः । मेरुपुत्रो महापुण्यः सर्वकामफलप्रदः ॥५२ ॥

तस्मिन्वेङ्कटशैलेन्द्रे सुरासुरनमस्कृते । वियद्गङ्गेति नाम्ना वै तीर्थमस्ति महत्तरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वपापप्रशमनमायुरारोग्यवर्धनम् । त्वं गत्वा वेङ्कटं शैलं स्वामिपुष्करिणीजले ॥
स्नात्वा सङ्कल्पपूर्वं तु गङ्गातीर्थमनन्तरम् । गत्वा तीर्थविधानेन स्नानं कुरु महामते !
स्नानमात्रात्ततःसद्योमुखस्याऽस्यमहामते । वैरूप्यंतत्क्षणादेवनङ्क्ष्यत्येव न संशयः
एवमुक्तः पुण्यशीलो ह्यगस्तेन महात्मना । तं प्रणम्य महात्मानं वेङ्कटाद्रिंततो ययौ
तत्र गत्वा महाभागः स्वामिपुष्करिणीजले ।
स्नात्वा नियमपूर्वं तु वियद्गङ्गासमीपगः ॥ ५८ ॥
तत्रस्नानेनधर्मात्माकामवक्त्रोपमंमुखम् । प्राप्तवान्पुण्यशीलस्तुअहोतीर्थस्य वैभवम्

सूत उवाच

एवम्वः कथितं विप्रा नारदेन प्रभाषितम् । सनत्कुमारमुनयेशौनकाद्या महौजसः ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्यआकाशगङ्गामाहात्म्यवर्णनं नाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥

त्रयोविंशोऽध्यायः

चक्रतीर्थमाहात्म्यवर्णनेपद्मनाभाख्यद्विजवृत्तान्तवर्णनम्

सूत उवाच

अथाहंसम्प्रवक्ष्यामिद्विजेन्द्राःसत्यवादिनः । चक्रतीर्थस्यमाहात्म्यंसर्वपापप्रणाशनम्
ये श्रृण्वन्तिरमहापुण्यंचक्रतीर्थस्यवैभवम् । तेयान्तिविष्णुभवनंपुनरावृत्तिवर्जितम्
अन्नदाने च विमुखा जलदाने तथैव च । गोदानविमुखाये च शुद्धास्तेऽत्रनिमज्जनात्
तस्मात्पुण्यतमं तीर्थं चक्रतीर्थमनुत्तमम् ॥ ४ ॥

सूत उवाच

पुराश्रीवत्सगोत्रीयः पद्मनाभो जितेन्द्रियः । चक्रपुष्करिणीतीरे सोऽतप्यतमहत्तपः
दयायुक्तोनिराहारःसत्यवादीजितेन्द्रियः । आत्मवत्सर्वभूतानिपश्यन्विषयनिःस्पृहः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वभूतहितो दान्तः सर्वद्वन्द्वविवर्जितः ।
वर्षाणि कतिचित्सोऽयं जीर्णपर्णाशनोऽभवत् ॥ ७ ॥
कश्चित्कालं जलाहारो वायुभक्षः कियत्समाः । एवं द्वादशवर्षाणिपद्मनाभोमहामुनिः
अतप्यत तपो घोरं देवैरपि सुदुष्करम् ।
अथ तत्तपसा तुष्टो भगवान्कमलापतिः ॥ ६ ॥
प्रत्यक्षतामगात्तस्य शङ्खचक्रगदाधरः । विकचाम्बुजपत्राक्षः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥१०
उन्मील्य चक्षुषी तत्र दृष्टवान्वेङ्कटेश्वरम् । शङ्खचक्रवरं शान्तंश्रीनिवासंकृपानिधिम्
दृष्ट्वा देवं महात्मानं स्तोतुं समुपचक्रमे ॥ ११ ॥
नमो देवाधिदेवाय वेङ्कटेशाय शार्ङ्गिणे । नारायणाद्रिवासाय श्रीनिवासाय ते नमः ॥
नमः कल्मषनाशाय वासुदेवाय विष्णवे । शेषाचलनिवासाय श्रीनिवासाय ते नमः
नमस्त्रैलोक्यनाथाय विश्वरूपाय साक्षिणे । शिवब्रह्मादिवन्द्याय श्रीनिवासाय ते नमः
नमः कमलनेत्राय क्षीराब्धिशयनाय ते । दुष्टराक्षससंहर्त्रे श्रीनिवासाय ते नमः ॥१५
भक्तप्रियाय देवाय देवानां पतये नमः ॥ १६ ॥
प्रणतार्तिविनाशाय श्रीनिवासाय ते नमः ॥ १७ ॥
योगिनां पतये नित्यं वेदवेद्याय विष्णवे । भक्तानां पापसंहर्त्रे श्रीनिवासाय ते नमः
एवं स्तुतो महाभागःश्रीनिवासोजगन्मयः । पद्मनाभाख्यऋषिणाचक्रतीर्थनिवासिना
सन्तोषं परमं प्राप्य वेङ्कटेशो दयानिधिः ॥ २० ॥
पद्मनाभं द्विजवरं शान्तं धर्मपरायणम् । सुधाधारोपमं वाक्यमब्रवीत्पुरुषोत्तमः ॥२१

श्रीनिवास उवाच

द्विजवर्य ! महाभाग मत्पादकमलार्चक !। चक्रतीर्थस्य तीरे त्वमाकल्पं पूजयन्वस ॥
इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुस्तत्रैवाऽन्तरधीयत । अन्तर्धानं गते देवे श्रीनिवासेजगद्गुरौ
चक्रतीर्थस्य तीरे तु वासं चक्रे महामतिः । ततः कालान्तरे कश्चिद्राक्षसोभीमदर्शनः
मुनिं तं पद्मनाभाख्यं नारायणपरायणम् । आययौ भक्षितुं क्रूरः क्षुधया परिपीडितः
ब्राह्मणं तरसा सोऽयं राक्षसो जगृहे तदा । गृहीतस्तरसा तेन विप्रो वेदाङ्गपारगः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रचुक्रोश दयाम्भोधिमापन्नानां परायणम् । नारायणं चक्रपाणिं रक्ष रक्षेति वै मुहुः
वेङ्कटेश! दयासिन्धो! शरणागतपालक !। त्राहि मां पुरुषव्याघ्र! रक्षोवशमुपागतम् ॥

लक्ष्मीकान्त! हरे! विष्णो! वैकुण्ठ! गरुडध्वज !।
मां रक्ष राक्षसाक्रान्तं ग्राहाक्रान्तं गजं यथा ॥ २६ ॥

दामोदर! जगन्नाथ! हिरण्यासुरमर्दन !। प्रह्लादमिव मां रक्ष राक्षसेनाऽतिपोडितम्

इत्येवं स्तुवतस्तस्य पद्मनाभस्य हे द्विजाः ।
स्वभक्तस्य भयं ज्ञात्वा चक्रपाणिर्दयानिधिः ॥ ३१ ॥

स्वचक्रं प्रेषयामास भक्तरक्षणकारणात् । प्रेरितं विष्णुचक्रं तद्विष्णुना प्रभविष्णुना
आजगामाऽथ वेगेन चक्रपुष्करिणीतटम् । अनन्तादित्यसङ्काशमनन्ताग्निसमप्रभम्
महाज्वालं महानादं महासुरविमर्दनम् । दृष्ट्वा सुदर्शनं विष्णो राक्षसोऽथ प्रदुद्रुवे ॥
द्रवमाणस्यतस्याऽऽशुराक्षसस्यसुदर्शनम् । शिरश्चकर्त्तसहसाज्वालामालादुरासदम्
ततो विप्रवरो दृष्ट्वा राक्षसम्पतितं भुवि । मुदा परमया युक्तस्तुष्टाव च सुदर्शनम् ॥

पद्मनाभ उवाच

विष्णुचक्र! नमस्तेऽस्तुविश्वरक्षणदाक्षित !। नारायणकराम्भोजभूषणायनमोऽस्तुते
युद्धेष्वसुरसंहारकुशलाय महारव । सुदर्शन नमस्तुभ्यं भक्तानामार्तिनाशन !॥ ३८॥

रक्ष मां भयसम्विग्नं सर्वस्मादपि कल्मषात् ।
स्वामिन्सुदर्शन! विभो! चक्रतीर्थे सदा भवान् ॥ ३६ ॥

सन्निधेहि हितायत्वंजगतोमुक्तिकाङ्क्षिणः । ब्राह्मणेनैवमुक्तंतद्विष्णुचक्रंमुनीश्वराः

तं प्राह पद्मनाभाख्यं प्रीणयन्निव सौहृदात् ॥ ४१ ॥

सुदर्शन उवाच

पद्मनाभ महापुण्यं चक्रतीर्थमनुत्तमम् । अस्मिन्वसामि सततं लोकानांहितकाम्यया

त्वत्पीडां परिचिन्त्याऽहं राक्षसेन दुरात्मना ॥ ४३ ॥

प्रेरितोविष्णुना विप्र त्वरयासमुपागतः । त्वत्पीडकोऽपिनिहतोमयाऽयंराक्षसाधमः
मोचितस्त्वं भयादस्मात्त्वं हि भक्तो हरेः सदा । चक्रतीर्थे महापुण्ये सर्वपापहरेद्विज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वभूतहितो दान्तः सर्वद्वन्द्वविवर्जितः ।
वर्षाणि कतिचित्सोऽयं जीर्णपर्णाशनोऽभवत् ॥ ७ ॥
कश्चित्कालं जलाहारो वायुभक्षः कियत्समाः । एवं द्वादशवर्षाणिपद्मनाभोमहामुनिः
अतप्यत तपो घोरं देवैरपि सुदुष्करम् ।
अथ तत्तपसा तुष्टो भगवान्कमलापतिः ॥ ६ ॥
प्रत्यक्षतामगात्तस्य शङ्खचक्रगदाधरः । विकचाम्बुजपत्राक्षः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥१०
उन्मील्य चक्षुषी तत्र दृष्टवान्वेङ्कटेश्वरम् । शङ्खचक्रधरं शान्तंश्रीनिवासंकृपानिधिम्
दृष्ट्वा देवं महात्मानं स्तोतुं समुपचक्रमे ॥ ११ ॥
नमो देवाधिदेवाय वेङ्कटेशाय शार्ङ्गिणे । नारायणाद्रिवासाय श्रीनिवासाय ते नमः ॥
नमः कल्मषनाशाय वासुदेवाय विष्णवे । शेषाचलनिवासाय श्रीनिवासाय ते नमः
नमस्त्रैलोक्यनाथाय विश्वरूपाय साक्षिणे । शिवब्रह्मादिवन्द्याय श्रीनिवासाय ते नमः
नमः कमलनेत्राय क्षीराब्धिशयनाय ते । दुष्टराक्षससंहर्त्रे श्रीनिवासाय ते नमः ॥१५
भक्तप्रियाय देवाय देवानां पतये नमः ॥ १६ ॥
प्रणतार्तिविनाशाय श्रीनिवासाय ते नमः ॥ १७ ॥
योगिनां पतये नित्यं वेदवेद्याय विष्णवे । भक्तानां पापसंहर्त्रे श्रीनिवासाय ते नमः
एवं स्तुतो महाभागःश्रीनिवासोजगन्मयः । पद्मनाभाख्यऋषिणाचक्रतीर्थनिवासिना
सन्तोषं परमं प्राप्य वेङ्कटेशो दयानिधिः ॥ २० ॥
पद्मनाभं द्विजवरं शान्तं धर्मपरायणम् । सुधाधारोपमं वाक्यमब्रवीत्पुरुषोत्तमः ॥२१

श्रीनिवास उवाच

द्विजवर्य ! महाभाग मत्पादकमलार्चक !। चक्रतीर्थस्य तीरे त्वमाकल्पं पूजयन्वस ॥
इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुस्तत्रैवाऽन्तरधीयत । अन्तर्धानं गते देवे श्रीनिवासेजगद्गुरौ
चक्रतीर्थस्य तीरे तु वासं चक्रे महामतिः । ततः कालान्तरे कश्चिद्राक्षसोभीमदर्शनः
मुनिं तं पद्मनाभाख्यं नारायणपरायणम् । आययौ भक्षितुं क्रूरः क्षुधया परिपीडितः
ब्राह्मणं तरसा सोऽयं राक्षसो जगृहे तदा । गृहीतस्तरसा तेन विप्रो वेदाङ्गपारगः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रचुक्रोश दयाम्भोधिमापन्नानां परायणम् । नारायणं चक्रपाणिं रक्ष रक्षेति वै मुहुः
वेङ्कटेश! दयासिन्धो! शरणागतपालक !। त्राहि मां पुरुषव्याघ्र! रक्षोवशमुपागतम् ॥

लक्ष्मीकान्त! हरे! विष्णो! वैकुण्ठ! गरुडध्वज !।
मां रक्ष राक्षसाक्रान्तं ग्राहाक्रान्तं गजं यथा ॥ २६ ॥

दामोदर! जगन्नाथ! हिरण्यासुरमर्दन !। प्रह्लादमिव मां रक्ष राक्षसेनाऽतिपीडितम्

इत्येवं स्तुवतस्तस्य पद्मनाभस्य हे द्विजाः ।
स्वभक्तस्य भयं ज्ञात्वा चक्रपाणिर्दयानिधिः ॥ ३१ ॥

स्वचक्रं प्रेषयामास भक्तरक्षणकारणात् । प्रेरितं विष्णुचक्रं तद्विष्णुना प्रभविष्णुना
आजगामाऽथ वेगेन चक्रपुष्करिणीतटम् । अनन्तादित्यसङ्काशमनन्ताग्निसमप्रभम्
महाज्वालं महानादं महासुरविमर्दनम् । दृष्ट्वा सुदर्शनं विष्णो राक्षसोऽथ प्रदुद्रुवे ॥
द्रवमाणस्यतस्याऽऽशुराक्षसस्यसुदर्शनम् । शिरश्चकर्त्तसहसाज्वालामालादुरासदम्
ततो विप्रवरो दृष्ट्वा राक्षसम्पतितं भुवि । मुदा परमया युक्तस्तुष्टाव च सुदर्शनम् ॥

पद्मनाभ उवाच

विष्णुचक्र! नमस्तेऽस्तुविश्वरक्षणदाक्षित !। नारायणकराम्भोजभूषणायनमोऽस्तुते
युद्धेष्वसुरसंहारकुशलाय महारव । सुदर्शन नमस्तुभ्यं भक्तानामार्तिनाशन !॥ ३८॥

रक्ष मां भयसम्विग्नं सर्वस्मादपि कल्मषात् ।
स्वामिन्सुदर्शन! विभो! चक्रतीर्थे सदा भवान् ॥ ३६ ॥

सन्निधेहि हितायत्वंजगतोमुक्तिकाङ्क्षिणः । ब्राह्मणेनैवमुक्तंतद्विष्णुचक्रंमुनीश्वराः

तं प्राह पद्मनाभाख्यं प्रीणयन्निव सौहृदात् ॥ ४१ ॥

सुदर्शन उवाच

पद्मनाभ महापुण्यं चक्रतीर्थमनुत्तमम् । अस्मिन्वसामि सततं लोकानांहितकाम्यया

त्वत्पीडां परिचिन्त्याऽहं राक्षसेन दुरात्मना ॥ ४३ ॥

प्रेरितोविष्णुना विप्र त्वरयासमुपागतः । त्वत्पीडकोऽपिनिहतोमयाऽयंराक्षसाधमः
मोचितस्त्वं भयादस्मात्त्वं हि भक्तो हरेः सदा । चक्रतीर्थे महापुण्ये सर्वपापहरेद्विज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सततं लोकरक्षार्थंसन्निधानं करोमि ते । अस्मिन्मत्सन्निधानात्तेतथाऽन्येषामपिद्विज

इतः परं न पीडा स्याद्द भूतराक्षससम्भवा ।
अस्मिन्मत्सन्निधानात्स्याच्चक्रतीर्थमिति प्रथा ॥ ४७ ॥

स्नानं येऽत्र प्रकुर्वन्ति चक्रतीर्थे विमुक्तिदे । तेषां पुत्राश्च पौत्राश्चवंशजाःसर्वएव हि
विधूतपापा यास्यन्तितद्विष्णोःपरमंपदम् । इत्युक्त्वाविष्णुचक्रंतत्पद्मनाभस्यपश्यतः

अन्येषामपि विप्राणां पश्यतां सहसा द्विजाः ।
चक्रपुष्करिणीं तां तु प्राविशत्पापनाशिनीम् ॥ ५० ॥

श्रीसूत उवाच

चक्रतीर्थस्य माहात्म्यं विप्रेन्द्राःपापनाशनम् । युष्माकंकथितंसर्वंशौनकाद्यामहौजसः
चक्रतीर्थसमं तीर्थं न भूतं न भविष्यति । अत्र स्नात्वा नरा विप्रामोक्षभाजोनसंशयः
कीर्तयेदिममध्यायं शृणुयाद्वा समाहितः । चक्रतीर्थाभिषेकस्य प्राप्नोति फलमुत्तमम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये चक्रतीर्थमहिमानुवर्णनंनाम त्रयोविंशतितमोऽध्यायः ॥२३॥

चतुर्विंशोऽध्यायः

सुन्दराख्यगन्धर्वस्य राक्षसत्वप्राप्तिनिवृत्त्योरुपोद्घातवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

भगवन्राक्षसः कोऽसौ सूतपौराणिकोत्तम !। विष्णुभक्तं महात्मानंयोब्राह्मणमबाधत

श्रीसूत उवाच

वक्ष्यामि राक्षसं क्रूरंतंविप्राःशृणुतादरात् । यथाचराक्षसोजातोमुनीनांशापवैभवात्
पुरा वैकुण्ठसदृशे श्रीरङ्गेविष्णुमन्दिरे । वसिष्ठाऽत्रिमुखाः सर्वेविष्णुभक्तामहौजसः
श्रीरङ्गनाथं देवेशं भक्तानामभयप्रदम् । उपासाञ्चक्रिरे मुक्त्यै श्रीरङ्गपुरवासिनः ॥ ४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कदाचित्तत्र गन्धर्वो वीरबाहुसुतो बली ।
सुन्दरो नाम विप्रेन्द्रा विटगोष्ठीपरायणः ॥ ५ ॥
ललनाशतसंयुक्तो विवस्त्रःसलिलाशये । चिक्रीड स विवस्त्राभिःसाकंयुवतिभिर्मुदा
कुबेरजायास्तीर्थेतुवसिष्ठोमुनिभिःसह । माध्याह्निकंकर्तुमनाययौ श्रीरङ्गमन्दिरात्
तानृषीनवलोक्याथरामास्ताभयकातराः । वासांस्याच्छादयामासुःसुन्दरोनतुसाहसी
ततो वसिष्ठः कुपितः शशापैनं गतत्रपम् ॥ ६ ॥

वसिष्ठ उवाच

यस्मात्सुन्दर गन्धर्व! दृष्ट्वाऽस्माँल्लज्जया त्वया ।
वासोनाच्छादितं शीघ्रं याहि राक्षसतां ततः ॥ १० ॥
एवमुक्ते वसिष्ठेन रामाः प्राञ्जलयस्तदा । प्रणिपत्य वसिष्ठं तं भक्तिनम्रेण चेतसा ॥
मुनिमण्डलमध्ये तु वसिष्ठमिदमब्रुवन् ॥ १२ ॥

रामा ऊचुः ।

भगवन्सर्वधर्मज्ञ चतुराननन्दन !। दयासिन्धोऽवलोक्यास्मान्न कोपं कर्तुमर्हसि ॥
पतिरेव हि नारीणां भूषणम्परमुच्यते । पतिहीना तु या नारी शतपुत्राऽपि सा मुने
विधवेत्युच्यतेलोकेतासांजन्मनिरर्थकम् । तत्प्रसादं कुरु मुने पत्यावस्माकमादरात्
एकोऽपराधः क्षन्तव्यो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
क्षमां कुरु दयासिन्धो! युष्मच्छिष्येऽत्र सुन्दरे ॥ १६ ॥

श्रीसूत उवाच

वसिष्ठः प्रार्थितस्त्वेवंसुन्दरस्याङ्गनाजनैः । प्रोवाचवचनं भूयः प्रसन्नः स द्विजोत्तमः

वसिष्ठ उवाच

न मे स्याद्वचनं मिथ्याकदाचिदपिसुभ्रुवः !। उपायंवः प्रवक्ष्यामिशृणुध्वंश्रद्धया सह
षोडशाब्दावधिः शापो भर्तुर्वै भविताध्रुवम् ।
षोडशाब्दावधौ चैव सुन्दरो राक्षसाकृतिः ॥ १९ ॥
यदृच्छया वेङ्कटाद्रिं सर्वपापहरं शुभम् । गत्वाऽसौ चक्रतीर्थं तद्गमिष्यति सुराङ्गनाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आस्ते तत्र महायोगीपद्मनाभोमुनीश्वरः । भक्षार्थंतंमुनिंसोऽयंराक्षसोऽभिगमिष्यति
ततो ब्राह्मणरक्षार्थं प्रेरितं चक्रमुत्तमम् । विष्णुनास्य शिरःकायाद्धरिष्यतिन संशयः

ततः स्वं रूपमासाद्य शापान्मुक्तः स सुन्दरः ।
पतिर्वस्त्रिदिवं भूयो गन्ता नाऽस्त्यत्र संशयः ॥ २३ ॥

ततस्त्रिदिवमासाद्य सुन्दरोऽयं पतिर्हि वः । रमयिष्यतिसुन्दर्योयुष्मान्सुन्दरवेषभृत्

श्रीसूत उवाच

इत्युक्त्वातुवसिष्ठस्ताःसुन्दरस्यवराङ्गनाः । स्वाश्रमम्प्रययौतूर्णंश्रीरङ्गेश्वरभक्तिमान्
अथ रामास्तमालिङ्ग्य सुन्दरम्पतिमात्मनः । रुरुदुःशोकसन्तप्ताद्दुःखसागरमध्यगाः
दृश्यमानासु तास्वेवंसुन्दरोराक्षसोऽभवत् । महादंष्ट्रो महाकायो रक्तश्मश्रुशिरोरुहः
तं दृष्ट्वाभयसम्विग्नाजग्मू रामास्त्रिविष्टपम् । ततो राक्षसवेषोऽयं सुन्दरोभैरवाकृतिः
सक्षयन्प्राणिनः सर्वान्देशाद्देशं वनाद्वनम् । भ्रमन्ननिलवेगोऽयं वेङ्कटाद्रिं नगोत्तमम्

प्रविश्याऽसौ महापापी चक्रतीर्थं ततो ययौ ।
एवं षोडशवर्षाणि भ्रमतोऽस्य ययुस्तदा ॥ ३० ॥

ततस्तु षोडशाब्दान्तेराक्षसोऽयंमुनीश्वराः । भक्षितुं पद्मनाभंतं चक्रतीर्थनिवासिनम्

उपाद्रवद्वायुवेगः सचाऽस्तौषीज्जनार्दनम् ।
योगिना च स्तुतो विष्णुस्तदा चक्रमचोदयत् ॥ ३२ ॥

रक्षितुं पद्मनाभं तं राक्षसेन प्रपीडितम् । अथाऽऽगत्यहरेश्चक्रं राक्षसस्यशिरोऽहरत्
ततोऽयं राक्षसं देहं त्यक्त्वा दिव्यकलेवरः । विमानवरमारुह्य सुन्दरः पुष्पवर्षितः

प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा ववन्दे तत्सुदर्शनम् ।
तुष्टाव श्रुतिरम्याभिर्वाग्भिरग्र्याभिरादरात् ॥ ३५ ॥

सुन्दर उवाच

सुदर्शन नमस्तेऽस्तु विष्णुहस्तैकभूषण । नमस्तेऽसुरसंहर्त्रे सहस्रादित्यतेजसे ॥
कृपावेशेन भवतस्त्यक्त्वाहंराक्षसींतनुम् । स्वं रूपमभजंविष्णोश्चक्रायुधनमोऽस्तुते
अनुजानीहि मां गन्तुंत्रिदिवं विष्णुवल्लभ !। भार्या मे परिशोचन्तिविरहातुरचेतसः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वन्मनस्को भविष्यामि यावज्जीवं यथा ह्यहम् ।
तथा रूपं कुरुष्व त्वं मयि चक्र ! नमोऽस्तु ते ॥ ३६ ॥

एवं स्तुतंविष्णुचक्रंसुन्दरेणसभक्तिकम् । अनुजग्राह सहसातथाऽस्त्वितिमुनीश्वराः
चक्रायुधाभ्यनुज्ञातःसुन्दरोब्राह्मणोत्तमम् । प्रणम्य तेनाऽनुज्ञातोगन्धर्वस्त्रिदिवंययौ
सुन्दरे तु गतेस्वर्गंपद्मनाभोमुनीश्वरः । तच्चकंप्रार्थ यामास विष्ण्वायुध! नमोऽस्तुते
चक्रायुध! नमामि त्वां महासुरविमर्दन । सन्निधानं कुरुष्व त्वं चक्रतीर्थेऽमले शुभे

त्वत्सन्निधानात्सर्वेषां स्नातानां पापिनामिह ।
पापनाशं कुरुष्व त्वं मोक्षञ्च कुरु शाश्वतम् ॥ ४४ ॥

चक्रतीर्थमिति ख्यातिंलोकेऽस्यपरिकल्पय । त्वत्सन्निधानादत्रत्यमुनीनांभयनाशनम्
इतः परम्भवत्वार्य चक्रायुध नमोऽस्तु ते । भूतप्रेतपिशाचेभ्यो भयं मा भवतु प्रभो

इति सम्प्रार्थितं चक्रं पद्मनाभेन योगिना ।
तथैवाऽस्त्विति सम्भाष्य तस्मिंस्तीर्थे तिरोहितम् ॥ ४७ ॥

श्रीसूत उवाच

एवम्वः कथितोविप्रा राक्षसस्योद्भवोमया । माहात्म्यंचक्रतीर्थस्यकथितञ्चमलापहम्
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते मानवो भुवि ॥ ४९ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये चक्रतीर्थमहिमानुवर्णनं नाम
चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चविंशोऽध्यायः

जाबालितीर्थमाहात्म्येकावेरीतीरवासीदुराचाराख्यद्विजोदन्तवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

भोभोस्तपोधनाः सर्वे नैमिषारण्यवासिनः। वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने॥

ततो जाबालितीर्थस्य माहात्म्यं वर्णयाम्यहम्।
दुराचाराभिधो यत्र स्नात्वा मुक्तोऽभवद् द्विजाः!॥ २॥

मुनयः ऊचुः

दुराचाराभिधःकोऽसौ सूततत्त्वार्थकोविद!। किञ्चपापंकृतन्तेन दुराचारेण वै मुने!
कथस्वा पातकान्मुक्तस्तीर्थेऽस्मिन्स्नानवैभवात्।
एतच्छुश्रूषमाणानां विस्तराद्वद नो मुने!॥ ४॥

सूत उवाच

मुनयः श्रूयतां तस्य दुराचारस्य पातकम्। जाबालितीर्थस्नानेन यथामुक्तश्चपातकम्
दुराचाराभिधो विप्रः कावेरीतीरमाश्रितः। कश्चिदास्तेद्विजःपापीक्रूरकर्मरतः सदा॥
ब्रह्मघ्नैश्च सुरापैश्चस्तेयिभिर्गुरुतल्पगैः। सदासंसर्गदुष्टोऽसोतैःसाकंन्यवसद्द्विजाः
महापातकसंसर्गदोषेणाऽस्यद्विजस्य वै। ब्राह्मण्यं सकलं नष्टं निःशेषेण द्विजोत्तमाः
महापातकिभिः सार्धं दिनमेकंतु यो द्विजः। निवसेत्सादरंतस्यतत्क्षणाद्वैद्विजन्मनः
ब्राह्मणस्य तु चैकांशोनश्यत्येव न संशयः। द्विदिनंसेवनात्स्पर्शाद्दर्शनाच्छयनात्तदा
भोजनात्सह पङ्क्तौ च महापातकिभिर्द्विजाः!।
द्वितीयभागो नश्येत ब्राह्मण्यस्य न संशयः॥ ११॥
त्रिदिनाच्च तृतीयांशोनश्यत्येव न संशयः। चतुर्दिनाच्चतुर्थांशो विलयंयातिहिध्रुवम्
अतः परं च तैः साकं शयनाशनभोजनैः। तत्तुल्यपातकीभूयान्महापातकिसङ्गवान्
तेन ब्राह्मण्यहीनोऽयं दुराचाराभिधो द्विजः। ग्रस्तोऽभवद्भीषणेनव्यालेनेवबलीयसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

असौ परवशस्तेन वेतालेनाऽतिपीडितः । देशाद्देशं भ्रमन्विप्रोवनाच्चैव वनान्तरम् ॥
पूर्वपुण्यविपाकेन दैवयोगेन स द्विजः । वेङ्कटाद्रिं महापुण्यं सर्वपातकनाशनम् ॥१८॥
अनुद्रुतः पिशाचेन वेतालेन द्विजो ययौ । न्यमज्जयत्स वेतालो महापातकनाशने ॥
जाबालितीर्थे विप्रेन्द्रा महापातकिसङ्गिनम् । उदतिष्ठत्क्षणादेव वेतालेन विमोहितः

उत्थितोऽसौ द्विजो विप्रास्तस्मातीर्थात्तु पावनात् ।
स्वस्थो व्यचिन्तयत्कोऽयं स्वर्णमुख्याः समीपतः ॥ १६ ॥

कथं मयागतमहो कावेरीतीरवासिना । इतिचिन्ताकुलःसोऽयंजाबालेस्तीर्थमुत्तमम्
जाबालिंचमहात्मानंयोगीन्द्रवरमुत्तमम् । समागम्यप्रणम्याऽऽसौदुराचारोऽभ्यभाषत
न जाने भगवन्विप्र पर्वतोऽयंवदाऽधुना । कावेरीतीरनिलयो दुराचाराभिधोह्यहम्
कृपया ब्रूहि मे ब्रह्मन्मयाऽत्र कथमागतम् । इतिपृष्टो मुनिस्तेनदुराचारेण सुव्रतः ॥

ध्यात्वा मुहूर्तमवदद्दुराचारं कृपानिधिः ॥ २४ ॥

जाबालिरुवाच

महापातकिसंसर्गाद्दुराचारस्य ते पुरा । ब्राह्मण्यं नष्टमभवद्वेतालस्त्वां ततोऽग्रहीत्

तेनाऽऽविष्टस्त्वमायातो विवशोऽत्र विमूढधीः ।
न्यमज्जयत्त्वां वेतालस्तीर्थेऽस्मिन्नतिपावने ॥ २६ ॥

अत्रमज्जनमात्रेण विमुक्तः पातकाद्भवान् । जाबालितीर्थे ये स्नानंपुण्यंकुर्वन्तिमानवाः
तेषां नश्यन्तिवैसत्यंपञ्चपातकसञ्चयाः । सत्कर्मसाधनेपुण्यतीर्थेऽस्मिन्स्नानमात्रतः
महापातकिसंसर्गदोषस्ते विलयं गतः । त्वामग्रहीद्यो वेतालः पुरायंब्राह्मणोऽभवत्
मृतेऽहनिपितृश्राद्धं नाऽकरोत्पार्वणेन वै । तेन स्वपितृभिः शप्तोवेतालत्वमगादयम्॥
सोऽपिजाबालितीर्थस्यजलेस्नानप्रभावतः । वेतालत्वंविहायैव विष्णुलोकमवाप्तवान्
न कुर्याद्यो नरः श्राद्धंमातापित्रोर्मृतेऽहनि । वेतालत्वमवाप्याऽऽशुपश्चान्नरकमश्नुते

सूत उवाच

दुराचारो महापापीतीर्थेऽस्मिन्स्नानमात्रतः । प्राप्तवान्विष्णुलोकंवैपुनरावृत्तिवर्जितम्
एवम्वः कथितं पुण्यं दुराचारविमोक्षणम् । तस्मात्पुण्यतमंतीर्थं सर्वपापहरं शुभम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यत्र हि स्नानमात्रेण दुराचारो विमोचितः ।
यानि निष्कृतिहीनानि पापान्यपिविनाशयेत् ॥ ३५ ॥
शूद्रेण पूजितं लिङ्गंविष्णुंवायोनमेद्द्विजः । प्रायश्चित्तंनस्मृतिषुतस्योक्तंपरमर्षिभिः
नश्येत्तस्यापि तत्पापंतीर्थेजाबालिसञ्ज्ञके । विप्रनिन्दाकृतांचैवप्रायश्चित्तंन विद्यते ॥
विश्वासघातकानां च कृतघ्नानां च निष्कृतिः । भ्रातृभार्यारतानांचप्रायश्चित्तंनविद्यते
तेषां जाबालितीर्थे वै स्नानाच्छुद्धिर्भविष्यति ।
एवम्वः कथितंविप्राजाबालेस्तीर्थवैभवम् ॥ ३६ ॥
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते मानवो भुवि ॥ ४० ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये जाबालितीर्थमहिमानुवर्णनंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

षड्विंशोऽध्यायः

तुम्बुरुघोणतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्

सूत उवाच

अथाऽहं सम्प्रवक्ष्यामि शौनकाद्या महौजसः !।
घोणतीर्थस्य माहात्म्यं सर्वपातकनाशनम् ॥ १ ॥
तत्रस्नानं जनानां तु जन्मान्तरतपःफलम् । उत्तराफल्गुनीयुक्तशुक्लपक्षीयपर्वणि ॥२ ॥
तुम्बोस्तीर्थं मीनसंस्थे रवौ तीर्थानि सर्वशः । अपराह्णेसमायान्तिगङ्गादीनिजगत्त्रये

ऋषय ऊचुः

भगवन्सूत! सर्वज्ञ! सर्वशास्त्रार्थपारग !।
गङ्गाद्याः सरितः सर्वा घोणतीर्थेऽतिपावने ॥ ४ ॥
किमर्थं स्नान्ति वै तत्र मीनसंस्थे प्रभाकरे ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीसूत उवाच

पापिनो मनुजाः सर्वे ह्यस्मासु स्नान्ति यत्नतः ।
विसृज्य पापजालानि कृतार्था यान्ति वै जनाः ॥ ६ ॥
अस्माकं पापजालं तत्कथं नश्यति सर्वतः । एवमालोच्यतीर्थानिगङ्गादीनिप्रयत्नतः
संस्मृत्य ब्रह्मपुत्रस्य नारदस्य महात्मनः । वाक्यं मनोहरंदिव्यं सर्वपापनिषूदनम् ॥
गत्वा श्रीवेङ्कटं शैलंब्रह्महत्यादिशोधकम् । तत्रस्नात्वातीर्थवर्येस्वामिपुष्करिणीजले
अनन्तरं ततो विप्रा घोणतीर्थेऽतिपावने । उत्तराफल्गुनीयुक्तशुक्लपक्षीयपर्वणि ॥१०
स्नान्तितीर्थानिसर्वाणिमीनसंस्थेप्रभाकरे । तस्यतीर्थस्यमाहात्म्यंकोवेत्तिभुवनत्रये
तस्मात्पुण्यतमं तीर्थं घोणतीर्थं द्विजोत्तमाः ॥ १२ ॥
आरामोच्छेदकं क्रूरं कन्यातुरगविक्रयम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुर्ब्रह्मघातुकम् ॥
देवद्रव्यापहर्तारं तथा दत्तापहारकम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुर्ब्रह्मघातुकम् ॥१४॥
तटाकसेतुभेत्तारं परस्त्रीसङ्गलोलुपम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुः स्तेयिनं बुधाः ॥
ददामीति द्विजायोक्त्वा पश्चाद्यो नास्तिकोऽधमः ।
घोणस्नानपरित्यक्तं सुरापं तं विदुर्बुधाः ॥ १६ ॥
गुरुविप्रजनद्वेष्यमात्मस्तुतिपरायणम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुः स्तेयिनं बुधाः ॥
असंस्कृतान्नभोक्तारं पितृशेषान्नभोजिनम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुःस्तेयिनंद्विजाः
पितृशेषाऽन्नदातारंमातापितृविरोधिनम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुः स्तेयिनं बुधाः
परस्त्रीसङ्गनिरतं भ्रातृभार्यारतिप्रियम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुर्गुरुतल्पगम् ॥२०
चण्डालभाषिणं विप्रं सदैवादर्भपाणिकम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तत्संसर्गं तु पञ्चमम्
रजस्वलाश्वचण्डालध्वनिंश्रुत्वाऽन्नभोजिनम् । घोणस्नानपरित्यक्तंतत्संसर्गंतुपञ्चमम्
पुराणोद्वाहमौञ्ज्यादिधर्माणांविघ्नकारकम् । घोणस्नानपरित्यक्तंतमाहुःपशुघातुकम्
शरणागतहन्तारं सर्वतीर्थपराङ्मुखम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुर्भ्रूणहं बुधाः ॥२४
पितृयज्ञपरित्यक्तं त्यक्तभार्यं कुलाधमम् । घोणस्नानपरित्यक्तं तमाहुर्गोविघातुकम् ॥
महापापसमानानि क्षुद्रपापानि यानि च । घोणस्नानपरित्यक्तमाश्रयन्ति द्विजोत्तमाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महापापरतं विप्राः श्वपचं वा कुलाधमम् ।
क्रूरं कुलान्तकं कष्टमदत्तं कर्मवर्जितम् ॥ २७ ॥
पशुघ्नं च परद्रोहमाश्रितं पिशुनं तथा । असत्यभाषिणं दम्भपरदाररतं तथा ॥२८॥
मित्रद्रोहं कृतघ्नं च भ्रूणहं चाऽतिपातकम् । परदाररतं पापं पराणामर्थसूचकम् ॥
अनृतं कृषिकर्माणं स्वामिद्रोहं च वञ्चकम् । सलोभंपितृहन्तारं सर्वदेवपराङ्मुखम्
आत्मप्रशंसां कुर्वाणं धर्मविघ्नकरं शठम् । अपात्रव्ययकर्तारं साऽनुकूल्यविभेदकम्
सुपल्लवफलोपेतवृक्षविच्छेदकारकम् । विश्वासघातुकं चैव वीरहत्यापरायणम् ॥
अनग्निकमपुत्रं च विषकर्मप्रयोगिणम् । गुरुद्वेषकरं पापं दम्पत्योर्विरसावहम् ॥ ३३॥
ग्रामाधिपत्यं कुर्वाणं तथा देवालयस्य च । भृतकाध्यापकं विप्रं क्रूरकर्मपरायणम्
प्रकृतीकृतपापौघं गुह्यघौघपरायणम् । अज्ञानादघकर्तारं ज्ञानाद्दुष्कर्मकारकम् ॥
एतान्सर्वांश्च विप्रेन्द्रा घोणतीर्थं मनोहरम् । पुनाति स्नानपानाद्यैरहोतीर्थस्यवैभवम्

सूत उवाच

अत्रेतिहासं वक्ष्यामि पुराणं पापनाशनम् । सर्वपापप्रशमनमपवर्गफलप्रदम् ॥ ३७ ॥
पुरा गार्ग्यो महातेजाःसर्वविद्याविशारदः । सर्वज्ञोनीतिवान्विप्रःप्राहचेत्थंजितेन्द्रियः
देवलं च महात्मानं नमस्कृत्य प्रसन्नधीः । कथयस्व महाभाग! मयिकारुणिको भव
घोणतीर्थस्य माहात्म्यं सर्वपापहरं शुभम् ।

देवल उवाच

तुम्बुरुर्नाम गन्धर्वो भार्यां शप्त्वा पतिव्रताम् ।
अत्रस्नात्वा समभ्यर्च्य वेङ्कटेशं दयानिधिम् ॥ ४० ॥
प्राप्तवान्विष्णुलोकं वै पुनरावृत्तिवर्जितम् ॥ ४१ ॥

गार्ग्य उवाच

किमर्थं देवलऋषे! भार्यां रूपवतीं स्त्रियम् । तुम्बुरुर्नाम गन्धर्वः सर्वविद्याविशारदः
शप्तवान्केनदोषेण भार्यां सर्वगुणान्विताम् । तद्वदस्वमहाभाग! श्रोतुं कौतूहलंहि मे
तुम्बुरुर्नाम गन्धर्वो भार्यां प्रीत्या ह्युवाच ह । माघत्रये मयासाकं स्नानं कुरुमलापहम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माघमास्युदिते सूर्ये सर्वकल्मषनाशने । तीरेऽस्मिन्विष्णुपूजार्थंगोमयालेपनं कुरु
रङ्गवल्यादिभिः शुभ्रपद्मस्वस्तिकधातुभिः ।
शुश्रूषां कुरु मे विष्णोर्मासेऽस्मिन्मङ्गलप्रदे ॥ ४६ ॥
माघेऽस्मिन्माधवस्याऽस्य कुरुत्वंदीपवर्तिकाम् । सधूपंपावकंभक्तयासमर्पयहरेःपुरः
कुरु पाकं शुचिर्भूत्वा माधवाय महात्मने । प्रदक्षिणानमस्कारैर्भक्त्या माघे मया सह
कुरुष्व देवदेवस्य सपर्यां विष्णवेऽन्वह । पुराणश्रवणं विष्णोःकुरुनित्यमतन्द्रिता
नित्यं स्नात्वा प्रयत्नेन पिबपादोदकं हरेः । कृष्णविष्णो मुकुन्देति नारायणजनार्दन
अच्युतानन्त विश्वात्मन्निति कीर्तय सन्ततम् ।
क्रोधमात्सर्यलोभादींस्त्यक्त्वा त्वं व्रतमाचर ॥ ५१ ॥
तेन ते जायते मुक्तिर्विष्णुलोकश्च शाश्वतः । इत्थंसा भर्तृगदितं श्रुत्वागन्धर्ववल्लभा
भर्तारमब्रवीत्कोपादसह्यं दुर्गतिप्रदम् ॥ ५२ ॥
माघेचोद्भूतशीते तु प्रातर्मन्दोदिते रवौ । कथं निमज्जयेदस्मिन्माघेशीतार्दिदेऽनघ
यत्त्वयोक्तानि कर्माणि न शक्यानि मयाऽसकृत् ।
न करोमि पते! स्नानं प्रातःकाले त्वया सह ॥ ५४ ॥
मृतौशीतातिपातेन न च मे रक्षको भवान् । इत्येवमुदितं श्रुत्वा पतिर्गन्धर्ववल्लभः
स शान्तोऽपि शशापाऽथ भार्यां चाऽप्रियवादिनीम् ।
पुत्रं च धर्मविमुखं भार्यां चाऽप्रियभाषिणीम् ॥ ५६ ॥
अब्रह्मण्यश्चराजानंसद्यःशापेन दण्डयेत् । इतिन्यायंविचिन्त्याऽसौशशापेत्थंसतींतदा
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने । घोणतीर्थसमीपे च पिप्पलद्रुमकोटरे ॥ ५८॥
तत्राम्बुरहिते मूढे! मण्डूका भव केवलम् । इत्येवं भर्तृवाक्यंतच्छ्रुत्वा गन्धर्ववल्लभा
पतित्वा पादयोस्तस्य तुम्बुरुं प्रार्थयत्सती । विशापमवदत्पश्चाद्भर्त्तावैतुम्बुरुस्तदा
अगस्त्यो वै महाभागस्तपस्वी विजितेन्द्रियः ।
घोणतीर्थवरे स्नात्वा पौर्णमास्यां महातिथौ ॥ ६१ ॥
शिष्येभ्यो वै यदा तस्मिन्नश्वत्थद्रुमसन्निधौ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घोणतीर्थस्य माहात्म्यं वक्ति वै ब्राह्मणोत्तमः ॥ ६२ ॥
तदापिप्पलवृक्षस्यकोटरेत्वंसमाहिता । श्रुत्वावै घोणतीर्थस्यमाहात्म्यंमोक्षदायकम्
विधूयसर्वपापानि मया साकं रमिष्यसि । इत्युक्ता विररामाथ धर्मपत्नी पतिव्रता ॥
भर्तृशापान्महाघोरां मण्डूकतनुमाश्रिता ।
शेषाद्रिशिखरे तस्मिन्घोणतीर्थस्य दक्षिणे ॥ ६५ ॥
शनैःशनैर्गतानारी पिप्पलद्रुमकोटरम् । अब्दायुतं गतं तस्या अश्वत्थद्रुमकोटरे ॥
ततः कालान्तरेऽगस्त्यो वेङ्कटाद्रिं मनोहरम् ।
गत्वा श्रीस्वामितीर्थे च स्नात्वा नियमपूर्वकम् ॥ ६७ ॥
वराहस्वामिनं देवंनत्वातीर्थस्यदक्षिणे । वेङ्कटेशालयंगत्वा श्रीनिवासं कृपानिधिम्
वेदवेद्यं विशालाक्षं देवदेवं सनातनम् । नत्वाऽगस्त्योमहाभागो घोणतीर्थंततो ययौ
तत्र स्नात्वा तीर्थवर्ये स्वशिष्यैर्योगिनाम्वरः ।
पिप्पलद्रुमच्छायायां शिष्येभ्यो भक्तिपूर्वकम् ॥ ७० ॥
घोणतीर्थस्य माहात्म्यं ब्रह्महत्याविनाशकम् । सर्वमङ्गलदम्पुण्यंसर्वसम्पत्प्रदायकम्
उक्तवान्योगिनां श्रेष्ठो ह्यगस्त्यो भगवानृषिः ॥ ७२ ॥
तदा श्रुत्वा तु वर्षाभूः पादयोस्तस्ययोगिनः । पतित्वाज्ञानदीपेनविदित्वावैभवंमुनेः
पूर्वरूपं समासाद्य नारीरूपं मनोहरम् । अगस्त्य! योगिनां श्रेष्ठ रक्षरक्ष दयानिधे !
मांरक्षदययाब्रह्मन्पतिवाक्यविरोधिनीम् । इत्युक्त्वा तं विशालाक्षी विरराममततःपरम्

अगस्त्य उवाच

का त्वंसुश्रोणिभद्रन्तेभेकजन्मप्रदायकम् । पापं पूर्वभवेचाऽऽसीत्तद्वदस्वचमाचिरम्

नार्युवाच

तुम्बुरुर्नामगन्धर्वःसर्वविद्याविशारदः । तस्यभार्याऽस्म्यहम्विप्रह्यगस्त्यमुनिसेवित
भर्ता मे सर्वधर्मज्ञस्तुम्बुरुर्मुनिसत्तमः । सर्वधर्मान्मनोज्ञा त्वं कुरु नित्यम्मया सह ॥
पतिवाक्यं तदा श्रुत्वा परलोकोपकारकम् । असह्यम्वाक्यमत्युग्रं दुर्गतिप्रदमेव हि
मया चोक्तं हि दुर्बुद्ध्या हे तात! मुनिसत्तम !॥ ८० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

कुशाग्रबुद्धिस्ते भर्ता शशाप त्वांरुषान्वितः। एवंशापोयुक्तएवपतिवाक्यविरोधिनीम्
पतिवाक्यमनादृत्य स्वेच्छया वर्तते तु या। सा नारी निरये घोरेपतत्याचन्द्रतारकम्
न स्वातन्त्र्यंतु नारीणां नोल्लङ्घ्यं पतिभाषणम्। पातिव्रत्येनपुण्येनपतिशुश्रूषणेनच

स्त्रियो विष्णुपदं यान्ति न चाऽन्यैरपि सुव्रतैः।
पतिर्माता पतिर्विष्णुः पतिर्ब्रह्मा पतिः शिवः॥ ८४॥

पतिर्गुरुः पतिस्तीर्थमिति स्त्रीणांविदुर्बुधाः। पतिवाक्यमपाकृत्ययानारीसुकृतैःपरैः
सदैव युज्यते सापि नैव शुद्धा भवेत्सकृत्। पतिहीना तु या नारीगुरुभिर्धर्मवित्तमैः
सा कृतज्ञा विदध्यात्तु व्रतं धर्मफलप्रदम्। पतिना प्रेरिता सैव पतिबुद्धिपरायणा॥
पतिपादाब्जतीर्थेन या स्नाता सा हरिप्रिया। सा स्नाता सर्वतीर्थेषुगङ्गादिषुनसंशयः

तस्मात्त्वत्कृतदोषस्तु त्वामायातीति तत्फलम्।
भुञ्जन्त्यास्तेऽत्र शृण्वन्त्या घोणतीर्थस्य वैभवम्॥ ८६॥

मुक्तिरासीच्छुभाङ्गं तन्नारीरूपं पुनर्यथा। तस्माद्घोणस्य तीर्थस्यतुम्बुतीर्थमितीहवै

लोके प्रसिद्धरभवदहो तीर्थस्य वैभवम्॥

श्रीसूत उवाच

घोणतीर्थे महापुण्येसर्वपापविनाशिनि। स्नान्तियेपौर्णमास्यांवैशौनकाद्यामहौजसः
तेषां क्रतुफलं पुण्यं तीर्थायुतफलं भवेत्। कपिलागोसहस्रं तु यो ददाति दिनेदिने
तत्फलं समवाप्नोति स्नानात्तुम्बुरुतीर्थके। रत्नकोटिसहस्राणि यो ददाति दिनेदिने
मत्तेभानां सहस्राणि तथैवाश्वायुतान्यपि। तत्फलंसमवाप्नोति घोणतीर्थावगाहनात्
कन्याकोटिप्रदानेनयत्फलंचर्षिभिःस्मृतम्। तत्फलंसमवाप्नोतिघोणतीर्थाच्चपावनात्
हेमाम्बरसहस्रं यः कुरुक्षेत्रे प्रयच्छति। तत्फलं समवाप्नोति घोणतीर्थस्य वैभवात्
गुर्वर्थे ब्राह्मणार्थे चस्वाम्यर्थेयस्त्यजेत्तनुम्। तत्फलंसमवाप्नोतिघोणतीर्थस्यवैभवात्
आपन्नार्तिहराणां च तीर्थसेवापरात्मनाम्। सत्यव्रतानां यत्पुण्यंघोणतीर्थाच्चतद्भवेत्
यत्फलं श्राद्धकर्तॄणांपितॄणामिन्दुसंक्षये। तत्फलंसमवाप्नोतिघोणतीर्थाद्धिपावनात्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गङ्गायां नर्मदायां च सरयूचन्द्रभागयोः । सर्वेषु पुण्यतीर्थेषु यः स्नानं कुरुते नरः ॥
तत्फलं समवाप्नोति घोणतीर्थाद्धि पावनात् ॥ १०१ ॥
तस्मात्पुण्यतमं तीर्थं घोणतीर्थं विदुर्बुधाः ॥ १०२ ॥
य इमं शृणुतेऽध्यायं सर्वपापनिवर्हणम् । वाजपेयफलं तस्य विष्णुलोकश्च शाश्वतः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये तुम्बुरुतीर्थमाहात्म्यवर्णनंनाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सप्तविंशोऽध्यायः

श्रीवेङ्कटाचलस्य सर्वपुण्यतीर्थाधारत्ववर्णनम्

ऋषय ऊचुः

वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वसङ्कटनाशने । सन्ति वै कति तीर्थानि सूतपौराणिकोत्तम !
तेषां संख्यां च मे ब्रूहि कति मुख्यानितत्रवै । तत्राप्यत्यन्तमुख्यानिवदमेमुनिसत्तम
सद्धर्मरतिदान्यत्र कति मुख्यानि तानि च । कानि ज्ञानप्रदान्यत्र भक्तिवैराग्यदानि च
मुक्तिप्रदानि कान्यत्र तानि मे वद सुव्रत !॥ ४ ॥

श्रीसूत उवाच

षट्षष्टिकोटितीर्थानि पुण्यान्यत्र नगोत्तमे । अष्टोत्तरसहस्राणितेषु मुख्यानि सुव्रत!
सद्धर्मरतिदान्यत्र सन्ति चाऽष्टोत्तरं शतम् ।
सहस्रेभ्यश्च मुख्यानि पृथक्तेभ्यश्च तानि च ॥ ६ ॥
भक्तिवैराग्यदान्यत्र षष्टिरष्टोत्तरे शते ॥ ७ ॥
मुक्तिदान्यत्र षट् चैववेङ्कटाचलमूर्धनि । स्वामिपुष्करिणी चैव वियद्गङ्गा ततःपरम्
पश्चात्पापविनाशं च पाण्डुतीर्थमतःपरम् । कुमारधारिकातीर्थंतुम्बोस्तीर्थमतःपरम्
कुम्भमासे पौर्णमास्यां मघायोगो यदा भवेत् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुमारधारिका यान्ति सर्वतीर्थानि हे द्विजाः ! ॥ १० ॥
तत्र यः स्नाति विप्रेन्द्रा राजसूयफलं लभेत् । मुक्तिश्चभवितातत्रनात्रकार्याविचारणा
अन्नदानविधिस्तत्र सार्धं दक्षिणया द्विजाः । उत्तराफल्गुनीयुक्तशुक्लपक्षीयपर्वणि ॥
तुम्बोस्तीर्थं मीनसंस्थे रवौ तीर्थानि सर्वशः । अपराह्णेसमायान्तितत्रस्नातोन जायते
मौञ्जीबन्धं विवाहं च कारयेद्द्रव्यदानतः । मेषसङ्क्रमणे भानौ चित्रानक्षत्रसंयुते॥
पौर्णमास्यां समायान्ति वियद्गङ्गां तथैव च । तत्र स्नात्वानरःसद्यःशतक्रतुफलंलभेत्
सुवर्णं तत्र दातव्यं कन्यादानं विशेषतः । वृषभस्थे रवौ विप्रा द्वादश्यां हरिवासरे
शुक्ले वाऽप्यथ कृष्णे वा भौमेनाऽपि समन्विते ।
पाण्डुतीर्थं समायान्ति गङ्गादीनि जगत्त्रये ॥ १७ ॥
तत्र स्नात्वा च गांदत्त्वामुच्यतेप्रतिबन्धकात् । आश्वयुक्छुक्लपक्षेचसप्तम्यांभानुवासरे
उत्तराषाढयुक्तायां तथा पापविनाशनम् । उत्तराभाद्रयुक्तायां द्वादश्यां वा समागतः
शालग्रामशिलां दत्त्वा स्नात्वा चविधिपूर्वकम् । मुच्यतेसर्वपापैश्चजन्मकोटिशतोद्भवैः
धनुर्मासे सिते पक्षे द्वादश्यामरुणोदये । आयान्तिसर्वतीर्थानिस्वामिपुष्करिणीजले
तत्र स्नात्वा नरः सद्योमुक्तिमेति न संशयः । यस्य जन्मसहस्रेषु पुण्यमेवाऽर्जितं पुरा
तस्य स्नानं भवेद्विप्रा नान्यस्य त्वकृतात्मनः । विभवानुगुणं दानं कार्यंतत्रयथाविधि
शालिग्रामशिलादानं गां दद्याच्च विशेषतः ॥ २४ ॥
ये शृण्वन्ति कथां विष्णोः सदा भुवनपावनीम् ।
ते वै मनुष्यलोकेऽस्मिन्विष्णुभक्ता भवन्ति हि ॥ २५ ॥
यद्यशक्तः सदा श्रोतुं कथां भुवनपावनीम् । मुहूर्तं वातदर्धंवाक्षणंवाविष्णुसत्कथाम्
यः शृणोति नरो भक्त्या दुर्गतिर्नास्ति तस्य हि ॥ २६ ॥
यत्फलं सर्वयज्ञेषु सर्वदानेषु यत्फलम् । सकृत्पुराणश्रवणात्तत्फलं विन्दते नरः ॥२७
कलौ युगे विशेषेण पुराणश्रवणादृते । नाऽस्ति धर्मःपरःपुंसां नाऽस्तिमुक्तिप्रदंपरम्
पुराणश्रवणं विष्णोर्नामसङ्कीर्तनं परम् । उभे एव मनुष्याणां पुण्यद्रुममहाफले ॥२६
पिबन्नेवाऽमृतं यत्नादेकः स्यादजराऽमरः । विष्णोः कथामृतंकुर्यात्कुलमेवाजरामरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बालो युवाऽथवृद्धोवादरिद्रोदुर्भगोऽपिवा । पुराणज्ञःसदावन्द्यःसपूज्यःसुकृतात्मभिः
नीचबुद्धिं न कुर्वीतपुराणज्ञे कदाचन । यस्य वक्त्रोद्गतावाणी कामधेनुःशरीरिणाम्
भवकोटिसहस्रेषुभूत्वाभूत्वावसीदताम् । योद्दात्यपुनर्वृत्तिकोऽन्यस्तस्मात्परोगुरुः

व्यासासनसमाऽऽरूढो यदा पौराणिको द्विजः ।
आसमाप्तेः प्रसङ्गस्य नमस्कुर्यान्न कस्यचित् ॥ ३४ ॥

न दुर्जनसमाकीर्णे न शूद्रश्वापदावृते । देशे न द्यूतसदने वदेत्पुण्यकथां सुधीः ॥३५
सुग्रामे सुजनाकीर्णे सुक्षेत्रे देवतालये । पुण्ये वाऽथ नदीतीरे वदेत्पुण्यकथांसुधीः

श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नाऽन्यकार्येषु लालसाः ।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्यभागिनः ॥ ३७ ॥
अभक्त्या ये कथां पुण्यां शृण्वन्ति मनुजाधमाः ।
तेषां पुण्यफलं नाऽस्ति दुःखं जन्मनि जन्मनि ॥ ३८ ॥

पुराणं ये तु सम्पूज्यताम्बूलाद्यैरुपायनैः । शृण्वन्ति च कथां भक्त्यानदरिद्रानपापिनः
कथायां कथ्यमानायांयेगच्छन्त्यन्यतोनराः । भोगान्तरेप्रणश्यन्तितेषांदाराश्चसम्पदः

सोष्णीषमस्तका ये च कथां शृण्वन्ति पावनीम् ।
ते बालकाः प्रजायन्ते पापिनो मनुजाधमाः ॥ ४१ ॥

ताम्बूलं भक्षयन्तो ये कथांशृण्वन्तिपावनीम् । श्वविष्ठांभक्षयन्त्येतेनरकेचपतन्तिहि

ये च तुङ्गासनारूढाः कथां शृण्वन्ति दाम्भिकाः ।
अक्षय्यान्नरकान्भुक्त्वा ते भवन्त्येव वायसाः ॥ ४३ ॥

ये च वीरासनारूढा ये च सिंहासनस्थिताः । शृण्वन्तिसत्कथांतेवैभवन्त्यर्जुनपादपः
असम्प्रणम्य शृण्वन्तोविषवृक्षाभवन्तिहि । तथाशयानाःशृण्वन्तोभवन्त्यजगराहिते
यः शृणोति कथां वक्तुः समानासनसंस्थितः । गुरुतल्पसमंपापं सम्प्राप्यनरकंव्रजेत्
ये निन्दन्ति पुराणज्ञं सत्कथांपापहारिणीम् । तेवैजन्मशतंमर्त्याःशुनकाश्चभवन्तिहि
कथायां कीर्त्यमानायां ये वदन्ति दुरुत्तरम् । तेगर्दभाःप्रजायन्तेकृकलासास्ततःपरम्
कदाचिदपि ये पुण्यां नशृण्वन्तिकथांनराः । तेभुक्त्वानरकान्घोरान्भवन्तिवनसूकराः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कथायां कीर्त्यमानायां विघ्नं कुर्वन्ति ये नराः ।
कोट्यब्दं नरकान्भुक्त्वा भवन्ति ग्रामसूकराः ॥ ५० ॥
येकथामनुमोदन्तेकीर्त्यमानांनरोत्तमाः । अशृण्वन्तोऽपि तेयान्तिशाश्वतंपदमव्ययम्
ये श्रावयन्तिमनुजाःपुण्यांपौराणिकींकथाम् । कल्पकोटिशतंसाग्रंतिष्ठन्तिब्रह्मणःपदे
आसनार्थं प्रयच्छन्ति पुराणज्ञस्य ये नराः । कम्बलाजिनवासांसि तथामञ्चकमेववा
स्वर्गलोकं समासाद्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
स्थित्वा ब्रह्मादिलोकेषु पदं यान्ति निरामयम् ॥ ५४ ॥
पुराणस्य प्रयच्छन्ति ये च सूत्रं नवं वरम् । भोगिनो ज्ञानसम्पन्नास्तेभवन्तिभवेभवे
ये महापातकैर्युक्ता ह्युपपातकिनश्च ये । पुराणश्रवणादेव ते यान्ति परमम्पदम् ॥५६॥
वेङ्कटाद्रेस्तु माहात्म्यंश्रुत्वातऋषयस्ततः । व्यासप्रसादसम्पन्नंसूतंपौराणिकोत्तमम्
पूजयित्वा यथान्यायं प्रहर्षमतुलं गताः ॥ ५७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सर्वतीर्थमहिमोपसंहारपूर्वकपुराणश्रवणप्रक्रियाद्यनुवर्णनंनाम सप्तविंशोऽध्यायः

अष्टाविंशोऽध्यायः

कटाहतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूत! सर्वार्थतत्त्वज्ञ! वेदवेदान्तपारग !। श्रीवेङ्कटाचले तीर्थं कटाहाख्यं सुपावनम् ॥
श्रूयते तस्य माहात्म्यंघुष्यतेचजगत्त्रये । अस्माकमेतद्ब्रूहित्वंकृपयाव्यासशासित!
पुरा वै नारदः श्रीमान्ब्रह्मपुत्रो महानृषिः । दृष्ट्वा वै नैमिषारण्यं सम्प्राप्तो द्विजसत्तमः
तदानीं ब्रह्मपुत्रं तमर्घ्यपाद्यादिभिः शुभैः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूजयित्वा यथान्यायं पवित्रे च कुशासने ॥ ४ ॥
सन्निवेश्य महाभक्त्या विनयानतकन्धराः । प्रणम्य प्रार्थयामासुरिमे सर्वे महर्षयः ॥
त्वां विनानारदश्रीमन्नस्माकंभुवनत्रये । धर्मोपदेशकः कश्चिन्नाऽस्ति नाऽस्तिमहर्षिषु
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वदेवनिषेविते । वैकुण्ठादागते दिव्येसिद्धगन्धर्वसेविते ॥
कटाहतीर्थमाहात्म्यं वर्णयाऽद्य वनौकसाम् ॥ ८ ॥

श्रीनारद उवाच

शृणुध्वमृषयः सर्वे शौनकाद्या महौजसः । कटाहतीर्थमाहात्म्यं को वेत्ति भुवनत्रये
महादेवो विजानाति तस्य तीर्थस्य वैभवम् ।
यानि कानि च पुण्यानि ब्रह्माण्डान्तर्गतानि वै ॥ १० ॥
तानि गङ्गादितीर्थानि स्वपापपरिशुद्धये । कटाहतीर्थसेवांच कुर्वन्तिद्विजसत्तमाः
ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चेतरजातयः । स्पृशन्तितज्जलमितिनपिबेद्योविमूढधीः
स हि चाण्डालतां प्राप्य कुम्भीपाके पतिष्यति ।
ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थो यतीश्वरः ॥ १३ ॥
सेवयातस्यतीर्थस्य प्राप्नोति परमंपदम् । श्रुतिस्मृतिपुराणेषुतत्तीर्थस्य प्रशंसनम्
बहुधा वर्ण्यते पञ्चमहापातकनाशनम् । अत्यद्भुततरं विप्राः सर्वलोकैकपावनम् ॥१५
ब्रह्महत्यायुतं चापि सुरापानायुतं तथा । अयुतं गुरुदाराणां गमनंपापकारणम् ॥
स्तेयायुतं सुवर्णानां तत्संसर्गाश्च कोटयः ।
शीघ्रं विलयमायान्ति तस्य तीर्थस्य सेवया ॥ १७ ॥
यानि निष्कृतिहीनानि पापानि विविधानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति तीर्थस्याऽस्य निषेवणात् ॥ १८ ॥
इदं तीर्थं महापुण्यं भगवत्पादनिस्सृतम् । कुष्ठादिरोगयुक्तोयःप्रत्यहंच पिबेदिदम्
सोऽपि रोगविहीनः सन्विष्णुलोकं च गच्छति ।
भगवाञ्छङ्करो देवो रहस्यानुभवे पुरा ॥ २० ॥
पार्वत्यै कथयामास तस्य तीर्थस्य वैभवम् । उक्तेष्वेतेषु सन्देहो न कर्तव्यःकदाचन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्थवादोऽयमिति च न वक्तव्यं कदाचन । येऽर्थवादमिदंब्रयुस्तेषांवैनास्तिकात्मनाम्
जिह्वाग्रे परशुं तप्तं प्रक्षिपन्ति च किङ्कराः । तस्मात्कटाहतीर्थं तु सेवनीयं प्रयत्नतः
सर्वदुःखप्रशमनमपवर्गफलप्रदम् । यत्र पीत्वा नरो भक्त्या सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥
एवमुक्त्वामहाभागःकाशींत्रैलोक्यपावनीम् । सम्प्राप्तोनारदःश्रीमान्सूतपौराणिकोत्तमः
संक्षेपतश्च भगवान्नैमिषे ह्युक्तवान्खलु । इदानीं श्रोतुमिच्छामः कटाहस्य च वैभवम्
सुविस्तरेण चाऽस्माकं वद सूत! कृपावशात् ॥ २७ ॥

श्रीसूत उवाच

भोभोस्तपोधनाः सर्वे नैमिषारण्यवासिनः । कटाहतीर्थमाहात्म्यंशृणुध्वंद्विजसत्तमाः
कटाहतीर्थं भो विप्राःसर्वलोकेषुविश्रुतम् । सर्वसम्पत्करं शुद्धं सर्वपापप्रणाशनम्
दुःस्वप्ननाशनं ह्येतन्महापातकनाशनम् । महाविघ्नप्रशमनं महाशान्तिकरं नृणाम् ॥३०
स्मृतिमात्रेण तत्पुंसां सर्वपापनिषूदनम् । मन्त्रेणाऽष्टाक्षरेणैव पिबेत्तीर्थं मनोहरम्
अथवा केशवाद्यैश्च नामभिर्वा पिबेज्जलम् । यद्वा नामत्रयेणाऽपि पिबेत्तीर्थं शुभप्रदम्
आहोस्विद्वेङ्कटेशस्य मन्त्रेणाऽष्टाक्षरेण वै । पिबेत्कटाहतीर्थं तद्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्
विना मन्त्रेण योः विप्रः सम्पिबेत्तीर्थमुत्तमम् । पापं मे नाशयक्षिप्रंजन्मान्तरकृतंमहत्
इत्युक्त्वा स पिबेन्नित्यं मोक्षमार्गैकसाधनम् । स्वामिपुष्करिणीस्नानंवराहश्रीशदर्शनम्
कटाहतीर्थपानं च त्रयं त्रैलोक्यदुर्लभम् । बहुना किमिहोक्तेन ब्रह्महत्यादिनाशनम् ॥

पुरा कश्चिद् द्विजो मोहात्केशवाख्यो बहुश्रुतम् ।
हत्वा खड्गेन दुर्बुद्ध्या ब्रह्महत्यामवाप्तवान् ॥ ३७ ॥

सोऽपितस्मिन्महातीर्थे पीत्वाजलमनुत्तमम् । केशवाख्योमहापापीविमुक्तोब्रह्महत्यया

ऋषय ऊचुः

कस्य पुत्रः केशवाख्यः कथं प्राप्तो भयङ्करीम् । ब्रह्महत्यामतिक्रूरामस्माकं वक्तुमर्हसि

श्रीसूत उवाच

तुङ्गभद्रातटे रम्ये गन्धर्वैरुपसेविते । अग्रहारो महानासीद्वेदाढ्य इति नामतः ॥ ४०॥
तस्मिन्वेदपुरे रम्ये ब्राह्मणा वेदपारगाः । शब्दशास्त्रपराः सर्वे ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मीमांसातर्कशास्त्रज्ञाः सर्वे वेदान्तवादिनः । धर्मशास्त्रेषु निरता अन्नदानपराः सदा ॥
पुत्रवन्तश्च ते सर्वे ह्यग्रहारे महाजनाः । वेदाढ्योऽप्यग्रहारे वै पद्मनाभ इति श्रुतः ॥
अस्य पुत्रः केशवाख्यः सर्वकर्मबहिष्कृतः । मातरं पितरंत्यक्त्वा भार्यामपिपतिव्रताम्
सर्वदा गणिकासक्तो वेश्यागारं विवेश ह । दिनद्वये च तां वेश्यामनुभूय द्विजस्ततः
निष्कद्वयं प्रदातव्यं हस्ते दत्त्वागतःसुखम् । वेश्ययाचाधनस्त्यक्तस्तत्संयोगैकतत्परः
इतस्ततश्चोरयित्वा बहुद्रव्याणि सन्ततम् । दत्त्वातया चिरंरेमे तद्गृहे बुभुजे च सः
एकेन चषकेणाऽसौ तया सह सुरां पपौ । सकदाचित्किरातैस्तु द्रव्यं हर्तुं ययौद्विजः

विप्रस्य कस्यचिद्गेहे सोऽपि कैरातवेषधृक् ।
केशवो विप्रबन्धुर्वै साहसी खड्गहस्तवान् ॥ ४६ ॥

तद्गृहस्वामिनं विप्रं हत्वा खड्गेन साहसात् । समादाय बहु द्रव्यंवेश्यागारंविवेशह
तं यान्तमनुयातिस्म ब्रह्महत्या भयङ्करी । नीलवस्त्रधरा भीमा भृशं रक्तशिरोरुहा ॥
गर्जन्ती साट्टहासं सा कम्पयन्ती च रोदसी । अनुद्रुतस्तया विप्रो बभ्रामजगतीतले

एवं भ्रमन्धरां सर्वां विप्रबन्धुर्दुरात्मवान् ।
स्वग्रामं प्रययौ भीत्या शौनकाद्या महौजसः ॥ ५३ ॥

अनुद्रुतस्तया भीतः प्रययौ स्वनिकेतनम् । ब्रह्महत्याप्यनुद्रुत्य तेन साकं गृहं ययौ
जनकं रक्ष रक्षेति केशवः शरणं ययौ । मा भैषीरिति स प्रोच्य पिता रक्षितुमुद्यतः

क्रूरैनं ब्रह्महत्या सा जनकं प्रत्यभाषत ॥ ५६ ॥

ब्रह्महत्योवाच

मैनं त्वं प्रतगृह्णीष्व पद्मनाभ द्विजोत्तम !। अयं सुरापीस्तेयी च ब्रह्महा चातिपातकी
मातृद्रोही पितृद्रोही भार्यात्यागी चदुष्टधीः । गणिकासक्तचित्तश्चह्येनंमुञ्चदुरात्मकम्
गृह्णासि चेत्सुतं विप्र महापातकिनं वृथा । त्वद्भार्यामस्य भार्यां चत्वांचपुत्रमिमंद्विज

भक्षयिष्यामि वंशं च तस्मान्मुञ्च दुरात्मकम् ।
इमं त्यजसि चेत्पुत्रं युष्मान्मुञ्चामि साम्प्रतम् ॥ ६० ॥

नैकस्याऽर्थे कुलं हन्तुमर्हसि त्वं महामते !। इत्युक्तः सतयातत्रपद्मनाभोऽब्रवीच्चताम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पद्मनाभ उवाच

बाधते मां सुतस्नेहः कथं पुत्रं परित्यजे। ब्रह्महत्या तदाकर्ण्य पद्मनाभं तमब्रवीत् ॥

ब्रह्महत्योवाच

पुत्रोऽयंपतितोऽभूत्तेवर्णाश्रमबहिष्कृतः। पुत्रेऽस्मिन्माकुरुस्नेहंनिन्दितंतस्यदर्शनम्
इत्युक्त्वा ब्रह्महत्या सा पद्मनाभस्य पश्यतः। हस्तेन प्रजहाराऽस्यसुतं केशवनामकम्
रुरोद तातततेति जनकं प्रब्रुवन्मुहुः। रुरुदुर्जनको माता भार्या तस्य दुरात्मनः ॥

तस्मिन्काले महाभागो भरद्वाजो महामुनिः।
दिष्ट्या समाययौ योगी शौनकाद्या महौजसः ॥ ६६ ॥

पद्मनाभोऽथ तं दृष्ट्वा भरद्वाजं महामुनिम्। स्तुत्वा प्रणम्यशरणंययाचे पुत्रकारणात्
भरद्वाज महाभाग साक्षाद्विष्णवंशको भवान्। त्वद्दर्शनमपुण्यानां भविता न कदाचन
ब्रह्महा च सुरापी च स्तेयी चाऽभूत्सुतो मम। पुत्रं प्रहर्तुमायाता ब्रह्महत्या भयङ्करी
भूयाद्यथा मे पुत्रोऽयं महापातकमोचितः। घोरेयं ब्रह्महत्या च यथा शीघ्रं लयं व्रजेत्
तमुपायं वदस्वाऽद्य मम पुत्रे दयां कुरु। एक एव हिपुत्रोमे नाऽन्योऽस्तितनयोमुने
सुते मृते तुवंशोमेसमुच्छिद्येतमूलतः। ततःपितृभ्यःपिण्डानांदाताऽपिनभवेद्ध्रुवम्
ततः कृपां कुरुष्व त्वमस्मासु भगवन्मुने। इत्युक्तः सभरद्वाजःसाक्षान्नारायणांशकः

ध्यात्वा तु सुचिरं कालं पद्मनाभं वचोऽब्रवीत् ॥ ७४ ॥

भरद्वाज उवाच

पद्मनाभ कृतं पापमतिक्रूरं सुतेन ते। नाऽस्य पापस्यशान्तिःस्यात्प्रायश्चित्तायुतैरपि
तथाऽपि तेसुतस्याऽहमस्य पापस्यशान्तये। प्रायश्चित्तंवदिष्यामिपद्मनाभश्शृणुद्विज
गङ्गाया दक्षिणे भागे द्विशतीयोजने द्विज। पूर्वाम्भोधेःपश्चिमेतु पञ्चभिर्योजनैर्मिते
सुवर्णमुखरीतीरे चोत्तरे क्रोशमात्रके। वेङ्कटाद्रिरिति ख्यातः सर्वलोकनमस्कृतः ॥
मेरुपुत्रोमहापुण्यःसर्वदेवाभिवन्दितः। वैकुण्ठलोकादानीतोविष्णोः क्रीडाचलोमहान्
गरुत्मता वेगवता स्वर्णमुख्यास्तटे शुभे। वर्तते देवसङ्घैश्च ऋषिसङ्घैश्च पूजितः ॥

तस्मिन्वेङ्कटशैलेन्द्रे साक्षान्नारायणः स्वयम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लक्ष्मीदेव्या च भूदेव्या नीलादेव्या समागतः ॥ ८१ ॥
वर्तते वेङ्कटेशः स साक्षान्मोक्षप्रदायकः । तस्य वेङ्कटनाथस्य ह्यालयस्य तथोत्तरे ॥
कटाहतीर्थं विप्रेन्द्र वर्तते मङ्गलप्रदम् । ब्रह्महत्यादि पापघ्नं वाञ्छितार्थप्रदायकम् ॥
सुतेनसाकंविप्रेन्द्र! पिब तीर्थं मनोहरम् । भरद्वाजस्यवाक्यंतच्छ्रुत्वावैवेदसम्मितम्
शिरसा तं प्रणम्याऽथ ययौ वेङ्कटपर्वतम् ॥ ८५ ॥
तं गत्वा वेङ्कटं शैलं स्वामिपुष्करिणीजले । सुतेनसाकंविप्रेन्द्रःसस्नौनियमपूर्वकम्
वराहस्वामिनं नत्वा श्रीनिवासालयं गतः । प्रदक्षिणं ततःकृत्वा विमानंसम्प्रणम्य च
पद्मनाभोऽथ पुत्रेण केशवेन दुरात्मना । पपौ कटाहतीर्थं तद्ब्रह्महत्याविनाशकम् ॥
तदानीं ब्रह्महत्या सा शीघ्रमेव लयं गता । अनन्तरं ततो गत्वा वेङ्कटेशं कृपानिधिम्
पुत्रेण सह विप्रेन्द्रः पद्मनाभो ददर्श सः । तदा प्रादुरभूद्देवो वेङ्कटेशो दयानिधिः ॥
कटाहतीर्थपानेन तोषितो वाक्यमब्रवीत् ॥ ९१ ॥

श्रीभगवानुवाच

पद्मनाभ! महाबुद्धे वेदवेदान्तपारग !। भरद्वाजस्य वाक्येन प्राप्य वेङ्कटपर्वतम् ॥९२॥
कटाहतीर्थं त्वं पीत्वा कृतार्थोऽसि नसंशयः । तवपुत्रःकेशवाख्योविमुक्तो ब्रह्महत्यया
तस्मात्कटाहतीर्थं तु सेवनीयंप्रयत्नतः । तस्मिंस्तीर्थे महाभाग! पीत्वाजलमनुत्तमम्
पापिनोऽपिकृतार्थाःस्युःसत्यंसत्यं न संशयः । मामकंलोकमागत्यसुखीभवमहामते
इत्युक्त्वा वेङ्कटेशोऽसावन्तर्धानं गतस्ततः ॥ ९६ ॥

श्रीसूत उवाच

तस्मात्तपोधनाः सर्वे शौनकाद्या महौजसः । कटाहतीर्थमाहात्म्यमितिहाससमन्वितम्
यथाश्रुतं मया सम्यक्तथोक्तं भवतां द्विजाः !॥ ९८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सूतशौनकसम्वादेकटाहतीर्थप्रशंसनंनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥

——:०:——

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकोनत्रिंशोऽध्यायः

अर्जुनतीर्थयात्रोपोद्घातवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

तीर्थानामिह सर्वेषां प्रभावः कथितस्त्वया । नदीनांपर्वतानाञ्च क्षेत्राणां सरसामपि
निर्देशात्पद्मगर्भस्य सुवर्णमुखरी नदी । नीता भुवमगस्त्येन व्याख्याता भवताऽनघ
तदुत्पत्तिप्रभावंचतीर्थौघांस्तत्समाश्रयान् । श्रोतुंसम्प्रीतिरुत्पन्नातन्नोवक्तुंत्वमर्हसि
प्रणम्य शम्भु नन्दीशं षडास्यं व्यासमेवच । मुनिभिः प्रार्थितःसूतस्तदावक्तुंप्रचक्रमे

श्रीसूत उवाच

साधु पृष्टंमहाभागा! भवद्भिर्मङ्गलावहम् । आख्यानमेतदाम्नायश्रवणोद्भूतसिद्धिदम्
शृणुताऽवहितादिव्यांकथांकल्मषनाशिनीम् । भरद्वाजेनकथितांपार्थायकथयामि वः
अवाप्य द्रुपदात्प्राज्ञाद्याज्ञसेनीं पृथासुताः । धृतराष्ट्रनिदेशेन जग्मुः करिपुरं शुभम् ॥
भीष्मेणचाऽम्बिकेयेनतत्रसम्मानितास्तदा । दुर्योधनादिभिःसार्द्धंन्यवसन्पञ्चवत्सरान्
ततोऽनुशिष्टोभीष्माद्यैर्धृतराष्ट्रो महायशाः । सर्वेषांकुलवृद्धानांवासुदेवस्यचाऽग्रतः
प्रददौ पाण्डुपुत्रेभ्यस्तत्सेवाहृष्टमानसः । सार्धराज्यं पुरवरंखाण्डवप्रस्थसञ्ज्ञिकम्
आमन्त्र्यपाण्डुतनयाधृतराष्ट्रादिकान्कुरून् । जग्मुस्तत्खाण्डवप्रस्थंपुरंकृष्णसमन्विताः
इन्द्रप्रस्थाह्वये तत्र रक्षिते विश्वकर्मणा । वसन्पुरेऽशिषत्पृथ्वीं सानुजो धर्मनन्दनः
गते कृष्णेनिजपुरं नारदस्याऽनुशासनात् । प्रतिज्ञांचक्रिरे पार्था धर्मज्ञा द्रौपदीं प्रति
यथाक्रमेण सा कृष्णा वर्षमेकैकमादरात् । एकैकस्य गृहे तिष्ठेत्प्रतिनिर्णयपूर्वकम्
यःपश्येत्तांपरगृहेस्थितांपाञ्चालनन्दिनीम् । तेनैकहायनमितं विधेयं तीर्थसेवनम् ॥
एवं कृतप्रतिज्ञास्ते पाण्डुभूपालनन्दनाः । व्यापारैर्लौकिसामान्यैर्निन्युःकालमतन्द्रिताः
अथ जानपदो विप्रो स्वगेहाङ्गणे स्थितः । चुक्रोश बहुधा धेनुर्हृता मे तस्करैरिति
समाश्वास्य च तं विप्रं प्रविवेश धनञ्जयः । आयुधानि समानेतुं त्वरयाशस्त्रमन्दिरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्रापश्यत्समासीनौ पाञ्चालीधर्मनन्दनौ । जानन्नपि प्रतिज्ञां स धनुर्जग्राह सेषुधिः
स गत्वा तस्करानाजौ निहत्य नृपनन्दनः । निवर्त्यधेनुं तांतस्मैददौविप्राय सादरम्
अथ विज्ञापयामास फाल्गुनो धर्मनन्दनम् ।
तीर्थयात्रा मया कार्या समयोल्लङ्घनादिति ॥ २१ ॥
अनुजस्य वचः श्रुत्वा सर्वधर्मविदाम्वरः । उवाच वचनं धीरः सादरं धर्मनन्दनः ॥

युधिष्ठिर उवाच

गवार्थं ब्राह्मणार्थश्च यद्वदेदनृतं वचः । यदाचरेदसत्कर्म तत्सत्यं तत्समञ्जसम् ॥२३
ब्राह्मणार्थं गवार्थं च त्वया कर्मेदृशं कृतम् । तदसद्भावमाप्नोति कथं कथय सुव्रत! ॥
प्रजापालनकृत्यस्य चोरोपेक्षणशिक्षणैः । नूनं फलं भवेद्राज्ञो ब्रह्महत्याश्वमेधजम् ॥
असाध्यान्वैरिणो ज्ञात्वाऽप्यवनीशो न भद्रभाक् ।
स्वदेशोपप्लवकरास्तस्करा यद्यशिक्षिताः ॥ २६
अस्माकं भूभुजांलोकजालस्यच हितंहियत् । त्वयेदृशंकृतंकर्मनाऽस्तिदोषोह्यतस्तव

श्रीसूत उवाच

धर्मपुत्रस्य वचनमाकर्ण्य रचिताञ्जलिः । पुनर्विज्ञापयामास धर्मनित्यो धनञ्जयः ॥

अर्जुन उवाच

मैवं भूपाल! वादीस्त्वं स्वप्रतिज्ञाऽतिलङ्घनम् । जानताधर्मसर्वस्वमुल्लसद्धर्ममूर्तिना
कृत्याकृत्यविदादक्षेणाऽऽत्मनाप्राक्समीरिता । नोल्लङ्घनीयासततं प्रतिज्ञापुरुषेण हि
अशक्तानां गतिः सेयं यद्वन्धुगुरुवाक्यतः ।
धर्मं त्यजन्ति समयं त्यक्त्वा प्राक्स्वं समीरितम् ॥ ३१ ॥
कृपया तीर्थगमनादार्यो यदि निवर्तयेत् । हतप्रतिज्ञं मां लोकाञ्जल्पतः को निवारयेत्
ममाऽपि तीर्थयात्रायां कौतुकोत्तरलं मनः । कर्तव्यं चस्मृतंराजन्नास्मदादिप्रशासनम्
तत्प्रसीद महाराज यत्तीर्थगमनोद्यमे । सम्माननीयः प्रभुभिः समयो ह्यनुजीविनाम्
तथेति भ्रातृभिः सार्द्धं कृतानुमतिरर्जुनः । अग्रजं तोषयामास प्रणामप्रश्रयादिभिः ॥
यथाऽहंभीमसेनादीन्भ्रातॄनमामन्त्र्यपाण्डवः । कृतस्वस्त्ययनोभव्यैर्निर्ययौधरणीसुरैः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पौराणिका ज्यौतिषिका भिषजो धरणीसुराः ।
अनुजग्मुर्भृत्यगणाः शिल्पिनः सूतमागधाः ॥ ३७ ॥
युधिष्ठिराज्ञया तस्य भोगत्यागक्षमं धनम् ।
गृहीत्वाऽनुययुः स्निग्धाः सभ्याः कोशाधिकारिणः ॥ ३८ ॥
स राजपुत्रः प्रथमं प्राप्य भागीरथीं नदीम् । गङ्गाद्वारं प्रयागं चसिषेवेकाशिकामपि
पश्यंस्तीर्थानि जाह्नव्यास्तत्तीरोपान्तवर्त्मना ।
आससाद समुत्तुङ्गकल्लोलं दक्षिणोदधिम् ॥ ४० ॥
महानदीं महापुण्यां प्रसिद्धं पुरुषोत्तमम् । सिंहाचलंचसम्वीक्ष्यप्राप्तवान्कृतकृत्यताम्
ततो ददर्श कौन्तेयः पुण्यांगोदावरींनदीम् । समस्तदुरितव्रातशातनोत्तीर्णगौरवाम्
कृताभिषेकस्तत्तोयैर्विधिवत्पाण्डुनन्दनः । प्रमोदं विविधैर्दानैरकरोद्भूसुवर्णकैः ॥४३
नदीं मलापहाख्यां चद्वष्ट्वामोदंययौशुभम् । ततःसमाससादाऽसौकृष्णवेणींसरिद्वराम्
शिवस्य नियतावासं चतुर्द्वारसमन्वितम् । नानातीर्थगणाकीर्णं श्रीपर्वतमवैक्षत ॥
नदीं पिनाकिनीं तीर्त्वागत्वादेवर्षिसेवितम् । नारायणप्रियावासमपश्यद्वेङ्कटाचलम्
शृङ्गेऽस्य भूभृतस्तुङ्गे स्थितं लोकैकनायकम् । अपूजयद्धरिंभक्त्याप्रसिद्धंशुभसिद्धये
अवरुह्य वेङ्कटमहाद्रिशृङ्गतः स ददर्श सिद्धमुनिसङ्घसेविताम् ।
कलशोद्भवेन मुनिना समाहृतां तटिनीं सुवर्णमुखरीसमाह्वयाम् ॥ ४८ ॥

इति श्रीस्कन्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्येऽर्जुनतीर्थयात्रागमन-वर्णनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिंशोऽध्यायः

सुवर्णमुखरीवर्णनेऽर्जुनस्यतत्तीरस्थकालहस्तीश्वरादिसेवाप्राप्तिवर्णनम्

सूत उवाच

तथा सर्वाणि तीर्थानि समालोक्यागतस्य च । मुदं प्रगुणयाश्चक्रेसापार्थस्यमहापगा
यस्यास्तटनिकुञ्जेषुमोदन्तेवनिताःसुखाः । सिद्धाःसंसेवितावातैःशीकरासारशीतलैः
या समुद्यतहस्तेव गङ्गामाकाशवाहिनीम् । आलिङ्गितुं समुत्तुङ्गैः कल्लोलैरभ्रसङ्गिभिः
धूमैराहुतिसम्भूतैस्तरुशाखोपलम्भिभिः । वल्कलैश्च विराजन्ते यत्तटाश्रमभूमयः ॥४॥
मुनीन्द्रैः सुरवर्यैश्चस्थापितानि समन्ततः । यत्तटद्वितये भान्ति दिव्यलिङ्गानिशूलिनः
यदीयसैकतावासविश्रान्ता मानसं सरः । न स्मरन्ति निजावासं मरालाविहगोत्तमाः
शमितावग्रहातङ्कैः कुल्यामुखविनिर्गतैः । पुष्णातितोयैःसस्यानिलोकरक्षाक्षमाणिया
चक्रवाककुचोत्तुङ्गवीचिवल्लीविभूषिता । आवर्तनाभिविलसत्सैकतश्रोणिमण्डला ॥८
प्रफुल्लपद्मवदना चलन्मीनयुगेक्षणा । विलसत्फेनवसना हंसयानमनोहरा ॥ ६ ॥
जलपक्षिरवालापा नयनानन्दकारिणी । अपूर्वकामिनीरूपा या विभात्यम्बुधिप्रिया ॥
रोधस्यन्तरवाहिन्या नद्याः प्राच्यां धनञ्जयः । ददर्श शैलमुत्तुङ्गं कालहस्तिसमाह्वयम्
उदग्रशिखराभोगोल्लिखिताकाशमण्डलम् । सप्तपातालमूलाधोरूढमूलोपलाञ्चितम् ॥
स्नात्वातस्यांमहानद्यांतस्मिञ्छैलेसुरार्चितम् । अपश्यदर्जुनोदेवंकालहस्तीशनामकम्
सम्पूज्य च महादेवं नगेन्द्रतनयासखम् । मनसा भक्तियुक्तेनकृतार्थत्वमुपेयिवान् ॥१४
ततो महागिरौ तस्मिन्नद्भुतैकनिकेतने । चचाराऽभूतपूर्वाणां विशेषाणां दिदृक्षया ॥
सिद्धानालोकयामास वसतो गिरिसानुषु । गायतो देवदेवस्य चरित्राण्यवलायुतान्

अप्सरोललनाजुष्टान्पुष्पासवमदाकुलान् ।
निकुञ्जेषु समासीनान्गन्धर्वानैक्षतादरान् ॥ १७ ॥

विविक्तेषु प्रदेशेषु शिवध्यानपरायणान् । अपश्यद्योगिनो दिव्यानादरानन्दशालिनः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रशान्तान्याश्रमपदान्यवैक्षत समन्ततः । बलिनीवारविलसद्द्वारभूमींश्च पाण्डवः ॥
निराहारान्वायुभुजः पर्णादानातपाशनान् ।
शान्तानालोकयामास मुनीन्नियमितेन्द्रियान् ॥ २० ॥
मुदं वितेनिरे तस्य नेत्रयोः कमलाकराः । फुल्लसौगन्धिकामोदसम्वासितदिगन्तरा
मृगयासम्भृतधियश्चरतोऽधिज्यकार्मुकान् ॥ २२ ॥
ददर्शान्वेषितमृगान्किरातान्वनितायुतान् । ततो दक्षिणदिग्भागे चरन्नद्रेर्मनोहरे ॥
पुण्यमाश्रममद्राक्षीद्भरद्वाजस्य कौरवः । कदलीनारिकेलाम्रकोलचम्पकचन्दनैः ॥२४ ॥
तक्कोलाशोकहिन्तालतालकेतकिदाडिमैः । जम्बूकदम्बकतकखदिरार्जुनपाटलैः ॥२५ ॥
नागपुन्नागसरलदेवदारुकरञ्जकैः । लवङ्गलुङ्गलवलीप्रियङ्गूतिलकैरपि ॥ २६ ॥
बिभीतश्रीफलाश्वत्थमधूकप्लक्षकेसरैः । पूगजम्बीरनारङ्गनिम्बामलककौशिकैः ॥२७
अन्यैश्च फलपुष्पाढ्यैः शोभितं धरणीरुहैः ।
वासन्तीकुन्दजात्यादिलताभिः परिवेष्टितम् ॥ २८ ॥
अपूर्वसौरभाकृष्टभ्रमरीभिः समन्ततः । चक्रवाकबककौञ्चहंसकारण्डवाश्रयैः ॥ २६॥
सौगन्धिकोत्पलाम्भोजकैरवौघविराजितैः। सरोभिरमृतस्यन्दिमधुरस्फारवारिभिः
समापादितलक्ष्मीकं कौतुकैकनिकेतनम् । सिंहदन्ताचलव्याघ्रतरक्षुरुरुरङ्कुभिः ॥
मृगैरन्यैः समाकीर्णमन्योऽन्यहितकारिभिः । जितचैत्ररथोद्यानमधरीकृतनन्दनम् ॥
अतिवाङ्मनसोदारं परमानन्दकारणम् । शिवागमानां दिव्यानामर्थजातमनुत्तमम् ॥
प्रकाशयन्तिशावानांयत्रमञ्जुगिरः शुकाः । यस्मिन्हुताशनोदारधूमश्यामलितंनभः
अकालजलदभ्रान्तिमातनोति शिखण्डिनाम् ।
यस्मिन्विहारश्रान्तानां सिंहानां स्वेच्छयागताः ॥ ३५ ॥
निर्वापयन्ति गात्राणि करिणः करशीकरैः । तदाश्रमपदंपश्यन्विस्मयाक्रान्तमानसः
प्रभावं पाण्डुतनयः प्रशशंस तपस्विनाम् । निवार्य तत्र तत्रैव सकलाननुजीविनः ॥
मित्रैर्विप्रवरैः सार्धं प्रविवेश तमाश्रमम् । अग्रे ददर्श कौन्तेयः स्फुरत्पावकतेजसम्
भरद्वाजं मुनिवरैरनेकैः परिवारितम् । भस्मानुलिप्तसर्वाङ्गं मृगचर्मोत्तरीयकम् ॥३६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नववारिदसम्वीतं कैलासमिव भास्वरम् ।
जटाभिर्लम्बमानाभिर्भास्वन्तं स्वर्णकान्तिभिः ॥ ४० ॥
स्थिरविद्युल्लताकीर्णमिव शारदनीरदम् । श्रुतिस्मृतिपुराणार्थैरेकीभूय समागतैः ॥
अङ्गीकृतमिवाऽऽकारं दिव्यज्ञानशुभास्पदम् ।
धृतिक्षान्तिदयातुष्टिशान्तिभिर्नित्यसेवितम् ॥ ४२ ॥
प्रियाभिरिव रक्ताभिरखण्डब्रह्मवर्चसम् । उपगम्य शनैः पार्थस्तत्पादाम्बुजयोःपुरः ॥
चक्रे प्रणामं साष्टाङ्गं समालिङ्गितभूतलम् ॥ ४४ ॥
तमागतं पृथापुत्रमुत्थाप्य मुनिपुङ्गवः । आशीर्भिरेधयाञ्चक्रे प्रहर्षोत्फुल्लमानसः ॥४५॥
सम्पूज्यचयथान्यायंतमर्घ्याद्यैःप्रियातिथिम् । विनिर्दिष्टासनासीनंतमपृच्छदनामयम्
सम्माननमवाप्याऽस्मान्मुनेःपाण्डवमध्यमः । प्रियैर्वाक्यैर्मुनिपतेरकरोन्मनसो मुदम्
सस्माराऽथ भरद्वाजः स्वर्धेनुं कामदोहिनीम् ।
सा वितेनेऽतिमहतीं भक्ष्यभोज्यादिकल्पनाम् ॥ ४८ ॥
भुक्त्वा पार्थः सानुचरस्तमुपास्यतपोनिधिम् । दिनशेषंकथालापकौतुकेनात्यऽवाहयत्
ततःसायन्तनींसंध्यामुपास्यहुतपावकः । विप्रैरमात्यैः सहितो ययौतस्यकुटीगृहान्
तत्रासीनो मुनिपतेराशीर्भिरभिनन्दितः । आनन्द्यमानो मुमुदे तन्नदीशीतलानिलैः ॥
सम्प्रापिता केन भुवः प्रभूता कस्मान्महीध्रादधिकप्रभावा ।
इति प्रभावं परिपृच्छ्य नद्याः श्रोतुं मुनीन्द्रान्मतिरस्य जज्ञे ॥ ५२ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशातिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायां भरद्वाजाश्रमवर्णनं
नाम त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकत्रिंशोऽध्यायः

सुवर्णमुखरीप्रभावशुश्रूषया भरद्वाजम्प्रत्यर्जुनप्रश्नवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

कृतसायन्तनविधिं हुताशनसमद्युतिम् । सुखासीनं मुनिपतिं प्रणम्य भरतर्षभः ॥१

तदीयशीतलामोदसुधापूरानुमोदितः । गम्भीरं प्रश्रयोपेतमिदम्वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

अर्जुन उवाच

मुनिपुङ्गव! लोकेऽस्मिन्धन्य एकोऽहमेव हि । पुत्राविशेषं भवता यदेवं सम्यगादृतः

भवदादरसञ्जातकौतुकं मम मानसम् । भवद्वाक्यामृतं दिव्यं पातुं त्वरयतीव माम्

कस्माच्छैलादियंजाताकेनानीतामहानदी । किम्पुण्यंस्नानदानाद्यैःकृतैस्तत्रोपलभ्यते

अस्याःप्रभावं प्रभवं प्रह्वस्य मम सन्मुखे । वक्तुमर्हसि कार्यो हि भक्तानुग्रह एव ते॥

अर्जुनस्यवचःश्रुत्वाभरद्वाजोद्विजोत्तमः । तद्वाननं समालोकयवाक्यं वाक्यविदब्रवीत्

भरद्वाज उवाच

त्वमर्जुन! महाबाहो कौरवान्वयपावनः । विशेषान्मम मान्योऽसि धर्मपुत्रानुजोयतः

अनेके भूमिपा दृष्टा न ते त्वमिवफाल्गुन । लीलार्जवदयौदार्यधैर्यगाम्भीर्यशालिनः

कुलं विद्या धनञ्चैव बलिनां मदकारणम् । भवादृशानांभव्यानां तानि प्रश्रयकारणम्

प्राज्येषु राज्यभोगेषु विद्यमानेषुकौरव । ऋतेभवन्तंकोवाऽन्यो नोपैति विकृतेर्वशम्

परवानस्मि कौन्तेय! गुणैर्लोकोत्तरैस्तव । किमस्त्यकथनीयन्तेकौतुकोपेतमानस!

श्रृणु राजन्कथां दिव्यां मया मुनिमुखाच्छ्रुताम् ।
यां श्रुत्वा पातकातङ्कान्मुच्यन्ते सर्वजन्तवः ॥ १३ ॥

पूर्वं दाक्षायणी देवीजनकेनाऽवमानिता । त्यक्त्वा तनुन्तां नीहारगिरेरभवदात्मजा

सप्तर्षिभिरुपागम्य प्रार्थितो धरणीधरः । मृत्युञ्जयाय स्वां पुत्रीं विवाहे दातुमुद्यतः

वृषभाङ्को जगत्स्वामीविवोढुंसर्वमङ्गलाम् । प्राप्तो हिमवदावासमोषधीप्रस्थनामकम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तच्छासनात्समाजग्मुः स्थावराणि चराणि च।
भूतानि भूतनाथस्य कल्याणमभिनन्दितुम् ॥ १७ ॥

तद्भूरिभारसम्भग्ना भूमिरुत्तरसंश्रया। निम्नतामाययौ तावद्यावत्पातालमास्थिता
निर्भारलाघवादस्माद्भृशं दक्षिणगामिनी। ऊर्ध्वंगता च तं दृष्ट्वा सर्वेषामभवद्भयम्
ज्ञात्वा तां विकृतिं भूमेर्दृष्ट्वाऽगस्त्यंमहेश्वरः। इत एहिमहाप्राज्ञेत्युक्त्वावचनमब्रवीत्
आगतेषु समस्तेषु भूतेष्वत्र वसुन्धरा। तद्भारेण समाक्रान्ता विकृतिं समुपागता ॥
तद्भुवः साम्यकरणे त्वमर्हसि महामते। ऋते त्वामत्र हि त्वत्तः परेणैतत्कथम्भवेत्
मत्तेजःसम्भवो हि त्वं लोकसंरक्षणोद्यतः। तस्मान्मद्वचनाद्वत्स भुवमेतां समीकुरुः
मत्पाणिग्रहणाल्लोककौतुकायत्तबुद्धिषु। आगतेषु समस्तेषु स्थातव्यम्भविताऽपिच
त्वं न तिष्ठसि चेदत्र नकश्चिद्विकृतिम्भुवः। अपनेतुं हि शक्नोति तद्गन्तव्यंत्वयाऽनघ
इमांगिरिसुतापाणिग्रहकल्याणभासुराम्। मूर्तिंप्रदर्शयिष्यामि यत्र तिष्ठसि तत्र ते
इत्युक्तवातं परिष्वज्यविससर्जमहेश्वरः। तथेतितंप्रणम्याऽसौययौयाम्यांदिशंमुनिः

विन्ध्याद्रिं समतिक्रम्य दक्षिणामागते दिशम्।
अगस्त्ये मुनिशार्दूले मही साम्यमुपाययौ ॥ २८ ॥

भुवोऽपनीय विकृतिं स्थितं कलशजं मुनिम्। तुष्टुवुर्हर्षतरलाः सुरगन्धर्वकिन्नराः ॥
स ददर्श ततो गत्वा कञ्चिच्छैलं समुन्नतम्। विततैर्धरणीम्पादैर्धृत्वासंस्थितमग्रतः
महौषधीनां रत्नानामशेषाणां स्वयम्भुवा। अखण्डतेजोदीप्तानांविनिर्मितमिवाकरम्
समुन्नतैर्यः शिखरैर्निपतद्व्योमभूतले। उदारधारासम्पन्नैर्दधातीव निरन्तरम् ॥३२
शनैरारुह्य तं शैलमगस्त्यो मुनिपुङ्गवः। निवासाय मतिं चक्रे रम्ये तच्छिखरस्थले
तस्यामृतोपमेयस्य पद्मोत्पलकुलश्रियः। नानाद्रुमपरीतस्य कासारस्योत्तरे तटे ॥

मनोहरे महीभागे विधायाऽऽश्रममुत्तमम्।
आराध्य पितृदेवर्षीन्विधिवद्वास्तुदेवताम् ॥ ३५ ॥

उवास सुचिरन्तत्र मुनिसङ्घसमन्वितः। देवतासिद्धगन्धर्वाप्सरोजुष्टमहीधरे ॥ ३६॥

तपः समावेशितचित्तवृत्तौ तपोवने तिष्ठति कुम्भजाते।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रशस्तसौभाग्य समन्वितोऽद्रिरगस्त्यशैलाह्वयमाससाद ॥ ३७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायामर्जुनभरद्वाजसम्वादे शङ्करविवाहागस्त्यदक्षिणदिग्गमनवर्णनंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥३१॥

द्वात्रिंशोऽध्यायः

नद्युत्पादनायाऽगस्त्यम्प्रत्याकाशवाण्युक्तिवर्णनम्

भरद्वाज उवाच

स कदाचिन्मुनिवरः कृतपौर्वाह्णिकक्रियः । विवेश देवतागारं समाराधयितुं शिवम्
अदृश्यरूपा वाग्देवी तत्राश्राऽवि महात्मना । तेनाद्भुतोपपन्नेन व्यक्तवर्णसमुज्ज्वला ॥
आकाशवाण्युवाचैनमगस्त्यं जपतास्वरम् ।
नदीहीनो ह्ययं देशः प्रसिद्धोऽपि न शोभते ॥ ३ ॥
ज्ञानविज्ञानविमुखः साकार इव भूसुरः । दीक्षेव दक्षिणाहीना ज्योत्स्नाहीनेवशर्वरी
न विभाति नदीहीना पृथ्वीयं भूसुरोत्तम । प्रवर्तय नदींकाञ्चिल्लोकानांहितकाम्यया
अगाधदुरितोद्भूतभीतिमोचनशालिनीम् । हितमेतत्सुरौघानाञ्चैतन्मुनिवरार्थितम् ॥
भद्रमेतन्मनुष्याणामेतदाचर सुव्रत । देवानामृषिवर्याणां भूजनानां हितावहाम् ॥
पापपङ्कप्रशमनीं प्रवर्तय महानदीम् ॥ ८ ॥

श्रीभरद्वाज उवाच

तदाकर्ण्य वचो विप्रः क्षणं चिन्तापरायणः । समाप्य देवतापूजांवहिर्वेद्यामुपाविशत्
आनाययामास तदा तदाश्रमगतान्मुनीन् । तेषामकथयच्चाऽसौ दिव्यवाणीरितं वचः
तदद्भुतमुपश्रुत्य मुनयो हृष्टमानसाः ॥ ११ ॥
अभिवन्द्य मुनिश्रेष्ठं मैत्रावरुणिमब्रुवन् ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुनय ऊचुः

आश्चर्याणां महाश्चर्यं मङ्गलानां च मङ्गलम् । तवैव शोभते दिव्यंत्वच्चरित्रं कृपानिधे
तव हुङ्कारमात्रेण भ्रष्टो देवाधिराज्यतः । नहुषः कीटतां प्राप ततश्चित्रं न विद्यते
समावृतधराचक्रः कल्लोलाताडिताम्बरः । किन्वतो विद्यतेचित्रं यदब्धिश्चुलुकीकृतः
सूर्यमार्गनिरोधार्थप्रवृत्तोविन्ध्यभूधरः । त्वयाप्रशान्तिंगमितः किन्वतो विद्यते परम्

तवाऽद्भुतानि कर्माणि कः स्तोतुं प्रभवेद्भुवि।
मन्महाभाग्ययोगात्त्वं प्राप्तोऽसीति शरीरिताम् ॥ १७ ॥

वयं कृतार्थाः सञ्जातास्त्रैलोक्येयन्महामुने !। निवसामोऽत्रभवतासनाथाह्याश्रमस्थले
वण्यों हि याम्यतोदूरेविषयोऽयंद्विजोत्तम । समस्तवस्तुपूर्णोऽपि नदीहीनोनराजते
किमलब्धनदीस्नानेनाऽमुनाहतजन्मना । अनदीके जनपदे वासादजननं वरम् ॥ २० ॥
परिपाकस्तु भाग्यानामस्माकंसमुपस्थितः । यदादिष्टोऽसिविबुधैःप्रवर्तयमहानदीम्
प्रवर्तितायांदेशेऽस्मिन्महानद्यांतवाऽनघ!। कदानुखलुयास्याम ःकृतस्नानाःकृतार्थताम्
किं वितर्केण बहुना प्रयत्नः क्रियतां ध्रुवम् । समानेतुंजगद्वन्द्यांशरण्यांसरिदुत्तमाम्

श्रीभरद्वाज उवाच

स तेषां वचनं हृद्यंमानयित्वामहाद्विजः । समानेष्यामिसरितमितिचक्रेविनिश्चयम्
मुनीश्वरैरनुज्ञातस्तानभ्यर्च्य सुरानपि । विशेषपूजां विधिवद्विधायपुरविद्विषः ॥
अङ्गीकृत्य व्रतं गाढं बहुलक्लेशदुः सहम् । अनन्यसुलभं यत्नात्स चकार महत्तपः ॥
घोरेषु घर्मदिवसेष्वन्तरस्थोहविर्भुजाम् । चतुर्णां सवितृन्यस्तदृष्टिर्नापययौ क्रमम्
वार्षिकेषु दिनेषूग्रवायुसम्पातदुःसहैः । आसारैस्ताड्यमानोऽपि नोद्वेगमगमद्धृदि
हेमन्ते समये तिष्ठन्कण्ठदघ्नेषु वारिषु । जपध्यानपरोभूत्वानकिञ्चिद्विकृतिं ययौ ॥
ततः समीहितार्थस्य विलम्बमवलोक्यसः । पुनर्गाढतरां निष्ठां प्रपेदेलोकभीषणाम्
निगृह्य मानसीं वृत्तिंनिराहारोजितेन्द्रियः । अविज्ञातबहिर्वृत्तिस्तस्थौपाषाणवत्तदा
एवं तपस्यतस्तस्य सर्वाङ्गेषु हुताशनः । अभ्रंलिहो ज्वलज्ज्योतिर्निश्चक्रामभयङ्करः
ततोऽद्भुतशिखाजालैरावृताः सर्वतो दिशः । समुद्रभयोद्विग्ना जनौघाः परिचुक्रुशुः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदा तथाविधं घोरं जगत्संक्षोभमागतम् । देवाविज्ञापयामासुर्नमस्कृत्याऽब्जजन्मने

तानाश्वास्य ततो ब्रह्मा सिद्धगन्धर्व सेवितः ।
प्रादुरासीत्कुम्भभुवः पुरोभागे तपस्यतः ॥ ३५ ॥

तमागतं समालोक्य ब्रह्माणंपरमंद्विजः । प्रणम्यविविधैःस्तोत्रैस्तोषयामासतन्मनाः
ततस्तं विनयानम्रमगस्त्यं वीक्ष्य पद्मभूः । प्रसादसुमुखो भूत्वा पूतां गिरमुपाददे ॥

ब्रह्मोवाच

परितुष्टोऽस्मि तपसा दुश्चरेण तवाऽनघ !। वृणीष्वयद्यदिष्टंतेतत्तद्दास्यामिसुव्रत!

अगस्त्य उवाच

तव प्रसादात्सकलमुपपन्नं मम प्रभो !। सम्प्रयच्छसि चेत्कामं याचेनिःशङ्कया धिया
नदीहीनमिमं देशं दृष्ट्वा खिद्यति मे मनः । अर्थाववोधरहितं श्रुतिपाठमिवाऽधिकम्
उर्वीं पावयितुं दक्षां रक्षितुं च महानदीम् । प्रसादं कुरु देवेश ममेष्टमिदमेव हि ॥४१

श्रीभरद्वाज उवाच

अगस्त्यस्यवचः श्रुत्वाभूयादेवमितिब्रुवन् । सस्मार मनसाब्रह्मासुरवर्त्माश्रयांनदीम्
अथोपेत्य वियद्गङ्गा पुरस्तात्परमेष्ठिनः । अतिष्ठन्मुकुटन्यस्तप्रशस्ताञ्जलिभासुरा ॥
स्वशासनात्समायातां विनयानतमस्तकाम् । तां सर्वजगतांधात्रीमिदंवचनमब्रवीत्

ब्रह्मोवाच

गङ्गेमयाऽनुशास्यासिकार्ये लोकोपकारके । तवापिलोकरक्षायांममैवनियतास्थितिः
देशे नदीविहीनेऽत्र प्रवर्तयितुमापगाम् । हितार्थं सर्वलोकानां कुम्भजन्मा समीहते
तस्मात्त्वमवतीर्योर्वीं स्वांशेनैकेन भूजनान् । पुनीहि गच्छ वसुधामेतद्दर्शितवर्त्मना
भूलोके सम्प्रवृत्ते तु प्रवाहेसिद्धिकाङ्क्षिणः । सेविष्यन्तेसुरवरामुनिवर्याश्चसन्ततम्
नदीभूत्तमतांयाहि त्राहि त्वत्संश्रयाञ्जनान् । कुरुप्रियमगस्त्यस्यगच्छभद्रेयथासुखम्

भरद्वाज उवाच

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे ब्रह्मा तया नद्या च तेन च । प्रणामपूजनस्तोत्रैर्विशेषैरभिनन्दितः ॥

अथ गङ्गा मुनिपतेः पुरस्तात्स्वांशसम्भवाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिव्यतेजोमयीं मूर्ति दर्शयित्वा वचोऽब्रवीत् ॥ ५१ ॥

गङ्गोवाच

मदीयांशोऽयमवनीं सम्प्राप्य मुनिवल्लभ !। पूरयिष्यति तेऽभीष्टं नदीरूपं समाश्रितः

भरद्वाज उवाच

इत्युक्तवा सिद्धवाहिन्यां गतायां तत्प्रयुक्तया
गन्तव्यं वर्त्मना केनेत्युक्तो मुनिरुवाच ताम् ॥ ५३ ॥

अगस्त्य उवाच

गच्छन्पुरस्तात्कल्याणि ! त्वदीयगमनोचितम् । अहंप्रदर्शयिष्यामिमार्गंत्वंमामनुव्रज
इत्युक्तामुनिना तेन सम्प्रहृष्टा तवाऽनघ । यदिष्टं तत्करिष्येऽहमिति प्रोवाच साशुभा
अथ मुनिरवतार्य तां नगेन्द्राद्दृढ्तटिनीतनुमभ्रसङ्गिशृङ्गात् ।
मुदिततरमना ययौ पुरस्तात्तदभिमतां पदवीं प्रदर्शयन्सः ॥ ५६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये श्रीसुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायां सुवर्णमुखर्याविर्भाववर्णनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः

सुवर्णमुखरीम्प्रति शक्रादिस्तुतिवर्णनम्

भरद्वाज उवाच

तदादिव्यविमानस्थाःशक्रमुख्यादिवौकसः । अगस्त्यमनुयान्तींतामनुजग्मुर्महापगाम्
नवावतारां तां दिव्यां सर्वे च मुनिपुङ्गवाः । कृताञ्जलिपुटाःस्तोत्रैरनुयाताःसिषेविरे
सिद्धचारणगन्धर्वाः सम्भूताश्च सहस्रशः । तां नदीं तं मुनीन्द्रंचप्रशशंसुःशुभैःस्तवैः
सुधोपमानममलं दिष्ट्या लब्धमिदं जलम् । इत्यौत्सुक्यरसायत्ता ननन्दुर्धरणीजनाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदा निदेशाद्देवस्य पद्मयोनेः समीरणः। शृण्वतां सर्वदेवानामिदं वचनमब्रवीत् ॥

वायुरुवाच

सुवर्णमिव लोकानां भागधेयादियं नदी। नीता भुवमगस्त्येन मुखरीकृतदिङ्मुखा

तस्माद्यास्यति विख्यातिं सर्वलोकाभिनन्दिताम्।
सुवर्णमुखरीनाम्ना धाम्ना कैवल्यसम्पदा ॥ ७ ॥

एषा सुवर्णमुखरी सरित्सु सकलास्वपि। विशिष्टा सेवनीया च ब्रह्मणोवचनंत्विदम्

भरद्वाज उवाच

श्रुत्वेत्थं पवनेनोक्तं वचनंकुम्भसम्भवः। तुतोषविस्मयाक्रान्तःस्वान्तःपुलकिताङ्गकः
एवमेषा दिव्यनदी स्नानपानादिकल्पनैः। सौख्यावहा मनुष्याणां प्रतिष्ठामगमद्भुवि
आज्ञया पद्मगर्भस्य तटिन्याकाशवाहिनी। सुवर्णमुखरीनाम्ना पुनात्यात्मैकसंश्रयान्

बहून्गिरीन्द्रान्वनमण्डलञ्च देशाननेकान्सरिदुत्तमेयम्।
क्रमादतिक्रम्य निषेव्यमाणा महानदीभिर्गिरिसम्भवाभिः ॥ १२ ॥
रोगाहतानामधिकातुराणामनामयैकप्रतिपादकानि।
अन्तर्बहिःसम्भृतभूरितापनिवारणानि प्रियकारणानि ॥ १३ ॥
विहारलोलद्विरदप्रकाण्डशुण्डामहाघातरयोत्थितेन।
पुष्पोपहारं पृषतोत्करेण हर्षाद्ददातीव दिवाकरस्य ॥ १४ ॥
सौगन्धिकाम्भोरुहकैरवाणां सौरभ्यसम्वासितदिङ्मुखानाम्।
द्विरेफभाग्यैकनिकेतनानामाधारभूतान्प्रतिनिर्मलानि ॥ १५ ॥
लीलावगाहोत्सुकनाकनारीसीमन्तसिन्दूररजोऽरुणानि।
तत्केशपाशच्युतपारिजातप्रसूनगन्धैरधिवासितानि ॥ १६ ॥
सा बिभ्रती सम्भृतमङ्गलानि स्वादून्यपङ्कान्यतिनिर्मलानि।
सुधोपमानानि सुरेन्द्रसूनोः पयांसि पापप्रतिघातुकानि ॥ १७ ॥
अगस्त्यशैलात्समवाप्तजन्मा नीता भुवं कुम्भसमुद्भवेन ॥
प्रशस्ततीर्थौघविराजमाना समाययौ दक्षिणवारिराशिम् ॥ १८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शीकराक्षतविन्यासै रत्नदीपार्पणैरपि । प्रत्युद्ययुस्तामम्भोधेर्वीचयोऽभिमुखागताः ॥
तरङ्गहस्तैरालिङ्ग्य सम्भाव्यैनां समागताम् । चकार सरितां नाथःप्रियमाघोषभाषणैः
प्राप्तायामनुकूलायां तदा तस्यामपांनिधेः । प्रहृष्टेन तरङ्गेण जीवनं ववृधेतराम् ॥२१॥
इत्थं संसृज्यसरितमगस्त्यस्तामुदन्वता । स्तुत्वाययौसमामन्त्र्यकृतकृत्योयदृच्छया

अर्जुन उवाच

त्वयैव कथितो ब्रह्मन्महानद्याः समुद्भवः । अस्याः प्रभावं भगवन्निदानीं श्रोतुमुत्सहे

भरद्वाज उवाच

अहोनिवर्हणंसर्वश्रेयसामेककारणम् । शृणुमाहात्म्यमस्यास्तेकथयिष्यामिपाण्डव !

पाश्चात्त्यं जन्म सम्प्राप्य ज्ञानिनां कर्मणः क्षये ।
सुवर्णमुखरीस्नानं सिद्ध्येद्ब्रह्मत्वकारणम् ॥ २५ ॥

एतां सुवर्णमुखरीं योजनानां शतैरपि । स्मृत्वा मनुष्यः पापेभ्यो मुच्यतेनात्रसंशयः
निःक्षिप्तमस्थि जन्तूनां सुवर्णमुखरीजले । सोपानतां समायातिब्रह्मलोकाधिरोहणे
स्मरन्तः स्वर्णमुखरींयत्र कुत्राऽपिमानवाः । तोयान्तरेषुस्नात्वापिलभन्तेफलमुत्तमम्
तावद्देवाऽभिभूयन्ते नराः पातककोटिभिः । सुवर्णमुखरीस्नानंयावन्नोलभ्यते शुभम्
दिव्यान्तरिक्षभौमानितीर्थानि निजसिद्धये । स्मरन्त्यहरहः प्रातः सुवर्णमुखरींनदीम्
अगस्त्याचलसम्भूता दक्षिणोदधिगामिनी । पापानिस्वर्णमुखरीस्मरणादेवनाशयेत्
सुवर्णमुखरीस्नानलोलुपेनाऽन्तरात्मना । वाञ्छन्ति मर्त्यतामेव देवाः शक्रपुरोगमाः ॥
सुवर्णमुखरीतोयपुष्टसस्यान्नभोजिनः । न लिप्यन्ते महापापैर्दुर्भोजनशतोद्भवैः ॥३३॥
अपि निष्कमितं पीतं सुवर्णमुखरीजलम् । नाशयेदद्रितुल्यानि ह्याशुपापानिदेहिनाम्
प्राप्याऽपि मानुषं जन्म सुवर्णमुखरीजले । ये वा स्नानं न कुर्वन्तितेषांजन्मनिरर्थकम्
सुवर्णमुखरीस्नानं यदेकं विधिना कृतम् । जाह्नवीस्नानकोटीनां समं भवति पर्वसु ॥
गोविन्द इव देवेषु नक्षत्रेष्विव चन्द्रमाः । नरेष्विव महीपालो भूरुहेष्विव कल्पकः
महाभूतेष्विव वियन्मायेवाऽखिलशक्तिषु । गायत्रीव च मन्त्रेषु वज्रं देवायुधेष्विव ॥

तत्त्वेष्विवाऽऽत्मनस्तत्त्वं रुद्राध्यायो यजुष्ष्विव ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनन्त इव नागेषु हिमाचल इवाऽद्रिषु ॥ ३६ ॥
पोत्रिक्षेत्रमिव क्षेत्रेष्विन्द्रियेष्विव मानसम् । नदीष्वपि चसर्वासुसुवर्णमुखरीवरा
नित्यं स्मरेन्नमस्कुर्यात्कीर्तयेन्मनसाऽर्चयेत् ।
शुद्धिक्षेमशिवापेक्षी सुवर्णमुखरीं शुभाम् ॥ ४१ ॥
अगस्त्याचलसम्भूतां दक्षिणोदधिगामिनीम् ।
समस्तपापहन्त्रींत्वांसुवर्णमुखरीं श्रये ॥ ४२ ॥
महापातकविप्लुष्टंगात्रं ममतपोदकैः । क्षालयामि जगद्धात्रि! श्रेयसा योजयस्वमाम्
इति सूक्तद्वयं सम्यगुच्चार्य नियतो नरः । सुवर्णमुखरीतोये स्नात्वा शुद्धः प्रमोदते ॥
ब्रह्मणा निर्मिता पूर्वमगस्त्येन समाहृता । स्वयं मन्दाकिनी मूर्ता सुवर्णमुखरी वरा
एवंप्रभावादिव्येयंकीर्तनीयाशुभार्थिभिः । मनसाभक्तियुक्तेनस्नातव्याशुभकाङ्क्षिभिः
सोमसूर्योपरागेषु स्नानदानादिकं कृतम् । स्यादमेयफलम्पार्थ! सुवर्णमुखरीतटे ॥४७
सङ्क्रान्तावयने पुण्येव्यतीपातेऽथ वासरे । सुवर्णमुखरीस्नानं कुलकोटिं समुद्धरेत्
जन्मर्क्षे जन्मदिवसे सुवर्णमुखरीजले ।
स्नात्वा विधिवदाप्नोति क्षेमारोग्यसुखश्रियः ॥ ४६ ॥
दुःस्वप्नविघ्नजं भूतग्रहदुःस्थानजंतथा । सुवर्णमुखरीतोये स्नात्वा तरति किल्बिषम्
सुवर्णमुखरीतीरे गोपादप्रमितां भुवम् । दत्त्वासर्वमहीदानाद्यत्फलन्तदवाप्नुयात् ॥
धेनुं सवस्त्रालङ्कारां सुवर्णमुखरीतटे । दत्त्वा विप्राय विधिवद्याति ब्रह्म सनातनम्
पुण्यकालेषु दानानि विधेयान्यखिलान्यपि । इहाऽमुत्रफलप्राप्त्यै सुवर्णमुखरीतटे
जपो होमस्तपो दानं पितृकर्म सुरार्चनम् । कृतम्भवेच्छतगुणं सुवर्णमुखरीतटे ॥
अन्यत्ते कथयिष्यामि विधेयंव्रतमुत्तमम् । सुवर्णमुखरीतीरे प्रतिवर्षं सुखार्थिभिः ॥
मेघकाले रविकरैस्तिरोधानमुपागतः । यदोदेति मुनिः श्रीमान्मित्रावरुणनन्दनः ॥
तस्मिन्दिने येनियताःस्नानमस्याम्प्रकुर्वते । तैः कल्पश्च सुरावासेस्थीयतेकुरुनन्दन
तदाऽगस्त्यस्य यद्रूपं सुवर्णेन विनिर्मितम् ।
विधिना ददते पार्थ! ते यान्ति ब्रह्म शाश्वतम् ॥ ५८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन उवाच

विधिना केन कर्तव्यंव्रतमेतन्महामुने! । तन्ममाऽऽचक्ष्वसकलं जिज्ञासोस्तु महात्मनः

भरद्वाज उवाच

अगस्त्यस्योदयदिनं ज्ञात्वा नियतमानसः । स्वशक्त्याकारयेद्रूपन्तस्य हेम्ना महामुनेः
सुवर्णभास्वरच्छायं जटाबन्धमनोहरम् । दधानं करपद्माभ्यामक्षमालां कमण्डलुम् ॥
वसानं मृदुलं वल्कं मृगचर्मोत्तरीयकम् । सौम्यं भस्माङ्करुचिरं रुद्राक्षकृतभूषणम्
एवं विधाय तद्रूपं स्नात्वा नियतमानसः । आचार्यं गन्धपुष्पाद्यैरलङ्कृत्ययथाविधि
शालेयतण्डुलानां तामाढकस्योपरि स्थिताम् ।
वस्त्रद्वयसमायुक्तां प्रतिमां प्रतिपूजयेत् ॥ ६४ ॥
विन्ध्यसंस्तम्भनो वार्धिचुलकीकृतिपेशलः । ब्रह्मादिसर्वदेवानांतेजसा सुप्रकाशितः
अगस्त्यः कुम्भसम्भूतो देवासुरनमस्कृतः । प्रीतिमाप्नोतुमहतीं दानेनाऽनेन मे प्रभुः
इमं मन्त्रं समुच्चार्य धारापूर्वं सदक्षिणम् । दत्त्वाविमुक्तःपापेभ्योयातिब्रह्मसनातनम्
जन्मान्तरकृतैर्नूनमिह जन्मकृतैरपि । महापापोपपापौघैर्मुच्यते नाऽत्र संशयः ॥६८ ॥
ब्रह्माद्याः सकला देवाः सनकाद्या महर्षयः । चराचराणिभूतानिप्रीतिं यान्तिनसंशयः
कृत्वा व्रतमिदम्पुण्यमगस्त्यस्य च सन्मुनेः ।
प्रीत्यर्थम्भोजयेद्विप्रान्यथाशक्ति सदक्षिणम् ॥ ७० ॥
तस्मिन्कर्मणिचाऽशक्तो यथाशक्ति महीसुरान् ।
स्वर्णधान्यादिदानेन तोषयेद्भक्तिसंयुतः ॥ ७१ ॥
तिथिं न वितथीकुर्यात्तांयत्नेनसमाचरेत् । यत्किञ्चिदपिचाऽवश्यंकर्मकुर्याच्चपूरुषः
महामुनेरगस्त्यस्य परिपक्वं तपःफलम् । नदी सुवर्णमुखरी कीर्तनीया सुरासुरैः ॥
एवं ते कथितः सम्यङ्महानद्याः समुद्भवः । प्रभावश्चतदाचक्ष्वयद्भूयःश्रोतुमिच्छसि

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
वेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीप्रभावप्रशंसानाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३३॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुस्त्रिंशोऽध्यायः

अगस्त्यतीर्थागस्त्येश्वरयोः प्रभाववर्णनम्

अर्जुन उवाच

श्रोत्राञ्जलिभ्यांपीत्वापिभवद्वाक्यामृतंमुहुः । मनोनोपैति मेतृप्तिंभूयःश्रवणकाङ्क्षया
क्रियासमभिहारो मेत्वद्वाक्याकर्णनैषिणः । मनः खेदाय मा भूत्ते करुणाभरितात्मनः
इदानीं श्रोतुमिच्छामि नद्यामस्यांमहामुने । कुत्रकुत्र समर्थानि तीर्थान्यघनिवर्हणे
काःकाः पुण्यतरङ्गिण्यः सङ्गता अनयामुने । कुत्र स्नानेनकृत्ताघानोपयान्तियमाद्भयम्
हराच्युतादिदेवानांपुण्यान्यायतनानिच । यानियानिचपुण्यानितिष्ठन्त्यस्यास्तटद्वये
तेषु क्षेत्रेषु मनुजैर्यत्फलं समवाप्यते । विहितैर्विधिवत्स्नानदानादिशुभकर्मभिः ॥६॥
सोपाख्यानमिदं सर्वं वेदितं वेदवित्तम! । सञ्जातामहतीप्रीतिर्विस्तार्याचक्ष्वमेक्रमात्

भरद्वाज उवाच

यत्पृष्टंभवतापार्थक्रमाद्विस्तार्यकथ्यते । आरभ्यागस्त्यतीर्थेन्द्रादस्यास्तीर्थौघवैभवम्
अखण्डज्ञानरूपेण सर्वलोकहितैषिणा । सुरासुराणां सम्भाव्येनागस्त्येन महात्मना
वसुधामवतीर्णायांप्रथमंतद्धराधरात् । स्नात्वायत्र महानद्यां सम्प्राप्नोतिकृतार्थताम्
अगस्त्यतीर्थमित्युक्तं पावनं तज्जगत्त्रये । तत्र स्नानेन शुद्धिः स्यान्महापातकिनामपि
अनेकजन्माचरितमहापातकसंहतिम् । निरस्य दिवि मोदन्ते तत्र स्नानरता जनाः
ये तत्र तीर्थे यतिनः कृतस्नाना यतेन्द्रियाः । गोभूतिलहिरण्यादि महादानानिकुर्वते
ते प्राप्नुवन्ति सम्पूर्णं गङ्गाद्वारेसमाहितैः । विहितानां शतगुणं दानानां फलमर्जुन

अत्राऽस्ति भगवानीशः ख्यातोऽगस्त्येशसञ्ज्ञया ।
स्थापितोऽगस्त्यमुनिना लोकानन्दविधायिना ॥ १५ ॥
स्नात्वा तस्यां महानद्यां तल्लिङ्गं पूजयन्ति ये ।
दशानामश्वमेधानां फलं सम्प्राप्नुवन्ति ते ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धनूराशिं परित्यज्य यदा मकरमंशुमान् । विशेत्तदयनं पुण्यमुत्तरं परिकीर्तितम् ॥
तस्मिन्दिने ये नियता नद्यां स्नात्वा समाहिताः ।
पश्यन्ति पार्वतीनाथमगस्त्येशं सुरार्चितम् ॥ १८ ॥
अग्निष्टोमसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च । फलं सम्प्राप्य मोदन्ते दिवि देवगणार्चिताः
मृगसङ्क्रमवेलायां पुरुषैर्मङ्गलार्थिभिः । अवश्यमेवकर्तव्यमगस्त्येशस्य दर्शनम् ॥
ऐशान्यां तस्य तीर्थस्यदेशेक्रोशमितेऽर्जुन । अस्थितीर्थत्रयंख्यातंदेवर्षिपितृनामभिः
देवर्षिपितरस्तत्र मुनिना तेन पूजिताः । प्रददुर्हृष्टमनसः सर्वान्समभिवाञ्छितान्
तदादेवर्षिपितृभिरिदंतीर्थत्रयंक्रमात् । अस्मन्नामभिरीड्यं स्यादित्युक्तंतस्यसन्निधौ
तस्मिंस्तीर्थत्रयेयेतुस्नात्वाविहिततर्पणाः । ऋणत्रयविनिर्मुक्तास्तेयान्तिदिवमक्षयाम्
ततः प्रागुत्तरक्षोण्यां योजनद्वयसीमनि । प्राप्ता सुवर्णमुखरीं वेणानाम महानदी ॥
समुद्ररयाघातनिपातिततटद्रुमा । कुल्यानिर्गतवाः पूरसमाप्लावितकानना ॥ २६ ॥
उत्तुङ्गपुलिनोत्सङ्गखेलत्कोककुलाकुला । अम्बुजामोदलोलालिमालालीलारवान्विता
अतिक्रम्य समुत्तुङ्गाननेकान्धरणीधरान् ।
प्रभूतोयरुचिरा सुवर्णमुखरीं गता ॥ २८ ॥
नदीद्वयव्यतिकरे कृतस्नाना यथाविधि । दशानामश्वमेधानामखण्डं प्राप्नुयुः फलम्
सङ्गता वेणया पुण्या सुवर्णमुखरी नदी । गिरिदुर्गमनमार्गेण ययावुत्तरवाहिनी ॥३०
मध्यगेन महीध्राणां मार्गेण विषमेण सा । गत्वा विरेजे तटिनीयोजनानांचतुष्टयम्
पूर्वतस्तस्य देशस्य विषये सार्धयोजने । उदक्कूले महानद्याः प्राग्वाहिन्या मनोहरे
अगस्त्येश्वर नामास्तेख्यातं लिङ्गंपुरद्विषः । स्मरणादेवमर्त्यानांसमस्ताघनिवारणम्
तत्र स्नात्वा महानद्यांयेनरानियतेन्द्रियाः । पश्यन्तिपार्वतीनाथमगस्त्येनप्रतिष्ठितम्
अनेकैः पूर्वजननैरर्जितं पापसञ्चयम् । ते निरस्य सुरावासे मोदन्ते कालमक्षयम् ॥
ततः सोदङ्मुखी भूत्वा सुवर्णमुखरी ययौ । योजनार्धमिदं देशं तीर्थसङ्घसमन्विता
तस्मिन्देशे तु हिन्तालतालसालमनोरमे । गता सुवर्णमुखरीं नदी व्याघ्रपदाह्वया ॥
दुर्वारभूरिदुरितविनिवारणपेशला । नीरन्ध्रतीरवानीरवनमण्डलमण्डिता ॥ ३८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिद्धगन्धर्वललनालीलागाहनशालिनी ।
तपस्विकन्यानिःक्षिप्तबलिपुष्पविराजिता ॥ ३९ ॥
हंसकारण्डवक्रौञ्चकुलकोलाहलाकुला । प्राक्प्रवाहा समागत्य शैलान्तरगताऽध्वना॥
सङ्गमे सरितोस्तत्र कृतस्नानानरोत्तमाः । समग्रमश्वमेधानां दशानां प्राप्नुयुः फलम्
तत्र व्याघ्रपदाख्यायास्तटेलोकमलापहे । अनघं सर्वपापघ्नं शङ्खतीर्थं विराजते ॥
ब्रह्मर्षिनियतावासं सुरगन्धर्वसेवितम् । दर्शनस्नानपानाद्यैरमितानन्ददायकम् ॥ ४३॥
तत्राऽऽस्ते भगवानीशः शङ्खेशो नाम फाल्गुन !।
शङ्खनाम्ना मुनीन्द्रेण लिङ्गरूपं प्रतिष्ठितम् ॥ ४४ ॥
ये तत्रतीर्थेसुस्नाताःपश्यन्तिवृषवाहनम् । दशाश्वमेधजंपुण्यंलब्ध्वायान्तिसुरालयम्
युक्ता तया व्याघ्रपदाभिधानया गत्वा ततो योजनसम्मितां भुवम् ।
ययौ मुनीन्द्रैर्वृषभाचलान्तिकं संसेव्यमाना शुभनिर्मलोदका ॥ ४६ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येऽगस्त्यतीर्थादिविविधतीर्थमाहात्म्यवर्णनंनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

पञ्चत्रिंशोऽध्यायः

सुवर्णमुखरीकल्यानदीसङ्गमवर्णनम्

भरद्वाज उवाच

सुवर्णमुखरीं तत्र सङ्गता मङ्गलप्रदा । कल्यानाम नदी पुण्या कालिन्दी जाह्नवीमिव
वृषभाचलसम्भूता तीर्थराजविराजिता । नदीनामुत्तमा कल्या कलुषौघविनाशिनी ॥
नानातरुलताव्रातविभूषिततटद्वया । मुनिसङ्घसुखावासा पुण्याश्रमसमुत्कटा ॥ ३ ॥
द्विजदत्तार्घ्यविलसत्कुशाक्षतलसत्तटा । अप्सरः कुचकस्तूरीपङ्कक्षालनपङ्किला ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दन्तावलकटच्योतन्मदाम्बुसुरभीकृता । विप्रभूपालविततमखयूपशतावृता ॥ ५ ॥
अनाविलजलापूरतोषिताशेषमानवा । एकैवाऽलंपरा कर्तुं महानद्योस्तु पातकम् ॥ ६॥
तयोः सङ्गतयोः स्तोतुं महिमानं क ईशते । यत्र ब्रह्मशिलानाम सरिन्मध्ये च वर्तते
अगस्त्यतपसा पश्चाद्वयासान्निध्यमेति च । नदीद्वयजले तत्र स्नाता पुण्ये कुरूद्वह॥

मखानां पौण्डरीकाणां शतस्य फलमाप्नुयुः ।
ब्रह्महत्यादिपापानि समायान्ति परिक्षयम् ॥ ६ ॥

तत्राऽभिषेकपूतानां नदीद्वितयसङ्गमे । सङ्गताभवनाशिन्या कृष्णवेणीव पावनी ॥१०

राजते स्वर्णमुखरी कलयया सङ्गता तदा ॥ ११ ॥

अथोदीच्यांमहानद्यायोजनार्द्धे विराजते । योजनोत्सेधसहितो विख्यातोवेङ्कटाचलः
सर्वेषामेव तीर्थानामाश्रयोऽयं नगोत्तमः । अञ्जनानन्तवृषभनीलकेसरिपोत्रणः ॥
एतान्युपवनान्यद्रेः स्युर्नारायणवेङ्कटौ । वराहवपुषा पूर्वं स्वीकृतत्वान्मधुद्विषा
वराहक्षेत्रमित्यार्यैः कीर्तितोऽयं महीधरः । सुवर्णमुखरीतीरे विख्याते वेङ्कटाचले

निवसत्यच्युतो नित्यमब्धीन्द्रतनयान्वितः ।
तस्मिन्गिरौ श्रिया सार्द्धं वसन्तं वेङ्कटाधिपम् ॥ १६ ॥

सेवन्ते सिद्धगन्धर्वमुनिमानवदानवाः । तस्मिन्विन्यस्तचित्तानां भक्तानांपुरुषोत्तमे

वाञ्छितान्याशु सिध्यन्ति नश्यन्ति विपदोऽर्जुन ।
ये स्मरन्ति जगन्नाथं वेङ्कटाद्रिनिवासिनम् ॥ १८ ॥
निरस्तदोषास्ते यान्ति शाश्वतम्पदमव्ययम् ॥ १६ ॥

अर्जुन उवाच

वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सुरासुरनमस्कृतः । कथं प्रादुरभूद्देवो भगवान्कमलापतिः ॥२०॥
कस्य वा कृतिनस्तत्र प्रसन्नो निजमद्भुतम् । रूपम्प्रकाशयाञ्चक्रे भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्
विष्णोर्देवादिदेवस्य महिमानंमहामुने !। श्रोतुमिच्छामितत्त्वेन तन्मेकथयविस्तरात्

भरद्वाज उवाच

शृणु वेङ्कटनाथस्य महिमानं समाहितः । विस्तरेणसमाख्यातुं ब्रह्मणाऽपिनशक्यते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धन्योऽसि देवदेवस्य माहात्म्यं मधुविद्विषः ।
यद्भक्तियुक्ताऽभूत्तात! श्रोतुम्मतिररिन्दम ! ॥ २४ ॥
कृतपुण्योऽस्म्यहंपार्थ सर्वभूतपतेर्हरेः । पवित्राणिचरित्राणिस्तोष्यन्ते यन्मयाऽधुना
पुरा भागीरथीतीरे जनकाय महात्मने। क्रतुदीक्षाप्रसक्ताय विशुद्धज्ञानशालिने ॥
वामदेवेनकथितांकथांपापप्रणाशिनीम् । कथयिष्यामि तेपार्थ! विष्णुकीर्तनपावनीम्
सर्वेषामेव भूतानामाद्यो नारायणः प्रभुः । जगन्मयो जगत्कर्ता चित्स्वरूपो निरञ्जनः
सहस्रशीर्षा भगवान्सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
यस्य भासा जगदिदं विभाति सचराचरम् ॥ २६ ॥
तस्मात्परतरं तेजस्तस्मात्परतरन्तपः । तस्मात्परतरं ज्ञानं योगस्तस्मात्परो न च
विद्या तस्मादपि परा नाऽस्ति पार्थ नरर्षभ! । सर्वेष्वपि च भूतेषु सदासन्निहितःप्रभुः
सर्वाण्यपि च भूतानि तस्मिन्नेवाऽऽसते सुखम् ।
स एव यज्ञो यज्वा च साधनं स्रुक्स्रुवादिकम् ॥ ३२ ॥
फलम्फलप्रदाता च तत्सम्प्राप्या गतिस्तथा । वह्नौ प्रणीते पशुना प्रोक्षितेनप्रजुह्वति
ये तं प्रयान्ति ते यान्ति गतिं तत्प्रतिपादिताम् ॥ ३३ ॥
कर्मबन्धं पशुं कृत्वा ज्ञानाग्नौसम्प्रवर्तिते । ये जुह्वते समुद्दिश्य ते तत्सायुज्यभागिनः
हरिः सदाशिवो ब्रह्मा महेन्द्रःपरमःस्वराट् । सर्वेश्वरस्य तस्यैतेपर्यायाः परिकीर्तिताः
समाहितोऽनुसन्धत्ते य इदंपरमात्मनः । नारायणस्य माहात्म्यं स न याति पुनर्भवम्
चिदानन्दमयः साक्षी निर्गुणो निरुपाधिकः ।
नित्योऽपि भजते तान्तामवस्थां स यदृच्छया ॥ ३७ ॥
पवित्राणां पवित्रं यो ह्यगतीनां परा गतिः । दैवतं देवतानाञ्च श्रेयसां श्रेयउत्तमम्
बोध्यानां बोध्य एकोऽसौ ध्येयानां ध्येय उत्तमः ।
विनयानां समधिको विनयो नयसंयुतः ॥ ३९ ॥
तेजसां जनकं तेजः प्रकृष्टं तपसान्तपः । आधारः सर्वभूतानामनाद्यन्तो जनार्दनः ॥
तस्येदं भावविज्ञानेमूढाब्रह्मादयोऽपि च । अजोगृह्णाति जननं सर्वात्माहन्तिविद्विषः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वतन्त्रोऽपिस्वभक्तानांपरतन्त्रःप्रवर्तते । स साक्षी कर्मणां देवः सर्वज्ञोगरुडध्वजः
तस्य स्वरूपं मुनयो मृगयन्ते समाहिताः । सङ्कर्षणो वासुदेवः प्रद्युम्नश्च तथा पुनः
अनिरुद्धइतिख्यातंतन्मूर्तीनांचतुष्टयम् । कीर्तितः प्रणवः पश्चाद्धृदयन्तस्यभास्वरम्

भगवान्वासुदेवश्च मन्त्रोऽयं तत्प्रकाशकः ॥ ४५ ॥
मन्त्रराजमिमं नित्यं प्रजपेद्यः समाहितः ।
स विष्णोः करुणायोगात्सिद्धीनां भाजनम्भवेत् ॥ ४६ ॥

आपन्निवारकं सम्पत्प्रापको भुक्तिमुक्तिदः । यथा ससर्ज भूतानिकल्पादाविषमाधवः
तत्सर्वंकथयिष्यामि समाहितमनाः शृणु । तस्य चिन्तयतः सर्गं तेजोरूपम्परं हरेः
विरिञ्चि इति विख्यातंराजसंगुणमाश्रितम् । तस्य देवस्य वदनाच्छक्रोदेवःसपावकः

जज्ञे यश्च त्रिलोकेशः पापकर्मणि यः प्रभुः ॥ ४६ ॥

मनसश्चाऽभवच्चन्द्रःकरुणानित्यशीतलात् । अपांसर्वौषधीनाञ्च विप्राणांरक्षकःसदा
नेत्राभ्यामुदभूत्सूर्यस्तस्यविश्वप्रकाशकः । शीतोष्णवर्षकृत्कालकारणंतेजसांनिधिः

प्राणेभ्योऽस्य जगत्प्राणः समीरः समजायत ।
धर्ता ग्रहर्क्षस्वर्गङ्गाविमानानां महाबलः ॥ ५२ ॥
नाभिदेशात्समुत्पन्नमन्तरिक्षं महात्मनः ।
तस्याऽऽसीच्छिरसोव्योमभूतसम्भवकारणम् ॥ ५३ ॥
पादाम्बुजाभ्यामुदभूद्भूमिर्भूतगणाश्रया ।
विनिःसृता दिशः सर्वा श्रोत्राभ्याम्परमात्मनः ॥ ५४ ॥

भूर्भुवाद्यास्तथालोकाः स्मरणात्तस्य जज्ञिरे । रसातलादिलोकाश्च यक्षरक्षोगणादयः
मुखबाहूरुपादेभ्योजयामासस क्रमात् । ब्राह्मणान्क्षत्त्रियान्वैश्याञ्छूद्रादींश्चकुरूद्वह! ॥
छन्दांसि यज्ञस्तुरगा गावो मेषाविकादयः । अतर्क्यप्रभवां तस्मादुत्पत्तिंप्रतिपेदिरे
सङ्कल्पाद्देवदेवस्य तस्यस्थावरजङ्गमम् । भूतजातमभूत्कालो भूतोभावीभवंस्तथा ॥

पिबत्यम्बु समुद्राणां वडवानलरूपधृक् ।
कल्पान्तकाले तत्सर्वं विसृजत्यात्मनि स्थितम् ॥ ५६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सञ्चारयति भूतानां वृत्तिं सूर्येन्दुरूपधृक् । तमोनिरसनाच्चापि कालधर्मप्रवर्तनात्
जगन्ति कल्पविरमेविन्यस्यस्वोदरान्तरे । लीलाबालाकृतिः शेते वटपत्रे महाम्बुधौ

अथ चोदग्रभोगीन्द्रभोगतल्पे सुखोचिते ।
योगनिद्रामवाप्नोति सद्वितीयोऽब्जवासया ॥ ६२ ॥
नाभिकासारसम्भूताज्जनयामास पङ्कजात् ।
सर्वेषां जगतां नाथो विधातारं चतुर्मुखम् ॥ ६३ ॥

लीलाह्येषा मुकुन्दस्य स्वेच्छायोगप्रवर्तिनः । विज्ञायते न केनाऽपियाथार्थ्येनसईश्वरः
यदा धर्मस्य हानिः स्याद्धर्मोवर्धते यदा । यदा वा महतीं पीडांभजन्तेदेवतागणाः
यदावलेपदुर्वारा यान्ति वृद्धिं सुरद्रुहः । भूमेर्भूमिजनानाञ्च यदोदेति महद्भयम् ॥६६॥
यदा वा निजभक्तानां साधूनामनिवारिता । दुरान्तातङ्कजननी विपत्समुपजायते ॥

तदा तदनुरूपाणि रूपाण्यास्थाय कौतुकात् ।
अधर्ममवधूयाऽऽशु कुरुते जगतो हितम् ॥ ६८ ॥

सृजति विधिसमाख्यो राजसेनात्मनाऽसौ वहति हरिसमाख्यः सत्त्वनिष्ठः प्रपञ्चम्
हरति हरसमाख्यस्तामसीमेत्य वृत्तिं मधुमथनमहिम्नामस्ति वेत्ता न कोऽपि॥६९॥
यज्ञाङ्गैः कृतसकलाङ्गसन्धिबन्धं वाराहं वपुरधिगम्य लोकनाथः ।
शैलेऽस्मिन्नभजदसौ यथा निवासं तद्वक्ष्ये शृणु विबुधाधिनाथसूनो !॥ ७० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्ये विष्णुमाहात्म्यप्रस्तावे
सृष्ट्यादिवर्णनंनाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षट्त्रिंशोऽध्यायः

वराहकृतधरण्युद्धरणक्रमेश्वेतवराहावतारवर्णनम्

भरद्वाज उवाच

पुरा निशात्यये धातुः प्रबुद्धो मधुसूदनः। पुनः प्रवृत्तिं भूतानामन्वियेष धिया भृशम्
विना वसुमतीमन्ये भूतौघधरणक्षमाः। न भवन्तीति हृदये तर्कस्तस्याऽजनिष्ट च॥
अपश्यत्प्रणिधानेन महीं पातालगोचराम्। अतिमात्रभयोद्विग्नांपरीतां महताऽम्बुना
प्रतिपेदे तदा रूपं भूसमुद्धरणोचितम्। उपकर्मोष्ठमनलजिह्वं प्रणवघोषणम् ॥ ४ ॥
चतुराम्नायचरणं प्रायश्चित्तखुराञ्चितम्। प्राग्वंशकायं विलसद्दर्भरोमावलीयुतम् ॥५॥

प्रवर्ग्यावर्तसम्पन्नं दक्षिणाग्न्युदरान्वितम्।
स्रुक्तुण्डमखिलैः सर्वैः सम्विभक्ताङ्गसन्धिकम् ॥ ६ ॥

दिव्यसूक्तसटाजालं परब्रह्मशिरस्तथा। हव्यकव्यरसोपेतं विशुद्धपशुजानुकम् ॥ ७ ॥
उक्तात्युक्तादिकच्छन्दोमार्गमन्त्रबलान्वितम्। सर्वयज्ञमयं दिव्यं वाराहंरूपमास्थितः
अन्वेष्टुं धरणीमब्धेर्विवेशसलिलान्तरम्। दंष्ट्रावालशशाङ्कोरथलसत्कान्तिचयैर्हठात्
कल्पान्तसमयस्फीतं तमिस्रमपसारयन्। अभिभूताम्बुभृद्घोषैर्मुहुर्ब्रह्माण्डकन्दराम् ॥
निनादमुखरां कुर्वन्नन्गाढैर्घुरुघुरुस्वनैः। खुरप्रखुरविन्यासैर्जर्जरीकृतविग्रहम् ॥११॥
इतस्ततो विलुठयन्नुरगाणामधीश्वरम्। तीव्रैर्निःश्वासपवनैरापातालं सरित्पतेः ॥१२
प्रापयन्नतलस्पर्शमन्तरं दर्शनीयताम्। अतिदीर्घेण पोत्रेण मग्नोन्मग्नेन वारिधेः ॥१३

संक्षोभितानि पाथांसि कुर्वन्नन्तर्ययौ तदा।
सप्तपातालमूलाधःस्थितां तोये भयाकुलाम् ॥ १४ ॥

वेपमानां समालोक्य धरणीं हृष्टमानसः। तामारोप्य स्वदंष्ट्राग्रमुन्ममज्ज सरित्पतेः
संस्तूय मानोमुनिभिर्जनलोकनिवासिभिः। तस्मिन्नुद्वहतिप्रेम्णादेवेवसुमतींक्षणम्
प्रतिसीरा बभूवाऽधो वारिधेर्मङ्गलोचिता। तदुत्तारणवेलायां वराहवपुषोऽर्जुन !॥१७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गम्भीरघोषैरम्भोधिः प्राप मङ्गलतूर्यताम् । उद्वृत्तवीचिविक्षिप्तशीकरासारसङ्गतः ॥
भेजे मुक्ताफलचयो मङ्गलाऽक्षतविभ्रमम् । उदूढा तेन देवेन सा बभौ सलिलाप्लुता
गाढरागसमुत्पन्नस्वेदक्लिन्नतनूरिव । इत्थमुद्धृत्य भगवान्महीरुपातालमूलतः ॥२०॥

सुदृढं स्थापयामास मध्येऽम्बुनिधिपाथसाम् ।
तेनोद्धृतायां मेदिन्यां पूर्णन्तद् भूनभोऽन्तरे ॥ २१ ॥

जलं तत्कृतमर्यादाऽव्यवच्छिन्नमभूत्तदा । संस्थाप्य पृथिवीमित्थं तदीयाधारसिद्धये
दिग्गजानहिराजञ्च कमठञ्च न्यवेशयत् । तेषामपि च सर्वेषामाधारत्वेन सादरम् ॥

अव्यक्तरूपां स्वां शक्तिं युयोज च दयानिधिः ।
ततो धरां समुद्धृत्य स्थितां किटितनुं हरिम् ॥ २४ ॥

तुष्टुवुः सनकाद्यास्तं जनलोकनिवासिनः । तदा वराहवपुषमाराध्य पुरुषोत्तमम् ॥२५

तदाज्ञया जगद् ब्रह्मा यथापूर्वमकल्पयत् ॥ २६ ॥

अर्जुन उवाच

कल्पान्तसलिले मग्ना कथं तिष्ठति भूरियम् । सप्तपाताललोकाधः किमाधारामहामुने

कल्पकालः कियान्नेष स्यात्तद्वृत्तिश्च कीदृशी ॥ २८ ॥
एतद्विस्तार्य सकलं मम ब्रह्मन्मुने! वद ॥ २९ ॥

भरद्वाज उवाच

विनाडिकानां षष्ट्या स्यान्नाडिकैका दिनम्भवेत् ।
तत्षष्ट्या दिवसास्त्रिंशन्मासः पक्षद्वयात्मकः ॥ ३० ॥

मासौ द्वावृतुरित्युक्तस्तैः षड्भिर्वत्सरोभवेत् । अयनद्वितयाकारःशीतवर्षोष्णसंश्रयः
देवासुराणामन्योन्यमहोरात्रं विपर्ययात् । उत्तरं दक्षिणं भानोरयने ते यथाक्रमम् ॥
मानुषाब्दैःखखव्योमखाक्षिपावकसागरैः । महायुगं भवेत्पार्थ! कृताद्याकारसंयुतम् ॥

सप्तत्या सैकया कालो युगानामन्तरं मनोः ।
अस्मिञ्छ्वेतवराहाख्ये कल्पे जातान्मनूञ्छृणु ॥ ३४ ॥

स्वायम्भुवःस्यात्प्रथमस्ततःस्वारोचिषोमनुः । उत्तमस्तामसाख्यश्चरैवतश्चाक्षुषाह्वयः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एते गताः प्राङ्मनवः षट् सेन्द्रसुरतापसाः । वैवस्वतो वर्ततेऽद्य सप्तमो मनुरर्जुन !
आदित्यवसुरुद्राद्यास्तत्काले देवतागणाः । इष्ट्वाऽश्वमेधशतकं तेजस्वी प्राप शक्रताम्
विश्वामित्रोऽहमत्रिश्च जमदग्निश्च कश्यपः । वशिष्ठो गौतमश्चैव ते वै सप्तर्षयोऽर्जुन
इक्ष्वाकुप्रमुखाः शूरा मनुपुत्रा महाबलाः । अवनिम्पालयामासुर्नित्यं धर्मपरायणाः ॥
सूर्यदक्षब्रह्मधर्मरुद्राणां पञ्च सूनवः । सावर्णिरौच्यभौमाद्या भविष्यन्मनुसप्तकम् ॥
चतुर्दशविधातुस्तेभवन्तिमनवोऽहनि। तत्कल्पसञ्ज्ञंतस्याऽन्तेनिशास्यात्तत्समाशृणु
दिनावसानसमये ब्रह्मणः पाण्डुनन्दन !। जायतेऽवग्रहो घोरः पृथिव्यां शतवार्षिकः॥

तस्मिन्नवग्रहे पृथ्व्यां नीरसायां धनञ्जय !।
चतुर्विधानि भूतानि समायान्ति परिक्षयम् ॥ ४३ ॥

तदा तप्तशिखाकारैरुपेतो घर्मदीधितिः । मयूखैरग्निसदृशैर्वमद्भिःपावकच्छटाः ॥४४
विनष्टग्रामनगरशैलवृक्षादिकानना । कूर्मपृष्ठोपमोर्वी स्यात्तप्ताऽयःपिण्डसन्निभा ॥
ततो विधातुर्गात्रेभ्यः समुत्पन्ना महाघनाः । आच्छादयन्तोगगनंगर्जितध्वानबन्धुराः
सितपीतारुणश्यामाश्चित्र वर्णाश्च भीषणाः । शैलेभसौधवृक्षादिनानारूपसमन्विताः
ते शताब्दमितं कालं महावृष्टिं वितन्वते । तेनाऽम्भसाशमंयाति सूर्योद्भूतोमहानलः
भूयश्च शतवर्षाणि वर्षन्त्युग्रं महाघनाः । तदम्भसा समुद्वेला विकृतिं यान्तिवार्द्धयः

कल्पान्ताम्बुदनिर्मुक्तं लोकान्व्याप्नोति तज्जलम् ।
भूर्भुवःस्वर्महर्लोकानावृणोति तमो महत् ।
तदा निमग्ना सलिले मही पातालमूलगा ॥ ५० ॥

अनष्टाकथमप्याऽऽस्तेब्रह्मशक्त्यवलम्बिता । अथनिःश्वाससम्भूतोमारुतोब्रह्मणोऽर्जुन
उत्सारयतितान्सर्वान्कल्पान्तोत्थान्महाघनान् । एवंप्रवृद्धःपवनःशतसम्वत्सरात्मकम्
कालं निरन्तरं वाति दुर्निवाररयोत्थितः । तमुग्रमनिलंहित्वा हरेर्नाभिसरोरुहे ॥५३॥
योगनिद्रामवाप्नोति तस्मिन्पाथसिपद्मभूः । योगानद्रानुषक्तस्य यातितस्यजगद्विभोः
तावती शर्वरी पार्थ! दिनंयावत्प्रमाणकम् । निशायांसमतीतायामुत्थितोवेगवान्पुनः
सृजत्यखिलजन्तून्वै पूर्ववच्छासनाद्धरेः । कल्पेकल्पे समुचितै रूपैः पाति जगद्धरिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्मिन्कल्पे श्वेतवर्णां प्राप्तवान्यज्ञपोत्रिताम् । वराहवपुषा देवो विहरन्नवनीतले ॥
स्वपूर्वनियतावासं प्रपेदे वेङ्कटाचलम् । स्वमिपुष्करिणीतीरेचरंश्चिरमधोक्षजः ॥५८

भक्त्या परमया युक्तमपश्यज्जलजासनम् ।
सम्पूज्य प्रार्थयामास ब्रह्मा तं भूतभावनम् ॥ ५६ ॥
पुरातनीं निजां स्वामिन्भज दिव्यां तनूमिति ।
गृहीत्वाऽनुनयं तस्य त्यक्त्वा तां सूकराकृतिम् ॥ ६० ॥
अनन्यभजनीयां स्वाम्प्राप विश्वात्मिकां तनुम् ।
तथा स्थितं गिरौ तत्र कृत्वाऽप्युत्साहमूर्जितम् ॥ ६१ ॥
द्रष्टुं न शेकुः सर्वेऽपि कालेन बहुनाऽपि च ॥ ६२ ॥

अर्जुन उवाच

दर्शनस्मरणादीनां हरिरित्थमगोचरः । कथं प्रत्यक्षतां प्राप मानुषाणां महामुने ॥६३
भाग्यभूतोऽथजगतांयः को वाऽऽराध्यतंविभुम् । इहप्रकाशयामासकथामेतांनिवेद्य

हरिकथाश्रवणं दुरितापहं कथयतां सकलागमविद्वान् ।
सुकृतिनां ननु सम्प्रति धुर्यता मुनिवरेण्य! ममाऽद्य समागता ॥ ६५ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीति साहरुयां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायां वराहावतारकीर्तनं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तत्रिंशोऽध्यायः

शङ्खाभिधाननृपवृत्तान्तवर्णनम्

भरद्वाज उवाच

शृणु पार्थ! प्रवक्ष्यामि कथामाश्चर्यकारिणीम् ।
यथाऽसौ भगवानस्मिञ्छैले प्राप प्रकाशताम् ॥ १ ॥

श्रुताभिधानो नृपतिरस्ति हैहयवंशजः । यः प्रजाः स्वा इवचिरं शशासधरणीं शुभाम्
तस्य पुत्रो गुणनिधिः शङ्खो नाम महीपतिः । पालयामास वसुधां सर्वशास्त्रविशारदः
तस्य विष्णौ जगन्नाथे पुण्डरीकायतेक्षणे । बभूव निश्चलाभक्तिःपरित्यक्ताऽन्यसंश्रया
देवदेवं जगन्नाथमनन्तं पुरुषोत्तमम् । प्रगाढनिश्चयो नित्यं ध्यायन्नद्भुतवैभवम् ॥ ५ ॥
चक्रे व्रतानि दानानि पुण्यानि विविधानि च । वेदवेद्यस्य नियतं प्रीत्यर्थम्मधुविद्विषः
तमुद्दिश्यैव विदधे वाजिमेधादिकान्क्रतून् । यथोक्तदक्षिणायोगात्प्रीणिताऽशेषभूसुरः
इष्टापूर्त्तात्मकं चक्रे कर्मजातमतन्द्रितः । विन्यस्तहृदयो नित्यं केशवे भक्तवत्सले ॥
स्मरत्यजस्रं गोविन्दं जपत्यच्युतमव्ययम् । पूजयत्यब्जनयनं सङ्कीर्तयति शार्ङ्गिणम्

शृणोति सततं राजा संसारार्णवतारिणीः ।
पौराणिकैः समाख्याताः पवित्रा वैष्णवीः कथाः ॥ १० ॥

ब्राह्मणानर्चतिस्माऽयं हरिप्रीत्यर्थमेवच । इत्थं सर्वात्मनायुक्तोऽप्यश्रान्तःपृथिवीपतिः
नाऽपश्यच्छाश्वतैश्वर्यं स्वतन्त्रं पुरुषोत्तमम् । अप्राप्य दर्शनं विष्णोःसर्वयज्ञमयात्मनः

सशोकाक्रान्तहृदयः परां चिन्तामुपागमत् ॥ १३ ॥

शङ्ख उवाच

परः सहस्रैर्जननैरतीतैर्दुष्कृतं बहु । कृतम्मया यदप्राप्तं हृषीकेशस्य दर्शनम् ॥ १४ ॥
उपार्जितानां तपसामनेकैः पूर्वजन्मभिः । अखण्डं हि फलं विष्णोर्दर्शनं मधुघातिनः
कथं नु यायाद्भगवान्विषयं मम नेत्रयोः । कदावा लभ्यते श्रेयस्तद्वाक्याकर्णनात्मकम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हा धिङ्मां विहितागस्कं क्रियासाफल्यवर्जितम् ।
नारायणकृपादूरं संसारक्लेशगोचरम् ॥ १७ ॥

भरद्वाज उवाच

इति चिन्ताकुलेतस्मिन्राज्ञि जीवितनिःस्पृहे । अदृश्यमूर्तिः सर्वेषांश्रृण्वतामाहकेशवः

श्रीभगवानुवाच

मा शोकस्य वशं यायाः श्रृणु वक्ष्यामि ते हितम् ।
मदेकशरणं साधुं त्वां त्यक्ष्यामि कथं नृप! ॥ १६ ॥

अयं वेङ्कटनामाद्रिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः । वैकुण्ठादपि मे राजन्नावासोऽतिप्रियावहः
तं गत्वा भूधरवरं तव भक्त्यातपस्यतः । गतेसहस्रेवर्षाणांयास्याम्यालोकनीयताम्
भवानिवोद्यतोऽगस्त्यो मम दर्शनमञ्जसा । क्व वा संदृश्यते विष्णुरेवमाह चतुर्मुखम्
वृषभाद्रौ हरिर्द्रष्टुं लभ्यते नियतात्मभिः । गच्छ तत्रेति मुनये कथयामास पद्मभूः ॥
अम्भोजसम्भवेनेत्थमादिष्टः कुम्भसम्भवः । अञ्जनाद्रौ महावासे तपस्तप्तुं समेष्यति

तस्मिन्महीधरे पुण्ये कृतवासो भवानपि ।
आराध्य मां तपोनिष्ठो मम दर्शनमाप्स्यसि ॥ २५ ॥

भरद्वाज उवाच

इत्याऽऽज्ञप्तोभगवताशङ्खोदानववैरिणा । जगामप्रीतिमतुलांधन्योऽस्मीतिस्वचेतसि
विन्यस्य तनयं वज्रं प्रजापालनकर्मणि । गोविन्ददर्शनापेक्षीनारायणगिरिं ययौ ॥
तस्यश्रृङ्गेसमुत्तुङ्गेस्वामिपुष्करिणींशुभाम् । दिव्यैःपयोभिरापूर्णामपश्यदमृतोपमैः
अनेकसिद्धगन्धर्वदेवर्षिगणसेविताम् । भवतापप्रशमनीं सर्वतीर्थसमाश्रयाम् ॥ २६॥
जलकाकवकक्रौञ्चहंसकारण्डवाकुलाम् । कुमुदोत्पलराजीवसौगन्धिकमनोहराम् ॥
तां दृष्ट्वा पद्मिनींदिव्यांतत्तीरेविहितोटजः । तोषितःस्नानपानाद्यैर्निर्विकल्पमनोगतिः

सर्वकर्माणि विन्यस्य जगदीशे जनार्दने ॥ ३२ ॥

जपध्यानपरो नित्यं तपस्तेपे सुदारुणम् । तस्मिन्नेवमुनिः काले शासनात्परमेष्ठिनः
अगस्त्योऽप्यासससादाद्यं शैलम्मुनिशतावृतः । प्रतीचीं दिशमारभ्यकृतयत्नःप्रदक्षिणे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पश्यंस्तीर्थानिपुण्यानि बभ्रामसुचिरं गिरौ। तत्र तत्रददर्शाऽसौहरिदर्शनलालसान्
विरिञ्चिगुहशक्रेशविष्वक्सेनादिकान्क्रमात्। सनकाद्यांश्चयोगीन्द्रान्नारदप्रमुखानृषीन्
सिद्धगन्धर्वदैतेययक्षराक्षसपन्नगान्। तैस्तैः सम्मान्यमानोऽसौ प्रश्रयप्रियभाषणैः॥
पश्यन्नाश्चर्यभूतानि सर्वाणिविचचार ह। स्नात्वातीर्थेषुसर्वेषुस्कन्दधारादिकेषुच
तत्रतत्रार्चयामासगोविन्दं जगताम्पतिम्। एवंभ्रान्त्वागतेऽब्दानांसहस्रेमुनिसत्तमः
नाऽपश्यत्पुण्डरीकाक्षं चिन्ताशोकपरोऽभवत्॥ ४०॥
तस्मिन्काले समाजग्मुर्धिषणोशनसौ पुनः। राजोपरिचरोनाम वसुश्च तमृषीश्वरम्
अस्माकं सफलं जातं जीवितं मुनिसत्तम!। दृष्टो भवान्यदस्माभिर्नारायणइवापरः
ब्रह्मणा लोकनाथेन यदादिष्टा वयं मुने। अच्युतालोकनपरास्तदिदंकथ्यते तव॥४३
अस्ति दक्षिणदिग्भागे वेङ्कटोनाम भूधरः। श्वेतद्वीपादपि हरेरावासोऽयमभीप्सितः
तस्मिन्गिरावगस्त्यस्य शङ्खस्य च महीपतेः।
दर्शयिष्यति गोविन्दो निजरूपं जगद्गुरुः॥ ४५॥
तदानीं सर्वदेवानामृषीणां यक्षरक्षसाम्। अस्माकं देवदेवस्य दर्शनं सम्भविष्यति
अचिरेणैवतद्भावितत:सन्त्यक्तकल्मषाः। अन्वेष्टुंगच्छताऽगस्त्यंतस्मिन्नारायणाचले
इत्याऽऽज्ञप्ता वयं धात्रा समागम्याऽत्रभाग्यतः। दृष्टवन्तोमहाभागंभवन्तंभूरितेजसम्
भवतासहितागत्वास्वामिपुष्करिणीतटे। तमप्यालोकयिष्यामःशङ्खंभागवतोत्तमम्

भरद्वाज उवाच

गीष्पतिप्रमुखैरित्थमादिष्टःकुम्भसम्भवः। शोकजालम्परित्यज्यययौतैःसहितोद्रुतम्
स ददर्श महावृक्षान्फलपुष्पभरानतान्। प्ररूढशाखानिकरच्छायाच्छादितदिक्तटान्
सिंहदन्तावलव्याघ्रवराहमहिषादिकान्। मृगानालोकयामास पन्थानंचाऽन्तरान्तरा
तैस्तदानीं ददृशिरेसानवोऽप्यम्बुभृद्भृतः। सुवर्णरौप्यताम्रादिशोभितास्तत्र तत्रतु
उच्चलच्छीकरासारनिर्वाहितदिवौकसः।
वेगोद्धृतशिला दृष्टा शतशो गिरिनिर्झराः॥ ५४॥
तेषामापादयामास प्रमोदं मन्दमारुतः। कमलामोदसम्ग्राही विचरन्गिरिसानुषु॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुकानां कोकिलानाञ्च तदा शुश्रुविरे गिरः ॥ ५६ ॥
तत्र तत्र समासीनान्विस्तीर्णासु दृषत्सु ते ।
सिद्धानपश्यन्कृष्णस्य गायतो गुणवैभवम् ॥ ५७ ॥
अगस्त्यप्रमुखाःसर्वेपरिक्रम्यमुनीश्वराः । स्वामिपुष्करिणींदिव्यांददृशुर्विमलोदकाम्
तत्तीरे विहितावासमपश्यच्छङ्खभूपतिम् ।
वाङ्मनःकायजं कर्म सन्निवेश्य स्थितं हरौ ॥ ५९ ॥
स तानालोक्य सहसा मुनीन्द्रान् संशितव्रतान् ।
यथोक्तमकरोत्पूजां प्रणामस्तुतिपूर्विकाम् ॥ ६० ॥
आसीनास्तत्र ते सर्वे सम्भाव्याऽन्योन्यमुत्सुकाः ।
गोविन्दकीर्तनपराः कृतार्थत्वं प्रपेदिरे ॥ ६१ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये सुवर्णमुखरीमाहात्म्यप्रशंसायां श्रीवेङ्कटाचलस्प्रति शङ्खागस्त्याद्यागमनवर्णनं नाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अष्टत्रिंशोऽध्यायः

अगस्त्यशङ्खादितपस्तुष्टस्यभगवतआविर्भाववर्णनम्

भरद्वाज उवाच

तेषां हरौ जगन्नाथे समावेशितचेतसाम् । दिनत्रयं गतं तत्र पूजास्तोत्रपरात्मनाम्
तृतीये दिवसे प्राप्ते ते सर्वे निद्रिता निशि । अन्तेचतुर्थयामस्य ददृशुः स्वप्नमुत्तमम्
शङ्खचक्रगदापाणिं प्रसन्नं पुरुषोत्तमम् । वरदानाय सम्प्राप्तमपश्यन्स्मेरलोचनम् ॥३॥
उत्थायमुदितात्मानोगृहान्निर्गत्यपावने । स्वामिपुष्करिणीतोयेसस्नुर्विधिवदादरात्
विधाय विधिवत्कर्म सर्वे दिनमुखोचितम् । गृहान्प्रत्याययुर्देवमाराधयितुमच्युतम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सद्यः श्रेयस्करं मार्गे निमित्तं पक्षिसूचितम् । दृष्ट्वा प्रसादं देवस्य करस्थं मेनिरे तदा
ततस्त्रिलोककर्तारं पूजयित्वा जनार्दनम् । तुष्टुवुर्विविधैः स्तोत्रैः पवित्रैर्वेदवर्णितैः ॥
स्तोत्रावसाने कौन्तेय मुनीन्द्रः कुम्भसम्भवः । जजापशङ्खसहितो मन्त्रमष्टाक्षरं हरेः
इत्थं तेषां जगत्स्वामिन्यच्युतेऽर्पितचेतसाम् । अग्रभागे प्रादुरभूदेकं तेजो महाद्भुतम्

अनेककोटिसङ्ख्यानामादित्येन्दुहविर्भुजाम् ।
एकीभूयाऽम्बरतले ज्योतिर्जालमिव स्थितम् ॥ १० ॥

तत्तेजो वीक्ष्य ते सर्वेऽमितान्ताश्चर्यगोचराः । ददृशुर्नारायणं दिव्यं परमानन्दविग्रहम्
वाङ्मानसपथातीतं विश्रुतैश्वर्यभासुरम् । सहस्रनेत्रं साहस्रबाहुपादैः समन्वितम्
तप्तकार्तस्वरनिभस्फुरत्कान्तिमनोहरम् । दंष्ट्राकरालं दुर्दर्शं वमन्तं दहनच्छटाः ॥
कौस्तुभेन विराजन्तं दधानमुरसि श्रियम् । अविचिन्त्यमनाद्यन्तमत्यन्तभयदायकम्
प्रकाशयन्तं ब्रह्माण्डं सर्वमात्मनि सर्वगम् । अगस्त्यशङ्खप्रमुखास्ते सर्वे हृष्टचेतसः
तमालोक्य जगन्नाथं भूयोभूयो ववन्दिरे । भ्रमन्ति लोकरक्षार्थमायुधानि तदा हरेः॥
निजतेजोबलोपेतान्याजग्मुस्तं निषेवितुम् । चक्रमर्कप्रभं दिव्या गदाखड्गश्च नन्दकः
पुण्डरीकं चोग्ररवः पाञ्चजन्यः शशिप्रभः । तदा ब्रह्माण्डमखिलं पूरयामास निर्भरः
पाञ्चजन्यस्य निनदः सर्वासुरभयङ्करः । पाञ्चजन्यध्वनिं श्रुत्वानितान्ताश्चर्यभीषणम्
आययुर्देवताः सर्वाः स्वंस्वंवाहनमास्थिताः । ब्रह्मा रुद्रः शतमखः सनकाद्याश्चयोगिनः
वसिष्ठमुख्या मुनयोगन्धर्वोरगकिन्नराः । विष्वक्सेनोगरुत्मांश्च विष्णुभृत्याजयादयः

सरूपाश्चैव ये नित्याः श्वेतद्वीपनिवासिनः ।
सुमनोद्रुमसम्भूता सुमनोवृष्टिरद्भुता ॥ २२ ॥

पपात मेदुरामोदमोदिताशेषमानसा । ननृतुर्दिव्यसुदृशो जगुः किन्नरपुङ्गवाः ॥ २३॥
तुष्टुवुर्हर्षतरलाः सुरगन्धर्वचारणाः । दृष्ट्वा ते पुण्डरीकाक्षं प्रसन्नं भक्तवत्सलम् ॥ २४

प्रणम्य तोषयामासुः साष्टाङ्गं विविधैः स्तवैः ॥ २५ ॥

ब्रह्मादय ऊचुः

जय विष्णो कृपासिन्धो जय! तामरसेक्षण! । जय लोकैकवरद जय भक्तार्तिभञ्जन! ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनन्तमक्षरं शान्तमवाङ्मनसगोचरम् ।
को वा भवन्तं जानाति चिदानन्दमयात्मकम् ॥ २७ ॥

अणोरणुतरं स्थूलात्स्थूलं सर्वान्तरस्थितम् । त्वमामनन्ति पुरुषंप्रकृतेः परमच्युतम्
वेदान्तसाररूपं त्वां सर्वान्तर्बाह्यवर्तिनम् । को हि वर्णयितुं शक्तो मायायत्तेषु देहिषु
भवदीयमिदं रूपं दृष्ट्वाऽतिभयदायकम् । भयोद्विग्ना वयं सर्वे शान्तं रूपं भजस्व ह ॥

भरद्वाज उवाच

इति स्तुतो विरिञ्च्याद्यैः प्रसन्नो गरुडध्वजः । मेघघोषप्रतिमया वाचा सादरमब्रवीत्

श्रीभगवानुवाच

भयावहामिमांमूर्तिमुत्सृज्याऽहंप्रियावहम् । शान्तंरूपंभजिष्यामिमांपश्यतनिराकुलाः
इत्युक्त्वाऽन्तर्हितो भूत्वा तस्मिन्नेव क्षणान्तरे । विमानेरत्नखचिते बभूव सुखदर्शनः
चन्द्रबिम्बाननः शान्तो नीलोत्पलदलद्युतिः । सुवर्णवर्णवसनो रत्नभूषणभूषितः ॥
शङ्खचक्रगदापद्मलसत्करचतुष्टयः । तमालोक्य रमाकान्तं भूयो भूयो ववन्दिरे ॥३५॥
सन्तोषयित्वा ब्रह्मादीनभीष्टप्रतिपादनैः । अवोचद्विनयानम्रमगस्त्यं मुनिपुङ्गवम् ॥

श्रीभगवानुवाच

त्वं मुनीन्द्र ! व्रतैर्घोरैश्चीर्णैर्मास्प्रति सम्प्रति ।
परिक्लिष्टोऽसि दास्यामि वरांस्तेऽभीप्सितान्वद ॥ ३७ ॥

भरद्वाज उवाच

निशम्यवाक्यंश्रीभर्तुःप्रणम्यचपुनःपुनः । सरोमाञ्चितसर्वाङ्गःकुम्भजन्मावचोऽब्रवीत्

अगस्त्य उवाच

यद्धुतं यत्तपस्तप्तं यदधीतं श्रुतं मया । तत्सर्वं सफलं जातमाहूतोऽस्मि यतस्त्वया
एषोऽहमेव धर्मात्मा त्रिषु लोकेष्वपि प्रभो ! ।
त्वां विचिन्वन्तमधुनामामन्विष्यागतोऽसि यत् ॥ ४० ॥

त्वत्प्रसादात्पुरैवाऽहंप्राप्ताखिलमनोरथः । नपश्यामिविचिन्त्यापिप्राप्यंसम्प्रतिमाधव
तथापिचापलादेतत्तवविज्ञाप्यते प्रभो !। त्वत्पादाम्बुजयोर्भक्तिरेवं कुरुनिरन्तरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवधारय चैतत्त्वं सुरप्रार्थनया मया । नदासुवर्णमुखरीस्नाताघौघविनाशिनी ॥ ४३॥
सा भवच्छैलकटकसमासन्ना समागता । तां कृतार्थय लोकेश ! त्वदनुग्रहवृत्तिभिः

सुवर्णमुखरीतोये स्नात्वा ये वेङ्कटे स्थितम् ।
पश्यन्ति भुक्तिमुक्त्योस्तुभूयासुर्भाजनानि ते ॥ ४५ ॥

अल्पायुषो नरा मूढाज्ञानयोगपरिच्युताः । न शक्नुवन्तित्वांद्रष्टुं व्रताध्ययनकर्मभिः
सदाऽस्मिन्नास्थितः शैलेसर्वेषांचजगद्गुरो । प्रसादसुमुखोदेवकांक्षितार्थप्रदोभव

श्रीभगवानुवाच

यत्प्रार्थितं त्वया विप्र! तत्तथैव भविष्यति । नूनमप्रतिमालाकेमयिभक्तिःकृतवात्वया
जाह्नवीवनदी सेयंसुवर्णमुखरीमुने । स्यादाशास्यासुराणांच वाञ्छितश्रीविधायिनी

स्वामिपुष्करिणीचेयंनदीमूर्त्यासमन्विता ।
सङ्क्रमिष्यति तां दिव्यां नदीं तीर्थौघसंश्रयाम् ॥ ५० ॥

वैकुण्ठनाम्नि शैलेऽस्मिन्नद्यप्रभृति सर्वदा । कृतावासो भविष्यामि मुने प्रार्थनयातव
सुवर्णमुखरीस्नानक्षालिताघौघकर्दमाः । अस्मिन्वैकुण्ठशैलेमां ये पश्यन्तिसमाहिताः
भुवि पुत्रादिसम्पन्नाः सर्वैश्वर्यसमन्विताः । मृतास्त्रिविष्टपे भोगानाकल्पमनुभूय च
पुनरावृत्तिरहितंकेवलानन्दभासुरम् । मत्पदं समवाप्स्यन्तिनाऽत्र कार्या विचारणा ॥

मां द्रष्टुमागतान्सर्वान्प्रतीक्ष्यामीप्सितैः शुभैः ।
योजयिष्यामि सततं त्वद्वचो गौरवान्मुने !॥ ५५ ॥
पुत्रार्थिनांबहून्पुत्रान्धनानिचधनार्थिनाम् ।
तथैवाऽऽरोग्यकामानां रोगशान्तिं गरीयसीम् ॥ ५६ ॥

तीव्रापत्परिभूतानांतथैवापन्निवारणम् ।दास्याम्यभीप्सितान्भोगान्दुर्लभानपिसर्वदा
ये यान्कामानपेक्ष्येह प्रेक्षन्तेमांसमागताः । अवाप्नुवन्तितेसर्वेतांस्तान्कामान्नसंशयः
स्थितावायत्रकुत्राऽपिमांस्मरन्तिनरोत्तमाः।तेसर्वेवाञ्छितांसिद्धिंलभन्तेमत्प्रसादतः

भरद्वाज उवाच

इत्युक्त्वा तंमुनिंदेवः शङ्खमालोक्यभूपतिम् । शृण्वतांब्रह्ममुख्यानामिदंवचनमब्रवीत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गन्तुं प्रचक्रमे वुद्ध्या क्रीड़ाचलमनुत्तमम् । ततो भद्रमतिः सौम्यः सर्वधर्मपरायणः
सुशालि नाम नगरीं कलत्रसहितो ययौ । सुघोषंनाम विप्रेन्द्रं सर्वैश्वर्यसमन्वितम्

गत्वा याचितवान्भूमिं पञ्चहस्तायतां द्विजः ।

सुघोषो धर्मनिरतस्तं निरीक्ष्य कुटुम्बिनम् ॥ ५७ ॥

मनसा प्रीतिमापन्नं समभ्यर्च्यैनमब्रवीत् । कृतार्थोऽहं भद्रमते ! सफलं मम जन्म च

मत्कुलं चाऽनघं जातं त्वं हि ग्राह्योऽसि मे यतः ॥ ५८ ॥

इत्युक्त्वा तं समभ्यर्च्य सुघोषो धर्मतत्परः । पञ्चहस्तप्रमाणांतांददौतस्मैमहामतिः

पृथिवी वैष्णवी पुण्या पृथिवी विष्णुपालिता ।

पृथिव्यास्तु प्रदानेन प्रीयतां मे जनार्दनः ॥ ६० ॥

मन्त्रणाऽनेन विप्रेन्द्राः सुघोषस्तं द्विजेश्वरम् ।

विष्णुबुद्ध्या समभ्यर्च्य तावतीं पृथिवीं ददौ ॥ ६१ ॥

स भद्रमतये विप्रा धीमांस्तांयाचितांभुवम् । दत्तवान्हरिभक्तायश्रोत्रियायकुटुम्बिने
सुघोषो भूमिदानेन कोटित्रिंशसमन्वितः । प्रपेदे विष्णुभवनं यत्र गत्वान शोचति
विप्रो भद्रमतिश्चाऽपि पुत्रदारसमन्वितः । गतो वेङ्कटशैलेन्द्रं सुरासुरनमस्कृतम् ६४
गन्धर्वयक्षशैलादिसेवितं मेरुपुत्रकम् । वैकुण्ठादागतं दिव्यं क्रीडाचलमनुत्तमम् ॥

तत्र स्वामिसरस्तोये निर्मले पावने शुभे ।

दारपुत्रादिसंयुक्तः स्नात्वा सङ्कल्पपूर्वकम् ॥ ६६ ॥

तत्पश्चिमतटे श्वेतसूकरं वसुधाधरम् । नत्वा तत्र विधानेन श्रीनिवासालयं गतः
तत्र ब्रह्मादिदेवैश्चसेवितं वेङ्कटेश्वरम् । दृष्टवान्सह पुत्राद्यैर्विष्णुभक्तो महामतिः ॥६८

भक्त्या प्रणम्य देवेशं श्रीनिवासं कृपानिधिम् ।

पुत्रदारादिसंयुक्तः पापनाशनमाययौ ॥ ६९ ॥

तत्र स्नात्वाविधानेनकृतधर्मादिसत्क्रियः । कस्मैचिद्विष्णुभक्तायश्रोत्रियायमहामतिः

विष्णुबुद्ध्या स प्रददौ भूदानं मोक्षदं शुभम् ॥ ७१ ॥

तदा प्रादुरभूद्देवः शङ्खचक्रगदाधरः ॥ ७२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवधारय चैतत्त्वं सुरप्रार्थनया मया । नदासुवर्णमुखरीस्नातावौघविनाशिनी ॥ ४३॥
सा भवच्छैलकटकसमासन्ना समागता । तां कृतार्थय लोकेश ! त्वदनुग्रहवृत्तिभिः

सुवर्णमुखरीतोये स्नात्वा ये वेङ्कटे स्थितम् ।
पश्यन्ति भुक्तिमुक्त्योस्तुभूयासुर्भाजनानि ते ॥ ४५ ॥

अल्पायुषो नरा मूढाज्ञानयोगपरिच्युताः । न शक्नुवन्तित्वांद्रष्टुं व्रताध्ययनकर्मभिः
सदाऽस्मिन्नास्थितः शैलेसर्वेषांचजगद्गुरो । प्रसादसुमुखोदेवकांक्षितार्थप्रदोभव

श्रीभगवानुवाच

यत्प्रार्थितं त्वया विप्र! तत्तथैव भविष्यति । नूनमप्रतिमालाकेमयिभक्तिःकृत्वात्वया
जाह्नवीवनदी सेयंसुवर्णमुखरीमुने । स्यादाशास्यासुराणांच वाञ्छितश्रीविधायिनी

स्वामिपुष्करिणीचेयंनदीमूर्त्यासमन्विता ।
सङ्क्रमिष्यति तां दिव्यां नदीं तीर्थौघसंश्रयाम् ॥ ५० ॥

वैकुण्ठनाम्नि शैलेऽस्मिन्नद्यप्रभृति सर्वदा । कृतावासो भविष्यामि मुने प्रार्थनयातव
सुवर्णमुखरीस्नानक्षालितावौघकर्दमाः । अस्मिन्वैकुण्ठशैलेमां ये पश्यन्तिसमाहिताः
भुवि पुत्रादिसम्पन्नाः सर्वैश्वर्यसमन्विताः । मृतास्त्रिविष्टपे भोगानाकल्पमनुभूय च
पुनरावृत्तिरहितंकेवलानन्दभासुरम् । मत्पदं समवाप्स्यन्तिनाऽत्र कार्या विचारणा ॥

मां द्रष्टुमागतान्सर्वान्प्रतीक्ष्यामीप्सितैः शुभैः ।
योजयिष्यामि सततं त्वद्वचो गौरवान्मुने !॥ ५५ ॥
पुत्रार्थिनांवहून्पुत्रान्धनानिचधनार्थिनाम् ।
तथैवाऽऽरोग्यकामानां रोगशान्ति गरीयसीम् ॥ ५६ ॥

तीव्रापत्परिभूतानांतथैवापन्निवारणम् ।दास्याम्यभीप्सितान्भोगान्दुर्लभानपिसर्वदा
ये यान्कामानपेक्ष्येह प्रेक्षन्तेमांसमागताः । अवाप्नुवन्तितेसर्वेतांस्तान्कामान्नसंशयः
स्थितावायत्रकुत्राऽपिमांस्मरन्तिनरोत्तमाः।तेसर्वेवाञ्छितांसिद्धिंलभन्तेमत्प्रसादतः

भरद्वाज उवाच

इत्युक्त्वा तंमुनिंदेवः शङ्खमालोक्यभूपतिम् । शृण्वतांब्रह्ममुख्यानामिदंवचनमब्रवीत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभगवानुवाच

वसोश्शृणुवचोमेत्वंपुत्रस्तेभक्तिमान्मयि । त्वत्तोऽपिमेप्रियतमस्तस्मात्प्रत्यक्षमागतः
अस्य सर्वत्रतिष्ठामि तव स्वामिसरस्तटे । इति देववचः श्रुत्वा प्रीतिमानभवद्वसुः

एतस्मिन्नेव काले तु पाण्ड्यदेशात्समागतः ।
बाल्यात्प्रभृति शूद्रोऽपि विष्णुभक्तिसमन्वितः ॥ १७ ॥

नारायणपुरीं प्राप्य श्रीवराहम्प्रणम्य च । तत्र श्रुत्वाश्रीनिवासंवेङ्कटाद्रिनिवासिनम्
स्वयम्भुवं देवदेवसेवितं प्रययौ ततः । सुवर्णमुखरीं प्राप्य स्नात्वा चोत्तीर्य तत्तटे
कमलाख्ये सरसि च स्नात्वा पुण्यप्रदायिनि । तत्तीरवासिनंदेवंकृष्णंरामेणसंयुतम्
नमस्कृत्य ततः प्रायाद्वनंगजवटायुतम् । शनैः सम्प्राप्य शेषाद्रिनिर्झरं सन्ददर्श ह

तत्समीपं समासाद्य कपिलापूजितं शिवम् ।
तत्पुरश्चक्रतीर्थं तदगाधम्पापनाशनम् ॥ २२ ॥

तत्र स्नात्वा ततोऽगच्छद्वेङ्कटाद्रिं शनैःशनैः । आराद्धुं गच्छतामार्गेयुक्तोवैखानसेनच

रङ्गदासस्त्वारुरोह बालो द्वादशवार्षिकः ।
स्वामिपुष्करिणीम्प्राप्य स्नात्वा भक्तिसमन्वितः ॥ २४ ॥

वैखानसेन मुनिना गोपीनाथेन पूजितम् । वनमध्ये तरोर्मूले स्वामिपुष्करिणीतटे ॥
तिष्ठन्तंपुण्डरीकाक्षंश्रीभूमिसहितंहरिम् । आकाशस्थं सन्ददर्श पीननीलाकृतिशुभम्

पार्श्वस्थशङ्खचक्राभ्यां गदासिभ्यां निषेवितम् ।
पक्षौ विस्तार्य चाऽऽकाशे देवमूर्ध्नि वितानवत् ॥ २७ ॥
स्थितश्च गरुडेशानम्पश्चाच्छार्ङ्गं शरन्तथा ॥ २८ ॥

एवंदृष्ट्वाश्रीनिवासंविस्मितोरङ्गदासकः । अस्यदेवस्यचारामं करिष्यामीत्यचिन्तयत्
निश्चित्य मनसा सर्वं तरुमूलेऽवसत्सुधीः । कृत्वावैखानसाद्विष्णोर्नैवेद्यञ्च दिनेदिने

शनैश्छित्त्वा वनं घोरं वृक्षांश्चिच्छेद पार्श्वगान् ।
आस्थानचिञ्चां देवस्य रमायाश्चम्पकं तरुम् ॥ ३१ ॥

देवाज्ञप्तौ वर्जयित्वा तावुभौ देवसेवितौ । देवस्यपरितोभूमौशिलाकुड्यन्तदाकरोत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्कुड्यस्यैव परितः पुष्पारामांश्चकारह । मल्लिकाकरवीराब्जकुन्दमन्दारमालतीः तुलसी चम्पकानान्तु वनान्येव चकार ह । खनित्वा तत्र कूपन्तुवर्धयंस्तज्जलैर्वनम् आरामपुष्पाण्यादायस्वयंदामान्यथाकरोत् । विचित्राणितदाबद्ध्वापूजकस्यकरेददौ आदायपूजकस्तानिस्कन्धेमूर्ध्निवबन्धच । श्रीनिवासस्यदेवस्यश्रीभूमिसहितस्यच एवं देवस्य कैङ्कर्यं कुर्वंस्तस्थावुदारधीः । तस्यैवम्वर्तमानस्यसमास्त्वा सप्ततेर्गताः

कुर्वाणे पुष्पावचयं रङ्गदासे महात्मनि ॥ ३८ ॥

आरामेसरसिस्नातुंगन्धर्वःकश्चिदाययौ । गन्धर्वराजकन्याभिस्तरुणीभिः समन्वितः जलक्रीडांकरोतिस्मदिविस्थाप्यविमानकम् । सुरूपाभिश्चसहितं क्रीडन्तंकमलाकरे

पश्यञ्छ्रीरङ्गदासोऽयं व्यस्मरन्माल्यसञ्चयम् ।
जितेन्द्रियोऽपि तत्क्रीडां पश्यन्नेतः ससर्ज ह ॥ ४१ ॥
पश्यतस्तस्य सरसः समुत्तीर्य मनोहरम् ।
दिव्यवस्त्राणि चाऽऽच्छाद्य कान्ताभिः सह सस्मितम् ॥ ४२ ॥

अधिरुह्यविमानन्तु ययौ स धनदालयम् । गते गन्धर्वराजे तु रङ्गदासो विमोहितः त्यक्तवाचतानिमाल्यानिस्नात्वा सरसि लज्जितः । पुनराहृत्यपुष्पाणिशनैर्देवालयंययौ वैखानसस्तु तं दृष्ट्वा पूजाकालमतीत्य च । आगतं किमितिप्राहसखेऽतिक्रम्यचागतः

न बद्धा मालिकाश्चाऽपि त्वयाऽऽरामे च किं कृतम् ।

श्रीवराह उवाच

इत्थम्पृष्टो रङ्गदासो नाऽवदल्लज्जया ततः । लज्जितं रङ्गदासं तं प्रोवाच मधुसूदनः ॥

श्रीभगवानुवाच

लज्जयाकिं रङ्गदास! मया त्वंमोहितोह्यसि । त्वंतावजितकामोऽसिधीरोभवमहामते गन्धर्वराजवद्राजा भवितासि महीतले । तत्र भुक्त्वा महाभोगान्भक्तिमान्मयिसर्वदा प्राकारश्चविमानञ्चकारयिष्यसि मेतदा । तत्र मुक्तिम्प्रदास्यामि प्रीत्या परमया युतः अत्रैव कुरु सेवां त्वमाशरीरविमोक्षणात् । मद्भक्तानांसकामानामेवं मुक्तिर्भविष्यति इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुःपुनर्नोवाचकिञ्चन । श्रुत्वातद्रङ्गदासोऽपि चकारारामुत्तमम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साग्रं शताब्दं सेवित्वा गतः स्वर्गममन्दधीः ।
जातः सोमकुले तुङ्गे तोण्डमानिति विश्रुतः ॥ ५३ ॥

सुधीरतनयो वीरो नन्दिनीगर्भसम्भवः । सपञ्चवर्षादुद्भूतविष्णुभक्तिः स्वयंसुधीः
सौशील्यशौर्यवीर्यादिगुणानामाकरो महान् ॥ ५४ ॥

पाण्ड्यस्य तनयांपद्मामुपयेमे मनोहराम् । ततोराजाशतंकन्यानानादेश्याः स्वयस्वराः
रेमे देवेन्द्रवद्भूसौ नारायणपुरे वसन् । अनुज्ञाम्प्राप्य पितृतः पुत्रः पञ्चास्यविक्रमः
उद्दिश्य मृगयाम्वीरो वेङ्कटाद्रेः समीपतः ॥ ५७ ॥

पादचारेण विचरन्परिवारैः समन्वितः । मदधाराम्विमुञ्चन्तं ददर्श गजयूथपम् ॥
तं दृष्ट्वा विस्मितो भूत्वा ग्रहीतुं तमनुद्रुतः । सुवर्णमुखरीं तीर्त्वा ब्रह्मर्षिशुकमुत्तमम्
नमस्कृत्याऽभ्यनुज्ञातस्ततोऽगच्छद्वनाद्वनम् ।
ददर्श रेणुकां देवीं वल्मीकाकारसंस्थिताम् ॥ ६० ॥

इष्टदामिष्टभक्तानां दिव्यारामनिवासिनीम् । परिवारैः सदोपेतां पूजितांत्रिदशैरपि
तोण्डमानपि तां नत्वा ततः पश्चान्मुखो ययौ ॥ ६२ ॥

पञ्चवर्णशुकं दृष्ट्वा तं जिघृक्षुरनुद्रुतः । सवदञ्छ्रीनिवासेति गिरिं शीघ्रतरं ययौ ॥
अनुद्रवन्सराजाऽपिगिरिराजं समारुहत् । दरीश्चविविधाःपश्यञ्छिखराणिसमन्ततः
शुकमन्वेषमाणोऽसौ श्यामार्कवनमेयिवान् । तमदृष्ट्वाशुकवरं वनपालं ददर्श ह ॥
तं तु राजानमायान्तं प्रत्युद्गच्छन्स सत्वरः ।
प्रणम्य विनयोपेतः कृताञ्जलिपुटः स्थितः ॥ ६६ ॥
तोण्डमानपि सम्पूज्य तं पप्रच्छ वनेचरम् ।
पञ्चवर्णः शुकः कश्चिद् दृष्टश्चात्राऽऽगतस्त्वया ॥ ६७ ॥
श्रीनिवासेति च वदन्क गतोऽसौ वनेचर !॥ ६८ ॥

वनेचर उवाच

सपञ्चवर्णाराजेन्द्र! श्रीनिवासप्रियःसदा । पार्श्ववर्तीसदातस्यश्रीभूमिभ्यांविवर्धितः
स्वामिपुष्करिणीतीरे सदास्ते देवसन्निधौ । ग्रहीतुं स शुकःश्रीमान्नतुकेनापिशक्यते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विहृत्य स्वेच्छयानित्यमस्मिन्गिरिवरेशुभे । दिनान्तेदेवमासाद्यतत्समीपेवसत्ययम्
तं देवमाराधयितुं गमिष्यामि नृपात्मज !। विश्रम्यतां वृक्षमूले यावदागमनं मम ॥
पुत्रेणाऽनेन सहितो विहर त्वं यथासुखम् ॥ ७३ ॥

राजोवाच

त्वया सहगमिष्यामि द्रष्टुं देवं जनार्दनम् । त्वं मे दर्शय देवेशं वेङ्कटाद्रिनिवासिनम्
तस्य राज्ञो वचः श्रुत्वा श्यामाकं मधुमिश्रितम् ।
चूतपत्रपुटे क्षिप्त्वा राज्ञा सह ययौ हरिम् ॥ ७५ ॥
गत्वा सुदूरमध्वानं पश्यन्तौ तौ शिलातलम् ।
मुहूर्तादेव सम्प्राप्तौ स्वामिपुष्करिणीं शुभाम् ॥ ७६ ॥
स्नात्वा तत्र विधानेन राज्ञा सह निषादपः । दर्शयामास देवेशं राज्ञस्तस्यमहात्मनः
स्वामिपुष्करिणीतीरे स्थितं श्रीवृक्षमूलके । अतसीपुष्पसङ्काशमम्बुजायतलोचनम्॥
चतुर्भुजमुदाराङ्गमीषत्स्मितमुखाम्बुजम् । दिव्यपीताम्बरधरं किरीटकटकोज्ज्वलम्
पार्श्वस्थाभ्यां सुरूपाभ्यां श्रीभूमिभ्यां समन्वितम् ।
परितः शङ्खचक्रासिगदाशार्ङ्गैषुसेवितम् ॥ ८० ॥
अन्यैर्दिव्यायुधैश्चाऽपि दिव्यमाल्यैर्निषेवितम् ।
स्कन्देनाऽऽराध्यमानं तं त्रिसन्ध्यं पुरुषोत्तमम् ॥ ८१ ॥
वल्मीकगूढपादाब्जमाजानुपुरुषोत्तमम् । ततो दृष्ट्वा मुदा देवं प्रणेमतुरुभौ तदा ॥८२॥
राजा तु प्राञ्जलिर्भूत्वा विस्मयोत्फुल्ललोचनः । आनन्दलहरीं प्राप्यनप्राज्ञायतकिञ्चन
निषादोऽपि निवेद्यैव श्यामाकंमधुमिश्रितम् । राज्ञेतदर्धंदत्त्वैवशिष्टार्धंभुक्तवान्स्वयम्
पीत्वा पुष्करिणीतोयं तेन राज्ञा समन्वितः । स पुनःश्यामकवनेपुण्यांपर्णकुटींययौ
उषित्वा चैकरात्रं तु प्रातरुत्थाय भूमिपः । स्वसैन्येन समायुक्तो निवृत्तःस्वपुरंययौ
पुनर्देवीवनं गत्वा हयादवततार ह । चैत्रशुद्धनवम्यां तु पूजयामास रेणुकाम् ॥ ८७ ॥
हविष्यं परमान्नं च सोपस्करमनेकशः । पशूपहारसहितं धूपदीपसमन्वितम् ॥ ८८ ॥
सुरावटीशतं दत्त्वा जातीकेसरवासितम् । एवं सम्पूजिता देवी प्रीता राज्ञे वरं ददौ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आविष्टः पुरुषः कश्चिद्वदन्नृपसत्तमम् । शृणु राजन्भविष्यं ते राज्यं निहतकण्टकम्
राजंस्तवैव नाम्नाऽत्र राजधानीभविष्यति । मत्समीपे महाराजचिरंराज्यंकरिष्यसि
देवदेवप्रसादश्च भविष्यति तवाऽनघ !। इति दत्त्वा वरं तस्मा आविष्टः प्रकृतिं ययौ
ततो लब्धवरो राजा ययौ शुकमुनिं पुनः ॥ ९३ ॥
अभिवाद्य मुनिं तेनपूजितोमुदितोऽभवत् । माहात्म्यंसरसोब्रूहिकमलाख्यस्य मे मुने

श्रीशुक उवाच

पुरा दुर्वाससः शापादवतीर्णा सुरालयात् । पद्मापद्माक्षदयिता विष्णुना सहिता नृप
सरः काञ्चनपद्माढ्यमिदं प्राप्य महेश्वरी । तपश्चकार वर्षाणां दिव्यानामयुतं रमा ॥
ततो देवाविचिन्वन्तःश्रियंविष्णुसमन्विताम् । पुरन्दरेणसंयुक्ताराजन्नस्मिन्सरोवरे
स्थितां सुवर्णकमले पुण्डरीकाक्षसंयुताम् ।
दृष्ट्वा प्रीतिसमायुक्ताः प्रणम्याम्बुजधारिणीम् ॥
कृताञ्जलिपुटाः सेन्द्रास्तुष्टुवुर्लोकमातरम् ॥ ९८ ॥

देवा ऊचुः

नमः श्रियै लोकधात्र्यै ब्रह्ममात्रे नमोनमः । नमस्ते पद्मनेत्रायै पद्ममुख्यै नमोनमः ॥
प्रसन्नमुखपद्मायै पद्मकान्त्यै नमोनमः । नमो बिल्ववनस्थायै विष्णुपत्न्यै नमोनमः
विचित्रक्षौमधारिण्यै पृथुश्रोण्यै नमोनमः । पक्वबिल्वफलापीनतुङ्गस्तन्यै नमोनमः
सुरक्तपद्मपत्राभकरपादतले शुभे । सुरत्नाङ्गदकेयूरकाञ्चीनूपुरशोभिते ॥
यक्षकर्दमसंलिप्तसर्वाङ्गे कटकोज्ज्वले ॥ १०२ ॥
माङ्गल्याभरणैश्चित्रैर्मुक्ताहारैर्विभूषिते । ताटङ्कैरवतंसैश्च शोभमानमुखाम्बुजे ॥१०३॥
पद्महस्ते नमस्तुभ्यं प्रसीद हरिवल्लभे !। ऋग्यजुःसामरूपायै विद्यायै ते नमोनमः ॥
प्रसीदास्मान्कृपादृष्टिपातैरालोकयाऽब्धिजे । ये दृष्टास्तेत्वयाब्रह्मरुद्रेन्द्रत्वंसमाप्नुयुः

श्रीशुक उवाच

इति स्तुता तदा देवैर्विष्णुवक्षःस्थलालया ।
विष्णुना सह संदृश्या रमा प्रीताऽवदत्सुरान् ॥ १०६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीरुवाच

सुरारीन्सहसा हत्वा स्वपदानि गमिष्यथ ।
ये स्थानहीनाः स्वस्थानाद्भ्रंशिता ये नरा भुवि ॥ १०७ ॥
ते माममनेन स्तोत्रेण स्तुत्वा स्थानमवाप्नुयुः । अखण्डैर्विल्वपत्रैर्मामर्चयन्तिनराभुवि
स्तोत्रेणाऽनेन ये देवा नरा युष्मत्कृतेन वै । धर्मार्थकाममोक्षाणामाकरास्तेभवन्ति वै
इदं पद्मसरो देवा ये केचननराभुवि । प्राप्यस्नानंकरिष्यन्तिमांस्तुत्वाविष्णुवल्लभाम्
तेऽपि श्रियं दीर्घमायुर्विद्यां पुत्रान्सुवर्चसः ।
लब्ध्वा भोगांश्च भुक्त्वाऽन्ते नरा मोक्षमवाप्नुयुः ॥ १११ ॥
इति दत्त्वा वरं देवी देवेन सह विष्णुना । आरुह्य गरुडेशानं वैकुण्ठस्थानमाययौ ॥

इति श्रीस्कन्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसंवादे वसुनामकनिषादवृत्तान्तपद्मसरोमाहात्म्यादिवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः

तोण्डमन्नृपस्यस्वपितुःसकाशाद्राज्यप्राप्तिवर्णनम्

श्रीशुक उवाच

इदं पद्मसरोनाम राजन्पापप्रणाशनम् । कीर्तनात्स्मरणात्स्नानान्नृणांलक्ष्मीप्रदम्भुवि
कृत्वा स्नानं त्वमप्यस्मिन्व्रज स्वपितुरन्तिकम् ॥ १ ॥

श्रीवराह उवाच

एतच्छुकवचः श्रुत्वा स्नात्वा पद्मसरोवरे ॥ २ ॥
तं नत्वा हयमारुह्य तोण्डमान्स्वपुरंययौ । तं पितायुवराजानं कृत्वा त्रीन्वत्सरानथ
रञ्जकत्वञ्च सामर्थ्यं शौर्यं वीर्यं सुशीलताम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तिम्विप्रेषु पुत्रस्य वीक्ष्य राजा स्वमन्त्रिभिः ॥ ४ ॥

स्वपदेस्थापयामासस्वभिषिच्यविधानतः । अनुनीय सुतं पत्न्या सार्धंराजावनंययौ
तोण्डमानपिसाम्राज्यंलब्ध्वाराज्यञ्चकार ह । निषादस्यवनेदेवो वाराहंरूपमास्थितः
श्यामाकपक्वम्भक्षित्वा रात्रौरात्रौचचारह । पदानि स वराहस्यचान्वियेषदिवादिवा
अदृष्ट्वा तं वराहं स रात्रौ जाग्रद्धनुर्धरः । स्थितोऽपश्यच्चरन्तन्तं चन्द्रकोटिसमप्रभम्
वराहं सुभगाकारं श्यामाकवनमध्यतः । तं दृष्ट्वा धनुरादाय सिंहनादञ्चकार ह ॥ ६ ॥
वराहस्तद्ध्वनिं श्रुत्वा वनान्निष्क्रम्य सत्वरम् । ययौतञ्चाप्यनुययौवराहंसनिषादपः
रात्रिशेषमनुद्रुत्य वने चन्द्रसमप्रभम् । वल्मीकं प्रविशन्तं च ददर्श स निषादपः ॥

गच्छन्तं पूर्णिमाचन्द्रमस्तं गिरिवरं यथा ।
विस्मितोऽखानयत्कोपाद्वल्मीकं स निषादपः ॥ १२ ॥

धरावराहौदद्वशेमूर्च्छितोऽयंपपातह । पितरम्मूर्च्छितं दृष्ट्वा तत्पुत्रोभक्तिमांस्तदा
वराहदेवन्तुष्टाव तेन प्रीतोऽभवद्धरिः । आविश्य पितरन्तस्य प्रोवाच मधुसूदनः ॥

श्रीभगवानुवाच

अहम्वराह देवेशो नित्यमस्मिन्वसाम्यहम् । राज्ञे त्वमुक्त्वा मामत्र प्रतिष्ठाप्यैवपूजय

वल्मीकं कृष्णगोक्षीरैः क्षालयित्वा तदुत्थिते ।
शिलातले च वाराहमुद्धृत्य धरणीस्थितम् ॥ १६ ॥

कारयित्वा प्रतिष्ठाप्य विप्रैर्वैखानसैश्च माम् । पूजयेद्विविधैर्भोगैतोण्डमात्राजसत्तमः

इत्युक्त्वा तं जहौ देवः स च स्वस्थो बभूव ह ।
सुखासीनन्तु पितरं नमस्कृत्य निषादजः ॥ १८ ॥

न्यवेदयद्देववचःपित्रेसर्वंयथातथम् । सश्रुत्वाविस्मितोभूत्वा कृत्स्नं पुत्रवचःशुभम्
राज्ञे वक्तुं ययौ शीघ्रं निषादः स्वानुगैः सह । वसुर्निषादाधिपती राजद्वारमुपागमत्
निषादाधिपमाज्ञाय द्वारपालैर्नृपोत्तमः । आहूय तन्निषादेशं सभायाम्मन्त्रिभिः सह
सत्कृत्य तं वसुं राजा सपुत्रंसपरिच्छदम् । पप्रच्छ प्रीतिमान्राजा वसुं तंवनगोचरम्

किमागमनकृत्यन्ते वद त्वं वनगोचर ! ॥ २२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वसुरुवाच

राजन्मम वने दृष्टमाश्चर्यं शृणु भूपते !॥ २३ ॥

कश्चिच्छ्वेतवराहस्तु श्यामाकमचरन्निशि । तम्वराहं धनुष्पाणिरन्वधावमहं नृप
अनुद्रुतो वायुवेगोगत्वावल्मीकमाविशत् । स्वामिपुष्करिणीतीरेपश्यतो मम भूपते

वल्मीकमखनं क्रोधान्मूर्च्छितो न्यपतम्भुवि ।
मत्पुत्रोऽयं समागत्य मां दृष्ट्वा मूर्च्छितम्भुवि ॥ २६ ॥

शुचिर्भूत्वा देवदेवं तुष्टाव मधुसूदनम् । ततो मयि समाविश्य वराहोऽध्यवदत्सुतम्
राज्ञे निवेदय क्षिप्रं मच्चरित्रं निषादप । कृष्णगोक्षीरसेकेन वल्मीकं क्षालयेन्नृपः ॥

दृश्यते च शिला काचिद्वल्मीकस्था सुशोभना ।
वामाङ्कस्थभुवं माञ्च वराहवदनं स्थितम् ॥ २६ ॥

कारयित्वा शिल्पिनाऽथप्रतिष्ठाप्य मुनीश्वरैः । वैखानसैर्मुनिवरैरर्चयेत्तोण्डमानपि ॥
अथ गत्वाश्रीनिवासंवल्मीकावृतपद्द्वयम् । कपिलाकृष्णगोक्षीरसेचनैःक्षालयेच्छनैः
आपादपीठपर्यन्तं क्षालयित्वा दिनेदिने । कुर्यात्प्राकारमुभयोरुत्तरे दक्षिणेतथा ॥३२
इत्युक्त्वा चैव माऽमुञ्चद्देवःस्वस्थोऽभवन्नृप । इदन्तेवक्तुमायातोदेवदेवचिकीर्षितम्

श्रीवराह उवाच

तोण्डमानपि तच्छ्रुत्वा सुप्रीतो विस्मितोऽभवत् ।
ततः कार्यं विनिश्चित्य मन्त्रिभिः पुष्करादिभिः ॥ ३४ ॥
वेङ्कटाद्रिं जिगमिषुर्गोपानाहूय सर्वशः ।
कृष्णाश्च कपिला गावो याः काश्चित्सन्ति मामिकाः ॥ ३५ ॥
ताः सवत्सा आनयध्वं वेङ्कटाद्रिसमीपतः ।
इत्याऽऽज्ञाप्य नृपो गोपाञ्छ्वो यात्रेति च मन्त्रिणः ॥ ३६ ॥
विसृज्य प्रकृतीः सर्वा विवेशान्तःपुरम्वशी ।
उक्त्वा कथां तां पत्नीभ्यः सुष्वाप निशि पार्थिवः ॥ ३७ ॥

तं स्वप्ने श्रीनिवासोऽपि बिलमार्गंह्यदर्शयत् । स्वपुरादाबिलंमार्गंपल्लवानसृजद्धरिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं स्वप्नं नृपोदृष्ट्वा प्रातरुत्थाय सत्वरः । आहूय मन्त्रिणः सर्वान्प्रकृतीर्ब्राह्मणानपि
स्वप्नन्तथाविधं चोक्त्वाऽपश्यद्द्वारेऽथ पल्लवान् ।
युक्ते मुहूर्ते प्रययौ हयमारुह्य तोण्डमान् ॥ ४० ॥
पश्यन्पल्लवभङ्गांश्च शनैः प्रीतो ययौ बिलम् । दृष्ट्वा विस्मयमापन्नो निर्ममेतत्रपत्तनम्
बिलमन्तःपुरे कृत्वा प्राकारश्चाऽप्यकारयत् ।
वसंस्तत्र नृपेन्द्रोऽसौ निर्जित्य पृथिवीमिमाम् ॥ ४२ ॥
यथोक्तं देवदेवेन क्षीरप्रक्षालनादिकम् । कृत्वा प्राकारनिर्माणं कर्तुमुद्योगमाययौ ॥
तदानीं देवदेवेन स्वयमाज्ञापितो नृपः । तिन्तिणींचम्पकञ्चोभौपालयैतौ नगोत्तमौ
मम चाऽऽस्थानकी चिञ्चा लक्ष्म्याः स्थानञ्च चम्पकः ।
नमस्कार्यौ नृपैस्तौ हि ऋषिदेवनरैः सदा ॥ ४५ ॥
संस्थाप्यैतौनृपश्रेष्ठच्छेदयान्यान्नगोत्तमान् । प्राकारमात्रं कुरु मे द्वारगोपुरसंयुतम् ॥
विमानन्तु भवद्वंश्योनाम्नानारायणोनृपः । कारयिष्यतिमद्भक्तः स्वर्णेनाऽलङ्करिष्यति

श्रीवराह उवाच

एवमुक्त्वा तोण्डमानं विरराम श्रियःपतिः ।
एवं देववचःश्रुत्वा कृत्वा प्राकारमेव च॥ ४८ ॥
पूजयामास मुनिभिर्वैखानसकुलोद्भवैः ॥ ४९ ॥
नित्यं बिलेन चाऽऽगत्य देवं नत्वानृपोत्तमः । राज्यञ्चकारधर्मेणभुञ्जानोभोगमुत्तमम्
एतस्मिन्नेव काले तु दाक्षिणात्यो द्विजोत्तमः ॥ ५१ ॥
गङ्गास्नानायगच्छन्वैसदारःप्रययौपुरात् । मार्गेऽथगर्भिणीजाता ब्राह्मणी ब्राह्मणःसच
तांतुगर्भवतींदृष्ट्वास्वात्मानुगमनेऽक्षमाम् । राजानं द्रष्टुकामोऽसौ राजद्वारमुपागमत्
द्वाःस्थेनाऽऽज्ञापितो राजा तमाहूय द्विजोत्तमम् ।
पूजयित्वा तु विधिवत्पप्रच्छ कुशलं द्विजम् ॥ ५४ ॥

राजोवाच

किमागमनकृत्यन्ते किंकरिष्याम्यहं द्विज ! ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्राह्मण उवाच

वासिष्ठो वीरशर्माऽहं सामवेदी नृपोत्तम ! ॥ ५५ ॥
सदारोनिर्गतोराजन्गङ्गास्नानाय सादरः । मार्गेच गर्भिणीचेयंकौशिकीपुण्यशालिनी
नाम्ना लक्ष्मीरिति ख्याता सुशीला च पतिव्रता ।
संस्थाप्यैनां तव गृहे व्रतं निर्वर्तयाम्यहम् ॥ ५७ ॥
तस्माद्राजन्प्रयच्छाऽस्यै यथेष्टं भक्तवेतने । तावच्च रक्ष्यतां लक्ष्मीर्यावदागमनं मम

श्रीवराह उवाच

राजा तस्य वचः श्रुत्वा तण्डुलानि धनान्यपि । दत्त्वाषणमासपर्यन्तंगृहमन्तःपुरेददौ
तां न्यस्यब्राह्मणःप्रीतोगङ्गास्नानायनिर्ययौ । गत्वाभागीरथीं गङ्गां प्रयागेक्षेत्रउत्तमे
स्नात्वा काशीं ततो गत्वा तत्रोषित्वा दिनत्रयम्
गयाम्प्राप्य पितृश्राद्धमकरोद्व ब्राह्मणोत्तमः ॥ ६१ ॥
गत्वाऽयोध्यामपिपुरींप्रययौबदरीवनम् । सालग्रामं ततो गत्वा स्वदेशम्प्रतिनिर्ययौ
सम्वत्सरद्वयेऽतीते चैत्रे मासि शुभे दिने । निवृत्तोऽसौद्विजश्रेष्ठः शनैरागत्यमाधवे
एकादश्यां शुक्लपक्षे पुना राजानमाययौ । राजा तु विस्मृत्यतदाब्राह्मणींनास्मरन्नृपः
ब्राह्मणी मानिनी गेहे मृता शुष्का बभूव ह ।
वीरशर्मा ततो विप्रो गङ्गातोयकरण्डकम् ॥ ६५ ॥
विमुच्य बन्धनं त्वेकं गङ्गाम्भःकरकं शुभम् । प्रादायराज्ञे पप्रच्छ पत्नी कुशलिनीतिमे
स्मृत्वाऽथ राजा विप्रन्तं स्थीयतामीतिचाऽब्रवीत् ।
अन्तःपुरं ततो गत्वा तामपश्यन्मृतां गृहे ॥ ६७ ॥
अनुक्त्वा ब्रह्मणे तस्मै प्रविश्य बिलमुत्तमम् ।
श्रीनृसिंहं नमस्कृत्य पुनः प्राप्य बिलोत्तमम्.॥ ६८ ॥
श्रीनिवासं ययौ द्रष्टुंश्रीभूमिसहितम्परम् । तं दृष्ट्वा सहसायान्तं जुगूहाते धरारमे
प्रणमन्तमवोचत्तं किमकाले नृपागतः । नृपोऽवदत्प्रणम्येशं भीतोऽथब्राह्मणींमृताम्
तच्छ्रुत्वा देवदेवोऽपि मा भै राजन्द्विजोत्तमात् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आन्दोलितां तामारोप्य स्त्रीभिः स्वाभिः समन्विताम् ॥ ७१ ॥
मदालयात्पूर्वभागे: द्वादश्यां स्नापयप्रभो । अस्थिनाम्निसरस्यस्मिन्नपमृत्युनिवारणे
प्राप्तजीवासमं स्त्रीभिर्ब्राह्मणेन च योक्ष्यते । शीघ्रं याहि नृपश्रेष्ठ यथोक्तं वचनं कुरु॥
इति देववचः श्रुत्वाप्रययौस्वपुरंनृपः । आन्दोलिकासुरम्यासुस्त्रियआरोप्यतामपि ॥
ब्राह्मणञ्चपुरःस्कृत्यद्रष्टुं देवंययौनृपः । अस्थिकूटसरःप्राप्य स्नापयामास ताः स्त्रियः
त्वगस्थिरूपा ता चापि ताभिः क्षिप्तासरोवरे । प्राप्तजीवायथापूर्वंसुव्यञ्जिरशरीरजा
उत्थिता सरसःस्नात्वा राज्ञीभिःसहमङ्गला । प्राप्ताच ब्राह्मणस्प्रीता भर्तारंपुनरागतम्
राजा हरिं पूजयित्वा ब्राह्मणाय धनन्ददौ । सहस्रनिष्कपर्यन्तंवस्त्राणिविविधानिच
स्वदेशगमनायैव सादरम्विससर्ज हः । विप्रः श्रुत्वा स्त्रियो वृत्तंप्रभाम्वं वेङ्कटेशितुः
आशीः प्रयुज्य राज्ञेऽथ स्वदेशं प्रययौ द्विजः ।
विप्रे गते श्रीनिवासो राजानम्पुनरब्रवीत् ॥ ८० ॥
दिनेदिनेच मध्याह्ने नैवेद्याऽनन्तरं नृप । आगत्य मामर्चयित्वा यथेष्टं स्वर्णपङ्कजैः ॥
गत्वा पुरीं स्वधर्मेण राज्यं कुरु नराधिप !। यद्यद्दिष्टन्तव नृप भविष्यति न संशयः
नागन्तव्यमकाले तु त्वया नृप कदाचन । एवं कालार्चनं कृत्वा गत्वा त्वं स्वपुरेवस

राजोवाच

तथा करिष्ये देवेश! मध्याह्ने चार्चयाम्यहम् । इति देवाज्ञया नित्यमर्चयन्स्वर्णपङ्कजैः
तदूर्ध्वं तुलसीपुष्पं जात्वपश्यत्स मृण्मयम् ॥ ८५ ॥
विस्मितो देवदेवेशमपृच्छन्नृपसत्तमः ।

राजोवाच

केनाऽर्च्यसे मृण्मयैश्च कमलैस्तुलसीसमैः ॥ ८६ ॥
राज्ञा पृष्टो देवदेवः स्मृत्वा राजानमब्रवीत् । कश्चित्कुलालोमद्भक्तःकुर्वग्रामेवसत्यसौ
स्वगृहेऽर्चयते राजंस्तदङ्गीक्रियते मया । इति देववचः श्रुत्वा तं द्रष्टुं प्रययौ नृपः ॥
गत्वा कुर्वपुरं तस्य कुलालस्य गृहं ययौ । राजानमागतं दृष्ट्वा प्रणम्यै वाग्रतःस्थितः
स्थितन्तं भीमनामानं पप्रच्छ नृपसत्तमः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तोण्डमानुवाच

भीम! पूजयसे देवं कथम्वद कुलोत्तम !॥ ९० ॥

श्रीवाराह उवाच

पृष्टः प्राह कुलालोऽपि जातु जाने न चार्ऽचनम् ।
केनोक्तं नृपतिश्रेष्ठ! कुलालोऽर्चयतीति हि ॥ ९१ ॥

तोण्डमानुवाच

देवेन श्रीनिवासेन ममोक्तं हि त्वदर्चनम् । स तु श्रुत्वा नृपवचः स्मृत्वा देववरम्पुरा

भीम उवाच

यदाप्रकाशितापूजायदाराजा समागतः । तोण्डमांस्तेन संवादस्तदामोक्षंगमिष्यसि
इति पूर्वम्वरं देवो दत्तवान्वेङ्कटेश्वरः ॥ ९४ ॥

इत्युक्त्वाऽथ कुलालोऽपि पत्न्यासार्धं तथैव च । विमानमागतंदृष्ट्वादेवंदृष्ट्वाजनार्दनम्
प्रणमन्प्रजहौप्राणान्सदारो भक्तसत्तमः । पश्यतो राजराजस्य विमानमधिरुह्य च ॥
दिव्यरूपधरो देव्या सार्धं विष्णुपदं ययौ । दृष्ट्वा राजाऽद्भुतं तत्र स्वपुरं प्राप्यहर्षितः
स्वपुत्रं श्रीनिवासाख्यमभिषिच्यविधानतः । परिपालय धर्मेण मानवांश्चवसुन्धराम्
इत्याज्ञाप्य सुतं श्रीमांस्ततााप परमं तपः । तप्यतस्तस्य देवोऽपि प्रत्यक्षमभवद्धरिः
आरुह्य गरुडं देवो रमाभूमिसमन्वितः ॥ १०० ॥

श्रीभगवानुवाच

किं करोमि नृपश्रेष्ठ तपसा तोषितस्तव । इत्युक्तो देवदेवेन तोण्डमानपि राजराट्
प्रीतिमान्प्राञ्जलिर्भूत्वा सगद्गदमुवाच ह । त्वल्लोके वस्तुमिच्छामि जरामरणवर्जिते
इदमेव वरं देहि माधवैतन्ममेप्सितम् ॥ १०३ ॥

श्रीवराह उवाच

इत्युक्त्वानिपपातोर्व्यांसाष्टाङ्गं देवसन्निधौ । तदाकलेवरं मुक्त्वा विमानं त्वारुरोहच
गन्धर्वैः स्तूयमानोऽसौसारूप्यंप्राप्यशार्ङ्गिणः । यच्छोकमोहरहितंजरामरणवर्जितम्
पुनरावृत्तिरहितं तद्विष्णोः पदमाययौ ॥ १०६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एतद्भविष्यं देवेशि मयोक्तं वरवर्णिनि !। यः श्रावयेद्यः शृणुयाद्विष्णुलोकंसगच्छति

श्रीसूत उवाच

इत्युक्तं देवदेवेन सभविष्यं सहोत्तरम् । शृणुयाद्यः पठेद्भक्त्या कथां पुण्यांपुरातनीम्

स तु भुक्त्वाऽखिलान्कामानन्ते विष्णुपदं व्रजेत् ॥ १०६ ॥

इति स्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे भविष्यद्वर्णने तोण्डमांसश्चक्रवर्तिवृत्तवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः

काश्यपस्यस्वामिपुष्करिणीस्नानेनमहापातकनाशवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

अथातःसंप्रवक्ष्यामिस्वामिपुष्करिणींशुभाम् । लक्ष्मीकृत्यकथामेकांपवित्रांद्विजसत्तमाः

काश्यपाख्यो द्विजःपूर्वमस्मिंस्तीर्थवरेशुभे । स्नात्वातिमहतःपापाद्विमुक्तोनरकप्रदात्

ऋषय ऊचुः

मुने ! काश्यपनामासावकरोत्किं हि पातकम् ।

स्नात्वा तीर्थवरे ह्यत्र यस्मान्मुक्तोऽभवत्क्षणात् ॥ ३ ॥

एतन्नः श्रद्धानानांब्रूहि सूत! कृपाबलात् । त्वद्वचोऽमृततृप्तानांनपिपासाऽपि विद्यते

श्रीसूत उवाच

श्रीस्वामिपुष्करिण्याश्च माहात्म्यप्रतिपादकम् ।

इतिहासं प्रवक्ष्यामि पठताम्पापनाशनम् ॥ ५ ॥

अभिमन्युसुतो राजा परिक्षिन्नाम नामतः । अध्यास्तहास्तिनपुरंपालयन्धर्मतोमहीम्

स राजा जातु विपिने चचार मृगयारतः । षष्टिवर्षवया भूपः क्षुत्तृष्णापरिपीडितः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नष्टमेकं स विपिने मार्गयन्मृगमादरात् । ध्यानारूढं मुनिं दृष्ट्वा प्राह भूपालकोत्तमः ॥
मया वाणेन विपिनेमृगो विद्धोऽधुनामुने । दृष्टःस किं त्वयाविद्धन्विद्रुतोभयकातरः
समाधिनिष्ठो मौनित्वान्न किञ्चिदपि सोऽब्रवीत् ।
ततो धनुरट्न्या स स्कन्धे तस्य महामुनेः ॥ १० ॥
निधाय मृतसर्पं तु कुपितः स्वपुरं ययौ । मुनेस्तस्य सुतः कश्चिच्छृङ्गीनामबभूववै
सखा तस्य कृशाख्योऽभूच्छृङ्गिणो द्विजसत्तमः ।
सखायं शृङ्गिणं प्राह कृशाख्यः स सखा ततः ॥ १२ ॥
पिता तव मृतं सर्पं स्कन्धेन वहतेऽधुना । मा भूद्दर्पस्तव सखेमाक्रुध्यस्त्वमिदंवृथा
सोऽभवत्कुपितः शृङ्गी दित्सुःशापंनृपाय वै । मत्तातेशवसर्पंयोन्यस्तवान्मूढचेतनः
स सप्तरात्रान्म्रियतां सन्दष्टस्तक्षकाहिना । शशापैवं मुनिसुतः औत्तरेयं परीक्षितम्
शमीकाख्यः पिता तस्य शप्तं श्रुत्वा सुतेन तम् । नृपंप्रोवाचतनयंशृङ्गिणंमुनिपुङ्गवः
रक्षकं सर्वलोकानां नृपं किं शप्तवानसि । अराजके वयं लोके स्थास्यामःकथमञ्जसा
क्रोधेन पातकं भूयाद्ययया प्राप्यते सुखम् । यः समुत्पादितं कोपं क्षमयैवनिरस्यति
इह लोके परत्रासावत्यन्तं सुखमश्नुते । क्षमायुक्ता हि पुरुषा लभन्ते श्रेय उत्तमम्
ततः शमीकः स्वं शिष्यं प्राह गौरमुखाभिधम् ।
भो गौरमुख! गत्वा त्वं वद भूपं परीक्षितम् ॥ २० ॥
इमं शापं मत्सुतोक्तं तक्षकाधिपदंशनम् । पुनरायाहि शीघ्रं त्वं मत्समीपं महामते !॥
एवमुक्तः शमीकेन ययौ गौरमुखो नृपम् । समेत्यचाऽब्रवीद्भूपमौत्तरेयं परीक्षितम्
दृष्ट्वा सर्पं पितुः स्कन्धे त्वया विनिहितं मृतम् ।
शमीकस्य सुतः शृङ्गी शशाप त्वां रुषान्वितः ॥ २३ ॥
एतद्दिनात्सप्तमेऽह्नि तक्षकेण महाहिना । दष्टो विषाग्निना दग्धो भूयादाश्वभिमन्युजः
एवंशशापत्वांराजञ्छृङ्गीतस्यमुनेः सुतः । एतद्वक्तुंपितातस्यप्राहिणोन्मांत्वदन्तिकम्
इतीरयित्वा तं भूपमाशु गौरमुखो ययौ । गते गौरमुखे पश्चाद्राजा शोकपरायणः
अभ्रंलिमहथोत्तुङ्गमेकस्तम्भं सुविस्तृतम् । मध्येगङ्गं व्यतनुत मण्डपं नृपपुङ्गवः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महागारुडमन्त्रज्ञैरोषधिज्ञैश्चिकित्सकैः । तक्षकस्य विषं हन्तुं यत्नं कुर्वन्समाहितः ॥
अनेकदेवब्रह्मर्षिराजर्षिप्रवरान्वितः । आस्ते तस्मिन्नृपस्तुङ्गे मण्डपेविष्णुभक्तिमान्
तस्मिन्नवसरे विप्रःकाश्यपोमान्त्रिकोत्तमः । राजानंरक्षितुंप्रायात्तक्षकस्यमहाविषात्
सप्तमेऽहनि विप्रेन्द्रो दरिद्रो धनकामुकः । अत्रान्तरे तक्षकोऽपिविप्ररूपीसमाययौ
मध्येमार्गं विलोक्याऽथ काश्यपं प्रत्यभाषत । ब्राह्मण! त्वंकुत्र यासिवदमेऽद्यमहामुने

इति पृष्टस्तदाऽवादीत्काश्यपस्तक्षकं द्विजः ।
परीक्षितं महाराजं तक्षकोऽद्य विषाग्निना ॥ ३३ ॥

धक्ष्यते तं शमयितुं तत्समीपमुपैस्यहम् । इत्युक्तः स च तं विप्रं तक्षकः पुनरब्रवीत्
तक्षकोऽहंद्विजश्रेष्ठ! मयादष्टश्चिकित्सितुम् । नशक्योऽब्दशतेनाऽपिमहामन्त्रायुतैरपि

चिकित्सितुं चेन्मद्दष्टं शक्तिरस्ति तवाऽधुना ।
अनेकयोजनोच्छ्रायं दशास्युज्जीवय द्रुमम् ॥ ३६ ॥
ततो भवान्समर्थो हीत्येवस्मे भाति हे द्विज !।
इतीरयित्वा तं वृक्षमदशत्तक्षकस्तदा ॥ ३७ ॥

अभवद्भस्मसात्सोऽपि वृक्षोऽत्यन्तसमुच्छ्रितः । पूर्वमेवनरःकश्चित्तंवृक्षमधिरूढवान्
तक्षकस्य विषोल्काभिःसोऽपिदग्धोऽभवत्तदा । तन्नरंनविजज्ञातेतौचकाश्यपतक्षकौ
काश्यपः प्रतिजज्ञेऽथतक्षकस्यापिशृण्वतः । मन्मन्त्रशक्तिपश्यन्तुसर्वेविप्रादयोऽधुना
इतीरयित्वातंवृक्षंभस्मीभूतंविषाग्निना । आजीवयन्मन्त्रशक्त्याकाश्यपोमान्त्रिकोत्तमः

स नरस्तेन वृक्षेण साकमुज्जीवितोऽभवत् ।
अथाऽब्रवीत्तक्षकस्तं काश्यपं मन्त्रकोविदम् ॥ ४२ ॥

यथा न मुनिवाङ्मिथ्याभवेदेवं कुरु द्विज !। यत्ते राजाधनंदद्यात्ततोऽपिद्विगुणंधनम्
ददाम्यहंनिवर्तस्व शीघ्रमेव द्विजोत्तम !। इत्युक्त्वाऽनर्घरत्नानितस्मैदत्त्वा स तक्षकः
न्यवर्तयत्काश्यपं तं ब्राह्मणंमन्त्रकोविदम् । अल्पायुषं नृपं मत्वाज्ञानदृष्ट्यासकाश्यपः
स्वाश्रमं प्रययौ तूष्णींलब्धरत्नश्चतक्षकात् । सोऽब्रवीत्तक्षकःसर्पान्सर्वानाहूयतत्क्षणे
यूयं तं नृपतिं प्राप्य मुनीनां वेषधारिणः । उपहारफलान्याशु प्रयच्छत परीक्षिते ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथेत्युक्त्वा सर्वसर्पा ददू राज्ञे फलान्यमी। तक्षकोऽपि तथातत्रकस्मिंश्चिद्वदरीफले
कृमिवेषधरो भूत्वा व्यतिष्ठद्दंशितुं नृपम्। अथ राजा प्रदत्तानि सर्पैर्ब्राह्मणरूपकैः ॥
परीक्षिन्मन्त्रिवृद्धेभ्यो दत्त्वा सर्वफलान्यपि ॥ ५० ॥
कौतूहलेन जग्राह स्थूलमेकं करे फलम्। तस्मिन्नवसरे सूर्योऽप्यस्ताचलमगाहत ॥
मिथ्या ऋषिवचो मा भूदिति तत्रत्यमानवाः।
अन्योऽन्यमवदन्सर्वे ब्राह्मणाश्चनृपास्तदा ॥ ५२ ॥
एवं वदत्सु सर्वेषु फलेतस्मिन्नदृश्यत। साधु रक्तःकृमिः सर्वैं राज्ञा चाऽपिपरीक्षिता
अयं किं मां दशेदद्य क्रिमिरित्युक्तवान्नृपः। निदधे तत्फलंकण्ठेसकृमिद्विजसत्तमाः
तक्षकोऽस्मिन्स्थितः कण्ठे कृमिरूपीफलेतदा। निर्गत्यतत्फलादाशुनृपदेहमवेष्टयत्
तक्षकावेष्टिते भूपे पार्श्वस्था दुद्रुवुर्भयात्। अनन्तरं नृपोविप्रास्तक्षकस्यविषाग्निना
दग्धोऽभूद्भस्मसादाशु सप्रासादोबलीयसा। कृत्वौर्ध्वदेहिकंतस्यनृपस्यसपुरोहिताः
मन्त्रिणस्तत्सुतं राज्ये जनमेजयनामकम्। राजानमभ्यषिञ्चन्वै जगद्रक्षणवाञ्छया
तक्षकाद्रक्षितुं भूपमायातः काश्यपाभिधः। यो ब्राह्मणोमुनिश्रेष्ठःससर्वैर्निन्दितोजनैः
बभ्राम सकलान्देशाञ्छिष्टैः सर्वैश्च दूषितः। अवस्थानंन लेभेसग्रामेवाप्याश्रमेऽपिवा
यान्यान्देशानसौ यातस्तत्र तत्रमहाजनैः। तत्तद्देशान्निरस्तः सञ्छाकल्यं शरणं ययौ
प्रणम्य शाकल्यमुनिं काश्यपोनिन्दितो जनैः। इदं विज्ञापयामासशाकल्यायमहात्मने

काश्यप उवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञशाकल्य! हरिवल्लभ। मुनयो ब्राह्मणाश्चाऽन्ये मां निन्दन्ति सुहृज्जनाः
नास्याऽहं कारणं जाने किंमांनिन्दन्ति मानवाः। ब्रह्महत्यासुरापानंगुरुस्त्रीगमनंतथा
स्तेयं संसर्गदोषो वः मयानाऽऽचरितंक्वचित्। अन्यान्यपिचपापानिनकृतानिमयामुने
तथाऽपि निन्दन्ति जना वृथामांबान्धवादयः। जानासिचेत्त्वंशाकल्यमयादोषंकृतंवद
उक्तोऽथकाश्यपेनैवशाकल्याख्योमहामुनिः। क्षणंध्यात्वाबभाषेतंकाश्यपंद्विजसत्तमाः

शाकल्य उवाच

परीक्षितं महाराजं तक्षकाद्रक्षितुं भवान्। आयासीदर्धमार्गे तु तक्षकेण निवारितः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिकित्सितुं समर्थोऽपि विषरोगादिपीडितम् ।
यो न रक्षति लोकेस्मिंस्तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥ ६६ ॥

क्रोधात्कामाद्भयल्लोभान्मात्सर्यान्मोहतोऽपिवा । योनरक्षतिविप्रेन्द्रविषरोगातुरंनरम्
ब्रह्महा च सुरापी वा स्तेयी च गुरुतल्पगः । संसर्गदोषदुष्टश्चनापितस्यविनिष्कृतिः
कन्याविक्रयिणश्चापि हयविक्रयिणस्तथा । कृतघ्नस्याऽपिशास्त्रेषुप्रायश्चित्तंतुविद्यते
विषरोगातुरं यस्तु समर्थोऽपि न रक्षति । नतस्यनिष्कृतिःप्रोक्ताप्रायश्चित्तायुतैरपि
न तेन सह पङ्क्तौ च भुञ्जीत सुकृती जनः । न तेन सह भाषेत न पश्येत्तंनरंक्वचित्
तत्सम्भाषणमात्रेण महापातकभाग्भवेत् । परीक्षित्समहाराजः पुण्यश्लोकश्चधार्मिकः
विष्णुभक्तोमहायोगीचातुर्वर्ण्यस्यरक्षिता । व्यासपुत्राद्धरिकथांश्रुतवान्भक्तिपूर्वकम्
अरक्षित्वा नृपं तं तु वचसा तक्षकस्य यत् । निवृत्तस्तेन विप्रेन्द्रैर्बान्धवैरपि दूष्यसे
स परीक्षिन्महाराजो यद्यपिक्षणजीवितः । तथापियावन्मरणंबुधैःकार्यंचिकित्सितम्

यावत्कण्ठगताः प्राणा मुमूर्षोर्मानवस्य हि ।
तावच्चिकित्सा कर्तव्या कालस्य कुटिला गतिः ॥ ७६ ॥

इतिप्राहुःपुराश्लोकंभिषग्विद्याब्धिपारगाः । ततश्चिकित्साशक्तोऽपियस्मादकृतभेषजः
अर्धमार्गनिवृत्तश्च तेन त्वं गर्हितो ह्यसि । शाकल्येनैवमुदितः काश्यपः प्रत्यभाषत

काश्यप उवाच

ममैतद्दोषशान्त्यर्थमुपायं वद सुव्रत !। येन मां प्रतिगृह्णीयुर्बान्धवाः ससुहृज्जनाः ॥८२
कृपां मयि कुरुष्वत्वं शाकल्यहरिवल्लभ । काश्यपेनैवमुक्तस्तुशाकल्योऽपि मुनीश्वरः
क्षणं ध्यात्वा जगादैवं काश्यपं कृपया तदा ॥ ८४ ॥

शाकल्य उवाच

अस्यपापस्यशान्त्यर्थमुपायं प्रवदामि ते । तत्कर्तव्यंत्वयाशीघ्रं विलम्बंमाकृथाद्विज
सुवर्णमुखरीतीरे लक्ष्मीपतिनिवासभूः । वेङ्कटाद्रिरिति ख्यातः सर्वलोकेषु पूजितः
तस्मिञ्छेषगिरौ पुण्ये सुरासुरनमस्कृते । ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयादिनाशके ॥
स्वामिपुष्करिणी चेति सर्वपापापनोदिनी । उत्तरे श्रीनिवासस्य वर्तते मङ्गलप्रदा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तं गत्वा वेङ्कटं शैलं स्वामिपुष्करिणीं शुभाम् ।
स्नात्वा सङ्कल्पपूर्वं तु वराहस्वामिनं हरिम् ॥ ८६ ॥
सेवित्वा पश्चिमेतीरेनिर्गत्यहरिमन्दिरम् । गत्वातत्रविधानेनस्वर्णाचलनिवासिनम्
श्रीनिवासं परं देवं भक्तानामभयप्रदम् । शङ्खचक्रधरं देवं वनमालाविभूषितम् ॥
दृष्ट्वानिर्धूतपापोऽसि संशयं मा कृथा द्विज । शाकल्येनैवमुक्तस्तकाश्यपो मुनिपुङ्गवः
गत्वा वेङ्कटशैलेन्द्रं सुरासुरनमस्कृतम् । पुष्करिण्यांशुभायां तु स्नातोनियमपूर्वकम्
स्वस्थोऽभूत्काश्यपो विप्रोभिषग्विद्याब्धिपारगः ।
सर्वे बन्धुजना विप्रा काश्यपं ब्राह्मणोत्तमम् ॥ ६४ ॥
पूजयित्वा विधानेन पूज्योऽसि न च संशयः । एवम्वःकथितंविप्रावेङ्कटाचलवैभवम्
यः श्रृणोति नरोभक्त्या विष्णुलोके महीयते ॥ ६६ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलस्थस्वामिपुष्करिणीमाहात्म्ये काश्यपदोष-
निवृत्तिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

द्वादशोऽध्यायः

स्वामिपुष्करिणीस्नानात्तामिस्रादिनरकनिस्तारवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूत! सर्वार्थतत्त्वज्ञ ! वेदवेदाङ्गपारग !। श्रीस्वामिपुष्करिण्याश्च वैभवं वद नः प्रभो
यस्याः स्मरणमात्रेण मुक्तः स्यान्मानवो भुवि ॥ २ ॥

सूत उवाच

स्वामितीर्थं प्रशंसन्तिस्नान्ति वा कथयन्तिये । अष्टाविंशतिभेदांस्तेनरकान्नोपभुञ्जते
तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ । कुम्भीपाकं कालसूत्रमसिपत्रवनं तथा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृमिभक्षोऽन्धकूपश्च सन्दंशःशाल्मली तथा । लालाभक्षोह्यवीचिश्चसारमेयादनंतथा
तथैववज्रकणकः क्षारकर्दमपातनम् । रक्षोगणाशनं चाऽपिशूलप्रोतनिरोधनम् ॥
तिरोधानाभिधं विप्रास्तथा सूचीमुखाभिधम् ।
पूयशोणितभक्षश्च विषाग्निपरिपीडनम् ॥ ७ ॥
अष्टाविंशतिसङ्ख्यातमेतन्नरकसञ्चयम् ।
न याति मनुजो विप्राः स्वामितीर्थनिमज्जनात् ॥ ८ ॥
वित्तापत्यकलत्राणां योऽन्येषामपहारकः । सकालपाशबद्धोऽयं यमदूतैर्भयानकैः ॥
तामिस्रे नरकेघोरे पात्यते बहुवत्सरम् ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे स तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ १० ॥
मातरं पितरंविप्रान्योद्वेष्टिपुरुषाधमः । स कालसूत्रनरके विस्तृतायुतयोजने ॥११॥
अधस्तादग्निसन्तप्ते उपर्यर्कमरीचिभिः । खलेताम्रमयेविप्राः पात्यतेक्षुधयार्दितः ॥
स्नाति चेत्पुष्करिण्यां वै तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ।
यो वेदमार्गमुल्लङ्घ्य वर्तते कुपथे नरः ॥ १३ ॥
सोऽसिपत्रवने घोरे पात्यते यमकिङ्करैः ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ १४ ॥
योऽश्नाति पङ्क्तिभेदेनपक्वंसूपादिकं नरः । अकृत्वापञ्चयज्ञान्वाभुङ्क्तेमोहेनसद्विजाः
पात्यतेऽयं यमभटैर्नरके कृमिभोजने । भक्ष्यमाणः कृमिशतैर्भक्षयन्कृमिसञ्चयान् ॥
स्वयञ्च कृमिभूतः संस्तिष्ठेद्यावदघक्षयम् ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे वै तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ १७ ॥
योहरेद्विप्रवित्तानि स्नेहेन बलतोऽपि वा । अन्येषामपिवित्तानिराजातत्पुरुषोऽपिवा
अयोमयाग्निकुण्डेषु सन्दंशैः सोऽपिपीडितः । सन्दंशे नरकेघोरे पात्यते यमपूरुषैः ॥
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ।
अगम्यां योऽभिगच्छेत स्त्रियम्वै पुरुषाधमः ॥ २० ॥
अगम्यं पुरुषं योषिदभिगच्छेत वा द्विजाः । तावयोमयनारीं च पुरुषंचाऽप्ययोमयम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तप्ता वालिङ्ग्यतिष्ठन्तौयावच्चन्द्रदिवाकरम् । सूच्याख्येनरकेघोरे पात्येतेयमकिङ्करैः
स्नाति चेत्स्वामितीर्थेचतस्मिन्नासौनिपात्यते । बाधतेसर्वजन्तून्योनानोपायैरुपद्रवैः
शाल्मलीनरके घोरे पात्यते बहुकण्टके ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ २४ ॥
राजा वा राजभृत्यो वा यः पाषण्डमनुद्रुतः । भेदको धर्मसेतूनांवैतरण्यांनिपात्यते
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नासौ निपात्यते ।
वृषलीसङ्गदुष्टो वा शौचाद्याचारवर्जितः ॥ २६ ॥
त्यक्तलज्जस्त्यक्तवेदःपशुचर्यारतः सदा । सपूयविष्ठामूत्रासृक्श्लेष्मपित्तादिपूरिते
अतिबीभत्सनरके पात्यते यमकिङ्करैः ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ २८ ॥
यःश्वभिर्मृगयुर्वन्यान्बाणैर्वा बाधतेमृगान् । सविध्यमानोवाणौघैःपरत्र यमकिङ्करैः
प्राणरोधाख्यनरके पात्यते यमकिङ्करैः ।
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ ३० ॥
दाम्भिको यः पशून्यज्ञे विध्यनुष्ठानवर्जितः । हन्त्यसौ परलोकेषु वैशसेनरके द्विजाः
कर्त्यमानो यमभटैः पात्यते यमकिङ्करैः ।
स्नाति चेत्पुष्करिण्यास्वै तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ॥ ३२ ॥
आत्मभार्यां सवर्णां यो रेतः पाययते यदि । परत्र रेतःपायी स रेतःकुण्डेनिपात्यते
स्नाति चेत्पुष्करिण्यास्वै तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ।
यो दस्युर्मार्गमाश्रित्य गरदो ग्रामदाहकः ॥ ३४ ॥
वणिग्द्रव्यापहारी च स परत्र द्विजोत्तमाः । वज्रदंष्ट्राभिधेघोरे पात्यते नरके चिरम्
स्नाति चेत्स्वामितीर्थे तु तस्मिन्नाऽसौ निपात्यते ।
विद्यन्ते यानि चाऽन्यानि नरकाणि परत्र वै ॥ ३६ ॥
तानि नाऽऽप्नोति मनुजः स्वामितीर्थनिमज्जनात् ।
पुष्करिण्यां सकृत्स्नानादश्वमेधफलं लभेत् ॥ ३७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आत्मविद्या भवेत्साक्षान्मुक्तिश्चापि चतुर्विधा । न पापे रमते बुद्धिर्नभवेद्दुःखमेववा
तुलापुरुषदानेन यत्फलंलभ्यते नरैः । तत्फलं लभ्यते पुम्भिः स्वामितीर्थनिमज्जनात्
गोसहस्रप्रदानेनयत्पुण्यंहिभवेन्नृणाम् । तत्पुण्यंलभते मर्त्यःस्वामितीर्थनिमज्जनात्

धर्मार्थकाममोक्षाणां यं यमिच्छति पूरुषः ।
तं तं सद्यः समाप्नोति स्वामितीर्थनिमज्जनात् ॥ ४१ ॥

महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः । सद्यः पूतो भवेद्विप्राःस्वामितीर्थनिमज्जनात्

प्रज्ञालक्ष्मीर्यशःसम्पज्ज्ञानं धर्मो विरक्तता ।
मनः शुद्धिर्भवेन्नृणां स्वामितीर्थनिषेवणात् ॥ ४३ ॥

ब्रह्महत्याऽयुतश्चापि सुरापानायुतन्तथा । अयुतं गुरुदाराणां गमनम्पापकारिणाम् ॥

स्तेयायुतं सुवर्णानां तत्संसर्गाश्च कोटिशः ।
शाघ्रं विलयमायान्ति स्वामितीर्थनिमज्जनात् ॥ ४५ ॥

ब्रह्महत्यासमानानिसुरापानसमानि च । गुरुस्त्रीगमनेनाऽपियानितुल्यानिचास्तिकाः

सुवर्णस्तेयतुल्यानि तत्संसर्गसमानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति स्वामितीर्थनिमज्जनात् ॥ ४७ ॥

उक्तेष्वेतेषु सन्देहो न कर्त्तव्यः कदाचन । जिह्वाग्रे परशुं तप्तं प्रक्षिपन्ति चकिङ्कराः
अर्थवादमिमं सर्वं ब्रुवन्वैनरकं व्रजेत् । सूकरः स हि विज्ञेयः सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥

अहो मौर्ख्यमहो मौर्ख्यमहो मौर्ख्यं द्विजोत्तमाः !।
स्वामितीर्थाभिधे तीर्थे सर्वपातकनाशने ॥ ५० ॥

अद्वैतज्ञानदे पुंसाम्भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । इष्टकामप्रदे नित्यं तथैवाज्ञाननाशने ॥ ५१॥
स्थितेऽपि तद्विहायायं रमतेऽन्यत्रवैजनः । अहो मोहस्य माहात्म्यंमयावक्तुंनशक्यते

स्नानस्य स्वामितीर्थे तु नाऽन्तकाद्भयमस्ति वै ।
स्वामितीर्थञ्च पश्यन्ति तत्र स्नान्ति च ये नराः ॥ ५३ ॥
स्तुवन्ति च प्रशंसन्ति स्पृशन्ति च नमन्ति च ।
न पिबन्ति हि ते स्तन्यं मातृणां द्विजपुङ्गवाः !॥ ५४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवम्वःकथितंविप्राःस्वामितीर्थस्यवैभवम् । भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वपापनिबर्हणम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये श्रीस्वामिपुष्करिणीतीर्थमहिमानुवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः

धर्मगुप्तचरित्रवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

भूयोऽपि सम्प्रवक्ष्यामि स्वामितीर्थस्य वैभवम् ।
युष्माकमादरेणाऽहं नैमिषारण्यवासिनः ॥ १ ॥

नन्दोनाममहाराजः सोमवंशसमुद्भवः । धर्मेण पालयामास सागरान्तां धरामिमाम् ॥
तस्यपुत्रःसमभवद्धर्मगुप्त इति स्मृतः । राज्यरक्षाधुरं नन्दो निजपुत्रे निधाय सः ॥
जितेन्द्रियो जिताहारः प्रविवेशतपोवनम् । ताते तपोवनं याते धर्मगुप्ताभिधो नृपः
मेदिनीं पालयामास धर्मज्ञो नीतितत्परः । ईजे बहुविधैर्यज्ञैर्देवानिन्द्र पुरोगमान् ॥५
ब्राह्मणानांददौवित्तंक्षेत्राणिचबहूनि सः । सर्वेस्वधर्मनिरतास्तस्मिन्राजनि शासति
कदाचिन्नाभवन्पीडातस्मिंश्चोरादिसम्भवाः । कदाचिद्धर्मगुप्तोऽयमारुह्यतुरगोत्तमम्
वनं विवेश विप्रेन्द्रा मृगयारसकौतुकी । तमालतालहिन्तालकुरबाकुलदिङ्मुखे ॥
विचचार वनेतस्मिन्सिंहव्याघ्रभयानके । मत्तालिकुलसन्नादसम्मूर्च्छितदिगन्तरे ॥९
पद्मकल्हारकुमुदनीलोत्पलवनाकुले । तटाके रससम्पूर्णे तपस्विजनमण्डिते ॥१०॥
तस्मिन्वने सञ्चरतो धर्मगुप्तस्य भूपतेः । अभूद्विभावरी विप्रास्तमसावृतदिङ्मुखा

राजाऽपि पश्चिमां सन्ध्यामुपास्य विनयान्वितः ।
जजाप च वने तत्र गायत्रीं वेदमातरम् ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिंहव्याघ्रादिभीत्याऽस्मिन्वृक्षमेकंसमाश्रिते । राजपुत्रेतदभ्याशमृक्षःसिंहभयार्दितः
अन्वधावत वृक्षं तमेकः सिंहो वनेचरः । अनुद्रुतः स सिंहेन ऋक्षो वृक्षमुपारुहत् ॥
आरुह्य ऋक्षो वृक्षं तं ददर्श जगतीपतिम् । वृक्षस्थितं महात्मानं महाबलपराक्रमम्

उवाच भूपतिं दृष्ट्वा ऋक्षोऽयं वनगोचरः ।
मा भीतिं कुरु राजेन्द्र ! वत्स्यावो रजनीमिह ॥ १८ ॥

महासत्त्वो महाकायो महादंष्ट्रासमाकुलः । वृक्षमूलं समायातःसिंहोऽयमतिभीषणः
रात्र्यर्धं भज निद्रां त्वं रक्ष्यमाणो मयोद्यतः । ततः प्रसुप्तं मां रक्ष शर्वर्यर्धं महामते!

इति तद्वाक्यमाकर्ण्य सुप्ते नन्दसुते हरिः ।
प्रोवाच ऋक्षं सुप्तोऽयं नृपो मे त्यज्यतामिति ॥ १९ ॥

तं सिंहमब्रवीदृक्षो धर्मज्ञो द्विजसत्तमाः । भवान्धर्मं न जानीते मृगराज ! वनेचर !॥
विश्वासघातिनां लोके महाकष्टम्भवत्यहो । न हि मित्रद्रुहां पापं नश्येद्यज्ञायुतैरपि

ब्रह्महत्यादिपापानां कथञ्चिन्निष्कृतिर्भवेत् ।
विश्वासघातिनां पापं न नश्येज्जन्मकोटिभिः ॥ २२ ॥

नाऽहं मेरुं महाभारंमन्ये पञ्चास्य! भूतले । महाभारमिमं मन्ये लोकविश्वासघातकम्
एवमुक्तोऽथ ऋक्षेण सिंहस्तूष्णीं बभूव ह । धर्मगुप्ते प्रबुद्धे तु ऋक्षः सुष्वाप भूरुहे
ततः सिंहोऽब्रवीद्भूपमेनमृक्षं त्यजस्व मे । एवमुक्तोऽथ सिंहेन राजासुप्तमशङ्कितः

स्वाङ्कन्यस्तशिरस्कं तमृक्षं तत्याज भूतले ।
पात्यमानस्ततो राज्ञा समालम्बितपादपः ॥ २६ ॥

ऋक्षः पुण्यवशाद्वृक्षान्न पपात महीतले । स ऋक्षोनृपमस्येत्यकोपाद्वाक्यमभाषत
कामरूपधरो राजन्नहं भृगुकुलोद्भवः । ध्यानकाष्ठाभिधो नाम्ना ऋक्षरूपमधारयम् ॥
कस्मादनागसं सुप्तमत्याक्षीन्मांभवान्नृप । मच्छापादतिशीघ्रं त्वमुन्मत्तश्चर भूतले
इतिशप्त्वा मुनिर्भूपं ततः सिंहमभाषत । न सिंहस्त्वं महायक्षःकुबेरसचिवः पुरा ॥
हिमवद्गिरिमासाद्य कदाचित्त्वं वधूसखः । अज्ञानाद्गौतमाभ्याशे विहारमतनोर्मुदा ॥
गौतमोऽप्युटजाद्दैवात्समिदाहरणाय वै । निर्गतस्त्वां विवस्त्रंदृष्ट्वा शापमुदाहरत् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यस्मान्ममाश्रमेऽद्य त्वं विवस्त्रः स्थितवानसि ।
अतः सिंहत्वमद्यैव भविता ते न संशयः ॥ ३३ ॥

इति गौतमशापेन सिंहत्वमगमत्पुरा । कुबेरसचिवो यक्षो भद्रनामा भवान्पुरा ॥३४
कुबेरो धर्मशीलो हि तद्भृत्याश्च तथैव हि । अतःकिमर्थं त्वंहंसिमामृषिंवनगोचरम्
एतत्सर्वमहं ध्यानाज्जानामिहिमृगाधिप । इत्युक्तोध्यानकाष्ठेनत्यक्त्वासिंहत्वमाशुसः
यक्षरूपं गतो दिव्यं कुबेरसचिवात्मकम् । ध्यानकाष्ठमसावाहप्राञ्जलिः प्रणतोमुनिम्
अद्य ज्ञातं मया सर्वं पूर्ववृत्तं महामुने! गौतमः शापकाले मे शापान्तमपि चोक्तवान्
ध्यानकाष्ठेन सम्वाद ऋक्षरूपेण ते यदा । तदा निर्धूय सिंहत्वं यक्षरूपमवाप्स्यसि॥
इति मामब्रवीद्ब्रह्मन्गौतमो मुनिपुङ्गवः । अद्य सिंहत्वनाशान्मेजानामि त्वाम्महामुने
ध्यानकाष्ठाभिधंशुद्धंकामरूपधरं सदा । इत्युक्त्वा तं प्रणम्याऽथ ध्यानकाष्ठंसयक्षराट्
विमानवरमारुह्य प्रययावलकापुरीम् । उन्मत्तरूपं तं दृष्ट्वा मन्त्रिणस्तु नृपोत्तमम् ॥
पितुः सकाशमानिन्यू रेवातीरे नृपोत्तमम् । तस्मै निवेदयामासुर्मतिभ्रंशं सुतस्य च

ज्ञात्वा तु पुत्रवृत्तान्तं पिता वै नन्दनस्तदा ॥ ४४ ॥

पुत्रमादाय सहसा जैमिनेरन्तिकं ययौ । तस्मै निवेदयामास पुत्रवृत्तान्तमादितः ॥
भगवञ्जैमिने! पुत्रो ममाद्योन्मत्ततां गतः । अस्योन्मादविनाशाय ब्रूह्युपायं महामुने॥
इति पृष्टश्चिरं दध्यौ जैमिनिर्मुनिपुङ्गवः । ध्यात्वा तु सुचिरं कालंनृपनन्दनमब्रवीत्
ध्यानकाष्ठस्य शापेन ह्युन्मत्तस्ते सुतोऽभवत् । तस्यशापस्यमोक्षार्थमुपायंप्रब्रवीमिते
सुवर्णमुखरीतीरे वेङ्कटे नामपर्वते । सर्वपापहरे पुण्ये नानाधातुविनिर्मिते ॥ ४६ ॥
स्वामिपुष्करिणी चेतितीर्थमस्तिमहत्तरम् । पवित्राणांपवित्रंहिमङ्गलानांचमङ्गलम्
श्रुतिसिद्धं महापुण्यं ब्रह्महत्यादिशोधकम् । नीत्वा तत्र सुतं तेऽद्यस्नापयस्वमहामते
उन्मादस्तत्क्षणादेवतस्यनश्येन्न संशयः । इत्युक्तस्तं प्रणम्याऽसौजैमिनिंमुनिपुङ्गवम्
नन्दः पुत्रं समादाय स्वमिपुष्करिणीं ययौ । तत्र च स्नापयामास पुत्रं नियमपूर्वकम्

स्नानमात्रात्ततः सद्यो नष्टोन्मादोऽभवत्सुतः ।
स्वयं सस्नौ स नन्दोऽपि स्वामिपुष्करिणीजले ॥ ५४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उषित्वा दिनमेकं तु सहपुत्रः पिता तदा। सेवित्वा वेङ्कटेशंचश्रीनिवासंकृपानिधिम्
पुत्रमापृच्छय नन्दस्तं प्रययौ तपसेवनम्। गते पितरि पुत्रोऽपिधर्मगुप्तोनृपोद्विजाः
प्रददौ वेङ्कटेशस्य बहुवित्तानि भक्तितः। ब्राह्मणेभ्यो धनंधान्यंक्षेत्राणिचददौतदा
प्रययौ मन्त्रिभिः सार्धं स्वांपुरींतदनन्तरम्। धर्मेणपालयामासराज्यंनिहतकण्टकम्
पितृपैतामहं विप्रा धर्मगुप्तोऽतिधार्मिकः। उन्मादैरप्यपस्मारैर्ग्रहैर्दुर्ग्रहैश्च ये नराः॥५६

ग्रस्ता भवन्ति विप्रेन्द्रास्तेऽपि चाऽत्र निमज्जनात्।
पुष्करिण्यां विमुक्ताः स्युः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ६० ॥
स्वामिपुष्करिणीं त्यक्त्वा तीर्थमन्यद्व्रजेत्तु यः।
स्निग्धं सगोपयस्त्यक्त्वा स स्नुहीक्षीरं प्रयाचते ॥ ६१ ॥
स्वामितीर्थं स्वामितीर्थं स्वामितीर्थमितिद्विजाः।
त्रिः पठन्तो नरा एवं यत्र क्काऽपि जलाशये ॥ ६२ ॥

स्नान्तिसर्वे नरास्ते वै यास्यन्ति ब्रह्मणःपदम्। एवंवःकथिताविप्राधर्मगुप्तकथाशुभा
यस्याः श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति ॥ ६४ ॥

इति स्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येस्वामिपुष्करिणीमहिमानुवर्णनंनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

चतुर्दशोऽध्यायः

सुमत्याख्यद्विजवृत्तान्तकिरातीसङ्गान्महापातकप्राप्तिवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

भोभोस्तपोधनाः ! सर्वे नैमिषारण्यवासिनः !।
स्वामितीर्थस्य माहात्म्यं भूयोऽपि प्रवदाम्यहम् ॥ १ ॥
पुरा किरातीसंसर्गात्सुमतिर्ब्राह्मणः सुराम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पीतवान्पुष्करिण्यां स स्नात्वा पापाद्विमोचितः ॥ २ ॥

ऋषय ऊचुः

सुमतिः कस्य पुत्रोऽसौ कथं स च सुरां पपौ ?।
कथं किरात्यासक्तोऽभूत्सूतपोरोणिकोत्तम !॥ ३ ॥
सर्वेषां विस्तरादेतद्वद त्वं कृपयाऽधुना ॥ ४ ॥

श्रीसूत उवाच

महाराष्ट्राभिधे देशे ब्राह्मणः कश्चिदास्तिकः । यज्ञदेव इतिख्यातो वेदवेदाङ्गपारगः॥५
दयालुरातिथेयश्च शिवनारायणार्चकः । सुमतिर्नाम पुत्रोऽभूद्यज्ञदेवस्य तस्य वै ॥६॥
पितरं स परित्यज्य भार्यामपि पतिव्रताम् । प्रययावुत्कले देशे विटगोष्ठीपरायणः
काचित्किराती तद्देशे वसन्ती युवमोहिनी ।
यूनां समस्त द्रव्याणि प्रलोभ्य जगृहे चिरम् ॥ ८ ॥
तस्या गृहं स प्रययौ सुमतिर्ब्राह्मणाधमः । सुमतिं सा चजग्राहकिरातीनिर्धनंद्विजम्
तया युक्तोऽथ सुमतिस्तत्संयोगैकतत्परः । इतस्ततश्चोरयित्वाबहुद्रव्याणिसन्ततम्
दत्त्वा तया चिरं रेमे तद्गृहे बुभुजे च सः । एकेन चषकेणाऽसौ तयासह सुरां पपौ
एवं स बहुकालं वै रममाणस्तया सह । पितरौ निजपत्नीं च नाऽस्मरद्विषयातुरः॥
स कदाचित्किरातैस्तु चौर्यं कर्तुं ययौ सह ।
विप्रस्य कस्यचिद्गेहे सोऽपि कैरातवेषभृत् ॥ १३ ॥
ययौ चोरयितुं द्रव्यंसाहसीखड्गहस्तवान् । तद्गृहस्वामिनंविप्रंहत्वाखड्गेनसाहसात्
समादाय बहु द्रव्यं किरातीभवनं ययौ । तं यान्तमनुयाति स्म ब्रह्महत्या भयङ्करी॥
नीलवस्त्रधरा भीमा भृशं रक्तशिरोरुहा । गर्जन्ती साट्टहासं सा कम्पयन्तीचरोदसि
अनुद्रुतस्तया सोऽयं बभ्राम जगतीतले । एवं भ्रमन्भुवं सर्वांकदाचित्सुमतिःस्वयम्
स्वग्रामं प्रययौ भीत्या विप्रबन्धुर्दुरात्मवान् । अनुद्रुतस्तयाभीतःप्रययौस्वगृहंप्रति
ब्रह्महत्याऽप्यनुद्रुत्य तेन साकं गृहं ययौ । पितरं रक्षरक्षेति सुमतिः शरणं ययौ ॥
माभैषीरिति तं प्रोच्य पिता रक्षितुमुद्यतः । तदानीं ब्रह्महत्येयं तत्तातं प्रत्यभाषत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रह्महत्योवाच

मैनं त्वं प्रतिगृह्णीष्व यज्ञदेवद्विजोत्तम । असौसुरापीस्तेयीच ब्रह्महा चाऽतिपातकी
मातृद्रोही पितृद्रोही भार्यात्यागीच पातकी । किरातीसङ्गदुष्टश्चह्येनंमुञ्च दुरात्मकम्
गृह्णासि चेदिमं विप्र ! महापातकिनं सुतम् ।
त्वद्भार्यामस्य भार्यां च त्वां च पुत्रमिमं द्विज !॥ २३ ॥
भक्षयिष्यामि वंशं च तस्मान्मुञ्च सुतं त्विमम् ।
इमं त्यजसि चेत्पुत्रं युष्मान्मुञ्चामि साम्प्रतम् ॥ २४ ॥
नैकस्याऽर्थे कुलंहन्तुमर्हसि त्वं महामते !। इत्युक्तः स तया तत्रयज्ञदेवोऽब्रवीच्चताम्

यज्ञदेव उवाच

बाधते मां सुतस्नेहः कथमेनं परित्यजे । ब्रह्महत्या तदाकर्ण्य द्विजोक्तं तमभाषत ॥

ब्रह्महत्योवाच

अयंहिपतितोभूत्वावर्णाश्रमबहिष्कृतः । पुत्रेऽस्मिन्माकुरुस्नेहंनिन्दितंचास्यदर्शनम्
इत्युक्त्वा ब्रह्महत्या सा यज्ञदेवस्य पश्यतः । तलेन प्रजहाराऽस्यपुत्रं सुमतिनामकम्
रुरोद तातततेति पितरं प्रब्रुवन्मुहुः ॥ २६ ॥
रुरुदुर्जनको माता भार्याऽपि सुमतेस्तदा । एतस्मिन्नन्तरे तत्र दुर्वासाः शङ्करांशकः
दृष्ट्या समाययौ योगी धार्मिकोमुनिसत्तमः । यज्ञदेवोऽथ तं दृष्ट्वामुनिरुद्रावतारकम्
स्तुत्वा प्रणम्य शरणं ययाचे पुत्रकारणात् ।
दुर्वासस्त्वं महायोगिन्साक्षाद्वै शङ्करांशकः ॥ ३२ ॥
त्वद्दर्शनमपुण्यानांभविता न कदाचन । ब्रह्महा च सुरापी च स्तेयीचाऽभूत्सुतो मम
एनं प्रहर्तुमायाता ब्रह्महत्याऽपि वर्तते । भूयाद्यथा मे पुत्रोऽयं महापातकमोचितः ॥
घोरा च ब्रह्महत्येयं यथाशीघ्रं लयं व्रजेत् । तमुपायं वदस्वाऽद्य मम पुत्रे दयां कुरु
अयमेव हि पुत्रो मे नान्योऽस्ति तनयो मुने !।
अस्मिन्मृते तु वंशो मे समुच्छिद्येत मूलतः ॥ ३६ ॥
ततः पितृभ्यः पिण्डानां दाताऽपि न भवेद्ध्रुवम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततः कृपां कुरुष्व त्वमस्मासु भगवन्मुने !॥ ३७ ॥
इत्युक्तः स तदोवाचदुर्वासाःशङ्करांशकः । ध्यात्वाऽथसुचिरंकालंयज्ञदेवंद्विजोत्तमम्

दुर्वासा उवाच

यज्ञदेवकृतं पापमतिक्रूरं सुतेन ते । नाऽस्य पापस्य शान्तिःस्यात्प्रायश्चित्तायुतैरपि
तथाऽपितेसुतस्याऽहंतस्यपापस्यशान्तये । प्रायश्चित्तंवदिष्यामिश्रृणुनान्यमनाद्विज
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने । स्वामिपुष्करिणी चेति वर्तते मङ्गलप्रदा ॥
स्नातिचेत्तव पुत्रोऽयं पातकान्मुच्यते क्षणात् । एवंश्रुत्वामुनेर्वाक्यंयज्ञदेवोमहामतिः
पुत्रमादाय सुमतिं स्वामिपुष्करिणीं गतः । स्नापयामाससुमतिंहत्ययापीडितंसुतम्
आकाशवाणी तं विप्रमुवाच मधुरस्वरा ।
यज्ञदेव ! महाभाग ! स्नानेनाऽनेन सुव्रत !॥ ४४ ॥
पूतोऽभवत्तव सुतः संशयं मा कृथा द्विज !। एवम्प्रभावं तत्तीर्थं पापवृक्षकुठारकम्
एवम्वः कथितं विप्रा इतिहासं पुरातनम् । श्रृण्वतां पठतां चाऽपिवाजपेयफलंलभेत्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये स्वामिपुष्करिणीतीर्थमहिमानुवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोऽध्यायः

रामकृष्णतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्

सूत उवाच

वेङ्कटाख्ये महापुण्ये सर्वपातकनाशने । कृष्णतीर्थस्यमाहात्म्यं श्रृणुध्वं सुसमाहिताः
यत्र मज्जनमात्रेण कृतघ्नोऽपिविमुच्यते । पितॄन्मातॄगुरूंश्चाऽवमन्यन्तेमोहमोहिताः
ये चाऽप्यन्ये दुरात्मानः कृतघ्ना निरपत्रपाः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ते सर्वे कृष्णतीर्थेऽस्मिञ्छुद्ध्यन्ति स्नानमात्रतः ॥ ३ ॥

कृष्णनामा मुनिः पूर्वं वेङ्कटाह्वयभूधरे । अवर्तत तपः कुर्वन्विष्णुंध्यायन्समाहितः
स तत्र कल्पयामासस्नानार्थंतीर्थमुत्तमम् । तत्रस्नात्वासकृन्मर्त्यःकृतघ्नोऽपिविमुच्यते
अत्रेतिहासं वक्ष्यामि पुराणं पापनाशनम् । यस्यश्रवणमात्रेण नरोमुक्तिमवाप्नुयात्

पुरा बभूव विप्रेन्द्रो रामकृष्णो महामुनिः ।
सत्यवाञ्छीलवान्वाग्मी सर्वभूतदयान्वितः ॥ ७ ॥

शत्रुमित्रसमो दान्तस्तपस्वीविजितेन्द्रियः । परे ब्रह्मणिनिष्णातोब्रह्मतत्त्वैकसंश्रयः
एवम्प्रभावः स मुनिस्तपस्तेपे सुदारुणम् । स वै निश्चलसर्वाङ्गस्तिष्ठन्सर्वत्र भूतले

परमाण्वन्तरं वाऽपि न स्वस्थानाच्चचाल सः ।
स्थित्वा तत्र तपस्यन्तमनेकशतवत्सरान् ॥ १० ॥
तं चाऽऽक्रमत वल्मीकं छादिताङ्गं चकार वै ।
वल्मीकाक्रान्तदेहोऽपि रामकृष्णो महामुनिः ॥ ११ ॥

अकरोत्तप एवाऽसौ वल्मीकंन त्वबुध्यत । तस्मिन्नश्चतप्यतितपो वासवो मुनिपुङ्गवे
विसृज्य मेघजालानि वर्षयामास वेगवान् । एवं दिनानि सप्ताऽयं ववर्ष चनिरन्तरम्
धारावर्षेण महता वृष्यमाणोऽपि वै मुनिः । तद्वर्षं प्रतिजग्राह निर्मीलितविलोचनः

महता स्तनितेनाऽऽशु तदा बधिरयञ्छ ुर्ताः ।
वल्मीकस्योपरिष्टाद्वै निपपात महाशनिः ॥
तस्मिन्वर्षति पर्जन्ये शीतवातादिदुःसहे ॥

वल्मीकशिखरं ध्वस्तं बभूवाऽशनिताडितम् । तदाप्रादुरभूद्देवः शङ्खचक्रगदाधरः ॥
विनतानन्दनारूढो वनमालाविभूषितः । रामकृष्णस्यतपसा तोषितो वाक्यमब्रवीत्
तपोनिधे रामकृष्ण वेदशास्त्रार्थपारग !। मदाविर्भावदिवसे यःस्नाति मनुजोत्तमः ॥
तस्यपुण्यफलं वक्तुं शेषेणाऽपि नशक्यते । मकरस्थेरवौविप्रपौर्णमास्यांमहातिथौ
पुष्यनक्षत्रयुक्तायां स्नानकालोविधीयते । तद्दिने स्नातियोमर्त्यः कृष्णतीर्थेमहामतिः
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वान्कामाँल्लभेत सः । मदाविर्भावदिवसे कृष्णतीर्थजले शुभे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्नातुं तत्र समायान्तिस्वपापपरिशुद्धये । देवामनुष्याः सर्वेच दिक्पालाश्चमहौजसः
एते सर्वे महात्मानः कोटिसूर्यसमप्रभाः ।
ते सर्वे कृष्णतीर्थेऽस्मिन्स्नानात्पूता भवन्ति हि ॥ २४ ॥
त्वन्नाम्नेदंमहातीर्थं लोकेप्रख्यातिमेष्यति । इत्युक्त्वा श्रीनिवासश्चतत्रैवाऽन्तरधीयत
एवं प्रभावं तत्तीर्थं महापापविशोधनम् । बुद्धिशुद्धिप्रदं पुसां सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥
एवं वः कथितम्विप्राः! कृष्णतीर्थस्य वैभवम् ।
शृण्वतां पठताञ्चैव विष्णुलोकप्रदायकम् ॥ २७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये रामकृष्णतीर्थमहिमानुवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः

श्रीवेङ्कटाद्रौजलदानप्रसङ्गेहेमाङ्गस्यजलदानाकरणेनगृहगोधिकात्वप्राप्तिवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

वेङ्कटाख्ये महापुण्ये तृषार्तानां विशेषतः । जलदानमकुर्वाणस्तिर्यग्योनिमवाप्नुयात्
तस्माद्वेङ्कटशैलेन्द्रे यथाशक्त्यनुसारतः । जलदानं हि कर्तव्यं सर्वेषां जीवनम्महत्
अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । विप्रस्य गृहगोधायाः सम्वादम्परमाद्भुतम् ॥
पुराचेक्ष्वाकुवंशेऽभूद्धेमाङ्गइतिभूमिपः । ब्रह्मण्यो ब्रह्मभूयिष्ठोजितामित्रो जितेन्द्रियः
यावन्तोभूमिकणिकायावन्तस्तोयबिन्दवः । यावन्त्युडूनिगगनेतावतीर्गाददात्यसौ
येनेष्टयज्ञदर्भैश्च भूमिर्बर्हिष्मती स्मृता । गोभूतिलहिरण्याद्यैस्तोषिता बहवो द्विजाः
तेनाऽदत्तानि दानानि न विद्यन्त इति श्रुतम् ।
तेनाऽदत्तञ्जलञ्चैकं सुखलभ्यधिया द्विजाः ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बोधितो ब्रह्मपुत्रेण वसिष्ठेनमहात्मना । अमूल्यं सर्वतोलभ्यं तद्दातुःकिम्फलंलभेत्
इति दुर्धीर्हेतुवादैर्नजलंदत्तवान्विभुः । अलभ्यदानेपुण्यं स्यादित्यवादीत्सयुक्तिकम्

स आनर्च द्विजान्व्यङ्गान्दरिद्रान्वृत्तिकर्शितान् ।
नाऽऽनर्च श्रोत्रियान्विप्रान्ब्रह्मज्ञान्ब्रह्मवादिनः ॥ १० ॥
प्रख्यातान्पूजयिष्यन्ति सर्वलोकाः सहार्हणैः ।
अनाथानामविद्यानां व्यङ्गानाञ्च कुटुम्बिनाम् ॥ ११ ॥

दरिद्राणांगतिःका वा तस्मात्तेमद्दयास्पदाः । इतिदुष्टेषुपात्रेषुदत्तवान्किमपिस्वकम्
तेन दोषेण महता चातकस्त्वं त्रिजन्मसु । एकजन्मनिगृध्रत्वं श्वत्वम्वा सप्तजन्मसु
प्राप्यपश्चाद्द्विगृहेजातोभूपोऽयंगृहगोधिका । श्रुतकीर्तेस्तुभूपस्यमिथिलाधिपतेर्द्विजाः
गृहद्वारप्रतोल्यां स्म वर्तते कीटकाशनः । अष्टाशीतिषु वर्षेषु स्थितन्तेन दुरात्मना
विदेहाधिपतेर्गेहं कदाचिद्दृषिसत्तम- । श्रुतदेव इति ख्यातःश्रान्तो मध्याह्न आगमत्
तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय जातहर्षो नराधिपः । मधुपर्कैः सुसम्पूज्य तस्यपादावनेजनीः
अपोमूर्ध्नाऽवहत्क्षिप्रंतदोत्क्षिप्तैश्चविन्दुभिः । दैवोपदिष्टकालेनप्रोक्षितागृहगोधिका
सद्योजातिस्मृतिरभूत्कृतकर्माऽतिदुःखिता । त्राहित्राहीतिचुक्रोशब्राह्मणंगृहमागतम्

तिर्यग्जन्तुरवं श्रुत्वा ब्राह्मणो विस्मितोऽभवत् ।
कुतः क्रोशसि गोधे ! त्वं दशेयं केन कर्मणा ॥ २० ॥

उपदेवोऽथ देवोवात्वंनृपोऽथद्विजोत्तमः । कस्त्वम्ब्रूहि महाभाग त्वामद्याऽहंसमुद्धरे
इत्युक्तः स नृपः प्राह श्रुतदेवं महाप्रभुः । अहमिक्ष्वाकुकुलजः शस्त्रविद्याविशारदः ॥

यावन्तो भूमिकणिका यावन्तस्तोयविन्दवः ।
यावन्त्युडूनि गगने तावतीर्गा अदामहम् ॥ २३ ॥

सर्वैर्यज्ञैर्मयाचेष्टं पूर्तान्याचरितानि मे । दानान्यपि च दत्तानि धर्मजातं स्वनुष्ठितम्
तथापिदुर्गतिर्जाता न मे चोर्ध्वगतिर्विभो । त्रिवारश्चातकत्वं मे गृध्रत्वञ्चैकजन्मनि
सप्तजन्मसु च श्वत्वं प्राप्तम्पूर्वम्मया द्विज ! । धरताऽनेन भूपेन चापः पादावनेजनीः॥
विन्दवो दूरमुक्षिप्तास्तैःसिक्तोऽहं कथञ्चन । तदा जन्मस्मृतिरभूत्तेन मे हतपाप्मनः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोधाजन्मानि भाव्यानीत्यष्टाविंशति मे द्विज !।
दृश्यन्ते दैवदिष्टानि विस्यते जन्मभिर्भृशम् ॥ २८ ॥
न कारणम्प्रपिश्यामितन्मेविस्तरतोवद । इत्युक्तः स द्विजः प्राह ज्ञातम्विज्ञानचक्षुषा
शृणु भूप! प्रवक्ष्यामि तव दुर्गतिकारणम् । न जलन्तु त्वया दत्तं वेङ्कटाह्वयभूधरे॥
तज्जलं सुलभम्मत्वा न मौल्यमितिनिश्चितः ।
नाऽध्वगानां द्विजादीनां घर्मकालेऽप्यजानता ॥ ३१ ॥
तथा पात्रं समुत्सृज्य ह्यपात्रे प्रतिपादितम् । ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते
तुलसीन्तु समुत्सृज्यबृहती पूज्यते नु किम् । अनाथव्यङ्गपङ्गुत्वंनप्रयोजकतामियात्
पङ्ग्वाद्या येऽप्यनाथा हि दयापात्रं हि केवलम् ।
तपोनिष्ठा ज्ञाननिष्ठाः श्रुतिशास्त्रपरायणाः ॥ ३४ ॥
विष्णुरूपाः सदापूज्यानेतरेतुकदाचन । तत्रापिज्ञानिनोऽत्यर्थम्प्रियाविष्णोःसदैवहि
ज्ञानिनामपिभूपालविष्णुरेवसदाप्रियः । तस्माज्ज्ञानीसदापूज्यःपूज्यात्पूज्यतरःस्मृतः
न जलन्तु त्वया दत्तं साधवो वा न सेविताः ।
तेन ते दुर्गतिश्चेयं प्राप्ता चेक्ष्वाकुनन्दन !॥ ३७ ॥
वेङ्कटाद्रौ कृतम्पुण्यं तुभ्यं दास्यामिशान्तये । भूतम्भव्यंभवत्तेनकर्मजातम्विजेष्यसि
इत्युक्त्वाऽऽपउपस्पृश्य ददौ पुण्यमनुत्तमम् । यद्दत्तंब्राह्मणेनाऽपिस्नानञ्चैकदिनेकृतम्
तेनध्वस्ताखिलाऽऽगास्तु त्यक्त्वा च गृहगोधिका ।
रूपं कामार्चित घोरं सद्योऽदृश्यत पूरुषः ॥ ४० ॥
दिव्यम्विमानमारूढो दिव्यस्रग्वस्त्रभूषणः । पश्यतामेव साधूनां मैथिलस्य गृहान्तरे
बद्धाञ्जलिपुटो भूत्वा परिक्रम्यप्रणम्यच । अनुज्ञातो ययौराजा स्तूयमानोऽमरैर्दिवम्
तत्रभुक्त्वामहाभोगान्वर्षायुतमतन्द्रितः । स एवचेक्ष्वाकुकुलेककुत्स्थोऽभून्महारथः
सप्तद्वीपप्रतीपालो ब्रह्मण्यः साधुसम्मतः । देवेन्द्रस्य समो विष्णोरंशएवम्महाप्रभुः
बोधितस्तु वसिष्ठेन सर्वान्धर्मान्मनोहरान् ।
अनुष्ठायाऽखिलान्राजा तेन ध्वस्ताशुभादिकः ॥ ४५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिव्यं ज्ञानं समासाद्य विष्णोः सायुज्यमाप्तवान् ।
तस्माद्वेङ्कटशैलेन्द्रः पुण्यः पापविनाशनः ॥ ४६ ॥
तस्मिंश्च जलदानन्तु विष्णुलोकप्रदायकम् । एवंवःकथितम्विप्रा जलदानस्यवैभवम्
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने ॥ ४७ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये जलदानवैभववर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः

श्रीवेङ्कटाचलक्षेत्रादिवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

वेङ्कटाद्रेस्तुमाहात्म्यंभूयोऽपिप्रवदाम्यहम् । युष्माकं सावधानेनश्रृणुध्वंसुसमाहिताः
पृथिव्यांयानितीर्थानिब्रह्माण्डाऽन्तर्गतानि च । तानिसर्वाणिवर्तन्ते वेङ्कटाह्वयभूधरे
तस्मिन्नगोत्तमे पुण्ये वसन्तं पुरुषोत्तमम् । शङ्खचक्रधरन्देवं पीताम्बरधरं शुभम् ॥
कौस्तुभालङ्कृतोरस्कं भक्तानामभयप्रदम् । देवदेवं विशालाक्षं वेदवेद्यं सनातनम् ॥
अङ्गकोशलकर्णाटकाशीगुर्जरदेशगाः । चोलकेरलपाण्ड्यादिसर्वदेशसमुद्भवाः ॥ ५ ॥
सकुटुम्बाश्च सेवार्थमायान्ति प्रतिवत्सरम् । देवाश्चऋषयःसिद्धाःयोगिनःसनकादयः
ये भाद्रपदमासे तु वेङ्कटेशमहोत्सवे । सेवां कुर्वन्ति ते सर्वे निष्पापा उत्तमोत्तमाः
तत्र श्रीवेङ्कटेशस्यब्रह्मालोकपितामहः । चकारकन्यामासे तु ध्वजारोपमहोत्सवम्
प्रतिवर्षञ्च तत्सेवानिमित्तं सर्वमानवाः । सर्वे देवाश्चगन्धर्वाःसिद्धासाध्यामहौजसः
ब्रह्मोत्सवे भगवतः समायान्ति द्विजोत्तमाः । विद्यानांवेदविद्यैवमन्त्राणांप्रणवोयथा
प्राणवत्प्रियवस्तूनां धेनूनां कामधेनुवत् । तथावेङ्कटशैलेन्द्रः क्षेत्राणामुत्तमोत्तमः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शेषवत्सर्वनागानां पक्षिणां गरुडो यथा ।
देवानां तु यथा विष्णुर्वर्णानां ब्राह्मणो यथा ॥ १२ ॥
तथा वेङ्कटशैलेन्द्रः क्षेत्राणामुत्तमोत्तमः । भूरुहाणां सुरतरुर्भार्येव सुहृदां यथा ॥
तीर्थानां तु यथा गङ्गा तेजसां तु रविर्यथा । तथावेङ्कटशैलेन्द्रः क्षेत्राणामुत्तमोत्तमः
आयुधानां यथा वज्रं लोहानां काञ्चनं यथा ।
वैष्णवानां यथा रुद्रो रत्नानां कौस्तुभो यथा ॥ १५ ॥
तथा वेङ्कटशैलेन्द्रः क्षेत्राणामुत्तमोत्तमः । नाऽनेनसदृशो लोके विष्णुप्रीतिविवर्धनः॥
न माधवसमो मासो न कृतेन समं युगम् । न च वेदसमं शास्त्रंन तीर्थंगङ्गया समम्
न जलेन समं दानं न सुखं भार्यया समम् ।
न कृषेस्तु समं वित्तं न लाभो जीवितात्परः ॥ १८ ॥
न तपोऽनशनादन्यन्न दानात्परमं सुखम् । न धर्मस्तुदयातुल्योन ज्योतिश्चक्षुषासमम्
न तृप्तिरशनातुल्या न वाणिज्यं कृषेः समम् । न धर्मेण समं मित्रं न सत्येनसमंयशः
यथा तथा भगवतः स्थानेन सदृशं न हि ॥ २१ ॥
यत्कीर्तनं सकलपापहरं मुनीन्द्रा! यद्वन्दनं सकलसौख्यदमेव लोके ।
यात्राऽपि यत्प्रति सुरैरपि पूजनीया तादृङ् महान्भवति वेङ्कटशैलमुख्यः ॥
तस्याऽनुभावं प्रवदामि भूयः समस्ततीर्थानि वसन्ति यत्र ।
एवं समस्तेषु च मुख्यतीर्थं श्रीस्वामिनामाऽस्ति सरोवरं तत् ॥ २३ ॥
माहात्म्यमेतस्य मयोच्यते कथं यत्पश्चिमे रोधसि भूवराहः ।
आलिङ्ग्य कान्तामतिसौम्यमूर्तिर्विराजते विश्वजनोपकारी ॥ २४ ॥
श्रीस्वामिपुष्करिण्याश्च दक्षिणे वेङ्कटेश्वरः । आलिङ्गितवपुर्लक्ष्म्यावरदोवर्ततेचिरम्
एवं वः कथितं विप्राः क्षेत्रमाहात्म्यमुत्तमम् ।
य श्रृणोति सदा भक्त्या विष्णुलोके महीयते ॥ २६ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीति साहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये क्षेत्रमहिमानुवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टादशोऽध्यायः

श्रीवेङ्कटेश्वरवैभववर्णनम्

सूत उवाच

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि वेङ्कटेश्वरवैभवम् । यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यतेनाऽत्र संशयः

श्रीवेङ्कटेश्वरं देवं यः पश्यति सकृन्नरः ।
स नरो मुक्तिमाप्नोति विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥ २ ॥

दशवर्षैस्तु यत्पुण्यं क्रियते तु कृते युगे । त्रेतायामेकवर्षेण तत्पुण्यं साध्यते नृभिः
द्वापरे पञ्चमासेन तद्दिनेन कलौ युगे । तत्फलं कोटिगुणितं निमिषेनिमिषेनृणाम्
निःसन्देहं भवेदेवं श्रीनिवासविलोकिनाम् । श्रीवेङ्कटेश्वरे देवे तीर्थानिसकलान्यपि
विद्यन्ते सर्वदेवाश्च मुनयः पितरस्तथा । एककालं द्विकालं वा त्रिकालं सर्वदैव वा

ये स्मरन्ति महादेवं श्रीनिवासं विमुक्तिदम् ।
कीर्तयन्त्यथवा विप्रास्ते मुक्ताःपापपञ्जरात् ॥ ७ ॥

नारायणं परं देवं वेङ्कटेशं प्रयान्ति वै । पूजितं शङ्खराजेन सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥
तस्य स्मरणमात्रेण यमपीडाऽपि नो भवेत् । श्रीनिवासंमहादेवंयेऽर्चयन्तिसकृन्नराः

किं दानैः किं व्रतैस्तेषां किं तपोभिः किमध्वरैः ।
वेङ्कटेशं परं देवं यो न चिन्तयति क्षणम् ॥ १० ॥
अज्ञानी स च पापी स्यात्स मूको बधिरस्तथा ।
स जडोऽन्धश्च विज्ञेयश्छिद्रं तस्य सदा भवेत् ॥ ११ ॥

श्रीनिवासे महादेवे सकृद्दृष्टे मुनीश्वराः । किं काश्यागययाचैव प्रयागेनापिकिंफलम्
दुर्लभं प्राप्य मानुष्यं मानवा इह भूतले । वेङ्कटेशं परं देवं ये पश्यन्त्यर्चयन्ति वा ॥
जन्म तेषां हि सफलं तेकृतार्थाश्च नेतरे ।। वेङ्कटेशे परे देवे दृष्टे वा पूजितेऽपि वा
शम्भुना ब्रह्मणाकिम्वाशक्रेणाऽप्यखिलामरैः । वेङ्कटेशमहादेवे भक्तियुक्ताश्च ये नराः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेषां प्रणामस्मरणपूजायुक्तास्तु ये नराः । न तेपश्यन्तिदुःखानिनैवयान्तियमालयम्
ब्रह्महत्यासहस्राणि सुरापानायुतानि च । दृष्टे नारायणे देवे विलयं यान्ति कृत्स्नशः
ये वाञ्छन्ति सदाभोगं राज्यं च त्रिदशालये । वेङ्कटाद्रिनिवासं तेप्रणमन्तुसकृन्मुदा
यानि कानि च पापानिजन्मकोटिकृतानिच । तानिसर्वाणिनश्यन्तिवेङ्कटेश्वरदर्शनात्
सम्पर्कात्कौतुकाल्लोभाद्भयाद्वापिच संस्मरन् । वेङ्कटेशं महादेवं नेहाऽमुत्रचदुःखभाक
वेङ्कटाचलदेवेशं कीर्तयन्नर्चयन्नपि । अवश्यं विष्णुसारूप्यं लभते नाऽत्र संशयः २१
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेक्षणात् । तथापापानिसर्वाणिवेङ्कटेश्वरदर्शनम्
वेङ्कटेश्वरदेवस्य भक्तिरष्टविधा स्मृता । तद्भक्तजनवात्सल्यं तत्पूजापरितोषणम् ॥२३
स्वयं तत्पूजनं भक्त्यातदर्थे देहचेष्टितम् । तन्माहात्म्यकथावाञ्छाश्रवणेष्वादरस्तथा
स्वरनेत्रशरीरेषु विकारस्फुरणं तथा । श्रीनिवासस्य देवस्य स्मरणं सततं तथा ॥
वेङ्कटाद्रिनिवासंतमाश्रित्यैवोपजीवनम् । एवमष्टविधाभक्तिर्यस्मिन्म्लेच्छेऽपि वर्तते
स एव मुक्तिमाप्नोति शौनकाद्या महौजसः । भक्त्यात्वनन्ययामुक्तिर्ब्रह्मज्ञानेननिश्चिता
वेदान्तशास्त्रश्रवणाद्यतीनामूर्ध्वरेतसाम् । सा च मुक्तिर्विना ज्ञानं वेदान्तश्रवणोद्भवम्

यत्याश्रमं विना विप्रा विरक्तिं च विना तथा ॥ २८ ॥

सर्वेषां चैव वर्णानामखिलाश्रमिणामपि । वेङ्कटेश्वरदेवस्य दर्शनादेव केवलम् ॥ २९ ॥
अपुनर्भवदा मुक्तिर्भविष्यत्यविलम्बितम् । कृमिकीटाश्च देवाश्च मुनयश्च तपोधनाः ॥
तुल्या वेङ्कटशैलेन्द्रे श्रीनिवासप्रसादतः । पापं कृतं मयाऽनेकमिति मा क्रियतांभयम्
मा गर्वः क्रियतां पुण्यं मयाऽकारीतिवा जनैः । वेङ्कटेशेमहादेवेश्रीनिवासेविलोकिते
न न्यूना नाऽधिकाश्चस्युःकिन्तु सर्वे महाजनाः । वेङ्कटाख्येमहापुण्येसर्वपातकनाशने
श्रीनिवासं परं देवं यः पश्यति सभक्तिकम् । न तेन तुल्यतामेति चतुर्वेद्यपि भूतले
वेङ्कटेश्वरदेवेशं यः पूजयति भक्तितः । । स कोटिकुलसंयुक्तः प्रयाति हरिमन्दिरम् ॥

श्रीनिवासाच्च न समं नाऽधिकं पुण्यमस्ति वै ।
वेङ्कटाद्रिनिवासं तं द्वेष्टि यो मोहमास्थितः ॥ ३६ ॥

ब्रह्महत्यायुतं तेन कृतं नरककारणम् । तत्संभाषणमात्रेण मानवो नरकं व्रजेत् ॥३७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीनिवासपरावेदाः श्रीनिवासपरा मखाः । श्रीनिवासपराः सर्वे तस्मादन्यन्न विद्यते
अन्यत्सर्वंपरित्यज्य श्रीनिवासं समाश्रयेत् । सर्वयज्ञतपोदानतीर्थस्नाने तु यत्फलम्
तत्फलं कोटिगुणितंश्रीनिवासस्यसेवया । वेङ्कटाद्रिनिवासं तं चिन्तयन्घटिकाद्वयम्
कुलैकविंशतिं धृत्वा विष्णुलोकेमहीयते । स्वामिपुष्करिणीतीर्थेस्नानंदेवस्यदर्शनम्
यदि लभ्येत वै पुंसां किं गङ्गाजलसेवया । वेङ्कटेशं परं देवं यः कदापि न पश्यति॥
सङ्करः स तु विज्ञेयो न पितुर्बीजसम्भवः । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वेङ्कटेशो दयानिधिः
द्रष्टव्योऽतिप्रयत्नेनपरलोकेच्छया द्विजाः !। एवं वः कथितं विप्रा वेङ्कटेशस्यवैभवम्

यस्त्वेतच्छृणुयान्नित्यं पठते च सभक्तिकम् ।
स वै वेङ्कटनाथस्य सेवाफलमवाप्नुयात् ॥ ४५ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये वेङ्कटेश्वरवैभवानुवर्णनं नामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

एकोनविंशोऽध्यायः

ब्रह्मादीनां नैरन्तर्येण श्रीवेङ्कटाचले स्थितिवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामिवेङ्कटाचलवैभवम् । युष्माकं सावधानेनश्रृणुध्वंसुसमाहिताः
लक्षकोटिसहस्राणि सरांसि सरितस्तथा । समुद्राश्च महापुण्यावनान्यप्याश्रमाअपि
पुण्यानि क्षेत्रजातानिवेदारण्यादिकानि च । मुनयश्च वसिष्ठाद्याः सिद्धचारणकिन्नराः
लक्ष्म्या सह धरण्या च भगवान्मधुसूदनः । सावित्र्या च सरस्वत्या सहैवचतुराननः
पार्वत्या सह देवेशस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः । हेरम्बषण्मुखाद्याश्च देवाः सेन्द्रपुरोगमाः
आदित्यादिग्रहाश्चैवतथाऽष्टवसवो द्विजाः । पितरो लोकपालाश्चतथाऽन्येदेवतागणाः
महापातकसङ्घानां नाशने लोकपावने । दिवानिशं वसन्त्यन्तर्वेङ्कटाचलमूर्धनि ॥ ७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्य दर्शनमात्रेण बुद्धिसौख्यं नृणां भवेत् ।
तन्मूर्धनि कृतावासाः सिद्धचारणयोषितः ॥ ८ ॥
पूजयन्ति सदाकालं वेङ्कटेशं कृपानिधिम् । कोटयो ब्रह्महत्यानामगम्यागमकोटयः ॥
अङ्गलग्ना विनश्यन्ति वेङ्कटाचलमारुतैः ॥ १० ॥
वेङ्कटाद्रिं गिरिं तं तु प्रार्थयेत्पुण्यवर्धनम् । स्वर्णाचलमहापुण्य सर्वदेवनिषेवित ॥
ब्रह्मादयोऽपि यं देवाः सेवन्ते श्रद्धया सह । तं भवन्तमहं पद्भ्यामाक्रमेयं नगोत्तम ॥
क्षमस्व तदघं मेऽद्य दयया पापचेतसः । त्वन्मूर्धनि कृतावासं माधवं दर्शयस्व मे ॥
प्रार्थयित्वा नरस्त्वेवं वेङ्कटाद्रिं नगोत्तमम् । ततो मृदुपदं गच्छेत्पावनं वेङ्कटाचलम् ॥
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने । स्वामिपुष्करिणीतीर्थे स्नात्वा नियमपूर्वकम्
पिण्डदानं ततःकुर्यादपि सर्षपमात्रकम् । शमीदलसमानान्वादद्यात्पिण्डान्पितॄन्प्रति
स्वर्गस्था मोक्षमायान्ति स्वर्गं नरकवासिनः ॥ १७ ॥
ततस्तस्योपरि महत्सर्वलोकेषु विश्रुतम् । सर्वतीर्थोत्तमं पुण्यं नाम्ना पापविनाशनम्
अस्ति पुण्यतमे विप्राः पवित्रे वेङ्कटाचले । यस्य संस्मरणादेव गर्भवासो न विद्यते
तत्प्राप्य तु नरः स्नायात्स्वामितीर्थस्य चोत्तरे ।
तत्र स्नानान्नरा यान्ति वैकुण्ठं नाऽत्र संशयः ॥ २० ॥

ऋषय ऊचुः

सूत! पापविनाशाख्यतीर्थस्यब्रूहि वैभवम् । व्यासेनवोधितस्त्वंहिवेत्सिसर्वंमहामुने

श्रीसूत उवाच

ब्रह्माश्रमपदे वृत्तां पार्श्वे हिमवतः शुभे । वक्ष्यामि ब्राह्मणश्रेष्ठायुष्माकंतुकथांशुभाम्
तदाश्रमपदं पुण्यं ब्रह्माश्रमपदं शुभम् । नानावृक्षसमाकीर्णं पार्श्वे हिमवतः शुभे ॥२३
बहुगुल्मलताकीर्णं मृगद्विपनिषेवितम् । सिद्धचारणसङ्घुष्टं रम्यं पुष्पितकाननम् ॥
यतिभिर्बहुभिः कीर्णं तापसैरुपशोभितम् । ब्राह्मणैश्च महाभागैः सूर्यज्वलनसन्निभैः
नियमव्रतसम्पन्नैः समाकीर्णं तपस्विभिः । दीक्षितैर्यागशीलैश्च यताहारैःकृतात्मभिः
वेदाध्ययनसम्पन्नैर्वैदिकैः परिवेष्टितम् । वर्णिभिश्च गृहस्थैश्च वानप्रस्थैश्च भिक्षुभिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वाश्रमाचारनिरतैः स्ववर्णोक्तविधायिभिः ।
वालखिल्यैश्च ऋषिभिः समन्तात्परिवेष्टितम् ॥ २८ ॥

तत्राऽऽश्रमेपुराकश्चिच्छूद्रोदृढमतिर्द्विजाः । साहसीब्राह्मणाभ्याशमाजगाममुदान्वितः
आगतो ह्याश्रमपदं पूजितश्च तपस्विभिः । नाम्ना दृढमतिः शूद्रः साष्टाङ्गं प्रणनाम वै
तान् स दृष्ट्वा मुनिगणादेवकल्पान्महौजसः । कुर्वतोविविधान्यज्ञान्संप्राहृष्यतशूद्रकः
अथाऽस्य वुद्धिरभवत्तपः कर्तुमनुत्तमम् । ततोऽब्रवीत्कुलपतिमुनिमाऽऽगत्यतापसम

दृढमतिरुवाच

तपोधन! नमस्तेऽस्तु रक्षमांकरुणानिधे !। तव प्रसादादिच्छामियागं कर्तुं प्रसीद मे
एवमुक्तस्तु शूद्रेण तमाह ब्राह्मणस्तदा ॥ ३४ ॥

कुलपतिरुवाच

यागे दीक्षयितुं शक्यो न शूद्रो हीनजन्मभाक् । श्रूयते यदि तेवुद्धिःशुश्रूषानिरतोभव
उपदेशो न कर्तव्यो जातिहीनस्य कर्हिचित् । उपदेशे महान्दोष उपाध्यायस्यविद्यते
नाध्यापयेद्वुधः शूद्रं तथा नैव च याजयेत् । न पाठयेत्तथाशूद्रंशास्त्रंव्याकरणादिकम्
काव्यं वा नाटकं वापि तथाऽलङ्कारमेव वा । पुराणमितिहासं च शूद्रंनैव तु पाठयेत्
यदि चोपदिशेद्विप्रःशूद्रस्यैतानिकर्हिचित् । त्यजेयुर्ब्राह्मणाविप्रंतंग्रामाद्ब्रह्मसङ्कुलात्
शूद्राय चोपदेष्टारं द्विजं चाण्डालवत्त्यजेत् । शूद्रं चाक्षरसंयुक्तं दूरतः परिवर्जयेत् ॥

तच्छुश्रूषस्व भद्रं ते ब्राह्मणाञ्छ्रद्धया सह ।
शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा मन्वादिभिरुदीरिता ॥ ४१ ॥

न हि नैसर्गिकं कर्म परित्यक्तुं त्वमर्हसि । एवमुक्तः स मुनिना सशूद्रोऽचिन्तयत्तदा
किं कर्तव्यं मया त्वद्य व्रते श्रद्धा हि मे परा । यथास्यान्ममसुज्ञानंयतिष्येऽहंतथाद्यवै
इति निश्चित्य मनसा शूद्रो दृढमतिस्तदा । गत्वाऽऽश्रमपदाद्दूरं कृतवानुटजं शुभम्
तत्र वै देवतागारं पुण्यान्यायतनानि च । पुष्पारामादिकं चापि तटाकखननादिकम् ॥
श्रद्धया कारयामास तपःसिद्ध्यर्थमात्मनः । अभिषेकांश्च नियमानुपवासादिकानपि
बलिं कृत्वा च हुत्वा च दैवतान्यभ्यपूजयत् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सङ्कल्पनियमोपेतः फलाहारो जितेन्द्रियः ॥ ४७ ॥
नित्यं कन्दैश्च मूलैश्च पुष्पैरपि तथा फलैः । अतिथीन्पूजयामासयथावत्समुपागतान्
एवं हि सुमहान्कालो व्यतिचक्राम तस्य च ॥ ४६ ॥
अथाऽऽश्रममगात्तस्यसुमतिर्नामनामतः । द्विजोगर्गकुलोद्भूतःसत्यवादीजितेन्द्रियः
स्वागतैर्मुनिमाराध्यतोषयित्वा फलादिकैः । कथयन्वैकथाः पुण्याःकुशलंपर्यपृच्छत
इत्थं विप्रः स पाद्याद्यैरुपचारैस्तुपूजितः । आशीर्भिरभिनन्द्यैनंप्रतिगृह्यचसत्क्रियाम्
तमापृच्छत्प्रहृष्टात्मा स्वाश्रमं पुनराययौ । एवं दिनेदिनेविप्रःशूद्रेऽस्मिन्पक्षपातवान्
आगच्छदाश्रमं तस्य द्रष्टुं तं शूद्रयोनिजम् ।
बहुकालं द्विजस्याऽभूत्संसर्गः शूद्रयोनिना ॥ ५४ ॥
स्नेहस्यवशमापन्नःशूद्रोक्तंनाऽतिचक्रमे । अथाऽऽगतं द्विजं शूद्रः प्राह स्नेहवशीकृतम्
हव्यकव्यविधानं मे ब्रूहि त्वं तु गुरुर्मतः । एवमुक्तः स शूद्रेण सर्वमेतदुपादिशत् ॥
कारयामास शूद्रस्य पितृकार्यादिकं तदा । पितृकार्ये कृते तेन विसृष्टः स द्विजोत्तमः
अथ दीर्घेण कालेन पोषितः शूद्रयोनिना । त्यक्तोविप्रगणैःसोऽयंपञ्चत्वमगमद्द्विजः
वैवस्वतभटैर्नीत्वा पातितो नरकेष्वपि । कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानिच
भुक्त्वा क्रमेण नरकांस्तदन्ते स्थावरोऽभवत् । गर्दभस्तुततोजज्ञेविड्वराहस्ततःपरम्
जज्ञेऽथ सारमेयोऽसौ पश्चाद्वायसतां गतः । अथ चण्डालतांप्राप्यशूद्रयोनिमगात्ततः
गतवान्वैश्यतां पश्चात्क्षत्रियस्तदनन्तरम् ।
प्रबलैर्बाध्यमानोऽसौ ब्राह्मणो वै तदाऽभवत् ॥ ६२ ॥
उपनीतः स पित्रा तु वर्षे गर्भाष्टमे द्विजः । वर्तमानः पितुर्गेहे स्वाचाराभ्यासतत्परः
गच्छन्कदाचिद्गहने गृहीतो ब्रह्मरक्षसा । रुदन्भ्रमन्स्खलन्मूढः प्रलपन्प्रहसन्नसौ॥६४
शश्वद्धाहेति च वदन्वैदिकं कर्म सोऽत्यजत् । दृष्ट्वा सुतं तथाभूतंपितादुःखेनपीडितः
सुतमादाय च स्नेहादगस्त्यं शरणं ययौ । सुवर्णमुखरीतीरे तपस्यन्तं शिवाग्रतः ॥
भक्त्या मुनिं प्रणम्याऽसौ पिता तस्य सुतस्य वै ।
तस्मै निवेदयामास स्वपुत्रस्य विचेष्टितम् ॥ ६७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अब्रवीच्च तदा विप्रः कुम्भजं मुनिपुङ्गवम् । एष मे तनयो ब्रह्मन्गृहीतो ब्रह्मरक्षसा ॥
सुखं न लभते ब्रह्मन्रक्ष तं करुणादृशा । नास्ति मे तनयोऽप्यन्यः पितॄणामृणमुक्तये ॥
तस्य पीडाविनाशार्थमुपायं ब्रूहि कुम्भज !। त्वत्समस्त्रिषु लोकेषुतपःशीलोन विद्यते
त्वां विनाऽस्य परित्राता न मे पुत्रस्य विद्यते । पुत्रेदयांकुरुगुरोदयाशीलाहिसाधवः

श्रीसूत उवाच

एवमुक्तस्तदा तेन कुम्भजोध्यानमास्थितः । ध्यात्वातुसुचिरंकालमब्रवीद्ब्राह्मणंततः

अगस्त्य उवाच

पूर्वजन्मनि ते पुत्रो ब्राह्मणोऽयंमहामते !। सुमतिर्नाम विप्रोऽयं मतिंशूद्राय वै ददौ
कर्माणिवैदिकान्येषसर्वाण्युपदिदेशवै । अतोऽयं नरकान्भुक्त्वा कल्पकोटिसहस्रकम्
जातो भुवि तदन्तेषु स्थावरादिषु योनिषु ।
इदानीं ब्राह्मणो जातः कर्मशेषेण ते सुतः ॥ ७५ ॥
यमेन प्रेषितेनाऽत्र गृहीतो ब्रह्मरक्षसा । क्रूरेण पातकेनाऽद्य पूर्वजन्मकृतेन वै ॥ ७६ ॥
उपायं ते प्रवक्ष्यामि ब्रह्मरक्षोविनाशने । श्रृणुष्व श्रद्धयायुक्तः समाधाय च मानसम्
सुवर्णमुखरीतीरे ऋषिसङ्घनिषेविते । वर्तते दैवतैः सेव्यः पावनो वेङ्कटाचलः ॥७८॥
तस्योपरि महातीर्थंनाम्नापापविनाशनम् । अस्तिपुण्यम्प्रसिद्धञ्च महापातकनाशनम्
भूतप्रेतपिशाचानां वेतालब्रह्मरक्षसाम् । महताञ्चैव रोगाणां तीर्थं तन्नाशकं स्मृतम्
सुतमादाय गच्छ त्वं तत्तीर्थं गिरिमध्यगम् ।
प्रयतः स्नापय सुतं तीर्थे पापविनाशने ॥ ८१ ॥
स्नानेन त्रिदिनन्तत्र ब्रह्मरक्षो विनश्यति । नैवचोपायान्तरं तस्यविनाशेविद्यतेभुवि
तस्माच्छीघ्रं प्रयाहि त्वंवेङ्कटाह्वयपर्वतम् । तत्र पापविनाशाख्यतीर्थे स्नापयतेसुतम्
मा विलम्बं कुरुष्वाऽत्र त्वरया याहि वै द्विज ! ।
इत्युक्तः स द्विजोऽगस्त्यं प्रणम्य भुवि दण्डवत् ॥ ८४ ॥
अनुज्ञातश्च तेनाऽसौ प्रययौवेङ्कटाचलम् । सुतेनसाकंविप्रोऽसौ गत्वापापविनाशनम्
सङ्कल्पपूर्वं संस्नाप्य दिनत्रयमसौ सुतम् । सस्नौस्वयञ्चविप्रेन्द्रः पिता पापविनाशने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समागतः पपौ तोयं कृत्वा चाऽप्याह्निकक्रमम् ।
अथ तस्य सुतस्तत्र विमुक्तो ब्रह्मरक्षसा ॥ ८७ ॥
समजायत नीरोगः स्वस्थः सुन्दररूपधृक् ।
सर्वसम्पत्समृद्धोऽसौ भुक्त्वा भोगाननेकशः ॥ ८८ ॥
देहान्ते प्रययौ मुक्तिं स्नानात्पापविनाशने । पिताऽपितत्र स्नानेनदेहान्तेमुक्तिमाप्तवान्
तेनोपदिष्टोऽयं शूद्रः स भुक्त्वा नरकान् क्रमात् ।
अनेकासु जनित्वा च कुत्सितास्वपि योनिषु ॥ ९० ॥
गृध्रजन्माऽभवत्पश्चाद्वेङ्कटाचलभूधरे । स कदाचिज्जलम्पातुं तीर्थे पापविनाशने ॥९१
समागतः पपौ तोयं सिषिचे चात्मनस्तनुम् । तदैव दिव्यदेहःसन्सर्वाभरणभूषितः
दिव्यम्विमानमारुह्य प्रययावमरालयम् ॥ ९३ ॥

श्रीसूत उवाच

एवम्प्रभावमेतद्वै तीर्थम्पापविनाशनम् । पापानां नाशनाद्विप्राःपापनाशाभिधं हि तत्
इत्थं रहस्यं कथितं मुनीन्द्रास्तद्वैभवं पापविनाशनस्य ।
यत्राभिषेकात्सहसा विमुक्तौ द्विजश्च शूद्रश्च विनिन्द्यकृत्यौ ॥ ९५ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये पापविनाशनतीर्थमहिमानुवर्णनं
नामैकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विंशोऽध्यायः

पापविनाशनतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

पुनश्चाऽहं प्रवक्ष्यामि पापनाशनवैभवम् । भगवद्भक्तिभावेन शृणुध्वं सुसमाहिताः ॥१
इतिहासं प्रवक्ष्यामि सर्वपापविनाशनम् । यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्रसंशयः
आसीत्पुरा द्विजवरो वेदवेदाङ्गपारगः । दरिद्रो वृत्तिहीनश्च नाम्ना भद्रमतिर्द्विजः ॥
श्रुतानि सर्वशास्त्राणि तेन विप्रेण धीमता । श्रुतानिच पुराणानिधर्मशास्त्राणिसर्वशः

अभवंस्तस्य षट्पत्न्यः कृता सिन्धुर्यशोवती ।
कामिनी मालिनी चैव शोभा चैव प्रकीर्तिताः ॥ ५ ॥

तासुपत्नीषुतस्याऽऽसीत्पुत्राणाञ्चशतद्वयम् । तेसर्वेतस्यपुत्राद्याःक्षुधयापरिपीडिताः

अकिञ्चनो भद्रमतिः क्षुधार्तानात्मजान्प्रियान् ।
पश्यन्प्रियाः क्षुधार्ताश्च विललाऽऽपाकुलेन्द्रियः ॥ ७ ॥
धिग्जन्मभाग्यरहितं धिग्जन्मधनवर्जितम् ।
धिग्जन्मकीर्तिरहितं धिग्जन्माऽऽतिथ्यवर्जितम् ॥ ८ ॥

धिग्जन्माचाररहितं धिग्जन्मज्ञानवर्जितम् ॥ धिग्जन्मयत्नरहितंधिग्जन्मसुखवर्जितम्
धिग्जन्मबन्धुरहितंधिग्जन्मख्यातिवर्जितम् । नरस्यबह्वपत्यस्यधिग्जन्मैश्वर्यवर्जितम्

अहोगुणाः सौम्यता च विद्वत्ता जन्म सत्कुले ।
दारिद्र्याम्बुधिमग्नस्य सर्वमेतन्न शोभते ॥ ११ ॥
विप्राः पुत्राश्च पौत्राश्च बान्धवा भ्रातरस्तथा ।
शिष्याश्च सर्वे मनुजास्त्यजन्त्यैश्वर्यवर्जितम् ॥ १२ ॥

इतिनिश्चित्यमतिमान्धीरोभद्रमतिर्द्विजः । चण्डालोवाद्विजोवापिभाग्यवानेवपूज्यते
दरिद्रः पुरुषोलोके शववल्लोकनिन्दितः । अहो सम्पत्समायुक्तोनिष्ठुरोवाप्यनिष्ठुरः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुणहीनोऽपिगुणवान्मूर्खोवापि सपण्डितः । सर्वधर्मसमायुक्तो धर्महीनोऽथवानरः
ऐश्वर्यगुणयुक्तश्चेत्पूज्य एव न संशयः । अहो दरिद्रता दुःखं तत्राप्याशातिदुःखदा
आशाभिभूताः पुरुषाःदुःखमश्नुवते क्षणात् ॥ १७ ॥
आशाया ये दासा दासास्ते सर्वलोकस्य । आशा दासी येषां तेषां दासायते लोकः
सर्वशास्त्रार्थवेत्तापिदरिद्रोभातिमूर्खवत् । आकिञ्चन्यमहाग्राहग्रस्तानांनास्तिमोचकः
अहो दुःखमहो दुःखमहो दुःखं दरिद्रता ।
तत्राऽपि पुत्रदाराणां बाहुल्यमतिदुःखदम् ॥ २० ॥
एवमुक्त्वा भद्रमतिः सर्वशास्त्रार्थपारगः । अत्यैश्वर्यप्रदं धर्मंमनसा चिन्तयंस्तदा
तूष्णीं स्थितो भद्रमतिर्महाक्लेशसमन्वितः ॥ २१ ॥
तदानीं तासु भार्यासु कामिनी पतिदेवता ॥ २२ ॥
भार्या साधुगुणैर्युक्ता पतिं तं प्रत्यभाषत ॥ २३ ॥

कामिन्युवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्रार्थपारग !। मम नाथ महाभाग वाक्यंशृणु महामते !॥
सुवर्णमुखरीतीर ऋषिसङ्घनिषेविते । वर्तते दैवतैः सेव्यः पावनो वेङ्कटाचलः॥२५
तस्मिन्वेङ्कटशैलेन्द्रे सुरासुरनमस्कृते । वर्तते पावनं तीर्थं पापानां दाहकं शुभम्
तत्र गत्वा महाभाग पापनाशे महामते । कुरु स्नानं प्रयत्नेन भार्यापुत्रसमन्वितः ॥२७
तस्य तीर्थस्य माहात्म्यं नारदाच्च श्रुतं मया । बालभावेममपितुरन्तिकेप्रोक्तवान्मुनिः
वेङ्कटाद्रौ महापुण्ये सर्वपातकनाशने । सर्वदुःखप्रशमने सर्वसम्पत्प्रदायके ॥ २६ ॥
पापनाशे महातीर्थे स्नात्वा सङ्कल्पपूर्वकम् । अत्यैश्वर्यप्रदं धर्मं मनसा चिन्तयंस्तदा
भूमिदानं विनिश्चित्य सर्वदानोत्तमोत्तमम् । प्रापकं परलोकस्य सर्वकामफलप्रदम्
दानानामुत्तमं दानं भूदानं परिकीर्तितम् । तद्दत्त्वा समवाप्नोति यद्यदिष्टतमं नरः ॥३२
इत्येवं नारदेनोक्तं श्रुत्वा मे जनको द्विजः । सम्प्रहृष्टमना भूत्वा शेषाद्रिं प्राप्तवांस्तदा
तत्र गत्वा महाभागः सर्वसम्पत्प्रदायकम् । भूदानं विप्रवर्याय श्रोत्रियाय प्रदत्तवान्
ततो मे जनको विद्वन्सर्वभाग्यसमन्वितः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इहलोके सुखं प्राप्य चाऽन्ते विष्णुपुरं ययौ ॥ ३५ ॥
त्वं च गत्वा महाभाग वेङ्कटाद्रिं नगोत्तमम् । कुरु दानं प्रयत्नेन भूदानं सर्वकामदम्.
भूमिदानस्य माहात्म्यं शृणुष्व सुसमाहितः ।
न कोऽपि गदितुं शक्तो लोकेऽस्मिन्भगवन्प्रभो !॥ ३७ ॥
भूमिदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति । परं निर्वाणमाप्नोतिभूमिदो नाऽत्र संशयः.
स्वल्पामपि महींदत्त्वाश्रोत्रियायाऽऽहिताग्नये । ब्रह्मलोकमवाप्नोतिपुनरावृत्तिवर्जितम्
भूमिदः सर्वदः प्रोक्तो भूमिदो मोक्षभाग्भवेत् । भूमिदानं वृषाद्रौचसर्वपापप्रणाशनम्
महापातकयुक्तो वा युक्तो वा सर्वपातकैः । दशहस्तां महीं दत्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते
सत्पात्रे भूमिदाता यः सर्वदानफलं लभेत् ।
भूमिदस्य समो नान्यस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ ४२ ॥
द्विजस्य वृत्तिहीनस्य यः प्रदद्यान्महीं शुभाम् । तस्यपुण्यफलंवक्तुंशेषोनार्हःकदाचन.
विप्रस्य वृत्तिहीनस्य सदाचारस्य कस्यचित् ।
योऽल्पामपि महीं दद्यात्सविष्णुर्नाऽत्र संशयः ॥ ४४ ॥
इक्षुगोधूमकेदारपूगवृक्षादिसंयुता । पृथ्वी प्रदीयते येन स विष्णुर्नाऽत्र संशयः ४५
वृत्तिहीनस्यविप्रस्यदरिद्रस्यकुटुम्बिनः । स्वल्पामपिमहींदत्त्वाविष्णुसायुज्यमश्नुते
सक्तस्य देवपूजासुविप्रस्याऽऽटविका मही । दत्ताभवतिगङ्गायांत्रिरात्रस्नानजंफलम्
विप्रस्य वृत्तिहीनस्य सदाचाररतस्य च । द्रोणिकां पृथिवींदत्त्वायत्फलं लभतेशृणु
गङ्गातीरेऽश्वमेधानां शतानि विधिवन्नरः । कृत्वायत्फलमाप्नोतितदाप्नोतिमहत्फलम्
ददाति भारिकां भूमिं दरिद्राय द्विजातये ।
तस्य पुण्यं प्रवक्ष्यामि मन्नाथ भगवन्प्रभो !॥ ५० ॥
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । विधाय जाह्नवीतीरेयत्फलं तल्लभेत सः ॥
भूमिदानं महादानमतिदानं प्रकीर्तितम् । सर्वपापप्रशमनमपवर्गफलप्रदम् ॥ ५२ ॥
यच्छ्रुत्वाश्रद्धयायुक्तोभूमिदानफलंलभेत् । भार्यायावचनंश्रुत्वात्वितिहाससमन्वितम्
सन्तुष्टो मनसि ध्यात्वा शेषाचलनिवासिनम् ॥ ५४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गन्तुं प्रचक्रमे बुद्धया क्रीड़ाचलमनुत्तमम् । ततो भद्रमतिः सौम्यः सर्वधर्मपरायणः
सुशालि नाम नगरीं कलत्रसहितो ययौ । सुघोषंनाम विप्रेन्द्रं सर्वैश्वर्यसमन्वितम्

गत्वा याचितवान्भूमिं पञ्चहस्तायतां द्विजः ।
सुघोषो धर्मनिरतस्तं निरीक्ष्य कुटुम्बिनम् ॥ ५७ ॥

मनसा प्रीतिमापन्नं समभ्यर्च्यैनमब्रवीत् । कृतार्थोऽहं भद्रमते ! सफलं मम जन्म च

मत्कुलं चाऽनघं जातं त्वं हि ग्राह्योऽसि मे यतः ॥ ५८ ॥

इत्युक्त्वा तं समभ्यर्च्य सुघोषो धर्मतत्परः । पञ्चहस्तप्रमाणांतांददौतस्मैमहामतिः

पृथिवी वैष्णवी पुण्या पृथिवी विष्णुपालिता ।
पृथिव्यास्तु प्रदानेन प्रीयतां मे जनार्दनः ॥ ६० ॥
मन्त्रणाऽनेन विप्रेन्द्राः सुघोषस्तं द्विजेश्वरम् ।
विष्णुबुद्धया समभ्यर्च्य तावतीं पृथिवीं ददौ ॥ ६१ ॥

स भद्रमतये विप्रा धीमांस्तांयाचितांभुवम् । दत्तवान्हरिभक्तायश्रोत्रियायकुटुम्बिने
सुघोषो भूमिदानेन कोटिविंशसमन्वितः । प्रपेदे विष्णुभवनं यत्र गत्वान शोचति
विप्रो भद्रमतिश्चाऽपि पुत्रदारसमन्वितः । गतो वेङ्कटशैलेन्द्रं सुरासुरनमस्कृतम् ६४
गन्धर्वयक्षशैलादिसेवितं मेरुपुत्रकम् । वैकुण्ठादागतं दिव्यं क्रीडाचलमनुत्तमम् ॥

तत्र स्वामिसरस्तोये निर्मले पावने शुभे ।
दारपुत्रादिसंयुक्तः स्नात्वा सङ्कल्पपूर्वकम् ॥ ६६ ॥

तत्पश्चिमतटे श्वेतसूकरं वसुधाधरम् । नत्वा तत्र विधानेन श्रीनिवासालयं गतः
तत्र ब्रह्मादिदेवैश्चसेवितं वेङ्कटेश्वरम् । दृष्टवान्सह पुत्राद्यैर्विष्णुभक्तो महामतिः ॥६८

भक्तया प्रणम्य देवेशं श्रीनिवासं कृपानिधिम् ।
पुत्रदारादिसंयुक्तः पापनाशनमाययौ ॥ ६६ ॥

तत्र स्नात्वाविधानेनकृतधर्मादिसत्क्रियः । कस्मैचिद्विष्णुभक्तायश्रोत्रियायमहामतिः

विष्णुबुद्धया स प्रददौ भूदानं मोक्षदं शुभम् ॥ ७१ ॥
तदा प्रादुरभूद्देवः शङ्खचक्रगदाधरः ॥ ७२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नवमोऽध्यायः

वसुनामकनिषादवृत्तान्तेसुतहननोद्युक्तंतम्प्रतिभंगवदुक्तिवर्णनम्

धरण्युवाच

कलौ युगे भूमिधर ! केनत्वंद्रक्ष्यसे प्रिय !। विमानं केन ते देव कार्यतेऽस्मिन्महीधरे

श्रीनिवासोऽपि केनैव द्रक्ष्यते सुभगाकृतिः ।

एतद् ब्रूहि मम प्रीत्या श्रोतुं कौतूहलं विभो !॥ २ ॥

श्रीवराह उवाच

वक्ष्यामि शृणु हे देवि ! भविष्यद्यद्वदामि ते ।

अस्मिन्महीध्रे पुण्ये निषादो वसुनामकः ॥ ३ ॥

श्यामाकवनपालोऽभूद्भक्तिमान्पुरुषोत्तमे । श्यामाकतण्डुलान्पक्वामधुना परिषिच्य च

निवेद्य देवदेवाय श्रीभूमिसहिताय च । एवं भक्तिमतस्तस्य भार्या चित्रवती शुभा

असूत तनयं बाला वीरनामानमुत्तमम् । वसुः पुत्रेण सहितो भार्यया पतिभक्तया

कस्मिंश्चिद्दिवसे पुत्रं श्यामाकं पालयेति च ।

विसृज्य पत्न्या सहितो मध्वन्वेषणतत्परः ॥ ७ ॥

गतो वनान्तरंशीघ्रं मधुच्छत्रदिदृक्षया । बालःश्यामाकपक्वानिगृहीत्वाऽग्नौनिधायच

पिष्ट्वा निवेदयामास वृक्षमूले श्रियः पतेः । नैवेद्यं भक्षयित्वैव वीरस्त्वास सुखेन वै

तदन्तरेवसुश्चापि मध्वादाय समागतः । श्यामाकान्भक्षितान्दृष्ट्वासन्तर्ज्यसुतमात्मनः

खड्गमादाय तं हन्तुं त्वरया हस्तमुद्दधौ ॥ ११ ॥

तद्वृक्षस्थस्तदा विष्णुः खड्गं जग्राह पाणिना ।

खड्गो गृहीतः केनेति पश्यन्वृक्षं ददर्श सः ॥ १२ ॥

शङ्खचक्रगदापाणिं वृक्षारूढार्धविग्रहम् । मुक्त्वा वसुश्च तं खड्गं प्रणम्योवाच केशवम्

किमिदं देवदेवेश ! चेष्टितं क्रियते त्वया ॥ १४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हंसेन्दुशुक्लवर्णानां हयानामयुतं ददौ ।
तुङ्गानां नित्यमत्तानां गजानामधिकं शतात् ॥ ३४ ॥
अन्तःपुरचरा नारीर्नृत्तगीतविशारदाः । ददौ चतुःसहस्राणि श्रीनिवासाय विष्णवे
दत्त्वा चैतानि सर्वाणि तस्थौ देवपुरो विभुः ॥ ३५ ॥
दृष्ट्वा देवोऽपि तत्सर्वं देवीभ्यां सहितो हरिः ॥ ३६ ॥
सुप्रीतः प्राह राजानं श्वशुरं वेङ्कटेश्वरः । वरं वृणीष्व हे राजन्गुरो मत्तो यदीच्छसि
इति श्रीशवचः श्रुत्वा वियद्राजोऽवदद्विभुम् ।
त्वत्सेवैवेह देवैवं भूयादव्यभिचारिणी ॥ ३८ ॥
मनस्त्वत्पादकमले त्वयि भक्तिर्ममाऽस्तु वै ॥ ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच

त्वया यदुक्तं राजेन्द्र ! सर्वमेतद्भविष्यति । इतिदत्त्वावरंतस्मैसम्मान्यैवयथोचितम्
ब्रह्मेशादिसुरान्सर्वान्समभ्यर्च्य यथोचितम् । स्वर्लोकगमनायैवमनुमेने मुदा हरिः
गतेषु तेषु सर्वेषु श्रिया भूमिजया युतः ॥ ४१ ॥
विहरन्स यथापूर्वं स्वामिपुष्करिणीतटे ।
आस्ते दिव्यालये देवोऽप्यर्च्यमानो गुहेन वै ॥ ४२ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे ब्रह्मादिभिः साकं श्रीनिवासस्यवियद्राजपुरगमनकमलालयापरिणयादिवर्णनंनामा ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवो देवगणैर्युक्तो विष्वक्सेनादिपार्षदैः ।
सखीभिस्स्यन्दनस्थाभिर्वकुलाद्याभिरन्वितः ।
आकाशराजस्य पुरमाससाद स्वलङ्कृतम् ॥ १७ ॥
देवमागतमालोक्य कन्यामैरावतस्थिताम् । पुरीं प्रदक्षिणीकृत्य गोपुरद्वारमागताम्
आलोक्याऽऽकाशराजोऽपिसमानीयवधूवरौ । बन्धुभिःसहितस्तस्थौदेवमालोक्यकेशवम्
विष्णोर्मालां स्वकण्ठस्थां हस्तेनाऽऽदाय सस्मितः ।
कमलायाः स्कन्धदेशे मुमोच सुमनश्चिताम् ॥ २० ॥
आदाय मल्लिकामालां साऽस्य कण्ठेसमर्पयत् । एवं त्रिवारं तौकृत्वावाहनादवरुह्यच
स्थित्वा पीठे क्षणंपश्चाद्गृहं विविशतुः शुभम् । ब्रह्मादिदेवयूथैश्चसहितौभूमिजाहरी
माङ्गल्यसूत्रबन्धादि साङ्कुरार्पणमब्जजः । वैवाहिकं कारयित्वा लाजहोमान्तमेव च
व्रतादेशं समाज्ञाय सहितौ कमलाहरी । चतुर्थेदिवसे सर्वं समापय्य चतुर्मुखः ॥२४
अनुज्ञाप्य वियद्राजमारोप्य गरुडे हरिम् । देवीभ्यां सहितं देवं देवैर्गन्तुं प्रचक्रमे
दिव्यदुन्दुभिनिर्घोषैः सम्प्राप्य वृषभाचलम् । तुष्टुवुर्देवदेवेशं ब्रह्माद्या देवतागणाः ॥
शुकादयो मुनिगणास्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ।
स्तूयमानोऽथ देवोऽपि विवेश मणिमण्डपम् ॥ २७ ॥
रमाधरणिजाभ्यां च तत्र सिंहासनं ययौ ॥ २८ ॥
आकाशराजोऽपि तथा महेन्द्रादिसुरैः सह ।
पुत्रीविष्ण्वोः प्रियार्थं तु प्राभृतं कर्तुमुद्यतः ॥ २९ ॥
सौवर्णेषु कटाहेषु तण्डुलाञ्छालिसम्भवान् । मुद्गपात्राण्यनेकानि घृतकुम्भशतानि च
पयोघटसहस्राणि दधिभाण्डान्यनेकशः । दिव्यानि चूतकदलीनारिकेलफलानि च
धात्रीफलानि कूष्माण्डराजरम्भाफलानि च ।
पनसान्मातुलुङ्गांश्च शर्करापूरितान्घटान् ॥ ३२ ॥
सुवर्णमणिमुक्ताश्च क्षौमकोट्यम्बराणि च ।
दासीदाससहस्राणि कोटिशो गास्तथैव च ॥ ३३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हंसेन्दुशुक्लवर्णानां हयानामयुतं ददौ ।
तुङ्गानां नित्यमत्तानां गजानामधिकं शतात् ॥ ३४ ॥
अन्तःपुरचरा नारीर्नृत्तगीतविशारदाः । ददौ चतुःसहस्राणि श्रीनिवासाय विष्णवे
दत्त्वा चैतानि सर्वाणि तस्थौ देवपुरो विभुः ॥ ३५ ॥
दृष्ट्वा देवोऽपि तत्सर्वं देवीभ्यां सहितो हरिः ॥ ३६ ॥
सुप्रीतः प्राह राजानं श्वशुरं वेङ्कटेश्वरः । वरं वृणीष्व हे राजन्गुरो मत्तो यदीच्छसि
इति श्रीशवचः श्रुत्वा वियद्राजोऽवदद्विभुम् ।
त्वत्सेवैवेह देवैवं भूयादव्यभिचारिणी ॥ ३८ ॥
मनस्त्वत्पादकमले त्वयि भक्तिर्ममाऽस्तु वै ॥ ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच

त्वया यदुक्तं राजेन्द्र ! सर्वमेतद्भविष्यति । इतिदत्त्वावरंतस्मैसम्मान्यैवयथोचितम्
ब्रह्मेशादिसुरान्सर्वान्समभ्यर्च्य यथोचितम् । स्वर्लोकगमनायैवमनुमेने मुदा हरिः
गतेषु तेषु सर्वेषु श्रिया भूमिजया युतः ॥ ४१ ॥
विहरन्स यथापूर्वं स्वामिपुष्करिणीतटे ।
आस्ते दिव्यालये देवोऽप्यर्च्यमानो गुहेन वै ॥ ४२ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे ब्रह्मादिभिः साकं श्रीनिवासस्यवियद्राजपुरगमनकमलालयापरिणयादिवर्णनंनामा [illegible]ऽध्यायः ॥ ८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणम्य देवदेवेशं सखी वकुलमालिका । गुञ्जामणिसमाकारं रक्ताश्वमधिरुह्य सा ॥
यथोक्तमार्गेण ययौ पश्यन्ती विविधान्मृगान् ।
मत्तेभान्पर्वताकाराञ्छ्वेतदन्तविभूषितान् ॥ ५८ ॥
करिणीयूथसहिताञ्जलदादानतत्परान् । सिंहाञ्छतघनप्रख्यान्सिंहीयूथैरनुद्रुतान् ॥५९
शार्दूलर्क्षांश्च खड्गांश्च शरभान्गवयान्मृगान् ।
कृष्णसारांश्च गोमायूञ्छशांश्च प्रियकानपि ॥ ६० ॥
सारसांश्च मयूरांश्चमार्जारान्वनगोचरान् । वृकाञ्छुकान्सूकरांश्चसुवाचःपक्षिणस्तथा
पश्यन्ती विविधाकारांस्तुष्यन्ती च मुहुर्मुहुः ।
आससादाऽरणीतीरं पश्चिमं पादपाकुलम् ॥ ६२ ॥
अवतीर्याऽरुणादश्वादगस्त्येशमीपतः । दृष्ट्वाऽगस्त्येश्वरं लिङ्गमगस्त्येन सुपूजितम् ॥
तत्र स्नात्वा च पीत्वा च विशश्राम नदीतटे ॥ ६४ ॥
तत्राऽऽगताराजगृहाद्योषितोदेवसन्निधौ । सखीःपद्मालयायास्ता दृष्ट्वा वकुलमालिका
गत्वा समीपे तासां सा किंवदन्ती स्म पृच्छति ॥ ६६ ॥

वकुलमालिकोवाच

कायूयं योषितो ब्रूत विचित्राभरणस्रजः । कुतः समागता ह्यत्रकिंकार्यंवोऽमलाननाः
तास्तु तस्यावचःश्रुत्वास्मितपूर्वमथाऽब्रुवन् । शृणुष्वावहितादेविवयंवक्ष्यामहेऽधुना

इति श्रीस्कन्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येधरणीवराहसम्वादेपद्मावतीदर्शनेनश्रीनिवासस्य मोह-प्राप्त्यादिवर्णनंनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षष्ठोऽध्यायः

बकुलमालिकाम्प्रतिसखीविनिवेदितपद्मावत्युदन्तवर्णनम्

योषित ऊचुः

वयमाकाशराजस्य शुद्धान्तनिलयाः स्त्रियः। सख्यः पद्मालयाया वै दुहितुर्वसुधापतेः
राजपुत्रीं पुरस्कृत्य गताः पूर्वं वनान्तरम्। कुर्वन्त्यः पुष्पावचयं राजपुत्र्यर्थमाकुलाः
वृक्षमूले समासीनास्तत्रपश्यामपूरुषम्। इन्द्रनीलमणिश्याममिन्दिरामन्दिरोरसम्
ईषत्स्मितमुखं चारुपीनदीर्घभुजद्वयम्। मृष्टपीताम्बरं हेमबाणबाणासनोज्ज्वलम् ॥
सुवर्णमुकुटं हारकेयूरादिविभूषितम्। तं तु पद्मालया दृष्ट्वा सखी कमललोचना ॥५

द्रुतहेमनिभाकारा पश्य पश्येति साऽब्रवीत्।
पश्यन्तीनां तदाऽस्माकं गतोऽन्तर्धानमाशु सः ॥ ६ ॥
सा सखी मूर्च्छिताऽस्माभिर्नीता राजगृहं ततः ॥ ७ ॥

दृष्ट्वाऽस्वस्थांनृपः पुत्रीमपृच्छद्दैवचिन्तकम्। वदविप्रेन्द्र पुत्र्या मे ग्रहचारफलं मुने
बृहस्पतिसमोविप्रोविचार्याऽऽत्मनि खेचरान्। अनुकूला ग्रहाःसर्वे तवपुत्र्यानृपोत्तम
किन्तु नित्यं ग्रहफलं किञ्चिद्भ्रान्तिकरं नृप। तमुवाच पुनर्धीमान्प्रश्नकालंविचार्यच्च
छायां गुणित्वा लग्नञ्चतत्फलानिविचार्यच। लग्नेलग्नाधिपश्चन्द्रःकेन्द्रेचैवबृहस्पतिः
निद्राति दिनपक्षी तु प्रश्नपक्षीतुराज्यगः। शृणुराजन्फलंतस्यस्वास्थ्यमेवभविष्यति
उत्तमः पुरुषः कश्चिदागतः कन्यकाम्प्रति। तं दृष्ट्वा मूर्च्छिता पुत्रीतेनयोगंसमेष्यति
तेनैव प्रेषिताः काचिदागमिष्यतिकन्यका। सातुवक्ष्यतियद्वाक्यंतद्धितंतेभविष्यति
तत्कुरुष्व महाराज! सत्यंसत्यं वदाम्यहम्। किंचसर्वार्थदंयत्तुसर्वव्याधिविनाशनम्

वक्ष्यामि तत्कुरुष्वाऽद्य पुत्र्यास्तव सुखावहम्।
कार्याऽगस्त्यलिङ्गस्य ब्राह्मणैरभिषेचनम् ॥ १६ ॥
इत्युक्त्वाऽथ गृहं यातो राजानं दैवचिन्तकः ॥ १७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकाशराजोऽपि तदा विप्रानाहूय वैदिकान् ।
अभ्यर्च्याऽऽज्ञापयामास गत्वा देवालयं द्विजाः ॥ १८ ॥
महाभिषेकं शम्भोश्च कुरुध्वं मन्त्रपूर्वकम् । इत्यनुज्ञाप्य तानस्मानाहूयाऽभ्यवदच्छुभे
महाभिषेकसम्भारान्सम्पादयत कन्यकाः । इत्याज्ञप्ता नृपेणैव वयं देवालयं गताः ॥
ब्रूहि त्वं सुभगेऽस्माकं त्वदाऽऽगमनमञ्जसा ।
कुतोऽसि कस्य वाऽर्थेन क्व वा जिगमिषा हि ते ! ॥ २१ ॥
दिव्याश्वमधिरुह्येमं देवलोकादिवाऽऽगता ॥ २२ ॥

श्रीवराह उवाच

इति ताभिस्तदा पृष्टा हृष्टा वकुलमालिका । प्रोवाचवाचंमधुरांहर्षयन्तीवबालिकाः

वकुलमालिकोवाच

श्रीवेङ्कटाद्रेः प्राप्ताऽहं नाम्ना वकुलमालिका । धरणींद्रष्टुकामाऽहमारुह्येमं तुरङ्गमम्
द्रष्टुं शक्या भवेद्देवी किमु तत्रनृपालये । इतितस्यावचःश्रुत्वाताःप्रोचुर्नृपकन्यकाः
अस्माभिः सहिता त्वम्वै द्रक्ष्यसे धरणीं शुभे !।
इत्युक्ता सा ततस्ताभिरागता नृपमन्दिरम् ॥ २६ ॥
आगच्छन्तीषु तास्वेवं धरणी तु पुलिन्दिनीम् ॥ २७ ॥
आयान्तीं वीथिकायां सा सगुञ्जाशङ्खभूषिताम् ।
शिशुं स्तनन्धयं पृष्ठे बद्ध्वा वस्त्राञ्चलेन वै ॥ २८ ॥
वदामि सत्यं शृणुतभूतंभव्यंभविष्यकम् । वदन्तीवीथिवीथीषुतामाहूयशुचिस्मिता
स्वर्णशूर्पं समादाय तस्मिन्मुक्ता निधाय च ।
त्रिप्रस्थमात्रांस्त्रीन्राशीन्कृत्वा तस्यै निधाय च ॥ ३० ॥
वदसत्यंपुलिन्दे! त्वमेष्यद्वाभूतमेववा । इत्येवंधरणीदेवी पृच्छन्तीतांस्थिताऽभवत्
पृष्टा साऽवददस्यास्तु मनसा यद्विचिन्तितम् ।
मध्यराशौ चिन्तितं ते वद कल्याणि! मे ऋजु ॥ ३२ ॥
ओमित्याहाऽद्य धरणी पुलिन्दां राजवल्लभा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धरण्युवाच

राशिरुक्तः फलम्ब्रूहि धनराशिं ददामि ते ॥ ३३ ॥

पुलिन्दोवाच

सत्यम्वदामि ते सुभ्रु शिशोरन्नं प्रयच्छ मे । इत्युक्तासातु धरणीस्वर्णपात्रेऽन्नमाददे
दत्त्वातस्यैपुलिन्दिन्यैसत्यंब्रूहीतिसाऽवदत् । सक्षीरमन्नमादाय दत्त्वापुत्रायभामिनी
सा सत्यमवदत्सुभ्रू र्दुहितुर्देहशोषणम् । पुरुषादागतं भीरु ! तद्रूपाऽदर्शनादियम् ॥
अङ्गतापं समापन्ना ह्यनङ्गशरपीडिता । स तु देवादिदेवो वै वैकुण्ठादागतः स्वयम्
श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरे स्वामिपुष्करिणीतटे । मायावी परमानन्दः श्रिया सह रमापतिः
कामरूपी विहरते भक्ताभीष्टप्रदो हरिः । स तुरङ्गं समारुह्य विरहन्काननान्तरे ॥३९॥
आगत्योपवनं राज्ञि तव कन्यां स दृष्टवान् । रमासमामिमां दृष्ट्वास्वयं कामवशंगतः

स्वसखीं ललितां देवः प्रेषयिष्यति तेऽन्तिकम् ।

रमेव तं समेत्यैषा रमिष्यति सुखं चिरम् ॥ ४१ ॥

एतत्सत्यं मम वचः पश्याद्यैवनृपात्मजे !। पुत्रस्यान्नंप्रयच्छेतितूष्णीमासपुलिन्दिनी
अन्नं दत्त्वापुनर्भूरितस्यैतांविससर्जह । तस्यांविनिर्गतायान्तुपुलिन्दिन्यामनिन्दिता

उत्थाय चाऽङ्गणात्तस्माद्विवेशान्तःपुरं शुभम् ।

यत्र पद्मालया कन्या समास्ते स्वसखीवृता ॥ ४४ ॥

गत्वा पुत्री समीपस्था कन्यां कामातुरां सुताम् ।

पुत्रि ! किं ते करिष्यामि वस्तु किम्वा प्रियं शुभे !॥ ४५ ॥

इति मात्राऽभिपृष्टा सा मन्दमाह मनस्विनी ॥ ४६ ॥

नेत्राभिरामं यल्लोके सतामपि मनःप्रियम् । यद्द्रष्टुकामा ब्रह्माद्या यत्तुसर्वगतं महत्
तेजसामपि तेजस्वि देवानामपि दैवतम् । भक्तैस्सद्भिरिह प्राप्यमभक्तैर्न कदाचन
तस्मिन्नेव मनो मेऽम्ब वस्तुनीह प्रवर्तते । तदेवाऽन्विष्यतांमातर्भक्तानांसर्वकामदम्

श्रीवराह उवाच

एतच्छ्रुत्वाऽथ धरणी तामपृच्छत्पुनःसुताम् । तद्भक्तलक्षणम्ब्रूहियैःप्राप्यन्तत्सुलोचने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पद्मालयोवाच

भक्तानां लक्षणं मातः! शृणु गुह्यं समाहिता। शङ्खचक्राङ्कितानित्यंभुजयुग्मेवसुन्धरे
ऊर्ध्वंपुण्ड्रं सान्तरालं तेषामेव विशेषतः। पुण्ड्रानि द्वादश पुनर्धारयन्ति तथाऽपरे
ललाटोदरहृत्कण्ठे जठरे पार्श्वयोरपि। कूर्परयोर्भुजद्वन्द्वे च पृष्ठे च गलपृष्ठके ॥५२
केशवादीनि नामानिद्वादशाङ्केषुद्वादश। वासुदेवेति तन्मूर्ध्निधारयन्तिनमोऽस्त्विवति
तेषान्तुनियमान्वक्ष्ये मातः! शृणु मनोरमान्। वेदपारायणरताःकर्म कुर्वन्तिवैदिकम्
सत्यम्वदन्ति ये देवि नासूयन्तिपरान्कचित्। परनिन्दां न कुर्वन्तिपरस्वंनहरन्तिच

न स्मरन्ति न पश्यन्ति न स्पृशन्ति कदाचन।
परदारान्सुरूपांश्च ये च तान्विद्धि वैष्णवान् ॥ ५७ ॥

सर्वभूतदयावन्तः सर्वभूतहितेरताः। सदा गायन्ति देवेशमेतान्भक्तानवेहि वै ॥ ५८
येन केनचसन्तुष्टाःस्वदारनिरताश्च ये। वीतरागभयक्रोधास्तान्भक्तान्विद्धिवैष्णवान्
एवंविधैर्गुणैर्युक्ताःपञ्चायुधधरा अपि। पित्रा चाऽऽचार्यरूपेणशिष्येनाऽन्येन वा पुनः
स्वगृह्योक्तविधानेन वह्निमादाय वै बुधः। चक्राद्यायुधमन्त्रेणजुहुयात्षोडशाहुतीः
मूलमन्त्रेण सूक्तेन पौरुषेण ततः परम्। जातवेदः सुमन्त्रेणपश्चादष्टोत्तरं शतम् ॥
हुत्वा महाव्याहृतिभिश्चक्रादींस्तत्रतापयेत्। सह्यान्सुतप्तान्गुरुणामन्त्रवद्धारयेद्बुधः
भुजद्वये शङ्खचक्रे मूर्ध्नि शार्ङ्गशरौ तथा। ललाटे तु गदा धार्या हृदये खड्गमेव च
एवं धार्याणि पञ्चैव विष्णुभक्तैर्मुमुक्षुभिः। अथवा भुजयोश्चक्रशङ्खौचैव सुलक्षणौ
एवंलाञ्छनयुक्ता ये भक्तास्तेवैष्णवाःस्मृताः। तैरेवलभ्यंतद्ब्रह्म सदाचारसमन्वितैः

तस्मिन्नेव मम प्रीतिस्तत्प्राप्तिं वाञ्छते (काङ्क्षते) मनः।
मातर्विष्णुं विनाऽन्येषु वाञ्छा काचिन्न जायते ॥ ६७ ॥
स्मरामि श्यामलं विष्णुं वदामि हरिमच्युतम्।
तेनैव मातर्जीवामि तद्योगे चिन्त्यतां विधिः ॥ ६८ ॥

श्रीवराह उवाच

इत्युक्त्वा मातरं दीना विररामाऽम्बुजानना।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तच्छ्रुत्वा चिन्तयामास विष्णुः प्रीतः कथम्भवेत् ॥ ६६ ॥

एतस्मिन्नन्तरे कन्या अगस्त्येशं समर्च्यच । आगताधरणीं द्रष्टुं सहैव बकुलस्रजा

आगतान्ब्राह्मणान्साऽथ पूजयित्वा सुभोजनैः ।

दत्त्वाऽथ दक्षिणाः पूर्णा वस्त्रालङ्कारसंयुताः ॥ ७१ ॥

आशिषो वाचयित्वाऽथ वाञ्छितार्थस्य सिद्धये ।

विसृज्य ब्राह्मणान्सर्वानथाऽपृच्छत्स्वयोषितः ॥ ७२ ॥

पूजयित्वा ह्यगस्त्येशमागतास्ता मनस्विनीः ॥ ७३ ॥

इति स्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्येधरणीवाराहसम्वादेबकुलमालिकांप्रतिसखीविनिवेदित-पद्मावत्युदन्तविष्णुभक्तलक्षणादिवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः

धरणीदेव्यैबकुलमालिकानिवेदितश्रीनिवासोदन्तवर्णनम्

धरण्युवाच

कैषा ब्रूत वरा कन्या युष्माभिः सङ्गता कुतः । किमर्थमागताचेह पूज्यैषाप्रतिभातिमे

कन्यका ऊचुः

एषा दिव्याङ्गना देवी त्वयि कार्यार्थमागता । देवालयेसङ्गतेयमस्माभिःशिवसन्निधौ

पृष्टाऽवदच्च भवतीं द्रष्टुमेवाऽऽगतेति वै । शक्ता द्रष्टुं राजगृहे मया राज्ञी सुखेन वा॥

एवं पृष्टास्ततो ब्रूमः सहाऽस्माभिश्च गम्यताम् ।

वयं तु धरणीदास्यो गमिष्यामो नृपालयम् ॥ ४ ॥

इत्युक्ताऽस्माभिरायाता त्वत्समीपं वसुन्धरे !।

भवत्या पृच्छ्यतामेषा किमित्याऽऽगमनं तव ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीवाराह उवाच

इति तासां वचः श्रुत्वा तामपृच्छद्वसुन्धरा ॥ ६ ॥

धरण्युवाच

कुतस्त्वमागतादेवि! किं वा कार्यंमयातव । ब्रूहिसत्यंकरिष्यामित्वदागमनकारणम्

बकुलमालिकोवाच

वेङ्कटाद्रेः समायाता नाम्ना बकुलमालिका ॥ ८ ॥

स्वामी नारायणोऽस्माकमास्तेश्रीवेङ्कटाचले । कदाचिद्धयमारुह्यहंसशुक्लंमनोजवम्

मृगयार्थं गतो राज्ञो वेङ्कटाद्रेः समीपतः । वनानि विचरन्काले शोभने कुसुमाकरे ॥

पश्यन्मृगान्गजान्सिंहान्गवयाञ्छरभान्रुरून् ।

शुकान्पारावतान्हंसान्पत्रिणोऽन्यान्वनान्तरे ॥ ११ ॥

गजराजं तत्र कश्चिद्यूथपं मदवर्षिणम् । करेणुसहितं तुङ्गमन्वगच्छत्सुरोत्तमः ॥१२॥

वनाद्वनान्तरं गत्वा नृपं शङ्खमुपागमत् । तपस्यन्तं बृहच्छैले प्रतिष्ठाप्य जनार्दनम् ॥

श्रीभूमिसहितं नित्यमर्चयन्तं च भक्तितः । शङ्खनागविलन्नाम सरः पावनमुत्तमम्

तत्सरस्तीरमासाद्य तुरङ्गादवरुह्य च । राजवेषं समासाद्य तमपृच्छन्नृपोत्तमम् ॥१५॥

क्रियते किं नृपश्रेष्ठ ! पादेऽस्मिञ्छेषभूभृतः ॥ १६ ॥

शङ्ख उवाच

अहं हैहयदेशीयःपुत्रः श्वेतस्य भूभृतः । महाविष्णोः प्रीतयेऽत्र कृतवानखिलान्क्रतून्

अनर्शनान्महाविष्णोर्निर्विण्णोऽहं नृपात्मज !।

तदानीमवदद्दिव्या वाणी सर्वार्त्तिनाशिनी ॥ १८ ॥

राजन्नाऽत्र भविष्यामि प्रत्यक्षस्ते वचः शृणु ।

गच्छ नारायणाद्रिं त्वं तपः कुर्विति मां स्फुटम् ॥ १९ ॥

ततो देशमहं त्यक्त्वा तपसाऽऽराधयाम्यहम् ।

अत्र देवं नृपाऽचिन्त्यं प्रतिष्ठाप्य श्रियः पतिम् ॥ २० ॥

अगस्त्यानुग्रहान्नित्यमर्चयामिविधानतः । इतितस्य वचःश्रुत्वासोत्प्रासंप्राहतंविभुम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गच्छ नारायणाद्रिंत्वमस्यपादेकिमास्यते । आरुह्याऽनेनमार्गेणपश्चिमेशिखरेस्थितम्

प्रणम्य विष्वक्सेनं त्वं बालं न्यग्रोधमूलतः ।

स्वामिपुष्करिणीं गत्वा स्नात्वा तीरेऽथ पश्चिमे ॥ २३ ॥

अश्वत्थं तत्र वल्मीकं द्रक्ष्यसे नृपनन्दन !। तयोर्मध्यंसमासाद्य तपः कुर्वित्यचोदयत्

कश्चिच्छ्वेतो वराहोऽस्मिन्वल्मीके चरति ध्रुवम् । सतुपुण्यवतामेवदर्शनंयातिभूपते

श्रीवाराह उवाच

इत्यादिश्य हयारूढो जगाम मृगयाम्वभुः । चरन्वनाद्वनंसुभ्रूः समासाद्यारणींनदीम्

अवरुह्य हयात्तत्र विचचार तटे शुभे । वनान्तादागतो वायुः पद्मकह्लारशीतलः ॥

श्रमापनयनो मन्दं सिषेवे पुरुषोत्तमम् ॥ २७ ॥

तरवः पुष्पवर्षाणि विकिरन्तः सिषेविरे । एवं स विचरन्देवः पुष्पभारानतांस्तरून्

विचिन्वन्गजराजन्तं पुष्पलावीर्ददर्श ह । कन्याः सुवेशा रुचिरा मेघेष्विव शतह्रदाः

तासां मध्यगतां तन्वीं ददर्शाऽतिमनोहराम् ।

लक्ष्मीसमां हेमवर्णां तस्यां सक्तमना अभूत् ॥ ३० ॥

तां गृध्नुराह ताःकन्याःकेयमित्येवपूरुषः । उक्तस्तामिरियं कन्या वियद्राज्ञोमहाबल

इदं श्रुत्वा वचस्तासां हयमारुह्य वेगवान् ।

आजगामाऽऽशु भगवान्स्वालयं रुचिरं गिरिम् ॥ ३२ ॥

तत्र स्वालयमासाद्य स्वामिपुष्करिणीतटे । मामाहूयाऽवदद्देवो हलावकुलमालिके॥

वियद्राजपुरङ्गत्वाप्रविश्याऽन्तःपुरं सखि । तत्पत्नीं धरणीम्प्राप्य पृष्ट्वा कुशलमेव च

याचस्वतनयांतस्यारुचिराङ्कमलालयाम् । राज्ञोऽभिमतमाज्ञायशीघ्रमागच्छभामिनि!

इत्थं देवेन चाज्ञप्ता देवित्वद्गृहमागता । यथोचितं कुरुष्वेह राज्ञा मन्त्रियुतेन च ॥

कन्यया च विचार्यैव प्रोच्यतामुत्तरम्वचः ॥ ३७ ॥

श्रीवराह उवाच

अथ तस्या वचःश्रुत्वाप्रीता राज्ञी बभूवह । आहूयाऽऽकाशराजंतमुपेत्यकमलालयाम्

मन्त्रिमध्येऽवदद्देवीवचनंस्वकुलस्रजः । श्रुत्वा प्रीतोऽवदद्राजामन्त्रिणःसपुरोहितान्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकाशराज उवाच

कन्या त्वयोनिजा दिव्या सुभगा कमलालया । अर्थिता देवदेनेनवेङ्कटाद्रिनिवासिना

पूर्णोमनोरथोमेऽद्य ब्रूत किं सम्मतं तु वः । श्रुत्वा मन्त्रिगणाःसर्वेराज्ञोवचनमुत्तमम्

प्रोचुः सुप्रीतमनसो वियद्राजं महीपतिम् ।

वयं कृतार्था राजेन्द्र ! कुलं सर्वोन्नतम्भवेत् ॥ ४२ ॥

भवत्कन्येयमतुला श्रिया सह रमिष्यति । दीयतां देवदेवाय शार्ङ्गिणे परमात्मने ॥

अयं वसन्तः श्रीमांश्च शुभं शीघ्रं विधीयताम् ॥ ४४ ॥

आहूय धिषणं लग्नं विवाहार्थं विधीयताम् ॥ ४५ ॥

तथाऽस्त्वित्याह्वयामाससुरलोकाद्बृहस्पतिम् । पप्रच्छकन्यावरयोर्विवाहार्थंनरेश्वरः

राजोवाच

कन्याया जन्मनक्षत्रं मृगशीर्षमितिस्मृतम् । देवस्यश्रवणर्क्षन्तुतयोर्योगोविचार्यताम्

श्रुत्वाऽब्रवीत्सधिषणस्तयोरुत्तरफल्गुनी । सम्मतासुखवृद्ध्यर्थंप्रोच्यतेदैवचिन्तकैः

तयोरुत्तरफल्गुन्यां विवाहः क्रियतामिति ।

वैशाखमासे विधिवत्क्रियतामिति सोऽब्रवीत् ॥ ४६ ॥

श्रीवराह उवाच

राजा तु धिषणं तत्र सम्पूज्याऽथ विसृज्य च । देवस्यदूतिकामाहगच्छदेवालयंशुभे

वैशाखे देवदेवाय कल्याणं वद्सुव्रते । वैवाहिकविधानं तु कृत्वा चाऽऽगम्यतामिति

ततो देव्याःप्रियकरंशुकं दूतं तया सह । विसृज्य वायुंस्वसुतमिन्द्राद्यानयनेऽसृजत्

आहूय विश्वकर्माणं पुरालङ्कारकर्मणि । नियोजयामास सोऽपिनिर्ममेनिमिषान्तरात्

इन्द्रोऽसृजत्पुष्पवृष्टिं ननृतुश्चाप्सरोगणाः । धनदो धनधान्याद्यैः पूरयामास वेश्मतत्

यमस्तु रोगरहितांश्चकार मनुजान्भुवि । वरुणो रत्नजालानि मौक्तिकादीन्यपूरयत्

एवं सम्पाद्य सर्वाणि ययुर्देवा वृषाचलम् ॥ ५६ ॥

श्रीवराह उवाच

ततः सा हयमारुह्य शुकेन सहिता ययौ । श्रीवेङ्कटाद्रिमासाद्यदेवालयसमीपतः ॥ ५७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवरुह्य तुरङ्गात्सा सशुकाऽभ्यन्तरं ययौ । दृष्ट्वा देवं रत्नपीठे श्रिया सह सुलोचनम्
प्रणम्य ह्यवदत्प्रीता कृत्यं तत्र कृतं विभो । माङ्गल्यवार्तां वक्तुं वै शुक एव समागतः

वदेति देवेनाऽऽज्ञप्तः शुको नत्वा तमब्रवीत् ।

शुक उवाच

त्वां प्रत्याह सुता भूमेर्मामङ्गीकुरु माधव !॥ ६० ॥

वदामि तव नामानि स्मरामि त्वद्वपुस्सदा । ध्रियन्ते तवचिह्नानिभुजाद्यङ्गे रमापते
त्वद्भक्तानर्चयामीह पञ्चसंस्कारसंयुतान् । त्वत्प्रीतये हि कर्माणि करोमि मधुसूदन
एवं सदैवाचरन्त्याः पित्रोरनुमते मम । कुरु प्रसादं देवेश मामङ्गीकुरु माधव ॥ ६३
इति विज्ञापयामास कमलस्था धरासुता । शुकस्य वचनं श्रुत्वासुप्रियंत्वात्मनोहरिः

श्रीभगवानुवाच

कर्तुं कल्याणमुद्वाहमागमिष्यामि चाऽमरैः । शुकगच्छवदैवंतामित्थंदेवोऽब्रवीदिति
शुकः श्रुत्वा देववाक्यमादाय वनमालिकाम् । देवदत्तांययौ शीघ्रं वियद्राजसुतां प्रति
तुलसीमालिकांदत्त्वामृगनाभिसुगन्धिनीम् । प्रणम्यदेवीमवदच्छुकोदेववचः शुभम्
श्रुत्वा तन्मालिकांगृह्यभूमिजाशिरसादधौ । चक्रेऽलङ्कारमुचितंदेवागमनकाङ्क्षिणी
वियद्राजोऽपि सानन्दमिन्दुमाहूय सादरम् । अन्नंविधीयतांराजन्विविधंरससंयुतम्

विष्णोर्नैवेद्ययोग्यं यत्परमान्नं विधीयताम् ।

देवानाञ्च ऋषीणाञ्च नराणामपि सम्मतम् ॥ ७० ॥

चतुर्विधं सुगन्धाढ्यममृतांशैः सुधाकर !।

एवं कृत्वासन्विधानं प्रतीक्ष्याऽऽगमनं विभोः ॥ ७१ ॥

सभायां मन्त्रिसहितःसमास्तप्रीतमानसः । पुत्रीमलङ्कृतां कृत्वा धरणीसहितोनृपः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकादशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे धरणीदेव्यैवकुमालिका-
निवेदितश्रीनिवासोदन्तकमलालयाकल्याणविध्यादि
वृत्तान्तवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टमोऽध्यायः

श्रीनिवासस्यलक्ष्म्यादिकृतपरिणयालङ्कारवर्णनम्

श्रीवराह उवाच

ततोदेवाधिदेवोऽपिलक्ष्मीमाहूयभामिनीम् । किंकार्यंवदकल्याणिविवाहार्थंसुलोचने
आज्ञापयस्व स्वसखी रमे कार्यं कुरु प्रियम् ।
श्रीस्तु कृष्णवचः श्रुत्वा सखीराहूय चोदयत् ॥ २ ॥
श्रियाऽऽज्ञप्तातततःप्रीतिःसुगन्धंतैलमाददौ । श्रुतिःक्षौमंसमादायतस्थौदेवस्यसन्निधौ
भूषणानि समादाय स्मृतिरप्यायर्यौ मुदा । धृतिरादर्शमाधत्त शान्तिर्मृगमदं दधौ
यक्षकर्दममादाय ह्रीः स्थिता पुरतो हरेः । कीर्तिः कनकपट्टं च सरत्नं मुकुटं दधौ
छत्रं दधौ तदेन्द्राणी चामरं तु सरस्वती । द्वितीयं चामरं गौरी व्यजनेविजयाजये
आगतास्ताः समालोक्यश्रीरुत्थायाऽथसत्वरा । सुगन्धंतैलमादायदेवमभ्यज्यशीर्षतः
उद्वर्तितं गन्धचूर्णैर्देवाङ्गं परिमृज्य च ।
आनीतान्करिभिस्तोयकलशान्काञ्चनाञ्छतम् ॥ ८ ॥
वियद्गङ्गादितीर्थेभ्यः कर्पूरादिसुवासितान् ।
एकमेकं समादाय त्वभ्यषिञ्चद्रमा हरिम् ॥ ६ ॥
सन्धूप्य केशान्धूपेनतानाश्यामान्ववन्ध च । सुगन्धेनानुलिप्याङ्गंस्वर्णवर्णेनतद्विभोः
पीतकौशेयकंवद्ध्वाकट्यांकाञ्चीसमन्वितम् । मुकुटादिविभूषाभिर्भूषयामास चेन्दिरा
अङ्गुलीयकरत्नानि सर्वास्वेवाऽङ्गुलीषु च । आदर्शं दर्शयामास धृतिर्देवस्य सन्निधौ
दृष्ट्वाऽऽदर्शंदेवदेवोह्यूर्ध्वपुण्ड्रं स्वयंदधौ । आरुह्यगरुडंपश्चात्स्वयं लक्ष्मीसमन्वितः
ब्रह्मेशवज्रिवरुणयमयक्षेशसेवितः । वसिष्ठाद्यैर्मुनीन्द्रैश्च सनकाद्यैश्च योगिभिः ॥ १४
भक्तैर्भागवतैर्युक्तो नारायणपुरीं ययौ । जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाऽप्सरोगणाः ॥१५
देवदुन्दुभयो नेदुस्तदा देवस्य सन्निधौ । जपन्तः स्वस्तिसूक्तानिमुनयस्तंसमन्वयुः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवो देवगणैर्युक्तो विष्वक्सेनादिपार्षदैः ।
सखीभिस्स्यन्दनस्थाभिर्वकुलाद्याभिरन्वितः ।
आकाशराजस्य पुरमाससाद स्वलङ्कृतम् ॥ १७ ॥
देवमागतमालोक्य कन्यामैरावतस्थिताम् । पुरीं प्रदक्षिणीकृत्य गोपुरद्वारमागताम्
आलोक्याऽऽकाशराजोऽपिसमानीयवधूवरौ । बन्धुभिःसहितस्तस्थौदेवमालोक्यकेशवम्
विष्णेर्मालां स्वकण्ठस्थां हस्तेनाऽऽदाय सस्मितः ।
कमलायाः स्कन्धदेशे मुमोच सुमनश्चिताम् ॥ २० ॥
आदाय मल्लिकामालां साऽस्य कण्ठेसमर्पयत् । एवं त्रिवारं तौकृत्वावाहनादवरुह्यच
स्थित्वा पीठे क्षणंपश्चाद्गृहं विविशतुः शुभम् । ब्रह्मादिदेवयूथैश्चसहितौभूमिजाहरी
माङ्गल्यसूत्रबन्धादि साङ्कुरार्पणमब्जजः । वैवाहिकं कारयित्वा लाजहोमान्तमेव च
व्रतादेशं समाज्ञाय सहितौ कमलाहरी । चतुर्थेदिवसे सर्वं समापद्य चतुर्मुखः ॥२४
अनुज्ञाप्य वियद्राजमारोप्य गरुडे हरिम् । देवीभ्यां सहितं देवं देवैर्गन्तुं प्रचक्रमे
दिव्यदुन्दुभिनिर्घोषैः सम्प्राप्य वृषभाचलम् । तुष्टुवुर्देवदेवेशं ब्रह्माद्या देवतागणाः ॥
शुकादयो मुनिगणास्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ।
स्तूयमानोऽथ देवोऽपि विवेश मणिमण्डपम् ॥ २७ ॥
रमाधरणिजाभ्यां च तत्र सिंहासनं ययौ ॥ २८ ॥
आकाशराजोऽपि तथा महेन्द्रादिसुरैः सह ।
पुत्रीविष्ण्वोः प्रियार्थं तु प्राभृतं कर्तुमुद्यतः ॥ २९ ॥
सौवर्णेषु कटाहेषु तण्डुलाञ्छालिसम्भवान् । मुद्गपात्राण्यनेकानि घृतकुम्भशतानि च
पयोघटसहस्राणि दधिभाण्डान्यनेकशः । दिव्यानि चूतकदलीनारिकेलफलानि च
धात्रीफलानि कूष्माण्डराजरम्भाफलानि च ।
पनसान्मातुलुङ्गांश्च शर्करापूरितान्घटान् ॥ ३२ ॥
सुवर्णमणिमुक्ताश्च क्षौमकोट्यम्बराणि च ।
दासीदाससहस्राणि कोटिशो गास्तथैव च ॥ ३३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मार्गं वद रमाधीश! गमिष्ये येन तां प्रति । एवमुक्तो रमाधीशस्तांप्राह बकुलस्त्रजम्

इतो गच्छ महाभागे ! श्रीनृसिंह गुहायतः ।

तन्मार्गेणाऽवतीर्याऽस्माद्द भूधरेन्द्रान्मनोरमात् ॥ ३८ ॥

अगस्त्याश्रममासाद्य दृष्ट्वा लिङ्गं तदर्चितम् । अगस्त्येश इतिख्यातं सुवर्णमुखरीतटे
तीरेणैव ततो गच्छ शुकब्रह्म ऋषेर्वनम् । पश्यन्ती स्वर्णमुखरींतत्रकल्लोलमालिनीम्
तत्र पद्म सरोनाम पावनं पद्मसंयुतम् । तत्र स्नात्वाऽथ तत्तीरे तपन्तं मुनिसत्तमम्
छायाशुकं नमस्कृत्य कृष्णं च बलसंयुतम् । आराध्यमानं मुनिनाशुकेन सततं शुभे
इन्द्रनीलमणिश्यामं पीतनिर्मलवाससम् । तीर्थयात्रां गमिष्यन्तंबलभद्रंसिताकृतिम्
उपासयन्तम्मन्त्राणि मुक्तान्वितकरद्वयम् । उद्यन्तम्पादुकायुक्तम्बलभद्रम्प्रणम्य च ॥
आदाय स्वर्णकमलं सरसोऽस्माद्वरानने । तीर्त्वा सुवर्णमुखरीं वनान्युपवनानि च ॥
अरणीतीरमासाद्य विश्रम्य च वनान्तरे । नारायणपुरीं दृष्ट्वा विस्मयं च गमिष्यसि

तस्याश्चोपवने वृक्षान्पुष्पाढ्यान्फलसंयुतान् ।

पनसाऽऽम्रशिरीषांश्च कुन्दतिन्दुकपाटलान् ॥ ४७ ॥

पुन्नागनागवरणरसालाङ्कोलचम्पकान् । बकुलामलकान्सालांस्तालहिन्तालपद्मकान्
जम्बूनिम्बकदम्बैलापिप्पलीमधुकार्जुनान् । प्रियङ्गुहिङ्गुखर्जूरमायूराशोकलोध्रकान् ॥
अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षबदरीभूर्जकीचकान् । चिञ्चाकिंशुकमन्दारशाल्मलीबीजपूरकान् ॥
पूगनारङ्गलिकुचनारिकेलवनाकुलान् । मल्लिकामालतीकुन्दयूथिकाकेतकीयुतान् ॥
करवीराब्जसम्पन्नान्राजरम्भाविराजितान् । मयूरकीरगरुडशुकसारससङ्कुलान् ॥५२॥
भृङ्गभ्ङ्कारनिविडानारामान्सुमनोहरान् । पश्यन्ती परमं हर्षमवाप्य च नदीतटे ॥
गत्वा पूर्वोत्तरे मार्गे पुरीमिन्द्रपुरीसमाम् । गङ्गयेवाऽऽवृतांनित्यं सरितारणिनामया

आकाशराजनगरीं गत्वा तत्रोचितं कुरु ॥ ५५ ॥

श्रीवराह उवाच

इत्यादिश्य सुराधीशः सखीं तां बकुलाभिधाम् ।

विसृज्य शयने शुभ्रे स शिश्ये श्रीसमन्वितः ॥ ५६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभगवानुवाच

पुरा त्रेतायुगे पुण्ये रावणं हतवानहम् । तदा वेदवती कन्या साहाय्यमकरोच्छ्रियः
सीतारूपाऽभवल्लक्ष्मीर्जनकस्य महीतलात् । गते मयि तु मारीचं हन्तुं पञ्चवटीवने ॥
ममानुजोऽपिमामेवसीतया चोदितोऽन्वयात् । तदन्तरेराक्षसेन्द्रोहर्तुं सीतामुपाययौ
अग्निहोत्रगतो वह्निस्तं ज्ञात्वा रावणोद्यमम् ।
आदाय सीतां पाताले स्वाहायां सन्निवेश्य च ॥ २१ ॥
तेनैव रक्षसा स्पृष्टां पुरा वेदवतीं शुभाम् । अग्नौ विसृष्टदेहां तां संहर्तुं रावणं पुनः
सीताया रूपसदृशीं कृत्वा चैवोत्ससर्ज ह । सा रावणहृताभूत्वालङ्कायांचनिवेशिता
हते तु रावणे पश्चात्पुनरग्निंविवेशसा । अग्निस्तुरक्षितांलक्ष्मींस्वाहायांममजानकीम्
दत्त्वा हस्ते च मामाह सीतया सहितां सखीम् ।
इयं वेदवती देव सीतायाः प्रियकारिणी ॥ २५ ॥
सीतार्थं राक्षसपुरे तेन बन्दीकृता स्थिता । तस्मादेनां वरेणैव प्रीणय त्वं श्रिया सह
इति वह्निवचः श्रुत्वा सीता मामवदच्छुभा । मम प्रीतिकरीनित्यमियंवेदवतीविभो!
तस्मात्परां भागवतीं देवैनां वरय प्रभो !॥ २८ ॥

श्रीभगवानुवाच

तथा देवि करिष्यामि ह्यष्टाविंशे कलौ युगे । तावदेषा ब्रह्मलोके वसत्वमरपूजिता
पश्चात्तु भूमितनया भविष्यति वियत्सुता । इति दत्तवरा पूर्वं मया लक्ष्म्याचसुन्दरी
अद्य नारायणपुरे सम्भूता धरणीतलात् । पद्मासमा पद्मनेत्री पद्मा दत्तवरा सती॥३१
सखीभिरनुरूपाभिर्वने पुष्पाणि चिन्वती । मृगयामटता तत्र मया दृष्टा मनोरमा ॥
तस्यारूपं मया वक्तुं न शक्यं शतहायनैः । लक्ष्म्येव च तयामेऽद्यसङ्गमोभवितायदि
प्राणाः स्थिरा भविष्यन्ति सत्यमित्यवधारय ॥ ३४ ॥
त्वं तत्र गत्वातांकन्यांदृष्ट्वावकुलमालिके । जानीहिरूपलावण्यादियंयोग्येतिचास्य वै
अनवद्या विशालाक्षी पद्मेन्दीवरलोचना ॥ ३५ ॥
इत्युक्त्वामोहमापन्नं तं प्राह वकुला पुनः । इतो गच्छामि देवेश! मनोज्ञा तव यत्र सा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चमोऽध्यायः

पद्मावतीदर्शनेनश्रीनिवासस्यमोहप्राप्तिः

श्रीवराह उवाच

सम्प्राप्यंचालयदिव्यमवतीर्यहयोत्तमात्। विसृज्यसोऽनुगान्सर्वान्देवान्कैरातरूपकान्
विश्रमध्वमिति प्रोच्यविवेशमणिमण्डपम् । आरुह्य मणिसोपानंपञ्चकक्षाअतीत्य च
मुक्तागृहं समासाद्य तस्मिँल्लोलायिते शुभे । नवरत्नमये मञ्चे सम्विवेशावशो हरिः
संस्मरन्पद्मगर्भाभांतामेवायतलोचनाम् । तनुमध्यांपीनकुचांमन्दस्मितमुखाम्बुजाम्
क्षीराब्धितनयामेव मेने पद्मोद्भवां शुभाम् ।
तस्यां गतमना देवः श्रीनिवासो मुमोह च ॥ ५ ॥

ततो मध्याह्नसमये कृत्वान्नं दिव्यमुत्तमम् । सूपदंशं सुगन्धं च देवार्हमतिशोभनम्
शुद्धान्नं पायसान्नं च गौडं मुद्गान्नमेव च । कृत्वा पञ्चविधापूपान्पूरिकावटकानपि ॥
देवं द्रष्टुं ययौ शीघ्रं सखी वकुलमालिका । पद्मावती पद्मपत्रा चित्ररेखासमन्विता
निवेश्य द्वारि देवस्यताः सर्वाः प्रमदोत्तमाः । विवेशतत्समीपंसास्वयंवकुलमालिका
गत्वा समीपं देवस्य ववन्दे भक्तिभावतः । दृष्ट्वाऽथ देवं विवशं पर्यङ्के रत्नभूषिते ॥
पादसंवाहनं कृत्वा निमीलितविलोचनम् । तंध्यायन्तंचकिमपिव्याजहारशुचिस्मिता
उत्तिष्ठ देवदेवेश किं शेषे पुरुषोत्तम !। परमान्नं कृतं देव ! भोक्तुमागच्छ माधव !॥
किं वा त्वमार्तवच्छेषे सर्वलोकार्तिनाशन । मृगयामटता देव किं दृष्टं भवता वने ॥
अवस्थाते विशालाक्ष! कामुकस्येवदृश्यते । कादृष्टादेवकन्यावामानुषीवाऽहिकन्यका
ब्रूहि मे त्वमचिन्त्यात्मन्कन्यां तां चित्तहारिणीम् ॥ १५ ॥

श्रीवराह उवाच

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा निःश्वासमकरोद्विभुः । निःश्वसन्तंपुनःप्राहप्रीतावकुलमालिका
एवं मनोहरा का सा तवापि पुरुषोत्तम !। तामवोचद्धृषीकेशोवक्ष्यामि श्रृणु तत्त्वतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किमर्थमागतोऽस्माकं वनम्वरधनुर्धरः । अत्रावध्या मृगाः सर्वे वर्तमाना निषादप !॥
आशु गच्छ वनादस्मादाकाशनृपपालितात् । इति तासाम्वचःश्रुत्वाहयादवरुरोहसः
कास्तु यूयमियश्चापि कन्यकाम्बुजसन्निभा । सुभगाचारुसर्वाङ्गीपीनोन्नतपयोधरा
ब्रूत मेऽहं गमिष्यामि श्रुत्वा स्वस्याऽऽलयङ्गिरिम् ॥ ४३ ॥
इति तस्या वचः श्रुत्वाधरण्यात्मजयेरिता । सखीपद्मावतीप्राह निषादम्पर्वतालयम्
आकाशराजतनया वसुधातलसम्भवा । अस्माकं नायिका शूर! पद्मिनीनाम नामतः ॥
ब्रूहि त्वं सुभगाकार ! किन्नामा कस्य वा सुतः ।
जातिः का कुत्र ते वासः किमर्थन्त्वमिहाऽऽगतः ॥
इति पृष्टः स ताः प्राह मन्दस्मितमुखाम्बुजः ॥ ४६ ॥
दिवाकरकुलम्प्राहुरस्माकन्तुपुराविदः । तस्य नामान्यनन्वाति पावनानिमनीषिणाम्
वर्णतो नामतश्चापि कृष्णं प्राहुतपस्विनः । ब्रह्मद्विषां सुरारीणांयस्यचक्रंभयावहम्
यस्यशङ्खध्वनिं श्रुत्वामोहमीयुर्हि वैरिणः । यस्य वै धनुषस्तुल्यं धनुर्नैवाऽमरेष्वपि
तं मां वीरपतिं प्राहुर्वेङ्कटाद्रिनिवासिनम् । तस्मादद्रितटात्सोऽहं निषादैरनुगैर्वृतः ॥
मृगयार्थं हयारूढो युष्माकं वनमागतः । मयाऽप्यनुद्रुतः कश्चिन्मृगो वायुगतिर्ययौ
तमदृष्ट्वावनं पश्यन्दृष्टवान्सुभगामिमाम् । कामादिहागतोऽहंवोमयाकिंलभ्यतेत्वियम्
इति कृष्णवचः श्रुत्वाक्रुद्धास्ताःपुनरब्रुवन् । आकाशराजोदृष्ट्वात्वांकृत्वानिगडबन्धनम्
यावन्नयति तावत्त्वं गच्छ शीघ्रं स्वमालयम् ॥ ५२ ॥
तर्जितस्ताभिरेवं स हयमारुह्यशीघ्रगम् । युक्तः स्वानुचरैः सर्वैर्ययौ द्रुततरं गिरिम्
इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवेङ्कटाचलमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे उद्यानवासिन्याः पद्मावत्याःसमीपे
नारदगमनश्रीनिवासमृगयादिवर्णनंनामचतुर्थोऽध्याः ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

* श्रीगणेशायनमः *

स्कन्दपुराणस्थ चतुर्थ काशीखण्ड के विषय में

सिद्धि बुद्धि सहित श्री गणनाथकी परम कृपा से गुरुमण्डलग्रन्थमाला के बीसवें पुष्प स्कन्दपुराण का चतुर्थ खण्ड "काशीखण्ड" सहृदय पुराणप्रेमी विद्वद्वर्ग की सेवा में प्रस्तुत है। काशीकी विशेष विलक्षणता यही है कि यह सिद्धस्थान भगवान् विश्वनाथ एवं भगवती अन्नपूर्णा का महत्त्व मण्डित क्षेत्र है जहां सभी तीर्थों का अवगाहन सरलता से मिलता है। आज भी काशी की गरिमा उसके शिवानुग्रहत्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

गङ्गा विश्वेश्वरः काशी जागर्ति त्रितयं यतः।
तत्र नैःश्रेयसीर्लक्ष्मीर्लभ्यते चित्रमत्र किम्॥

स्कन्द पु० काशीखण्ड ३५ अ० श्लो० १०]

जहां गङ्गा, विश्वेश्वर और अन्नपूर्णाक्षेत्र काशीमें तीनोंका सन्निधान है वहां नैश्रेयसी लक्ष्मी पारमार्थिक सिद्धि प्राप्त होती है इसमें आश्चर्य ही क्या है। जीवन को पतन से बचाकर चित्तको भगवदाकार वृत्ति कर उसे सतत विश्वहित में लगाना ही अपनी ओर से वास्तविक भगवदाज्ञा पालन मनुष्य का परमकर्तव्यहै :—

"तस्माच्चेतो विशुद्ध्यर्थं काशीनाथं समाश्रयेत्।
तदाश्रयेण नियतं सङ्क्षीयन्ते मनोमलाः॥"

काशीखण्ड सदाचारप्र० अ० ३४ श्लो० १४४]

चित्तकी शुद्धि के लिये काशीविश्वनाथ का आश्रयलिया जाय, उनकी शरण में जाने से निश्चय ही मनके मल नष्ट ही होते हैं। अस्तु,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस प्रस्तुत खण्ड की आदर्शप्रति नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित स्कन्दपुराण का "काशीखण्ड" है। नारदपुराण के पूर्वभागस्थ बृहदुपाख्यान के चतुर्थ पादकी १०४ अध्याय में वर्णित "काशीखण्ड" की विषयानुक्रमणिका सेवा में प्रस्तुत है।

इसके अनन्तर चतुर्थ अनुत्तम, सर्वातिश्रेष्ठ, काशीखण्ड है उसमें वर्ण्य विषयों की अनुक्रमणिका यह है इस में सर्व प्रथम विन्ध्य और नारद का सम्वाद वर्णित है।

सत्यलोक का प्रभाव तथा अगस्त्य के आश्रम में देवगण का समागम, पतिव्रता का चरित्र एवं तीर्थ चर्चा की प्रशंसा कही गई है। आगे सप्तपुरी की आख्या संयमिनीका निरूपण शिवशर्मा की सूर्य, इन्द्र और अग्निलोक की प्राप्ति। अग्निका आविर्भाव क्रव्य से वरुण की उत्पत्ति गन्धवती अलकापुरी और ईश्वरी का उद्भव, चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक, बुधलोक, मंगल लोक, सूर्यलोक भूर्लोका तथा सप्तर्षि, ध्रुवलोक तथा तपोलोक का वर्णन। ध्रुवलोक की पुण्यकथा,

---

चतुर्थे काशीखण्डे—

"अतः परंचतुर्थन्तुकाशीखण्डमनुत्तमम्। विन्ध्यनारदयोर्यत्र सम्वादःपरिकीर्त्तितः
सत्यलोकप्रभावश्चागस्त्यावासेसुरागमः। प्रतिव्रताचरित्रश्च तीर्थचर्याप्रशंसनम्

ततश्च सप्त पूर्याख्या संयमिन्या निरूपणम्।
ब्रध्नस्य च तथेन्द्राग्न्योर्लोकाप्तिः शिवशर्मणः॥

अग्नेः समुद्भवश्चैव क्रव्याद्वरुणसम्भवः। गन्धवत्यलकापुर्य्योरीश्वर्य्याश्च समुद्भवः॥

चन्द्रोडुबुधलोकानां कुजेज्यार्कभुवां क्रमात्।
सप्तर्षीणां ध्रुवस्यापि तपोलोकस्य वर्णनम्॥
ध्रुवलोककथा पुण्या सत्यलोकनिरीक्षणम्।
स्कन्दागस्त्यसमालापो मणिकर्णीसमुद्भवः॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सत्यलोक का निरीक्षण स्कन्द स्वामी (कार्तिकेय) और अगस्त्य का वार्तालाप मणिकर्णिका की समुत्पत्ति, गङ्गा का प्रभाव एवं गङ्गा का सहस्र नाम (हजार नाम) फिर वाराणसी की प्रशंसा एवं भैरव का आविर्भाव है। आगे दण्डपाणि एवं ज्ञानवापी का उद्भव तब कलावती का आख्यान तथा सदाचार का निरूपण आगे ब्रह्मचारी का आख्यान फिर स्त्रीके लक्षण कृत्य और अकृत्य का निरूपण है। अविमुक्तेश्वरका वर्णन, गृहस्थ और योगिलोगों के धर्मकेअनन्तर काल ज्ञान का प्रतिपादन है।

दिवोदास राजा की पुण्य कथा एवं काशीका वर्णन, योगीचर्चा, लोलार्क के बाद साम्बार्क की कथा, द्रुपदार्क, तार्क्ष्यार्क अरुणार्क का उदय दशाश्वमेध तीर्थ का वर्णन मन्दराचल से गणों का समागमन। पिशाचमोचनाख्यान के बाद गणेश का प्रेषण (भिजवाना) पृथ्वी में माया गणपति का प्रादुर्भाव, विष्णुमाया का प्रपञ्च और दिवोदास का मोक्ष। आगे पञ्चनदोत्पत्ति और बिन्दुमाधव का आविर्भाव फिर वैष्णव तीर्थ की आख्या शङ्कर भगवान् का काशीमें समागमन, जैगीषव्य मुनि के साथ सम्वाद। महेश का ज्येष्ठेशाख्यान और क्षेत्राख्यान, कन्दुकेश व्याघ्रेश्वर का उद्भव शैलेश, रत्नेश और कृत्तिवास का आविर्भाव देवगण का अधिष्ठान। दुर्गासुर का पराक्रम (वीरता), दुर्गा की विजय और ओङ्कारेश का वर्णन है फिर ओङ्कार का माहात्म्य तथा त्रिलोचन समुद्भव वर्णन है।

प्रभावश्चापि गङ्गाया गङ्गानामसहस्रकम्। वाराणसीप्रशंसा च भैरवाविर्भवस्ततः
दण्डपाणीज्ञानवाप्योरुद्भवः समनन्तरम्। ततःकलावत्याख्यानं सदाचारनिरूपणम्
ब्रह्मचारिसमाख्यानं ततः स्त्रीलक्षणानिच। कृत्याकृत्यविनिर्द्देशोह्यविमुक्तेशवर्णनम्
गृहस्थयोगिनोर्धर्म्माः कालज्ञानं ततःपरम्। दिवोदासकथापुण्या काशीवर्णनमेवच
योगिचर्चा च लोलार्कोत्तरसाम्बार्कजा कथा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

केदारेश्वर का आख्यान धर्मेशकथा विश्वभुजोद्भव कथा है। वीरेश्वर का समाख्यान तथा गङ्गामाहात्म्य का विशिष्ट वर्णन है।

विश्वकर्मेश की महिमा दक्षयज्ञ का उद्भव, सतीश और अमृतेशादि का वर्णन, पाराशर व्यासका भुजस्तम्भ। क्षेत्रतीर्थकदम्ब और मुक्तिमण्डप की कथा विश्वेश विभव तथा यात्रा का परिक्रमा प्रदक्षिणा का सविस्तर वर्णन है।

इस महान् ग्रन्थ का अविकल प्रकाशन दार्घकाल से प्रतीक्षित है इसमें भ्रम प्रमाद, अपाटवाकरणादि मानव सुलभ दोषजनित त्रुटियों से एवं सीसकाक्षर योजना में व्यापृत कर्मकारी कर्तृवृन्द द्वारा अशुद्धियां रह गई हैं उन्हें पाठक वृन्द सहज नैसर्गिक कृपालव परवश हो शोधन करें। शीघ्र ही ५म अवन्ती खण्ड हाथ में प्रकाशनार्थ लिया है आगे अब तक मुद्रित ग्रन्थ (स्कन्द पुराण) में सह्याद्रि खण्ड का निवेश का दुर्लभरहा है मैं भारतीय हस्तलिखित भाण्डागारोंसे

द्रुपदार्कस्य ताक्ष्याख्यारुणार्कस्योदयस्ततः ॥
दशाश्वमेधतीर्थाख्या मन्दराच्च गणागमः। पिशाचमोचनाख्यानं गणेशप्रेषणन्ततः ॥
मायागणपतेश्चाथभुविप्रादुर्भवस्ततः। विष्णुमायाप्रपञ्चोऽथदिवोदासविमोक्षणम्
ततः पञ्चनदोत्पत्तिर्बिन्दुमाधवसम्भवः। ततोवैष्णवतीर्थाख्याशूलिनःकाशिकागमः
जैगीषव्येण सम्वादो ज्येष्ठेशाख्यामहेशितुः।
क्षेत्राख्यानं कन्दुकेशव्याघ्रेश्वरसमुद्भवः ॥
शैलेशरत्नेश्वरयोः कृत्तिवासस्य चोद्भवः। देवतानामधिष्ठानं दुर्गासुरपराक्रमः ॥
दुर्गाया विजयश्चाथ ओङ्कारेशस्यवर्णनम्। पुनरोङ्कारमाहात्म्यं त्रिलोचनसमुद्भवः
केदाराख्या च धर्म्मेण कथा विश्वभुजोद्भवा।
वीरेश्वरसमाख्यानं गङ्गामाहात्म्यकीर्त्तनम् ॥
विश्वकर्म्मेशमहिमा दक्षयज्ञोद्भवस्तथा। सतीशस्यामृतेशादेर्भुजस्तम्भःपराशरेः
क्षेत्रतीर्थकदम्बश्च मुक्तिमण्डपसंकथा। विश्वेशविभवश्चाथ ततो यात्रा परिक्रमः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वत्र ही सह्याद्रि खण्ड के प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील हूँ। कृपापूर्वक पुराण रसिक विद्वान् हमें इस ओर मार्गदर्शन करें तो लगे हाथ उस विलुप्त भाग का पुनरुद्धार शक्य हो।

सदा की भांति गुरुमण्डल ग्रन्थमाला के सम्पादकद्वय हमारी प्राच्य शोध संस्था के अन्यतमकार्यरत श्रीब्रह्मदत्तत्रिवेदी व्याकरणाचार्य एम० ए० तथा श्रीरामनाथ मिश्र दाधीच पुराण साङ्ख्य स्मृति तीर्थ महानुभाव ने सपरिश्रम सम्पादन किया है। इनको पुराणानुसन्धान सुलभ मर्मज्ञ दृष्टि भगवती पराम्बा प्रदान करे और आप महानुभावों की कृपा से उत्तरोत्तर इस महान् उद्योग में आशातीत सफलता मिले यही एक मात्र हार्दिक कामना है।

पुनः पुनः सम्मान्य विद्वद्वर्ग से इस महती ज्ञान पिटक सामग्री का, सद्यः आप्यायन इन प्रकाशस्तम्भों की ज्योतिको सृष्टिके उत्थान के लिये सर्वत्र सर्वभूत हितरताः वन विश्वसद्भावना मैत्री और सत्ययुगीन पवित्र जीवन निर्वाह का मार्ग प्राणी मात्र के लिये प्रशस्त करने की करबद्ध प्रार्थना है।

इस विश्वविश्रुत पुराण के प्रकाशन में जो कुछ भूले हैं उनके लिये मैं दायी हूँ और जो अतीव सुन्दरतम विशिष्टरूप है वह आपलोगों की कृपा का फल है।

"कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।"

भवदीय

मनसुखराय मोर

५, क्लाइव रो,

कलकत्ता-१

शुभमिति कार्त्तिक कृष्णा

धनत्रयोदशी

२०१८विक्रमसम्वत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

* श्रीगणेशायनमः *

अथ स्कन्दपुराणान्तर्गतचतुर्थकाशीखण्डस्य विषयानुक्रमणिका

—:*:—

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
१	विन्ध्यवर्धनवर्णनम्	१
	विन्ध्येन नारदपूजनवर्णनम्	३
	विन्ध्यचिन्तनवर्णनम्	५
२	सत्यलोकवर्णनम्	६
	सूर्यगत्यवरोधवर्णनम्	७
	ब्रह्मणा देवसान्त्वनवर्णनम्	६
	पुराणप्रशंसनवर्णनम्	११
३	अगस्त्याश्रमवर्णनम्	१३
	अगस्त्याश्रमे पशूनां परस्परमवैरत्ववर्णनम्	१५
	काशिवासफलवर्णनम्	१७
४	पतिव्रताख्यानवर्णनम्	१६
	नारीदोषवर्णनम्	२१
	विधवाकर्तव्यवर्णनम्	२३
	बृहस्पतिना विन्ध्यवृद्धिनिषेधायप्रार्थनकरणम्	२५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५	अगस्त्यप्रस्थानवर्णनम्	२६
	काशीमाहात्म्यवर्णनम्	२७
	अगस्त्येनमहालक्ष्मीदर्शनम्	३१
	लक्ष्मीस्तोत्रमाहात्म्यवर्णनम्	३३
६	तीर्थाध्यायवर्णनम्	३४
	अगस्त्येनतीर्थवर्णनम्	३५
	तीर्थे पापप्रशमनवर्णनम्	३७
७	सप्तपुरीवर्णने शिवशर्मविप्रकथानकवर्णनम्	३६
	विप्रेण प्रयागगमनवर्णनम्	४१
	विप्रेण काशीगमनवर्णनम्	४३
	विप्रेण मायापुरीगमनम्	४५
८	यमलोकवर्णनम्	४७
	शिवशर्मधर्मराजसम्वादवर्णनम्	४६
	नरकवर्णनम्	५१
	यमेनाष्टमोत्तरशतनाममाहात्म्यवर्णनम्	५३
६	अप्सरःसूर्यलोकवर्णनम्	५४
	अप्सरसां कृत्यवर्णनम्	५५
	गायत्रीमहत्त्ववर्णनम्	५७
	सूर्यलोकवर्णनम्	५६
१०	इन्द्राग्निलोकवर्णनम्	६०
	अग्न्युपासनवर्णनम्	६१
	विश्वानराख्यानवर्णनम्	६३
	विश्वानरेणकाशीस्थलिङ्गमहिमवर्णनम्	६५
	विश्वानरकृताभिलाषाष्टकस्तोत्रवर्णनम्	६७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

११ वह्निलोकवर्णनेविश्वानरपुत्राख्यानवर्णनम् ६६
नारदेनमातापित्रोर्महत्त्ववर्णनम् ७१
शुचिस्मत्या पुत्रविषये चिन्ताकरणम् ७३
गृहपतिनाकाशीगमनवर्णनम् ७५
गृहपतिसमीपेशिवागमनवर्णनम् ७७
१२ निर्ऋतिवरुणलोकवर्णनेपिङ्गाक्षाख्यानवणनम् ७६
वरुणलोकनिवासप्रदकर्मवर्णनम् ८१
वरुणकथानकवर्णनम् ८३
१३ गन्धवत्यलकावर्णनम् ८५
अलकाधिपपूर्वभववृतान्तवणनम् ८७
दीक्षितेनपुत्रदुर्वृत्तश्रवणवर्णनम् ८६
यज्ञदत्तपुत्रानयनायशिवपार्षदागमनम् ६१
कुबेरायशिववरदानवर्णनम् ६३
१४ सोमलोकवर्णनम् ६५
चन्द्रेश्वरमाहात्म्यवर्णनम् ६७
१५ नक्षत्रबुधलोकयोर्वर्णनम् १००
बुधेश्वरमाहात्म्यवर्णनम् १०२
१६ शुक्रलोकवर्णनम् १०४
शुक्रेणमृतसञ्जीवनीविद्याप्राप्तिवर्णनम् १०५
अन्धकेनदैत्यप्रोत्साहनवर्णनम् १०७
शुक्रस्यवाराणस्यांतपश्चर्यावर्णनम् १०६
शुक्रोदयेशुभकार्यकरणवर्णनम् १११
१७ भौमगुरुशनिलोकवर्णनम् ११३
आङ्गिरसकृताशिवस्तुतिवर्णनम् ११५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१७ शनिलोकाख्यानवर्णनम् ११७
सञ्ज्ञाम्प्रतिसूर्योक्तिवर्णनम् ११६
१८ सप्तर्षिलोकवर्णनम् १२१
१६ ध्रुवलोकवर्णनेध्रुवोपदेशवर्णनम् १२३
सुनीत्याध्रुवम्प्रतिराज्यप्राप्त्युपायवर्णनम् १२५
ध्रुवस्यतपोवनगमनवर्णनम् १२७
ध्रुवम्प्रतिसप्तर्षिवाक्यवर्णनम् १२६
२० ध्रुवाख्यानेभगवद्दर्शनवर्णनम् १३१
इन्द्रेणध्रुवसमीपेभूतालिप्रेषणम् १३३
देवैर्ब्रह्मसमीपेध्रुवतपःप्रभाववर्णनम् १३४
२१ ध्रुवकृताभगवत्स्तुतिवर्णनम् १३७
ध्रुवस्तुतिफलवर्णनम् १४१
ध्रुवेश्वरमाहात्म्यवर्णनम् १४३
२२ ब्रह्मकृतकाशीप्रशंसावर्णनम् १४४
शिवशर्मणासत्यलोकगमनम् १४५
ब्रह्मणाप्रयागमहिमवर्णनम् १४७
वाराणसीपापकरणदोषवर्णनम् १४६
२३ लोकपरिस्थितिवर्णनम् १५१
गणाभ्यांमहेशकृताभिषेकवर्णनम् १५३
२४ शिवशर्मनिर्वाणप्रापणवर्णनम् १५५
शिवशर्मणोभाविजन्मवृत्तान्तवर्णनम् १५७
शिवशर्मणोनिर्वाणप्राप्तिवर्णनम् १५६
२५ स्कन्दागस्त्यदर्शनवर्णनम् १६०
अगस्त्यकृतास्कन्दस्तुतिवर्णनम् १६१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२५	स्कन्देनशिवकथितवाराणसीमाहात्म्यवर्णनम्	१६३
२६	मणिकर्णिकाख्यानवर्णनम्	१६५
	चक्रपुष्करिण्युत्पत्तिवर्णनम्	१६७
	आनन्दकाननमहत्त्ववर्णनम्	१६९
	मणिकर्ण्यांस्नानादिमहत्त्ववर्णनम्	१७१
	वाराणसीगमनमाहात्म्यवर्णनम्	१७३
२७	गङ्गामहिमवर्णनपूर्वकंदशहरास्तोत्रकथनम्	१७४
	गङ्गास्मरणफलवर्णनम्	१७५
	गङ्गामहात्म्यवर्णनम्	१७७
	गङ्गातटेगोदानादिमाहात्म्यवर्णनम्	१७९
	गङ्गापूजनप्रकारवर्णनम्	१८१
	गौरीगङ्गयोःशिवविष्णवोश्चाभेदवर्णनम्	१८३
२८	गङ्गामहिमवर्णनम्	१८४
	गङ्गातटेखण्डस्फुटितसंस्कारमहत्त्ववर्णनम्	१८५
	चित्रगुप्तेनवाहीविप्रस्यकर्मवर्णनम्	१८७
	गङ्गाविषयेश्रुत्युक्तिवर्णनम्	१८९
२९	गङ्गासहस्रनामस्तोत्रवर्णनम्	१९१
	गङ्गासहस्रनामस्तोत्रफलवर्णनम्	२०१
३०	वाराणसीमहिमवर्णनम्	२०३
	धनञ्जयवैश्याख्यानवर्णनम्	२०५
	विश्वेश्वराज्ञयैव काशीप्राप्तिर्भवतीतिवर्णनम्	२०७
	काशीवासमहत्त्ववर्णनम्	२०९
	एतदध्यायफलवर्णनम्	२११
३१	भैरवप्रादुर्भाववर्णनम्	२१२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३१	ऋगादिचतुर्वेदानांवाक्यवर्णनम्	२१३
	भैरवेणविष्णुसमीपेगमनवर्णनम्	२१५
	विष्णुम्प्रतिब्रह्महत्ययाकथनम्	२१७
	कालभैरवमाहात्म्यवर्णनम्	२१९
३२	दण्डपाणिप्रादुर्भाववर्णनम्	२२१
	हरिकेशकृतशिवाराधनवर्णनम्	२२३
	आनन्दकाननदर्शनवर्णनम्	२२५
	न्यायार्जितधनोत्सर्गमहत्त्ववर्णनम्	२२७
	शिवेन यक्षायवरदानवर्णनम्	२२९
	यक्षराजाष्टकवर्णनम्	२३१
३३	ज्ञानवापीमाहात्म्यवर्णनम्	२३२
	ज्ञानवाप्यां श्राद्धतर्पणमहत्त्ववर्णनम्	२३३
	हरिस्वामिपुत्र्याख्यानवर्णनम्	२३५
	मणिकर्णिकामहत्त्ववर्णनम्	२३७
	नानाशिवलिङ्गानाम्वर्णनम्	२३९
	ज्ञानवापीसमीपेनानापीठानाम्वर्णनम्	२४१
३४	ज्ञानवापीप्रशंसनवर्णनम्	२४२
	मणिकर्णिकापरितस्तीर्थानाम्वर्णनम्	२४३
	कलावत्याःपूर्वजन्मवृत्तवर्णनम्	२४५
	कलावत्युपाख्यानवर्णनम्	२४७
३५	सदाचारवर्णनम्	२४९
	स्नानविधिवर्णनम्	२५५
	ब्राह्मस्नानमहत्त्ववर्णनम्	२५७
	तर्पणविधिवर्णनम्	२५९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३५	बलिवैश्वदेवविधिवर्णनम्	२६१
	सदाचारेनित्यविधिवर्णनम्	२६३
३६	ब्रह्मचारिसदाचारवर्णनम्	२६४
	ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम्	२६५
३७	स्त्रीलक्षणवर्णनम्	२७०
३८	सदाचारवर्णनेऽष्टविवाहवर्णनम्	२७६
३९	अविमुक्तेशाविर्भाववर्णनम्	२८५
	दिवोदासाख्यानवर्णनम्	२८७
	अविमुक्तप्रशंसाकथनम्	२८९
४०	गृहस्थधर्मवर्णनम्	२९१
	नारीणां मेध्यत्ववर्णनम्	२९३
	नवकार्याकार्यादीनां वर्णनम्	२९५
	यज्ञशिष्टभोजनमहत्त्ववर्णनम्	२९७
	क्षमादोषवर्णनम्	२९९
४१	योगाख्यानवर्णनम्	३०१
	योगाङ्गवर्णनम्	३०३
	योगेप्राणायामादिषडङ्गवर्णनम्	३०५
	समाधिमहत्त्ववर्णनम्	३०७
	योगसिद्धिवर्णनम्	३०९
४२	कालवञ्चनोपायवर्णनम्	३११
	शिवकाशीमहत्त्ववर्णनम्	३१३
४३	दिवोदासप्रतापवर्णनम्	३१५
	राज्यप्रजास्थितिवर्णनम्	३१७
	दिवोदासाख्यानेदेवागमनवर्णनम्	३१९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४४	काशीवासवर्णनम्	३२१
	अविमुक्तमाहात्म्यवर्णनम्	३२३
	देवदेवेनबोधनम्	३२५
४५	चतुःषष्ठियोगिन्यागमनवर्णनम्	३२६
	योगिनीनां काशीप्रेमवर्णनम्	३२७
४६	लोलार्कवर्णनम्	३३०
	सूर्यचिचिकित्सावर्णनम्	३३१
	काशीमहत्त्ववर्णनम्	३३३
४७	उत्तरार्कवर्णनम्	३३४
	सुलक्षणाकन्यातपोवर्णनम्	३३५
४८	साम्बादित्यमाहात्म्यवर्णनम्	३३८
	कृष्णंद्रष्टुं नारदागमनवर्णनम्	३३६
४६	द्रौपदादित्यमयूखादित्यमाहात्म्यवर्णनम्	३४२
	रविकृतदेवीप्रार्थनवर्णनम्	३४५
५०	खखोल्कादित्यगरुडेशयोर्वर्णनम्	३४८
	सर्पेभ्यः शापदानवर्णनम्	३४६
	विनतागरुडसम्वादवर्णनम्	३५१
	गरुडेनामृतप्राप्तिवर्णनम्	३५३
	खखोल्कादित्यस्थापनवर्णनम्	३५५

उत्तरार्द्धम्

५१	अरुणवृद्धकेशवविमलगङ्गादित्यानाम्वर्णनम्	३५७
	केशवादित्यमाहात्म्यवर्णनम्	३५६
	द्वादशादित्यवर्णनोपसंहारः	३६३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५२	दशाश्वमेधमाहात्म्यवर्णनम्	३६४
	ब्रह्मणःकाशीम्प्रतिगमनवर्णनम्	३६५
	दिवोदासेनब्रह्मणःसत्कारवर्णनम्	३६७
५३	सवाराणसीवर्णनं गणप्रेषणकथनम्	३७०
	घण्टाकर्णप्रेषणवर्णनम्	३७१
	लिङ्गाराधनमहत्त्ववर्णनम्	३७३
	गणप्रबोधनवर्णनम्	३७५
५४	पिशाचमोचनमहत्त्ववर्णनम्	३७७
	प्रेतानां वाराणसीप्रवेशनिषेधवर्णनम्	३७६
५५	काशीवर्णनेगणेशप्रेषणवर्णनम्	३८३
	काशीमाहात्म्यकथनम्	३८५
५६	गणेशमायाप्रपञ्चवर्णनम्	३८६
	गणकरूपग गेशेनभविष्यवर्णनम्	३८७
	राज्ञोगणकेनसम्वादवर्णनम्	३८६
५७	ढुण्ढिविनायकप्रादुर्भाववर्णनम्	३६१
	ढुण्ढिस्तुतिवर्णनम्	३६३
	द्वितीयावरणविनायकवर्णनम्	३६५
	पञ्चावरणेगणेशानाम्वर्णनम्	३६७
५८	दिवोदासनिर्वाणप्राप्तिवर्णनम्	३६६
	महालक्ष्मीतीर्थमहिमवर्णनम्	४०१
	विष्णुनासौगतरूपधारणवर्णनम्	४०३
	विज्ञानकौमुद्याबौद्धधर्मवर्णनम्	४०५
	पुण्यकीर्त्तिम्प्रतिदिवोदासेनस्वकर्तव्यवर्णनम्	४०७
	श्रीविष्णुनादिवोदासायसाधुवाददानम्	४०६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

	दिवोदासेश्वरलिङ्गप्रतिष्ठापनवर्णनम्	४११
५९	पञ्चनदाविर्भाववर्णनम्	४१२
	वेदशिरामुनेराख्यानवर्णनम्	४१३
	धूतपापायावरार्थेतपःकरणवर्णनम्	४१५
	धूतपापायाःशिलात्वप्राप्तिवर्णनम्	४१७
	पञ्चनदमहिमवर्णनम्	४१९
६०	बिन्दुमाधवाविर्भाववर्णनम्	४२०
	अग्निबिन्दुकृतभगवत्स्तवनवर्णनम्	४२१
	काशीभक्तिमाहात्म्यवर्णनम्	४२३
	कार्त्तिकान्तचातुर्मास्यवर्णनम्	४२५
	विश्वेश्वरनिन्दकनिन्दावर्णनम्	४२७
६१	बिन्दुमाधवाविर्भावोमाधवाग्निबिन्दुसम्वादोवैष्णवतीर्थ-माहात्म्यवर्णनञ्च	४२९
	मणिकर्णिकामंहत्त्ववर्णनम्	४३१
	चक्रपुष्करिणीमाहात्म्यवर्णनम्	४३३
	स्कन्दतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्	४३५
	नाभितीर्थमहत्त्ववर्णनम्	४३७
	नरसिंहमाहात्म्यवर्णनम्	४३९
	विष्णवादिषट्कवर्णनम्	४४१
६२	वृषभध्वजप्रादुर्भाववर्णनम्	४४३
	धर्मवर्त्मानुसारिणीदेवसभाकथनम्	४४५
	कपिलधारावर्णनम्	४४७
	वृषभध्वजमाहात्म्यफलवर्णनम्	४४९
	ज्येष्ठेशाख्यानवर्णनम्	४५०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

६३	ईश्वरेणजैगीषव्यसमीपेनन्दीप्रेषणम्	४५१
	ईश्वरेणजैगीषव्यायवरदानवर्णनम्	४५३
६४	क्षेत्ररहस्यकथनम्	४५५
	काशीमाहात्म्यवर्णनम्	४५७
	काश्यांपापकरणाद्दुर्गतिवर्णनम्	४५९
	क्षेत्रमाहात्म्यमनु भगवतोऽन्तर्धानवर्णनम्	४६१
६५	पराशरेश्वरादिकन्दुकेशव्याघ्रेश्वरादिलिङ्गसम्भववर्णनम्	४६२
	विदलोत्पलनामभ्यांपार्वतीसन्दर्शनम्	४६३
	दैत्यदुर्वृत्तशमनायशिवाविर्भाववर्णनम्	४६५
६६	शैलेशादिलिङ्गनिर्णयवर्णनम्	४६७
	हिमालयद्वारोपायनवर्णनम्	४६९
	कार्पटिकहिमाचलसम्वादवर्णनम्	४७१
	शिवनिर्माणमहत्त्ववर्णनम्	४७३
६७	रत्नेश्वरप्रशंसनवर्णनम्	४७५
	रत्नावल्याःशिवभक्तिवर्णनम्	४७७
	रत्नावलीतापहारकोपायवर्णनम्	४७९
	रत्नावल्यादिसखीनांपरिरम्भणवर्णनम्	४८१
	नागराजकन्यानांसम्वादवर्णनम्	४८३
	वसुभूतिगन्धर्वसमागमनवर्णनम्	४८५
	रत्नेश्वरमहिमश्रवणफलवर्णनम्	४८७
६८	कृत्तिवासःसमुद्भववर्णनम्	४८८
	गजासुरायवरप्रदानम्	४८९
	काश्यांनानालिङ्गस्थितिवर्णनम्	४९१
६९	अष्टषष्ट्यायतनसमागमवर्णनम्	४९३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

६६	पार्वतीश्वरमहिमवर्णनम्	४६५
	सहस्राक्षेश्वरान्तलिङ्गानाम्वर्णनम्	४६७
	अष्टषष्ट्यायतनेलिङ्गानाम्वर्णनम्	४६६
	जललिङ्गान्तवर्णनम्	५०१
७०	देवताधिष्ठानवर्णनम्	५०३
	निगडभञ्जनीवर्णनम्	५०५
	चर्ममुण्डादीनाम्वर्णनम्	५०७
७१	दुर्गपराक्रमवर्णनम्	५०६
	कालरात्रिपराक्रमवर्णनन्	५११
	दैत्यानांदुर्गेणसहसम्वादवर्णनम्	५१३
७२	दुर्गवधमनुदेवैर्वज्रपञ्जरस्तुतिवर्णनम्	५१६
	दुर्गवधवर्णनम्	५१७
	देवेभ्यो देव्यावरप्रदानवर्णनम्	५१६
	भैरवादीनांपूजनमहत्त्ववर्णनम्	५२१
७३	सक्षेत्रलिङ्गमहिमंॐकारमहिमवर्णनम्	५२३
	काश्यांनानामहालिङ्गस्थितिवर्णनम्	५२५
	ॐकारेश्वरमहिमवर्णनम्	५२७
	ब्रह्मकृताशिवस्तुतिवर्णनम्	५२६
	ॐकारदर्शनमहत्ववर्णनम्	५३१
७४	ॐकारमाहात्म्यवर्णनम्	५३३
	शिवगणैः क्षेत्ररक्षावर्णनम्	५३५
	माधव्याः शिवलिङ्गे लयवर्णनम्	५३७
	ॐकारेश्वराध्याय श्रवणफलवर्णनम्	५३६
७५	त्रिलोचनाविर्भाववर्णनम्	५४०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

७५	त्रिलोचनमाहात्म्यवर्णनम्	५४१
	त्रिविष्टपदर्शनवर्णनम्	५४३
७६	त्रिलोचनप्रभाववर्णनम्	५४५
	कलरवस्य पारावत्या सम्वादवर्णनम्	५४७
	पारावत्योर्द्वितीयजन्मवर्णनम्	५४९
	नागकन्यानां शिवेन सम्वादवर्णनम्	५५१
	विद्याधरस्योद्वाहवर्णनम्	५५३
७७	केदारमहिमाख्यानवर्णनम्	५५४
	वशिष्ठेन केदारदर्शनप्रतिज्ञावर्णनम्	५५५
	केदारमहत्त्ववर्णनम्	५५७
७८	धर्मेशमहिमाख्यानवर्णनम्	५५९
	धर्मराज (यम) कृतशिवस्तवनवर्णनम्	५६१
७९	धर्मेशाख्यानवर्णनम्	५६३
	काश्यां मोक्षलक्ष्मीविलासप्रासादमहत्त्ववर्णनम्	५६५
	मणिकर्णिकामाहात्म्यवर्णनम्	५६७
	धर्मेशमहिमवर्णनम्	५६९
८०	विश्वभुजाशाविनायकप्रशंसने मनोरथतृतीयाव्रताख्यानवर्णनम्	५७०
	पुलोमकन्यायै व्रतविधानवर्णनम्	५७१
	आशाविनायकव्रतविधानवर्णनम्	५७३
८१	धर्मेशाख्यानवर्णनम्	५७५
	धर्मेशाख्याने नानालिङ्गमहिमवर्णनम्	५७७
	धर्मपीठमहत्त्वश्रवणपठनफलवर्णनम्	५७९
८२	वीरेश्वरप्रादुर्भावेऽमित्रजितपराक्रमवर्णनम्	५८०
	अमित्रजिद्राजस्य राज्ये वैष्णवत्ववर्णनम्	५८१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

८२	मलयगन्धिन्याराज्ञासमावेशवर्णनम्	५८३
	ज्ञानवेनाऽमित्रजिद्राजस्ययुद्धवर्णनम्	५८५
८३	अभीष्टतृतीयायाव्रतविधानपुरस्सरंवीरेश्वराविर्भाववर्णनम्	५८८
	मूलनक्षत्रजन्मगतस्यबालस्यत्यागवर्णनम्	५८६
	हंसतीर्थान्तवर्णनम्	५६१
	काशीस्थनानातीर्थवर्णनम्	५६३
८४	वीरेश्वराख्यानवर्णनम्	५६५
	भैरवतीर्थान्तवर्णनम्	५६७
	उमातीर्थवर्णनम्	५६६
८५	कामेशतीर्थवर्णनपुरस्सरंदुर्वाससेवरप्रदानवर्णनम्	६०२
	गणानांक्रोधवर्णनम्	६०३
८६	सत्वाष्ट्रोपाख्यानंविश्वकर्मेश्वरलिङ्गमाहात्म्यवर्णनम्	६०७
	तापसत्वाष्ट्रसम्वादवर्णनम्	६०६
	त्वाष्ट्रायशिववरदानवर्णनम्	६११
	आनन्दवनमहिमवर्णनम्	६१३
८७	दक्षयज्ञप्रादुर्भाववर्णनम्	६१४
	ब्रह्मशिवसम्वादवर्णनम्	६१५
	दक्षयज्ञे दधीचिसम्मन्त्रणवर्णनम्	६१७
	शिवसन्निधिमहत्ववर्णनम्	६१६
८८	दक्षयज्ञेसतीदेहविसर्जनवर्णनम्	६२२
	सतीशिवसम्वादवर्णनम्	६२३
	देव्यास्वपितृयज्ञगमनवर्णनम्	६२५
८६	दक्षेश्वरप्रादुर्भाववर्णनम्	६२८
	वीरभद्रवाक्यवर्णनम्	६२६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिष्या ऊचुः

श्रृण्वन्त्वाराध्यचरणानोपसर्गोऽत्रकश्चन । नान्नक्षयोवासर्वस्यांनगर्यामिहकुत्रचित्
यत्र विश्वेश्वरः साक्षाद्यत्राऽमरधुनीस्वयम् । त्वादृशायत्रमुनयःक्वभीस्तत्रोपसर्गजा

सम्मृद्धिर्या गृहस्थानामिह विश्वेशितुः पुरि ।
न सर्धिरस्ति वैकुण्ठे त्वल्पास्ता अलकादयः ॥ ९८ ॥

रत्नाकरेषु रत्नानि नतावन्ति महामुने !। यावन्ति सन्तिविश्वेशनिर्माल्योपभुजांगृहे
गृहेगृहेऽत्र धान्यानां राशयोयादृशःपुनः । नतादृशः कल्पवृक्ष दत्ता ऐन्द्रे पुरेक्वचित्
यत्रसाक्षाद्विशालाक्षी सुविस्तारफलप्रदा । नतत्रपुरिसर्वस्यां नरो वैनिर्धनः क्वचित्
निर्वाणलक्ष्म्याः सदनेत्वस्मिन्नानन्दकानने । मोक्षोपियत्रसुलभःकिमन्यत्तत्रदुर्लभम्

सीमन्तिन्यः स्त्रियः सर्वाः पतिव्रतपरायणाः ।
सर्वा भवानीरूपिण्यो विश्वेशार्पितसत्क्रियाः ॥ १०३ ॥

यावन्तः पुरुषाः काश्यांसर्वएव गणाधिपाः । सर्वएव कुमारा वै सर्वे तारकदृष्टयः ॥
त्रिपुण्ड्राङ्कितभाला येते सर्वेचन्द्रमौलयः । उपसर्गसहस्रैश्च पीड्यमाना अपीह ये
नत्यजन्ति सदाकाशीं सर्वज्ञा एव ते खिलाः । गृहे गृहेऽपिवटवोब्रह्मवादविवादिनः
स्वर्धुनीधूतकलुषाः सन्तीहचतुराननः । निर्वाणलक्ष्मीपतयः क्षेत्रसंन्यासकारिणः
सर्वएव हृषीकेशाः सर्वेवै पुरुषोत्तमाः । अच्युता एव विज्ञेया एतत्क्षेत्रपरिग्रहाः ॥
स्त्रियो वा पुरुषा वापि सर्व एव न संशयः । सर्व एव त्रिनयनाः सर्व एव चतुर्भुजा
श्रीकण्ठाःसर्वएवात्र सर्वेमृत्युञ्जयाध्रुवम् । मोक्षश्रीश्रितवर्ष्माणस्त्वर्धनारीश्वरायतः
धर्मराशिःपरश्चात्र महान्तोऽत्रार्थराशयः । सर्वेकामाः फलन्त्यत्रकैवल्यश्चात्रनिर्मलम्
नगर्भवाससंसर्गः काशीसंस्थितिकारिणाम् । नकलिश्चात्रबाधेतकालो नैव प्रबाधते

एनांसि नाऽत्र बाधन्ते विश्वेशशरणार्थिनः ।
यत्र विश्वेश्वरः साक्षान्नादबिन्दुकलात्मकः ॥ ११३ ॥
ध्वनिरूपी हि तत्रास्ति प्रणवो मन्त्रविग्रहः ।
अतो विग्रहवन्तोऽत्र सन्ति वेदा विनिश्चितम् ॥ ११४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरस्वती सरिद्रूपा ह्यतः शास्त्रनिकेतनम्। आनन्दकाननं सर्वं धर्मशास्त्रकृतालयम्
यावन्तोदिविवैवास्तावन्तोऽत्रमृषानहि। नीराजयन्तिविश्वेशंरात्रौरात्रौसदाऽहयः
स्वफणामणिदीपैश्च प्राप्यकाशींरसातलात्। समुद्राःसर्वएवात्र कामधेनुव्रजान्विताः
पञ्चपीयूषधाराभिर्विश्वेशं स्नपयन्तिहि। मन्दारःपारिजातश्च सन्तानो हरिचन्दनः
कल्पद्रुमश्च पञ्चैते तरुभिः सह सर्वदा ॥ ११६ ॥
सर्वैसुरनिकायाश्च सर्व एव महर्षयः । योगिनः सर्वएवात्र काशीनाथमुपासते ॥

विद्यानां सदनं काशी काशी लक्ष्म्याः परालयः।
मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वा त्रयीमयी ॥ १२१ ॥
इति श्रुत्वा मुनिवरः पाराशर्यो महातपाः।
एवम्बभाषे ताञ्छिष्यान्पुनः श्लोकस्पठन्त्वमुम् ॥ १२२ ॥

शिष्या ऊचुः

विद्यानां चाश्रयः काशी काशीलक्ष्म्याः परालयः।
मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वा त्रयीमयी ॥ १२३ ॥

स्कन्द उवाच

निशम्येति तदा व्यासः क्रोधान्धीकृतलोचनः।
क्षुत्कृशानुज्वलन्मूर्तिः काशीं शप्स्यति कुम्भजः ॥ १२४ ॥

व्यास उवाच

माभूत्त्रैपूरुषीविद्यामाभूत्त्रैपूरुषंधनम्। माभूत्त्रैपूरुषीमुक्तिःकाशींव्यासःशपन्निति
गर्वः परोऽत्रविद्यानांधनगर्वोऽत्रवैमहान्। मुक्तिगर्वेणनोभिक्षांप्रयच्छन्त्यत्रवासिनः
इति कृत्वा मतिं व्यासः काश्यां शापमदात्तदा।
दत्वाऽपि शापं स मुनिर्भिक्षितुं क्रोधवान्ययौ ॥ १२७ ॥
प्रतिगेहं त्वरायुक्तः प्रविशन्व्योमदत्तदृक्। बभ्राम नगरींसर्वांकापिभैक्षं न लब्धवान्
अंशुमालिनमावीक्ष्य मनाग्लोहितमण्डलम्।
भिक्षापात्रम्परिक्षिप्य निर्ययावाश्रमम्प्रति ॥ १२६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिनवतितमोऽध्यायः

सतीश्वरप्रादुर्भाववर्णनम्

अगस्त्य उवाच

नर्मदेशस्य माहात्म्यं श्रुतंकल्मषनाशनम् । इदानीं कथयस्कन्दसतीश्वरसमुद्भवम् ॥

स्कन्द उवाच

मित्रावरुणसम्भूत कथयामि कथां शृणु । यथासतीश्वरं लिङ्गंकाश्यामाविर्बभूवह

पुरा तताप सुमहत्तपः शतधृतिर्मुने !। तपसा तेन देवेशः सन्तुष्टो वरदोऽभवत् ॥

उवाच चाऽपि ब्रह्माणं नितरां ब्राह्मणप्रियः । सर्वज्ञनाथोलोकात्मावरंवरयलोककृत्

ब्रह्मोवाच

यदिप्रसन्नोदेवेशवरंदास्यसिवाञ्छितम् । तदात्वं मे भव सुतो देवीदक्षसुताऽस्तुच

इति श्रुत्वा महादेवः सर्वदोब्रह्मणोवरम् । स्मित्वादेवीमुखंवीक्ष्यप्रोवाचचतुराननम्

ब्रह्मंस्त्वद्वाञ्छितं भूयात्किमदेयं पितामह !।

इत्युक्त्वा ब्रह्मणो भालादाविरासीच्छशाङ्कभृत् ॥ ७ ॥

रुदन्सउत्तानशयो ब्रह्मणो मुखमैक्षत । ततोब्रह्माऽपि तं बालं रुदन्तंप्रविलोक्य च ॥

किंमां जनकमाप्यापि त्वं रोदिषि मुहुर्मुहुः । श्रुत्वेतिपृथुकःप्राहयथोक्तंपरमेष्ठिना ॥

नाम्नेरोदिमिमेस्त्रष्टर्नामदेहि पितामह !। रोदनाद्रुद्र इत्याख्यांसमायाडिम्भकोऽलभत्

अगस्त्य उवाच

अर्भकत्वं गतोऽपीशः किं रुरोद षडानन !। यदिवेत्सितदाचक्ष्वमहत्कौतूहलं हिमे॥

स्कन्द उवाच

सर्वज्ञस्यकुमारत्वात्किञ्चित्किञ्चिदवैम्यहम् । रोदनेकारणंवच्मि शृणुकुम्भसमुद्भव!

मनसीतिविचारोऽभूद्देवस्य परमात्मनः । बुद्धिवैभवमस्याऽहो वीक्षितुं परमेष्ठिनः

सत्यलोकाधिनाथस्यचतुरास्यस्यवेधसः ।इत्यानन्दात्समुद्भूतोवाष्पपूरोमहेशितुः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरस्वती सरिद्रूपा ह्यतः शास्त्रनिकेतनम् । आनन्दकाननं सर्वं धर्मशास्त्रकृतालयम्
यावन्तोदिविदैवास्तावन्तोऽत्रमृषानहि । नीराजयन्तिविश्वेशंरात्रौरात्रौसदाऽहयः
स्वफणामणिदीपैश्च प्राप्यकाशींरसातलात् । समुद्राःसर्वएवात्र कामधेनुव्रजान्विताः
पञ्चपीयूषधाराभिर्विश्वेशं स्नपयन्तिहि । मन्दारःपारिजातश्च सन्तानो हरिचन्दनः

कल्पद्रुमश्च पञ्चैते तरुभिः सह सर्वदा ॥ ११६ ॥

सर्वैसुरनिकायाश्च सर्व एव महर्षयः । योगिनः सर्वएवात्र काशीनाथमुपासते ॥

विद्यानां सदनं काशी काशी लक्ष्म्याः परालयः ।
मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वा त्रयीमयी ॥ १२१ ॥
इति श्रुत्वा मुनिवरः पाराशर्यो महातपाः ।
एवम्बभाषे ताञ्छिष्यान्पुनः श्लोकम्पठन्त्वमुम् ॥ १२२ ॥

शिष्या ऊचुः

विद्यानां चाश्रयः काशी काशीलक्ष्म्याः परालयः ।
मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वा त्रयीमयी ॥ १२३ ॥

स्कन्द उवाच

निशम्येति तदा व्यासः क्रोधान्धीकृतलोचनः ।
क्षुत्कृशानुज्वलन्मूर्तिः काशीं शप्स्यति कुम्भजः ॥ १२४ ॥

व्यास उवाच

माभूत्त्रैपूरुषीविद्यामाभूत्त्रैपूरुषंधनम् । माभूत्त्रैपूरुषीमुक्तिःकाशींव्यासःशपन्निति
गर्वः परोऽत्रविद्यानांधनगर्वोऽत्रवैमहान् । मुक्तिगर्वेणनोभिक्षांप्रयच्छन्त्यत्रवासिनः

इति कृत्वा मतिं व्यासः काश्यां शापमदात्तदा ।
दत्त्वाऽपि शापं स मुनिर्भिक्षितुं क्रोधवान्ययौ ॥ १२७ ॥

प्रतिगेहं त्वरायुक्तः प्रविशन्व्योमदत्तदृक् । बभ्राम नगरींसर्वांकापिभैक्ष्यं न लब्धवान्

अंशुमालिनमावीक्ष्य मनाग्लोहितमण्डलम् ।
भिक्षापात्रम्परिक्षिप्य निर्ययावाश्रमम्प्रति ॥ १२६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिनवतितमोऽध्यायः

सतीश्वरप्रादुर्भाववर्णनम्

अगस्त्य उवाच

नर्मदेशस्य माहात्म्यं श्रुतं कल्मषनाशनम् । इदानीं कथयस्कन्दसतीश्वरसमुद्भवम् ॥

स्कन्द उवाच

मित्रावरुणसम्भूत कथयामि कथां शृणु । यथासतीश्वरं लिङ्गंकाश्यामाविर्बभूवह

पुरा ततापं सुमहत्तपः शतधृतिर्मुने !। तपसा तेन देवेशः सन्तुष्टो वरदोऽभवत् ॥

उवाच चाऽपि ब्रह्माणं नितरां ब्राह्मणप्रियः । सर्वज्ञनाथोलोकात्मावरंवरयलोककृत्

ब्रह्मोवाच

यदिप्रसन्नोदेवेशवरंदास्यसिवाञ्छितम् । तदात्वं मे भव सुतो देवीदक्षसुताऽस्तुच

इति श्रुत्वा महादेवः सर्वदोब्रह्मणोवरम् । स्मित्वादेवीमुखंवीक्ष्यप्रोवाचचतुराननम्

ब्रह्मंस्त्वद्वाञ्छितं भूयात्किमदेयं पितामह !।

इत्युक्त्वा ब्रह्मणो भालादाविरासीच्छशाङ्कभृत् ॥ ७ ॥

रुदन्सउत्तानशयो ब्रह्मणो मुखमैक्षत । ततोब्रह्माऽपि तं बालं रुदन्तंप्रविलोक्य च ॥

किंमां जनकमाप्याऽपि त्वं रोदिषि मुहुर्मुहुः । श्रुत्वेतिपृथुकःप्राहयथोक्तंपरमेष्ठिना ॥

नाम्नेरोदिमिमेस्रष्टर्नामदेहि पितामह !। रोदनाद्रुद्र इत्याख्यांसमायाडिम्भकोऽलभत्

अगस्त्य उवाच

अर्भकत्वं गतोऽपीशः किं रुरोद षडानन !। यदिवेत्सितदाचक्ष्वमहत्कौतूहलं हिमे॥

स्कन्द उवाच

सर्वज्ञस्यकुमारत्वात्किञ्चित्किञ्चिदवैम्यहम् । रोदनेकारणंवच्मि शृणुकुम्भसमुद्भव!

मनसीतिविचारोऽभूद्देवस्य परमात्मनः । बुद्धिवैभवमस्याऽहो वीक्षितुं परमेष्ठिनः

सत्यलोकाधिनाथस्य चतुरास्यस्यवेधसः ।इत्यानन्दात्समुद्भूतोबाष्पपूरोमहेशितुः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

किं वुद्धिवैभवंधातुःशम्भुनामनसीक्षितम् । येनानन्दाश्रुसम्भारोबाल्येप्यभवदीशितुः
एतत्कथयमेप्राज्ञ सर्वज्ञानन्दवर्धन ! । श्रुत्वागस्त्युदितं वाक्यं तारकारिरुवाचह ॥
देवेन मनसिध्यातमिति कुम्भजनेमुने !। विनाऽपत्यं जनेतारं क उद्धर्तुमिहप्रभुः ॥

एको मनोरथश्चाऽयं द्वितीयोऽयं सुनिश्चितम् ।
अपत्यत्वं गते चास्मिन्स्मर्तुरुत्पत्तिहारिणि ॥ १८ ॥

क्षणंक्षणं समालोक्यमङ्गस्पर्शेक्षणंक्षणम् । एकशय्यासनाहारं लप्स्येऽनेनक्षणेक्षणे

योऽयं न गोचरः क्वापि वाणीमनसयोरपि ।
स मेऽपत्यत्वमासाद्य किं न दास्यति चिन्तितम् ॥ २० ॥

योऽमुं सकृत् पृशेज्जन्तुर्योऽमुं पश्येत्सकृन्मुदा । न सभूयोभिजायेतभवेच्चानन्दमेदुरः

गृहक्रीडनकं मेऽसौ यदि भूयात्कथञ्चन ।
तदा परस्यसौख्यस्य निधानं स्यामसंशयम् ॥ २२ ॥

विधेः समीहितंचेतिनूनं ज्ञात्वा ससर्ववित् । आनन्दबाष्पकलितंचक्षुस्त्रयमदीधरत्
श्रुत्वेत्यगस्तिः स्कन्दस्यभाषितं पर्यमूमुदत् । ननामचाङ्घ्रीप्रोवाचजयसर्वज्ञनन्दन!
विधेरपिमनोज्ञातंशम्भोरपिमनोगतम् । सम्यक्चित्तंत्वयाज्ञातंनमस्तुभ्यंचिदात्मने

स्कन्दोऽपि नितरां तुष्टः श्रोतुरानन्ददर्शनात् ।
धन्योऽस्यगस्त्य! धन्योऽसि श्रोतुं जानासि तत्त्वतः ॥ २६ ॥

नमेश्रमोवृथा जातो ब्रुवतस्तेपुरः कथाम् । इत्यगस्ति समाभाष्य पुनः प्राहषडाननः
देवेरुद्रत्वमापन्ने देवीदक्षसुताभवत् । सापि तप्त्वा तपस्तीव्रं सतीकाश्यांवरार्थिनी
ददर्श लिङ्गरूपेण प्रादुर्भूतं हरं पुरः । अलं तप्त्वा महादेवि! प्रोक्तवन्तमितिस्फुटम्
इदं सतीश्वरं लिङ्गंतव नाम्ना भविष्यति । यथा मनोरथस्तेऽत्र फलितोदक्षकन्यके

तथैतल्लिङ्गमाराध्याऽन्यस्याऽपि हि फलिष्यति ।
कुमारी प्राप्स्यति पतिम्मनसोपि समुच्छ्रितम् ॥ ३१ ॥
एतल्लिङ्गं समाराध्य कुमारोऽपि वराङ्गनाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यस्य यस्य हि यः कामस्तस्य तस्य हि स ध्रुवम् ॥ ३२ ॥
भविष्यति न संदेहः सतीश्वरसमर्चनात् । सतीश्वरं समभ्यर्च्ययोयो यं यंसमीहते
तस्यतस्य स सक्षिप्रं भविष्यति मनोरथः । इतोऽष्टमेचदिवसे त्वज्जनेताप्रजापतिः
मह्यं दास्यति कन्यां त्वां सफलस्ते मनोरथः ।
इत्युक्त्वा देवदेवेशस्तत्रैवाऽन्तर्हितोऽभवत् ॥ ३५ ॥
सापि स्वभवनंयातासतीदाक्षायणीमुदा । पिताऽपितस्मैप्रादात्तांरुद्रायदिवसेऽष्टमे

स्कन्द उवाच

इत्थं सतीश्वरं लिङ्गं काश्यांप्रादुरभून्मुने !। स्मरणादपिलिङ्गञ्चदद्यात्सत्त्वगुणं परम्
रत्नेशात्पूर्वतोभागे दृष्ट्वालिङ्गं सतीश्वरम् । मुच्यतेपातकैः सद्यःक्रमाज्ज्ञानञ्चविन्दत्ति

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्ड उत्तरार्धेसतीश्वरप्रादुर्भावो नाम त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

चतुर्नवतितमोऽध्यायः

अमृतेशादिलिङ्गप्रादुर्भाववर्णनम्

स्कन्द उवाच

अन्यान्यपि च लिङ्गानिकथयामि महामुने !। अमृतेशमुखादीनि यन्नामाप्यमृतप्रदम्
पुरासनारुनामासीन्मुनिरत्र गृहाश्रमी । ब्रह्मयज्ञरतो नित्यं नित्यञ्चातिथिदैवतः ॥
लिङ्गपूजारतो नित्यं नित्यं तीर्थाप्रतिग्रही । तस्यर्षेरभवत्पुत्रः सनारोरुपजङ्घनिः ॥
सकदाचिद्गतोऽरण्यं तत्रदष्टःपृदाकुना । अथतत्सचयोभिश्चसआनीतः स्वमाश्रमम्
सनारुणासमुच्छ्वस्य नीतः स उपजङ्घनिः । महाश्मशानभूभागं स्वर्गद्वारसमीपतः
तत्रासीच्छ्रीफलाकारंलिङ्गमेकं सुगुप्तवत् । निधायतत्रतंयावच्छवंसञ्चिन्तयेत्सुधीः
सर्पदष्टस्यसंस्कारः कथं भवति चेति वै । तावत्सजीवन्नुत्तस्थौ सुप्तवच्चोपजङ्घनिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अथ तंवीक्ष्यस मुनिः स नारुरुपजङ्घनिम् । पुनः प्राणितसंपन्नं विस्मयं प्राप्तवान्परम्
प्राणितव्येऽत्र कोहेतुर्मच्छिशोरुपजङ्घनेः । क्षेत्राद्‌बहिरहियँहि दष्टानैषीत्परासुताम्

इति यावत्स सन्धत्ते धियं तज्जीवितैकिकाम् ।

तावत्पिपीलिका त्वेका मृतं काऽपि पिपीलिकम् ॥ १० ॥

आनिनायचतत्रैवसोऽप्यनन्निर्गतस्ततः । अथ विज्ञायसमुनिस्तत्त्वंजीवितसूचितम्
मृदुहस्ततलेनैव तावत्खनति वै मुनिः । तावच्छ्रीफलमात्रं हिलिङ्गं तेन समीक्षितम्
सनारुणाथ तल्लिङ्गं तेन तत्रसमर्चितम् । चिरकालीनलिङ्गस्यकृतं नामापिसान्वयम्
अमृतेश्वरनामेदं लिङ्गमानन्दकानने । एतल्लिङ्गस्यसंस्पर्शादमृतत्वं लभेद्‌ ध्रुवम् ॥
अमृतेशं समभ्यर्च्य जीवत्पुत्रः सवै मुनिः । स्वास्पदं समनुप्राप्तो हृष्टआश्चर्यवज्जनैः
तदा प्रभृतितल्लिङ्गममृतेशं मुनीश्वरः । काश्यां सिद्धिप्रदं नृणांकलौ गुप्तं भवेत्पुनः

अमृतेश्वरसंस्पर्शान्मृता जीवन्ति तत्क्षणात् ।

अमृतत्वम्भजन्तेऽत्र जीवन्तः स्पर्शमात्रतः ॥ १७ ॥

अमृतेशसमं लिङ्गं नास्ति क्वापिमहीतले । तल्लिङ्गं शम्भुना तिष्ये कृतं गुप्तं प्रयत्नतः
अमृतेश्वरनामापि ये काश्यां परिगृह्णते । न तेषामुपसर्गोत्थम्भयं क्वापि भविष्यति
मुनेऽन्यच्चमहालिङ्गं करुणेश्वरसंज्ञितम् । मोक्षद्वारसमीपे तु मोक्षद्वारेश्वराग्रतः ॥

दर्शनात्तस्य लिङ्गस्य महाकारुणिकस्य वै ।

न क्षेत्रान्निर्गमो जातु वहिर्भवति कस्यचित ॥ २१ ॥

स्नातव्यं मणिकर्ण्याञ्चद्रष्टव्यः करुणेश्वरः । क्षेत्रोपसर्गजाभीतिर्हातव्यापरया मुदा
सोमवासरमासाद्य एकभक्तव्रतञ्चरेत् । यष्टव्यः करुणापुष्पैर्व्रतिना करुणेश्वरः ॥
तेन व्रतेन संतुष्टः करुणेशः कदाचन । नतं क्षेत्राद्‌ वहिष्कुर्यात्तस्मात्कार्यंव्रतंत्विदम्
तत्पत्रैस्तत्फलैर्वापिसम्पूज्यःकरुणेश्वरः । योनजानाति तल्लिङ्गंसम्यग्ज्ञानविवर्जितः
तेनार्च्यः करुणावृक्षो देवेशः प्रीयतामिति । योवर्षं सोमवारस्यव्रतंकुर्यादितिद्विजः

प्रसन्नः करुणेशोऽत्र तस्य दास्यति वाञ्छितम् ।

द्रष्टव्यः करुणेशोऽत्र काश्यां यत्नेन मानवैः ॥ २७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इतितेकरुणेशस्यमहिमोक्तो महत्तरः। यं श्रुत्वानोपसर्गोत्थम्भयंकाश्याम्भविष्यति
मोक्षद्वारेश्वरञ्चैव स्वर्गद्वारेश्वरं तथा। उभौ काश्यांनरोदृष्ट्वा स्वर्गम्मोक्षञ्चविन्दति
ज्योतीरूपेश्वरंलिङ्गं काश्यामन्यत्प्रकाशते। तस्यसंपूजनाद्भक्ताज्योतीरूपाभवन्तिहि

चक्रपुष्करिणीतीरे ज्योतीरूपेश्वरम्परम्।
समभ्यर्च्याप्नुयान्मर्त्यो ज्योतीरूपं न संशयः॥ ३१॥

यदाभागीरथी गङ्गातत्र प्राप्ता सरिद्वरा। तदारभ्यार्चयेन्नित्यं तल्लिङ्गं स्वधुनीमुदा
पुराविष्णौ तपत्यत्र तल्लिङ्गं स्वयमेव हि। तत्राविरासीत्तेजस्वितेनक्षेत्रमिदं शुभम्
चक्रपुष्करिणीतीरे ज्योतीरूपेश्वरं तदा। दूरस्थोऽपीहयोध्यायेत्तस्यसिद्धिरदूरतः
एतेष्वपि च लिङ्गेषु चतुर्दशसु सत्तम। लिङ्गाष्टकं महावीर्यं कर्मबीजदवानलम्॥
ॐकारादीनिलिङ्गानियान्युक्तानिचतुर्दश। तथादक्षेश्वरादीनिलिङ्गान्यष्टौमहान्तिच
शैलेशादीनि लिङ्गानि तथा यानि चतुर्दश। पुनः षट्त्रिंशदेतानि क्षेत्रसंसिद्धिहेतवे

षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपोऽसौ लिङ्गेष्वेषु सदाशिवः।
अस्मिन्क्षेत्रे वसन्नित्यं तारकं ज्ञानमादिशेत्॥ ३८॥

क्षेत्रस्यतत्त्वमेतद्धि षट्त्रिंशल्लिङ्गरूप्यहो। एतेषाम्भजनात्पुंसांनभवेद्दुर्गतिःक्वचित्
मुनेरहस्यभूतानिलिङ्गान्येतानिनिश्चितम्। एतल्लिङ्गप्रभावाच्च मुक्तिरत्रसुनिश्चिता
मोक्षक्षेत्रमिदंकाशीलिङ्गैरेतैर्महामते!। एतान्यन्यानि सिद्धानिसम्भवन्ति युगे युगे
आनन्दकाननं शम्भोः क्षेत्रमेतदनादिमत्। अत्र संस्थितिमापन्नामुक्ताएव न संशयः

योगसिद्धिरिहाऽस्त्येव तपः सिद्धिरिहैव हि।
व्रतसिद्धिर्मन्त्रसिद्धिस्तीर्थसिद्धिः सुनिश्चितम्॥४३॥

सिद्ध्यष्टकं तु यत्प्रोक्तमणिमादिमहत्तरम्। तज्जन्मभूमिरेषैवशम्भोरानन्दवाटिका
निर्वाणलक्ष्म्याः सदनमेतदानन्दकाननम्। एतत्प्राप्यनमोक्तव्यंपुण्यैः संसारभीरुणा
अयमेव महालाभ इदमेव परन्तपः। एतदेव महत्पुण्यं लब्धा वाराणसीहयत्॥

अवश्यं जन्मिनो मृत्युर्यत्र कुत्र भविष्यति।
कर्मानुसारिणी लभ्या गतिः पश्चाच्छुभाशुभा॥ ४७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मृत्युं विज्ञाय नियतं गतिं कर्मानुसारिणीम् ।
अवश्यं काशिका सेव्या सर्वकर्मनिवारिणी ॥ ४८ ॥
मानुष्यम्प्राप्य ये मूढानिमेषमितजीवितम् । नसेवन्तेपुरींकाशीं ते मुष्टामन्दबुद्धयः
दुर्लभंजन्म मानुष्यं दुर्लभाकाशिका पुरी । उभयोः सङ्गमासाद्य मुक्ताएवनसंशयः ॥
क्व च तादृक् तपांसीह क्व तादृग्योग उत्तमः ।
यादृग्भिः प्राप्यते मुक्तिः काश्यां मोक्षोत्तमोत्तमः ॥ ५१ ॥
सत्यं सत्यं पुनःसत्यंसत्यपूर्वम्पुनः पुनः । नकाशीसदृशी मुक्त्यैभूमिरन्यामहीतले
विश्वेशो मुक्तिदो नित्यं मुक्त्यै चोत्तरवाहिनी ।
आनन्दकानने मुक्तिर्मुक्तिर्नाऽन्यत्र कुत्रचित ॥ ५३ ॥
एक एवहि विश्वेशो मुक्तिदो नान्यएवहि । सएवकाशीम्प्रापयमुक्तियच्छतिनान्यतः
सायुज्यमुक्तिरत्रैव सान्निध्यादिरथान्यतः ।
सुलभा साऽपि नो नूनं काश्यां मोक्षोऽस्ति हेलया ॥ ५५ ॥

स्कन्द उवाच

शृणवगस्त्यमहाभागभविष्यंकथयाम्यहम् । कृष्णद्वैपायनोव्यासोऽकथयद्यन्महद्वचः
निश्चिकेतुमनाः पश्चाद्यत्करिष्यति तच्छृणु ॥ ५६ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्ड
उत्तरार्धेऽमृतेशादिलिङ्गप्रादुर्भावो नामचतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ ९४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चनवतितमोऽध्यायः

व्यासभुजस्तम्भवर्णनम्

व्यास उवाच

शृणु सूत! महाबुद्धे! यथा स्कन्देन भाषितम्।
भविष्यं मम तस्याग्रे कुम्भयोनेर्महामतेः ॥ १ ॥

स्कन्द उवाच

निशामय महाभाग! त्वं मैत्रावरुणे! मुने !। पाराशर्यो मुनिवरो यथा मोहमुपैष्यति व्यस्य वेदान्महाबुद्धिर्नानाशाखाप्रभेदतः। अष्टादशपुराणानि सूतादीन्परिपाठ्य च श्रुतिस्मृतिपुराणानां रहस्यंयस्त्वचीकरत्। महाभारतसञ्ज्ञञ्च सर्वलोकमनोहरम् सर्वपापप्रशमनं सर्वशान्तिकरम्परम्। यस्य श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्याविनश्यति ॥ एकदा समुनिःश्रीमान्पर्यटन्पृथिवीतले। सम्प्राप्तो नैमिषारण्यंयत्रसन्तिमुनीश्वराः अष्टाशीतिसहस्राणिशौनकाद्यास्तपोधनाः। त्रिपुण्ड्रितमहाभालालसद्रुद्राक्षमालिनः विभूतिधारिणोभक्त्यारुद्रसूक्तजपप्रियान्। लिङ्गाराधनसंसक्ताञ्शिवनामकृतादरान् एकएवहिविश्वेशो मुक्तिदो नान्य एवहि। इतिब्रुवाणान्सततंपरिनिश्चितमानसान्

विलोक्य सन्मुनिर्व्यासस्तान्सर्वान् गिरिशात्मनः।
उत्क्षिप्य तर्जनीमुच्चैः प्रोवाचेदं वचः पुनः ॥ १० ॥

परिनिर्मथ्य वाग्जालंसुनिश्चित्यासकृद्बहु। इदमेकंपरिज्ञातंसेव्यः सर्वेश्वरोहरिः वेदेरामायणे चैव पुराणेषु च भारते। आदिमध्यावसानेषु हरिरेकोऽत्र नापरः ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यंत्रिसत्यं न मृषापुनः। नवेदादपरंशास्त्रंनदेवोऽच्युततः परः लक्ष्मीशःसर्वदोनान्योलक्ष्मीशोऽप्यपवर्गदः। एकएवहिलक्ष्मीशस्ततोध्येयोनचापरः भुक्तेमुक्तेरिहान्यत्रनान्योदाताजनार्दनात्। तस्माच्चतुर्भुजेनित्यंसेवनायःसुखेप्सुभिः विहाय केशवादन्यंये सेवन्तेऽल्पमेधसः। संसारचक्रेगहने तेविशन्ति पुनः पुनः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक एवहि सर्वेशो हृषीकेशाः परात्परः । तं सेवमानः सततं सेव्यस्त्रिजगतां भवेत्
एको धर्मप्रदोविष्णुस्त्वेकोबह्वर्थदोहरिः । एकःकामप्रदश्चकीत्वेकोमोक्षप्रदोऽच्युतः
शार्ङ्गिणंये परित्यज्य देवमन्यमुपासते । तेसद्भिश्चबहिष्कार्या वेदहीना यथा द्विजाः
श्रुत्वेतिवाक्यं व्यासस्य नैमिशारण्यवासिनः । प्रवेपमानहृदयाः परिप्रोचुरिदं वचः

ऋषय ऊचुः

पाराशर्यमुने! मान्यस्त्वमस्माकं महामते !।
यतो वेदास्त्वया व्यस्ताः पुराणान्यपि वेत्सि यत् ॥ २१ ॥

यतश्च कर्ता त्वमसि महतोभारतस्य वै । धर्मार्थकाममोक्षाणांविनिश्चयकृतोध्रुवम्
तत्त्वज्ञःकोपरश्चात्रत्वत्तःसत्यवतीसुत ।भवतायत्प्रतिज्ञातंनिश्चित्योत्क्षिप्यतर्जनीम्
अस्मिन्माणवकास्तत्र परिश्रद्दधते नहि । प्रतिज्ञातस्यवचसस्तवश्रद्धाभवेत्तदा ॥

यदाऽऽनन्दवने शम्भोः प्रतिजानासि वै वचः ॥ २५ ॥
गच्छ वाराणसीं व्यास! यत्र विश्वेश्वरः स्वयम् ।
न तत्र युगधर्मोऽस्ति न च लग्ना वसुन्धरा ॥ २६ ॥
इति श्रुत्वा मुनिर्व्यासः किञ्चित्कुपितवद्धृदि ।
जगाम तूर्णं स हितः स्वशिष्यैरयुतोन्मितैः ॥ २७ ॥

प्राप्य वाराणसींव्यासःस्नात्वापञ्चनदेह्रदे । श्रीमन्माधवमभ्यर्च्ययौपादोदकं ततः
यत्र स्नानादिकं कृत्वाद्दृष्ट्वा चैवादिकेशवम् । पञ्चरात्रंततः कृत्वावैष्णवैरभिनन्दितः
अग्रतः पृष्ठतः शङ्खैर्वाद्यमानैः प्रमोदितः । जयविष्णो हृषीकेश गोविन्दमधुसूदन!॥
अच्युतानन्तवैकुण्ठमाधवोपेन्द्र! केशव !। त्रिविक्रम गदापाणे शार्ङ्गपाणे जनार्दन ॥
श्रीवत्सवक्षः श्रीकान्तपीताम्बरमुरान्तक । कैटभारेबलिध्वंसिन्कंसारेकेशिसूदन ॥
नारायणाऽसुररिपो कृष्ण शौरे ! चतुर्भुज ! । देवकीहृदयानन्द! यशोदानन्दवर्धन
पुण्डरीकाक्ष! दैत्यारे !दामोदरबलप्रिय । बलारातिस्तुत हरे! वासुदेव! वसुप्रद !॥
विष्वक्सेनप्रभूस्ताक्ष्यरथ वनमालिन्नरोत्तम । अधोक्षज क्षमाधार पद्मनाभजलेशय ॥
नृसिंह यज्ञवाराह! गोपगोपालवल्लभ !। गोपीपते गुणातीत गरुडध्वज गोत्रभृत् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय चाणूरमथन! जयत्रैलोक्यरक्षण !। जयानाद्य जयानन्द जयनीलोत्पलद्युते ॥
कौस्तुभोद्भूषितोरस्क पूतनाधातुशोषण । रक्ष रक्षजगद्रक्षामणे!नरकहारक ॥ ३८॥
सहस्रशीर्षपुरुष पुरुहूतसुखप्रद । यद्भूतं यच्च भाव्यं वैतत्रैकःपुरुषो भवान् ॥ ३६ ॥
इत्यादिनाममालाभिःसंस्तुवन्वनमालिनम् ।स्वच्छन्दलीलयागायन्नृत्यंश्चपरयामुदा
व्यासो विश्वेशभवनं समायातः सहृष्टवत् । ज्ञानवापीपुरोभागे महाभागवतैः सह
विराजमानसत्कण्ठस्तुलसीवरदामभिः । स्वयं तालधरो जातःस्वयं जातःसुनर्तकः
वेणुवादनतत्त्वज्ञः स्वयं श्रुतिधरोऽभवत् । नृत्यंपरिसमाप्येत्थंव्यासःसत्यवतीसुतः
पुनरूर्ध्वंभुजंकृत्वा दक्षिणंशिष्यमध्यगः । पुनः पपाठ तानेवश्लोकान्गायन्निवोच्चकैः
परिनिर्मथ्य वाग्जालं सुनिश्चित्याऽसकृद्बहु । इदमेकंपरिज्ञातं सेव्यः सर्वेश्वरो हरिः

इत्यादिऽश्लोकसङ्घातं स्वप्रतिज्ञाप्रबोधकम् ।
यावत्पठति स व्यासः सव्यमुत्क्षिप्य वै भुजम् ॥ ४६ ॥
तस्तम्भ तावत्तद्बाहुं सशैलादिः स्वलीलया ।
वाक्स्तम्भश्चाऽपि यस्यासीन्मुनेर्व्यासस्य सन्मुने !॥ ४७ ॥

यतोगुप्तं समागम्यविष्णुर्व्यासमभाषत । अपराद्धं महच्चाऽत्रभवता व्यासनिश्चितम्
तवैतदपराधेन भीतिर्मेऽपि महत्तरा । एक एव हि विश्वेशो द्वितीयो नास्ति कश्चन
तत्प्रसादादहञ्चक्री लक्ष्मीशस्तत्प्रभावतः । त्रैलोक्यरक्षासामर्थ्यं दत्तं तेनैव शम्भुना
तद्भक्त्यापरमैश्वर्यं मया लब्धं वरात्ततः । इदानींस्तुहि तंशम्भुं यदिमेशुभमिच्छसि
अन्यदापि नवै कार्याभवताशेमुषीदृशी । पाराशर्य इति श्रुत्वा सञ्ज्ञयाव्याजहारह ॥

भुजस्तम्भः कृतस्तेन नन्दिना दृष्टिमात्रतः ।
वाक्स्तम्भस्तद्भयाज्जातः स्पृश मे कण्ठकन्दलीम् ॥ ५३ ॥

यथास्तोतुम्भवानीशं प्रभवामिभवान्तकम् । संस्पृश्यविष्णुस्तत्कण्ठंगुप्तमेवजगामह
ततः सत्यवतीसूनुस्तथा स्तम्भितदोर्लतः । प्रारब्धवान्महेशानं परिष्टोतु मुदारधीः

व्यास उवाच

एको रुद्रो न द्वितीयो यतस्तद्ब्रह्मैवैकं नेह नानास्ति किञ्चित् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यद्यप्यन्यः कोऽपि वा कुत्रचिद्वा व्याचष्टान्तद्यस्य शक्तिर्मदग्रे ॥ ५६ ॥
यः क्षीराब्धेर्मन्दरावातजातो ज्वालामाली कालकूटोऽतिभीमः ।
तं सोढुं वा कोऽपरोऽभून्महेशाद्यत्कीलाभिः कृष्णतामाप विष्णुः ॥ ५७ ॥
यद्बाणोऽभूच्छ्रीपतिर्यस्य यन्ता लोकेशो यत्स्यन्दनम्भूःसमस्ता ।
वाहा वेदा यस्य येनेषुपाताद्दग्धा ग्रामास्त्रैपुरास्तत्समः कः ॥ ५८ ॥
यं कन्दर्पो वीक्षमाणः समानं देवैरन्यैर्भस्मजातः स्वयं हि ।
पौष्पैर्बाणैः सर्वविश्वैकजेता को वा स्तुत्यः कामजेतुस्ततोऽन्यः ॥ ५९ ॥
यं वै वेदो वेद नो नैव विष्णुर्नोवा वेधा नो मनो नैव वाणी ।
तं देवेशं मादृशः कोऽल्पमेधा याथात्म्याद्वै वेत्त्यहो विश्वनाथम् ॥ ६० ॥
यस्मिन्सर्वं यस्तु सर्वत्र सर्वो यो वै कर्ता योऽविता योऽपहर्ता ।
नोयस्यादिर्यः समस्तादिरेको नोयस्याऽन्तो योऽन्तकृत्तं नतोऽस्मि ॥ ६१ ॥
यस्यैकाख्या वाजिमेधेन तुल्या यस्या नत्या चैकयाल्पेन्द्रलक्ष्मीः ।
यस्य स्तुत्या लभ्यते सत्यलोकायस्यार्चातो मोक्षलक्ष्मीरदूरा ॥ ६२ ॥
नान्यं देवं वेद्म्यहं श्रीमहेशान्नान्यं देवं स्तौमि शम्भोर्ऋतेऽहम् ।
नान्यं देवं वा नमामि त्रिनेत्रात्सत्यं सत्यं सत्यमेतन्मृषा न ॥ ६३ ॥
इत्थं यावत्स्तौति शम्भुं महर्षिस्तावन्नन्दी शाम्भवाद्दृक्प्रसादात् ।
तद्दोःस्तम्भं त्यक्तवांश्चाऽऽवभाषे स्मायं स्मायंब्राह्मणेभ्यो नमो वः ॥ ६४॥

नन्दिकेश्वर उवाच

इदं स्तवम्महापुण्यंव्यासते परिकीर्तितम् । यःपठिष्यतिमेधावी तस्यतुष्यतिशङ्करः
व्यासाष्टकमिदम्प्रातः पठितव्यंप्रयत्नतः । दुःस्वप्नपापशमनं शिवसान्निध्यकारकम्
मातृहा पितृहा वाऽपि गोघ्नो बालघ्न एव वा ।
सुरापी स्वर्णहृद्वाऽपि निष्पापोऽस्याःस्तुतेर्जपात् ॥ ६७ ॥

स्कन्द उवाच

पाराशर्यस्तदारभ्य शम्भुभक्तिपरोऽभवत् । लिङ्गंव्यासेश्वरंस्थाप्यघण्टाकर्णह्रदाग्रतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विभूतिभूषणो नित्यंनित्यं रुद्राक्षभूषणः। रुद्रसूक्तपरोनित्यंनित्यंलिङ्गार्चकोऽभवत्
सकृत्वाक्षेत्रसंन्यासंत्यजेन्नाद्यापिकाशिकाम्। तत्त्वंक्षेत्रस्यविज्ञायनिर्वाणपददायिनः
घण्टाकर्णह्रदं स्नात्वाद्दृष्ट्वाव्यासेश्वरं नरः। यत्रकुत्रमृतोवापिवाराणस्यांमृतोऽभवत्
काश्यांव्यासेश्वरंलिङ्गंपूजयित्वानरोत्तमः। नज्ञानाद्भ्रश्यते क्वापिपातकैर्नाभिभूयते
व्यासेश्वरस्ययेभक्तानतेषांकलिकालतः। न पापतो भयं क्वापि न चक्षेत्रोपसर्गतः
व्यासेश्वरःप्रयत्नेन द्रष्टव्यःकाशिवासिभिः। घण्टाकर्णकृतस्नानैःक्षेत्रपातकभीरुभिः

इति श्रीस्कान्देमहापुराणएकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्ड
उत्तरार्धेव्यासभुजस्तम्भो नामपञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

षण्णवतितमोऽध्यायः

व्यासशापविमोक्षणम्

अगस्त्य उवाच

कृष्णद्वैपायनः स्कन्द! शम्भुभक्तिपरो यदि। यदि क्षेत्ररहस्यज्ञः क्षेत्रसंन्यासकृद्यदि
तथादृष्टप्रभावश्चेत्तथा चेज्ज्ञानिनांवरः। पुरीं वाराणसीं श्रेष्ठां कथं किल शपिष्यति

स्कन्द उवाच

सत्यमेतत्त्वयाऽऽपृच्छि कथयामि मुने! शृणु।
तस्य व्यासस्य चरितं भविष्यं त्वयि पृच्छति ॥ ३ ॥

यदारभ्यमुनेस्तस्य नन्दीस्तम्भितवान्भुजम्। तदारभ्यमहेशानंसंस्तौतिपरमादृतः

काश्यान्तीर्थान्यनेकानि काश्यां लिङ्गान्यनेकशः।
तथापि सेव्यो विश्वेशः स्नातव्या मणिकर्णिका ॥ ५ ॥
लिङ्गेष्वेको हि विश्वेशस्तीर्थेषु मणिकर्णिका।
इति संव्याहरन्व्यासस्तद्द्वयम्बहु मन्यते ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्यक्त्वा सबहुवाग्जालंप्रातः स्नात्वादिनेदिने । निर्वाणमण्डपेवक्तिमहिमानंमहेशितुः
शिष्याणाम्पुरतोनित्यं क्षेत्रस्यमहिमामहान् । व्याख्यायतेमुदातेनव्यासेनपरमर्षिणा
अत्रयत्क्रियतेक्षेत्रेशुभं चाऽशुभमेव वा । संवर्तेऽपिनतस्यान्तस्तस्माच्छ्रेयःसमाचरेत्

क्षेत्रसिद्धिं समीहन्ते ये चाऽत्र कृतिनो जनाः ।
यावज्जीवं न तैस्त्याज्या सुधीभिर्मणिकर्णिका ॥ १० ॥
चक्रपुष्करिणीतीर्थे स्नातव्यं प्रतिवासरम् ।
पुष्पैः पत्रैः फलैस्तोयैरर्च्यो विश्वेश्वरः सदा ॥ ११ ॥

स्ववर्णाश्रमधर्मश्च त्यक्तव्योनमनागपि । प्रत्यहं क्षेत्रमहिमाश्रोतव्यः श्रद्धयाऽसकृत्
यथाशक्तिचदेयानिदानान्यत्र सुगुप्तवत् । अन्नान्यपि चदेयानिविघ्नान्परिजिहीर्षुणा
परोपकारणश्चात्र कर्तव्यंसुधिया सदा । पर्वस्वपिविशेषेणस्नानदानादिकाःक्रियाः
विशेषपूजाकर्तव्यासुमहोत्सवपूर्वकम् । कार्यास्तथाधिकायात्राःसमर्च्याःक्षेत्रदेवताः
अत्र मर्म न वक्तव्यं सुधिया कस्यचित्क्वचित् । परदारपरद्रव्यपरापकरणन्त्यजेत्
परापवादोनोवाच्यः परेर्ष्यांन च कारयेत् । असत्यं नैव वक्तव्यम्प्राणैः कण्ठगतैरपि
अत्र त्यजन्तु रक्षार्थमसत्यमपि भाषयेत् । येन केन प्रकारेण शुभेनाप्यशुभेन वा ॥
अत्रत्यःप्राणिमात्रोऽपिरक्षणीयःप्रयत्नतः । एकस्मिन्रक्षिते जन्तावत्रकाश्यांप्रयत्नतः

त्रैलोक्यरक्षणात्पुण्यं यत्स्यात्तत्स्यान्न संशयः ।
ये वसन्ति सदा काश्यां क्षेत्रसंन्यासकारिणः ॥ २० ॥
त एव रुद्रा मन्तव्या जीवन्मुक्ता न संशयः ।
ते पूज्यास्ते नमस्कार्यास्ते सन्तोष्याः प्रयत्नतः ।
तेषु वै परितुष्टेषु तुष्येद्विश्वेश्वरः स्वयम् ॥ २१ ॥

काश्यांवसन्तियेमर्त्यादूरस्थैरपिसन्नरैः । योगक्षेमोविधातव्यस्तेषांविश्वेशितुर्मुदे

प्रसरस्त्विन्द्रियाणां च निवार्योऽत्र निवासिभिः ।
मनसोऽपि हि चाञ्चल्यमिह वार्यम्प्रयत्नतः ॥ २३ ॥
मरणं नाभिकाङ्क्षेद्धि काङ्क्ष्यो मोक्षोऽपि नो पुनः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शरीरशोषणोपायः कर्तव्यः सुधिया न हि ॥ २४ ॥
शरीरसौष्ठवं काङ्क्ष्यं व्रतस्नानादिसिद्धये । आयुर्वद्धत्रवै चिन्त्यंमहाफलसमृद्धये ॥
आत्मरक्षाऽत्रकर्तव्या महाश्रेयोभिवृद्धये । अत्रात्मत्यजनोपायंमनसापिनचिन्तयेत्
एकस्मिन्नपि यच्चाह्नि काश्यां श्रेयोऽभिलभ्यते ।
न तु वर्षशतेनापि तदन्यत्राऽऽप्यते क्वचित् ॥ २७ ॥
अन्यत्र योगाभ्यसनाद्यावज्जन्मयदर्ज्यते । वाराणस्यां तदेकेन प्राणायामेन लभ्यते
सर्वतीर्थावगाहाच्च यावज्जन्मयदर्ज्यते । तदानन्दवने प्राप्यं मणिकर्ण्येकमज्जनात्
सर्वलिङ्गार्चनात्पुण्यं यावज्जन्म यदर्ज्यते । सकृद्विश्वेशमभ्यर्च्यश्रद्धयातदवाप्यते
यजन्मनां सहस्रेण निर्मलम्पुण्यमर्जितम् । तत्पुण्यपरिवर्तेन भवेद्विश्वेशदर्शनम् ॥
गवांकोटिप्रदानेन सम्यग्दत्तेनयत्फलम् । तत्फलंसम्यगाप्येतविश्वेश्वरविलोकनात्
यत्षोडशमहादानैः पुण्यम्प्रोक्तम्महर्षिभिः । तत्पुण्यंजायतेपुंसांविश्वेशेपुष्पदानतः
अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्यत्फलम्प्राप्यतेऽखिलैः । पञ्चामृतानांस्नपनाद्विश्वेशे तदवाप्यते
वाजपेयसहस्रेण सम्यगिष्टेन यत्फलम् । सकृन्महार्हैर्नैवेद्यैर्विश्वेशे तच्छताधिकम्
ध्वजातपत्रं च मरं विश्वेशे यः समर्पयेत् । एकच्छत्रं सवै राज्यंप्राप्नुयाद्वसुधातले॥
महापूजोपकरणं योऽर्पयेद्विश्वभर्तरि । न तं सम्पत्तिसम्भाराविमुञ्चन्तीह कुत्रचित्
सर्वर्तकुसुमाढ्याञ्च यः कुर्यात्पुष्पवाटिकाम् ।
तदङ्गणे कल्पवृक्षाश्छायां कुर्वन्ति शीतलाम् ॥ ३८ ॥
यः क्षीरस्नपनार्थं वै विश्वेशे धेनुमर्पयेत् । क्षीरार्णवतटे तस्यनिवसेयुः पितामहः
विश्वेशराजसदनेयःसुधांचित्रमेव वा । कारयेत्तस्य भवनं कैलासे चित्रितम्भवेत्
ब्राह्मणान्यतिनो चापितथैवशिवयोगिनः । भोजयेद्योत्रवैकाश्यामेकैकगणनाक्रमात्
कोटिभोज्यफलन्तस्य श्रद्धयानात्र संशयः । तपस्त्वत्र प्रकर्तव्यंदानमत्र प्रदापयेत्
विश्वेशस्तोषणीयोत्रस्नानहोमजपादिभिः ।अन्यत्रकोटिजप्येनयत्फलम्प्राप्यतेनरैः
अष्टोत्तरशतंतप्त्वा तदत्र समवाप्यते ॥ ४३ ॥
कोटिहोमेन यत्प्रोक्तं फलमन्यत्र सूरिभिः । अष्टोत्तराहुतिशतात्तदत्रानन्दकानने ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यो जपेद्रुद्रसूक्तानि काश्यां विश्वेशसन्निधौ ।
पारायणेन वेदानां सर्वेषां फलमाप्यते ॥ ४५ ॥
तस्य पुण्यं न जानामि चिन्तिते चाक्षरे परे । काश्यां नित्यं प्रवस्तव्यं सेव्यो चोत्तरवहा सदा
आपद्यपि हि घोरायां काशी त्याज्या न कुत्रचित् ।
यतः सर्वापदां हर्ता त्राता विश्वपतिः प्रभुः ॥ ४७ ॥
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्स्नानदानजपादिभिः ।
यतः काश्यां कृतं कर्म महत्त्वाय प्रकल्पते ॥ ४८ ॥
कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि कर्तव्यानि प्रयत्नतः । तथेन्द्रियविकाराश्च न बाधन्तेऽत्र कर्हिचित्
यदीन्द्रियाणि कुर्वन्ति विक्रियामिह देहिनाम् ।
तदाऽत्र वाससंसिद्धिर्विघ्नेभ्यो नैव लभ्यते ॥ ५० ॥

अगस्त्य उवाच

कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि व्यासो वक्ष्यति यानि वै ।
तेषां स्वरूपमाख्याहि स्कन्देन्द्रियविशुद्धये ॥ ५१ ॥

स्कन्द उवाच

कथयामि महाबुद्धे! कृच्छ्रादीनि तवाग्रतः । यानि कृत्वात्र मनुजो देहशुद्धिं लभेत्पराम्
एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च । उपवासेन चैकेन पादकृच्छ्रः प्रकीर्तितः ॥
वटोदुम्बरराजीवबिल्वपत्रकुशोदकम् । प्रत्येकं प्रत्यहम्पीतं पर्णकृच्छ्रः प्रकीर्तितः
पिण्याकघृततक्राम्बुसक्तूनाम्प्रतिवासरम् । एकैकमुपवासश्च कृच्छ्रः सौम्यः प्रकीर्तितः
हविष्याप्रातरश्नीतहविष्यासायमेव च । हविषा याचितं त्रींस्तु सोपवासस्त्र्यहं वसेत्
एकैकं ग्रासमश्नीयादहानि त्रीणि पूर्ववत् ।
त्र्यहञ्चोपवसेदन्त्यमतिकृच्छ्रश्चरन्द्विजः ॥ ५७ ॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्रम्पयसा दिवसानेकविंशतिः । द्वादशाहोपवासेन पराकः परिकीर्त्तितः
त्र्यहम्प्रातस्त्र्यहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितम् । त्र्यहञ्चोपवसेदन्त्यं प्राजापत्यश्चरन्द्विजः
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सान्तपनः स्मृतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पृथक्सान्तपनद्रव्यैः षडहः सोपवासकः । सप्ताहेनतुकृच्छ्रोऽयं महासान्तपनःस्मृतः

तप्तकृच्छ्रञ्चरन्विप्रो जलक्षीरघृतानिलान् ।
एतांस्त्र्यहम्पिबेदुष्णान्सकृत्स्नायी समाहितः ॥ ६२ ॥
त्र्यहमुष्णाः पिबेदापस्त्र्यहमुष्णम्पयः पिबेत् ।
त्र्यहमुष्णं घृतम्प्राश्य वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥ ६३ ॥

पलमेकम्पयः पीत्वा सर्पिषश्च पलद्वयम् । पलमेकं तु तोयस्य तप्तकृच्छ्र उदाहृतः ॥
गोमूत्रेण समायुक्तं यावकंयःप्रयोजयेत् । कृच्छ्रमेकाह्निकम्प्रोक्तंशरीरस्य विशोधनम्

हस्तावुत्तानतः कृत्वा दिवसम्मारुताशनः ।
रात्रौ जले स्थितोऽव्युष्टः प्राजापत्येन तत्समम् ॥ ६६ ॥

एकैकं ह्रासयेद्ग्रासं कृष्णे शुक्लेचवर्धयेत् । उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणंस्मृतम्
एकैकंवर्धयेद् ग्रासंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् । भुञ्जीतदर्शेनोकिञ्चिदेषचान्द्रायणोविधिः
चतुरःप्रातरश्नीयात्पिण्डान्विप्रःसमाहितः ।चतुरोस्तमितेसूर्येशिशुचान्द्रायणंस्मृतम्

अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्मध्यन्दिने स्थिते ।
नियतात्मा हविष्यस्य यतिचान्द्रायणं स्मृतम् ॥ ७० ॥
यथा कथञ्चित्पिण्डानां तिस्रोऽशीतीः समाहितः ।
मासेनाश्नन्हविष्यस्य चन्द्रस्यैति सलोकताम् ॥ ७१ ॥
अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति ।
विद्यातपोभ्याम्भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥ ७२ ॥

तच्चज्ञानम्भवेत्पुंसांसम्यक्काशीनिषेवणात् ।काशींनिषेवणेनस्याद्विश्वेशकरुणोदयः
ततोमहोदयावाप्तिः कर्मनिर्मूलनक्षमा । अतः कश्यास्प्रयत्नेन स्नानं दानं तपो जपः

व्रतं पुराणश्रवणं स्मृत्युक्ताध्वनिषेवणम् ।
प्रतिक्षणं प्रतिदिनं विश्वेशपदचिन्तनम् ॥ ७५ ॥
लिङ्गार्चनं त्रिकालं च लिङ्गस्यापि प्रतिष्ठितिः ।
साधुभिः सहसँल्लापो जल्पः शिवशिवेति च ॥ ७६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अतिथेश्चापि सत्कारो मैत्रीतीर्थनिवासिभिः।
आस्तिक्यबुद्धिर्विनयो मानामानसमानधीः॥ ७७॥
अकामितात्वनौद्धत्यमरागित्वमहिंसनम्। अप्रतिग्रहवृत्तिश्च मतिश्चानुग्रहात्मिका
अदम्भिता त्वमात्सर्यमप्रार्थितधनागमः। अलोभित्वमनालस्यमपारुष्यमदीनता॥
इत्यादि सत्प्रवृत्तिश्च कर्तव्याक्षेत्रवासिना। प्रत्यहं चेतिशिष्येभ्यःसधर्ममुपदेक्ष्यति
नित्यं त्रिषवणस्नायी नित्यं भिक्षाकृताशनः।
लिङ्गपूजार्चको नित्यमित्थं व्यासोऽवसत्पुरा॥ ८१॥
एकदातस्य जिज्ञासां कर्तुं देवीं हरोऽवदत्। अद्यभिक्षाटनं प्राप्ते व्यासे परमधार्मिके
अपिसर्वगतेकापिभिक्षां मायच्छसुन्दरि!। तथेत्युक्त्वाभवानीसा भवंभवनिवारणम्
नमस्कृत्यप्रतिगृहंतस्यभिक्षांन्यषेधयत्। समुनिःसहितः शिष्यैर्भिक्षामप्राप्यदूनवत्
वेलातिक्रममालोक्य पुनर्बभ्रामतांपुरीम्। गृहेगृहे परिप्राप्ता भिक्षान्यैः सर्वभिक्षुकैः
तदह्निनालभद्भिक्षांसशिष्यःसमुनिःक्वचित्। अथसायंतनंकर्म कृत्वाछात्रैःसमन्वितः
उपोषणपरो भूत्वा तथैवासीदहर्निशम्।
तथान्येद्युर्मुनिर्व्यासः कृत्वा माध्याह्निकं विधिम्॥ ८७॥
ययौ भिक्षाटनं कर्तुं सशिष्यःपरितःपुरीम्। सर्वत्र सपरिभ्रान्तः प्रतिसौधंमुहुर्मुहुः
न क्वापि लब्धवान्भिक्षाम्भाग्यहीनो धनं यथा।
अथ चिन्तितवान्व्यासः परिश्रान्तः परिभ्रमन्॥ ८६॥
कोहेतुर्यन्नलभ्येतभिक्षायत्नेनरक्षिता। अन्तेवासिन आहूयव्यासःपप्रच्छचाखिलान्
भवद्भिरपि नोभिक्षा परिप्राप्तेति गम्यते। किमत्र पुरि सम्वृत्तं द्वित्रायातममाज्ञया
द्वितीयेऽह्न्यपियद्भिक्षानलभ्येतातियत्नतः। अनिष्टं किञ्चिदत्रासीन्महागुरुनिपातजम्
अन्नक्षयोवासर्वस्यांनगर्यामभवत्क्षणात्। राजदण्डोऽथयुगपज्जातःसर्वपुरौकसाम्
अथवावारिताभिक्षाकेनाप्यस्मासुचेर्ष्यया। पुरौऽसोभवन्दुस्थास्तूपसर्गेणकेनचित्
किमेतदखिलं ज्ञात्वासमागच्छतसत्वरम्। द्वित्राः पवित्रचरणात्प्राप्यानुज्ञां गुरोरथ
समाचख्युः समागम्य दृष्ट्वर्धि तत्पुरौकसाम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुण्यशालसुशीलाभ्यां गणाभ्यां च विराजितम् ।
चतुर्भुजाभ्यां स्वास्याभ्यां किङ्किणीजालमालितम् ॥ १३४ ॥
तद्विमानमथारुह्य पीतवासाश्चतुर्भुजः । अलश्चक्रे नभोवर्त्म सद्विजो दिव्यभूषणः
इति श्रीस्कान्देमहापुराण एकाशीतिसाहस्त्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्डे
सप्तपुरीवर्णनेशिवशर्मविप्रकथानकवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः

यमलोकवर्णनम्

लोपामुद्रोवाच

जीवितेश ! कथामेतां पुण्यां पुण्यपुरीश्रिताम् ।
न तृप्तिमधिगच्छामि श्रुत्वा त्वच्छ्रीमुखेरिताम् ॥ १ ॥
मायापुर्यांमुक्तिपुर्यांशिवशर्माद्विजोत्तमः । मृतोपिमोक्षंनैवाप ब्रूहितत्कारणम्विभो!

अगस्त्य उवाच

साक्षान्मोक्षोनचैतासुपुरीषु प्रियभाषिणि !। पुरोद्दिश्यामुमेवार्थमितिहासोमयाश्रुतः
श्रणु कान्ते! विचित्रार्थां कथां पापप्रणाशिनीम् ।
पुण्यशीलसुशीलाभ्यां कथितां शिवशर्मणे ॥ ४ ॥

शिवशर्मोवाच

अयिविष्णुगणौ पुण्यौ पुण्डरीकदलेक्षणौ । किञ्चिद्विज्ञप्तुकामोऽहंप्रबद्धकरसम्पुटः
ननाम युवयोर्वेद्मि वेद्म्याकृत्याचकिञ्चन । पुण्यशीलसुशीलाख्यौयुवांभवितुमर्हथः

गणावूचतुः

भगवद्भक्तियुक्तानां किमज्ञातं भवादृशाम् । एतदेव हि नौ नाम यदुक्तं श्रीमता त्वया
यदन्यदपि ते चित्ते प्रष्टव्यं तदशङ्कितम् । सम्प्रच्छस्वमहाप्राज्ञ! प्रीत्यातत्प्रब्रुवावहे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इति श्रुत्वास वचनं भगवद्गणभाषितम् । अतिप्रीतिकरं हृद्यं ततस्तौप्रत्युवाचह ॥

दिव्यद्विज उवाच

क एष लोकोऽल्पश्रीकःस्वल्पपुण्यजनाकृतिः । कइमेविकृताकाराव्रूतमेतन्ममाग्रतः

गणावूचतुः

अयंपिशाचलोकोत्रवसन्तिपिशिताशनाः । दत्त्वानुतापभाजोयेनोनो कृत्वाददत्यपि

शिवं प्रसङ्गतोऽभ्यर्च्य सकृत्त्वशुचिचेतसः ।

अल्पपुण्याल्पलक्ष्मीकाःपिशाचास्तइमे सखे !॥ १२ ॥

ततो गच्छन्ददर्शाग्रे हृष्टपुष्टजनावृतम् । पिचण्डिलैःस्थूलवक्त्रैर्मेघगम्भीरनिःस्वनैः

लोकैरध्युषितंलोकं श्यामलाङ्गैश्च लोमशैः ।

गणौ कथयतां केऽमी को लोकःपुण्यतःकुतः ॥ ॥ १४ ॥

गणावूचतुः

गुह्यकानामयंलोकस्त्वेतेवैगुह्यकास्मृताः । न्यायेनोपाज्र्यवित्तानिगूहयन्तिचयेभुवि

स्वमार्गगा धनाढ्याश्च शूद्रप्रायाःकुटुम्बिनः ।

संविभज्य च भोक्तारः क्रोधासूयाविवर्जिताः ॥ १६ ॥

न तिथिर्नैववारञ्च संक्रान्त्या दिन पर्वच । नाधर्मं न च धर्मञ्चविदन्त्येतेसदासुखाः

एकमेव हि जानन्ति कुलपूज्यो हि यो द्विजः ।

तस्मै गाः सम्प्रयच्छन्ति मन्यन्ते तद्वचः स्फुटम् ॥ १८ ॥

समृद्धिभाजो ह्यत्रापि तेनपुण्येनगुह्यकाः । भुञ्जते स्वर्गसौख्यानिदेववच्चाकुतोभयाः

ततो विलोकयामास लोकं लोचनशर्मदम् ।

केऽमी जनास्त्वसौ लोकः किंनामावदतां गणौ !॥ २० ॥

गणावूचतुः

गान्धर्वस्त्वेष लोकोऽमी गन्धर्वाश्चशुभव्रताः ।

देवानां गायना ह्येते चारणाः स्तुतिपाठकाः ॥ २१ ॥

गीतज्ञाअतिगीतेनतोषयन्तिनराधिपान् । स्तुवन्तिचधनाढ्यांश्चधनलोभेनमोहिताः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राज्ञां प्रसादलब्धानि सुवासांसि धनान्यपि ।
द्रव्याण्यपि सुगन्धीनि कर्पूरादीन्यनेकशः ॥ २३ ॥
ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छन्तिगीतंगायन्त्यहर्निशम् । श्रुतावेवमनस्तेषांनाट्यशास्त्रकृतश्रमाः
तेन पुण्येन गान्धर्वो लोकस्त्वेषां विशिष्यते ।
ब्राह्मणास्तोषिता यद्वै गीतविद्यार्जितैर्धनैः ॥ २५ ॥
गीतविद्याप्रभावेन देवर्षिर्नारदो महान् । मान्योवैष्णवलोकेवै श्रीशम्भोश्चातिवल्लभः
तुम्बुरुर्नारदश्चोभौ देवानामतिदुर्लभौ । नादरूपीशिवः साक्षान्नादतत्त्वविदौहितौ
यदि गीतंकचिद्गीतं श्रीमद्धरिहरान्तिके । मोक्षस्तुतत्फलंप्राहुः सान्निध्यमथवातयोः
गीतज्ञो यदि गीतेन नाप्नोति परमम्पदम् । रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते
अस्मिँल्लोके सदाकालं स्मृतिरेषा प्रगीयते । तद्गीतमालया पूज्यौ देवौहरिहरौसदा
इतिशृण्वन्क्षणात्प्रापपुनरन्यन्मनोहरम् । शिवशर्माथपप्रच्छकिंसञ्ज्ञं नगरन्त्विदम्

गणावूचतुः

असौवैद्याधरोलोको नानाविद्याविशारदाः । एतेविद्यार्थिनामन्नमुपानद्वस्त्रकम्बलम्
औषधान्यपि यच्छन्ति तत्पीडाशमनानि हि ।
नानाकलाः शिक्षयन्ति विद्यागर्वविवर्जिताः ॥ ३३ ॥
शिष्यंपुत्रेणपश्यन्ति वस्त्रताम्बूलभोजनैः । अलङ्कृताश्चसत्कन्याधर्माद्वुद्वाहयन्तिच
अभिलाषधिया नित्यं पूजयन्तीष्टदेवताः । एतैःपुण्यैर्वसन्तीह विद्याधरवराइमे ॥
यावदित्थं कथां चक्रुस्तावत्संयमिनीपतिः ।
धर्मराजोऽभिसम्प्राप्तो देवदुन्दुभिनिःस्वनैः ॥ ३६ ॥
सौम्यमूर्तिर्विमानस्थो धर्मज्ञैःपरिवारितः । सेवाकर्मसु चतुरैर्भृत्यैस्त्रिचतुरैः सह

धर्मराज उवाच

साधुसाधुमहाबुद्धे!शिवशर्मन्!द्विजोत्तम !। कुलोचितंब्राह्मणानांभवताप्रतिपादितम्
वेदाभ्यासः कृतःपूर्वं गुरवश्चापितोषिताः । धर्मशास्त्रपुराणेषु दृष्टोधर्मस्त्वयाऽऽदृतः
क्षालितं मुक्तिपुर्यद्भिराशुगन्तृशरीरकम् । कोविदोऽस्तिभवानेव जीवितेजीवितेतरे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कलेवरंपूतिगन्धि सदैवाशुचिभाजनम् । सुतीर्थपुण्यपण्येन सम्यग्विनिमितं त्वया
अतएवहिपाण्डित्यमाद्रियन्ते विचक्षणाः । अहःक्षेपंन क्षिपन्तिक्षणमेकंहिते बुधाः
निमेषान्पञ्चषान् मर्त्ये प्राणन्ति प्राणिनो ध्रुवम् ।
तत्राऽपि न प्रवर्तेयुरवकर्मणि गर्हिते ॥ ४३ ॥
स्थिरापायः सदाकायो नधनं निधनेऽवति । तन्मूढःप्रौढकार्ये किं नयतेतभवानिव
सत्वरङ्गत्वरञ्चायुर्लोकः शोकसमाकुलः । तस्माद्धर्मेमतिःकार्या भवतेवसुधार्मिकैः
सत्कर्मणोविपाकोऽयं तववन्द्यौममाप्यहो । यदेतौभगवद्भक्तौ सखित्वंभवतोगतौ
ममाज्ञादीयतां तस्मात्साहाय्यंकरवाणिकिम् । यत्कर्तव्यंमादृशैस्तेतत्कृतंभवतैवहि
अद्य धन्यतरोऽस्मीह यद्दृष्टौ भगवद्गणौ । सेवा सदैवमे ज्ञाप्याश्रीमच्चरणसन्निधौ
ततः प्रस्थापितस्ताभ्यां प्राविशत्स्वपुरीं यमः ।
अप्राक्षीच्च ततो विप्रस्तौ गणौ प्रस्थिते यमे ॥ ४६ ॥

शिवशर्मोवाच

साक्षादयं धर्मराजो ननुसौम्यतराकृतिः । धर्माण्येववचांस्यस्यमनःप्रीतिकराणिच
पुरी संयमनीसेयमतीव शुभलक्षणा । आकर्ण्यंयस्यनामापिपापिनोऽतीवबिभ्यति
यमरूपं वर्णयन्ति मर्त्यलोकेऽन्यथाजनाः । अन्यथाऽयं मयादृष्टो ब्रूतंतत्कारणंगणौ
के न पश्यन्त्यमुं लोकं निवसन्ति तथाऽत्र के ।
इदमेवास्य किं रूपं किञ्चान्यच्च निवेद्यताम् ॥ ५३ ॥

गणावूचतुः

शृणु सौम्य! सुसौम्योऽसौ दृश्यतेऽत्र भवादृशैः ।
धर्ममूर्तिः प्रकृत्यैव निःशङ्कैः पुण्यराशिभिः ॥ ५४ ॥
अयमेव हि पिङ्गाक्षः क्रोधरक्तान्तलोचनः । दंष्ट्राकरालवदनो विद्युल्ललनभीषणः ॥
उर्ध्वकेशोऽतिकृष्णाङ्गः प्रलयाम्बुदनिःस्वनः ।
कालदण्डोद्यतकरो भ्रूकुटीकुटिलाननः ॥ ५६ ॥
आनयैनं पातयैनं बधानामुञ्चदुर्दम! । घातयेनं सुदुर्वृत्तं मूर्ध्नि तीव्रमयोघनैः ॥५७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आताडयैनं दुर्वृत्तं धृत्वा पादौ शिलातले । उत्पाटयास्य नेत्रे त्वं निधायचरणं गले
एतस्यगल्लावुत्फुल्लौ क्षुरेणाशुविपाटय । पाशेन कण्ठं बद्ध्वास्य समुल्लम्बय भूरुहे
विदारयास्य मूर्धानं करपात्रेणदारुवत् । पार्ष्णिघातैर्घ्नतास्यास्यं समुच्चूर्णयदारुणैः
परदारप्रसृमरं करं छिन्ध्यस्य पापिनः । परदारगृहं यातुः पादौ चास्यविखण्डय ॥
सूचीभी रोमकूपेषु तनुं व्यधिहि सर्वतः । दातुः परकलत्राङ्गे नखपङ्क्तीर्दुरात्मनः
परदारमुखाघ्रातुर्मुखे निष्ठीवयास्य हि । वक्तुःपरापवादस्य कीलं तीक्ष्णंमुखेक्षिप
भर्जयैनश्चणकवत्ततवालुककर्परैः । भ्राष्ट्रे विकटवक्त्रत्वं परसन्तापकारिणम् ॥६४

दोषारोपं सदा कर्तुरदोषे क्रूरलोचन !।
निमज्जयास्य वदनं पूयशोणितकर्दमे ॥ ६५ ॥

अदत्तपरवस्तूनां गृह्णतः करपल्लवम् । आप्लुत्याप्लुत्य तैलेन तप्ताङ्गारे पचोत्कट ॥
अपवादं गुरोर्वक्तुर्निन्दाकर्तुः सुपर्वणाम् । तप्तलोहशलाकाश्च मुखेभीषण! निक्षिप
परमर्मस्पृशश्चास्य परच्छिद्रंप्रकाशितुः । सुतप्तायो मयाञ्छङ्कून्सर्वसन्धिषुरोपय

अन्येन दीयमाने स्वे निषेद्धुः पापकारिणः ।
आच्छेत्तुः परवृत्तीनां जिह्वाञ्छिन्ध्यस्य दुर्मुख !॥ ६६ ॥
देवस्वभोक्तुः क्रोडास्य ! ब्राह्मणस्वस्यभोजिनः ।
विदार्योदरमस्याशु विट्कीटैः परिपूरय ॥ ७० ॥

न देवार्थे न विप्रार्थैनातिथ्यर्थेपचेत्क्वचित् । तममुंस्वार्थपक्तारं कुम्भीपाकेपचान्धक
उग्रास्य शिशुहन्तारममुं विश्रम्भघातिनम् । कृतघ्नं नय वेगेन महारौरवरौरवम् ॥
ब्रह्मघ्नं चान्धतामिस्रे सुरापं पूयशोणिते । कालसूत्रे हेमचौरमवीचौगुरुतल्पगम्
तत्संसर्गिणमावर्षमसिपत्रवने तथा । एतान्महापातकिनस्तप्ततैलकटाहके ॥ ७४ ॥

आप्लुत्याप्लुत्य दुर्दंष्ट्र! काकोलैर्लोहतुण्डकैः ।
सन्तोद्यमानान्पापिष्ठान् नित्यं कल्पं निवासय ॥ ७५ ॥

स्त्रीघ्नंगोघ्नं च मित्रघ्नंकूटशाल्मलिपादपे । उल्लम्बयचिरंकालमूर्ध्वपादमधोमुखम्
त्वचमस्य च संदंशैस्त्रोटयत्वं महाभुज !। आश्लेषितुर्मित्रपत्न्याभुजावुत्पाटयाशु च

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ज्वालाकीले महाघोरे नरकेऽमुं निपातय। योवह्निनादाहयति परक्षेत्रं परालयम्॥
कालकूटे च गरदं कूटसाक्ष्याभिवादिनम्। मानकूटं तुलाकूटं कण्ठमोटेन पातय
लालापिवेच दुष्प्रेक्ष्य तीर्थाप्सुष्ठीविनंनय। आमपाकेचगर्भघ्नंशूलपाकेऽन्यतापिनम्
रसविक्रयिणं विप्रमिक्षुयन्त्रे प्रपीडय। प्रजापीडाकरं भूपमन्धकूपे निपातय॥ ८१
गोतिलांश्चतुरङ्गांश्च विक्रेतारंद्विजाधमम्। मातुलान्याःसुरायाश्चविक्रेतारंहलायुध!
मुसलोलूखले वैश्यं कण्डयैनं पुनःपुनः। शूद्रं द्विजावमन्तारं द्विजाग्रे मञ्चसेविनम्

अधोमुखे च नरके दीर्घग्रीव! प्रपीडय॥ ८४॥

शूद्रं ब्राह्मणजेतारं वैश्यं ब्राह्मणमानिनम्। क्षत्रियं याजकञ्चापि विप्रंवेदविवर्जितम्
लाक्षालवणमांसानांसतैलविषसर्पिषाम्। आयुधेक्षुविकाराणांविक्रेतारंद्विजाधमम्
पाशपाणेकशापाणे बद्ध्वैतांश्चरणेदृढम्। घातयन्तौ कशाघातैर्नयतं तप्तकर्दमे
इमांस्त्रियं श्लेषयाशु पुंश्चलींकुलकल्मषाम्। तेनोपपतिना सार्धं तप्तायसमयेन च
स्वयंगृहीत्वा नियमं यस्त्यजेदजितेन्द्रियः। तं प्रापय दुराधर्षं बहुभ्रमरदंशके॥
इत्यादिजल्पन्दुर्वृत्तैःश्रूयते :दूरतोयमः। स्वकर्मशङ्कितैःपापैर्दृश्यतेतिभयङ्करः॥
येप्रजाःपालयन्तीह पुत्रानेवंनिजौरसान्। दण्डयन्तिचधर्मेणभूपास्तेऽस्यसभासदः

वर्णाश्रमाश्च यद्राष्ट्रेऽनुतिष्ठन्ति निजां क्रियाम्।
कालेनापन्ननिधना: भूपास्तेऽस्य सभासदः॥ ९१॥
नैव दीनो न दुर्वृत्तो नापद्ग्रस्तो न शोकभाक्।
येषां राष्ट्रे प्रदृश्यन्तु भूपास्तेऽस्य सभासदः॥ ९३॥

ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःस्वधर्मनिरताःसदा। अन्येपियेसंयमिनःसंयमिन्यांवसन्तिते
उशीनरःसुधन्वा च वृषपर्वा जयद्रथः। रजिःसहस्रजित्कुक्षिर्दृढधन्वा रिपुञ्जयः
युवनाश्वोदन्तवक्त्रो नाभागो रिपुमङ्गलः। करन्धमो धर्मसेनःपरमर्दः परान्तकः॥
एते चान्ये च बहवो राजानोनीतिवर्तिनः। धर्माधर्मविचारज्ञाः सुधर्मायां समासते

अन्यच्च ते प्रवक्ष्यावो ये न पश्यन्ति भास्करिम्।
दण्डपाशोद्यतकरान् दूतानुग्राननान्क्वचित्॥ ९८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोविन्दमाधवमुकुन्दहरेमुरारे! शम्भो! शिवेश! शशिशेखर! शूलपाणे !।
दामोदराच्युत! जनार्दन! वासुदेव! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥
गङ्गाधरान्धकरिपो! हर ! नीलकण्ठ ! वैकुण्ठ ! कैटभरिपो ! कमठाब्जपाणे ! ।
भूतेश!खण्डपरशो! मृड! चण्डिकेश ! त्याज्या भटा य इतिसन्ततमामनन्ति ॥
विष्णो! नृसिंह! मधुसूदन! चक्रपाणे! गौरीपते! गिरिश! शङ्कर! चन्द्रचूड !।
नारायणासुरनिबर्हण! शार्ङ्गपाणे! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १०१ ॥
मृत्युञ्जयोग्रविषमेक्षण! कामशत्रो ! श्रीकान्त!पीतवसनाम्बुदनीलशौरे !।
ईशान!कृत्तिवसन! त्रिदशैकनाथ! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥१०२
लक्ष्मीपते! मधुरिपो! पुरुषोत्तमाद्य ! श्रीकण्ठ! दिग्वसन! शान्तपिनाकपाणे! ।
आनन्दकन्द ! धरणीधर ! पद्मनाभ! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥
सर्वेश्वर! त्रिपुरसूदन! देवदेव! ब्रह्मण्यदेव! गरुडध्वज! शङ्खपाणे! ।
त्र्यक्षोरगाभरणबालमृगाङ्कमौले! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥
श्रीरामराघवरमेश्वर! रावणारे! भूतेश!मन्मथरिपो! प्रमथाधिनाथ! ।
चाणूरमर्दनहृषीकपते!मुरारे! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १०५ ॥
शूलिन्! गिरीश! रजनीशकलावतंस! कंसप्रणाशन! सनातन! केशिनाश !।
भर्ग! त्रिनेत्र! भव!भूतपते! पुरारे! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥१०६
गोपीपते! यदुपते! वसुदेवसूनो! कर्पूरगौर! वृषभध्वज! भालनेत्र! ।
गोवर्द्धनोद्धरण!धर्मधुरीण ! गोप ! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥
स्थाणो! त्रिलोचन! पिनाकधर! स्मरारे! कृष्णानिरुद्ध! कमलाकर!कल्मषारे !
विश्वेश्वर! त्रिपथगार्द्रजटाकलाप! त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥
अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां संदर्भितां ललितरत्नकदम्बकेन ।
सन्नायकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यःकुर्यादिमां स्रजमहो स यमं न पश्येत् ॥
इत्थं द्विजेन्द्रनिजभृत्यगणान् सदैवसंशिक्षयेदवनिगान्सहि धर्मराजः ।
अन्येऽपि ये हरिहराङ्कधराधरायां ते दूरतःपुनरहो परिवर्जनीयाः ॥ ११० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्तिरुवाच

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धां नामावलीं सकलकल्मषबीजहन्त्रीम् ।
धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य नित्यं जपेत्स्तनरसं स पिबेन्न मातुः ॥

इति शृण्वन्कथां रम्यां शिवशर्मा प्रियेऽनघाम् ।
प्रहृष्टवक्त्रः पुरतो ददर्शाप्सरसां पुरीम् ॥ ११२ ॥

इतिश्रीस्कान्देमहापुराण एकाशीतिसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थे काशीखण्डे पूर्वार्द्धे यमलोकवर्णनं नामाऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः

अप्सरःसूर्यलोकवर्णनम्

शिवशर्मोवाच

का इमा रूपलावण्यसौभाग्यनिधयःस्त्रियः ।
दिव्यालङ्कारधारिण्यो दिव्यभोगसमन्विताः ॥ १ ॥

गणावूचतुः

एतावारविलासिन्योयज्ञभाजांप्रियङ्कराः । गीतज्ञा नृत्यकुशलावाद्यविद्याविचक्षणाः
कामकेलिकलाभिज्ञा द्यूतविद्याविशारदाः । रसज्ञा भाववेदिन्यश्चतुराश्चोचितोक्तिषु
नानादेशविशेषज्ञा नानाभाषासु कोविदाः । सङ्केतोदन्तनिपुणानैकाःस्वैरचरामुदा
लीलानर्मसु साभिज्ञाः सुप्रलापेषुपण्डिताः । यूनांमनांसिसततंस्वैर्हावैरमयन्त्यमूः

निर्मथ्यमानात्क्षीरोदात्पूर्वमप्सरसस्त्वमूः ।
निःसृतास्त्रिजगज्जेतुर्मोहनास्त्रं मनोभुवः ॥ ६ ॥

उर्वशीमेनकारम्भाचन्द्रलेखातिलोत्तमा । वपुष्मतीकान्तिमती लीलावत्युत्पलावती
अलम्बुषागुणवतीस्थूलकेशीकलावती । कलानिधिर्गुणनिधिः कर्पूरतिलकोर्वरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनङ्गलतिकाचापि तथा मदनमोहिनी । चकोराक्षी चन्द्रकला तथा मुनिमनोहरा
ग्रायद्रावातपोद्वेग्ग्रीचारुनासासुकर्णिका । दारुसञ्जीविनीसुश्रीः क्रतुशुल्काशुभानना
तपःशुल्का तीर्थशुल्कादानशुल्काहिमावती । पञ्चाश्वमेधिकाचैवराजसूयार्थिनीतथा
अष्टाग्निहोमिका तद्वद्वाजपेयशतोद्भवा । इत्याद्यप्सरसां श्रेष्ठंसहस्रं षष्टिसम्मितम्

एतस्मिन्नप्सरो लोके वसन्त्यन्या अपि स्त्रियः ।
सदा स्खलितलावण्याः सदास्खलितयौवनाः ॥ १३ ॥
दिव्याम्बरा दिव्यमाल्या दिव्यगन्धानुलेपनाः ।
दिव्यभोगैः सुसम्पन्नाः स्वेच्छाविधृतविग्रहाः ॥ १४ ॥

कृत्वामासोपवासानिस्खलन्तिब्रह्मचर्यतः । सकृदेवद्विकृत्वोवात्रिःकृत्वोदैवयोगतः

ता इमा दिव्यभोगिन्यो रूपलावण्यसम्पदः ।
निवसन्त्यप्सरोलोके सर्वकामसमन्विताः ॥ १६ ॥
कृत्वा व्रतानि साङ्गानि कामिकानि विधानतः ।
भवन्ति स्वैरचारिण्यो देवभोग्या इहागताः ॥ १७ ॥

पतिव्रतधृता नार्यो बलेनबलिना वृताः । भर्तृबुद्ध्यारमन्ते तं कदाचित्ताइमा द्विज
भर्तरिप्रोषिते याश्चब्रह्मचर्यव्रताः सदा । विप्लवन्ते सकृद्दैवात्ता एता वामलोचनाः

कुसुमानि सुगन्धानि सुवासश्चन्दनं तथा ।
सुगौरश्चापि कर्पूरं सुसूक्ष्माण्यम्बराणि च ॥ २० ॥
पर्णानि ऋजुताराणि जीर्णानि कठिनानि च ।
साग्राणि स्वर्णवर्णानि स्थूलनीलशिराणि च ॥ २१ ॥
सुवासोपस्कराढ्यानि नागवल्ल्या द्विजोत्तम !।
शय्याविचित्राभरणारतिशालोचितानि च ॥ २२ ॥

बहुकौतुकवस्तूनि समर्च्यद्विजदम्पती । भोगदानमिदं काम्यं प्रतिसंक्रमणं रवेः ॥
किं वा प्रतिव्यतीपातमेकसंवत्सरावधि । कोदादिति च मन्त्रेणयादद्याद्वरवाणनी
कामरूपधरोदेवःप्रीयतामितिवादिनी । सा श्रेष्ठाऽप्सरसांमध्येवसेत्कल्पमिहाङ्गना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कन्यारूपधराकाचिद्व्याभुक्ताकेनचित्कचित् । देवरूपेणतं कालमारभ्यब्रह्मचारिणी
तद्देव वृत्तं ध्यायन्तीनिधनंयातिकालतः । दिव्यरूपधरा सेहजायतेदिव्यभोगभाक्

निदानमप्सरोलोकस्येति शृणवन्द्विजाग्रणीः ।
सौरं लोकमथ प्राप्य क्षणेन सविमानगः ॥ २८ ॥

यथा कदम्बकुसुमंकिञ्जल्कैःसर्वतोवृतम् । देदीप्यमानंहि तथा समन्ताद्भानुभानुभिः
दूराद्रविं सविज्ञाय धृततामरसद्वयम् । नवभिर्योजनानां च सहस्रैःसम्मितेन ह ॥३०
विचित्रेणैकचक्रेण सप्तसप्तियुतेन च । अनूरुणाधिष्ठितेन पुरतोधृतरश्मिना ॥
अप्सरोमुनिगन्धर्वसर्पग्रामणिनैर्ऋतैः । स्यन्दनेनातिजविना प्रणनाम कृताञ्जलिः
सत्य प्रणामंदेवोपि भ्रूभङ्गेनानुमन्य च । अतिदूरं नभोवर्त्म व्यतिचक्रामसक्षणात्

प्रक्रान्ते द्युमणौ दूरं शिवशर्मातिशर्मवान् ।
प्रोवाच भगवद्भक्तौ! कथं लभ्यं रवेःपदम् ॥ ३४ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुमाचक्षाथां ममाग्रतः । सतांसाप्तपदीमैत्रीतन्मेमैत्र्याप्रणोदितौ

गणावूचतुः

शृणु द्विजमहाप्राज्ञत्वच्यकथ्यन्न किञ्चन । सत्सङ्गादेवसाधूनां सत्कथासम्प्रवर्तते
नियन्तासर्वभूतानां य एकःकारणं परम् । अनामागोत्ररहितो रूपादिपरिवर्जितः ॥
आविर्भावतिरोभावौ यद्भ्रूनर्तनवर्तिनौ । स एवं वक्ति सततं सर्वात्मावेदपूरुषः ॥

योऽसावादित्यपुरुषः सोसावहमितिस्फुटम् ।
अन्धं तमः प्रविशयन्ति ये चैवान्यमुपासते ॥ ३६ ॥

निश्चितार्थां श्रुतिमिमांब्राह्मणासोद्विजोत्तम! । तमेकमुपतिष्ठन्तेनिश्चित्येतिपुनःपुनः
उपलभ्यचसावित्रींनोपतिष्ठेतयः पराम् । कालेत्रिकालंसप्ताहाहात्स पतेन्नात्र संशयः
तावत्प्रातर्जपंस्तिष्ठेद्यावदर्धोदयो रवेः । आसनस्थोजपेन्मैनी प्रत्यग्तारकोदयात्

सादित्यां मध्यमां सन्ध्याञ्जपेदादित्यसम्मुखः ।
काललोपो न कर्तव्यस्ततःकालं प्रतीक्षयेत् ॥ ४३ ॥
काले फलन्त्योषधयः काले पुष्पन्ति पादपाः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वर्षन्ति तोयदाः काले तस्मात्कालं न लङ्घयेत् ॥ ४४ ॥
मन्देहदेहनाशार्थमुदयास्तमये रविः । समीहते द्विजोत्सृष्टं मन्त्रतोयाञ्जलित्रयम्
गायत्रीमन्त्रतोयाढ्यं दत्तंयेनाञ्जलित्रयम । कालेसवित्रेकिंनस्यात्तेनदत्तं जगत्त्रयम्
किंकिंनसवितासूतेकालेसम्यगुपासितः। आयुरारोग्यमैश्वर्यं वसूनि स पशूनि च
मित्रपुत्रकलत्राणि क्षेत्राणि विविधानि च ।
भोगानष्टविधांश्चापि स्वर्गं चाप्यपवर्गकम् ॥ ४८ ॥
अष्टादशसुविद्यासु मीमांसातिगरीयसी । ततोपितर्कशास्त्राणिपुराणे तेभ्य एव च
ततोपिधर्मशास्त्राणितेभ्योगुर्वीश्रुतिर्द्विज !। ततोप्युपनिषच्छ्रेष्ठागायत्रीचततोधिका
दुर्लभासर्वमन्त्रेषु गायत्रीप्रणवान्विता । न गायत्र्याधिकंकिञ्चित्त्रयीषु परिगीयते
नगायत्रीसमो मन्त्रोनकाशीसदृशीपुरी । नविश्वेशसमंलिङ्गं सत्यं सत्यं पुनः पुनः
गायत्री वेदजननी गायत्रीब्राह्मणप्रसूः । गातारं त्रायतेयस्माद्गायत्री ते न गीयते
वाच्यवाचकसम्बन्धोगायत्र्याः सवितुर्द्वयोः ।
वाच्योसौ सविता साक्षाद्गायत्री वाचिका परा ॥ ५४ ॥
प्रभावेणैवगायत्र्याःक्षत्त्रियःकौशिकोवशी । राजर्षित्वंपरित्यज्यब्रह्मर्षिपदमीयिवान्
सामर्थ्यं प्राप चात्युच्चैरन्यद्भुवनसर्जने । किं किं न दद्याद्गायत्री सम्यगेवमुपासिता
न ब्राह्मणो वेदपाठान्न शास्त्रपठनादपि ।
देव्यास्त्रिकालमभ्यासाद् ब्राह्मणः स्याद्धि नान्यथा ॥ ५७ ॥
गायत्र्येवपरंविष्णुर्गायत्र्येव परःशिवः । गायत्र्येवपरोब्रह्मा गायत्र्येव त्रयी ततः
देवत्रयं सभगवानंशुमाली दिवाकरः । सर्वेषां महसांराशिः कालः कालप्रवर्तकः
अर्कमुद्दिश्य सततमस्मल्लोकनिवासिनः । श्रुतिह्यदाहरन्तीमां सारासारविवेकिनः
एषोहदेवः प्रदिशोनुसर्वाः पूर्वोह जातःस उ गर्भे अन्तः ।
स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनस्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥ ६१ ॥
सदैवमुपतिष्ठेरन् सौरैः सूक्तैरतन्द्रिता । येनमन्त्यत्रते विप्रा विप्राभास्करसन्निभाः
पुष्यार्केप्यथहस्तार्के मूलार्केप्यथवाद्विज । उत्तरार्केऽथयत्कार्यं तत्फलत्येवनान्यथा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पौषेमास्यर्कदिवसेयः स्नात्वाभास्करोदये । दानं होमंजपंकुर्यादर्चामर्कस्यसुव्रतः
श्रद्धावानेकभक्तश्च कामक्रोधविवर्जितः । सहाप्सरोभिर्द्युतिमान्सवसेदत्रभोगवान्
अयनेविषुवेचापि षडशीतिमुखेषु वा । विष्णुपद्याश्चये दद्युर्महादानानि सुव्रताः

तिलाञ्जुह्वति साज्यांश्च ब्राह्मणान् भोजयन्ति च ।
पितॄनुद्दिश्य च श्राद्धं ये कुर्वन्ति विपश्चितः ॥ ६७ ॥

महापूजाश्च ये कुर्युर्महामन्त्राञ्जपन्ति च । तेऽत्र वैकर्तने लोके विकर्तनसमप्रभाः ॥

न दरिद्रा न दुःखार्ता न व्याधिपरिपीडिताः ।
संक्रमेष्वर्कभक्ता ये नविरूपा न दुर्भगाः ॥ ६९ ॥

संक्रमेषु न यैर्दत्तं न स्नातंतीर्थवारिषु । विशेषहोमो न कृतःकपिलाज्याप्लुतैस्तिलैः
ते दृश्यन्ते प्रतिद्वारं विहीननयनाननाः । देहिदेहीति जल्पन्तो देहिनः सपटच्चराः

समंकृष्णलकेनापि यो दद्यात्काञ्चनं कृती ।
सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे सवसेदत्र पुण्यभाक् ॥ ७२ ॥

सर्वंगङ्गासमन्तोयं सर्वेब्रह्मसमाद्विजाः । सर्वंदेयं स्वर्णसमंराहुग्रस्ते दिवाकरे
दत्तं जप्तंहुतं स्नातं यत्किञ्चित्सदनुष्ठितम् । भानूपरागेश्राद्धादि तद्धेतुर्ब्रध्नसन्निधेः
रविवारे संक्रमश्चेदुपरागोऽथवा भवेत् । तदा यदर्जितं पुण्यं तदिहाक्षयमाप्यते ॥
भानुवारो यदा षष्ठ्यां सप्तम्यामथ जायते । तदायत्सुकृतंकर्म कृतन्तदिह भुज्यते

हंसो भानुः सहस्रांशुस्तपनस्तापनोरविः ।
विकर्तनो विवस्वांश्च विश्वकर्मा विभावसुः ॥ ७७ ॥
विश्वरूपो विश्वकर्ता मार्तण्डो मिहिरोंऽशुमान् ।
आदित्यश्चोष्णगुः सूर्योऽर्यमा ब्रध्नोदिवाकरः ॥ ७८ ॥

द्वादशात्मा सप्तहयोभास्करोऽहस्करः खगः । सूरःप्रभाकरः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः

त्रिलोकेशो लोकसाक्षी तमोरिः शाश्वतः शुचिः ।
गभस्तिहस्तस्तीव्रांशुस्तरणिः सुमहोरणिः ॥ ८० ॥

द्युमणिर्हरिदश्वोर्कोभानुमान्भयनाशनः । छन्दोश्वोवेदवेद्यश्चभास्वान्पूषा वृषाकपिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकचक्ररथो मित्रो मन्देहारिस्तमिस्रहा । दैत्यहा पापहर्ता च धर्मो धर्मप्रकाशकः
हेलिकश्चित्रभानुश्चकलिघ्नस्ताक्ष्र्यवाहनः । दिक्पतिःपद्मिनीनाथःकुशेशयकरोहरिः
धर्मरश्मिर्दुर्निरीक्ष्यश्चण्डांशुः कश्यपात्मजः ।
एभिः सप्ततिसंख्याकैः पुण्यैः सूर्यस्य नामभिः ॥ ८४ ॥
प्रणवादिचतुर्थ्यन्तैर्नमस्कारसमन्वितैः । प्रत्येकमुच्चरन्नाम दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवाकरम्
विगृह्यपाणियुग्मेन ताम्रपात्रं सुनिर्मलम् । जानुभ्यामवनीं गत्वा परिपूर्यजलेन च
करवीरादिकुसुमैरक्तचन्दनमिश्रितैः । दूर्वाङ्कुरैरक्षतैश्चनिक्षिप्तैः पात्रमध्यतः ॥ ८७ ॥
दद्यादर्घ्यमनर्घायसवित्रेध्यानपूर्वकम् । उपमौलि समानीय तत्पात्रं नान्यदृङ्मनाः
प्रतिमन्त्रं नमस्कुर्यादुदयास्तमये रविम् । अनया नाम सप्तत्या महामन्त्ररहस्यया
एवं कुर्वन्नरो जातु न दरिद्रोनदुःखभाक् । व्याधिभिर्मुच्यतेघोरैरपिजन्मान्तरार्जितैः
विनौषधैर्विनावैद्यैर्विना पथ्यपरिग्रहैः । कालेन निधनं प्राप्तःसूर्यलोके महीयते ॥
इत्येकदेशः कथितो भानुलोकस्य सत्तम । महातेजो निधेरस्य को विशेषमवैत्यहो
स्वकर्णविषयी कुर्वन्निति पुण्यकथामिमाम् ।
क्षणादालोकयाञ्चक्रे महेन्द्रस्य महापुरीम् ॥ ९३ ॥

अगस्तिरुवाच

श्रुत्वा सौरीं कथामेतामप्सरोलोकसंयुताम् । न दरिद्रोभवेत्कापि नाधर्मेषु प्रवर्तते
ब्राह्मणैः सततं श्राव्यमिदमाख्यानमुत्तमम् । वेदपाठेन यत्पुण्यं तत्पुण्यफलदायकम्
ब्राह्मणाः क्षत्त्रिया वैश्याः शृण्वन्तोऽध्यायमुत्तमम् ।
पातकानि विसृज्येह गतिं यास्यन्त्यनुत्तमाम् ॥ ९६ ॥

इति श्रीस्कन्दे महापुराणं एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्डे
[पूर्वार्द्धेऽप्सरःसूर्यलोकवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दशमोऽध्यायः

इन्द्राग्निलोकवर्णनम्

शिवशर्मोवाच

रमयन्तीमनोतीवकेयं कस्येयमीशितुः। नयनानन्दसन्दोहदायिनीपूरनुत्तमा ॥ १ ॥

गणावूचतुः

शिवशर्मन्महाभाग! सुतीर्थफलितद्रुम !। लोकोऽत्र रमते विप्र सहस्राक्षपुरीत्वियम्

तपोबलेन महता विहिता विश्वकर्मणा ।
दिवापि कौमुदी यस्याः सौधश्रेणीश्रियं श्रयेत् ॥ ३ ॥
यदा कलानिधिः क्वापि दर्शे दृश्यत्वमावहेत् ।
तदा स्वप्रेयसीं ज्योत्स्नां सौधेष्वेषु निगूहयेत् ॥ ४ ॥
यदच्छभित्तौ वीक्ष्यस्वमन्ययोषिद्विशङ्किता ।
मुग्धानाशु विशेच्चित्रमपि स्वां चित्रशालिकाम् ॥ ५ ॥

हर्म्येषु नीलमणिभिर्निर्मितेष्वत्रनिर्भयम् । स्वनीलिमानमाधायतमोहःस्वपितिष्ठति चन्द्रकान्तशिलाजालस्रुतमात्रामलञ्जलम् । तत्र चादायकलशैर्नेच्छन्त्यन्यज्जलञ्जनाः कुविन्दा न च सन्त्यत्र न चतेपश्यतोहराः। चैलान्यलंकृतीरत्रयतःकल्पद्रुमोऽर्पयेत्

गणका नात्र विद्यन्ते चिन्ताविद्याविशारदाः ।
यतश्चिकेति सर्वेषां चिन्तां चिन्तामणिद्रुतम् ॥ ६ ॥

सूपकारा न सन्त्यत्र रसकर्मविचक्षणाः । दुग्धे सर्वरसानेका कामधेनुरतो यतः ॥ कीर्तिरुच्चैःश्रवायस्यसर्वतोवाजिराजिषु । रत्नमुच्चैःश्रवाःसोत्रहयानांपौरुषाधिकः ऐरावतो दन्तिवरश्चतुर्दन्तोत्र राजते । द्वितीय इवकैलासो जङ्गमस्फटिकोज्ज्वलः तरुरत्नं पारिजातः स्त्रीरत्नं सोर्वशीत्विह । नन्दनं वनरत्नञ्च रत्नंमन्दाकिनीह्यपाम् त्रयस्त्रिंशत्सुराणांयाकोटिःश्रुतिसमीरिता । प्रतीक्षतेसाऽवसरं सेवायै प्रत्यहंत्विह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वर्गेष्विन्द्रपदादन्यन्नविशिष्येतकिञ्चन। यद्यत्त्रिलोक्यामैश्वर्यं न तत्तुल्यमनेनहि
अश्वमेधसहस्रस्यलभ्यंविनिमयेन यत्। किन्तेन तुल्यमन्यत्स्यात्पवित्रमथवामहत्
अर्चिष्मती संयमिनी पुण्यवत्यमलावती। गन्धवत्यलकैशी च नैतत्तुल्यामहर्द्धिभिः
अयमेव सहस्राक्षस्त्वयमेवदिवस्पतिः। शतमन्युरयंदेवो नामान्येतानि नामतः॥
सप्तापिलोकपालाये तएनं समुपासते। नारदाद्यैर्मुनिवरैरयमाशीभिरीड्यते॥ १६॥

एतत्स्थैर्येण सर्वेषां लोकानां स्थैर्यमिष्यते।
पराजयान्महेन्द्रस्य त्रैलोक्यं स्यात्पराजितम्॥ २०॥

दनुजा मनुजादैत्यास्तपस्यन्त्युग्रसंयमाः। गन्धर्वयक्षरक्षांसि महेन्द्रपदलिप्सवः
सगराद्या महीपाला वाजिमेधविधायकाः। कृतवन्तो महायत्नं शक्रैश्वर्यजिघृक्षव

निष्प्रत्यूहं क्रतुशतं यः कश्चित्कुरुतेऽवनौ।
जितेन्द्रियोमरावत्यां स प्राप्नोति पुलोमजाम्॥ २३॥

असमाप्तक्रतुशता वसन्त्यत्रमहीभुजः। ज्योतिष्टोमादिभिर्यागैर्येयजन्त्यपितेद्विजाः
तुलापुरुषदानादिमहादानानिषोडश। ये यच्छन्त्यमलात्मानस्ते लभन्तेऽमरावतीम्

अक्लीववादिनो धीराः संग्रामेष्वपराङ्मुखाः।
विक्रान्ता वीरशयने तेऽत्र तिष्ठन्ति भूभुजः॥ २६॥

इत्युद्देशात्समाख्यातामहेन्द्रनगरीस्थितिः। यायजूकावसन्त्यत्रयज्ञविद्याविशारदाः
इमामर्चिष्मतीं पश्य वीतिहोत्रपुरींशुभाम्। जातवेदसियेभक्तास्तेवसन्त्यत्रसुव्रताः
अग्निप्रवेशंयेकुर्युर्दृढसत्त्वाजितेन्द्रियाः। स्त्रियोवासत्त्वसम्पन्नास्तेसर्वेह्यग्नितेजसः
अग्निहोत्ररताविप्रास्तथाग्निब्रह्मचारिणः। पञ्चाग्निव्रतिनोयेवैतेऽग्निलोकेऽग्नितेजसः

शीते शीतापनुत्त्यै यस्त्विध्मभारान्प्रयच्छति।
कुर्यादग्निष्टिकां वाऽथ स वसेदग्निसन्निधौ॥ ३१॥

अनाथस्याग्निसंस्कारंयः कुर्याच्छ्रद्धयान्वितः। अशक्तःप्रेरयेदन्यंसोऽग्निलोकेमहीयते
जठराग्निविवृद्ध्यैयोदद्यादाग्नेयमौषधम्। मन्दाग्नयेसपुण्यात्मावह्निलोकेवसेच्चिरम्
यज्ञोपस्करवस्तूनि यज्ञार्थंद्रविणंतु वा। यथाशक्तिप्रदद्याद्यो ह्यर्चिष्मत्यांवसेत्सः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अग्निरेकोद्विजातीनां निः श्रेयसकरः परः । गुरुर्देवोव्रतंतीर्थं सर्वमग्निर्विनिश्चितम्
अपावनानिसर्वाणिवह्निसंसर्गतःक्षणात् । पावनानिभवन्त्येवतस्माद्यःपावकःस्मृतः
अपिवेदंविदित्वायस्त्यक्तवावैजातवेदसम् । अन्यत्रबध्नातिरतिंब्राह्मणोनसवेदवित्

अन्तरात्मा ह्ययं साक्षान्निश्चितो ह्याशुशुक्षणिः ।
मांसग्रासान्पचेत्कुक्षौ स्त्रीणां नो मांसपेशिकाम् ॥ ३८ ॥
तैजसी शाम्भवीमूर्त्तिः प्रत्यक्षा दहनात्मिका ।
कर्त्री हन्त्री पालयित्री विनैनां किं विलोक्यते ॥ ३६ ॥

चित्रभानुरयं साक्षान्नेत्रं त्रिभुवनेशितुः । अन्धन्तमोमयेलोके विनैनङ्कःप्रकाशकः
धूपप्रदीपनैवेद्यपयोदधिघृतेक्षवम् । एतद्भुक्तंनिषेवन्ते सर्वे दिवि दिवौकसः ॥४१॥

शिवशर्मोवाच

कोयं कृशानुः कस्यायं सूनुः कथमिदंपदम् । आग्नेयं लब्धमेतेन ब्रूतमेतन्ममाग्रतः

गणावूचतुः

आकर्णय महाप्राज्ञवर्णयावोयथातथम् । योयंयस्य यथाऽनेनप्रापिज्योतिष्मतीपुरी
नर्मदायास्तटे रम्ये पुरे नर्मपुरेपुरा । पुरारिभक्तः पुण्यात्माऽभवद्विश्वानरो मुनिः ॥
ब्रह्मचर्याश्रमेनिष्ठो ब्रह्मयज्ञरतः सदा । शाण्डिल्यगोत्रः शुचिमान्ब्रह्मतेजोनिधिर्वशी

विज्ञाताखिलशास्त्रार्थो लौकिकाचारचञ्चुरः ।
कदाचिच्चिन्तयामास हृदि ध्यात्वा महेश्वरम् ॥ ४६ ॥
चतुर्णामप्याश्रमाणां कोऽतीव श्रेयसे सताम् ।
यस्मिन् प्राप्नोति संक्षुण्णेपरत्रेहच वा सुखम् ॥ ४७ ॥

इदं श्रेयस्त्विदं श्रेयस्त्विदं तु सुकरं भवेत् । इत्थंसर्वंसमालोड्यगार्हस्थ्यंप्रशशंसह

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथ भिक्षुकः ।
एषामाधारभूतोसौ गृहस्थो नाऽन्यथेति च ॥ ४६ ॥
देवैर्मनुष्यैः पितृभिस्तिर्यग्भिश्चोपजीव्यते ।
गृहस्थः प्रत्यहं यस्मात्तस्माच्छ्रेष्ठो गृहाश्रमी ॥ ५० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्नात्वाचाप्यहुत्वावाऽदत्त्वावाश्नातियोगृही । देवादीनामृणीभूत्वानरकंप्रतिपद्यते
अस्नाताशी मलं भुङ्क्ते त्वजपी पूयशोणितम् ।
अहुताशी कृमीन्भुङ्क्तेऽप्यदत्त्वा विड्विभोजनः ॥ ५२ ॥
ब्रह्मचर्यंहि गार्हस्थ्ये याद्दृक्कल्पनयोज्झितम् । स्वभावचपलेचित्तेकताद्दृग्ब्रह्मचारिणि
हठाद्वा लोकभीत्यावा स्वार्थाद्वाब्रह्मचर्यभाक् । सङ्कल्पयतिचित्तेचेत्कृतमप्यकृतंतदा
परदारपरित्यागात्स्वदारपरितुष्टितः । ऋतुकालाभिगामित्वाद्ब्रह्मचारी गृहीरितः
विमुक्तरागद्वेषो यःकामक्रोधविवर्जितः । साग्निःसदारःसगृहीवानप्रस्थाद्विशिष्यते
वैराग्याद्गृहमुत्सृज्य गृहधर्मान् हृदिस्मरेत् । सभवेदुभयभ्रष्टोवानप्रस्थोनवा गृही
अयाचितोपस्थितया योवृत्त्यावर्तते गृही । येनकेनापिसन्तुष्टोभिक्षुकात्सविशिष्यते
प्रार्थयेद्यत्कचित्किञ्चिद् दुष्प्रापं वा भविष्यति ।
अशनेषु न सन्तुष्टः स यतिः पतितो भवेत् ॥ ५६ ॥
गुणागुणं विचार्येत्थं सवैविश्वानरो द्विजः ।
उद्ववाह विधानेन स्वोचितां कुलकन्यकाम् ॥ ६० ॥
अग्निशुश्रूषणरतः पञ्चयज्ञपरायणः । षट्कर्मनिरतोनित्यं देवपित्रतिथिप्रियः ॥ ६१
धर्मार्थकामान् युक्तात्मा सोऽर्जयन् स्वस्वकालतः ।
परस्परमसङ्कोचं दम्पत्योरानुकूल्यतः ॥ ६२ ॥
पूर्वाह्णे दैविकं कर्म सोकरोत्कर्मकाण्डवित् । मध्यंदिनेमनुष्याणांपितृणामपराह्णके
एवंबहुतिथेकाले गते तस्याग्रजन्मनः । भार्या शुचिष्मती नाम कामपत्नी वसुव्रता
अपश्यन्त्यङ्कुरमपि सन्ततेः स्वर्गसाधनम् । विज्ञायशङ्करंकान्तंप्रणिपत्यव्यजिज्ञपत्

शुचिष्मत्युवाच

आर्यपुत्रार्यधिषण! प्राणनाथ! प्रियव्रत !। नदुर्लभम्ममास्तीहकिञ्चित्त्वचरणार्चनात्
ये वै भोगाः समुचिताः स्त्रीणां ते त्वत्प्रसादतः ।
अलङ्कृत्य मया भुक्ताः प्रसङ्गाद्ब्रचिम तान्यपि ॥ ६७ ॥
सुवासांसि सुवासाश्च सुशय्या सुनितम्बिनी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्रक्ताम्बूलान्नपानाश्च अष्टौ भोगाः स्वधर्मिणाम् ॥ ६८ ॥
एकं मे प्रार्थितंनाथचिराय हृदिसंस्थितम् । गृहस्थानांसमुचितंतत्त्वंदातुमिहार्हसि

विश्वानर उवाच

किमदेयंहि सुश्रोणि! तवप्रियहितैषिणि । तत्प्रार्थयमहाभागेप्रयच्छाम्यविलम्बितम्
महेशितुः प्रसादेन ममकिञ्चिन्न दुर्लभम् । इहामुत्रचकल्याणि! सर्वकल्याणकारिणः
इतिश्रुत्वा वचःपत्युस्तस्य सापतिदेवता । उवाच हृष्टवदना यदि देयो वरो मम
वरयोग्यास्मिंचेन्नाथ नान्यं वरमहंवृणे । महेशसदृशं पुत्रं देहि माहेश्वरानघ !॥ ७३
इति तस्या वचःश्रुत्वा शुचिष्मत्याः शुचिव्रतः ।
क्षणं समाधिमाधाय हृद्येतत्समचिन्तयत् ॥ ७४ ॥
अहोकिमेतया तन्व्या प्रार्थितं ह्यतिदुर्लभम् । मनोरथपथाद्दूरमस्तुवासहिसर्वकृत्
तेनैवास्या मुखे स्थित्वा वाक्स्वरूपेण शम्भुना ।
व्याहृतं कोऽन्यथाकर्तुमुत्सहेत भवेदिदम् ॥ ७६ ॥
ततःप्रोवाचतांपत्नीमेकपत्नीव्रतेस्थितः । विश्वानरमुनिःश्रीमानितिकान्तेभविष्यति
इत्थमाश्वास्य तां पत्नीं जगामतपसेमुनिः ।
यत्र विश्वेश्वरः साक्षात्काशीनाथोऽधितिष्ठति ॥ ७८ ॥
प्राप्यवाराणसींतूर्णंदृष्ट्वाथ मणिकर्णिकाम् । तत्याजतापत्रितयमपिजन्मशतार्जितम्
दृष्ट्वासर्वाणिलिङ्गानि विश्वेशप्रमुखानि च । स्नात्वासर्वेषुकुण्डेषु वापीकूपसरःसु च
नत्वा विनायकान्सर्वान् गौरीः सर्वाः प्रणम्य च ।
सम्पूज्य कालराजं च भैरवं पापभक्षणम् ॥ ८१ ॥
दण्डनायकमुख्यांश्च गणान्स्तुत्वा प्रयत्नतः ।
आदिकेशवमुख्यांश्च केशवान् परितोष्य च ॥ ८२ ॥
लोलार्कमुख्यसूर्यांश्च प्रणम्यचपुनःपुनः । कृत्वापिण्डप्रदानानि सर्वतीर्थेष्वतन्द्रितः
सहस्रभोजनाद्यैश्चयतीन्विप्रान् प्रतर्प्यच । महापूजोपचारैश्चलिङ्गान्यभ्यर्च्यभक्तितः
असकृच्चिन्तयामासकिं लिङ्गं क्षिप्रसिद्धिदम् । यत्रनिश्चलतामेतितपस्तनयकाम्यया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हिमालय महाभाग ! श्रूयतां नोऽधुना वचः ॥ ४६ ॥
तारकस्त्रासयत्यस्मान्साहाय्यं तद्वधे कुरु ।
त्वं शरण्यो भवाऽस्माकं सर्वेषां च तपस्विनाम् ॥
तस्मात्सर्वे वयं याता महेन्द्रसहिता विभो! ॥ ४७ ॥

लोमश उवाच

एवमभ्यर्थितोदेवैर्हिमवान्गिरिसत्तमः । उवाचदेवान्प्रहसन्वाक्यंवाक्यविदाम्वरः
महेन्द्रमुद्दिश्य तदा ह्युपहाससमन्वितः । अक्षमाश्च वयंसर्वे महेन्द्रेणकृताःसुराः
किं कुर्मः सुरकार्यं चतारकस्य वधंप्रति । पक्षयुक्ता वयं सर्वेयदिस्यामसुरोत्तमाः
तदा वयं घातयामस्तारकंसहबांधवैः । अवलोऽहं विपक्षश्चकिंकार्यं करवाणिवः
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सर्वे देवास्तमब्रुवन् । सर्वे यूयं वयं चैव असमर्था वधं प्रति
तारकस्य महाभाग! एतत्कार्यं विचिन्त्यताम् ॥ ५२ ॥
येन साध्यो भवेच्छत्रुस्तारको हि महाबलः ।
तदोवाच महातेजा हिमवान्ससुरान्प्रति ॥ ५३ ॥

केनोपायेन भो देवास्तारकं हन्तुमिच्छथ । कथयन्तु त्वरेणैव कार्यं वेत्तुंममैवहि-
तदा सुरैः कथितं सर्वमेतद्वाण्या चोक्तं यत्पुरा कार्यहेतोः ।
श्रुतं तदा गिरिणा वाक्यमेतत्प्रोवाचेदं हिमवान्पर्वतो हि ॥ ५५ ॥
शिवस्य पुत्रेण च धीमता यदा वध्यो दैत्यस्तारको वै महात्मा ।
तदा सर्वं सुरकार्यं शुभं स्याद्वाण्या चोक्तं सत्यमेतद्भवेच्च ॥ ५६ ॥
तस्मात्तदेनत्क्रियतां भवद्भिर्यथा महेशः कुरुते परिग्रहम् ।
कन्या यथा तस्य शिवस्य योग्या निरीक्ष्यतामाशु सुरैरिदानीम् ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्योचुःसुरास्तदा ।
जनितव्या त्वया कन्या शिवार्थं कार्यसिद्धये ॥ ५८ ॥
सुराणां च गिरे! वाक्यं कुरु शीघ्रं महामते !।
आधारस्त्वं तु देवानां भविष्यसि न संशयः ॥ ५९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इत्युक्तो गिरिराजोऽथ देवैः स्वगृहमाविशत् ।
पत्नीं मेनां च पप्रच्छ सुरकार्यं समागतम् ॥ ६० ॥
जनितव्यासुकन्यैकासुरकार्यार्थसिद्धये । देवानां चऋषीणां चतथैवचतपस्विनाम्
प्रियंन भवति स्त्रीणांकन्याजननमेव च ॥ तथाऽपिजनितव्या च कन्यैकाचवरानने
प्रहस्य मेना प्रोवाच स्वपतिं च हिमालयम् ।
यदुक्तं भवता वाक्यं श्रूयतां मे त्वयाऽधुना ॥ ६३ ॥
कन्या सदा दुःखकरी नृणां पते! स्त्रीणां तथा शोककरी महामते!
तस्माद्विमृश्य सुचिरं स्वयमेव बुद्ध्या यथाहितं शैलपते! तदुच्यताम् ॥
हिमवांस्तदुपश्रुत्य प्रियायावचनं तदा । उवाच वाक्यंमेधावीपरोपकरणान्वितम्
येनयेन प्रकारेण परेषामुपजीवनम् । भविष्यति च तत्कार्यं धीमता पुरुषेण हि ॥
स्त्रियाऽपि चैव तत्कार्यं परोपकरणान्वितम् ।
एवं प्रवर्तिता तेन गिरिणा महिषी तदा ॥
दधार जठरे कन्यां मेना भाग्यवती तदा ॥ ६७ ॥
महाविद्या महामाया महामेधा स्वरूपिणी ।
रुद्रकाली च अम्बा च सती दाक्षायणी परा ॥ ६८ ॥
तां विभूतिंविशालाक्षीजठरेपरमां सती । बभारसामहाभागामेनाचारुविलोचना
स्तुतिं चक्रुस्तदा देवा ऋषयो यक्षकिन्नराः ।
मेनाया भूरिभाग्यायास्तथा हिमवतो गिरेः ॥ ७० ॥
एतस्मिन्नन्तरे जाता गिरिजानामनामतः । प्रादुर्भूतायदा देवीसर्वेषांचसुखप्रदा
देवदुन्दुभयो नेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः । जगुर्गन्धर्वपतयस्तुष्टुवुःसिद्धचारणाः ॥
पुष्पवर्षेण महता ववृषुर्विबुधास्तथा । तदा प्रसन्नमभवत्सर्वं त्रैलोक्यमेव च ॥
यदाऽवतीर्णा गिरिजा महासती तदैव दैत्या भयमाविशंस्ते ।
प्राप्ता मुदं देवगणा महर्षयः सचारणाः सिद्धगणास्तथैव ॥ ७४ ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायांप्रथमेमाहेश्वरखण्डे
केदारखण्डे श्रीभवान्युत्पत्तिवर्णनंनाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकविंशोऽध्यायः

हिमालयस्य शिवसमीपे गमनम्

लोमश उवाच

वर्द्धमाना तदा साध्वीरराज प्रतिवासरम् । अष्टवर्षा यदाजाताहिमालयगृहेसती
महेशो हिमवद्द्रोण्यां ततात परमं तपः । सर्वैर्गणैः परिवृतो वीरभद्रादिभिस्तदा
एतत्तपो जुषाणं तं महेशंहिमवान्ययौ । तत्पादपल्लवंद्रष्टुं पार्वत्या सह बुद्धिमान्

यावत्समागतो द्रष्टुं नन्दिनाऽसौनिवारितः ।
द्वारिस्थितेन च तदा क्षणमेकंस्थिरोऽभवत् ॥ ४ ॥
पुनर्विज्ञापयामास नन्दिना हिवान्गिरिः ।
विज्ञप्तो नन्दिना शम्भुरचलो द्रष्टुमागतः ॥ ५ ॥

तदाकर्ण्य वचस्तस्यनन्दिनः परमेश्वरः । आनयस्वगिरिंचात्रनन्दिनंवाक्यमब्रवीत्

तथेति मत्वा नन्दी तं पर्वतं च हिमाचलम् ।
आनयामास स तथा शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ ७ ॥
दृष्ट्वा तदानीं सकलेश्वरं प्रभुं तपो जुषाणं विनिमीलितेक्षणम् ॥ ८ ॥
कपर्दिनं चन्द्रकलाविभूषणं वेदान्तवेद्यं परमात्मनि स्थितम् ।
ववन्द शीर्ष्णा च तदा हिमाचलः परां मुदं प्रापदहीनसत्त्वः ॥ ९ ॥
उवाच वाक्यं जगदेकमङ्गलं हिमालयो वाक्यविदां वरिष्ठः ॥ १० ॥

सभाग्योऽहं महादेव प्रसादात्तव शङ्कर! । प्रत्यहं चागमिष्यामि दर्शनार्थं तवप्रभो
अनया सह देवेश अनुज्ञां दातुमर्हसि । श्रुत्वा तु वचनं तस्य देवदेवो महेश्वरः ॥

आगन्तव्यं त्वया नित्यं दर्शनार्थं ममाऽचल ! ।
कुमारीं च गृहे स्थाप्य नान्यथा मम दर्शनम् ॥ १३ ॥
अचलः प्रत्युवाचेदं गिरीशं नतकन्धरः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कस्मान्मयाऽनया सार्द्धं नागन्तव्यं तदुच्यताम् ।
अचलं च व्रती शम्भुः प्रहसन्वाक्यमब्रवीत् ॥ १४ ॥
इयं कुमारी सुश्रोणी तन्वी चारुप्रभाषिणी ।
नानेतव्या मत्समीपे वारयामि पुनः पुनः ॥ १५ ॥
एतच्छ्रुत्वा वचनं तस्य शम्भोऽर्निरामयं निःस्पृहनिष्ठुरम्वा ।
तपस्विनोक्तं वचनं निशम्य उवाच गौरी च विहस्य शम्भुम् ॥ १६ ॥
तपःशक्त्यान्वितः शम्भो करोषि विपुलं तपः ।
तव बुद्धिरियं जाता तपस्तप्तुं महात्मनः ॥ १७ ॥
कस्त्वं का प्रकृतिः सूक्ष्मा भगवंस्तद्विमृश्यताम् ।
पार्वत्यास्तद्वचः श्रुत्वा महेशो वाक्यमब्रवीत् ॥ १८ ॥
तपसा परमेणैव प्रकृतिं नाशयाम्यहम् । प्रकृत्या रहितः सुभ्रु! अहंतिष्ठामितत्त्वतः
तस्माच्च प्रकृतेः सिद्धैर्न कार्यः सङ्ग्रहः क्वचित् ॥ १९ ॥

पार्वत्युवाच

यदुक्तं परया वाचा वचनं शङ्कर! त्वया ।
सा किं प्रकृतिर्नैव स्यादतीतस्तां भवान्कथम् ॥ २० ॥
यच्छृणोषि यदश्नासि यच्च पश्यसि शङ्कर !।
वाग्वादेन च किं कार्यमस्माकं चाधुना प्रभो !॥ २१ ॥
तत्सर्वं प्रकृतेः कार्यं मिथ्यावादो निरर्थकः । प्रकृतेःपरतो भूत्वा किमर्थंतप्यतेतपः
त्वया शम्भोऽधुना ह्यस्मिन्गिरौ हिमवति प्रभो! ।
प्रकृत्या मिलितोऽसि त्वं न जानासि हि शङ्कर! ॥ २३ ॥
वाग्वादेन च किं कार्यमस्माकं चाऽधुना प्रभो !।
प्रकृतेः परतस्त्वं च यदि सत्यं वचस्तव ।
तर्हि त्वया न भेतव्यं मम शङ्कर! सम्प्रति ॥ २४ ॥
प्रहस्य भगवान्देवो गिरिजां प्रत्युवाच ह ॥ २५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महादेव उवाच

प्रत्यहं कुरु मे सेवां गिरिजे! साधुभाषिणि! ॥ २६ ॥

इत्येवमुक्त्वा गिरिजां महेशो हिमालयं वाक्यमथो बभाषे।

अत्रैव सोऽहं तपसा परेण चरामि भूम्यां परमार्थभावः ॥ २७ ॥

तपस्तप्तुमनुज्ञा मे दातव्या पर्वताधिप !। अनुज्ञया विना किंचित्तपः कर्तुं नपार्यते

एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्यदेवदेवस्य शूलिनः। प्रहस्यहिमवाञ्छंभुमिदं वचनमब्रवीत्

त्वदीयं हि जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।

किमहं तु महादेव! तुच्छो भूत्वा ददामि ते॥ ३० ॥

एवमुक्तो हिमवता शङ्करो लोकशङ्करः।

प्रहस्य गिरिराजं तं याहीति प्राह सादरम्॥ ३१ ॥

शङ्करेणाभ्यनुज्ञातःस्वगृहंहिमवान्ययौ। सार्द्धंगिरिजयासोऽपिप्रत्यहंदर्शनेस्थितः

एवं कतिपयः कालो गतश्चोपासनात्तयोः ॥ ३३ ॥

सुतापित्रोश्च तत्रैव शङ्करो दुरतिक्रमः। पार्वतीं प्रति तत्रैव चिन्तामापेदिरेसुराः

ते चिन्त्यमानाश्च सुरास्तदानीं कथं महेशो गिरिजां समेष्यति।

किं कार्यमद्यैव वयं च कुर्मो वृहस्पते! तत्कथयस्व मा चिरम्॥ ३५ ॥

वृहस्पतिरुवाचेदं महेन्द्रं प्रति सद्वचः। एवमेतत्त्वया कार्यं महेन्द्र! श्रूयतां तदा

एतत्कार्यं मदनेनैव राजन्नान्यः समर्थो भविता त्रिलोके।

विप्लावितं तापसानां तपो हि तस्मात्त्वरात्प्रार्थनीयोहिमारः ॥ ३७ ॥

गुरोर्वचनमाकर्ण्य आह्वयन्मदनं हरिः। आह्वानादाजगामाथमदनः कार्यसाधकः

रत्या समेतः सह माधवेन स पुष्पधन्वा पुरतः सभायाम्।

महेन्द्रमागम्य उवाच वाक्यं सगर्वितं लोकमनोहरञ्च ॥ ३६ ॥

अहमाकारितः कस्माद् ब्रूहि मेऽद्य शचीपते!।

किं कार्यं करवाण्यद्य कथ्यतां मा विलम्बितम् ॥ ४० ॥

मम स्मरणमात्रेण विभ्रष्टा हितपस्विनः। त्वमेवजानासि हरे मम वीर्यपराक्रमौ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मम वीर्यं च जानातिशक्तेःपुत्रःपराशरः । एवं चान्येच बहवोभृग्वाद्याऋषयोह्यमी
गुरुरप्यभिजानाति भार्योतथ्यस्य चैव हि ।
तस्यां जातो भरद्वाजो गुरुणा संकरो हि सः ॥ ४३ ॥
भरद्वाजो महाभागइत्युवाचगुरुस्तदा । जानातिममवीर्यं च शौर्यंचैवप्रजापतिः
क्रोधो हि मम बन्धुश्च महाबलपराक्रमः ।
उभाभ्यां द्रावितं विश्वं जङ्गमाजङ्गमं महत् ॥
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं प्लावितं सचराचरम् ॥ ४५ ॥

देवा उचुः

मदनत्वं समर्थोऽसि अस्माञ्जेतुं सदैव हि । महेशंप्रतिगच्छाशुसुरकार्यार्थसिद्धये
पार्वत्या सहितं शम्भुं कुरुष्वाऽद्य महामते !॥ ४६ ॥
एवमभ्यर्थितो देवैर्मदनो विश्वमोहनः । जगामत्वरितोभूत्वाअप्सरोभिःसमन्वितः
ततो जगामाऽऽशु महाधनुर्द्धरो विस्फार्य चापं कुसुमान्वितं महत् ।
तथैव बाणांश्च मनोरमांश्च प्रगृह्य वीरो भुवनैकजेता ।
तस्मिन्हिमाद्रौ परिदृश्यमानोऽवनौ स्मरो योधयतां वरिष्ठः ॥ ४८ ॥
तत्राऽऽगता तदा रम्भा उर्वशी पुञ्जिकस्थली ।
सुम्लोचा मिश्रकेशी च सुभगा च तिलोत्तमा ॥ ४९ ॥
अन्याश्च विविधा जाताः साहाय्ये मदनस्य च ।
अप्सरसोगणैर्दृष्टामदनेन सहैव ताः ॥ ५० ॥
सर्वे गणाश्च सहसामदनेनविमोहिताः । भृङ्गिणा च तदारम्भामुण्डेनसहचोर्वशी
मेनका वीरभद्रेण चण्डेन पुञ्जिकस्थली । तिलोत्तमादयस्तत्र संवृताश्चगणैस्तदा
उन्मत्तभूतैर्बहुभिस्त्रपां त्यक्त्वा मनीषिभिः ।
अकाले कोकिलाभिश्च व्याप्तमासीन्महीतलम् ॥ ५३ ॥
अशोकाश्चम्पकाश्चूता यूथ्यश्चैव कदम्बकाः ।
नीपाःप्रियालाःपनसा राजवृक्षाश्चरायणाः ॥ ५४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्राक्षावल्ल्यः प्रदृश्यन्ते बहुला नागकेशराः ।
तथा कदल्यः केतक्यो भ्रमरैरुपशोभिताः ॥ ५५ ॥
मत्ता मदनसंगेन हंसीभिः कलहंसकाः ।
करेणुभिर्गजा ह्यासञ्छिखण्डीभिः शिखण्डिनः ॥ ५६ ॥
निष्कामा ह्यातुरा ह्यासञ्छिवसम्पर्कजैर्गुणैः ।
अकस्माच्च तथाभूतं कथं जातं विमृश्य च ॥ ५७ ॥
शैलादो हि महातेजा नन्दीह्यमितविक्रमः ।
रक्षसां विबुधानां वा कृत्यमस्तीत्यचिन्तयत् ॥ ५८ ॥
एतस्मिन्नन्तरे तत्र मदनोहि धनुर्द्धरः । पञ्चबाणान्समारोप्यस्वकीयेधनुषिद्विजः
तरोश्छायां समाश्रित्य देवदारुगतां तदा ॥ ५९ ॥
निरीक्ष्य शम्भुं परमासने स्थितं तपो जुषाणं परमेष्ठिनां पतिम् ।
गङ्गाधरं नीलतमालकंठ कपर्दिनं चन्द्रकलासमेतम् ॥ ६० ॥
भुजङ्गभोगाङ्कितसर्वगात्रं पञ्चाननं सिंहविशालविक्रमम् ।
कर्पूरगौरं परयाऽन्वितं च स वेद्धुकामो मदनस्तपस्विनम् ॥ ६१ ॥
दुरासदं दीप्तिमतां वरिष्ठं महेशमुग्रं सह माधवेन ।
यावच्छिवं वेद्धुकामः शरेण तावद्याता गिरिजा विश्वमाता ॥
सखीजनैः सम्वृता पूजनार्थं सदाशिवं मङ्गलं मङ्गलानाम् ॥ ६२ ॥
कनककुसुममालां सन्दधे नीलकण्ठेसितकिरणमनोज्ञादुर्ल्लभा सातदानीम्
स्मितविकसितनेत्रा चारुवक्त्रं शिवस्य सकलजनजनित्रीवीक्षमाणावभूव
तावद्विद्धः शरेणैव मोहनाख्येन च त्वरात् ।
विध्यमानस्तदाशम्भुःशनैरुन्मील्य लोचने ॥
ददर्श गिरिजां देवोऽब्धिर्यथा शशिनः कलाम् ॥ ६४ ॥
चारुप्रसन्नवदनां बिम्बोष्ठीं सस्मितेक्षणाम् ।
सुद्विजामग्निजां तन्वीं विशालवदनोत्सवाम् ॥ ६५ ॥
गौरीं प्रसन्नमुद्रां च विश्वमोहनमोहनाम् । यया त्रिलोकरचनाकृताब्रह्मादिभिःसह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्पत्तिपालनविनाशकरी च या वै कृत्वाऽग्रतः सत्त्वरजस्तमांसि ।
सा चेतनेन ददृशे पुरतो हरेण संमोहती सकलमङ्गलमङ्गलैका ॥ ६७ ॥
तां निरीक्ष्य भवो देवो गिरिजां लोकपावनीम् ।
मुमोह दर्शनात्तस्यामदनेनाऽऽतुरीकृतः ॥
विस्मयोत्फुल्लनयनो बभूव सहसा शिवः ॥ ६८ ॥
एवं विलोक्यमानोऽसौ देवदेवो जगत्पतिः । मनसा दूयमानेन इदमाह सदाशिवः
अनया मोहितः कस्मात्तपःस्थोऽहं निरामयः ।
कुतःकस्माच्च केनेदं कृतमस्ति ममाऽप्रियम् ॥ ७० ॥
ततो व्यलोकयच्छम्भुर्दिक्षु सर्वासु सादरम् ।
तावद्दृष्टो दक्षिणस्यां दिशि ह्यात्तशरासनः ॥ ७१ ॥
चक्रीकृतधनुः सज्जंचक्रेवेद्धुं सदाशिवम् । यावत्पुनःसन्धयति मदनोमदनांतकम्
तावद् दृष्टो महेशेन सरोषेण तदा द्विजाः ॥ ७२ ॥
निरीक्षितस्तृतीयेन चक्षुषा परमेण हि ।
मदनस्तत्क्षणादेव ज्वालामालावृतोऽभवत् ॥
हाहाकारो महानासीद् देवानां तत्र पश्यताम् ॥ ७३ ॥

देवा ऊचुः

देवदेव महादेव देवानां वरदो भव । गिरिजायाः सहायार्थं प्रेषितो मदनोऽधुना
वृथा त्वयाऽथ दग्धोऽसौ मदनो हि महाप्रभः ॥ ७५ ॥
त्वया हि कार्यं जगदेकबन्धो!-कार्यं सुराणां परमेण वर्चसा ।
अस्यां समुत्पत्स्यति देव! शम्भो! तेनैव सर्वं भवतीह कार्यम् ॥ ७६ ॥
तारकेण महादेव! देवाः सम्पीडिता भृशम् ।
तदर्थं जीवितं चास्य दत्त्वा च गिरिजां प्रभो !॥ ७७ ॥
वरयस्व महाभाग देवकार्ये भव क्षमः । गजासुरात्त्वयात्रातावयं सर्वे दिवौकसः
कालकूटाच्चनूनं हिरक्षिताः स्मो न चान्यथा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भस्मासुराच्च सर्वेश! त्वया त्राता न संशयः ॥ ७६ ॥
मदनोऽयं समायातः सुराणां कार्यसिद्धये ।
तस्मात्त्वया रक्षणीय उपकारपरो हि नः ॥ ८० ॥
विना तेन जगत्सर्वं नाशमेष्यतिशङ्करः ।
निष्कामस्त्वं कथं शम्भो! स्वबुद्ध्या च विमृश्यताम् ॥ ८१ ॥
तदोवाच रुषाविष्टो देवान्प्रति महेश्वरः ।
विना कामेन भो देवा भवितव्यं न चान्यथा ॥ ८२ ॥
यदा कामंपुरस्कृत्य सर्वेदेवाःसवासवाः पदभ्रष्टाश्च दुःखेनव्याप्तादैन्यंसमाश्रिताः
कामो हि नरकायैव सर्वेषां प्राणिनां ध्रुवम् ।
दुःखरूपी ह्यनङ्गोऽयं जानीध्वं मम भाषितम् ॥ ८४ ॥
तारकोऽपि दुराचारो निष्कामोऽद्य भविष्यति ।
विना कामेन च कथं पापमाचरते नरः ॥ ८५ ॥
तस्मात्कामोमयादग्धःसर्वेषां शान्तिहेतवे । युष्माभिश्चसुरैःसर्वैरसुरैश्चमहर्षिभिः
अन्यैःप्राणिभिरेवात्र तपसेधीयतां मनः । कामक्रोधविहीनंच जगत्सर्वं मयाकृतम्
तस्मादेनं पापिनं दुःखमूलं न जीवयिष्यामि सुराः प्रतीक्ष्यताम् ।
निरन्तरं चात्मसुखप्रबोधमानंदलक्षणमगाधमनन्यरूपम् ॥ ८८ ॥
एवमुक्तास्तदातेन शम्भुनापरमेष्ठिना । ऊचुर्महर्षयः सर्वे शङ्करं लोकशङ्करम् ॥
यदुक्तं भवता शम्भो परंश्रेयस्करं हिनः । किंतुवक्ष्यामदेवेशश्रूयतां चावधार्यताम्
यथा सृष्टमिदं विश्वं कामक्रोधसमन्वितम् । तत्सर्वं कामरूपंहिसकामोनतुहन्यते
धर्मार्थकाममोक्षाश्च चत्वारो ह्येकरूपताम् ।
नीता येन महादेव! स कामोऽयं न हन्यते ॥ ९२ ॥
कथं त्वया हि सन्दग्धः कामो हि दुरतिक्रमः ।
येन सङ्कटितं विश्वमाब्रह्मस्थावरात्मकम् ॥ ९३ ॥
कामेन हीयते विश्वं विश्वं कामेन पाल्यते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कामेनोत्पद्यते विश्वं तस्मात्कामो महाबलः ॥ ६४ ॥
यस्मात्क्रोधो भवत्युग्रोयेनत्वंच वशीकृतः । तस्मात्काममहादेवसंबोधयितुमर्हसि
त्वया सम्पादितोदेवमदनोहिमहाबलः । समर्थोहिसमर्थत्वात्तत्सामर्थ्यंकरिष्यति
ऋषिभिश्चैवमुक्तोऽपिद्विगुणंरूपमास्थितः । चक्षुषा हितृतीयेनदग्धुकामोहरस्तदा
मुनिभिश्चारणैःसिद्धैर्गणैश्चापि सदाशिवः ।
स्तुतश्च वन्दितो रुद्रः पिनाकी वृषवाहनः ॥ ६८ ॥
मदनंचतथादग्ध्वात्यक्त्वातंपर्वतंरुषा । हिमवन्ताभिधंसद्यस्तिरोधानगतोऽभवत्
तिरोधानगतंदेवी वीक्ष्यदग्धं चमन्मथम् । सकोकिलं सचूतंचसभृङ्गं सहचम्पकम्
तथैव दग्धं मदनंविलोक्य रत्या विलापं च तदा मनस्विनी ।
सबाष्पदीर्घं विमना विमृश्य कथं स रुद्रो वशगो भवेन्मम ॥ १०१ ॥
एवं विमृश्यसुचिरं गिरिजा तदानीं सम्मोहमापद्य सती हितथाबभाषे
सम्मुह्यमाना रुदतीं निरीक्ष्य रतिर्महारूपवतीं मनस्विनीम् ॥ १०२ ॥
मा विषादं कुरु सखि ! मदनं जीवयाम्यहम् ।
त्वदर्थं भो विशालाक्षि ! तपसाऽऽराधयाम्यहम् ॥ १०३ ॥
हरंरुद्रं विरूपाक्षं देवदेवं जगद्गुरुम् । मा चिन्तांकुरु सुश्रोणि मदनंजीवयाम्यहम्
एवमाश्वास्य तां साध्वी गिरिजा रतिरंजसा ।
तपस्तेपे च सुमहत् पतिं प्राप्तुं सुमध्यमा ॥ १०५ ॥
मदनो यत्र दग्धश्च रुद्रेण परमात्मना । तप्यमानां तपस्तत्र नारदो ददृशे तदा ॥
उवाच गत्वा सहसा भामिनीं रतिमन्तिके ।
कस्याऽसि त्वं विशालाक्षि! केन वा तप्यते तपः ॥ १०७ ॥
तरुणी रूपसम्पन्ना सौभाग्येन परेण हि ।। नारदस्यवचःश्रुत्वा रोषेणमहतातदा
उवाच वाक्यं मधुरं किंचिन्निष्ठुरमेव च ॥ १०८ ॥

रतिरुवाच

नारदोऽसि मया ज्ञातः कुमारस्त्वं न संशयः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वस्वरूपादर्शनं (परस्त्रियादर्शनं त्वं)च कर्तुमर्हसि (मिच्छसि)सुव्रत ! ॥१०६ ॥

यथा गतेन मार्गेण गच्छ त्वं मा विलम्बितम् ।
बटो न किञ्चिज्जानासि केवलं कलिकृन्महान् ॥ ११० ॥
परस्त्रीकामुकाः क्षुद्रा विटा व्यसनिनश्च ये ।
तथा ह्यकर्मिणः स्तब्धास्तेषां मध्येत्वमग्रणीः ॥ १११ ॥
एवं निर्भर्त्सितो रत्या नारदो मुनिसत्तमः ।
स्वयं जगाम त्वरितं शम्बरं दैत्यपुङ्गवम् ॥ ११२ ॥

शशंस दैत्यराजाय दग्धं मदनमेव च । रुद्रेन क्रोधयुक्तेन तस्य भार्या मनस्विनी ॥

तमानाय महाभाग! भार्यां कुरु महाबल !।
अतीवरूपसम्पन्ना या आनीतास्त्वयाऽनघ !।
तासां मध्ये रूपवती रतिः सा मदनप्रिया ॥ ११४ ॥

एवमाकर्ण्य वचनं देवर्षेर्भावितात्मनः । जगाम सहसातत्र यत्रास्तेसा सुशोभना
तां दृष्ट्वा सुविशालाक्षीं रतिं मदनमोहिनीम् । उवाचप्रहसन्वाक्यंशंबरोदेवसंकटः

एहि तान्वि ! मया सार्द्धं राज्यं भोगान्यथेष्टतः ।
भुङ्क्ष्व देवि ! प्रसादान्मे तपसा किं प्रयोजनम् ॥ ११७ ॥

एवमुक्ता तदा तेन शम्बरेण महात्मना । उवाच तन्वी मधुरं महिषी मदनस्य सा

विधवाऽहं महाबाहो! नैव भाषितुमर्हसि ।
राजा त्वं सर्वदैत्यानां लक्षणैः परिवारितः ॥ ११९ ॥
एतत्तद्वचनं श्रुत्वा शम्बरः काममोहितः ।
करे ग्रहीतकामोऽसौ तदा रत्या निवारितः ॥ १२० ॥
विमृश्य मनसा सर्वमजेयत्वं च तस्य वै ।
मा स्पृश त्वं च रे मूढ मम संस्पर्शजेन वै ॥ १२१ ॥
.पर्केण च दग्धोऽसि नान्यथा मम भाषितम् ।
.दोवाच महातेजाः शम्बरः प्रहसन्निव ॥ १२२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विभीषिकाभिर्बह्वीभिर्मा भीषयसि मानिनि !।
गच्छ शीघ्रं मम गृहं बहूक्त्या किं प्रयोजनम् ॥ १२३ ॥
इत्युच्यमानेन तदा नीता सा प्रसभं तथा । स्वपुरंपरमं तन्वीशम्बरेण मनस्विनी
कृता महानसेऽध्यक्षा नाम्ना मायावतीति च ॥ १२५ ॥

ऋषय ऊचुः

पार्वत्याधिकृतं सर्वं मदनानयनं प्रति । शंबरेण हृता तन्वी मदनस्य प्रिया सती
अत ऊर्ध्वं तदा सूत किं जातं तत्र वर्ण्यताम् ॥ १२६ ॥

सूत उवाच

गतं तदा शिवं दृष्ट्वा दग्ध्वा मदनमोजसा ।
पार्वती तपसा युक्ता स्थिता तत्रैव भामिनी ॥ १२७ ॥
पित्रा तेन तदा तन्वी मात्रा चैव विचारिता (निवारिता) ।
बाले एहि गृहं शीघ्रं मा श्रमं कर्तुमर्हसि ॥ १२८ ॥
उक्ता ताभ्यां तदा साध्वी गिरिजा वाक्यमब्रवीत् ॥ १२६ ॥

पार्वत्युवाच

नागच्छामि गृहं मातस्तात! मे शृणु तत्त्वतः ।
वाक्यं धर्मार्थयुक्तं च येन त्वं तोषमेष्यसि ॥ १३० ॥
शंभुः परेषां परमो दग्धो येन महाबलः ।
मदनो मम सान्निध्य मानयेऽत्रैव तं शिवम् ॥ १३१ ॥
दुर्लभो हि तदा शंभुः प्राणिनां गृहमिच्छताम् ।
नागच्छामि गृहं मातस्तस्मात्सर्वं विमृश्यताम् ॥ १३२ ॥
तदोवाच महातेजा हिमवान्स्वसुतां प्रति ।
दुराराध्यः शिवः साक्षात् सर्वदेवनमस्कृतः ॥
त्वया प्राप्तुमशक्यो हि तस्मात्त्वं स्वगृहं व्रज ॥ १३३ ॥
सा वाष्पपूरितेनैव कण्ठेन स्वसुतां प्रति ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उवाच मेना तन्वंगि ! याहि शीघ्रं गृहं प्रति ॥ १३५ ॥
तदा प्रहस्य चोवाच मातरं प्रति पार्वती । प्रतिज्ञां शृणुमे मातस्तपसा परमेणहि
अत्रैव तं समानीय वरयामि विचक्षणम् । नाशयामि च रुद्रस्य रुद्रत्वंवरवर्णिनि!
सुखरूपं परित्यज्य गिरिजा च मनस्विनी । शंभोराराधनंचक्रे परमेणसमाधिना
जया च विजया चैव माधवी च सुलोचना ।
सुश्रुता च श्रुता चैव तथैव च शुकीपरा ॥ १३८ ॥
प्रम्लोचा सुभगा श्यामा चित्राङ्गी चारुणी स्वधा ।
एताश्चान्याश्च वहवः सख्यस्ता गिरिजां प्रति ॥
उपासाञ्चक्रिरे सा च देवगर्भा च भामिनी ॥ १३९ ॥
तपसा परमोग्रेण चरन्ती चारुहासिनी । मदनो यत्र दग्धश्च रुद्रेण च महात्मना ॥
तत्रैव वेदिं कृत्वा च तस्योपरि सुसंस्थिता ॥ १४० ॥
त्यक्त्वा जलाशनं वाला पर्णादा ह्यभवच्च सा ।
ततः साऽऽर्द्राणि पर्णानि त्यक्त्वा शुष्काणि चाऽऽददे ॥ १४१ ॥
शुष्काणि चैव पर्णानि नाशितानि तया यदा ।
अपर्णेति च विख्याता वभूव तनुमध्यमा ॥ १४२ ॥
वायुपानरता जाता अम्बुपानादनन्तरम् । कालक्रमेण महतावभूव गिरिजा सती
एकाङ्गुष्ठेन च तदा दधार च निजं वपुः ॥ १४३ ॥
एवमुग्रेण तपसा शङ्कराराधनं सती । चकार परया तुष्ट्या शंभोः प्रीत्यर्थमेव च
परं भावं समाश्रित्य जगन्मंगलमंगला । तुष्ट्यर्थं च महेशस्य तताप परमं तपः ॥
एवं दिव्यसहस्राणि वर्षाणि च तताप वै ।
हिमालयस्तदागत्य पार्वतीं कृतनिश्चयाम् ॥ १४६ ॥
सभार्यः स सुतामाप्त उवाच च महासतीम् ।
मा खिद्यतां महादेवि! तपसाऽनेन भामिनि !॥ १४७ ॥
क रुद्रो दृश्यते वाले विरक्तो नात्र संशयः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वं तन्वी तरुणी बाला तपसा च विमोहिता ॥ १४८ ॥
भविष्यति न सन्देहः सत्यंप्रतिवदामि ते । तस्मादुत्तिष्ठयाह्याशुस्त्वगृहंवरवर्णिनि
किं तेन तव रुद्रेण येन दग्धः पुराऽनघे !।
मदनो निर्विकारित्वात्तं कथं प्रार्थयिष्यसि ॥ १५० ॥
गगनस्थो यथा चन्द्रो ग्रहीतुं न हि शक्यते ।
तथैव दुर्गमः शम्भुर्जानीहि त्वं शुचिस्मिते !॥ १५१ ॥
तथैव मेनया चोक्ता तथा सह्याद्रिणा सती । मेरुणा मन्दरेणैव मैनाकेनतथैव च
एभिरुक्ता तदा तन्वी पार्वती तपसि स्थिता ।
उवाच प्रहसन्तीव हिमवन्तं शुचिस्मिता ॥ १५३ ॥
पुरा प्रोक्तं त्वया तात! अम्ब किं विस्मृतं त्वया ।
अधुनैव प्रतिज्ञाञ्च शृणुष्वं मम बान्धवाः ॥ १५४ ॥
विरक्तोऽसौ महादेवो मदनो येन वै हतः ।
तं तोषयामि तपसा शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ १५५ ॥
सर्वे यूयं चगच्छन्तु नाऽत्रकार्या विचारणा । दग्धोहि मदनोयेनयेनदग्धंगिरेर्वनम्
तमानयामि चात्रैव तपसा केवलेन हि । तपोबलेन महता सुसेव्यो हि सदाशिवः
तं जानीध्वं महाभागाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १५८ ॥
सम्भाषमाणा जननीं तदानीं हिमालयं चैव तथा च मेनाम् ।
तथैव मेरुं मितभाषिणी तदा सा मन्दरं पर्वतराजकन्या ॥
जग्मुस्तदा तेन पथा च पर्वता यथागतेनाऽपि विचक्षमाणाः ॥ १५६॥
गतेषु तेषु सर्वेषु सखीभिः परिवारिता । तत्रैव च तपस्तेपे परमार्था सती तदा
तपसा तेन महता तप्तमासीच्चराचरम् । तदा सुरासुराः सर्वे ब्रह्माणं शरणंगताः

देवा ऊचुः

त्वया सृष्टमिदं सर्वं जगद्देव ! चराचरम् । त्रातुमर्हसि देवान्नस्त्वदन्यो नोपपद्यते
अस्माकं रक्षणेशक्त इत्याकर्ण्य वचस्तदा । विमृश्य च तदाब्रह्मा मनसापरमेणहि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गिरिजा तपसोद्भूतं दावाग्निं परमं महत् ।
ज्ञात्वा ब्रह्मा जगामाऽऽशु क्षीराब्धिं परमाद्भुतम् ॥ १६४ ॥
तत्र सुप्तं सुपर्यङ्के शेषाख्ये चातिशोभने ।
लक्ष्म्यापादोपयुगलं सेव्यमानं निरन्तरम् ॥ १६५ ॥
दूरस्थेनाऽपि तार्क्ष्येण नतकन्धरधारिणा ।
सेव्यमानं श्रिया कान्त्या क्षान्त्या वृत्त्या दयादिभिः ॥ १६६ ॥
नवशक्तियुतं विष्णुं पार्षदैःपरिवारितम् । कुमुदोऽथ कुमुद्वांश्च सनकश्च सनन्दनः
सनातनो महाभागः प्रद्युम्नो विजयोऽरिजित् । जयन्तश्चजयत्सेनोजयश्चैचमहाप्रभः
सनत्कुमारः सुतपा नारदश्चैव तुम्बुरुः ।
पाञ्चजन्यो महाशंखो गदाकौमोदकी तथा १६९ ॥
सुदर्शनं तथा चापं शार्ङ्गं च परमाद्भुतम् । एतानि वै रूपवन्ति द्दृष्टानि परमेष्ठिना
विष्णोः समीपे परमामनो भृशं समेत्य सर्वे सुरदानवास्तदा ।
विष्णुम्चाहुः परमेष्ठिनां पतिं तीरे तदानीमुदधेर्महात्मनः ॥ १७१ ॥
त्राहि त्राहि महाविष्णो! तप्तान्नः शरणागतान् ।
तपसोग्रेण महता पार्वत्याः परमेण हि ॥
शेषासने चोपविष्ट उवाच परमेश्वरः ॥ १७२ ॥
युष्माभिः सहितश्चापि व्रजामि परमेश्वरम् ।
महादेवं प्रार्थयामो गिरिजां प्रति वै सुराः ॥ १७३ ॥
पाणिग्रहार्थमधुना देवदेवः पिनाकधृक् ।
यथा नेष्यति तत्रैव करिष्यामोऽधुना वयम् ॥ १७४ ॥
तस्माद्वयं गमिष्यामो यत्र रुद्रो महाप्रभुः । तपसोग्रेण संयुक्तो ह्यास्ते परममङ्गलः
विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा ऊचुः सर्वे सुरासुराः ।
न यास्यामो वयं सर्वे विरूपाक्षं महाप्रभम् ॥ १७६ ॥
यदा दग्धः पुरातेनमदनो दुरतिक्रमः । तथैव धक्ष्यत्यस्माकंनात्रकार्याविचारणा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रहस्य भगवान् विष्णुरुवाच परमेश्वरः ।
मा भयं क्रियतां सर्वैः शिवरूपी सदाशिवः ॥ १७८ ॥
स न धक्ष्यति सर्वेषां देवानां भयनाशनः ।
तस्माद्भवद्भिर्गन्तव्यं मया सार्द्धं विचक्षणाः !॥ १७९ ॥
शम्भुं पुराणं पुरुषं ह्यधीशं वरेण्यरूपं च परं पराणाम् ।
तपो जुषाणं परमार्थरूपं परात्परं तं शरणं व्रजामि ॥ १८० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां प्रथमे माहेश्वरखण्डे केदारखण्डे पार्वतीतपश्चर्यावर्णनं नामैकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥

द्वाविंशोऽध्यायः

ब्रह्मादिदेवानां शिवसमीपे गमनम्

सूत उवाच

एवमुक्तास्तदा देवा विष्णुना परमेष्ठिना ।
जग्मुः सर्वे महेशं च द्रष्टुकामाः पिनाकिनम् ॥ १ ॥
परे पारे समुद्रस्य परमेण समाधिना । योगपीठेस्थितं शम्भुं गणैश्चपरिवारितम्
यज्ञोपवीतविधिना उरसा बिभ्रतं वृतम् ।
वासुकिं सर्पराजं च कम्बलाश्वतरौ तथा ॥ ३ ॥
कर्णद्वये धारयन्तं तथा कर्कोटकेन हि । पुलहेन च बाहुभ्यां धारयंतं च कङ्कणे ॥
सन्नूपुरे शङ्खकपद्मकाभ्यां सन्धारयन्तं च विराजमानम् ।
कर्पूरगौरं शितकण्ठमद्भुतं वृषान्वितं देववरं ददर्शुः ॥ ५ ॥
तदा ब्रह्मा च विष्णुश्च ऋषयो देवदानवाः ।
तुष्टुवुर्विविधैः सूक्तैर्वेदोपनिषदन्वितैः ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनुभूतंमहद्दुखंतस्माद्दुर्योनिरेव च । तस्मात्कुर्यात्तुसाधूनांसेवांसर्वार्थसाधिनीम्
रुद्रस्याऽप्रियकारित्वात्हमरोभाविनिजन्मनि । दुःखंतुबहुलं लेभेजन्मकालेमहाप्रभुः
इतिहासमिमंपुण्यंयेश्रृण्वन्तिदिवानिशम् ।जन्ममृत्युजरादिभ्योमुच्यन्तेनाऽत्रसंशयः

इहि श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्वरीषसम्वादे दाक्षायण्यपमाने दक्षयज्ञ-विध्वंसपूर्वकपार्वतीजन्मादिकामदहनवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

नवमोऽध्यायः

रतिविलापानन्तरं कुमारोत्पत्तिप्रसङ्गवर्णनम्

मैथिल उवाच

तस्य दग्धस्य कामस्य कस्माज्जन्माऽभवद्विभो! ।
किं दुःखमभवत्तस्मिन्कर्मणः सह लङ्घनात् ॥ १ ॥
एतदाचक्ष्व मे ब्रह्मञ्छ्रोतुं कौतूहलं हि मे ।

श्रुतदेव उवाच

कुमारजन्म वक्ष्यामि श्रवणात्पापनाशनम् ॥ २ ॥

यशस्यं पुत्रदं धर्म्यं सर्वरोगविनाशनम् । शम्भुनातु हते कामे तत्पत्नी रतिसञ्ज्ञिका
मुमोह पुरतो दृष्ट्वापतिं भस्मावशेषितम् । जातसञ्ज्ञा मुहूर्तेन विललापच चित्रधा ॥
यद्विलापाद्वनं चापि समदुःखमभूत्तदा । तच्चिताग्नौ स्वकायंतुत्यक्तुकामाचमाधवम्

पत्युः सखायं सस्मार कर्तुं तात्कालिकीं क्रियाम् ।
स आगतश्चितिं कर्त्तुं वीरपत्न्या महाप्रभुः ॥ ६ ॥

स तुत्रस्तःसखींदृष्ट्वाक्षणंमूर्च्छापरोऽभवत् । रतिंतुसान्त्वयामाससान्त्वैर्बहुविधैरपि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुत्रतुल्योऽस्मितेभद्रेस्थितेमयिचनार्हसि । कार्यंत्यक्तुंधर्महेतुमित्याद्यैर्बहुधाऽपिसा
नैव स्थातुंमनश्चक्रेतेनसंस्तम्भितारतिः । द्रष्टुंवादाढर्यं वसन्तोऽपिचितिञ्चक्रेसरित्तटे
साऽवगाह्यद्युनद्यांच कृत्वाकार्याणिसर्वशः । सन्नियम्येन्द्रियग्रामंनिवेश्यात्मनिवैमनः
चितिमारोढुमारेभे ततो जाताऽशरीरवाक् । मा प्रवेशय कल्याणि! वह्निंपतिपरायणा

भविष्यति च ते पत्युर्हराद्विष्णोश्च यादवात् ।
जन्मद्वयं क्रमेणैव तत्र चोत्तरजन्मनि ॥ १२ ॥
भैष्म्यां कृष्णान्महाविष्णोः प्रद्युम्नाख्यो भविष्यति ।
वसिष्यसि त्वञ्च शापाद् ब्रह्मणः शम्बरालये ॥ १३ ॥
प्रद्युम्नाख्येन ते पत्या सङ्गतिश्च भविष्यति ।
इत्युक्त्वा विरराम्राऽथ वाणी चाऽऽकाशगोचरा ॥ १४ ॥
श्रुत्वा तां तु निवृत्ताऽभून्मरणे कृतनिश्चया ।
ततो देवाः समाजग्मुः स्वार्थे कामे हते हरात् ॥ १५ ॥

रत्या कृतं प्रपश्यन्तोगुर्विन्द्राग्निपुरोगमाः । तां ते निवर्तयामासुर्वरेण महतासतीम्
अनङ्गोऽपिभवेत्साऽङ्गोमृतएवाऽक्षिगोभवेत् । इतितां तुविनिर्वर्त्यधर्मंचोपदिदेशिरे
पूर्वकल्पे त्वयं राजा सुन्दराख्यो महाप्रभुः । त्वमेव पत्नीतत्राऽपिरजःसङ्करकारिणी
तेनेयञ्च दशाऽभूत्ते कुर्विदानींचनिष्कृतिम् । मन्दाकिन्यांतुवैशाखेप्रातःस्नानंतदाकुरु!
मधुसूदनमभ्यर्च्यकथां दिव्यां तथा शृणु । अशून्यशयनंनाम व्रतमारभ भामिनि! ॥
धर्मेणाऽनेन ते भद्रे व्रतेनाऽपि च माधवे । नूनं ते भवितापत्युरुपलब्धिर्न संशयः ॥

इति तस्यै वरं दत्त्वा देवा जग्मुर्यथाऽऽगताः ।
तथाकृच्छ्रान्निवृत्ता सा देवी कामसती तथा ॥ २२ ॥

गङ्गाऽवगाहनं चक्रेमेषसंस्थेदिवाकरे । अशून्यशयनंनामव्रतञ्चाऽपि महामनाः ॥२३
तेनपुण्यप्रभावेन सद्यः कामोऽक्षिगोचरः । अभूत्तस्यै महाराज लोकेचावार्यवीर्यवान्
पूर्वकल्पेऽप्ययमपि राजा धर्मपरायणः । वैशाखोक्तान्महाधर्मान्नाकरोत्तेन वै स्मरः ॥
देहहानिं प्रपेदेऽसौ पुत्रोऽपि परमात्मनः । वृथानीते तु वैशाखेमेषसंस्थे दिवाकरे ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवस्थेयं च देवानां मनुष्याणां तु का कथा ।
त्र्यम्बकेऽन्तर्हिते पश्चान्निराशा गिरिकन्यका ॥ २७ ॥
तूष्णीं स्थितां तदाभ्रान्ता तां दृष्ट्वा हिमवान्गिरिः ।
चकितः स्वगृहं निन्ये दोर्भ्यां तां परिरभ्य च ॥ २८ ॥

रूपौदार्यगुणान्दृष्ट्वा हरस्यैव महात्मनः । स एव मे पतिर्भूयादिदितितन्निष्ठमानसा ॥
गङ्गोपकूलमापेदेतपस्तप्तुंधृतव्रता । निवारिताऽपि सा देवी पित्रा मात्रा स्वकैर्जनैः
अर्चयन्ती महालिङ्गं निराहारा जटाधरा । दिव्यवर्षसहस्रान्ते प्रत्यक्षोऽभून्महेश्वरः ॥
भूत्वावर्ण्यपिसायाह्लेपर्णशालामुखेविभुः । स्वनिष्ठमनसोदाढर्य्यं वाक्यैर्नानाविधैरपि
ज्ञात्वा वरादरं भद्रे वरयेति महाप्रभुः । सा वव्रेऽथ पतिं रुद्रं त्वं भवेति वरानना
स तथैव वरंदत्त्वाऋषीन्सस्मारसप्तच । आजग्मुस्तेऽपिमुनयःस्थिताःप्राञ्जलयःपुरः

ऋषीणां ज्ञापयामास कन्या प्रष्टुं हिमालयम् ।
तथाऽदिष्टा भगवता कन्यार्थं हिमवद्गृहम् ॥ ३५ ॥

प्रापुर्विहायसा सर्वे द्योतयन्तो दिशोदश । प्रत्युज्जगामसगिरिःसप्तैतान्ब्रह्मवित्तमान्

सम्पूज्य विधिवत्सर्वान्सुखासीनानपृच्छत ।
धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि यद्भवन्तो गृहाऽऽगताः ॥ ३७ ॥

भवदागमनं मन्येममजन्मफलंत्विति । नकृत्यंविद्यतेऽस्माभिःपूर्णार्थानांमहात्मनाम्
तथाऽपि ब्रूतकार्यंवोयत्कर्तव्यंमयाऽधुना । इत्युक्तास्तेतथाप्रोचुर्हिमवन्तंमहागिरिम्
त्वयास्वसदृशं वाक्यमुक्तं गिरिपते ! दृढम् । अस्मदागमने हेतुं वक्ष्यामस्ते महोदये
कन्याते पार्वतीनाम पूर्वं दक्षात्मजा सती । जाता तव कुमारी या यज्ञे त्यक्तकलेवरा

अस्याः पाणिग्रहे दक्षः शम्भुर्नाऽन्यो जगत्त्रये ।
देयासाशम्भवे देवी भवताऽऽनन्त्यमिच्छता ॥ ४२ ॥

पूर्वजन्मसहस्रेषु भवता सुकृतं कृतम् । इदानीं तव दिष्ट्या तु परिपाकमुपागतम्
तेषां तद्वचनं श्रुत्वासंहृष्टाऽऽत्मामहागिरिः । व्याजहारपुनर्वाक्यंपुत्रीवल्कलधारिणी
गङ्गातीरे निराहारा तपस्तपति दुश्चरम् । काङ्क्षमाणा पतिंशम्भुं तस्याइष्टमिदंत्विति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दत्ता कन्या मया तस्मै त्र्यम्बकायमहात्मने । शीघ्रं गत्वाभवन्तस्तुयत्रशम्भुर्महाप्रभुः
प्रीत्या हिमवता दत्तां गृहाणेति निवेद्य च । भवन्त एवकुर्वन्तुचैतद्वैवाहिकींक्रियाम्
इत्युक्तास्ते हिमवता तमामन्त्र्य शिवं ययुः ।
लक्ष्म्याद्या योषितः सर्वा विष्णवाद्या देवता अपि ॥ ४८ ॥
षण्मातरोऽथ मुनयोद्रष्टुं जग्मुर्महोत्सवम् । शिवःसर्वामरगणैर्मुनिभिर्मातृभिस्तथा
अन्वितो वृषभारूढः प्रमथानां गणैर्वृतः । भेरीशङ्खमृदङ्गाद्यैः काहलीपटहादिकैः
ब्रह्मघोषैर्वन्दिभिश्च प्राविशद्धिमवत्पुरीम् । सुमुहूर्ते शुभे लग्ने शुभग्रहनिरीक्षिते
विवाहमकरोच्छैलः प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।
महोत्सवस्तदा चाऽऽसीत्त्रिलोक्यां प्राणिनां नृप! ॥ ५२ ॥
महोत्सवे निवृत्ते तु शङ्करो लोकशङ्करः । रेमे स्वच्छन्दया देव्या लोकधर्माननुव्रतः
ऋद्धिमद्धिमवद्गेहे देवेन्द्रभवनोपमे । शर्वर्यान्नन्दिनीतीरे वनराजिषु शङ्करः ॥ ५४ ॥
मत्तालिद्विजसन्नादमयूररवमण्डिते । दिव्यवर्षसहस्राणि रेमे स्वच्छन्दया विभुः
स्त्रीणामिन्द्रवराभावात्तस्मिन्काले नृपोत्तम! ।
पुंसः सङ्गात्पुनर्गर्भो नारीणां स्रवति ध्रुवम् ॥ ५६ ॥
प्रत्यहं रमणाद्देव्यां नाभूद्गर्भो हराद्भवत । देवानामभवच्चिन्ता पुत्रलाभाद्धाराद्विभो
सर्वे सङ्गत्यसम्मन्त्र्यमिथएवंबभाषिरे । कामीवाऽभूद्रतौनित्यंसक्तोदेव्याहरःस्वराट्
नाऽस्माकं सिद्ध्यते कार्यं नित्यं गर्भस्य संस्रवात् ।
पुना रतिर्यथा नाऽभूत्तथाऽस्माभिर्विधीयताम् ॥ ५६ ॥
मिथ एवं तु सम्भाष्यव्यचिन्वन्क्षणमत्रते । अग्निंकृत्येविनिश्चित्यह्यूचुर्मानपुरःसरम्
अग्ने मुखं त्वं देवानां त्वं बन्धुर्गतिरेव च । इदानीमपि गच्छ त्वं रमते यत्र वै हरः
रत्यन्तेदर्शयाऽऽत्मानंपुनारतिर्यथानवै । त्वां दृष्ट्वा व्रीडिता देवी तपश्चापसरेद्ध्रुवम्
शिष्यो भूत्वा तु रत्यन्ते पृच्छ तत्त्वं स्मरान्तकम् ।
तत्त्वसम्प्रश्नव्याजेन कालस्त्वहु नय प्रभो! ॥ ६३ ॥
बहुकाले गते देवी कुमारं प्रसविष्यति । देवैरेवं प्रार्थितोऽग्निरोमित्युक्त्वा हरंययौ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वीर्योत्सर्गात्पूर्वमेव गतो वह्नी रतान्तरे। तं दृष्ट्वाव्रीडिता देवी विवस्त्रा विमनाययौ
रतिं विहाय त्वरया ततो रुद्रोऽतिकोपितः। वह्निं प्राह गृहाणेदमभिसृष्टन्तु दुर्मते
मद्वीर्यं दुःसहं पाप रतौविघ्नस्त्वयाऽभवत्। उत्सृजामि मद्वीर्यं त्वन्मुखेहव्यवाहन!
इत्युक्त्वोत्सृष्टवान्वीर्यंहव्यवाहमुखेहरः। तद्धृत्वादह्यमानःसन्स्वोदरेवीर्यमुल्वणम्
चिन्तयानो ययौधामदेवानांयज्ञपूरुषः। कथंचित्प्राणतो मुक्तो देवेभ्यस्तन्न्यवेदयत्
देवा वह्नीरितं श्रुत्वाहर्षशोकौसमाययुः। स्थितं वीर्यमितिह्लादं कथं तुप्रसवोभवेत्

इति दुःखं तदा चाऽऽसीद्वह्नेः कुक्षौ तु शाम्भवम्।
ववृधे तेज आक्षिप्तं दश मासा गतास्तदा॥ ७१॥

नाऽपश्यत्प्रसवोपायं वहुदुःखपरायणः। देवान्वै शरणम्प्राप गर्भमोचनहेतवे॥ ७२॥
तेदेवावह्निनासाकंप्रापुर्गङ्गांयशस्विनीम्। गङ्गास्तोत्रेणते स्तुत्याप्रार्थयामासुरञ्जसा
त्वं माता सर्वदेवानां त्वमेवजगताम्पतिः। देवातार्थन्तुत्वंभद्रेधत्स्वतेजस्तुशाम्भवम्
तद्वह्नेर्वर्द्धते गर्भो नास्त्रीत्वात्प्रसवोऽस्य च। तस्मादेनञ्च नः सर्वान्समुद्धर दयांकुरु

इत्येवं प्रार्थिता देवी तथास्त्विति वचोऽब्रवीत्।
देवास्तु वह्नये प्राहुर्मन्त्रं गर्भविमोचनम्॥ ७६॥

तन्मन्त्राद्गर्भमाकृष्य व्यसृजद्धव्यवाहनः। गङ्गायांशाम्भवंतेजोभास्वल्लोकसुदुःसहम्

सा चोढ्वा कतिचिन्मासान्न शशाक ततः परम्।
निर्जला तत्प्रभावेण स्फुटद्रक्तकलेवरा॥ ७८॥

वहुदुःखाऽऽकुला देवी पातिव्रत्यप्रभावतः। उज्जहार स्वोदरस्थं गर्भं लोकैकपावनी
शरकाण्डे तु चिक्षेप दह्यमानं समन्ततः। शरकाण्डैस्तु सम्भिन्नः षोढाभिन्नोबभूवह

षट्कृत्तिकाः समाजग्मुर्ब्रह्मणा चोदितास्तदा।
शरकाण्डे विनिर्भिन्नं षोढा सन्धाय शाम्भवम्॥ ८१॥
षण्मुखं पुरुषं कृत्वा त्वेकदेहमिति स्फुटम्।
कृत्तिका विधिनाऽऽज्ञप्तास्तं तथा चक्रिरे दृढम्॥ ८२॥

तद्देहं पुरुषाकारं षण्मुखं शरकाण्डगम्। अरक्ष्यमाणमेवासीच्छरकाण्डेषु वै चिरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकदा वृषभाऽऽरूढौ पार्वतीपरमेश्वरौ । श्रीशैलं गन्तुमनसौ तत्स्थलं परिजग्मतुः ॥

तदासीत्पार्वती देवीः सद्यः स्नुतपयोधरा ।
विस्मिता चावदद्रुद्रं स्नुतौ कस्मात्पयोधरौ ॥ ८५ ॥

कारणम्ब्रूहिविश्वात्मन्नित्युक्तस्तुहरोऽब्रवीत् । शृणुदेविप्रवक्ष्यामिपुत्रोऽधोवर्ततेतव
त्वयि वीर्यमनुत्सृष्टंप्रागेवाऽऽगाद्धविर्वहः । तंदृष्ट्वाव्रीडितात्वंवैप्रविष्टाचस्थलान्तरम्

मया कोपाद्वह्निमुखे विसृष्टं वीर्यमुल्बणम् ।
देवानाञ्च प्रसादेन गङ्गायां व्यसृजद्विभुः ॥ ८८ ॥

गङ्गाच दह्यमाना सा व्यक्षिपच्च शरान्तरम् । तत्र षोढाप्रभिन्नन्तुमातृभिश्चद्रूढीकृतम्
पुरुषाकृतिमापेदे तं दृष्ट्वा ते स्तनौ स्नुतौ । पालनीयं महावीर्यं विष्णुनासमविक्रमम्

अयमेवौरसः पुत्रस्तव भाति विनिश्चितम् ।
तस्माद्गृहाण शीघ्रं त्वं तेनाऽऽख्यातिरतीव ते ॥ ९१ ॥
इत्याऽऽज्ञप्ता शम्भुना सा तमादायाऽर्भकं द्रुतम् ।
अङ्कमारोप्य तं देवी पाययामास सा स्तनौ ॥ ९२ ॥

देवेन मोहिता देवी पुत्रस्नेहपराऽभवत् । पुनः कैलासमगमत्प्रभुणा सह शाङ्करी ॥
लालयन्ती सुतं देवी सन्तोषं परमं ययौ । एवं कुमारजननं वर्णितं ते मयाऽद्भुतम्
यः इदं शृणुयान्नित्यं कुमारजननं शुभम् । पुत्रपौत्राभिवृद्धिं तु लभते नाऽत्र संशयः
महद्दुःखंतु जननेहरस्याऽपियतोऽभवत् । प्रीत्यानुश्रुतवैशाखधर्मोऽप्यप्रतिमोभवेत्
तस्माद्वैशाखधर्मो हि सर्वाघौघविनाशनः । अवैधव्यप्रदः पुण्यः सर्वसम्पद्विधायकः
अनङ्गोऽपिहिसाङ्गत्वंयत्प्रभावात्समाप्तवान्।अस्नात्वाचाप्यदत्त्वाचवैशाखोयस्यवैयतः
अपि धर्मकृतो वाऽपिभवेद्दुःखपरम्परा । सर्वधम हितःस्याच्चयद्येकोऽयमनुष्ठितः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे कुमारोत्पत्तिकथनं नाम
नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दशमोऽध्यायः

अशून्यशयव्रतवर्णनपूर्वकंछत्रदानप्रशंसनेहेमकान्तस्य ब्रह्महत्यादिपापशमनवर्णनम्

मैथिल उवाच

यत्कामपत्नीचरितमशून्यशयनव्रतम् । देवोपदिष्टं तस्याऽस्य विधानम्ब्रूहिभूसुर! ॥
किंदानं को विधिस्तस्यपूजनं किं फलं तथा । एतदाचक्ष्वभूदेव!श्रोतुं कौतूहलंहिमे

श्रुतदेव उवाच

शृणु भूयः प्रवक्ष्यामि व्रतं पापप्रणाशनम् । अशून्यशयनं नाम रमायै हरिणोदितम्
येन चीर्णेनदेवेशोजीमूताऽऽभःप्रसीदति । लक्ष्मीभर्त्ताजगन्नाथःसमस्ताऽघौघनाशनः
अकृत्वायस्त्विदंराजन्व्रतं पातकनाशनम् । गार्हस्थ्यमनुवर्तेततस्येदं निष्फलम्भवेत्
श्रावणे शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां महीपते! । अशून्यशयनाख्यं तद्ग्राह्यं व्रतमनुत्तमम् ॥
चातुर्मास्येतुसम्प्राप्तेहविष्याशीभवेन्नरः । चतुर्भिःपारणं मासैःसम्यङ्निष्पाद्यतेप्रभो
लक्ष्मीयुक्तो जगन्नाथः पूजनीयो जनार्दनः । पारणे दिवसे प्राप्ते भक्ष्यञ्चैवचतुर्विधम्
उपायनं च दातव्यंब्राह्मणायकुटुम्बिने । सौवर्णीं राजतींचापिमूर्तिंकुर्यान्मनोरमाम्
पीताम्बरधरांदिव्यां वनमालाविभूषिताम् । शुक्लपुष्पैः सुगन्धैश्च पूजयेत्पुरुषोत्तमम्
शय्यादानैर्वस्त्रदानैर्विप्राणाम्भोजनैस्तथा । दम्पत्योर्भोजनैश्चैव दक्षिणाभिःप्रपूजयेत्
एवं तु चतुरो मासान्पूजयित्वा जनार्दनम् । मार्गशीर्षादिमासेषु पूजयेत्पूर्ववद्धरिम्
रक्तवर्णं हरिंध्यायेद्रुक्मिणीसहितं तथा । चैत्रादींश्चतुरो मासानेवं सम्पूजयेत्ततः
भूम्या सह स्थितं देवमर्चयेद्भक्तिपूर्वकम् । सनन्दनाद्यैर्मुनिभिः स्तूयमानमकल्मषम्
आषाढस्य च मासस्य द्वितीयायां समापयेत् । अष्टाक्षरेण मन्त्रेण जुहुयादनले शुभे
मार्गशीर्षादिमासानां पारणेभूमिपालक! । जुहुयाद्विष्णुगायत्र्या चैत्रादीनांनिबोधय
पौरुषेण च मन्त्रेण जुहुयादनले शुभे । पञ्चामृतं पायसञ्च ह्यपूपं घृतपाचितम् ॥१७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं क्रमेणद्रव्याणि प्रतिमासुनिबोधय । सौवर्णी प्रतिमांदद्याल्लक्ष्मीनारायणस्यच

सौवर्णीम्मध्यमे दद्यात्कृष्णस्य परमात्मनः ।

राजतीं त्वन्तिमे दद्याद्वराहस्य महात्मनः ॥ १६ ॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्नामभिः केशवादिभिः । वस्त्रयुग्मैरलङ्कारैर्यथावित्तानुसारतः ॥

अर्चयित्वा ततो दद्यादपूपान्घृतपाचितान् । उपायनार्थं विप्रेभ्योद्वादशभ्योनिवेदयेत्

आचार्याय ततो दद्यात्प्रतिमां पूर्वकल्पिताम् ।

शय्यांसङ्कल्पितां पूर्णां सर्वालङ्कारभूषिताम् ॥ २२ ॥

तस्यामभ्यर्च्य विधिवल्लक्ष्मीनारायणम्परम् ।

कांस्यपात्रेण सहितामपूपैर्बहुभिस्तथा ॥ २३ ॥

वस्त्रालङ्कारसहितां दक्षिणाभिस्तथैवच । ब्राह्मणाय विशिष्टाय वैष्णवाय कुटुम्बिने

दातव्या विधिवत्पूज्य ब्राह्मणांश्चाऽपि भोजयेत् ।

दानमन्त्रः

लक्ष्म्या अशून्यं शयनं यथा तव जनार्दन! ॥ २५ ॥

शय्याममाप्य शून्या स्याद्दानेनाऽनेनकेशव । एवंसम्प्रार्थ्यदेवेशंस्वयम्भोजनमाचरेत्

पुरुषो वा सती वाऽपि विधवा वा समाचरेत् ।

अशून्यशयनार्थञ्च कर्त्तव्यं व्रतमुत्तमम् ॥ २७ ॥

एवं तव मया ख्यातं विस्तरान्नृपसत्तम! । सुप्रसन्ने जगन्नाथे भवेयुर्विविधाः प्रजाः

तस्मिंस्तुष्टे तु देवेशे देवानामपिदुर्लभाः । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन व्रतमेतत्समाचरेत् ॥

अवश्यं गन्तुकामेनतद्विष्णोःपरमंपदम् । एवमुक्तं मया सर्वं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि

इत्युक्तस्तेन राजर्षिः पुनरप्याह तंमुनिम् । वैशाखे छत्रदानस्य माहात्म्यं विस्तराद्वद

शृण्वतोऽपि न तृप्तिर्मे वैशाखोक्ताञ्छुभावहान् ॥ ३२ ॥

इति तद्वचनं श्रुत्वा यशस्यं पुण्यवर्द्धनम् । प्रत्युवाच महाभागं श्रुतदेवो महायशाः

श्रुतदेव उवाच

वैशाखे धर्मतप्तानां मानवानां महात्मनाम् । ये कुर्वन्त्यातपत्राणंतेषांपुण्यमनन्तकम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । वैशाखधर्ममुद्दिश्य पुरा कृतयुगे कृतम् ॥३५
वङ्गदेशे पुरा कश्चिद्धेमकान्त इति श्रुतः । कुशकेतोः सुतो धीमान्राजाशस्त्रभृतांवरः
एकदा मृगयाऽसक्तो गहनं वनमाविशत् ॥ ३६ ॥
तत्र नानाविधान्हत्वा मृगान्क्रोडादिकान्बहून् ।
श्रान्तो मध्याह्नवेलायां मुनीनामाश्रमं ययौ ॥ ३७ ॥
तदा शतर्चिनोनाम ऋषयः शंसितव्रताः । समाधिस्था नजानन्तिबाह्यकृत्यञ्चकिञ्चन
तान्दृष्ट्वा निश्चलान्विप्रान्क्रुद्धो हन्तुं मनो दधे । भूपंनिवारयामासशिष्याणामयुतंतदा
दुर्बुद्धे शृणु नो वाक्यं गुरवस्तु समाधिगाः ।
नो जानन्ति वहिः कृत्यं तस्मात्क्रोधं न चाऽर्हसि ॥ ४० ॥
ततः शिष्यानुवाचेदं वचनंक्रोधविह्वलः । यूयंकुरुध्वमातिथ्यमध्वश्रान्तस्यमेद्विजाः
एवमुक्ताश्च भूपेन शिष्या ऊचुस्तदा नृपम् । नाऽज्ञप्तागुरुभिर्भूपवयं भिक्षाशिनःपुनः
गुरुतन्त्राः कथंकर्तुमातिथ्यन्तेवयंक्षमाः । प्रत्याख्यातोनृपःशिष्यैस्तान्हन्तुंधनुराददे
मृगदस्युभयादिभ्यो बहुधा रक्षितामया । ते मामेवोपशिक्षन्ति मया दत्तप्रतिग्रहाः
एतेमांन विजानन्ति कृतघ्ना भूरिमानिनः । घ्नतोपिमेनदोषःस्यादेतान्वैह्याततायिनः
एवं विक्रुद्धमानः सञ्छरान्मुञ्चञ्छरासनात् । तान्विद्रुतानन्वद्रुत्यजघ्नेशिष्यशतत्रयम्
दुद्रुवुर्भयतः सर्वेविहायाऽऽश्रममञ्जसा । विद्राविते्षुशिष्येषुबलादाश्रमसंस्थितान्
सम्भाराञ्जगृहुः शीघ्रं सैनिकाः पापबुद्धयः । यथेष्टं भोजनं चक्रुर्नृपेणैवानुमोदिताः
ततः सेनाऽऽवृतो राजापुरीमागाद्दिनात्यये । कुशकेतुस्ततःश्रुत्वातनयस्यविचेष्टितम्
पुरान्निर्यातयामास गर्हयन्गार्हयन्सुतम् । राज्यानर्हं क्षमाहीनं स्वदेशादपि भूमिपः
पित्रा त्यक्तस्ततो राजाहेमकान्तोऽतिविह्वलः । वनंविवेशगहनंहत्याभिश्चसुपीडितः
बहुकालमवासींच्च गह्वरे निर्जने वने । आहारं कल्पयामास व्याधधर्ममुपाश्रितः
न क्वाऽपि स्थितिमापेदे हत्यायाऽभिद्रुतो भृशम् ।
अष्टाविंशतिवर्षाणि गतान्यस्य दुरात्मनः ॥ ५२ ॥
तीर्थयात्राप्रसङ्गेन त्रितोनाम महामुनिः । तस्मिन्नरण्ये वैशाखे रवौ मध्यन्दिने गते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गच्छन्नातपविक्रान्तस्तृषया चाऽपि पीडितः ।
क्वचिद्वृक्षविहीने तु प्रदेशे मूर्च्छितोऽभवत् ॥ ५५ ॥

दैवाद्दृष्ट्वा हेमकान्तस्त्रितं नाममहामुनिम् । तृषार्तं मूर्छितं श्रान्तं कृपां चक्रेनृपाधमः
ब्रह्मपत्रैस्ततदा छत्रं कृत्वा चाऽऽतपवारणम् । मुनेर्जग्राह शिरसि ह्यलाबुस्थं जलंददौ
लब्धसञ्ज्ञोऽभवत्तेन ह्युपचारेण वै मुनिः । पत्रच्छत्रं क्षत्रदत्तं गृहीत्वा गतविक्लमः
ग्रामं क्वचिच्छनैःप्राप्यकिञ्चिदाप्यायितेन्द्रियः । तेनपुण्यप्रभावेणब्रह्महत्याशतत्रयम्
विनष्टमभवत्तस्य क्षणादेव महात्मनः । ततो विस्मयमापन्नो हेमकान्तो महारथः
बहुधा पीडयमानस्य ब्रह्महत्याःकथङ्गताः । केनाऽपि निष्कृताह्येताःक्वगताःकेनहेतुना
इत्येवंचिन्तयामासब्रह्महत्याविमोचनम् । एवंचाऽज्ञस्थितेराज्ञियमदूताअथाऽऽगमन्
नेतुमेनं महात्मानं हेमकान्तं वने स्थितम् । ग्रहणीं जनयामासुः प्राणान्हर्तुंमहात्मनः
तदा प्राणवियोगार्तः पुरुषांस्त्रीन्ददर्श ह । यमदूतान्महाघोरानूर्ध्वकेशान्भयङ्करान्
चिन्तयानःस्वमर्माणितूष्णीमासीत्तदानृपः । छत्रदानप्रभावेणजाताविष्णुस्मृतिर्नृप
तेनस्मृतो महाविष्णुर्विष्वक्सेनंस्वमन्त्रिणम् । उवाचतूर्णंत्वंगच्छयमदूतान्निवारय
वैशाखधर्मनिरतं हेमकान्तन्तु पालय । निष्पापमेनं मद्भक्तं पित्रे देहि पुरं गतः ॥ ६७॥
मदीरितेन वाक्येन कुशकेतुश्च बोधय । सर्वधर्म्मोज्झितो वाऽपिब्रह्मचर्यादिवर्जितः
वैशाखधर्मनिरतो मत्प्रियः स्यान्न संशयः । कृतागाश्चाऽपित्वत्पुत्रोमुनित्राणपरायणः
वैशाखे छत्रदानेन निष्पापो नाऽत्र संशयः । तेन पुण्यप्रभावेण शान्तोदान्तश्चिरायुषः
शौर्यौदार्यगुणोपेतस्त्वत्समोऽयं गुणैरपि । तस्मादेनं राज्यभारेसंस्थापयमहाबलम्

विष्णुनैवं समाज्ञप्तमित्यादिश्य नृपोत्तमम् ।
पितुर्वशे हेमकान्तं स्थाप्याऽऽयाहि च मां पुनः ॥ ७२ ॥

इत्यादिष्टो भगवता विष्वक्सेनो महाबलः । हेमकान्तं समासाद्य यमदूतान्निवार्यच
पाणिना शन्तमेनैव परस्पर्शाङ्गेषु भूमिपम् । भगवद्भक्तसंस्पर्शाद्धतव्याधिःक्षणादभूत्
विष्वक्सेनस्ततस्तेन सह तस्य पुरीं ययौ । तं दृष्ट्वाविस्मितोभूत्वाकुशकेतुर्महाप्रभुः
ननामशिरसा भक्त्या दण्डवत्पतितो भुवि । गृहं प्रवेशयामास पार्षदं परमात्मनः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्तुत्वाचविविधैःस्तोत्रैःपूजयामासवैभवैः । तस्मैप्रीतमनाःप्राहचिष्वक्सेनोमहाबलः
हेमकान्तं समुद्दिश्ययदुक्तं विष्णुना पुरा । तच्छ्रुत्वा कुशकेतुश्चपुत्रंराज्ये निवेश्यच ॥

विष्वक्सेनाभ्यनुज्ञातः सभार्यो वनमाविशत् ।
विष्वक्सेनो हेमकान्तमनुमन्त्र्याऽभिपूज्य च ॥ ७६ ॥
श्वेतद्वीपं ययौ धीमान्विष्णुपार्श्वे महामनाः ।
हेमकान्तस्ततो राजा वैशाखोक्ताञ्छुभावहान् ॥ ८० ॥
विष्णुप्रीतिकरान्धर्मान्प्रतिवर्षं चकार ह ।
ब्रह्मण्यो धर्ममार्गस्थः शान्तो दान्तो जितेन्द्रियः ॥ ८१ ॥

दयालुः सर्वभूतेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः । प्रवृद्धः सर्वसम्पद्भिः पुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥

भुक्त्वा भोगान्समस्तांश्च विष्णुलोकमवाप्तवान् ॥ ८३ ॥
नेक्षे तु वैशाखसमांश्च धर्मान्सुखप्रयत्नान्बहुपुण्यहेतून् ।
पापेन्धनाग्निनिभान्सुलभ्यान्धर्मादिमोक्षान्तपुमर्थहेतून् ॥ ८४ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे छत्रदानप्रशंसने हेमकान्तस्य ब्रह्महत्यादि पापशमनवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः

वैशाखधर्मवर्णनेकीर्त्तिमद्राजविजयवर्णनम्

मैथिल उवाच

वैशाखधर्माः सुलभाः पुण्यराशिविधायकाः । विष्णुप्रीतिकराःसद्यःपुमर्थानांतुहेतवः

न प्रख्याताः कथं लोके शाश्वताः श्रुतिचोदिताः ।
प्रख्याताराजसाधर्मास्तामसाअपि भूरिशः ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुर्घटा बहुयत्नाश्च बहुद्रव्यव्ययावहाः । केचिन्माघं प्रशंसन्तिचातुर्मास्यं परे जगुः ॥
व्यतीपातादिधर्मांश्च वर्णयन्तीह भूरिशः । एतद्विवेकं विस्तार्य श्रोतुकामाय मे वद

श्रुतदेव उवाच

शृणु भूप! प्रवक्ष्यामि न प्रख्याताश्मे कथम् । इतरेषां च धर्माणांकथंख्यातिश्चभूतले
राजसास्तामसाभूमौबहवःकामुकाजनाः । इच्छन्त्यैहिकभोगांस्तेपुत्रपौत्रादिसम्पदः

क्वचित्कथञ्चन क्वाऽपि जनेष्वेकोऽतिकृच्छ्रतः ।

स्वर्गाय यतते लोके तस्माद्यज्ञादिसत्क्रियाः ॥ ७ ॥

कुरुतेऽतिप्रयत्नेन मोक्षं नोपासते नरः । क्षुद्राशाभूरिकर्माणोजनाः काम्यानुपासते ॥
प्रख्याता राजसा धर्मास्तामसाअपितेनवै । नख्याताःसात्त्विकाधर्माहरिप्रीतिकराइमे
निष्कामिकाइमे धर्माह्यैहिकाऽऽमुष्मिकप्रदाः । नजानन्तिजनामूढामोहितादेवमायया
यथाऽऽधिपत्ये सम्प्राप्ते सर्वसिद्धोमनोरथः । मोहनार्थं स्थलं प्राप्तमाधिपत्येनहीयते
कारणञ्च प्रवक्ष्यामि गोपनेभूतलेऽञ्जसा । यद्वैशाखोक्तधर्माणांसात्त्विकानांनृणामिह
सार्वभौमःपुराकाश्यामिक्ष्वाकुकुलभूषणः । कीर्तिमानितिविख्यातोनृगपुत्रोमहायशाः
जितेन्द्रियो जितक्रोधोब्रह्मण्यो राजसत्तमः । एकदा मृगयासक्तोवसिष्ठाश्रममाययौ

गच्छन्मार्गे ददर्शाऽसौ वैशाखे धर्मनिष्ठुरे ।

भूयोभयः कार्यमाणाञ्छिष्यांस्तस्यमहात्मनः ॥ १५ ॥

क्वचित्प्रपां प्रकुर्वन्ति छायामण्डपमेव च । तटप्रपातं निस्तीर्यवापींकुर्वन्तिनिर्मलाम्

सूपविष्टान्क्वचिद्वृक्षे व्यजनैर्वीजयन्ति च ।

क्वचिद्दद्युर्हीक्षुदण्डान्कचिद्गन्धान्कचित्फलम् ॥ १७ ॥

मध्याह्ने छत्रदानञ्च सायाह्ने पानकस्य च । क्वचिद्यच्छन्ति ताम्बूलं नेत्रेकर्पूरलेपनम्
सुच्छाये चवनेकेचित्सुसंमृष्टाऽङ्गणेषुच । केचिद्दास्तरयन्त्यद्धावालुकानिहितानिच

कुर्वन्त्यान्दोलिकां राजन्वृक्षशाखावलम्बिनीम् ।

के यूयमिति पप्रच्छ वासिष्ठा इति तेऽब्रुवन् ॥ २० ॥

किमेतदिति पप्रच्छ धर्मा वैशाखचोदिताः । पुमर्थहेतव इमे क्रियन्तेऽस्माभिरञ्जसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वसिष्ठस्याऽऽज्ञया चेति तेऽब्रुवन्नृपसत्तमम् । एतदाचरणेपुंसांकिंफलंकस्तुतुष्यति
एतद्विस्तार्य मे ब्रूत यूयं सम्यग्यथाश्रुतम् । इतिराज्ञातुसम्पृष्टाःप्रत्यूचुस्तेमहीपतिम्
गुरोराज्ञाक्रमेणैव कुर्वतां पथिसत्क्रियाः । नास्माकमवकाशोऽत्रगुरुंपृच्छयथोचितम्
स वेत्ति तत्त्वतो नूनं धर्मानेतान्महायशाः । इतिशिष्यैर्वसिष्ठस्यप्रयुक्तस्तुद्रुतंययौ
वसिष्ठस्याऽश्रमं पुण्यंविद्यायोगोपबृंहितम् । समायान्तंनृपंवीक्ष्यवशिष्ठःप्रीतमानसः

आतिथ्यं विधिवच्चक्रे सानुगस्यमहात्मनः ।
सूपविष्टःकृताऽऽतिथ्यःप्रीतःपप्रच्छ तं गुरुम् ॥ २७ ॥

राजोवाच

मार्गे दृष्टं महाश्चर्यं त्वच्छिष्यैश्च कृतं शुभम् । मया पृष्टश्चतैर्नोक्तंक्रियमाणंशुभावहम्

नास्माकमवकाशोऽत्र ह्येतद्धर्मप्रशंसने ।
कर्तव्या चक्रियाऽस्माभिर्गुरुणायाचचोदिता ॥ २९ ॥
गुरुं गच्छेति तैरुक्तआगतोऽहं तवाऽन्तिकम् ।
मृगयाऽऽसक्तचित्तेन श्रान्तेनाऽऽतिथ्यमिच्छता ॥ ३० ॥
दृष्टं मार्गे त्विदं पुण्यं तव शिष्यैश्चकारितम् ।
जिज्ञासाऽऽसीत्ततःश्रोतुं धर्मानेतान्मुनीश्वर! ॥ ३१ ॥

त्वमादिरादिमान्धर्मान्समाचरसिवैयतः । तान्धर्माञ्छ्रोतुकामाय शिष्यायप्रणतायच
श्रद्दधानाय मे ब्रूहि विस्तरान्मुनिपुङ्गव । इतीक्ष्वाकुकुलीनेनराज्ञा पृष्टो महायशाः ॥

मनसा तोषमापेदे सम्यक्पृष्टोऽधुनाऽमुना ।
अहो व्यवसितावुद्धी राजंस्तेऽद्य सुशिक्षिता ॥ ३४ ॥

यस्माद्विष्णुकथायाञ्चतद्धर्माचरणेऽपि च । मतिरात्यन्तिकीजातासुकृतंफलितंतव
इति सम्भाष्यराजानंजातहर्षस्तत्रब्रवीत् । शृणुभूप प्रवक्ष्यामियत्पृष्टोऽहंत्वयाऽधुना
यस्यश्रवणमात्रेण मुच्यते सर्वकिल्विषैः । सर्वधर्मान्परित्यज्यवर्ततेविषयात्मकः ॥
वैशाखस्नाननिरतः स प्रियो मधुविद्विषः । साङ्गान्धर्माननुष्ठाय वैशाखो येन नादृतः
स्नानदानार्चनैःपुण्यैस्तस्यदूरतरोहरिः । अस्नाप्य चाऽप्यदत्त्वा च वैशाखो येननीयते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्मणा स तु चाण्डालो नाऽत्र कार्या विचारणा ।
वैशाखोक्तैर्महाधर्मैर्येन चाऽऽराधितो हरिः ॥ ४० ॥

तैश्च तोषं समायातिप्रददातिसमीहितम् । लक्ष्मीभर्त्ता जगन्नाथो ह्यशेषाघौघनाशनः
धर्मैःसूक्ष्मैश्चप्रीणातिनप्रयासैर्धनैरपि । भक्त्यासम्पूजितोविष्णुः प्रददातिसमीहितम्

तस्माद्राजन्सदा भक्तिः कर्तव्या मधुविद्विषः ।
जलेनाऽपि जगन्नाथः पूजितः क्लेशहा हरिः ॥ ४३ ॥

परितोषं व्रजत्याशु तृषार्त्तः सलिलैर्यथा । महदप्यल्पदं कर्म तथा ह्यल्पञ्च भूरिदम्
कर्मणाऽल्पत्वभूरित्वे न हेतू महदल्पके । किन्तु कर्मस्वरूपञ्च गहना कर्मणो गतिः

वैशाखोक्ता इमे धर्माः स्वल्पाऽऽयासकृता अपि ।
बहुव्ययविनाशाश्च विष्णोः प्रीतिकराः शुभाः ॥ ४६ ॥

तस्मात्त्वमपि भूपालवैशाखोक्तान्समाचर । त्वद्राष्ट्रीयैर्जनैःसर्वैःकारयेमाञ्छुभावहान्
न करोतिचयोधर्मान्वैशाखोक्तान्नराधमः । बहुधाशिष्यमाणोऽपिसदण्ड्यस्तवभूपते

इत्यावश्यकतां सम्यक्छास्त्रैर्व्युत्पाद्य तस्य च ।
पश्चाद्वैशाखनिर्दिष्टान्धर्मान्प्रोवाच सर्वशः ॥ ४९ ॥
श्रुत्वा तान्सकलान्धर्मान्गुरुं सम्पूज्य भक्तितः ।
स राजागृहमागत्य सर्वान्धर्मांश्चकार ह ॥ ५० ॥

भक्तिमान्केशवे राजन्देवदेवे निरञ्जने । नाऽन्यं पश्यति देवेशात्पद्मनाभान्महीपतिः
भेरीमुद्घाद्य मातङ्गं स्वराष्ट्रेऽघोषयद्भटैः । अष्टवर्षाधिको मर्त्यो ह्यशीतिर्न हिपूर्यते
प्रातर्नस्नातिमेषस्थेसूर्येसर्वोऽपियोजनः।समेदण्ड्यश्चवध्यश्चनिर्यास्याविषयाद्ध्रुवम्
पितावा यदिवा पुत्रो भर्यावाऽथसुहृज्जनः । वैशाखधर्महीनश्चनिग्राह्योदस्युवन्मया
दातव्यंविप्रमुख्येभ्यःस्नात्वाप्रातर्जलेशुभे । प्रपादानादिधर्मांश्चकुरुध्वं शक्तितोऽनघाः
विप्रञ्च धर्मवक्तारं ग्रामेग्रामे न्यवेशयत् । पञ्चानामपि ग्रामाणामकरोदधिकारिणम्
दण्डार्थं त्यक्तधर्माणांदशवाजिनिषेवितम् । एवं प्रवृत्तः सर्वत्रसार्वभौमस्यशासनात्
प्रवृद्धो धर्मवृक्षोऽयं सर्वदेशेषु विस्तरात् । ये केचिन्निधनं यान्ति भूपालविषये नराः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रमादाच्च नृपश्रेष्ठ! ते यान्ति हरिमन्दिरम् । अवश्यंवैष्णवोलोकःप्राप्यतेमानवैर्ध्रुवम्
व्याजेनाऽपि सकृत्स्नातःप्रातर्मेषगतेरवौ । सर्वपापविनिर्मुक्तोयातिविष्णोःपरंपदम्
न प्राप्नोति यमं धर्मं सकृद्वैशाखस्नानतः । वैलेख्यमगमद्राजा रविसूनुस्तदा नृप!

लेख्यकर्मणि विश्रान्तश्चित्रगुप्तोऽभवत्तदा ।
मार्जितानि च लेख्यानि पुरा पापोद्भवानि च ॥ ६२ ॥
गच्छद्भिर्वैष्णवं लोकं स्वकर्मस्थैर्जनैः क्षणात् ।
शून्यास्तु नरकाः सर्वे पापिप्राणिविवर्जिताः ॥ ६३ ॥

भग्नयानोऽभवन्मार्गोवैशाखस्यप्रभावतः । सर्वेऽपिविमलाकोराजनायान्तिहरेःपदम्

दिवौकसान्तु ये लोकाः शून्याः सर्वे तथाऽभवन् ।
शून्ये त्रिविष्टपे जाते शून्येषु नरकेषु च ॥ ६५ ॥

नारदो धर्मराजानं गत्वा चेदमुवाच ह । नाऽऽक्रन्दः श्रूयते राजन्प्राक्क्रुतोनरकेयथा

तथा न क्रियते लेख्यं किञ्चिद्दुष्कृतकर्मणाम् ।
चित्रगुप्तो मुनिरिव स्थितोऽयं मौनसंस्थितः ॥ ६७ ॥
कारणं ब्रूहि राजेन्द्र! न यान्ति तव मन्दिरम् ।
मनुष्याः पापकर्माणो मायादम्भविवर्धिताः ॥ ६८ ॥

एवमुक्ते तु वचने नारदेन महात्मना । प्राह वैवस्वतो राजा किञ्चिद्दैन्यसमन्वितः
योऽयं नारद! भूपालःपृथिव्यांसाम्प्रतंस्थितः । सोऽतिभक्तोहृषीकेशेपुराणपुरुषोत्तमे
प्रबोधयति वैशाखधर्मे भेरीस्वनेन च । अष्टवर्षाधिको मर्त्यो ह्यशीतिर्न हि पूर्यते

यो वै ह्यकृतवैशाखः स मे दण्ड्यो न संशयः ।
तद्भयाद्धि जनाः सर्वे नोल्लङ्घन्ति कदाचन ॥ ७२ ॥

गच्छन्ति वैष्णवं धामकर्मणातेननारद! । वैशाखसेवनाल्लोकायास्यान्तिहरिमन्दिरम्

तेन राज्ञा मुनिश्रेष्ठ! मार्गो लुप्तो ममाऽधुना ।
कृता हि नरकाः शून्या लोकाश्चापि दिवौकसाम् ॥ ७४ ॥
विश्रान्तो लेखको लेखे लिखितं मार्जितं जनैः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैशाखमासधर्मस्य माहात्म्यं त्वीदृशं मुने! ॥ ७५ ॥
ब्रह्महत्यादिपापानि विमुक्तानि जनैर्द्विज! ।
कृत्वा वैशाखकृत्यानि यान्ति विष्णोः परंपदम् ॥ ७६ ॥
सोऽहं काष्ठसमो जातो नकश्चिन्ममगोचरः । युद्धंकृत्वातुतंहन्मिसर्वथाऽद्यमहाबलम्
अकृत्वा स्वामिकार्यं तु निर्व्यापारो यदि स्थितः ।
तस्य वित्तं समश्नाति स याति नरकं ध्रुवम् ॥ ७८ ॥
यदिदैवादवध्योऽयंतदाब्रह्माणमेत्यच । निवेद्यतस्मैतत्सर्वंपश्चात्स्वस्थस्थितिर्भवम्
इत्युक्त्वाद्विजमामन्त्र्य सानुगः प्रययौ भुवम् ।
स कालो महिषारूढो दण्डमुद्यम्य भीषणम् ॥ ८० ॥
मृत्युरोगजराद्यैश्च पार्षदैश्च महोत्कटैः । पञ्चाशत्कोटिसङ्ख्याकैर्यमदूतैर्वृ तस्ततः
स तूर्णं तस्य राजर्षे रुरोध सकलांपुरीम् । शङ्खंदध्मौमहाघोरं सर्वलोकभयङ्करम्
तच्छ्रुत्वा स तु राजर्षिर्ज्ञात्वावैवस्वतंयमम् । ससज्जीकृतसर्वस्वःपत्तनान्निर्ययौरुषा
तयोर्युद्धमभूत्तत्र भीषणं रोमहर्षणम् । मृत्युं कालं तथा रोगं यमं दूतपतिं तथा
जित्वा क्षणेन राजर्षिर्द्रावयामास रोषतः । ततः क्रुद्धो यमो राजास्वयमभ्येत्यतंरुषा
युयोध बहुभिर्बाणैः सिंहनादंचकार ह । चकर्तराजातस्याऽपिकार्मुकंविशिखैस्त्रिभिः
पुनश्चर्मासिमादाय यमोहन्तुमथाऽऽगमत् । तं दृष्ट्वातुनृपःक्रुद्धःपुनश्छित्वाऽसिचर्मणी
निचखान ललाटे च शरं कालोरगप्रभम् । यमस्तेनाऽऽहतः क्रुद्धस्ततोदण्डमुपाददे
ब्रह्मास्त्रेण च सम्मन्त्र्य दण्डं तस्मै मुमोच ह ॥ ८८ ॥
हाहाकारोमहानासीज्जनानांपश्यतांतदा । तदाविष्णुःस्वभक्तस्य रक्षायै प्राहिणोदरि
विष्णुमुक्तं तदा चक्रं शीघ्रमागत्य तद्रणे । यमदण्डेन संयुध्य तद्ब्रह्मास्त्रं निवार्य च
यमं हन्तुमथाऽऽरेभे सहस्रारंमहाद्भुतम् । देवभक्तस्ततो भीतस्तदाऽस्तौच्चक्रमञ्जसा
सहस्रार नमस्तेऽस्तु विष्णुपाणिविभूषण । त्वं सर्वलोकरक्षायै हरिणा च धृतं पुरा
त्वां याचेऽद्य यमं त्रातुं विष्णुभक्तं महाबलम् ॥ ९३ ॥
नृणां देवद्रुहां कालस्त्वमेव हिन चाऽपरः । तस्मादेनं यमं रक्ष कृपां कुरु जगत्पते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नृपेणैवं स्तुतं चक्रं यमं हित्वा नृपान्तिकम् । पुनर्ययौमहाराज! देवानांपश्यतांदिवि
ततो यमोऽतिनिर्विण्णो ब्रह्मणः सदनं ययौ । स ददर्शसमासीनं मूर्तामूर्तजनैर्वृतम्
ध्रुवाश्रयं जगद्वीजं सर्वलोकपितामहम् । उपास्यमानं विबुधैर्लोकपालैर्दिगीश्वरैः
इतिहासपुराणाद्यैर्देवैर्विग्रहसंस्थितैः । मूर्तिमद्भिः समुद्रैश्च नदीभिश्च सरोवरैः॥६८
देहवद्भिस्तथा वृक्षैरश्वत्थाद्यैरशोषितैः । वापीकूपतडागैश्च मूर्तिमद्भिश्च पर्वतैः ॥ ६६
अहोरात्रैस्तथाप क्षैर्मासैःसम्वत्सरैस्तथा । कलाकाष्ठानिमेषैश्चऋतुभिश्चाऽयनैर्युगैः
संकल्पैश्चविकल्पैश्च निमिषोन्मेषणैस्तथा । ऋक्षैर्योगैश्च करणैःपूर्णिमाभिःसुसंक्षयैः
सुखैर्दुःखैर्भयैश्चैव लाभाऽलाभैर्जयाजयैः । सत्त्वेन रजसा चैव तमसा च समन्वितम्
शान्तमूढाऽतिप्रौढैश्च विकारैः प्राकृतैरपि । वायुना देवदेवेनश्लेष्मपित्तादिभिर्वृतम्
तेषां मध्येऽविशत्सौरिःसव्रीडाचवधूर्यथा । विलोकयन्धरापृष्ठंम्लानवक्त्रंव्यदर्शयत्

सम्प्रविष्टं यमं दृष्ट्वा सकाशस्थं सहानुगम् ।
विस्मितास्ते मिथः प्रोचुः किमर्थं भास्करिस्त्विह ॥ १०५ ॥

सम्प्राप्तोलोककर्तारंद्रष्टुंदेवंपितामहम् । निर्व्यापारःक्षणमपियोऽयंनास्तिरवेःसुतः

सोऽयमस्यागतः कस्मात्कच्चित्क्षेमं दिवौकसाम् ।
आश्चर्याऽतिशयोऽयश्च सम्मार्जितपटस्त्वयम् ॥ १०७ ॥

लेखकस्तमनुप्राप्तो दैन्येन महताऽन्वितः । न कदाचित्पटो ह्यस्यमार्जितोधर्मभीरुणा
यन्न दृष्टं श्रुतं वाऽपि तदिहाऽद्य प्रपद्यते । एवमुच्चरतां तेषां भूतानां भूतशासनः ॥

निष्पपाताऽग्रतो भूमौ ब्रह्मणो रविनन्दनः ॥ १०६ ॥

कृत्तमूलोयथा शाखी त्राहित्राहीतिवै रुदन् । परिभूतोऽस्मिदेवेशसम्मार्जितपटःकृतः

त्वयि नाथे न विफलं पश्यामि कमलासन! ॥ १११ ॥

एवमुक्त्वा हि निश्चेष्टो बभूवनृपसत्तम! । ततः कोलाहलःशब्दः सभायां समजायत
यो हि खेदयतेमर्त्यान्सर्वांस्थावरजङ्गमान् । सर्वैरुदतिदुःखार्तःकस्माद्वैवस्वतोयमः
जनसन्तापकर्त्ता यःसोचिराद्यात्यशोभनम् । नहिदुष्कृतकर्त्ता हिनरःप्राप्नोतिशोभनम्
ततोनिवारयामास वायुस्तेषां वचस्तदा । लोकानां समवेतानां मतंज्ञात्वासवेधसः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निधार्य लोकान्मार्तण्डि शनैरुत्थापयन्मरुत् ।
भुजाभ्यां शालपीनाभ्यां लोकसूत्र उदारधीः ॥ ११६ ॥
विह्वलं तं परायत्तमासने सन्यवेशयत् । आसनस्थमुवाचेदं व्योमसूनू रवेः सुतम् ॥
केन त्वमभिभूतोऽसि केनस्थानान्निवारितः । केनाऽयं मार्जितोदेव! पटोलेखपटस्तव
ब्रूहि सर्वमशेषेण कुतोहेतोस्त्वमागतः । यः प्रभुस्तात! सर्वेषां सतेकर्तामामाऽपिच
अपि कस्माच्च मार्तण्डे! दुःखं हृदयसंस्थितम् ॥ ११९ ॥
स एवमुक्तः श्वसनेन सत्यमादित्यसूनुर्वचनं बभाषे ।
विलोक्य वक्त्रं कुशकेतुसूनोः सगद्गदं चेदमहोऽतिदीनम् ॥ १२० ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे कीर्तिमद्विजय-वर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

द्वादशोऽध्यायः

यमदुःखनिरूपणम्

यम उवाच

शृणु मे वचनं नाथ! लोपितोऽहं पितामह । मरणादधिकं मन्येमत्पदस्यचखण्डनम्
नियोगी न नियोगं हि करोति कमलासन! । प्रभोर्वित्तंसमश्नातिसभवेत्काष्ठकीटकः
योऽश्नाति लोभाद्वित्तानिप्रज्ञावांश्चमहीपते! । सतिर्यग्योनिनरकेयातिकल्पशतत्रयम्
निःस्पृहो नाऽऽचरेद्यस्तु नियोगं पद्मसम्भव! ।
भुक्त्वा तु नरकान्घोरान्स पुमान्वायसो भवेत् ॥ ४ ॥
आत्मकार्यपरोयस्तुस्वामिकार्यंविलुम्पति । भवेद्वेश्मनिपापात्माआखुःकल्पशतत्रयम्
नियोगीयश्च भूत्वा वै तिष्ठन्नित्यंस्ववेश्मनि । शक्तस्तु कार्यकरणेमार्जारोजायतेनरः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोऽहं देव ! तवादेशात्प्रजाधर्मेण साधये । पुण्येन पुण्यकर्तारं पापं पापेन कर्मणा ॥ सम्यग्विचार्य मुनिभिर्धर्मशास्त्रान्वितैः प्रभो । कल्पादौ वर्तमानस्ययातनादापयन्मम कर्तुं नियोगमेवं हित्वदीयोनैवशक्नुयाम् । राज्ञाकीर्तिमताभग्नोनियोगस्तवचक्षितौ भयादस्य जगन्नाथ पृथिवीं सागराम्बराम् । वैशाखधर्मसहितां पालयन्वर्तते क्वचित् विहाय सर्वधर्मांश्चविहाय पितृपूजनम् । विहायाऽग्निसपर्यांतुतीर्थयात्रादिसत्क्रियाः

योगसाङ्ख्यावुभौ त्यक्त्वा त्यक्त्वा प्राणनिरोधनम् ।
त्यक्त्वा होमञ्च स्वाध्यायं कृत्वा पापानि भूरिशः ॥ १२ ॥

प्रयान्तिवैष्णवं लोकंकृत्वावैशाखसत्क्रियाः । मनुजाःपितृभिःसार्द्धंतथैवचपितामहैः तेषामतीतपितरः पितॄणां पितरस्तथा । तथामातामहा यान्ति तेषां वै जनकादयः तेषामपि च नेतारो जनित्रीणाञ्च पूर्वजाः । एतद्दुःखं पुनर्देव मम मस्तकभेदनम्

प्रियायाः पितरो यान्ति मार्जयित्वा लिपिं मम ।
पितॄणां बीजजो यस्तु धात्र्या कुक्षौ धृतो विभो! ॥ १६ ॥

यदङ्केन कृतं कर्म तदङ्केनैव भुज्यते । तन्निरस्य कृतं सर्वं जानंस्त्वेकः कुलेतु यः ॥ तारयेत्तावुभौपक्षौषड्विंशोपर्यलंविभो । प्रियायाऽश्चापिवैतातसर्वेवैकुक्षिसम्भवाः तेऽपि सर्वे जगन्नाथ! यान्तिविष्णोः परं पदम् । न मे प्रयोजनं देवनियोगेनेदृशेनवै वैशाखधर्मनिरतःसमांत्यक्त्वाव्रजेद्धरिम् । त्रिःसप्तकुलमुद्धृत्यत्यक्तपापोऽतिशोभनः स त्यक्त्वा मम मार्गं हिप्रयातिहरिमन्दिरम् । न यज्ञैस्तादृशैर्देवगतिंप्राप्नोतिमानवः

सर्वतीर्थैर्न दानाद्यैर्न तपोभिश्च न व्रतैः ।
अपि वा सकलैर्धर्मैर्युक्तो नाऽऽप्नोति तां गतिम् ॥ २२ ॥
प्रयागपाताद्रणमध्यपाताद् भृगोश्च पातान्मरणाच्च काश्याम् ।
न तां गतिं यान्ति जनाश्च सर्वे वैशाखनिष्ठेन च या प्रपद्यते ॥ २३ ॥
प्रातः स्नात्वा देवपूजाञ्च कृत्वा श्रुत्वा कथां मासमाहात्म्यसञ्ज्ञाम् ।
धर्मान्कृत्वा चोचितान्वैष्णवांश्च स वै भवेद्विष्णुलोकैकनाथः ॥ २४ ॥

अप्रमाणमहं मन्ये लोकं विष्णोर्जगत्पतेः । यो न पूर्यतकोट्योघैःसर्वतःकमलासन!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माधवावसथेनेह समस्तेन पितामहम् । विकर्मस्थाऽविकर्मस्थाःशुचयोऽशुचयस्तथा

कृत्वा वैशाखकृत्यानि लोका यान्ति नृपाऽऽज्ञया ।

योऽस्माकंहि महच्छत्रुर्भवताञ्च विशेषतः ॥ २७ ॥

निग्राह्योजगतांनाथभवताऽसौमहीपतिः । हित्वाहिसकलान्धर्मान्सकृद्वैशाखस्नानतः

असंस्कृतजनायान्तिवैकुण्ठंहरिमन्दिरम् । अस्माभिस्तुकृतोपेक्षोविष्णुपादैकसंश्रयः

समस्तं नेष्यते लोकं पार्थिवो नाऽत्रसंशयः । एषदण्डपटोह्ययतवपद्भ्यांनिवेदितः

लोकपालत्वमतुलमर्जितं तेन भूभुजा । किमपत्येन जातेन मातुः क्लेशकरेण वै ॥

योनपातयते शत्रुं ज्येष्ठमासीव भास्करः । वृथासुता हि युवतिर्जाताचेद्धिकुपुत्रिणी

न तस्याः स्फुरते कीर्तिर्वनस्येव शतह्रदा । यत्पितुर्नोद्धरेत्पापाद्धियया वा बलेन वा

मातुर्जठरजो रोगः स प्रसूतो धरातले । धर्मे चाऽर्थे च कामे चयत्प्रतीपोभवेत्सुतः ॥

मातृहाह्युच्यते सद्भिः स पुत्रः पुरुषाधमः । तन्माता नृपपत्नीचलोकविख्यातसत्क्रिया

एकैव वीरसूर्लोके वीरः स नात्र संशयः । यथा वै कीर्तिमाञ्जातो मल्लिपेर्मार्जनायवै

नेदं व्यवसितं देव! केनचित्क्षत्रियेण हि । पुराणेषु जगन्नाथ न श्रुतं पटमार्जनम्

सोऽहं न जानामि जगत्पतीश ऋते क्षितीशं! हरितत्परं तम् ।

प्रचोदयन्तं पटहं सुघोषाद्विलोपयानं मम वेश्ममार्गम् ॥ ३८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायांद्वितीये वैष्णवखण्डे-

वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसमादे यमदुःखनिरूपणंनाम

द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रयोदशोऽध्यायः

यमदुःखसान्त्वनवर्णनम्

ब्रह्मोवाच

किमाश्चर्यं त्वया दृष्टं किमर्थंखिद्यते भवान् । सद्गणेषुकृतस्तापःसतापोमरणान्तिकः
तस्योच्चारणमात्रेण प्राप्यते परमं पदम् । नगच्छन्ति हरेर्लोकं कथं भूपस्यशासनात्

एकोऽपि गोविन्दकृतः प्रणामः शताश्वमेधावभृथेन तुल्यः ।
यज्ञस्य कर्त्ता पुनरेति जन्म हरेः प्रणामो न पुनर्भवाय ॥ ३ ॥

कुरुक्षेत्रेण किं तस्य सरस्वत्या च किं तथा । जिह्वाग्रे वर्ततेयस्यहरिरित्यक्षरद्वयम्
ब्राह्मणाः श्वपचींभुञ्जन्विशेषेणरजस्वलाम् । यदिविष्णुंसमरणेस्मरेन्नाप्नोतितत्पदम्

अभक्ष्यभक्षणाज्जातं विहायाऽघस्य सञ्चयम् ।
प्रयाति विष्णुसायज्यं यतो विष्णुप्रिया स्मृतिः ॥ ६ ॥

एवं विष्णुप्रियो मासोवैशाखोनामवैयम! । यद्धर्मश्रवणादेवमुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥
यातीति किमुवक्तव्यं तस्यानुष्ठानतत्परः । यस्मिन्सङ्गीयते यो हिप्रीयतेपुरुषोत्तमः
कथं न याति च गतिं तस्याऽनुष्ठानतत्परः । अस्माकं जगतांनाथोजनितापुरुषोत्तमः

तस्यैष्टान्माधवे मासि धर्मानेतान्करोत्ययम् ।
तस्य विष्णुः प्रसन्नात्मा सहाये सर्वदा स्थितः ॥ १० ॥

न तस्य भूपतेः सौरे समर्थस्त्वं च शिक्षणे । न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यतेक्वचित्

जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११ ॥

नियोगी स्वामिकार्येषुयावच्छक्तिसमीहते । तावतासकृतार्थःस्यान्नरकान्नैवगच्छति

कार्ये शक्तिविनिष्क्रान्ते स्वामिने च निवेदयेत् ।
अनृणस्तावता भृत्यो नियोगी सुखमश्नुते ॥ १३ ॥

तस्मान्निवेदितार्थस्यन्न ऋणं न च पातकम् । यत्नेकृतेस्वकर्तव्येनापराधोस्तिदेहिनः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मादशक्यकार्येऽस्मिन्न विशोचितुमर्हसि ॥ १५ ॥
इत्युक्तोब्रह्मणासौरिःपुनरत्यन्तखिन्नधीः । उवाचदीनयावाचागलद्बाष्पाऽऽकुलेक्षणः
प्राप्तं तात मया सर्वं त्वदङ्घ्रिभजनेन वै । नाऽहंयास्ये पुनः कर्तुं नियोगं पद्मसम्भव!
प्रशासति महावीर्येभूपेऽस्मिन्भूमिमण्डले । चालयित्वास्वधर्माँश्चतमेकंभूपतिंविभो
कृतकृत्योऽस्मितनयोगयायांपिण्डदोयथा । कृपालोतदिदंकार्यंसाधयस्वममाव्ययम्
विज्वरस्तु ततो भूयः शासनंतेकरोम्यहम् । श्रुत्वाब्रह्मा यमेनोक्तं पुनश्चिन्तापरायणः
तमुवाच पुनर्ब्रह्मा सान्त्वयन्बहुधाऽप्यमुम् ।

ब्रह्मोवाच

न निर्ग्राह्यस्त्वया राजा विष्णुधर्मपरायणः ॥ २१ ॥
यदि च्छलयसे कोपाद्वच्छामोह्यन्तिकंहरेः । निवेद्य सकलंतस्मै कर्मपश्चात्तदीरितम्
स एवकर्त्तालोकस्यधर्मस्यपरिपालकः । सचदण्डधरोऽस्माकंशास्ताकर्त्तानियामकः
नतदुक्तेऽस्तिप्रत्युक्तिरस्माकंविहितावृष! । नराजोक्तेस्तुप्रत्युक्तिर्दृश्यतेकाऽपिभूतले
इत्याश्वास्य यमं तेन साकं क्षीराम्बुधिं ययौ । ब्रह्मातुष्टाव चिन्मात्रं निर्गुणंपरमेश्वरः
साङ्ख्ययोगैरद्वितीयमेकं तं पुरुषोत्तमम् । आविरासीत्तदाविष्णुर्ब्रह्मणासंस्तुतोहरिः
प्रणामं चक्रतुस्तस्मै यमो ब्रह्मा च सत्वरम् । तावुवाचमहाविष्णुर्मेघगम्भीरयागिरा
कस्माद्युवामिहाऽऽयातौ किं दुःखंदनुजैरभूत् । म्लानंयममुखंकस्मात्केनवानतकन्धरः
एतद्वदस्व मे ब्रह्मन्नित्युक्तश्चाहकञ्जजः । त्वद्दासवर्ये भूपाले भूमिं शासति वै नराः
वैशाखधर्मनिरता यान्ति ते परमव्ययम् । ततो यमपुरी शून्यातेन चाऽतीवदुःखितः
तेन युद्धं चकाराऽऽसौहन्तुंदण्डमथाऽऽददे । त्वच्चक्रेणपराभूतोययावद्यममान्तिकम्
न च शक्ता वयं दण्डं त्वद्भक्तानांमहात्मनाम् । तस्मात्त्वामेवशरणंवयंप्राप्तामहाविभो
तस्माद्भूपं दण्डयित्वा पालयैनं यमं स्वकम् । इत्युक्तः प्रहसन्प्राह ब्रह्माणंयममेवच
लक्ष्मीं वाऽपि परित्यक्ष्ये प्राणान्देहमथाऽपि वा ।
श्रीवत्सं कौस्तुभं मालां वैजयन्तीमथाऽपि वा ॥ ३४ ॥
श्वेतद्वीपञ्च वैकुण्ठं क्षीरसागरमेव च । शेषं च गरुडं चैव न भक्तं त्यक्तुमुत्सहे ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विसृज्य सकलान्भोगान्मदर्थे त्यक्तजीवितान् ।
मदात्मकान्महाभागान्कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ३६ ॥
तस्मात्त्वद् दुःखशमने ह्युपायं कल्पयाम्यहम् ।
तस्य चायुर्मया दत्तमयुतं भूपतेर्भुवि ॥ ३७ ॥
गतान्यष्टौ सहस्राणि तत्रेदानीं नरान्तक! । आयुः शेषेतेन नीतेमत्सायुज्यंगतेऽपिच
भविष्यति ततो राजा वेनो नाम दुरात्मवान् ।
स लुम्पतिमहाधर्मान्सर्वानेताञ्छ्रुतीरितान् ॥ ३६ ॥
तदा वैशाखधर्माश्चविच्छिन्नाःस्युर्नसंशयः । स्वकृतेनैव पापेन वेनो दग्धोभविष्यति
पश्चादहं पृथुर्भूत्वापुनर्धर्मान्प्रवर्तये । तदाजनेषुप्रख्यातान्वैशाखोक्तान्करोम्यहम् ॥४१॥
मद्भक्तोमद्गतप्राणो यस्तु विन्यस्तसंग्रहः । एकःसहस्रेभवितातस्य प्रख्यापयेद्धितान्
कश्चिदेव हि जानातु धर्मानेतान्क्षितौ मम । ततस्तेभविता कार्यं माविषीदनरान्तक
दापयिष्यामिते भागंमासेऽस्मिन्माधवेऽपिच । नरैःसर्वैश्चवैशाखधर्मनिष्ठैर्महात्मभिः
भूपेनाऽपि च कालेन खेदं शमय तेन च । वीर्यशुल्कंतुतेभागंशत्रोर्भुङ्क्तेबलाधिकात्
गृह्णन्गृह्णन्स्वकं भागं न भागी दुःखमर्हति । त्वामुद्दिश्य न कुर्वन्ति प्रत्यहंयेनराभुवि
स्नानं चाऽर्घ्यं सोदकुम्भं दध्यन्नं चाऽन्तिमे दिने ।
वैशाखे सकलं कर्म तेषां च विफलं भवेत् ॥ ४७ ॥
तस्मात्क्रोधं त्यजनृपे भागदे मत्परायणे । ये के चाऽपिचकुर्वन्तिलोकेतेभागदानराः
वैशाखोक्ते महाधर्मे तेषां विघ्नंचमाकुरु । मामेवयेयजन्त्यद्धात्वांहित्वाधर्मपालकम्
मदाज्ञया महाभाग! तदा दण्डश्च त्वं कुरु । नृपाद्भागं दापयितुं सुनन्दं प्रेषयामि च ॥
मच्छासनात्स वै गत्वा भागं ते दापयिष्यति ।
तिष्ठत्येवं यमे स्वस्य सन्निधौ गरुडासनः ॥ ५१ ॥
सुनन्दं प्रेषयामास नृपं बोधयितुं विभुः । सोऽपिगत्वाबोधयित्वापार्श्वंश्चपुनरागमत्
इत्याश्वास्ययमंविष्णुस्तत्रैवाऽन्तरधीयत । यमंस्वयंसान्त्वयित्वासमनुज्ञाप्यवेगतः
अतिविस्मयमापन्नो ययौधामसहानुगैः । यमोऽपिस्वपुरींप्रायात्किञ्चित्संहृष्टमानसः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पश्चाद्विष्णोर्निदेशेन सुनन्दपरिबोधितः । भागदाः सकला लोका येवैशाखपरायणाः
धर्मराजं पुरस्कृत्य येनकुर्वन्ति मानवाः । तेषांहि स्वयमादत्ते पुण्यं वैशाखसम्भवम्
कुर्याच्च प्रत्यहं स्नानं दद्यादर्घ्यं यमाय वै ।
वैशाखे सकलं पुण्यमन्यथा विफलं भवेत् ॥ ५७ ॥
सोदकुम्भश्च दध्यन्नं पौर्णमास्याश्च माधवे । धर्मराजं समुद्दिश्य दातव्यं प्रथमे जनैः
पश्चात्पितॄन्समुदिश्य गुरुमुद्दिश्य वै नरः । मधुसूदनमुद्दिश्य पश्चाद्देवं जनार्दनम्
शीतलोदकदध्यन्नं ताम्बूलञ्च सदक्षिणम् ।
सफलं कांस्यपात्रस्थं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ ६० ॥
दद्याच्च प्रतिमां दिव्यां मधुसूदनदेवताम् । मासधर्मप्रवक्त्रे च दद्याद्विप्राय सीदते
तमेव धर्मवक्तारं पूजयेद्विभवैः स्वकैः । इत्यादिष्टः सुनन्देन तथा राजा चकार ह ॥
स नीत्वा चाऽऽयुषः शेषं भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
पुत्रपौत्रादिभिर्युक्तो जगाम हरिमन्दिरम् ॥ ६३ ॥
वैकुण्ठस्थे नृपेतस्मिन्वेनोराजाऽधमोऽभवत् । सर्वेधर्माश्चवैशाखधर्माअपिविशेषतः
दुरात्मना च तेनैव लुप्ता एव बभूविरे । न प्रख्याताः पुनर्भूमौ भूरिशो मोक्षहेतवः
यःकश्चिन्नैव जानाति वैशाखोक्तानिमाञ्छुभान् । बहुजन्मार्जितेपुण्यपरिपाकउपागते
वैशाखोक्तेषु धर्मेषु मतिरात्यन्तिकी भवेत् ।

मैथिल उवाच

पूर्वमन्वन्तरस्थो हि वेनो राजा दुरात्मवान् ॥ ६७ ॥
अयं वैवस्वतस्थो हि राजा चेक्ष्वाकुनन्दनः ।
इति श्रुतं मया पूर्वमिदानीश्चोच्यतेत्वया ॥ ६८ ॥
अयं वैकुण्ठगः पश्चाद्वेनो राजा भविष्यति । इत्येतं संशयं छिन्धि श्रुतदेवमहामते

श्रुतदेव उवाच

पुराणेषु च वैषम्यं युगकल्पव्यवस्थया । न चाप्रामाण्यशङ्का तेकथाव्यत्ययेक्वचित्
गते दैनन्दिने कल्पे यथैषा शाश्वती शुभा । मार्कण्डेयेन मे प्रोक्ता सा चोक्तातवभूपते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मान्न ख्यातिमायान्ति धर्मा वैशाखसम्भवाः

कश्चिदेव हि जानाति विरक्तो विष्णुतत्परः ॥ ७२ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे यमदुःखसान्त्वनंनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चतुर्दशोऽध्यायः

सत्यनिष्ठतपोनिष्ठयोराख्यानवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

यः प्रायः स्नाति वैशाखे मेषसंस्थे दिवाकरे। मधुसूदनमभ्यर्च्यकथांश्रुत्वाहरेरिमाम्

स तु पापविनिर्मुक्तो यति विष्णोः परंपदम्।

वाच्यमानां कथां हित्वा योऽन्यां सेवेत मूढधीः ॥ २ ॥

रौरवं नरकं प्राप्य पैशाचीं योनिमाप्नुयात्। अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्

पापघ्नं पावनं धर्म्यं सद्यो वन्द्यं पुरातनम्। पुरा गोदावरीतीरे क्षेत्रे ब्रह्मेश्वरे शुभे

दुर्वासशिष्यौ परमहंसौ ब्रह्मैकनिष्ठितौ। सदैवोपनिषद्विद्यानिष्ठितौ निरपेक्षितौ

भिक्षामात्राशिनौ पुण्यौ तौ गुहावासिनावुभौ।

सत्यनिष्ठतपोनिष्ठावितिख्यातौ जगत्त्रये ॥ ६ ॥

तयोर्मध्ये सत्यनिष्ठःसदाविष्णुकथापरः। श्रोतृणामप्यभावेचव्याख्यातृणांतथानृप

तदा कर्मकला नित्याः करोत्यद्धा मुनीश्वरः।

श्रोता चेदस्ति यः कश्चित्तस्मै व्याख्यात्यहर्निशम् ॥ ८ ॥

यदि व्याख्याति कश्चिद्वा पुण्यां विष्णुकथां शुभाम्।

तदा सङ्कुच्य कर्माणि शृणोति श्रवणे रतः ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अतिदूरस्थतीर्थानि देवतायतनानि च । हित्वा कथाविरोधीनितथाकर्माणिभूरिशः
श्रृणोति च कथां दिव्यां श्रोतृभ्यो वक्ति वै स्वयम् ।
विना कथां न जानाति सेव्यमन्यन्नरेश्वर ॥ ११ ॥
व्याख्याति चगृहेस्वस्यवक्तारोगाद्युपद्रुतः । कूपस्नानपरोभूत्वाश्रृणोत्येवकथांमुनिः
कथायाश्च विरामेतुस्वकृत्यंसाधयत्यलम् । कथांवैश्रृण्वतः पुंसोजन्मबन्धोनविद्यते
सत्त्वशुद्धिस्ततो विष्णावरतिश्चैव गच्छति ।
रतिश्च जायते विष्णोः सौहृदं चैव साधुषु ॥ १४ ॥
नीरजं निर्गुणं ब्रह्म सद्यो ह्यवरुध्यते । ज्ञानहीनस्य वै पुंसः कर्म वै निष्फलं भवेत्
बहुधाचरितंचाऽपियथैवान्धकदर्पणम् । कर्माणिक्रियमाणानिबहुधाशोचितात्मभिः
सत्त्वशुद्ध्यै भवन्त्येव सत्त्वशुद्ध्या श्रुतिं व्रजेत् ।
श्रुतेस्तु ज्ञानमासाद्य ज्ञात्वा ध्यानाय कल्पते ॥ १७ ॥
बहुधाश्रवणं ध्यानं मननं श्रुतिचोदितम् । यत्रविष्णुकथानास्तियत्रसाधुजनानहि ॥
साक्षाद्गङ्गातटं वाऽपित्याज्यमेवनसंशयः । यद्देशेतुलसीनास्तिवैष्णवंधामवाशुभम्
यत्र विष्णुकथा नास्ति मृतस्तत्र तमो व्रजेत् ।
यद् ग्रामे वैष्णवं धाम नास्ति कृष्णमृगोऽपि वा ॥ २० ॥
यत्र विष्णुकथानास्तिसाधवोवातदाश्रयाः । मृतस्तत्रपुमान्क्षिप्रंश्वानयोनिशतंव्रजेत्
विचार्योपनिषद्विद्यामिति निश्चित्य वै मुनिः ।
सदा विष्णुकथाऽऽसक्तो विष्णुस्मृतिपरायणः ॥ २२ ॥
न किञ्चिदधिकं जातु मन्यते श्रवणात्परम् । इतरस्तु तपोनिष्ठः कर्मनिष्ठोदुराग्रही
न व्याख्याति स्वयम्वाऽपि न श्रृणोति च सत्कथाम् ।
वाच्यमानां कथां हित्वा तीर्थस्नानाय गच्छति ॥ २४ ॥
तीर्थेऽपि च प्रवृत्तायांकथायांभूमिपालक! । कर्मलोपभयाद्दूरंयातिचाञ्चल्यशक्तितः
व्रजन्ति गृहकृत्यार्थं सङ्गमात्परतो जनाः । न श्रोतारोन वक्तारस्तस्यपार्श्वेतुकर्मिणः
दुरात्मनस्तु दुर्बुद्धेः काल एवंक्षयंगते । जिह्वांश्रुतिश्चनकापिसम्प्राप्ताहिकथाविभोः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अश्रोतृत्वादवक्तृत्वाद्दुर्बुद्धित्वाद्दुराग्रहात् ।
पश्चात्पञ्चत्वमासाद्य सद्यो धर्मेण वै मुनिः ॥ २८ ॥
पिशाचोऽभूच्छमीवृक्षे च्छिन्नकर्णाह्वयोऽवलः ।
निराश्रयो निराहारः शुष्ककण्ठौष्ठतालुकः ॥ २९ ॥
एवं वै खिद्यमानस्य समा दिव्यायुतागताः ।
नापश्यत्स्वस्य त्रातारं निराहारोऽतिदुःखितः ॥ ३० ॥

स्वकृतं चिन्तयानश्च मत्तोन्मत्त इवाभ्रमत् । क्षुधयापर्यटन्वाऽपिनिर्वृतिनापमूढधीः
कृशानुसदृशो वायुरङ्गं स्पृष्ट्वा कृतात्मनः । कालाग्नितुल्या आपश्चफलपुष्पादिकंविषम्
न क्वापि सुखमापेदे कर्मठो दीनधीरयम् । एवं व्यवसिते तस्मिन्नरण्ये जनवर्जिते ॥
कथया रहिते क्षेत्रे स्वाश्रयेसाधुवर्जिते । दैवादायात्सत्यनिष्ठस्तदा पैठिनसीम्पुरीम्

गच्छन्मार्गे ददर्शाऽसौ छिन्नकर्णं बहुव्यथम् ।
दृष्ट्वाऽऽत्मानं द्रावयन्तं रुदन्तं क्षुधयाऽऽतुरम् ॥ ३५ ॥

माभैषीरितिचाऽऽभाष्यकोऽसीत्याहमुनीश्वरः । दशेदृशीचकस्मात्तेनतेदुःखमतःपरम्

इत्याश्वस्तोऽमुना च्छिन्नकर्णः प्राहाऽतिविह्वलः ।
तपोनिष्ठो यतिरहं शिष्यो दुर्वाससः परम् ॥ ३७ ॥

ब्रह्मेश्वरक्षेत्रवासी कर्मनिष्ठो दुराग्रही । कर्मलोपभयान्मौढ्यान्मयादुर्बुद्धिना मुने! ॥

साधुभिर्वाच्यमानाऽपि नाऽऽदृताविष्णुसत्कथा ।
न व्याख्याता च श्रोतृभ्यः कथा कर्मनिकृन्तनी ॥ ३९ ॥

तेन कर्मविपाकेन महताऽहं मृतिंगतः । छिन्नकर्णोऽभवं नाम्ना पिशाचोदुःखविह्वलः
न पश्यामि च त्रातारंदुःखादस्मात्कथञ्चन । तवदृष्टिपथंयातो दिष्ट्याऽहंगतकल्मषः
अद्य मे देवतास्तुष्टा गुरवः साधवश्च ये । हरिश्चमे प्रसन्नोऽभूद्यतस्ते दर्शनं मम ॥
पपात पादयोर्भूमौत्राहित्राहीतिवैरुदन् । ततस्तुकृपयाऽऽविष्टःसत्यनिष्ठोमहायशाः
दोर्भ्यामुत्थापयामास शन्तमाभ्यांमुनीश्वरः । ततस्त्वपउपस्पृश्यददौपुण्यमनुत्तमम्
वैशाखमासमाहात्म्यश्रवणस्य मुहूर्तजम् । तेन पुण्यप्रभावेणसद्योध्वस्ताखिलाशुभः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पिशाचदेहनिर्मुक्तो दिव्यदेहधरोऽभवत् । दिव्यं विमानमारुह्य तं प्रणम्य महामुनिम्

आमन्त्र्य च परिक्रम्य ययौ विष्णोःपरम्पदम् ।
सत्यनिष्ठस्ततो धीमान्ययौ पैठिनसीम्पुरीम् ॥ ४७ ॥
माहात्म्यश्रवणस्यैवं चिन्तयानः पुनः पुनः ।

श्रुतदेव उवाच

यत्र विष्णुकथा पुण्या शुभा लोकमलाऽपहा ॥ ४८ ॥
तत्र सर्वाणि तीर्थानि क्षेत्राणि विविधानि च ।
यत्र प्रवहते पुण्या शुभा विष्णुकथाऽऽपरा ॥ ४९ ॥
तद्देशवासिनां मुक्तिः करसंस्था न संशयः ॥ ५० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे नारदाम्बरीषसम्वादे कथाप्रशंसायां पिशाचमुक्तिप्राप्तिर्नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोऽध्यायः

पाञ्चालाधिपतेर्जयप्राप्तिर्दारिद्र्यनाशवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

भूयः शृणुष्व भूपाल माहात्म्यंपापनाशनम् । वैशाखस्यचमासस्यवल्लभस्यमधुद्विषः
पुरापाञ्चालदेशे तु राजा पुरुयशोऽभवत् । तनयो भूरियशसः पुण्यशीलस्य धीमतः
पितर्युपरते भूप राज्यस्थो धर्मलालसः । शौर्यौदार्यगुणोपेतो धनुर्विद्याविशारदः
शशास पृथिवीं सर्वां स्वधर्मेण महामतिः । पूर्वजन्मजलादानाद्दोषेण महता वृतः ॥
सम्पद्धानिमवापाऽसौ कालेनकियताऽनघ! । हयागजामृतिं याता महद्रोगेणपीडिताः
दुर्भिक्षमतुलं चासीन्निर्मानुष्यविधायकम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राज्यं कोशं तदा चाऽऽसीद्गजभुक्तकपित्थवत् ॥ ६ ॥

बलहीनं नृपं ज्ञात्वा कोशराष्ट्रविवर्जितम् । तं जेतुमेष समय इति निश्चितमानसः आजग्मुः शतशोभूपा रिपवस्तस्य भूपतेः । जिग्युर्युद्धेनतंभूपं पाञ्चालविषयाधिपम्

पराजितस्ततो राजा विवेश गिरिगह्वरे ।

शिखिन्या भार्यया साकं धात्र्यादिगणसंयुतः ॥ ६ ॥

अज्ञातपद्धतिश्चान्यैर्बहुदुःखसमाकुलः । त्रिपञ्चाशत्समाश्चैव नीतास्तेन विलीयता चिन्तयामास भूपालः किमेतदिति भूरिशः । कर्मणा जन्मशुद्धोऽहंमातृपितृहितेरतः गुरुभक्तः सदाक्षिण्यो ब्रह्मण्यो धर्मतत्परः । दयावान्सर्वभूतेषु देवभक्तो जितेन्द्रियः न भ्राता मे न पुत्रो मेनचनेसुहृद्दोहिताः । दयापौरुषविख्याताःकुलीनस्ताऽपिमेकुतः केनवा कर्मणा चाप्तं दारिद्र्यं भूरि दुःखदम् । केन वाऽपजयोमेऽद्यकेनवावनवासिता इति चिन्ताकुलोराजागुरुंसस्मारखिन्नधीः । याजोपयाजकौनामसर्वज्ञौमुनिसत्तमौ आजग्मतुर्मुनीन्द्रौ तौ राज्ञाहूतौ महामती । तौ दृष्ट्वा सहसोत्थायराजापाञ्चालवल्लभः ननाम शिरसा भक्त्या प्रवासेनाऽतिपीडतः । राजचिह्नविहीनश्च केनाप्यज्ञातपद्धतिः

तूष्णीं तस्थौ मुहूर्तं हि पतित्वा भुवि पादयोः ।

दोर्भ्यामुत्थापि तस्ताभ्यां परिमृष्टाऽश्रुलोचनः ॥ १८ ॥

विधिवत्पूजयामास वन्यैरेवाऽर्हणैःशुभैः । सूपविष्टौतुतौविप्रौपप्रच्छाऽऽनतकन्धरैः ब्राह्मणौ वदतं दुःखकारणञ्च क्षितीशितुः । कर्मणा जन्मशुद्धस्य पितृदेवप्रियस्यच पापभीरोः कृपालोश्च गुरुभक्तस्य मे कुतः । दारिद्र्यं कोशहानिश्चरिपुभिश्चपराभवः कस्मादरण्यवासश्च कुत एकाकिता मम । नपुत्रोन च मे भ्राता न हिताः सुहृदश्च मे दुर्भिक्षं वाकुतश्चासीद्देशे मत्पालितेऽनघे । एतद्विस्तार्य मे ब्रूतं कारणं मुनिपुङ्गवौ

इत्युक्तौ तौ मुनिश्रेष्ठौ भूतेनाऽत्यन्तदुःखिना ।

प्रत्यूचतुर्महात्मानौ किं सिद्ध्या न परायणौ ॥ २४ ॥

याजोपयाजकावूचतुः

शृणु भूप प्रवक्ष्यावस्तव दुःखस्यकारणम् । पुरा भूप महापापीव्याधस्त्वंदशजन्मसु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निष्ठुरः सर्वलोकानां सदा हिंसापरायणः । धर्मलेशाकरः क्वापि न दमो नच वैशमः
न जिह्वा वक्तिनामानि विष्णोर्वापिकथञ्चन । चेतः स्मरतिगोविन्दरणाम्बुरुहद्वयम्
न प्रणामः कृतः क्वापि शिरसा परमात्मने । नव जन्मानि ते भूप गतान्येवंदुरात्मनः
दशमे जन्मनि प्राप्ते व्याधस्त्वं सह्यभूधरे । निष्ठुरःसर्वलोकानां नराणां त्वंनरान्तकः
दयाहीनः शस्त्रजीवी सदा हिंसापरायणः । निर्गुणःसकलत्रस्त्वं मार्गपीडाकरः शठः
प्रजानां गौडदेश्यानां राक्षसो मानुषाशनः । एवं चाऽब्दान्यतीतानिनैजंहितमजानतः
वालापत्यमृगाणाञ्च पक्षिणाञ्च वधात्तव । दयाहीनस्य दुर्बुद्धेर्जन्मन्यस्मिन्नपुत्रता
विश्वासघातकत्वेन भ्रातरो नैव सोदराः । मार्गपीडाकरत्वेन सुहृज्जनविवर्जितः ॥
साधूनाञ्च तिरस्काराच्छत्रुभिस्ते पराजयः । कदाप्यदत्तदोषेण दारिद्र्यमुपतितं गृहे
सदैवोद्वेगकारित्वात्प्रवासस्ते दुरासदः । सर्वेषामप्रियत्वाच्च दुःखमत्यन्तदुःसहम्
निराहारोऽप्यतः पूर्वंसदाक्रूरेण कर्मणा । तस्माद्राज्यापहारस्तेजन्मन्यस्मिन्महामते

अथ ते सत्कुलीनत्वे हेतूंश्चाऽपि ब्रवीम्यहम् ।
यदाऽभूर्गौडदेशीयो ह्यन्तिमे व्याधजन्मनि ॥ ३७ ॥

स्वकर्मनिरते क्रूरे विपिने कण्टकाविले । तिष्ठत्येवं दयाहीने सर्वभूतान्तके पथि ३८
वैश्यावाजग्मतुर्दिव्यौ धनाढ्यौ धर्मपीडितौ । मुनिश्चकर्षणोनाम वेदवेदाङ्गपारगः ॥
जटाचीरधरः पुण्य कमण्डलुपरिग्रहः । तान्दृष्ट्वा धनुरादाय मार्गं रुद्ध्वा व्यवस्थितः

अनुद्रुत्य शरी वैश्यौ कृत्वा छिन्नशरीरकौ ।
तयोरेकञ्च त्वं हत्वा गृहीत्वाऽखिलतत्पणम् ॥ ४१ ॥

अपरं हन्तुमुद्यक्ते स दुद्रावभयाद्द्रुतम् । पणं गुल्मे विनिक्षिप्यभीतःप्राणपरीप्सकः

कर्षणोऽपि मुनिः शीघ्रं व्याधान्मृतिविशङ्कया ।
आतपे धावमानः संस्तृषाघर्मप्रपीडितः ॥ ४३ ॥

मूर्च्छामाप गलत्स्वेदः संज्ञामात्रावशेषितः । विहायैनं दुद्रुवे च वैश्यो जीवनतत्परः
त्वं तावनुद्रुतौ दृष्ट्वा मूच्छितंपथिभूसुरम् । पणं कुत्रविनिक्षिप्तंकियद्दूरंगतोवणिक्

इति पृष्टं द्विजं श्रान्तमुज्जीवयितुमुद्यतः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फूत्कृत्वा कर्णयोस्तस्य नागरं स्मृतिकारणम् ॥ ४६ ॥
पल्वलस्थोदकेनैव कृमिकर्दमसंयुजा । नेत्रे संमृज्य श्रान्तस्य पर्णैः सम्वीज्यतन्मुखे
ससञ्ज्ञञ्च मुनिं कृत्वा त्वमात्थ स्वस्थमानसः ।
मा शङ्का ते मुने कार्या मत्तः शस्त्रभृतो वने ॥ ४८ ॥
निष्किञ्चनः सुखी लोके कुतस्ते भयमुल्वणम् ।
भिन्नपात्रेण जीर्णेन न मे किञ्चिद्भविष्यति ॥ ४६ ॥
एतावद्वद मे विद्वन्वणिक्कुत्र पलायितः । कुत्र गुल्मे धनं क्षिप्तं तेन शीघ्रंपलायता
अन्यथा त्वां हनिष्यामि यदि मिथ्या वदिष्यसि ।

कर्षण उवाच

धनं गुल्मे विनिक्षिप्तं मार्गदस्मात्पलायितः ॥ ५१ ॥
इतिप्राहभयात्सोऽपि पृष्टःप्राणपरीप्सया । गच्छ विप्र सुखं मार्गंमत्तोभीतिंविहायच
इतो विदूरे सलिलं तडागे वर्तते शुभम् । तत्पीत्वा सलिलं पुण्यं गच्छग्रामंगतश्रमः
अधुनेऽऽवागमिष्यन्ति राजकीयाः पथा जनाः ।
मत्पदान्वेषणे सक्ताः श्रुत्वा रावं वणिक्पतेः ॥ ५४ ॥
तृषार्तमनुगन्तुं मे न शक्यं त्वां ततो द्विज! । वीजमानेन पर्णेनघर्मःकिञ्चिद्गमिष्यति
तस्मै दत्त्वा पलाशं च त्वमागा विपिनं पुनः । तेन पुण्यप्रभावेण वैशाखे घर्मघर्घरे ॥
स्वकार्यार्थं कृतेनापि मुनेस्त्राणाय पद्धतौ । जन्मासीत्तेमहापुण्येराजवंशेऽतिविस्तृते
यदीच्छसि सुखंराज्यंधनधान्यादिसम्पदः । स्वर्गापवर्गौयदिवासायुज्यंवाहरेःपदम्
कुरु वैशाखधर्मांस्त्वं सर्वसौख्यमवाप्स्यसि ।
मासोऽयं माधवोनाम तृतीयाचाऽक्षयाह्वया ॥ ५६ ॥
गांचसकृत्प्रसूताख्यांदेहिविप्रायसीदते । तेनतेकोशपूर्तिःस्याच्छत्र्यांदेहिसुखंभवेत्
कुरु च्छत्रप्रदानं च साम्राज्यं ते भविष्यति । स्नानंकुरुयथान्यायंतथैवाऽर्चयमाधवम्
देहि त्वं प्रतिमांदिव्यांकृत्वातेनजयोभवेत् । आत्मतुल्यगुणान्पुत्रान्यदिकामयसेनृप
सर्वभूतहितार्थाय प्रपादानं च त्वं कुरु । वैशाखोक्तानिमान्धर्मान्सम्यगाचर भूमिप ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेन ते सकला लोका वशं यान्तिनसंशयः। निष्कामकेनचित्तेनयदिधर्मान्करिष्यसि
वैशाखे पुण्यमासेऽस्मिन्प्रीतयेमधुघातिनः। प्रत्यक्षोभविताविष्णुस्तवनिर्मलचेतसः
येन चाचरिताः पुंसा धर्मा ह्येते शुभावहाः। तेषाञ्चह्यक्षयालोकाः पुराणेकवयोविदुः
एतत्सर्वं तव प्रोक्तं यथादृष्टं यथाश्रुतम्। इति राजानमामन्त्र्य ब्राह्मणौ च पुरोधसौ

याजोपयाजकौनाम जग्मतुस्तौ यथागतौ।

ततो राजामहावीर्यः पुरोधोस्याञ्च बोधितः॥ ६८॥

वैशाखधर्मान्सकलांश्चकार श्रद्धयाऽन्वितः। यथोपदिष्टं च तथा मधुसूदनमर्चयत्॥
ततो लब्धप्रभावः सन्बन्धुभिः सकलैर्वृ तः। पाञ्चालनगरीम्प्राप हतशेषबलान्वितः
ततस्तु शत्रवो भूपा उपश्रुत्य च भूपतेः। प्रवेशं च पुरस्याऽथ पुनराजग्मुरुद्धताः॥
तदा पाञ्चालभूपेन नृपाणामभवद्रणम्। जिग्ये सर्वान्महाबाहूनेक एव महारथः॥७२
पलायितेषु भूतेषु नानादेशपथिष्वपि। राज्ञां कोशगजानश्वान्स्वयं जग्राह वीर्यवान्
अश्वानां निर्बुदं चैव गजानां च त्रिकोटिकम्। रथानामर्बुदञ्चैव दीर्घग्रीवायुतंतथा

रासभाणां त्रिलक्षाणि प्रापयामास तां पुरीम्।

वैशाखधर्ममाहात्म्यात्क्षणात्सर्वे च भूभृतः॥ ७५॥

करदा भग्नसङ्कल्पाः पादाक्रान्ता बभूविरे। सुभिक्षमतुलं चासीत्पाञ्चालविषयेषु च

एकच्छत्रमभूद्राज्यं प्रसादान्मधुघातिनः।

पुत्राः पञ्चाऽपि तस्यासञ्छौर्य्यौदार्यगुणान्विताः॥ ७७॥

धृष्टकीर्तिर्धृष्टकेतुर्धृष्टद्युम्नस्तथाऽपरे। विजयश्चित्रकेतुश्च मयूरध्वजसन्निभाः॥ ७८
अनुरक्ताः प्रजाश्चासन्धर्मेणप्रतिपालिताः। वैशाखस्य प्रतापेनप्रत्ययस्तत्क्षणादभूत्
पुनश्चकार तान्धर्मान्पाञ्चालनगरीश्वरः। अकामुकेन चित्तेन प्रीयते मधुघातिनः॥
धर्मेणानेन सन्तुष्टो भगवान्मधुसूदनः। अक्षयायां तृतीयायां प्रत्यक्षः समजायत॥
तं दृष्ट्वा विस्मितो भूत्वा परमात्मानमच्युतम्। नारायणं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रगदाधरम्
पीताम्बरधरं देवं वनमालाविभूषितम्। सलक्ष्मीकं सानुगञ्च गरुडोपरि संस्थितम्

निरीक्ष्य दुःसहं तेजः सद्योमीलितलोचनः।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्पतन्सम्पतन्हर्षान्मत्तोन्मत्तइव भ्रमन् ॥ ८४ ॥
पुलकाङ्कितसर्वाङ्गो गलद्बाष्पाकुलेक्षणः । तुष्टाव परया भक्त्याप्राञ्जलिःप्रणतोभुवि

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे पाञ्चालदेशाधिपतेर्जयप्राप्ति-दरिद्रनाशवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः

पाञ्चालदेशाधिपतेःसायुज्यप्राप्तिवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुताशयः सद्यः समुत्थाय ननाम मूर्ध्ना ।
चिरं निरीक्ष्याऽऽकुललोचनो ह्यमुं विश्वात्मदेवं जगतामधीशम् ॥ १ ॥
दधार पादाववनिज्य तज्जलं यत्पादजाऽऽब्रह्म जगत्पुनाति ।
समर्चयामास महाविभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ॥ २ ॥
स्रग्धूपदीपामृतभक्षणादिभिस्त्वगगात्रवित्तात्मसमर्पणेन ।
तुष्टाव विष्णुं पुरुषं नारायणं निर्गुणमद्वितीयम् ॥ ३ ॥
निरञ्जनं विश्वसृजामधीशं वन्दे परं पद्मभवादिवन्दितम् ।
यन्मायया तत्त्वविदुत्तमा जना विमोहिता विश्वसृजामधीश्वरम् ॥ ४ ॥
मुह्यन्ति मायाचरितेषु मूढा गुणेषु चित्रं भगवद्विचेष्टितम् ।
अनीह एतद् बहुधैक आत्मना सृजत्यवत्यत्ति न सज्जतेऽप्यथ ॥ ५ ॥
समस्तदेवासुरसौख्यदुःखप्राप्त्यै भवान्पूर्णमनोरथोऽपि ।
तत्राऽपि काले स्वजनाभिगुप्त्यै बिभर्षि सत्त्वं खलनिग्रहाय ॥ ६ ॥
तमोगुणं राक्षसबन्धनाय रजोगुणं निर्गुण! विश्वमूर्ते! ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिष्ट्या त्वदङ्घ्रिः प्रणताघनाशनस्तीर्थास्पदं हृदिधृतःसुविपक्वयोगैः ॥७
उत्सिक्तभक्त्युपहृताशयजीवभावाः प्रापुर्गतिं तव पदस्मृतिमात्रतो ये ।
भवाख्यकालोरगपाशबन्धः पुनःपुनर्जन्मजरादिदुःखैः ॥ ८ ॥
भ्रमामि योनिष्वहमाखुभक्ष्यवत्प्रवृद्धतर्षस्तव पादविस्मृतेः ।
नूनं न दत्तं न च ते कथा श्रुता न साधवो जातु मयाऽपि सेविताः ॥ ६ ॥
तेनारिभिर्ध्वस्तपरार्ध्यलक्ष्मीर्वनं प्रविष्टः स्वगुरुद्वयं स्मरन् ।
स्मृतौ च तौ मां समुपेत्य दुःखात्सम्बोधयाञ्चक्रतुरार्तबन्धू ॥ १० ॥
वैशाखधर्मैः श्रुतिचोदितैः शुभैः स्वर्गापवर्गादि पुमर्थहेतुभिः ।
तद्बोधतोऽहं कृतवान्समस्ताञ्छुभावहान्माधवमासधर्मान् ॥ ११ ॥
तस्मादभून्मे परमः प्रसादस्तेनाऽखिलाः सम्पद ऊर्जिताइमा ।
नाऽग्निर्न सूर्यो न च चन्द्रतारका न भूर्जलं खं श्वसनोऽथ वाङ्मनः ॥ १२॥
उपासितास्तेऽपि हरन्त्यघं चिराद्विपश्चितो घ्नन्ति मुहूर्तसेवया ।
यान्मन्यसे त्वं भविनोऽपि भूरिशस्त्यक्तेषणांस्त्वत्पदन्यस्तचित्तान् १३
नमः स्वतन्त्राय विचित्रकर्मणे नमः परस्मै सदनुग्रहाय ।
त्वन्मायया मोहितोऽहं गुणेषु दारार्थरूपेषु भ्रमाम्यनर्थदृक् ॥ १४
त्वत्पादपद्मे सति मूलनाशने समस्तपापापहरे सुनिर्मले ।
सुखेच्छयाऽनर्थनिदानभूतैः सुतात्मदारैर्ममताभियुक्तः ॥ १५ ॥
न क्वापि निद्रां लभते न शर्म प्रवृद्धतर्षः पुनरेव तस्मिन् ।
लब्ध्वा दुरापं नरदेवजन्म त्वं यत्ततः सर्वपुमर्थहेतुः ॥ १६ ॥
पदारविन्दं न भजामि देव ! सम्मूढचेता विषयेषु लालसः ।
करोमि कर्माणि सुनिष्ठितः सन्प्रवृद्धतर्षस्तदपेक्षया ददत् ॥ १७ ॥
पुनश्च भूयामहमद्य भूयामित्येव चिन्ताशतलोलमानसः ।
तदैव जीवस्य भवेत्कृपा विभो! दुरन्तशक्तेस्तव विश्वमूर्ते! ॥१८॥
समागमः स्यान्महतां हि पुंसां भवाम्बुधिर्येन हि गोष्पदायते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सत्सङ्गमो देव यदैव भूयात्तर्हीश देवे त्वयि जायते मतिः ॥ १६ ॥
समस्तराज्यापगमं हि मन्ये ह्यनुग्रहं ते मयि जातमञ्जसा ।
यथार्य ते ब्रह्मसुरासुराद्यैर्निवृतत्तर्षैरपि हंसयूथैः ॥ २० ॥
इतः स्मराम्यच्युतमेव सादरं भवापहं पादसरोरुहं विभो! ।
अकिञ्चनप्रार्थ्यममन्दभाग्यदं न कामयेऽन्यत्तव पादपद्मात् ॥ २१ ॥
अतो न राज्यं न सुतादिकोशं देहेन शश्वत्पतता रजोभुवा ।
भजामि नित्यं तदुपासितव्यं पादारविन्दं मुनिर्विचिन्त्यम् ॥ २२ ॥
प्रसीद देवेश! जगन्निवास! स्मृतिर्यथा स्यात्तव पादपद्मे ।
सक्तिः सदा गच्छतु दारकोशपुत्रात्मचिह्नेषु गणेषु मे प्रभो! ॥ २३ ॥
भूयान्मनः कृष्णपदारविन्दयोर्वचांसि ते दिव्यकथानुवर्णने ।
नेत्रे ममेमे तव विग्रहेक्षणे श्रोत्रे कथायां रसना त्वदर्पिते ॥ २४ ॥
घ्राणश्च त्वत्पादसरोजसौरभेत्वद्भक्तगन्धादिविलेपनेसक्तत् ।
स्यातां च हस्तौ तव मन्दिरे विभो सम्मार्ज्जनादौ मम नित्यदैव ॥२५॥
पादौ विभोः क्षेत्रकथाऽनुसर्पणे मूर्धा च मे स्यात्तव वन्दनेऽनिशम् ।
कामश्च मे स्यात्तव सत्कथायां बुद्धिश्च मे स्यात्तव चिन्तनेऽनिशम् ॥२६
दिनानि मे स्युस्तव सत्कथोदयैरुद्गीयमानैर्मुनिभिर्गृहागतैः ।
हीनः प्रसङ्गस्तव मे न भूयात्क्षणं निमेषार्द्धमथाऽपि विष्णो! ॥ २७॥
न पारमेष्ठ्यं न च सार्वभौमं न चाऽपवर्गं स्पृहयामि विष्णो! ।
त्वत्पादसेवाञ्च सदैव कामये प्रार्थ्यां श्रिया ब्रह्मभवादिभिः सुरैः ॥ २८॥
इति राज्ञा स्तुतो विष्णुः प्रसन्नः कमलेक्षणः ।
मेघगम्भीरया वाचा तमुवाच क्षितीश्वरम् ॥ २६ ॥

श्रीभगवानुवाच

जाने त्वां दासवर्यं मे निष्कामुकमकल्मषम् ।
अथाऽपि ते प्रदास्यामि वरं दैवतदुर्लभम् ॥ ३० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आयुष्यं चायुतं दिव्यं सम्पदश्च नरेश्वर! । भक्तिर्मयि दृढा भूयादन्ते सायुज्यमेव च
त्वया कृतेन स्तोत्रेणमांस्तुवन्तिचयेभुवि । तेषांतुष्टःप्रदास्यामिभुक्तिमुक्तिनसंशयः
तृतीयैषाऽक्षयानाम भुविख्याताभविष्यति । यस्यांतवप्रसन्नोऽहंभुक्तिमुक्तिफलप्रदः

ये कुर्वन्ति नरा मूढाः स्नानदानादिकाः क्रियाः ।
व्याजेनाऽपि स्वभावाद्वा यान्ति मत्पदमव्ययम् ॥ ३४ ॥

ये चाऽक्षयतृतीयायां पितॄनुद्दिश्य मानवाः । श्राद्धं कुर्वन्तितेषांवैतदानन्त्यायकल्पते
न चाऽनयातिथिर्लोकेसमावानाधिकाभुवि । अस्यांकृतंस्वल्पमपितदक्षय्यफलंभवेत्
योगां दद्यान्नृपश्रेष्ठब्राह्मणायकुटुम्बिने । सर्वसम्पत्प्रवर्षाख्याभुक्तिर्मुक्तिःकरेस्थिता
यो हिदद्यादनड्वाहंसर्वपापविनाशनम् । कालमृत्युविमुक्तःसन्दीर्घायुष्यमवाप्नुयात्
वैशाखमासे यो धर्मान्कुरुते मत्प्रियावहान् । तेषां मृत्युजराजन्मभयं पापं हराम्यहम्
यथा वैशाखधर्मैस्तु तुष्टः स्यांसकलैरपि । मासधर्मैस्तुतुष्टःस्यांमासोमेमाधवप्रियः

सर्वधर्मोज्झिता वापि ब्रह्मचर्यविवर्जिताः ।
वैशाखमासनिरता यान्ति मत्पदमव्ययम् ॥ ४१ ॥

यद्दुरापं तपोभिश्च सांख्ययोगैर्मखैरपि । तद्धाम परमं यान्ति वैशाखनिरता नराः
अपि पापसहस्रं वा मासोऽयं हरतेऽनघ । प्रायश्चित्तविहीनं वा मत्पादस्मरणं यथा
गुरूपदिष्टः कान्तारे वैशाखे निरतो भवान् । समाराध्य जगन्नाथं तेनाप्तमखिलं नृप

धर्मेणानेन सम्प्रीतः प्रत्यक्षोऽहं भवामि ते ।
भुक्त्वा भोगान्यथाकामान्देवैरपि सुदुर्लभान् ॥ ४५ ॥

इति तस्मै वरं दत्त्वा देवदेवो जनार्दनः । पश्यतामेव सर्वेषां तत्रैवाऽन्तरधीयत ॥४६
ततो भूपालवर्योऽसौ बभूवात्यन्तविस्मितः । हृष्टपुष्टतनुर्भूप! लब्धनष्टधनो यथा
ततः शशास पृथिवीं तच्चित्तस्तत्परायणः । महद्भिर्बोधितोनित्यंगुरुभिश्चनिरन्तरम्
नान्यं प्रियतमं मेने वासुदेवमृते नृपः । यत्सम्पर्कात्प्रिया आसन्दारामात्यसुतादयः
सर्वान्धर्मांश्चकाराऽसौ वैशाखोक्तान्पुनः पुनः । तेनपुण्यप्रभावेणपुत्रपौत्रादिभिर्वृतः

भुक्त्वा मनोरथान्सर्वान्देवानामपि दुर्लभान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्ते जगाम सायुज्यं विष्णोर्देवस्य चक्रिणः ॥ ५१ ॥
य इदं परमाख्यानं शृण्वन्तिश्रावयन्तिच । तेसर्वेपापनिर्मुक्तायान्तिविष्णोःपरंपदम्
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे पाञ्चालदेशाधिपतेः सायुज्यप्राप्तिर्नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः

दन्तिलकोहलमुक्तिप्राप्तिवर्णनम्

श्रुतकीर्तिरुवाच

वैशाखधर्मानखिलानिहाऽमुत्रफलप्रदान् । भूयोऽपिशृण्वतश्चासीत्तृप्तिर्नाऽद्यापिमानद
यत्र चाऽकैतवोधर्मोयत्र विष्णुकथाःशुभाः । तच्छास्त्रंशृण्वतोनैवतृप्तिःकर्णरसायनम्
पूर्वजन्मकृतं पुण्यं दिष्ट्या पारमुपागतम् । आतिथ्यव्यपदेशेन यद्भवान्गृहमागतः
वचोऽमृतं मुखांम्भोजनिःसृतं परमाद्भुतम् । पीत्वा तृप्तः पारमेष्ठ्यं मोक्षंवाचनकामये
तस्मात्तानेव धर्मान्मे भुक्तिमुक्तिप्रदायकान् ।
विष्णुप्रीतिकरान्दिव्यान्भूयो विस्तरतो वद ॥ ५ ॥
इत्युक्तस्तु पुरा राज्ञा श्रुतदेवोमहायशाः । संहृष्टाऽऽत्माशुभान्धर्मान्पुनर्व्याहर्तुमारभत्

श्रुतदेव उवाच

श्रृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पापप्रणाशिनीम् ।
वैशाखधर्मविषयां भावितां मुनिभिर्मुहुः ॥ ७॥
पम्पातीरे द्विजः कश्चिच्छङ्खोनाममहायशाः । गुरौसिंहगतेचागान्नदींगोदावरींशुभाम्
तीर्त्वा भीमरथीं पुण्यां कान्तारे कण्टकाचले । निर्जले निर्जनेघोरेवैशाखेतपकर्षितः
वृक्षे चोपविवेशाऽसौ मध्याह्नसमये द्विजः । तदाकश्चिद्दुराचारोव्याधश्चापधरःशठः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्घृणः सर्वभूतेषु कालान्तक इवाऽपरः । तं कुण्डलधरं विप्रंदीक्षितंभास्करोपमम्
दृष्ट्वा बद्ध्वा स जग्राह कुण्डलादिकमुग्रधीः । उपानहौचछत्रंचअक्षमालांकमण्डलुम्
पश्चाद्विसृज्य तं विप्रं गच्छेत्याह विमूढधीः ॥ १३ ॥
ततः स गच्छन्पथि शर्कराऽऽविले सूर्यांशुतप्ते जलवर्जिते खरे ।
सन्तप्तपादस्तृणछादिते स्थले क्वचिच्चचारोपवसन्नूर्ध्वरेताः ॥ १४ ॥
स वै द्रुतं सम्पतन्क्वाऽपि तुष्यन्हाहेति वादी स जगाम तूर्णम् ।
दृष्ट्वामुनिं खिद्यमानं पृथिव्यां मध्यं गते पूष्णि दया बभूव ॥ १५ ॥
व्याधस्य धर्मविमुखस्य च पापवुद्धेस्तस्मै ददामि सुखदां खलु पादरक्षाम् ॥ १६॥
चौर्येणैव स्वधर्मेण या गृहीता वनान्तरे
तदीयमेव तत्सर्वं व्याधानां धर्मनिर्णयः । तस्मादुपानहौ दास्ये मुहुर्दुःखापनुत्तये
तेन श्रेयो भवेद्यच्च तद्भवेन्मम पापिनः। जीर्णे चोपानहौ द्वे च वर्तेते पादयोर्मम ॥
न ताभ्यामस्ति मे कृत्यं तस्मात्ते वै ददाम्यहम् ॥ १८ ॥
इति निश्चित्य मनसि तूर्णं गत्वा ददौ च ते । शर्करातप्तपादाय द्विजवर्याय सीदते
उपानहौ गृहीत्वा ते निर्वृतिश्च परां ययौ । सुखीभवेतितंव्याधमाशीर्भिरभिनन्द्यच
नूनं सुपक्वपुण्योऽयं वैशाखेदत्तवानमू । व्याधस्यापिचदुर्बुद्धेः प्रायोविष्णुःप्रसीदति
सर्वस्याऽऽप्त्या च भूयोऽपि यत्सुखंतदभून्मम ।
ततोऽभिश्रुत्य तद्वाक्यं किमेतदिति विस्मितः ॥ २२ ॥
व्याजहार पुनर्विप्रं ब्रह्मिष्ठं ब्रह्मवादिनम् । त्वदीयं तु मया दत्तं कथं पुण्यं भवेन्मम
प्रशंससि च वैशाखं हरिस्तुष्टोभवेदिति । एतदाचक्ष्वमेब्रह्मन्को वैशाखस्तु को हरिः
को धर्मः किं फलं तस्यशुश्रूषोर्मेदयानिधे । इतिव्याधवचःश्रुत्वाशङ्खस्तुष्टमनाअभूत्
प्रशंसन्स च वैशाखं पुनर्विस्मितमानसः । इदानीं दत्तवान्पादत्राणे मे लुब्धकः शठः
यद्दुर्बुद्धेश्च वैषम्यं जातं चित्रमहो वत । सर्वेषामेव धर्माणां फलंजन्मान्तरेषु वै ॥
वैशखमासधर्माणां फलं सद्यः क्षणेनृणाम् ।
पापाचारस्य दुर्बुद्धेर्व्याधस्याऽपि दुरात्मनः ॥ २८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दैवादुपानहोर्दानात्सत्त्वशुद्धिरभूदहो । यच्च विष्णोः प्रियंकर्मयत्तत्सन्तोषनिर्मलम्
तदेव धर्ममित्याहुर्मन्वाद्या धर्मवित्तमाः । धर्मामाधवमासीयाःप्रिया विष्णोरतीवते
धर्मैर्माधवमासीयैर्यथा तुष्यति केशवः । न तथा सर्वदानैश्च तपोभिश्च महामखैः ॥
नानेन सदृशो धर्मः सर्वैर्धर्मेषु विद्यते । मा गयां यान्तु मा गङ्गामाप्रयागंतु पुष्करम्
मा केदारं कुरुक्षेत्रंमाप्रभासंस्यमन्तकम् । मागोदांमाचकृष्णाञ्चमासेतुंमामरुद्वृधम्
वैशाखधर्ममाहात्म्यं शंसन्तीच कथाऽऽपगा । तत्रस्नातस्यवैविष्णुःसद्योहृद्यवरुध्यते
मासे माधवसञ्ज्ञेऽस्मिन्यस्त्वल्पेनैव साध्यते । नतद्बहुव्ययैर्दानैर्नधर्मैर्वाऽपिवैमखैः
मासोऽयं माधवोनाम व्याध! पुण्यविवर्द्धनः । तस्मिन्मह्यं त्वया दत्तेपादुकेतपनाशने
तेन ते पूर्वकालीनं पुण्यं पाकमुपागतम् । तुष्टस्तुभगवान्प्रायःश्रेयोव्याधविधास्यति
अन्यथा ते कथं भूयाद्बुद्धिरेतादृशीशुभा । मुनावेवं ब्रुवाणे च मृत्युना प्रेरितो बली
सिंहो व्याघ्रवधार्थाय प्राद्रवत्क्रोधविह्वलः । मध्ये दृष्ट्वाचमातङ्गं दैवाद्दैवेनकल्पितम् ॥
तं हन्तुमुद्यतोऽगच्छत्पदाक्रान्तं व्यवस्थितम् । तयोर्युद्धमभूद्राजन्सिंहमातङ्गयोर्वने

श्रान्तौ युद्धाच्च विरतौ निरीक्षन्तौ च तस्थतुः ।
व्याधमुद्दिश्य यच्चोक्तं मुनिना च महात्मना ॥ ४१ ॥

समस्तपातकध्वंसि दैवाच्छुश्रुवतुश्च तौ । तेनैव मासमाहात्म्यश्रवणेनाऽमलाशयौ॥
शापान्मुक्तौचतौदेहात्सद्योमुक्तौ दिवंगतौ । दिव्यरूपधरौदिव्यौदिव्यगन्धानुलेपनौ
दिव्यंविमानमारूढौ दिव्यनारीनिषेवितौ । सद्योऽवनतमूर्द्धानौप्राञ्जलीचोपतस्थतुः
मुनीन्द्रोधर्मवक्ताचव्याधमुद्दिश्यवैपथि । तौदृष्ट्वाविस्मितःप्राहकौयुवामितिनिश्चलः
दुर्यानौ तु कुतो जन्मयुवयोर्वाकथंमृतिः । अहेतोर्विपिनेचाऽस्मिन्परस्परवधोद्यतौ
एतत्सर्वं सुविस्तार्यसम्यग्वदत मेऽनघौ! । इत्युक्तौ मुनिना तेन वचः प्रत्यूचतुः पुनः
मतङ्गस्य मुनेः पुत्रौदन्तिलःकोहलोऽपरः । शापदोषेणतौजातौनाम्नादन्तिलकोहलौ
रूपयौवनसम्पन्नौ सर्वविद्याविशारदौ । आवामुद्दिश्य प्रोवाच पिताधर्मार्थकोविदः

मतङ्गो नाम ब्रह्मर्षिः सर्वधर्मविदुत्तमः ।
वैशाखे मासि तनयौ मधुसूदनवल्लभे ॥ ५० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रपां कुरुत मार्गेचजनान्वीजयतं क्षणम् । मार्गे छायां विधत्ताश्चभूर्यन्नं शीतलाम्बुच
कुरुतं स्नानमुषसि तथैवार्चयतं विभुम् । कथाश्च शृणुतं नित्यंयया बन्धो निवर्तते
एवं च बहुभिर्वाक्यैर्बोधितावपि दुर्मती । क्रुद्धोऽभवंदन्तिलोऽहं मत्तोऽहंकोहलाह्वयः

क्रुद्धः शशाप तौ सद्यः पिता धर्मेषु लालसः ॥ ५४ ॥

पुत्रश्चधर्मविमुखंभार्याञ्चाऽप्रियावादिनीम् । अब्रह्मण्यंचराजानं त्यजेत्सद्योनचेत्पतेत्
दाक्षिण्यादर्थलोभाद्वा संसर्गं ये प्रकुर्वते । ते सर्वे नरकं यान्ति यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥

इति ज्ञात्वा शशापाऽऽवां मदक्रोधपरिप्लुतौ ॥ ५६ ॥

क्रुद्धोऽयंदन्तिलोभूयात्सिंहःक्रोधपरिप्लुतः । मत्तस्तुकोहलोभूयान्मत्तोमातङ्गयूथपः
कृतानुतापौपश्चात्तुप्रार्थयावोविमोचनम् । आवाभ्यांप्रार्थितोभूयोविशापश्चददौपिता
युवां प्राप्य च दुर्योनिंकियत्कालान्तरेऽपि च । सङ्गमोभवितातत्रपरस्परवधैषिणोः
तस्मिन्नेवहि समये सम्वादो व्याघ्रशङ्ख्योः । वैशाखधर्मविषयो दैवाद्वांश्रवणेऽपिच
गमिष्यति क्षणादेव तस्मान्मुक्तिर्भविष्यति । शापान्मुक्तौपूर्वमेवरूपमास्थायपुत्रकौ
मामेव प्राप्य वसतं नान्यथा मे वचो भवेत् । इति शप्तौ च गुरुणादुर्योनिंप्राप्यदुर्मती

प्राप्य दैवात्सङ्गतिश्च परस्परवधैषिणौ।
सम्वादं युवयोर्दिव्यं शुभं तं शुश्रुवावहे ॥ ६३ ॥

तेनसद्योविमुक्तिश्चक्षणादेवाऽऽवयोरभूत् । इति सर्वं समाख्यायप्रणम्यचमुनीश्वरम्
समामन्त्र्याभ्यनुज्ञातौ जग्मतुःपितुरन्तिकम् । तदेवंसम्प्रदृश्याहमुनिर्व्याधंदयानिधिः
पश्य वैशाखमाहात्म्यश्रवणस्य फलं महत् । मुहूर्तश्रवणादेव तयोर्मुक्तिः करेस्थिता

इति ब्रुवाणं मुनिपुङ्गवं तं दयानिधिं निःस्पृहमग्र्यबुद्धिम् ।
विशुद्धसत्त्वं सुकृतैकपात्रं स न्यस्तशस्त्रःपुनराह व्याधः ॥ ६७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणएकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे दन्तिलकोहलमुक्तिप्राप्ति-
वृत्तान्तवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टादशोऽध्यायः

व्याधोपाख्यानेतस्यपूर्वजन्मवृत्तकथनम्

व्याध उवाच

भवताऽनुगृहीतोऽस्मि मुने! पापोऽतिदुष्टधीः ।
दयालवो महान्तो हि स्वभावादेव साधवः ॥ १ ॥

क्व व्याधश्चाऽकुलीनोऽहं क्व च वा मतिरीदृशी । केवलं भवतामेवमन्येऽनुग्रहमुत्तमम्

अथ साधो! च शिष्योऽस्मि कृपापात्रोऽस्मि मानद! ।
अनुग्राह्योऽस्मि पुत्रोऽस्मि कृपां कुरु दयानिधे! ॥ ३ ॥

यथा मे न पुनर्भूयादसन्मतिरनर्थदा । सद्भिस्तु सङ्गतेः क्वापि न भूयो दुःखमश्नुते ॥
तस्माद्बोधय मांविप्रसूक्तैस्तैर्त्र जिनापहैः । येनचाद्धातरिष्यन्तिसंसाराब्धिमुमुक्षवः
साधूनां समचित्तानांतथाभूतदयावताम् । न च हीनोत्तमःक्वापिनात्मीयोहिपरस्तथा
ऐकाग्र्येणविचिन्त्याथचित्तशुद्धिंचपृच्छति।सर्वदोषयुतोवापिसर्वधर्मोज्झितोपिवा
कृतानुतापश्चयदा यदा पृच्छति वै गुरून् । तदैवोपदिशन्त्यद्धा ज्ञानं संसारमोचकम्
यथागङ्गामनुष्याणांपापनाशस्यभाविनी । तथामन्दसमुद्धारस्वभावाःसाधवःस्मृताः
सा विचारय मां बोद्धुं दयालो भक्तवत्सल! । शुश्रूषत्वान्नतत्वाच्चशुद्धत्वात्तवसङ्गतेः

इति व्याधवचः श्रुत्वा पुनर्विस्मितमानसः ।
साधुसाध्विति सम्भाष्य धर्मानेतानुवाच ह ॥११ ॥

शङ्ख उवाच

व्यविष्णुप्रीतिकरान्दिव्यान्संसाराब्धिविमोचकान् ।
कुरु धर्मांश्च वैशाखे यदि व्याध! शमिच्छसि ॥ १२ ॥

आतपो बाधते घोरो न च्छाया नाऽम्बु चाऽत्र च ।
तस्मात्स्थलान्तरं यावो यत्र च्छाया तु वर्तते ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्र गत्वा जलं पीत्वा सुच्छायां च समाश्रितः ।
तत्र ते वर्णयिष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम् ॥ १४ ॥

विष्णोर्माधवमासस्य यथादृष्टंयथाश्रुतम् । इत्युक्तोमुनिनातेनव्याधःप्राहकृताञ्जलिः
इतो विदूरे सलिलं वर्तते च सरोवरे । कपित्थास्तत्र वैसन्ति फलभारेण पीडिताः
गच्छावस्तत्र सन्तुष्टिर्भविता नाऽत्रसंशयः । व्याधेनैवंसमादिष्टस्तेनसाकंययौमुनिः
कियद्दूरं ततो गत्वा ददर्शाऽग्रेसरोवरम् । बककारण्डवाकीर्णंचक्रवाकोपशोभितम्
हंससारसक्रौञ्चाद्यैः समन्तात्परिशोभितम् । कीचकैश्च सुघोषैश्च कूजितंभ्रमरैरपि
नक्रकच्छपमीनाद्यैर्वगाह्यं सुमनोहरम् । कुमुदोत्पलकह्लारपुण्डरीकादिभिर्महत् ॥ २०
शतपत्रैः कोकनदैः समन्तात्परिशोभितम् । पक्षिणाञ्च कलारावैर्मुखरं नयनोत्सवम्
तटे कीचकगुल्मैश्च तथा वृक्षैश्चशोभितम् । वटैःकरञ्जैर्नीपैश्चचिञ्चिणीभिस्तथैवच
निम्बप्लक्षप्रियालैश्च चम्पकैर्वकुलैः शुभैः । पुन्नागैस्तुम्बरैश्चैव कपित्थामलकैरपि ॥
निष्पेत्रणैश्च जम्बूभिः समन्तात्परिशोभितम् । वन्यमातङ्गसारङ्गवराहमहिषादिभिः
शशैश्च शल्लकैश्चैव गवयैरुपशोभितम् । खड्गनाभिमृगाद्यैश्च व्याघ्रैः सिंहैर्वृकैरपि

खरान्तकैश्च शरभैश्चमरीभिः सुमण्डितम् ।
शाखाशाखान्तरं शीघ्रं प्लवमानैः प्लवङ्गमैः ॥ २६ ॥

मार्जारैश्चैव भल्लूकैर्भीषणं रुरुभिस्तथा । झिल्लीशब्दैश्चक्रेङ्कारैः कीचकानांरवैस्तथा
घोरवायुविनिर्घातदारुभारैः समन्वितम् । एतादृशं सरो दिव्यंव्याधेनैव प्रदर्शितम्

ददर्श मुनिशार्दूलस्तृषया बाधितो भृशम् ।
स्नात्वा मध्याह्नवेलायां सरस्यस्मिन्मनोरमे ॥ २९ ॥
वाससी परिधायाऽथ कृत्वा माध्याह्निकीः क्रियाः ।
देवपूजां ततः कृत्वा भुक्त्वा फलमतन्द्रितः ॥ ३० ॥

व्याधोपनीतं सुस्वादु कपित्थं श्रमहारि च । सुखोपविष्टःपप्रच्छव्याधंधर्मरतं पुनः
किं वक्तव्यं मयाह्यद्यतवाऽऽदौधर्मतत्पर! । धर्माश्चबहवःसन्तिनानामार्गाःपृथग्विधाः
तत्रवैशाखमासोक्ताः सूक्ष्मा अपिमहार्थदाः । सर्वेषामेवजन्तूनाममिहाऽमुत्रफलप्रदाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यत्प्रष्टव्यं मनसि ते यच्चादौतच्चपृच्छताम्। इत्युक्तोमुनिनातेनव्याधःप्राञ्जलिरब्रवीत्

व्याध उवाच

केनवाकर्मणाचाऽऽसीद्व्याधजन्मतमोमयम्। केनवाचेदृशीबुद्धिःसङ्गतिर्वामहात्मनः एतच्चान्यत्समाचक्ष्व यदि मां मन्यसे प्रभो!। इत्युक्तः पुनरप्याह शङ्खोनाममहामुनिः

मेघगम्भीरया वाचा स्मयमानमुखाम्बुजः।

शङ्ख उवाच

शाकले नगरे पूर्वं द्विजस्त्वं वेदपारगः॥ ३७॥

स्तम्बोनाममहातेजास्तथाश्रीवत्सगोत्रजः। तवेष्टागणिकाकाचिदासीत्तत्सङ्गदोषतः

त्यक्त्वा नित्यक्रिया नित्यं शूद्रवद्गृहमागतः।

शून्याचारस्य दुष्टस्य परित्यक्तक्रियस्य च॥ ३९॥

ब्राह्मणी च तदा चाऽसीद्भार्या कान्तिमती तव।

सा त्वां पर्यचरत्सुभ्रूः सवेश्यं ब्राह्मणाधमम्॥ ४०॥

उभयोः क्षालयन्ती व पादांस्त्वत्प्रियकारिणी। उभयोरप्यधः शेते उभयोर्वचने रता वेश्यया वार्यमाणाऽपि पातिव्रत्यव्रतस्थिता। एवंशुश्रूषयन्त्या हिभर्तारंवेश्ययासह जगाम सुमहान्कालो दुःखितायामहीतले। अपरस्मिन्दिनेभर्तामाषश्चमूलकान्वितम्

अभक्षयच्छूद्रधर्मान्निष्पावांस्तिलमिश्रितान्।

तदपथ्यमशित्वा तु वमंश्चैव विरेचयन्॥ ४४॥

अपथ्याद्दारुणो रोगो व्यजायत भगन्दरः। स दह्यमानो रोगेण दिवारात्रं तु भूरिशः यावदास्तेगृहेवित्तंतावद्वेश्याचसंस्थिता। गृहीत्वातस्यसावित्तंपश्चान्नोवासमन्दिरे अन्यस्य पार्श्वमासाद्यगताघोरासुनिर्घृणा। ततःसदीनवचनोव्याधिबाधासुपीडितः उक्तवान्स रुदन्भार्यां रुजाव्याकुलमानसः। परिपालयमांदेविवेश्याऽऽसक्तंसुनिष्ठुरम् न मयोपकृतं किञ्चित्त्वयि सुन्दरि पावनि!। यो भार्यां प्रणतांपापोनानुमन्येतगर्हितः स षण्ढो भविता भद्रे दश जन्मसु पञ्चसु। दिवारात्रंमहाभागेनिन्दितःसाधुभिर्जनैः

पापयोनिमवाप्स्यामि त्वां साध्वीमवमन्य वै।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अहं क्रोधेन दग्धोऽस्मि तवाऽपमानजेन(तवाऽनारब्दजेन)वै ॥ ५१॥
एवं ब्रुवाणं भर्तारं कृताञ्जलिपुटाऽब्रवीत् । नदैन्यं भवता कार्यं नव्रीडाकान्तमाम्प्रति
न चाऽपि त्वयि मे क्रोधोयेनदग्धोवदस्यथ । पुराकृतानिपापानिदुःखानीहभवन्तिहि
तानि या क्षमते साध्वी पुरुषो वा स उत्तमः । यन्मया पापयापापंकृतं वैपूर्वजन्मनि
तद्भुक्त्या न मे दुःखं न विषादःकथञ्चन । इत्येवमुक्त्वाभर्तारंसासुभ्रूस्तमपालयत्
आनीय जनकाद्वित्तं बन्धुभ्यो वरवर्णिनी । क्षीरोदवासिनं देवंभर्त्तारंसात्वचिन्तयत्
शोधयन्ती दिवारात्रौ पुरीषं मूत्रमेव च । नखेन कर्षती भर्त्तुः कृमीन्कष्टाच्छनैः शनैः
न सा स्वपिति रात्रौ तु न दिवा वरवर्णिनी । भर्तुर्दुःखेन सन्तप्तादुःखितेदमवोचत
देवाश्च पान्तु भर्तारं पितरो ये च विश्रुताः । कुर्वन्तु रोगहीनं मे भर्तारं गतकल्मषम्
चण्डिकायै प्रदास्यामि रक्तमांससमुद्भवम् । सुष्ठ्वन्नं माहिषोपेतं भर्त्तुरारोग्यहेतवे

मोदकान्कारयिष्यामि विघ्नेशाय महात्मने ।
मन्दवारे करिष्यामि चोपवासान्दशैव तु ॥ ६१ ॥

नोपभुञ्जामि मधुरं नोपभुञ्जामिवै घृतम् । तैलाभ्यङ्गविहीनाऽहं स्थास्येनैवात्रसंशयः
जीवताद्रोगहीनोऽयं भर्त्ता मे शरदां शतम् । एवं साऽव्याहरद्देवी वासरे वासरे गते

तदा चाऽऽगान्मुनिः कश्चिन्महात्मा देवलाह्वयः ।
वैशाखे मासि घर्मार्तः सायाह्ने तस्यवै गृहम् ॥ ६४ ॥
तदा वै भार्यया चोक्तं भिषग्वै गृहमागतः ।
तेन वै रोगहानिः स्यात्तस्याऽऽतिथ्यं करोम्यहम् ॥ ६५ ॥

ज्ञात्वा त्वं धर्मविमुखं भिषग्व्याजेनवञ्चितः । पादावनेजनंकृत्वातज्जलंमूर्ध्निसाक्षिपत्
पानकञ्च ददौ तस्मै घर्मार्ताय महात्मने । त्वयाऽनुमोदिता सायं घर्मतापनिवारकम्
स प्रातरुदिते सूर्ये मुनिः प्रायाद्यथाऽऽगतः । अथ चाऽल्पेनकालेनसन्निपातोऽभवत्तव
त्रिकट्व्यां नीयमानायांभर्त्ताङ्गुलिमखण्डयत् । उभयोर्दन्तयोःश्लेषःसहसासमपद्यत
तत्खण्डमङ्गुलेर्वक्त्रेस्थितंभर्तुःसुकोमलम् । खण्डयित्वाङ्गुलिं भर्तापञ्चत्वमगमत्तदा
शय्यायांसुमनोज्ञायांस्मरंस्तांपुंश्चलींशुभाम् । मृतंविज्ञायभर्त्तारंभार्याकान्तिमतीतव

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विक्रीय चाऽपि वलयं गृहीत्वा चेन्धनं बहु ।
चक्रे चितिं तेन साध्वी मध्ये कृत्वा पतिं तदा ॥ ७२ ॥
अवगुह्यभुजाभ्याञ्चपादौचाश्लिष्यपादयोः । मुखेमुखंविनिक्षिप्य हृदयं हृदये तथा
जघने जघनं देवी ह्यात्मानं सन्निवेश्य च । दाहयामासकल्याणीभर्तृदेहंरुजान्वितम्
आत्मना सह कल्याणी ज्वलिते जातवेदसि ॥ ७४ ॥
विमुच्य देहं सहसा जगाम पतिं समालिङ्ग्य मुरारिलोकम् ।
पानीयदानेन च माधवेऽस्मिन्पादावनेजादपि योगिगम्यम् ॥ ७५ ॥
त्वमन्तकाले गणिकाविचिन्तया देहं त्यक्त्वा मुक्तसमस्तकिल्बिषः ।
जन्मव्याध्यं प्राप्यसे घोररूपं हिंसासक्तः सर्वदोद्वेगकारी ॥ ७६ ॥
दत्ता त्वया पानकस्याऽपि दाने मासेऽनुज्ञा माधवे साधुजाने! ।
व्याधोजातस्तेन जाता सुबुद्धिर्धर्मान्प्रष्टुं सर्वसौख्यैकहेतून् ॥ ७७ ॥
धृतं मूर्ध्ना पादशौचावशिष्टं जलं मुनेः सर्वपापापहारि ।
तेनेयं ते सङ्गतिर्मे वनेऽस्मिन्नया भूयः सम्पदः सन्ततिश्च ॥ ७८ ॥
इत्येतत्सर्वमाख्यातं पूर्वजन्मनि यत्कृतम् । कर्म पुण्यं पापकञ्च दृष्टं दिव्येन चक्षुषा
गोप्यं वा ते प्रवक्ष्यामि यद्भवाञ्छ्रोतुमिच्छति ।
जाता ते चित्तशुद्धिर्वै स्वस्ति भूयान्महामते! ॥ ८० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे व्याधोपाख्याने व्याधस्य पूर्वजन्मकथनं नामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकोनविंशोऽध्यायः

शङ्खव्याधसम्वादेपरब्रह्मनिरूपणपूर्वकंवायुशापकथनम्

व्याध उवाच

विष्णुमुद्दिश्य कर्तव्या धर्माभागवताःशुभाः । तत्राऽपिमाधवीयाश्चइत्युक्तंतुत्वयापुरा

स विष्णुः कीदृशो ब्रह्मन्किं वा तस्य हि लक्षणम् ।

किं मानं तस्य सद्भावैः कैर्ज्ञेयो भगवान्विभुः ॥ २ ॥

कीदृशावैष्णवा धर्माः केनाऽसौ प्रीयते हरिः ।

एतदाचक्ष्व मे ब्रह्मन्! किङ्कराय महामते! ॥ ३ ॥

इति पृष्टस्तु व्याधेन पुनः प्राह स वै द्विजः । प्रणम्य जगतामीशंनारायणमनामयम्

शङ्ख उवाच

श्रृणु व्याध! प्रवक्ष्यामि विष्णुरूपमकल्मषम् ।

यदचिन्त्यं विरिञ्च्याद्यैर्मुनिभिर्भावितात्मभिः ॥ ५ ॥

पूर्णशक्तिःपूर्णगुणो निर्दिष्टःसकलेश्वरः । निर्गुणोनिष्कलोऽनन्तःसच्चिदानन्दविग्रहः

यदेतदखिलं विश्वं चराचरमनीदृशम् । साधिशंसाऽऽश्रयं यच्च यद्वशेनियतंस्थितम्

अथ ते लक्षणं वच्मिब्रह्मणःपरमात्मनः । उत्पत्तिस्थितिसंहाराद्यावृत्तिर्नियमस्तथा

प्रकाशोवन्धमोक्षौ च वृत्तिर्यस्माद्भवन्त्यमी ।

स विष्णुर्ब्रह्मसञ्ज्ञोऽसौ कवीनां सम्मतो विभुः ॥ ६ ॥

साक्षाद्ब्रह्मेति तं प्राहुः पश्चाद्ब्रह्मादिकानपि । ब्रह्मशब्दं सोपपदंब्रह्मादिषुविदोविदुः

नान्येषां ब्रह्मता क्वाऽपि तच्छक्त्येकांशभागिनाम् ।

तदेतच्छास्त्रगम्यं हि जन्माद्यस्य महाविभोः ॥ ११ ॥

शास्त्रं चवेदाः स्मृतयः पुराणं वै तदात्मकम् । इतिहासः पञ्चरात्रं भारतं चमहामते!

एतैरेवमहाविष्णुर्ज्ञेयो नान्यैः कथञ्चन । नावेदविदमुं विष्णुं मनुतेच नरः क्वचित् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नेन्द्रियैर्नानुमानैश्च न तर्कैः शक्यते विभुम् । ज्ञातुं नारायणं देवं वेदवेद्यं सनातनम् ॥
अस्यैव जन्मकर्माणि गुणाञ्ज्ञात्वायथामति । मुच्यन्ते जीवसंघाश्चसदातद्वशवर्तिनः

क्रमाद्विष्णोश्च माहात्म्यं यथा सातिशयं भवेत् ।
एकैकस्मिन्स्थिता शक्तिर्देवर्षिपितृमातृके ॥ १६ ॥

प्रत्यक्षेणाऽऽगमेनापि तथैवाऽनुमयाऽपि च । आदौनरोत्तमंविद्याद्बलेज्ञानेसुखेतथा

तस्माद्भूतं शतगुणं विद्याज्ज्ञानादिभिर्वृतम् ।
भूतान्मनुष्यगन्धर्वान्विद्याच्छतगुणाधिकान् ॥ १८ ॥
तत्त्वाभिमानिनो देवांस्तेभ्यो विद्याच्छताधिकान् ।
तत्त्वाभिमानिदेवेभ्यः सप्तैव ऋषयो वराः ॥ १६ ॥

सप्तर्षिभ्यो वरो ह्यग्निरग्नेःसूर्यादयस्तथा । सूर्याद्गुरुर्गुरोःप्राणःप्राणादिन्द्रोमहाबलः
इन्द्राच्च गिरिजादेवीदेव्याःशम्भुर्जगद्गुरुः । शम्भोर्बुद्धिर्महादेवीबुद्धेःप्राणोबलाधिकः
नप्राणात्परमंकिञ्चित्प्राणेसर्वंप्रतिष्ठितम् । प्राणाज्जातमिदंविश्वंप्राणात्मकमिदंजगत्
प्राणे प्रोतमिदं सर्वं प्राणादेव हि चेष्टते । सर्वाधारमिमं प्राहुः सूत्रंनीलाम्बुदप्रभम् ॥

लक्ष्मीकटाक्षमात्रेण प्राणस्याऽस्य स्थितिर्भवेत् ।
सा लक्ष्मीर्देवदेवस्य कृपा लेशैकभाजिनी ॥ २४ ॥
न विष्णोः परमं किञ्चिन्न समो वा कथञ्चन ।

व्याध उवाच

कथं जीवेष्वयं प्राणः सूत्रनामाऽधिकोऽभवत् ॥ २५ ॥

निर्णयो वा कथंह्यस्यप्राणाधिक्यंकथंविभो! । एतदाचक्ष्वमेब्रह्मन्कथंप्राणाद्विभुःपरः

शङ्ख उवाच

शृणुव्याधप्रवक्ष्यामियत्पृष्टोनिर्णयस्त्वया । प्राणाधिक्यंसमुद्दिश्य जीवैश्चसकलैरपि
पुरा नारायणो देवः पद्मसृष्टौ सनातनः । सृष्ट्वाब्रह्मादिकान्देवानिदं प्राह जनार्दनः ॥

साम्राज्येऽहं स्थापयेयं ब्रह्माणं वः पतिं प्रभुम् ।
यो युष्मास्वधिको देवो यौवराज्ये सुरेश्वराः! ॥ २६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तंस्थापयतशीलाढ्यं शौर्यौदार्यगुणान्वितम् । इत्युक्त्वाविभुनादेवाःसर्वेशक्रपुरोगमाः
एवं विवदिरेऽन्योन्यमहं भूयामहं त्विति । सर्वेविवदमानाश्च सूर्यं केचित्परं विदुः
शक्रं केचित्परं कामं केचित्तूष्णींतु तस्थिरे । ते निर्णयमपश्यन्तःप्रष्टुं नारायणंययुः
नमस्कृत्य पुनः प्राहुःसर्वेप्राञ्जलयोऽमराः । विचारितंमहाविष्णो! सर्वैरस्माभिरञ्जसा
अस्मासु देवमधिकं नैव विद्मः कथञ्चन । त्वमेव निर्णयं ब्रूहि देवाः संशयिनः खलु
इति पृष्टोऽमरैः सर्वैःप्रहसन्निदमब्रवीत् । देहादस्माच्चवैराजाद्यस्मिन्निष्क्रामतिह्ययम्
पतिष्यति प्रविष्टेतु यस्मिन्वै ह्युत्थितो भवेत् । सदेवोह्यधिकोनूनंनापरस्तुकथञ्चन
इत्युक्तास्तेततःसर्वेतथास्त्वितिवचोऽब्रुवन् । निश्चक्रामजयन्ताह्वःपादात्पूर्वंसुरेश्वरः
तदापङ्गुममुं प्राहुर्नदेहः पतितस्तदा । शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेऽचलन्नपि ॥३८
पश्चाद्गुह्याद्विनिष्क्रान्तो दक्षोनाम प्रजापतिः । तदा षण्ढममुं प्राहुर्नदेहः पतितस्तदा
शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेऽचलन्नपि।पश्चाद्धस्ताद्विनिष्क्रान्तइन्द्रःसर्वामरेश्वरः
हस्तहीनममुंप्राहुर्न देहः पतितस्तदा । शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेऽचलन्नपि ॥

लोचनाभ्यां विनिष्क्रान्तः सूर्यस्तेजस्विनां वरः ।
तदा काणममुं प्राहुर्न देहः पतितस्तदा ॥ ४२ ॥
शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेऽचलन्नपि ।
घ्राणात्पश्चाद्विनिष्क्रान्तौ नासत्यौ विश्वभेषजौ ।
अजिघ्राणममुं प्राहुर्न देहः पतितस्तदा ॥ ४३ ॥

शृण्वन्पिबन्वदन्नैवाजिघ्रन्नास्तेऽचलन्नपि ।श्रोत्राद्दिशोविनिष्कान्तानदेहःपतितस्तदा

तदाऽमुं बधिरं प्राहुर्मृतं नैव कथञ्चन ॥ ४४ ॥

पिबन्वदन्नपि तदा ह्यशृण्वन्नचलन्नपि । वरुणो रसनायास्तु विनिष्क्रान्तस्ततःपरम्

तदाऽरसज्ञमेवाऽऽहुर्नदेहः पतितस्तदा ॥ ४५ ॥
जीवंश्चलन्नदन्नास्ते तथा जानञ्छ्वसन्नपि ।
ततो वाचो विनिष्क्रान्तो वह्निर्वागीश्वरो विभुः ॥ ४६ ॥
तदा मूकममुं प्राहुर्न देहः पतितस्तदा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जीवंश्चलन्नदन्नास्ते तथा जानञ्छ्वसन्नपि ॥ ४७ ॥
पश्चाद्रुद्रो विनिष्क्रान्तो मनसोबोधनात्मकः । तदाजडममुंप्राहुर्न देहः पतितस्तदा ॥
जीवंश्चलन्नदन्नास्ते तथा ज़ानञ्छ्वसन्नपि ।
पश्चात्प्राणो विनिष्क्रान्तो मृतमेनं तदा विदुः
पुनरेवं तदा प्राहुर्देवा विस्मितमानसाः ॥ ४६ ॥
देहमुत्थापयेद्यस्तु पुनरेवं व्यवस्थितः । स एव ह्यधिकोऽस्मासुयुवराजाभविष्यति
इत्येवंतुप्रतिश्रुत्यविविशुश्चयथाक्रमम् । जयन्तःप्राविशत्पादौनोत्तस्थौतत्कलेवरम्
गुह्यश्च प्राविशद्दक्षो नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ।
इन्द्रो हस्तौ विवेशाऽथ नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ॥ ५२ ॥
चक्षुः सूर्यः प्रविष्टोऽभून्नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ।
दिशः श्रोत्रे प्रविविशुर्नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ॥५३ ॥
वरुणः प्राविशज्जिह्वां नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ।
नासां विविशतुर्दस्रौ नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् ॥ ५४ ॥
वह्निश्चप्राविशद्वाचं नोत्तस्थौ तत्कलेवरम् । मनश्च प्राविशद्रुद्रोनोत्तस्थौतत्कलेवरम्
पश्चात्प्राणो विवेशाऽसौ तदोत्तस्थौ कलेवरम् ।
तदा देवा विनिश्चित्य प्राणं देवाधिकं विभुम् ॥ ५६ ॥
बले ज्ञाने च धैर्ये च वैराग्ये प्राणनेऽपि च । ततोऽभिषेचयाञ्चक्रुर्यौवराज्येमहाप्रभुम्
उत्कृष्टस्थितिहेतुत्वादुक्थमेकंतदाजगुः । तस्मात्प्राणात्मकंविश्वंसर्वंस्थावरजङ्गमम्
अंशैः पूर्णैर्बलाढ्यैश्च पूर्णोऽयं जगतास्पतिः ॥ ५६ ॥
न प्राणहीनं जगदस्ति किञ्चित्प्राणेन हीनं न च वै समेधते ।
न प्राणहीनं स्थितमत्र किञ्चित्प्राणेन हीनं न च किञ्चिदस्ति
तस्मात्प्राणः सर्वजीवाधिकोऽभूद्व बलाधिकः सर्वजीवान्तरात्मा ॥ ६०॥
प्राणात्कोऽपि ह्यधिको वा समो वा शास्त्रे दृष्टः श्रुतपूर्वो न चाऽऽस्ते ।
तत्तत्कार्यानुगः प्राणो ह्येको देवोह्यनेकधा । तस्मात्प्राणं वरंप्राहुःप्राणोपासनतत्परः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लीलयैव जगत्स्रष्टुं हन्तुं पालयितुं प्रभुः ॥ ६२ ॥
शेषाऽहिशिवशक्राद्याश्चेतनाश्च जडा अपि । वासुदेवादृतेकोऽपि नैनम्परिभविष्यति
सर्वदेवात्मकः प्राणः सर्वदेवमयोविभुः । वासुदेवाऽनुगोनित्यंतथाविष्णुवशस्थितः
वासुदेवप्रतीपं तु न शृणोति न पश्यति । देवाः प्रतीपं कुर्वन्ति रुद्रेन्द्राद्याः सुरेश्वराः
प्रतीपं क्वाऽपि कुरुते नप्राणःसर्वगोचरः । तस्मात्प्राणोमहाविष्णोर्बलमाहुर्मनीषिणः
एवं ज्ञात्वा महाविष्णोर्माहात्म्यंलक्षणंतथा । पूर्वबन्धानुगंलिङ्गंजीर्णात्वचमिवोरगः
विसृज्य परमं याति नारायणमनामयम् । श्रुत्वा शङ्खोदितंवाक्यंपुनर्व्याधःप्रसन्नधीः
प्रश्रयाऽवनतोभूत्वापुनःपप्रच्छतंमुनिम् । ब्रह्मन्महानुभावस्यप्राणस्याऽस्यजगद्गुरोः
न ख्यातो महिमा लोकेकथं सर्वेश्वरस्य वै । देवानाञ्चमुनीनाञ्च भूपानाञ्चमहात्मनाम्
महिमा श्रूयते लोके पुराणेषु सहस्रशः । एतदाचक्ष्व मे ब्रह्मञ्छ्रोतुं कौतूहलं हि मे ॥

शङ्ख उवाच

पुरा प्राणो हरिं देवं नारायमनामयम् । अश्वमेधैर्यष्टुकामो गङ्गातीरं ययौ मुदा ॥
हलैश्चकार भूशुद्धिं नानामुनिगणैर्युतः । अन्तर्वल्मीकलीनस्तु कण्वो नामसमाधिगः
हलोत्कृष्टो विनिष्क्रान्तक्रोधादिदमुवाच ह । दृष्ट्वा पुरःस्थितंप्राणंशशापहमहाविभुम्
अद्यप्रभृति न ख्यातिं महिमा भुवनत्रये । तव प्राप्नोति देवेश! भूलोके तु विशेषतः
प्रख्यातास्ते भविष्यन्तिह्यवताराजगत्त्रये । इत्युक्तोमुनिनातेनवायुःक्रोधात्तमब्रवीत्
विनाऽपराधं शप्तोऽस्मि तितिक्षुं मां निरागसम् ।
तस्मात्कण्व! महाबाहो गुरुद्रोही भवाऽऽशु च ॥ ७७ ॥
लोकेनिन्दितवृत्तिश्चभवेत्याहसदागतिःततःप्रभृतिलोकेऽस्मिन्प्राणस्याऽस्यमहाप्रभो!
नख्यातोमहिमालोकेभूलोकेतुविशेषतः । शापात्कण्वोगुरुंजग्ध्वासूर्यशिष्योऽभवत्तदा
इत्येतत्कथितं सर्वं यत्पृष्टं तुत्वयाऽधुना । यच्छ्रोतव्यमितोव्याधपृच्छमांमाविचारय

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे वायुशापकथनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विंशोऽध्यायः

श्रीभागवतधर्मकथनम्

व्याध उवाच

किं जीवा विभुना सृष्टाः कोटिशोऽथ सहस्रशः ।
दृश्यन्ते भिन्नकर्माणो नानामार्गा सनातनाः ॥ १ ॥

नैकस्वभावा एतेहि कुत एव महामते! । सर्वं तत्पृच्छते मह्यं विस्तरात्तत्त्वतो वद

शङ्ख उवाच

त्रिविधाजीवसङ्घा हि रजःसत्त्वतमोगुणाः । राजसा राजसंकर्मतामसास्तामसंतथा
सात्त्विकाः सात्त्विकंकर्मकुर्वन्त्येतेयथाक्रमम् । क्वचिच्चगुणवैषम्यात्प्राप्नुवन्तिनराइमे
तेनैवोच्चावचं कर्म कुर्वन्तः फलभागिनः । क्वचित्सुखं क्वचिद्दुःखंक्व चिच्चोभयमेवच
गुणानामेव वैषम्यात्प्राप्नुवन्ति नराइमे । प्रकृतिस्था इमे जीवाबद्धाएतैर्गुणैस्त्रिभिः
गुणकर्माऽनुरूपेण कर्मणां व्यत्ययःफलम् । गुणानुगुण्यंभूयस्तेप्रकृतिंयान्त्यमीजनाः
प्रकृतिस्थाःप्राकृतिकागुणकर्माऽभिमूर्च्छिताःगतिंप्राकृतिकींयान्तिव्यत्ययःप्रकृतेर्नहि
तामसा दुःखबहुलाः सदा तामसवृत्तयः । निर्दया निष्ठुरा लोके सदाद्वेषैकजीविनः

राक्षसाद्याः पिशाचान्तास्तामसीं यान्ति वै गतिम् ।
राजसा मिश्रमतयः कर्तारः पुण्यपापयोः ॥ १० ॥
पुण्यात्स्वर्गं प्राप्नुवन्ति क्वचित्पापाच्च यातनाम् ।
अत एते मन्दभाग्या आवर्तन्ते पुनः पुनः ॥ ११ ॥
धर्मशीला दयावन्तः श्रद्धावन्तोऽनसूयकाः ।
सात्त्विकाः सात्त्विकीं वृत्तिमनुतिष्ठन्त आसते ॥ १२ ॥

तेचोर्ध्वंयान्तिविमलागुणापायेमहौजसः।विभिन्नकर्मणाश्चाऽतःपृथग्भावाःपृथग्विधाः
गुणकर्मानुरूपेण तेषां विष्णुर्महाप्रभुः । कर्माणि कारयत्यद्धास्वस्वरूपाप्तये विभुः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विष्णोर्वैषम्यनैर्घृण्ये पूर्णकामस्य वै नहि । सृष्टिंस्थितिंहृतिञ्चैवसमामेवकरोत्ययम्
स्वगुणादेव ते सर्वेकर्मणः फलभागिनः । आरामोप्तान्यथा सर्वान्समं वर्षयतिद्रुमान्
एककुल्याजलाद्यङ्ग द्रुमाश्च प्रकृतिं गताः । नारामोप्तरि वैषम्यं नैर्घृण्यं वा कथञ्चन

व्याध उवाच

जनानां पूर्णभोगानां कदामुक्तिर्भवेन्मुने! । सृष्टिकालेऽथवाह्यन्तकालेवास्थापनस्यच
क्वचिच्चसृष्टिकालस्य संहारस्याऽपि वै स्थिते । एतद्विस्तार्यमेब्रह्मन्भगवच्चेष्टितंवद

शङ्ख उवाच

चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते । रात्रिश्च तावती तस्य ह्यहोरात्रं दिनं भवेत्
दशपञ्चदिनान्याहुः पक्षं मासो द्वयात्मकः । मासद्वयमृतुं प्राहुरयनं च ऋतुत्रयम् ॥
अयने द्वेवत्सरःस्यात्ताद्वक्च्छतसमायदि । गच्छन्तिब्रह्मणोह्यस्यब्रह्मकल्पं तदाविदुः
तावान्हि प्रलयः काल इति वेदविदांमतम् । प्रलयस्त्रिविधःप्रोक्तोमानवोमानवात्यये
दैनन्दिनोद्वितीयोहि ब्रह्मणो दिवसात्यये । ब्रह्मणोऽथ लये पश्चाद्ब्राह्मञ्चप्रलयंविदुः
ब्रह्मणस्तु मुहूर्ते तु तु मनोस्तु प्रलयं विदुः । प्रलयेषु व्यतीतेषु चतुर्दशसु वै क्रमात्
दैनन्दिनलयं प्राहुः प्रलयानां स्थितिम्पुनः । त्रयाणामेव लोकानांलयोमन्वन्तरेभवेत्
चेतनानांःतदा नाशोन लोकानां क्षयो भवेत् । उदकैरेव पूर्तिश्च यथा पूर्वं तथा पुनः
मन्वन्तरान्ते भूयात्तु चेतनानां पुनर्भवः । दैनन्दिनलये व्याध सर्वस्यापि क्षयोभवेत्

सत्यलोकं विना सर्वे लोका नश्यन्ति साधिपाः ।
सचेतनाः साधिभूताः प्रसुप्ते चतुरानने ॥ २६ ॥
तत्त्वाभिमानिनो देवाः केचिच्च मुनयस्तथा ।
शिष्यन्ति सुप्ताः सर्वेऽपि सत्यलोकव्यवस्थिताः ॥ ३० ॥

तिष्ठन्ति सुप्तिमापन्ना यावत्कल्पमतीन्द्रियाः । पुनर्निशात्यये ब्रह्मायथापूर्वमकल्पयत्

ऋषीन्देवान्पितॄंल्लोकान्धर्मान्वर्णान्पृथक्पृथक् ।
पुनर्दशावतारा हि विष्णोर्देवस्यचक्रिणः ॥ ३२ ॥

नियमेन भवन्त्येते तथान्येऽपि च भूरिशः । देवता ऋषयश्चैव आकल्पञ्च गिराम्पते-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनरेवाऽभिवर्तन्ते ब्रह्मणा सह मुक्तिगाः। भूपाश्च साधवो ये चसिद्धिंप्राप्ताःपरंगताः

तेनैव चाभिवर्तन्ते सत्यलोकव्यवस्थिताः।
तद्राशिगाः पुनर्यान्ति तन्नाम्नाश्रुतिसंस्थिताः ॥ ३५ ॥
तत्तद्गोत्रेषु जायन्ते तत्तत्कर्मरताः सदा।
दैत्यानामपि सर्वेषां यदा कलियुगात्ययः ॥ ३६ ॥

कलिनासहगच्छन्तिस्वांगतिंनिरयालयाः। तेषाञ्चराशिसंस्थायेतन्नामानोऽपरेऽपिच जायन्ते कर्मणा स्वेन तत्तत्कर्मविधायकाः। सृष्टिकालं प्रवक्ष्यामिमुक्तिकालंतथैवच ब्रह्मादीनाञ्च देवानां समाहितमना भव। निमेषो देवदेवस्य ब्रह्मकल्पसमो मतः॥

तस्याऽवसाने चोन्मेषो देवदेवशिखामणेः।
निमेषाऽन्ते भवेदिच्छा स्रष्टुं लोकांश्च कुक्षिगान् ॥ ४० ॥
सोऽपश्यत्स्वोदरे सर्वाञ्जीवसङ्घाननेकशः।
सृज्यान्मुक्तानमून्सर्वाँलिङ्गभङ्गमुपागतान् ॥ ४१ ॥

सुप्ताः सृतिस्थाः सर्वेऽपितमोगाअपिसर्वशः। पूर्वकल्पेलिङ्गभङ्गमापन्नाविधिपूर्वकाः मानवान्ताजीवकोशाजीवन्मुक्ताश्चमुक्तिगाः। पूर्वकल्पेविमुक्ताश्चब्रह्माद्यामानवान्तकाः

ध्यानसंस्था हि तिष्ठन्ति विष्णुकुक्षिगताअपि।
उन्मेषस्याऽऽदिमे भागे चतुर्व्यूहात्मको विभुः ॥ ४४ ॥
भूत्वा तु पूर्वसाद्गुण्याद्वासुदेवाच्च व्यूहगात्।
दत्त्वा तु ब्रह्मणो मुक्तिं सायुज्याख्यां महाविभुः ॥ ४५ ॥
दत्त्वा तदनु सायुज्यं तत्त्वज्ञानं महात्मनाम्।
सारूप्यं चैव केषाञ्चित्सामीप्यञ्च तथा विभुः ॥ ४६ ॥
सालोक्यञ्च तथाऽन्येषां दत्त्वा देवो जनार्दनः।
अनिरुद्धवशे सर्वान्स्थिताँल्लोकानलोकयत् ॥ ४७ ॥

प्रद्युम्नस्य वशे दत्वा सृष्टिं कर्तुं मनो दधे। मायां जायांकृतिंशान्तिमुपयेमेस्वयंहरिः

चतुर्व्यूहैः पूर्णगुणैर्वासुदेवादिकैः क्रमात्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताभिर्युक्तो महाविष्णुश्चतुर्व्यूहात्मको विभुः ॥ ४६ ॥
भिन्नकर्माशयं लोकंपूर्णकामोव्यजीजनत् । उन्मेषान्तेपुनर्विष्णुर्योगमायांसमाश्रितः
सङ्कर्षणाद्वय्यूहगाच्च हरत्येतच्चराचरम् । तदेतत्सर्वमाख्यातं कार्यं चिन्त्यं महात्मनः
यदचिन्त्यं दुर्विभाव्यं ब्रह्माद्यैरपि योगिभिः ।

व्याध उवाच

के वा भागवता धर्माः कैर्विष्णुश्च प्रसीदति ॥ ५२ ॥
तानहं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतं वद नो मुने! ।

शङ्ख उवाच

येन चित्तविशुद्धिः स्याद्यः सतामुपकारकः ॥ ५३ ॥
तं विद्धि सात्त्विकं धर्मं यश्च केनाऽप्यनिन्दितः ।
श्रुतिस्मृत्युदितो यस्तु यदि निष्कामिको भवेत् ॥ ५४ ॥
यस्तुलोकाऽविरुद्धोऽपितंधर्मंसात्त्विकंविदुः । चतुर्विधाहितेधर्मावर्णाश्रमविभागतः
नित्यनैमित्तिकाः काम्या इति ते च त्रिधामताः ।
ते सर्वे स्वस्वधर्माश्च यदा विष्णोः समर्पिताः ॥ ५६ ॥
तदा वै सात्त्विकाज्ञेया धर्माभागवताःशुभाः । देवातान्तरदैवत्याःसकामाराजसामताः
यक्षरक्षःपिशाचादिदैवत्या लोकनिष्ठुराः ।
हिंसात्मका निन्दिताश्च धर्मास्ते तामसाः स्मृताः ॥ ५८ ॥
सत्त्वस्थाः सात्त्विकान्धर्मान्विष्णुप्रीतिकराञ्छुभान् ।
कुर्वन्त्यनीहया नित्यं ते वै भागवताः स्मृताः ॥ ५६ ॥
येषांचित्तंसदाविष्णौजिह्वायांनामवैविभोः । पादौचहृदयेयेषांते वैभागवताः स्मृताः
सदाचाररता ये च सर्वेषामुपकारकाः । सदैव ममताहीनास्ते वै भागवताः स्मृताः
येषाञ्च शास्त्रेविश्वासो गुरौसाधुषुकर्मसु । येविष्णुभक्ताःसततन्तेवैभागवताःस्मृताः
येषां हि सम्मता धर्माः शाश्वता विष्णुवल्लभाः ।
श्रुतिस्मृत्युदिता ये च ते धर्माः शाश्वता मताः ॥ ६३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अटनंसर्वदेशेषु वीक्षणं सर्वकर्मणाम् । श्रवणं सर्वधर्माणां विषयाऽऽसक्तचेतसाम्
अकिञ्चित्करमेतेषां षण्ढस्येव वरस्त्रियः । साधूनां दर्शनेनैव मनोद्रवति वै सताम्
चन्द्रस्य कौमुदीसङ्गाच्चन्द्रकान्तशिलायथा । क्वचित्सच्छास्त्रश्रवणाद्विषयैरहितंमनः
तिष्ठत्येव सतां पुंसांतेजोरूपंह्यकल्मषम् । पद्मबन्धोःप्रभासङ्गात्सूर्यकान्तशिलायथा
निष्कामैर्हि जनैर्यस्तु श्रद्धया समुपाश्रितः । योविष्णुवल्लभोनित्यंधर्मोभागवतोमतः
तैर्दृष्टा बहवो धर्माइहाऽमुत्रफलप्रदाः । विष्णुप्रीतिकराःसूक्ष्माःसर्वदुःखविमोचकाः
दध्नःसारमिवोद्धृत्य धर्मंवैशाखसम्भवम् । रमायैभगवानाहक्षीराब्धौहितकाम्यया
मार्गच्छायाविनिर्माणं प्रपादानञ्च वै तथा । व्यजनैर्व्यजनञ्चैव प्रश्रयाणां समर्पणम्

छत्रस्योपानहोर्दानं दानं कर्पूरगन्धयोः ।
वापीकूपतडागानां निर्माणं विभवे सति ॥ ७२ ॥

सायाह्ने पानकस्यापि दानं तु कुसुमस्य च । ताम्बूलदानं पापघ्नंगोरसानांविशेषतः
लवणान्विततक्रस्य दानं श्रान्ताय वै पथि । अभ्यङ्गकरणं चैव द्विजपादावनेजनम्
कटकम्बलपर्यङ्कदानं गोदानमेव च । मधुयुक्ततिलानां च दानं पापविनाशनम् ॥
सायाह्ने चेक्षुदण्डानां दानमुर्वारुकस्य च । रसायनप्रदानञ्च पितृनिर्वापणं तथा ॥७६

एते धर्मा विशिष्योक्ता मासेऽस्मिन्माधवप्रिये ।
प्रातः सूर्योदये स्नात्वा शृण्वन्द्विजकुलेरितम् ॥ ७७ ॥

नित्यकर्माणि कृत्वैवंमधुसूदनमर्चयेत् । कथां माधवमासीयां शृणुयाच्च समाहितः
तैलाभ्यङ्गंवर्ज्जयेच्चकांस्यपात्रे तुभोजनम् । निषिद्धभक्षणञ्चैववृथाऽऽलापन्तुवर्जयेत्
अलाम्बुं गृञ्जनञ्चैव लशुनन्तिलपिष्टकम् । आरनालं भिस्सटञ्चमृतकोशातकीं तथा
उपोदकीं कलिङ्गञ्च शिग्रुशाकञ्च वर्जयेत् । निष्पावानिकुलित्थानिमसूराणि वर्जयेत्
वृन्ताकानि कलिङ्गानिकोद्रवाणिच वर्जयेत् । तन्दुलीयकशाकञ्चकौसुम्भंमूलकंतथा

औदुम्बरं बिल्वफलं तथा श्लेष्मातकीफलम् ।
सर्वथा वर्जयेद्विद्वान्मासेऽस्मिन्माधवप्रिये ॥ ८३ ॥

एतेष्वन्यतमंभुक्त्वासचण्डालोभवेद्ध्रुवम् । तिर्यग्योनिशतंयातिनात्रकार्याविचारणा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं मासव्रतं कुर्यात्प्रीतये मधुघातिनः। एवं व्रते समाप्ते तु प्रतिमां कारयेद्विभोः॥ मधुसूदनदैवत्यां सवस्त्राञ्च सदक्षिणाम्। स्वर्चितां विभवैःसर्वैर्ब्राह्मणायनिवेदयेत् वैशाखसितद्वादश्यां दद्याद्दध्यन्नमञ्जसा। सोदकुम्भं सताम्बूलं सफलञ्च सदक्षिणम् ददामि धर्मराजाय तेन प्रीणातु वै यमः। अपसव्यात्समुच्चार्य नामगोत्रे पितुस्ततः दद्याद्दध्यन्नमक्षय्यं पितृणां तृप्तिहेतवे। गुरुभ्यश्च तथा दद्यात्पश्चाद्दद्याच्च विष्णवे

शीतलोदकदध्यन्नं कांस्यपात्रस्थमुत्तममम्।
सदक्षिणं सताम्बूलं सभक्ष्यञ्च फलान्वितम्॥॥ ६०॥
ददामि विष्णवे तुभ्यं विष्णुलोकजिगिषया।
इति दत्त्वा यथाशक्त्या गाश्च दद्यात्कुटुम्बिने॥ ६१॥

एवं मासव्रतं कुर्याद्यो दम्भेन विवर्जितः। ससर्वैः पातकैर्हीनः कुलमुद्धृत्य वैशतम् पश्यतामेवभूतानांभित्त्वावैसूर्यमण्डलम्। यातिविष्णोःपरंधामयोगिनामपिदुर्लभम्

व्याख्यात्येवं द्विजकुलवरे माधवीयांश्च धर्मा,
न्विष्णवादीष्टानतिमहितरान्व्याधपृष्टान्समस्तान्॥ ६४॥
वटः सद्यः पश्यतामेव भूमौ पपाताऽहो पञ्चशाखी द्रुमोऽयम्।
वृक्षात्तस्मात्कोटरे संस्थितो हि व्यालः कश्चिद्दीर्घदेही करालः
हित्वा देहं पापयोनिं च सद्यः स वै तस्थौ प्राञ्जलिर्नम्रमूर्धा॥ ६५॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे भागवतधर्म-
कथनं नाम विंशोऽध्यायः॥ २०॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकविंशोऽध्यायः

व्याधोपाख्यानेवाल्मीकेर्जन्मवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

ततस्तु विस्मितोभूत्वाशङ्खोव्याधसमन्वितः। कोभवानितितंप्राहदशैषाच कुतस्तव
केन वाकर्मणासौम्य! मतिस्तवशुभावहा। अकस्मात्तेकथंमुक्तिरेतदाचक्ष्वविस्तरात्
शङ्खेनैव तदापृष्टो दण्डवत्पतितोभुवि। प्रश्रयाऽवनतो भूत्वाप्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत्
अहंपुरा द्विजः कश्चित्प्रयागे बहुभाषणः। रूपयौवनसम्पन्नो विद्यामदसुगर्वितः॥
धनाढ्यो बहुपुत्राढ्यः सदाऽहङ्कारदूषितः। कुसीदस्य मुनेः पुत्रोनाम्नारोचनइत्यहम्

आसनं शयनं निद्रा व्यवायोऽक्षपरिक्रिया।
लोकवार्ता कुसीदं वा व्यापारास्ते ममाऽभवन्॥ ६॥

तन्तुमात्राणि कर्माणि लोकनिन्दाविशङ्कितः। सदम्भश्च सदा कुर्वन्नश्रद्धामेकदाचन
दुर्बुद्धेर्ममदुष्टस्यकियत्कालोगतोऽभवत्। तदावैशाखमासेऽस्मिञ्जयन्तोनामवैद्विजः
श्रावयामासतन्मासधर्मान्भागवतप्रियान्। तत्क्षेत्रेवासिनांपुण्यकर्मणाञ्चद्विजन्मनाम्
नारीनराः क्षत्रियाश्चवैश्याः शूद्राःसहस्रशः। प्रातःस्नात्वासमभ्यर्च्यमधुसूदनमव्ययम्
कथां शृण्वन्तिसततं जयन्तेनसमीरिताम्। शुचिर्भूत्वामौनधरावासुदेवकथारताः
वैशाखधर्मनिरता दम्भालस्यविवर्जिताः। तांसभाञ्चप्रविष्टोऽहं कौतुकाच्चदिदृक्षया

सोष्णीषेण मया मूर्ध्ना नमस्कारोऽपि न कृतः।
ताम्बूलञ्च मुखे कृत्वा कञ्चुकञ्च मया धृतम्॥ १२॥

कथाविक्षेपमचरं लोकवार्ताभिरञ्जनात्। सर्वेषां चित्तचाञ्चल्यमभूद्वैलोकवार्तया॥
कचिद्धासःप्रसार्याहंकचिन्निन्दन्कचिद्धसन्। एवंकालोमयानीतःकथायावत्समाप्यते
पश्चात्तेनैव दोषेण सद्योऽल्पायुर्विनष्टधीः। सन्निपातेन पञ्चत्वं प्राप्तोऽहञ्चपरे दिने॥
तप्तसीसजलैः पूर्णं निरयञ्च हलाहलम्। प्राप्यभुक्त्वा यातनाञ्च मन्वन्तानि चतुर्दश

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युक्तेष्वथचलक्षेषु तां चतुरशीतिभिः । क्रमाद्योनिषु जातोऽहमिदानीञ्चावसन्द्रुमे ॥
दशयोजनविस्तीर्णे शतयोजनमुन्नते । व्यालोऽहं तामसः क्रूरः सप्तयोजनकोटरे ॥
भूत्वा वसामि विप्रर्षे! कर्मणा बाधितः पुरा । अयुतश्च समायातानिराहारस्यकोटरे
दैवात्तव मुखाम्भोजसमीरितकथामृतम् । श्रुत्वा चक्षुर्द्वयेनाहंसद्योध्वस्ताशुभोमुने

व्यालयोनिं विसृज्याऽहं दिव्यरूपधरः पुमान् ।
प्राञ्जलिःमप्रणतो भूत्वा पादौ ते शरणं गतः ॥ २२ ॥

कस्मिञ्जन्मनि त्वंबन्धुर्नजानेमुनिसत्तम । नमयोपकृतंकाऽपिसानुकम्पःकुतःसताम्
साधूनां समचित्तानांसदा भूतदयावताम् । परोपकारप्रकृतिर्न चैषामन्यथामतिः ॥

ममाद्याऽनुगृहाण त्वं यथा धर्मे मतिर्भवेत् ।
न भूयाद्विस्मृतिः क्वाऽपि विष्णोर्देवस्य चक्रिणः ॥ २५ ॥
महतां साधुवृत्तानां सङ्गतिश्च सदा भवेत् !
दारिद्र्यमेकमेव स्यान्मदान्धपरमाञ्जनम् ॥ २६ ॥

इति तं बहुधा स्तुत्वा प्रणम्य च पुनः पुनः । प्राञ्जलिःप्रणतस्तस्थौतूष्णीमेवतदग्रतः
शङ्खो दोर्भ्यां समुत्थाप्यपूर्णप्रेमपरिप्लुतः । पस्पर्श पाणिना चाङ्गंशन्तमेनगताध्वसः
चक्रे सोऽनुग्रहं तस्मिन्दिव्यरूपधरे द्विजे । प्राहतंकृपयाऽऽविष्टोभाविवृत्तान्तमञ्जसा

द्विज! त्वं मासमाहात्म्यश्रवणाच्च हरेरपि ।
माहात्म्यश्रवणात्सद्योविध्वस्ताऽखिलबन्धनः ॥ ३० ॥

अतिहायकलङ्कञ्च क्रमाद्गत्वापुनर्भुवि । दशार्णे विषमे पुण्ये भविता त्वं द्विजोत्तमः
वेदशर्मेति विख्यातः सर्ववेदविशारदः । तत्रतेभविताजातिस्मृतिरात्यन्तिकीशुभा

तथा स्मृतानुबन्धस्त्वं त्यक्तसर्वैषणः शुभः ।
करोषि सकलान्धर्मान्वैशाखोक्तान्हरिप्रियान् ॥ ३३ ॥

निर्द्वन्द्वोनिःस्पृहोऽसङ्गोगुरुभक्तोजितेन्द्रियः।सदाविष्णुकथालापोभविताततत्रजन्मनि
ततःसिद्धिंसमाप्याऽथविध्वस्ताऽखिलबन्धनः । प्राप्नोषिपरमंधामयोगैरपिदुरासदम्
माभैषीःपुत्र!भद्रंतेभवितामत्प्रसादतः । हास्याद्भयात्तथाक्रोधाद्द्वेषात्कामादथाऽपिवा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्नेहाद्वा सकृदुच्चार्य विष्णोर्नामाऽघहारि च ।
पापिष्ठा अपि गच्छन्ति विष्णोर्धाम निरामयम् ॥ ३७ ॥
किमु तच्छ्रद्धया युक्ता जितक्रोधा जितेन्द्रियाः ।
दयावन्तः कथां श्रुत्वा गच्छन्तीति द्विजोत्तम! ॥ ३८ ॥
केचित्केवलया भक्त्या कथालापैकतत्पराः ।
सर्वधर्म्मोज्झिता वाऽपि यान्ति विष्णोःपरम्पदम् ॥ ३९ ॥

द्वेषादिना च भक्त्या वा केचिद्विष्णुमुपासते । तेऽपियान्तिपरंधामपूतनेवासुहारिणी
महद्भिःसङ्गतोनित्यंवाग्विसर्गस्तदाश्रयः । मुमुक्षणाञ्चकर्तव्यःसःविधिःश्रुतिचोदितः

स वाग्विसर्गो जनताऽघविप्लुलो यस्मिन्प्रतिश्लोकमवद्धवत्यपि ।
नामान्यनन्तस्य यशोऽङ्कितानि यच्छृण्वन्ति गायन्ति गृणन्तिसाधवः ॥
यः कष्टसेवां न च काङ्क्षते विभुर्न वा समं भूरि न रूपयौवने ।
स्मृतः सकृद्गच्छति धाम भास्वरं कस्वा दयालुं शरणं व्रजेत ॥ ४३ ॥

तमेव शरणं याहि नारायणमनामयम् । भक्तवत्सलमव्यक्तं चेतोगम्यं दयानिधिम् ॥
कुरु सर्वानिमान्धर्मान्वैशाखोक्तान्महामते! । तेन तुष्टोजगन्नाथःशर्म तेच विधास्यति
इत्युक्त्वा विररामाऽथव्याधं दृष्ट्वा सुविस्मितः । सदिव्यःपुरुषःप्राहपुनस्तंमुनिपुङ्गवम्

दिव्यपुरुष उवाच

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि त्वया शङ्ख! दयालुना ।
दिष्ट्या गता मे दुर्योनिर्यामि चैव पराङ्गतिम् ॥ ४७ ॥

इति तञ्च परिक्रम्य ह्यनुज्ञातो दिवं ययौ । ततःसायमभूद्राजञ्छङ्खोव्याधेनतोषितः
सन्ध्यांसायन्तनींकृत्वारात्रिशेषंनिनायच । नानाख्यानैश्चभूपानांदेवानाञ्चमहात्मनाम्
लीलाभिरवताराणां दृष्टगोष्ठिभिरेव च । ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय पादौप्रक्षाल्यवाग्यतः

ध्यायंश्च तारकम्ब्रह्म कृत्वा शौचादिसत्क्रियाम् ।
वैशाखे मेषगे सूर्ये स्नात्वा प्राक्च भगोदयात् ॥ ५१ ॥
कृत्वा सन्ध्यादिकं कर्म तथा सन्तर्प्य चाऽखिलान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्याघ्रमाहूय हृष्टात्मा मूर्ध्नि प्रोक्ष्य निरीक्ष्य च ॥ ५२ ॥
रामेति द्व्यक्षरं नामददौवेदाधिकं शुभम् । विष्णोरेकैकनामाऽपिसर्ववेदाधिकंमतम्
तेभ्यश्चाऽनन्तनामभ्योऽधिकं नाम्नांसहस्रकम् । ताद्दङ्नामसहस्रेणरामनामसमंमतम्
तस्माद्रामेति तन्नामजपव्याध! निरन्तरम् । धर्मानेतान्कुरुव्याध!यावदामरणान्तिकम्
ततस्ते भविता जन्म वल्मीकस्य ऋषेःकुले ।
वाल्मीकिरिति नाम्ना च भूमौ ख्यातिमवाप्स्यसि ॥ ५६ ॥
इति व्याधं समादिश्य प्रतस्थे दक्षिणां दिशम् ।
व्याधोऽपि तं परिक्रम्य प्रणम्य च पुनः पुनः ॥ ५७ ॥
किञ्चिद्दूरानुगो भूत्वा सरुदन्विरहातुरः । यावद्दृष्टिपथं तावत्पश्यंस्तस्यगतिंपुनः
पुनर्निववृते कृच्छ्रात्तमेव हृदि चिन्तयन् । वनं निर्माय तन्मार्गेप्रपांकृत्वासुनिर्मलाम्
अतियोग्यानिमान्धर्मान्वैशाखोक्तांश्चकार ह ।
वन्यैः कपित्थपनसैर्जम्बूचूतादिभिः फलैः ६० ॥
मार्गगानां श्रमार्तानामाहारं परिकल्पयन् । उपानद्भिश्चन्दनैश्च छत्रैश्च व्यजनैरपि ॥
वालुकास्तरणोपेतच्छायाभिश्च क्वचित्क्वचित् ।
आजहाराथ पान्थानां श्रमं स्वेदोद्भवं तथा ॥ ६२ ॥
प्रातः स्नात्वा दिवारात्रं जपन्रामेति वै मनुम् ।
व्याधजन्मनि नामाऽसौ वल्मीकस्य सुतोऽभवत् ॥ ६३ ॥
कृणुर्नाम मुनिः कश्चित्तस्मिन्नेव सरोवरे । तपो वै दुस्तरं तेपे बाह्यव्यापारवर्जितः
वल्मीकमभवद्देहे तस्य कालेन भूयसा । वल्मीक इति तं प्राहुरतो वै मुनिपुङ्गवम् ॥
पश्चात्तपोविरामान्तेकृणौस्मृतिपथंगते । स्त्रियोऽनुस्मरतोराजन्स्खलितंचेन्द्रियंमुनेः
जग्राह शैलुषी काचित्तस्यां जज्ञे वनेचरः । वाल्मीकिरिविख्यातोभुवनेषुमहायशाः
यो वै रामकथांदिव्यांस्वैःप्रबन्धैर्मनोहरैः । लोकेप्रख्यापयामासकर्मबन्धनिकृन्तनीम्

श्रुतदेव उवाच

पश्य वैशाखमाहात्म्यं भूपालाद्याऽपि भूतिदम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्याधोऽप्युपानहौ दत्त्वा ऋषित्वं प्राप दुर्लभम् ॥ ६६ ॥
य इदं परमाख्यानं पापघ्नं रोमहर्षणम् । शृणुयाच्छ्रावयेद्वाऽपि न भूयःस्तनपोभवेत्
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे व्याधोपाख्याने
वाल्मीकेर्जन्मकथनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

द्वाविंशोऽध्यायः

कलिधर्मनिरूपणेपितृमुक्तिवर्णनम्

मैथिलेय उवाच

का ह्यस्मिंस्तिथयः पुण्या मासे वैशाखसञ्ज्ञके ।
कानि दानानि शस्तानि तासु तासु विशेषतः ॥ १ ॥
काः प्रख्याताश्च वै लोक एतदाचक्ष्व विस्तरात् ।

श्रुतदेव उवाच

त्रिंशच्च तिथयः पुण्या वैशाखे मेषगे रवौ ॥ २ ॥
एकादश्यां कृतं पुण्यं कोटिकोटिगुणं भवेत् । सर्वदानेषुयत्पुण्यंसर्वतीर्थेषुयत्फलम्
समवाप्नोति वैशाख एकादश्यां जलाप्लुतः । स्नानंदानंतपोहोमोदेवतार्चनसत्क्रियाः
कथायाः श्रवणञ्चैव सद्यो मुक्तिविधायकम् ।
रोगाद्युपहतो यस्तु दारिद्र्येणाऽपि पीडितः ॥ ५ ॥
श्रुत्वाकथामिमंपुण्यांकृतकृत्योभवेन्नरः । अस्नात्वा चाऽप्यदत्त्वाचयेननीताइमाःशुभाः
स गोघ्नश्च कृतघ्नश्च पितृघ्नश्च महान्स्मृतः ।
जलाशयाश्च स्वाधीनाः स्वाधीनश्च कलेवरम् ॥ ७ ॥
माधवोमनसा सेव्यः कालश्च सुगुणोत्तमः । साधवश्च दयावन्तः कोनसेवेतमाधवम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दरिद्रैश्च धनाढ्यैश्चपङ्गुभिश्चाऽन्धकैस्तथा । षण्ढैश्चविधवाभिश्चनारीभिश्चनरैस्तथा
कुमारयुवघृद्धैश्च रोगार्तैरपिभूमिप । अतीवसुखसाध्यो हि धर्मो वैशाखगोचरः ॥
मासमेनमनुप्राप्य धर्मान्कुरु इमाञ्छुभान् । कोन यत्नश्चकुरुतेतस्मात्कोन्वपरःशुभः
योऽतीवसुलभान्धर्मान्न करोति नराऽधमः । तस्यैव सुलभा लोकानारकानात्रसंशयः

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि तस्मिन्मासे च कोत्तमा ।
तां तिथिं सर्वपापघ्नीं दध्नः सारमिवोद्धृताम् ॥ १३ ॥

चैत्रेमासि महापुण्ये मेषसंस्थे दिवाकरे । पापघ्नी पितृदैवत्या गयाकोटिफलप्रदा ॥

अत्रैव श्रूयते पुण्या पितृगाथा पुरातनी ।
शृणु तां सत्कथां राजन्सावर्णौ शासति क्षितिम् ॥ १५ ॥

त्रिंशत्कलियुगस्याऽन्ते सर्वधर्मविवर्जिते । आनर्तं तुद्विजः कश्चिद्धर्मवर्णइति श्रुतः
दृष्ट्वाकलियुगे राजञ्जनान्पापरतान्मुनिः । तस्यैव प्रथमे पादे वर्णधर्मविवर्जिते ॥ १७
सकदाचित्सत्रयागंमुनीनांतुमहात्मनाम् । अगमत्पुष्करेक्षेत्रेकुर्वतां मौनधारिणाम्
तत्र चासन्पुण्यकथा ऋषीणां शास्त्रगोचराः । तत्रकेचित्कलियुगं प्रशशंसुर्धृतव्रताः

कृतेयद्वत्सरात्साध्यं पुण्यं माधवतोषणम् ।
त्रेतायां मासतःसाध्यं द्वापरे पक्षतो नृप! ॥ २० ॥

तस्माद्दशगुणंपुण्यंकलौविष्णुस्मृतेर्भवेत् । अत्यल्पमपिवैपुण्यंकलौकोटिगुणंभवेत्
दयापुण्यविहीने तु दानधर्मविवर्जिते । दयादानञ्च कुरुते सकृदुच्चार्य वै हरिम् ॥ २२
स एवचोर्ध्वगो नूनं दुर्भिक्षे चान्नदस्तथा । एतत्प्रसङ्गावसरे नारदोऽभ्येत्यवै मुनिः
करेणैकेन शिश्नञ्च जिह्वां चैकेन वै हसन् । प्रगृह्योन्मत्तवत्तत्र ननर्त मुनिसत्तमः ॥
सभ्यास्तदातमित्यूचुःकिमेतदितिनारद! । प्रत्युवाचसतान्सर्वान्नृत्यंकुर्वन्हसन्सुधीः
सन्तोषाद्यदिहप्रोक्तंनृत्यद्भिर्भावितात्मभिः । सिद्धावयंनसन्देहःपुण्योऽयंकलिरागतः
तत्सत्यञ्चनसन्देहो बहु स्वल्पेन साध्यते । स्मरणात्तोषमायाति केशवःक्लेशनाशनः

तथापि वः प्रवक्ष्यामि दुर्घटञ्च द्वयं ध्रुवम् ।
शिश्नस्य निग्रहः पुत्रा! जिह्वाया अपि नित्यशः ॥ २८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वयं यद्धि भवेद्यस्य स एव स्याज्जनार्दनः। भवद्भिर्नात्रस्थातव्यंतस्मात्कलियुगागमे
पाखण्डं भारतंहित्वा सञ्चरध्वंयथासुखम् । यत्र कुत्रापि देशेषु मनो यत्र प्रसीदति
इति तद्वचनं श्रुत्वा मुनयः शंसितव्रताः। सत्रं समाप्य सहसा ययुस्तेचयथासुखम्
धर्मवर्णोऽपितच्छ्रुत्वात्यक्तुंभूमिं मनोदधे । सव्रतश्चोर्ध्वतेजस्कंधृत्वादण्डकमण्डलू
जटावल्कलधारीच भूत्वाचैवं ययौपुनः। कलौयुगेत्वनाचारान्द्रष्टुं विस्मितमानसः

तत्राऽपश्यज्जनान्घोरान्पापाचाररतान्खलान् ।
पाखण्डिनो द्विजाः सर्वे शूद्राः प्रव्राजिनस्तथा ॥ ३४ ॥
भर्तारं द्वेष्टि भार्या च शिष्यो द्वेष्टि गुरुं तथा।
भृत्यश्च स्वामिहन्ता च पुत्रः पितृवधे रतः ॥ ३५॥
शूद्रप्राया द्विजाः सर्वे वस्तप्रायाश्च धेनवः ।
गाथाप्रायास्तथा वेदाः क्रियासास्याः शुभाः क्रियाः ॥ ३६ ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्याः फलदास्तत्र देवताः । ता एव श्रद्धयाऽर्चन्तिजनाःपापरताःशिताः
सर्वे व्यवायनिरतास्तदर्थे त्यक्तजीविताः । कूटसाक्ष्यप्रवक्तारः सदा कैतवमानसाः ॥
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं सदा कलौ । सर्वेषां हैतुकीविद्यासापूज्या नृपमन्दिरे

गीताद्याश्च कला विद्या नृपाणाञ्च प्रियावहाः ।
हीनाश्च पूज्यतां यान्ति नोत्तमाश्च कलौ युगे ॥ ४० ॥

श्रोत्रियाश्च द्विजाः सर्वे दरिद्राःस्युःकलौयुगे । विष्णुभक्तिर्नराणांतुप्रायशोनैववर्तते
प्रायः पाखण्डभूयिष्ठं पुण्यक्षेत्रं भविष्यति । शूद्रा धर्मप्रवक्तारोजटिलास्तापसाःकलौ
सर्वे चाल्पायुषो मर्त्या दयाहीनाः शठा जनाः । सर्वे धर्मप्रवक्तारः सर्वेचग्रहणोत्सवाः

स्वार्चनं चाऽपि हीच्छन्ति वृथा निन्दापरायणाः ।
असूयानिरताः सर्वे प्रभोः स्वगृहमागते ॥ ४४ ॥

भ्राता च भगिनींगन्ता पिता पुत्रीश्चवैकलौ । सर्वेऽपिशूद्रीनिरताःसर्ववाराङ्गनारताः
साधूनैव विजानन्ति बहूपापांश्च मन्यते । व्यक्तीकुर्वन्ति साधूनांदोषमेकंदुराग्रहाः

पापानां दोषजातानि गुणत्वेन वदन्ति हि ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोषमेव प्रगृह्णन्ति कलौ तु विगुणा जनाः ॥ ४७ ॥
जलौका धर्मसंयुक्ता रक्तंपिबतिनोपयः । औषध्यःसत्त्वहीनाहिऋतूनांव्यत्ययास्तथा
दुर्भिक्षं सर्वराष्ट्रेषु कन्या काले न सूयते । नटनर्तकविद्यासु प्रीतिमन्तो नराः कलौ
वेदवेदान्तविद्यासु निरता ये गुणाधिकाः ।
भृत्यान्पश्यन्ति तान्मूढास्ते भ्रष्टाश्चाखिला नृप! ॥ ५० ॥
त्यक्तश्राद्धक्रियाः सर्वे त्यक्तवेदोदितक्रियाः । जिह्वायांविष्णुनामानिनवर्तन्तेकदाचन
शृङ्गाररसनिर्वाणास्तद्गीतान्येव ते जगुः ॥ ५१ ॥
न विष्णुसेवा न च शास्त्रवार्ता न य यागदीक्षा न विचारलेशः ।
न तीर्थयात्रा न च दानधर्माः कलौ जने क्वाऽपि बभूव चित्रम् ॥ ५२ ॥
तां दृष्ट्वा धर्मवर्णोऽपि सुभीतोऽत्यन्तविस्मितः ।
वंशं पापात्क्षयं यान्तं दृष्ट्वा द्वीपान्तरं ययौ ॥ ५३ ॥
स चरन्सर्वद्वीपेषु लोकेष्वेवतुसर्वशः । पितृलोकंययौधीमान्कदाचित्कौतुकान्वितः
तत्राऽपश्यन्महाघोराञ्छाम्यमाणांश्च कर्मभिः ॥ ५५ ॥
धावतो रुदमानांश्च पततः पतितानपि । तत्राऽपश्यच्चान्धकूपे पतितान्स्वान्पितृनधः
दूर्वाग्रलम्बिनो दीनान्दूर्वाच्छेदे हि शङ्कितान् ।
तदा प्राप्तः कोऽपि चाखुर्दूर्वामूलं तदाश्रयम् ॥ ५७ ॥
तेन भागत्रयं चात्तमेको भागोऽवशेषितः । तं दृष्ट्वा तेक्षीयमाणं मूलं दुःखेन कर्षिणः
अधो दृष्ट्वाचाऽन्धकूपं तटपातादिभीषणम् । दुरुत्तारं महाघोरं कर्मणाप्तं सुदुःखिताः
अग्रेचाऽपिदुरुत्तारमवलम्बविवर्जितम् । तांदृष्ट्वा विस्मितोभूत्वादयालुर्वाक्यमब्रवीत्
केयूयं पतिताह्यस्मिन्केन दुस्तरकर्मणा । कस्यगोत्रेसमुत्पन्नाःकथं वो मुक्तिरूर्जिता
एतद्यूयं वदध्वं मे शर्म वोऽथभविष्यति । इत्येवमुदितास्तेन पितरोऽथसुदुःखिताः
तमूचुः करुणां वाचं धर्मश्रुतिपुरःसराः ।

पितर ऊचुः

वयं श्रीवत्सगोत्रीया भुवि सन्तानवर्जिताः ॥ ६३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पिण्डश्राद्धविहीनाश्चतेनपच्यामहेवयम् । निःसन्तानोऽपिनोवंशोजातःपापैःकलौयुगे
नाऽस्माकं पिण्डदश्चाऽस्ति वंशे पापात्क्षयं गते ।
तेनाऽन्धकूपे पतनं निस्तन्तूनां दुरात्मनाम् ॥ ६५ ॥
एको हि वर्तते वंशे धर्मवर्णो महायशाः । स विरक्तश्चरन्नेकोनगार्हस्थ्यमुपेयिवान् ॥
तन्तुनातेनविभ्रामोदूर्वानालावलम्बिताः । निस्तन्तुत्वाच्चतन्मूलमाखुःखादतिप्रत्यहम्
एकस्यैवाऽवशिष्टत्वात्किञ्चिन्नालोऽवशेषितः ।
आखुना खाद्यमानश्च वर्तते सौम्य! पश्यताम् ॥ ६८ ॥
तस्य चाऽऽयुःक्षये तात शेषमाखुर्हरिष्यति ।
पश्चात्कूपे पतिष्यामोदुरुत्तारेऽन्धतामसे ॥ ६६ ॥
तस्मात्त्वश्चभुवंगत्वाधर्मवर्णंप्रबोधय । अस्मद्वाक्यैर्दयापात्रैर्गार्हस्थ्येविमुखंमुनिम्
पितरस्ते भृशाऽर्ता हि नरके पतितामया । अन्धकूपेदुरुत्तारे दृष्टा दूर्वावलम्बिताः ॥
सा दूर्वा वंशरूपा हि तन्मूलं सततंमुने । कालाख्योमूषकस्तस्यमूलंखादतिप्रत्यहम्
वंशनाशोऽनुक्रमत एकस्त्वं त्ववशेषितः । तेन मूलस्य दूर्वाया नष्टं भागत्रयं मुने! ॥
एको भागोऽवशिष्टोऽत्र यतस्त्वं वर्तसे भुवि ।
किञ्चित्खादति वै त्वाऽऽखुस्तव चाऽऽयुः क्षयक्रमात् ॥ ७४ ॥
परेते त्वयि चाऽस्माकंतवापिपतनम्भवेत् । कूप एवान्धतामिस्रे सन्तानेऽपिक्षयंगते
तस्माद्गार्हस्थ्यमासाद्य कुरु सन्ततिवर्धनम् ।
तेनाऽस्माकं तवाऽपि स्याद्गतिरूर्ध्वा न संशयः ॥ ७६ ॥
एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयाम्व्रजेत् । यजेतवाऽश्वमेधश्चनीलम्वावृषमुत्सृजेत्
यद्येकोऽपि च वैशाखे माघे वा कार्त्तिकेऽपि च ।
अस्मानुद्दिश्य वै स्नानं श्राद्धं दानं करिष्यति ॥ ७८ ॥
तेन चोर्ध्वगतिर्भूयान्नरकादुद्धृतिश्च नः । एकोवाविष्णुभक्तःस्यादेकोवाहरिवासरी
एको वा शृणुयाद्विष्णोः कथां पापविनाशिनीम् ।
तस्याऽतीतं कुलशतं भावि चाऽपि कुलं शतम् ॥ ८० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपि पापवृतं क्वाऽपि नरकं नैव पश्यति । किमन्यैर्बहुभिः पुत्रैर्दयाधर्मविवर्जितैः ॥
ये जातानार्चयंत्यद्धाविष्णुंनारायणंकुले । नाऽपुत्रस्यहिलोकोऽस्तिसर्वमेतज्जनाविदुः
तत्राऽपि च दयायुक्तं तत्सन्तानश्च दुर्लभम् । इतितंबोधयित्वातुवाक्यैरेतैश्च सूनृतैः

विरक्तस्योर्ध्वरेतस्य गार्हस्थ्ये त्वं मतिं कुरु ।

पितृणां वचनं श्रुत्वा धर्मवर्णोऽतिविस्मियः ॥ ८४ ॥

प्रणम्य प्राञ्जलिः प्राह रुदन्वै जातवेपथुः । नाम्नाऽहं धर्मवर्णश्च युष्मद्वंश्यो दुराग्रही
सत्रेश्रुत्वातुवचनंनारदस्यमहात्मनः । जिह्वादाढ्यं गुह्यदाढ्यं न कस्याऽपिकलौयुगे

दृष्ट्वा भुवि च पापिष्ठांस्ताञ्जनानपि शङ्कितः ।

भीतो दुर्जनसङ्गत्या चरन्द्वीपान्तरे वसन् ॥ ८७ ॥

पादास्त्रयो गताह्यस्यकलेःपादेऽन्त्यकेऽपि च । गताःसार्द्धत्रयोभागाइदानींजनका इमे
नाऽहं वेद्मि भवद्दुःखंवृथाजन्मगतं मम । यस्मिन्कुले त्वहं जातऋणंपित्रोर्नवैहृतम्
किं तेनजातमात्रेणभूभारेणाऽत्र शत्रुणा । यो जातोनार्चयेद्विष्णुंपितृन्देवानृषींस्तथा

युष्मदाज्ञां करिष्यामि मामाऽऽज्ञापयत क्षितौ ।

यथा न कलिबाधा स्यात्तत्र संसारतोऽपि वा ॥ ९१ ॥

कर्तव्यान्यपि कृत्यानि मया पुत्रेण भूतले! । इत्युक्तास्तेन वंश्येन धर्मवर्णेन धीमता
किञ्चिदाश्वस्तमनस इदमूचुर्महीपते । पुत्र पश्य दशामेतां पितृणान्ते महात्मनाम् ॥

सन्तत्यभावात्पततां दूर्वामात्रावलम्बिनाम् ।

त्वं गार्हस्थ्यमुपालभ्य सन्तत्यास्मान्समुद्धर ॥ ९४ ॥

ये च विष्णुकथारक्ता ये स्मरन्त्यनिशं हरिम् । येसदाचारनिरतानतान्वैबाधतेकलिः
शालिग्रामशिलायस्यगृहे तिष्ठति मानद । अथवा भारतं गेहे न तं वै बाधते कलिः॥
यश्च वैशाखनिरतो माघस्नानपरश्च यः । कार्त्तिके दीपदाता यो न तं वै बाधते कलिः

प्रत्यहं शृणुयाद्यस्तु कथां विष्णोर्महात्मनः ।

पापघ्नीं मोक्षदां दिव्यां न तं वै बाधते कलिः ॥ ९८ ॥

यद्गृहे वैश्वदेवश्च यद्गृहे तुलसी शुभा । यदङ्गणे शुभा गौश्च न तं वै बाधते कलिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मान्नो भीतिरस्तीह युगे पापात्मकेऽपि च ।
शीघ्रं गच्छ भुवं पुत्र! मासोऽयं माधवाह्वयः ॥ १०० ॥

सर्वेषामुपकाराय मेषसंस्थे दिवाकरे । त्रिंशच्च तिथयः पुण्या मेषसंस्थे दिवाकरे ॥
एकैकस्यां कृतं पुण्यं कोटिकोटिगुणंभवेत् । तत्राऽपिचैत्रवहुलोदर्शोनृणांचमुक्तिदः
प्रियश्च पितृदेवानां सद्यो मुक्तिविधायकः । ये वै पितृन्समुद्दिश्यश्राद्धंकुर्वन्तितद्दिने

सोदकुम्भं पिण्डदानं तदक्षय्यफलं लभेत् ।
ये च कुर्वन्ति वै श्राद्धममायांच मधौ सुत! ॥ १०४ ॥

तैः कृतं तु गयाक्षेत्रे श्राद्धं कोटिगुणं भवेत् । यदिश्राद्धंमधौदर्शेशाकेनाऽपिकरोतिच
कोटिश्राद्धं गयायां तु कृतं तेन न संशयः । कुम्भं च पानकैः पूर्णंकर्पूरागुरुवासितम्

यो न दद्यान्मधौ दर्शे स पितृघ्नो न संशयः ।
यो दद्याच्च मधौ दर्शे सपानीयं करीरकम् ॥ १०७ ॥
श्राद्धं च भक्तिसंयुक्तः कुरुते च कुलोद्धृतिम् ।
पितृणां च तथा लोके नदीचाऽमृतवर्षिणी ॥ १०८ ॥

कुम्भदानात्प्रसरति श्राद्धदानादिदायिनाम् । अन्नसूपघृतापूपलेह्य पायसकर्दमान् ॥

तस्माज्झटिति त्वं गच्छ यदा वाऽमा भविष्यति ।
कुरु श्राद्धं पिण्डदानं सोदकुम्भं महामते! ॥ ११० ॥

सर्वेषामुपकाराय गार्हस्थ्यं च समाश्रय । धर्मार्थकामैः सन्तुष्टः प्राप्यसन्तानमुत्तमम्
पुनश्च मुनिवृत्तिस्त्वं सुखं द्वीपे सुसञ्चर । इत्यादिष्टःपितृभिश्चतूर्णं भूमिं ययौमुनिः
चैत्रे मासे मेषसंस्थेपुण्येमासिदिवाकरे । प्रातःस्नात्वाचसन्तर्प्यपितृन्देवानृषींस्तथा

सोदकुम्भं तथा श्राद्धं कृत्वा पापविनाशनम् ।
तेन दत्त्वा पितृणाञ्च मुक्तिमावृत्तिवर्जिताम् ॥ ११४ ॥
स्वयं विवाहमकरोत्सन्ततिं प्राप्य वैसतीम् ।
लोके प्रख्यापयामास तां तिथिंपापनाशनीम् ॥ ११५ ॥
स्वयं पुनर्मुदा भक्त्या गन्धमादनमाययौ ॥ ११६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मात्पुण्यतमाचैषामधोर्दर्शाद्धयातिथिः। नानयासद्वशीलोकेतिथिर्दृ ष्टाश्रुताऽपिवा

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे कलिधर्मनिरूपणेपितृमुक्तिर्नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२॥

त्रयोविंशोऽध्यायः

अक्षय्यतृतीयामाहात्म्यवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम्।
अक्षय्यायास्तृतीयायाः सिते पक्षे च माधवं ॥ १ ॥

ये कुर्वन्ति चतस्यांवैप्रातःस्नानंभगोदये। तेसर्वेपापनिर्मुक्तायान्तिविष्णोः परंपदम्
देवान्पितॄन्मुनीन्यस्तु कुर्यादुद्दश्य तर्पणम्। तेनाऽधीतं च तेनेष्टंतेनश्राद्धशतंकृतम्
मधुसूदनमभ्यर्च्य कथां शृण्वन्तियेनराः। अक्षय्यायांतृतीयायांतेनरामुक्तिभागिनः
ये दानं यत्र कुर्वन्ति मधुद्विट्प्रीतये शुभम्। तदक्षय्यं फलत्येव मधुशासनशासनात्
देवर्षिपितृदैवत्या तिथिरेषा महाशुभा। त्रयाणां तृप्तिदात्रीच कृते धर्मे सनातने ॥

प्रख्यातिश्च तिथेरस्याः केन चाऽस्ति तदप्यहम्।
वक्ष्यामि नृपशार्दूल! सावधानमनाः शृणु ॥ ७ ॥

पुरा पुरन्दरस्याऽऽसीद्युद्धश्च बलिना सह। देवानाञ्चैव दैत्यानां द्वन्द्वयुद्धमभूत्ततः॥
सनिर्जित्यबलिंदैत्यंपातालतलवासिनम्। पुनर्भुवंसमासाद्यचोतथ्यस्याऽऽश्रमंययौ

तत्राऽपश्यच्च तत्पत्नीं गुर्विणींमन्दगामिनीम्।
चलच्छ्रोणितटावद्धकाञ्चीदाम्ना सुमण्डिताम् ॥ १० ॥
क्वणत्कङ्कणनिर्घोषजितमत्तालिकोकिलाम्।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वल्गुचित्राम्बरां रामां मञ्जुवाचं शुचिस्मिताम् ॥ ११ ॥
लसत्कुम्भस्थलाभ्यां च कुचाभ्यामुपशोभिताम् ।
हसत्पद्ममुखां दिव्यां नीलोत्पलसुलोचनाम् ॥ १२ ॥
केतक्युदरपाण्डुभ्यां गण्डाभ्याञ्च मनोरमाम् ।
श्रमोच्छ्वसन्तीं दीनाक्षीं पर्णशालामुखे स्थिताम् ॥ १३॥
स्वपतीं शयने क्वाऽपि तां दृष्ट्वा मोहमागतः ।
बलात्कारेण बुभुजे गुर्विणीं पाकशासनः ॥ १४ ॥

गर्भस्थस्तु तदापिण्डः स्वस्यपातविशङ्कया । छादयामासवैयोनिं द्वारेपादेनदुःखितः ततश्चस्कन्दवीर्यं तद्भूमावेव बलिद्विषः । गर्भस्थायचुकोपासौभगवान्पाकशासनः तं शशाप चगर्भस्थंरुषाताम्रान्तलोचनः । जात्यन्धोभव दुर्बुद्धे माऽवमंस्थायतःपदा प्रच्छाद्य योनिद्वारञ्च ततो दीर्घतपाह्वयः । पदा प्रस्कन्दिताद्वीर्याज्जालतः समजायत पश्चादिन्द्रो ययौशीघ्रमृषेःशापविशङ्कितः । पलायन्तंहरिं दृष्ट्वा जहसुर्वटवोऽखिलाः

ततस्तु व्रीडितो भूत्वा ययौ मेरोर्गुहां शुभाम् ।
तत्र लीनश्चचाराऽसौ दुस्तरम्वै तपो महत् ॥ २० ॥

मेरौ विलीय वसति देवेन्द्रे लज्जयाऽन्विते । गूढैर्विज्ञायतांवार्तां दैतेया बलिपूर्वकाः सुरानाक्रम्य बुभुजुर्बलीन्द्रश्चामरावतीम् । दिक्पालानांविभूतीश्चशम्बराद्याबलीयसः बलाद्बुभुजिरे हीननाथे राष्ट्रे दिवौकसाम् । रक्षितारमजानन्तोदेवाश्चाग्निपुरोगमाः पप्रच्छुर्धिषणं देवं देवाचार्यमकल्मषम् । पप्रच्छुरिन्द्रवृत्तान्तं क्वस्वित्तिष्ठतिनः प्रभुः

दैत्याक्रान्तमिदं राष्ट्रं हीननाथं दिवौकसाम् ।
कुतो नाऽऽयाति देवोऽसौ भूयान्कालो गतो विभो! ॥ २५ ॥

तं यामो यत्र धिषण! प्रार्थयामश्च तं विभुम् । इति पृष्टस्तदा देवैर्धिषणस्तानुवाचह

रसातले बलिं जित्वा चोतथ्यस्याऽऽश्रमं ययौ ।
भुक्त्वा पत्नीं च दार्ढ्येन तच्छिष्यैरेव निन्दितः ॥ २७ ॥

व्रीडितस्तु दिवंयातुंगुहांमेरोर्विवेशह । तत्रैवाऽऽस्तेशचीयुक्तःस्वकृतंचिन्तयविभु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवा अग्निपुरोगमाः । गुहां मेरोर्ययुःशीघ्रंदृष्ट्वाप्रार्थयितुंविभुम्
तत्र दृष्ट्वा गुहालीनं देवेन्द्रं पाकशासनम् । तुष्टुवुर्विविधैःस्तोत्रैस्तद्वीर्यैर्लोकविश्रुतैः
इन्द्र! तुभ्यं नमस्तेऽस्तु सर्वदेवाऽधिपाय ते । वयंदैत्यैरर्दिताश्चत्वयाहीनाभृशार्दिताः
स्थानभ्रष्टाश्चरामोऽङ्ग नानादेशेषु दुःखिताः । तस्मादागत्य देवेन्द्रजहिशत्रूनरिन्दम!
इति स्तुतस्तदा देवैर्निश्चक्राम गुहामुखात् । लज्जयाऽवनतोभूत्वापश्यन्भूमिञ्चचक्षुषा
न किञ्चिदपि चोवाच दुःखाद्गद्गदभाषणः । तऽज्ज्ञात्वा धिषणःप्राहतंसुरेन्द्रंभयानकम्
मा शङ्का ते सुरपते! कर्माधीनमिदं जगत् । मानामानौसुखंदुःखंलाभालाभौजयाजयौ
पूर्वकर्मानुरोधेन भवन्त्येते न संशयः । जीवःकर्मानुगो दुःखं दिष्टं दैवेन कालतः ॥

प्राज्ञाः प्रायो न शोचन्ति न प्रहृष्यन्ति वै सुखात् ।
तस्मात्प्रारब्धतः प्राप्तं दुःखं चेदं तव प्रभो! ॥ ३७ ॥

तत्प्राप्य मघवन्दुःखं नैव शोचितुमर्हसि । इत्युक्तो गुरुणाचाऽऽहमघवानमराधिपान्

इन्द्र उवाच

परस्त्रीसङ्गदोषेण बलं वीर्यं यशोऽमलम् । मन्त्रशक्तिःशास्त्रशक्तिर्विद्याशक्तिश्चमानद
अभवन्नष्टवीर्यं मे तूष्णीं तेन वसाम्यहम् । पाकशासनवाक्यं तुश्रुत्वास्वाचार्यसंयुताः
मन्त्रयामासुरेकान्ते पुनस्तस्य बलाप्तये । तदा गुरुश्च तान्प्राह करुणश्च विदुत्तमः

बृहस्पतिरुवाच

मासो वैशाखनामाऽयं प्रियो वै मधुघातिनः ।
सर्वाश्च तिथयः पुण्या मासेऽस्मिन्माधवप्रिये ॥ ४२ ॥

तत्राऽपि च सितेपक्षेमासेऽस्मिन्नक्षयाह्वया । यास्तस्यांस्नानदादिश्रद्धयाचकरोतिवै
तस्यपापसहस्राणि नश्यन्त्येव न संशयः । अनवद्यं तथैश्वर्यं बलं धैर्यं भवन्ति च ॥
तस्मात्तस्यांतृतीयायांहरिणाबलविद्विषा।स्नानदानादिसद्धर्मान्कारयामोहिताऽऽप्तये
भविष्यति चसा शक्तिर्विद्याया मन्त्रशास्त्रयोः । बलं धैर्यं यशश्चैवयथापूर्वंभविष्यति
इत्येवन्तु विचार्याऽथ गुरुर्देवैः समाहितः । इन्द्रेणकारयामासधर्मानेतान्हरिप्रियान्
अक्षय्ययांतृतीयायांभुक्तिमुक्तिफलप्रदान् । तेनपूर्ववदेवाऽऽसीद्बलंधैर्यादिकंविभोः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परस्त्रीसङ्गदोषोऽपि सद्य एव व्यलीयत। पश्चाद्धताशुभः शक्रोराहोर्मुक्त इवोडुपः॥
देवतानां तथा मध्ये शुशुभे च हरिर्यथा। पश्चाद्देवैःसमायुक्तोविनिर्जित्यतथाऽसुरान्

तृतीयायाश्च माहात्म्याद्भाग्ययुक्तोऽमरावतीम्।
विवेश विभवैः सार्द्धं शङ्खतूर्यादिनिःस्वनैः॥ ५१॥

अनुज्ञाताऽश्च शक्रेण स्वधामानि ययुः सुराः। ततस्ते यज्ञभागांश्चलेभिरेचयथापुरा
पिण्डभागांश्च पितरोयथापूर्वं प्रपेदिरे। स्वाध्याये मुनयस्तुष्टा दैत्यानाञ्च पराजयः

तदाप्रभृति लोकेऽस्मिंस्तृतीया चाऽक्षयाऽऽह्वया।
प्रख्याता सर्वलोकेषु देवर्षिपितृतुष्टिदा॥ ५४॥

तस्मात्पुण्यतमावैषासर्वकर्मनिकृन्तनी। भुक्तिमुक्तिप्रदानृणांतृतीयाचाऽक्षयाऽऽह्वया

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादेऽक्षय्यतृतीयायाः श्रेष्ठत्वकथनं-नाम त्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

चतुर्विंशोऽध्यायः

शुनीमोक्षप्राप्तिवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

तिथिष्वेतासु पुण्यासुद्वादशीसितपक्षिणी। वैशाखमासेराजेन्द्रसर्वाघौघविनाशिनी

किं दानैः किंःतपोभिश्च किमुपोष्यैर्व्रतैश्च किम्।
किमिष्टैश्चैव पूतैश्च द्वादशी यैर्न सेविता॥ २॥

गङ्गायामुपरागे तु यो दद्याद्गोसहस्रकम्। तत्फलं समवाप्नोतिप्रातःस्नात्वाहरेर्दिने॥
यद्दत्तंचार्हतेचाऽन्नंद्वादश्याञ्चसितेशुभे। सिक्थेसिक्थेभवेत्तस्यकोटिब्राह्मणभोजनम्
यो दद्यात्तिलपात्रन्तुद्वादश्यांमधुसंयुतम्। निर्धूताऽखिलबन्धस्तुविष्णुलोकेमहीयते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकादश्यां सिते पक्षे कुर्य्याज्जागरणंहरेः । स जीवन्नेव मुक्तःस्यात्तुष्टास्युःसर्वदेवताः

कोटीन्दुसूर्यग्रहणे तीर्थान्युत्प्लाव्य यत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति प्रातः स्नात्वा हरेर्दिने ॥ ७ ॥
तुलस्याः कोमलैः पत्रैर्द्वादश्यां विष्णुमर्च्चयेत् ।
समस्तकुलमुद्धृत्य विष्णुलोकाऽधिपो भवेत् ॥ ८ ॥
(क्षेपकः—तुलसीपत्रपुष्पैश्च वैशाखेऽश्वत्थपूजनम् ।
पुष्पाद्यभावे धान्यैर्वा पूजयेन्मधुसूदनम् ॥ १ ॥)

यमंपितॄन्गुरून्देवान्विष्णुमुद्दिश्यमानवः । माधवे शुक्लद्वादश्यांसोदकुम्भंसदक्षिणम्
दध्यन्नञ्चैव यो दद्यात्तस्य पुण्यफलं श्रृणु । प्रयागे प्रत्यहञ्चैव कुर्याद्यःकोटिभोजनम्
यावत्सम्वत्सरंपुण्यं षड्रसान्नैर्मनोरमैः । तत्फलं समवाप्नोति मधुशासनशासनात्
शालिग्रामशिलादानं यः कुर्याद्द्वादशी दिने । वैशाखे शुक्लपक्षे तु सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥

द्वादश्यां पयसा यस्तु स्नापयेन्मधुसूदनम् ।
राजसूयाऽश्वमेधाभ्यां यत्फलं परिजायते ॥ १३ ॥

त्रयोदश्यां यजेद्विष्णुं पयोदधिविमिश्रितैः । शर्करामधुभिर्द्रव्यैर्मधुसूदनप्रीतये ॥१४
तत्फलंसमवाप्नोतिगङ्गायांनाऽत्रसंशयः। पञ्चामृतैश्चयोविष्णुंभक्त्यासंस्नापयेद्विभुम्
स सर्वकुलमुद्धृत्य विष्णुलोके महीयते । यो दद्यात्पानकंह्यस्यां सायाह्नेप्रीतयेहरेः
जीर्णपापं जहात्याशुजीर्णां त्वचमिवोरगः । सायाह्नेचैव यो दद्याद्उर्वारुकरसायनम्
भवेन्मुक्तः कर्मबन्धाद्उर्वारुकरसायनात् । इक्षुदण्डं चूतफलं दद्याद्द्राक्षाफलानि च ॥

न विच्छित्तिः सन्ततेः स्यात्तस्य वै शतपूरुषम् ।
यो दद्याद्गन्धलेपं तु सायाह्ने द्वादशीदिने ॥ १६ ॥

बाह्योपघातैः सकलैर्मुच्यते नाऽत्र संशयः । यत्किञ्चित्कुरुतेपुण्यं द्वादश्यांराजसत्तम
माधवे तु सिते पक्षे तदक्षय्यफलंलभेत् । प्रख्यातिमस्या वक्ष्यामियेनजातेतिभूमिप
सर्वेषां सर्वपापघ्नीं सर्वमङ्गलदायिनीम् । पुराकाश्मीरदेशे तु द्विजोदेवव्रताह्वयः॥२२
तस्याऽऽसीन्मालिनीनामतनयाचारुरूपिणी । ददौतांसत्यशीलायविप्रवर्यायधीमते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तामुद्वाह्य ययौ धीमान्स्वदेशं यवनाऽऽह्वयम् ।
रूपयौवनसम्पन्ना तस्य नैव प्रियाऽभवत् ॥ २४ ॥
सदा विद्वेषसंयुक्तस्तस्यां तिष्ठति निष्ठुरः ।
नाऽन्यस्य कस्यचिद्द्वेष्टि तां विना नृपते! पतिः ॥ २५ ॥
तस्मिन्सा क्रोधसंयुक्ता वशीकरणलम्पटा ।
अपृच्छत्प्रमदा राजन्यास्त्यक्ताः पतिभिः पुरा ॥ २६ ॥
ताभिरुक्ता तु सा भूप! वश्यो भर्त्ता भविष्यति ।
अस्माकं प्रत्ययो जातो भर्तृत्यागावमानिनाम् ॥ २७ ॥

प्रयुज्यभेषजंवश्यंनीताहि पतयः पुराः । योगिनींत्वं तु गच्छाऽद्यदास्यतेभेषजंशुभम्
नविकल्पस्त्वयाकार्योभवितादासवत्पतिः । योगिनीमन्दिरेगत्वातासांवाक्येनभूपते
प्रसादमतुलंतस्या लेभेदुश्चारिणी सती । शतस्तम्भसमायुक्तांकुटीं भेजेत्वरान्विता

सुविस्तृतां सुवर्चस्कां तथैवाऽयातयामिकाम् ।
प्रावृता दीर्घवस्त्रेण सन्निधिं तेन योगिनी ॥ ३१ ॥

दीर्घाभिश्च सटाभिस्तु प्रावृतादीप्तिसंयुता । परिचारसमोपेता वीक्षमाणा शनैःशनैः
अक्षसूत्रकरा सा तु जपन्ती प्रार्थिता तया । ददौवश्यकरंमंत्रं क्षोभकं प्रत्ययात्मकम्

ततः सा प्रणता भूत्वा दद्याद्द्रव्याङ्गुलीयकम् ।
वज्रमाणिक्यसंयुक्तमतिरक्तप्रभान्वितम् ॥ ३४ ॥

मृदुकाञ्चनसंयुक्तं भानुरश्मिसमद्युति । ततो दृष्ट्वा तु सन्तुष्टा पादस्थंचाङ्गुलीयकम्
हृदयश्च तया ज्ञातं तत्पतेरवमानजम् । तदोक्ता हि तया भूप! तापस्या हितयुक्तया ॥
चूर्णो रक्षान्वितोह्येष सर्वभूतवशङ्करः । चूर्णं भर्तरि संयुज्य रक्षां ग्रीवाश्रयां कुरु

भविष्यति पतिर्वश्यो नाऽन्यां यास्यति सुन्दरीम् ।
नाऽप्रियं वदति क्वापि दुश्चारिण्यास्तवाऽपि च ॥ ३८ ॥

चूर्णरक्षां गृहीत्वा सा प्राप भर्तृगृहं पुनः । प्रदोषे पयसायुक्तश्चूर्णोभर्तरियोजितः
ग्रीवायां हि कृता रक्षा न विचारः कृतस्तया । तदा सपीतचूर्णस्तुभर्त्तानृपवरोत्तम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तच्चूर्णात्क्षयरोगोऽभूत्पतिः क्षीणोदिनेदिने । गुह्येतुकृमयोजाताघोरादुष्टव्रणोद्भवाः
दिनैःकतिपयैराजन्पत्युर्नैवव्यवस्थितिः । उवासस्वेच्छयासाऽपिपुंश्चलीदुष्टचारिणी
हततेजास्ततो भर्ता तामुवाचाऽऽकुलेन्द्रियः ।
क्रन्दमानो दिवारात्रौ दासोऽस्मि तव शोभने! ॥ ४३ ॥
त्राहि मां शरणं प्राप्तंनेच्छेऽहमपरांस्त्रियम् । तत्तस्यविदितंज्ञात्वाभीतासामेदिनीपते
अलङ्कारकृते पत्युर्जीवनेच्छुर्न वै हिता । योगिनीं च ययौ शीघ्रं तस्यैसर्वंन्यवेदयत्
तया च भेषजं दत्तं द्वितीयंदाहशान्तये । दत्तेचभेषजेतस्मिन्स्वस्थोऽभूत्तत्क्षणात्पतिः
तिष्ठत्युपपतिर्गेहे गृहकृत्याऽपदेशतः । सर्व वर्णसमुद्भूता जारास्तिष्ठन्ति वै गृहे ॥
न किञ्चिद्वचने शक्तिर्भर्तुर्जाता कथञ्चन । ततस्तेनैव दोषेण सर्वाङ्गेषु च जज्ञिरे ॥
कृमयश्चास्थिभेत्तारः कालान्तकयमोपमाः ।
तैर्नासाजिह्वयोश्चाऽऽसीच्छेदः कर्णद्वयस्य च ॥ ४६ ॥
स्तनयोश्चाङ्गुलीनाञ्च पङ्गुत्वंचाऽपि चाऽऽगतम् । तेनपञ्चत्वमापन्नागतानरकयातनाः
ताम्रभाण्डे च सा दग्धाऽयुतानिदश पञ्च च । श्वानयोनिषुसञ्जाता शतवारं पुनःपुनः
छिन्ननासा छिन्नकर्णा कृमिमूर्द्धा निरन्तरम् । छिन्नपुच्छाभग्नपादा ताडिताचगृहेगृहे
पश्चात्सौवीरदेशेषु पद्मबन्धोर्द्विजस्य च । दास्या गृहेशुनी जाता वहुदुःखसमाकुला
छिन्नकर्णा छिन्ननासा छिन्नपुच्छाऽङ्घ्रिरातुरा ।
कृमिपूर्णशिरा नित्यं कृमियोनिश्च तिष्ठति ॥ ५४ ॥
एवं त्रिंशद्गतावर्षा अस्मिञ्जन्मनि भूमिप । दैवात्कर्मविपाकेन वैशाखे मेषगे रवौ ॥
शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां पद्मबन्धोस्तनूद्भवः । नद्यांस्नात्वा शुचिर्भूत्वा सार्द्रवस्त्रोगृहंययौ
तुलसीवेदिकाम्प्राप्य पादाववनिजे निजौ । वेदिकायामधोदेशे साशुनीस्वापमागता
प्राक्सूर्योदयवेलायां पादोदकपरिप्लुता ।
सद्यो ध्वस्ताऽशुभा जाता जातिस्मृतिरभूत्क्षणात् ॥ ५८ ॥
स्मृत्वा कर्म कृतं पूर्वं सा शुनी तापसंतदा । चुक्रोशकरुणादीनामुने त्राहीतिवै पुनः
स्वकर्मच मुनीन्द्राय स्मृत्वाचख्यौभयाऽऽकुला ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भर्तुर्विप्रप्रयोगं तु स्वस्य दुश्चरितं तथा ॥ ६० ॥

याऽन्यापियुवती ब्रह्मन्भर्तुर्वश्यंसमाचरेत् । वृथाधर्मा दुराचारा पच्यते ताम्रभाजने
भर्तानाथोगुरुर्भर्ताभर्तादैवतमुत्तमम् । विक्रियांकृत्यसाध्वीसा कथंसुखमवाप्नुयात्
तिर्यग्योनिशतं याति कृमिकोटिशतानिव । तस्माद्भूसुरकर्तव्यंस्त्रीभिर्भर्तुर्वचःसदा

साऽहं पश्ये पुनर्योनिं कुत्सितां यातनान्विताम् ।

यदि नोद्धरसे ब्रह्मन्नद्यत्वद्दृष्टिसम्मुखाम् ॥ ६४ ॥

तस्मादुद्धर मां ब्रह्मन्दुष्कृतां पापचारिणीम् । सुकृतस्य प्रदानेन वैशाखे शुक्लपक्षके

या कृता तु त्वया ब्रह्मन्द्वादशी पुण्यवर्द्धिनी ।

तस्यां त्वया कृतं पुण्यं स्नानदानान्नभोजनैः ॥ ६६ ॥

दुश्चारिण्याअपिब्रह्मंस्तेनमुक्तिर्भविष्यति । यस्यांतुभूसुरःस्नातःस्वगृहेमनुजःकिल
सर्वतीर्थफलावाप्तिं लभते नाऽत्र संशयः । तप्तं दत्तं हुतं यत्र कृतं देवार्चनादि यत् ॥
तदक्षय्यफलं ज्ञेयं यत्कृतं द्वादशीदिने । एवं विधफलं यत्स्यात्तद्देहि सकलं मम ॥

द्वादश्यामुपवासेन त्रयोदश्यां तु पारणात् ।

यत्फलं स्यात्तदद्यद्वा तेन मुक्तिर्भविष्यति ॥ ७० ॥

दयां कुरु महाभाग! दीनायां दीनवत्सल । दीननाथो जगन्नाथो युष्मन्नाथोजनार्दनः
तदीयास्तादृशाएवयथाराजातथाप्रजाः । वैवस्वतपदध्वंसिन्परित्राहिसुदुः खिताम्
त्वद्द्वारवासिनीं दीनांशुनींमांदीनवत्सल । ब्रह्महत्यासहस्रम्वागोहत्यानांसहस्रकम्
अगम्यानाञ्च कोटीश्च दहत्येव शुभातिथिः । तस्यां कृतं महापुण्यं मह्यंदत्त्वामहामुने
मामुद्धर समुद्विग्नां दीनां नाथ समुद्धर । अन्तेतुभ्यं द्विजेन्द्राय नमउक्तिं वदाम्यहम्
इतितस्यावचःश्रुत्वाशुनीमाहमुनेःसुतः । स्वकृतंजन्तवोऽश्नन्तिसुखदुः खात्मकंशुनि

तस्मात्किमु त्वया कार्यं क्षुद्रया पापशीलया ।

यया भर्ता वशं नीतो रक्षाचूर्णादिभिर्द्विजः ॥ ७७ ॥

साधुभ्यो यत्कृतं पापं स्वस्य दुःखकरम्भवेत् ।

साधुभ्यो यत्कृतं पुण्यं स्वस्य दुःखहरम्भवेत् ॥ ७८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उभयं भ्रंशतामेति पापेभ्यो यत्कृतम्भवेत् । शर्करामिश्रितं क्षीरं काद्रवेयनिवेदितम्
विषवृद्धिकरं दृष्टमेवं पापकरं भवेत् । वदत्येवं मुनिसुते शुनी दुःखैकरूपिणी ॥ ८०

पुनश्चुक्रोशोर्ध्वस्वरं तत्पित्रे बहुभाषिणी ।
पद्मबन्धो! परित्राहि शुनींत्वद्द्वारवासिनीम् ॥ ८१ ॥
त्वदुच्छिष्टाशिनीं नित्यं त्वं पाहीति पुनः पुनः ।
स्वपोष्या ये हि वर्तन्ते गृहस्थस्य महात्मनः ॥ ८२ ॥

तेषामुद्धरणंकार्यमिति वेदविदां मतम् । चण्डाला वायसाश्चैव सारमेयाश्च नित्यशः
गृहस्थानां दयापात्रं प्रत्यहम्बलिभोजिनः । अशक्तं नोद्धरेत्पोष्यं रोगाद्युपहतं यदि

सोऽधः पतेन्नः सन्देह इतिवेदविदांमतम् ॥ ८५ ॥
कर्तारमेकं जगतां हिकर्ता कृत्वात्मना पाति समस्तजन्तून् ।
दारादिरूपव्यपदेशतो हरिस्तस्मात्तदाज्ञा खलु पोष्यरक्षा ॥ ८६ ॥
स्वपोष्यरक्षां परिहृत्यजन्तुर्दैवेन क्लृप्त्या यदि वर्ततेऽन्यधीः ।
स देवद्रोग्धा सकलस्य हन्ता कीनाशलोकाननु सम्प्रयाति ॥ ८७ ॥

कर्तव्यत्वाद्दयालुत्वादेतामुद्धर दुर्मतिम् । इति तस्या वचःश्रुत्वादुःखार्तायागृहेसुतः

निश्चक्रामगृहात्तूर्णं पद्मबन्धुर्दयानिधिः ॥ ८८ ॥

किमेतदिति तां प्राह पुत्रं सर्वं न्यवेदयत् । स तुपुत्रवचः श्रुत्वातमेवं प्राहविस्मितः

पद्मबन्धुरुवाच

ममात्मजकथं वाक्यमीदृशं व्याहृतं त्वया । न साधूनामिदं वाक्यं भवतीह वरानन
आत्मसौख्यकराः पापा भवन्ति परिभाविताः । पश्यपुत्र जनाः सर्वेपरोपकरणायवै
शशीसूर्योऽथ पवनो रजनी हुतभुग्जलम् । चन्दनं पादपाः सन्तःपरोपकरणेस्थिताः
अस्थिदानंकृतं पुत्र कृपयाहिदधीचिना । देवानामुपकाराय ज्ञात्वा दैत्यान्महाबलान्
कपोतार्थे स्वमांसानि शिबिनाभूभुजा पुरा । प्रदत्तानि महाभागश्येनायक्षुधितानिवै
जीमूतवाहनोराजा पुराऽऽसीत्क्षितिमण्डले । तेनाऽपि जीवितंदत्तंगरुडायमहात्मने
तस्माद्दयालुना भाव्यं भूसुरेण विपश्चिता । शुद्धे वर्षति देवस्तु किमशुद्धे न वर्षति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किन्न दीपयते चन्द्रश्चण्डालानां गृहे सदा। तस्मादहं शुनीमेतां याचन्तीञ्चपुनःपुनः

उद्धरिष्ये निजैः पुण्यैः पङ्कमग्नाञ्च गां यथा।

इति पुत्रं निराकृत्य प्रतिजज्ञे महामतिः॥ ९८॥

दत्तं दत्तं महापुण्यं द्वादशीदिनसम्भवम्। शुनि!गच्छ हरेर्धाम निर्धूताऽखिलकल्मषा

तद्वाक्यात्सहसा भूप! दिव्याऽऽभरणभूषिता। विमुच्य देहंजीर्णंतुदिव्यरूपधराशुभा

शताऽऽदित्यप्रभा जाता सावित्रीप्रतिमा यथा।

जगामाऽऽमन्त्र्य तं विप्रं द्योयन्ती दिशो दश॥ १०१॥

भुक्त्वा दिवि महाभोगान्पश्चाज्जातामहीतले। नरनारायणाद्देवादुर्वशीनाम नामतः॥

वैशाखशुद्धद्वादश्याः प्रभावेण वराङ्गना। देवानाञ्चप्रियाजाता अप्सरस्त्वंचसाययौ

यद्योगिगम्यं हुतभुक्प्रकाशं वरं वरेण्यं परमार्थरूपम्।

यत्प्राप्य सन्तोऽपि हि यान्ति मोहं तत्प्राप रूपञ्च शुनी हि देवी॥ १०४॥

पश्चात्स पद्मबन्धुर्हि तां तिथिं पुण्यवर्द्धिनीम्।

लोकेटीं ख्यापयामास मधुद्विट्प्राणवल्लभाम्॥ १०५॥

कोटीन्दुसूर्यग्रहणाधिका सा समस्तरूपाधिकपुण्यरूपा।

यज्ञैः समस्तैरतिरिच्यमाना द्विजेन ख्याता भुवनत्रये च॥ १०६॥

इहि श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे

वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे शुनीमोक्षप्राप्तिर्नाम

चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उभयं भ्रंशतामेति पापेभ्यो यत्कृतम्भवेत् । शर्करामिश्रितं क्षीरं काद्रवेयनिवेदितम्
विषवृद्धिकरं दृष्टमेवं पापकरं भवेत् । वदत्येवं मुनिसुते शुनी दुःखैकरूपिणी ॥ ८०

पुनश्चुक्रोशोर्ध्वस्वरं तत्पित्रे बहुभाषिणी ।
पद्मबन्धो! परित्राहि शुनीं त्वद्द्वारवासिनीम् ॥ ८१ ॥
त्वदुच्छिष्टाशिनीं नित्यं त्वं पाहीति पुनः पुनः ।
स्वपोष्या ये हि वर्तन्ते गृहस्थस्य महात्मनः ॥ ८२ ॥

तेषामुद्धरणंकार्यमिति वेदविदां मतम् । चण्डाला वायसाश्चैव सारमेयाश्च नित्यशः
गृहस्थानां दयापात्रं प्रत्यहम्बलिभोजिनः । अशक्तं नोद्धरेत्पोष्यं रोगाद्युपहतं यदि

सोऽधः पतेन्नः सन्देह इतिवेदविदांमतम् ॥ ८५ ॥
कर्तारमेकं जगतां हिकर्ता कृत्वात्मना पाति समस्तजन्तून् ।
दारादिरूपव्यपदेशतो हरिस्तस्मात्तदाज्ञा खलु पोष्यरक्षा ॥ ८६ ॥
स्वपोष्यरक्षां परिहृत्यजन्तुर्दैवेन क्लृप्त्या यदि वर्ततेऽन्यधीः ।
स देवद्रोग्धा सकलस्य हन्ता कीनाशलोकाननु सम्प्रयाति ॥ ८७ ॥

कर्तव्यत्वाद्दयालुत्वादेतामुद्धर दुर्मतिम् । इति तस्या वचःश्रुत्वादुःखार्तायागृहेसुतः

निश्चक्रामगृहात्तूर्णं पद्मबन्धुर्दयानिधिः ॥ ८८ ॥

किमेतदिति तां प्राह पुत्रं सर्वं न्यवेदयत् । स तुपुत्रवचः श्रुत्वातमेवं प्राहविस्मितः

पद्मबन्धुरुवाच

ममात्मजकथं वाक्यमीदृशं व्याहृतं त्वया । न साधूनामिदं वाक्यं भवतीह वरानन
आत्मसौख्यकराः पापा भवन्ति परिभाविताः । पश्यपुत्र जनाः सर्वेपरोपकरणायवै
शशीसूर्योऽथ पवनो रजनी हुतभुग्जलम् । चन्दनं पादपाः सन्तःपरोपकरणेस्थिताः
अस्थिदानंकृतं पुत्र कृपयाहिदधीचिना । देवानामुपकाराय ज्ञात्वा दैत्यान्महाबलान्
कपोतार्थे स्वमांसानि शिबिनाभूभुजा पुरा । प्रदत्तानि महाभागश्येनायक्षुधितानिवै
जीमूतवाहनोराजा पुराऽऽसीत्क्षितिमण्डले । तेनाऽपि जीवितंदत्तंगरुडायमहात्मने
तस्माद्दयालुना भाव्यं भूसुरेण विपश्चिता । शुद्धे वर्षति देवस्तु किमशुद्धे न वर्षति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किन्न दीपयते चन्द्रश्चण्डालानां गृहे सदा । तस्मादहं शुनीमेतां याचन्तींश्चपुनःपुनः
उद्धरिष्ये निजैः पुण्यैः पङ्कमग्नाञ्च गां यथा ।
इति पुत्रं निराकृत्य प्रतिजज्ञे महामतिः ॥ ९८ ॥
दत्तं दत्तं महापुण्यं द्वादशीदिनसम्भवम् । शुनि!गच्छ हरेर्धाम निर्धूताऽखिलकल्मषा
तद्वाक्यात्सहसा भूप! दिव्याऽऽभरणभूषिता । विमुच्य देहंजीर्णंतुदिव्यरूपधराशुभा
शताऽऽदित्यप्रभा जाता सावित्रीप्रतिमा यथा ।
जगामाऽऽमन्त्र्य तं विप्रं द्योयन्ती दिशो दश ॥ १०१ ॥
भुक्त्वा दिवि महाभोगान्पश्चाज्जातामहीतले । नरनारायणाद्देवादुर्वशीनाम नामतः ॥
वैशाखशुद्धद्वादश्याः प्रभावेण वराङ्गना । देवानाञ्चप्रियाजाता अप्सरस्त्वंचसाययौ
यद्योगिगम्यं हुतभुक्प्रकाशं वरं वरेण्यं परमार्थरूपम् ।
यत्प्राप्य सन्तोऽपि हि यान्ति मोहं तत्प्राप रूपञ्च शुनी हि देवी ॥ १०४॥
पश्चात्स पद्मबन्धुर्हि तां तिथिं पुण्यवर्द्धिनीम् ।
लोवेटीं ख्यापयामास मधुद्विट्प्राणवल्लभाम् ॥ १०५ ॥
कोटीन्दुसूर्यग्रहणाधिका सा समस्तरूपाधिकपुण्यरूपा ।
यज्ञैः समस्तैरतिरिच्यमाना द्विजेन ख्याता भुवनत्रये च ॥ १०६ ॥

इहि श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादे शुनीमोक्षप्राप्तिर्नाम
चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चविंशोऽध्यायः

वैशाखमाससमाहात्म्योपसंहारवर्णनम्

श्रुतदेव उवाच

यास्तिस्रस्तिथयः पुण्या अन्तिमाः शुक्लपक्षके ।
वैशाखमासि राजेन्द्र! पूर्णिमान्ताः शुभावहाः ॥ १ ॥
अन्त्याः पुष्करिणीसञ्ज्ञाः सर्वपापक्षयावहाः । माधवेमासियत्पूर्णंस्नानंकर्त्तुं नचक्षमः
तिथिष्वेतासु स स्नायात्पूर्णमेव फलं लभेत् ।
सर्वे देवास्त्रयोदश्यां स्थित्वा जन्तून्पुनन्ति हि ॥ ३ ॥
पूर्णायाः सर्वतीर्थैश्चविष्णुनासहसंस्थिताः । चतुर्दश्यांसयज्ञाश्चदेवाएतान्पुनन्तिहि
ब्रह्मघ्नं वा सुरापं वा सर्वानेतान्पुनन्ति हि । एकादश्यां पुराजज्ञेवैशाख्याममृतंशुभम्
द्वादश्यां पालितं तच्चविष्णुनाप्रभविष्णुना । त्रयोदश्यांसुधांदेवान्पाययामासवैहरिः
जघान च चतुर्दश्यां दैत्यान्देवविरोधिनः । पूर्णायांसर्वदेवानांसाम्राज्याऽऽप्तिर्बभूवह
ततो देवाः सुसन्तुष्टाएतासांचवरंददुः । तिसृणाञ्चतिथीनांवैप्रीत्योत्फुल्लविलोचनाः
एता वैशाखमासस्य तिस्रश्च तिथयःशुभाः । पुत्रपौत्रादिफलदानराणां पापहानिदाः
योऽस्मिन्मासे च सम्पूर्णेनस्नातो मनुजाधमः ।तिथित्रयेतुसस्नात्वापूर्णमेवफलंलभेत्
तिथित्रयेप्यकुर्वाणः स्नानदानादिकं नरः । चाण्डालीं योनिमासाद्यपश्चाद्रौरवमश्नुते
उष्णोदकेन यः स्नाति माधवे च तिथित्रये । रौरवं नरकं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश
पितृन्देवान्समुद्दिश्यदध्यन्नंन ददाति यः । पैशाचीयोनिमासाद्यतिष्ठत्याभूतसम्प्लवम्
प्रवृत्तानाञ्चकामानां माधवे नियमे कृते । अपश्यं विष्णुसायुज्यं युज्यतेनाऽत्र संशयः
आमासं नियमासक्तः कुर्याद्यदि दिनत्रये । तेन पूर्णफलम्प्राप्य मोदते विष्णुमन्दिरे
यो वै देवान्पितृन्विष्णुं गुरुमुद्दिश्य मानवः ।
न स्नानादि करोत्यद्धाऽमुष्य शापप्रदा वयम् ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निःसन्तानो निरायुश्च निःश्रेयस्कोभवेदिति । इति देवावरंदत्त्वा स्वधामानिययुःपुरा
तस्मात्तिथित्रयंपुण्यंसर्वघौघविनाशनम् । अन्त्यं पुष्करिणीसञ्ज्ञंपुत्रपौत्रविवर्द्धनम्
या नारीसुभगाऽऽपूपपायसं पूर्णिमादिने । ब्राह्मणायसकृद्दद्यात्कीर्तिमन्तंसुतं लभेत्
गीतापाठन्तु यः कुर्यादन्तिमे च दिनत्रये । दिनेदिनेऽश्वमेधानां फलमेति न संशयः
सहस्रनामपठनं यः कुर्य्याच्च दिनत्रये । तस्यपुण्यफलं वक्तुं कः शक्तोदिविवाभुवि
सहस्रनामभिर्देवं पूर्णायां मधुसूदनम् । पयसास्नाप्य वै यातिविष्णुलोकमकल्मषम्
समस्तविभवैर्यस्तु पूजयेन्मधुसूदनम् । न तस्यलोकाः क्षीयन्ते युगकल्पादिव्यत्यये

अस्नात्वा चाऽप्यदत्त्वा च वैशाखश्च गतो यदि ।
स ब्रह्महा गुरुघ्नश्च पितृणां घातकस्तथा ॥ २४ ॥
श्लोकार्द्धं श्लोकपादम्वा नित्यं भागवतोद्भवम् ।
वैशाखे च पठन्मर्त्यो ब्रह्मत्वं चोपपद्यते ॥ २५ ॥

यो वै भागवतं शास्त्रं शृणोत्येतद्दिनत्रये । न पापैर्लिप्यतेक्काऽपि पद्मपत्रमिवाम्भसा
देवत्वं मनुजैः प्राप्तंकैश्चित्सिद्धत्वमेवच । कैश्चित्प्राप्तो ब्रह्मभावो दिनत्रयनिषेवणात्
ब्रह्मज्ञानेन वै मुक्तिः प्रयागमरणेन वा । अथवा मासि वैशाखे नियमेन जलाप्लुतेः ॥

नीलं वृषं समुत्सृज्य वैशाख्याञ्च जलाप्लुतेः ।
समस्तबन्धनिर्मुक्तः पुमान्याति परं पदम् ॥ २६ ॥

गां सवत्सां द्विजेन्द्राय सीदते च कुटुम्बिने । इहापमृत्युनिर्मुक्तःपरत्र च परम्व्रजेत्
स्नानदानविहीनस्तुवैशाखीञ्चैवयो नयेत् । श्वानयोतिशतंप्राप्य विष्ठायांजायतेकृमिः
तिस्रःकोट्योऽर्धकोटिश्चतीर्थानिभुवसत्रये । सम्भूयमन्त्रयाञ्चक्रुःपापसङ्घातशङ्किताः

जना अस्मासु पापिष्ठा विसृजन्ति स्वकं मलम् ।
तदस्माकं कथं गच्छेदितिचिन्तासमन्विताः ॥ २३ ॥

तीर्थपादंहरिंजग्मुःशरण्यंशरण्यंविभुम् । स्तुत्वा च बहुभिःस्तोत्रैःप्रार्थयामासुरञ्जसा
देवदेव जगन्नाथ सर्वाघौघविनाशन! । जना अस्मासुपापिष्ठाःस्नात्वा पापानिसर्वशः

विसृज्य त्वत्पदं यान्ति त्वदाज्ञाधारिणो भुवि ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्माकञ्चैव तत्पापंकथं गच्छेज्जनार्दन! ॥ ३६ ॥
तदुपायं वदास्माकंत्वत्पादशरणैषिणाम् । इति तीर्थैः प्रार्थितस्तु भगवान्भूतभावनः
प्रहसन्प्राह तीर्थानि मेघगम्भीरया गिरा ।

श्रीभगवानुवाच

सिते पक्षे मेषसूर्ये वैशाखान्ते दिनत्रये ॥ ३८ ॥
सर्वतीर्थमये पुण्ये ममाऽपि प्राणवल्लभे । यूयं भगोदयात्पूर्वं बहिःसंस्थजलाप्लुताः
विमुक्ताघाः पुण्यरूपा भवन्त्वाशु सुनिर्मलाः । भवद्भिश्च विमुक्ताघैर्येनस्नातादिनत्रये
तेषु तिष्ठन्तु तत्पापं जनैर्युष्मद्भिरेचितम् । इतितीर्थपदोविष्णुस्तीर्थानाञ्चवरं ददौ
अनुज्ञाप्यच तान्योगात्तत्रैवान्तरधीयत । स्वधामानिपुनः प्राप्यतानितीर्थानिनित्यशः
प्रतिवर्षन्तु वैशाखे तथैवान्त्यदिनत्रये । तेनाघौघं विमुच्यैव यान्ति निर्मलतामहो
ये तु स्नानंनकुर्वन्तिवैशाखान्तदिनत्रये । तेभवन्तु समस्तानांजनानांपातकाऽऽश्रयाः
इति शापञ्च तीर्थानि ह्यस्नातानां वदन्ति च ।
न तेन सदृशः पापो यो न स्नातो दिनत्रये ॥ ४५ ॥
विचारितेषुशास्त्रेषु न दृष्टो न च वै श्रुतः । तस्माद्दिनत्रयेकार्यंस्नानदानार्चनादिकम्
अन्यथा नरकं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश । इत्येतत्सर्वमाख्यातं श्रुतकीर्ते! महामते! ॥
पृष्टं वैशाखमाहात्म्यंयथादृष्टंयथाश्रुतम् । माहात्म्यस्यचलेशोऽयंमाधवस्यचवर्णितः
कात्स्न्र्याद्वक्तुं च ब्रह्माऽपि नाऽलं वर्षशतैरपि ।
पुरा कैलासशिखरे पार्वत्यै शङ्करः स्वयम् ॥ ४६ ॥
आह माधवमाहात्म्यं पृच्छन्त्यै शतवत्सरम् । तथापि नान्तमगमदशक्तो विरराम ह
को नु वर्णयितुं शक्तः कात्स्न्र्यान्माहात्म्यमुत्तमम् ।
विना विष्णुं जगन्नाथं नारायणमनामयम् ॥ ५१ ॥
पुरा सर्वेऽपिऋषयोमाहात्म्यंपापनाशनम् । लेशस्यलेशंव्याचख्युर्जनानांहितकाम्यया
नाऽन्तः केनापि व्याख्यातो ह्यशक्तत्वान्महीपते! ।
त्वञ्च मासे तु वैशाखे कुरु दानादिसत्क्रियाः ॥ ५२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेन भुक्तिश्चमुक्तिश्चसम्प्राप्तोषि न संशयः । इति तं बोधयित्वाच मैथिलंजनकाह्वयम्
श्रुतदेवस्तमामन्त्र्य गन्तुंचक्रे मनस्ततः । जाताह्लादः स राजर्षिर्गलद्वाष्पाकुलेक्षणः

उत्सवं कारयामास स्वाभिवृद्ध्यै मनोरमम् ।
ग्रामं प्रदक्षिणीकृत्य शिविकामधिरोप्य तम् ॥ ५६ ॥

चतुरङ्गबलैर्युक्तः स्वयं पृष्ठमथाऽन्वगात् । पुनश्चान्तः पुरम्प्राप्य सकलैर्विभवैरपि ॥
वस्त्रैराभरणैश्चैव गोभूतिलहिरण्यकैः । प्रणम्य च परिक्रम्य तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः ॥
ततः स तु महातेजाः श्रुतदेवो महायशाः । सन्तुष्टः परमप्रीतोययौ धामस्वकंमुनिः
त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां च माधवे । स्नानं दानं पूजनञ्च कथाश्रवणमेवच
वैशाखधर्मनिरतः स वै मोक्षमवाप्नुयात् । धनशर्मा ब्राह्मणश्च प्रेताश्चैव यथा पुरा ॥

नारद उवाच

इत्येतत्परमाख्यानमम्बरीष! तवोदितम् । श्रवणात्सर्वपापघ्नं सर्वसम्पद्विधायकम्
तेन भुक्तिश्च मुक्तिश्च ज्ञानंमोक्षञ्चविन्दति । इतितस्यवचःश्रुत्वा अम्बरीषोमहायशाः
प्रहृष्टान्तरवृत्तिश्च बाह्यव्यापारवर्जितः । प्रणनाम तथा मूर्ध्ना दण्डवत्पतितो भुवि
विभ्रमैरखिलैश्चाऽपिपूजयामासतम्पुनः । सम्पूजितस्तमामन्त्र्यनारदो भगवान्मुनिः

लोकान्तरं ययौ धीमाञ्छापान्नैकत्र संस्थितिः ।
अम्बरीषोऽपि राजर्षिर्नारदोक्तानिमाञ्छुभान् ॥ ६६ ॥
धर्मान्कृत्वा विलीनोऽभूत्परे ब्रह्मणि निर्गुणे ।

सूत उवाच

य इदं परमाख्यानं पापघ्नं पुण्यवर्धनम् ॥ ६७ ॥

शृणयाद्वा पठेद्वाऽपि स यातिपरमाङ्गतिम् । लिखितं पुस्तकंयेषां गृहेतिष्ठतिमानदाः

तेषां मुक्तिः करस्था हि किमु तच्छ्रवणात्मनाम् ॥ ६८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वैशाखमासमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसम्वादेफलश्रुतिकथनंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥२५

समाप्तमिदं वैशाखमासमाहात्म्यम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथाऽयोध्यामाहात्म्यारम्भः

प्रथमोऽध्यायः

विष्णुहरिमाहात्म्यवर्णनम्

जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनो व्यासः।
यस्याऽऽस्यकमलगलितं वाङ्मयममृतं जगत्पिबति ॥ १ ॥
नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥ २

व्यास उवाच

हिमवद्वासिनःसर्वे मुनयो वेदपारगाः। त्रिकालज्ञा महात्मानो नैमिषारण्यवासिनः ॥
येऽर्बुदारण्यनिरता दण्डकारण्यवासिनः। महेन्द्राद्रिरताये वै ये चविन्ध्यनिवासिनः
जम्बूवनरता ये च ये गोदावरिवासिनः। वाराणसीश्रिता येच मथुरावासिनस्तथा ॥
उज्जयिन्यां रता ये च प्रथमाश्रमवासिनः। द्वारावतीश्रिता येच बदर्य्याश्रयिणस्तथा
मायापुरीश्रिता ये चयेचकान्तीनिवासिनः। एतेचान्येचमुनयःसशिष्याबहवोऽमलाः
कुरुक्षेत्रे महाक्षेत्रे सत्रे द्वादशवार्षिके। वर्तमाने च रामस्य क्षितीशस्य महात्मनः ॥
समागताः समाहूताः सर्वे ते मुनयोऽमलाः ॥ ८ ॥
सर्वे ते शुद्धमनसो वेदवेदाङ्गपारगाः। तत्रस्नात्वा यथान्यायं कृत्वा कर्म जपादिकम्
भारद्वाजं पुरस्कृत्य वेदवेदाङ्गपारगम्। आसनेषु विचित्रेषु वृष्यादिषु ह्यनुक्रमात् ॥
उपविष्टाः कथाश्चक्रुर्नानातीर्थाश्रितास्तदा। कर्मान्तरेषुसत्रस्यसुखासीनाःपरस्परम्
कथान्तेषु ततस्तेषां मुनीनांभावितात्मनाम्। आजगाममहातेजास्तत्रसूतोमहामतिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्यासशिष्यः पुराणज्ञो रोमहर्षणसञ्ज्ञकः । तान्प्रणम्य यथान्यायं मुनीनांवचनेनसः
उपविष्टो यथान्यायं मुनीनां वचनेन सः ॥ १३ ॥
व्यासशिष्यं मुनिवरं सूतं वै रोमहर्षणम् । तं पप्रच्छुर्मुनिवरा भारद्वाजादयोऽमलाः

ऋषय ऊचुः

त्वत्तः श्रुता महाभागनानातीर्थाश्रिताःकथाः । सरहस्यानिसर्वाणिपुराणानिमहामते
साम्प्रतंश्रोतुमिच्छामःसरहस्यंसनातनम्।अयोध्यायामहापुर्यामहिमानंगुणोज्ज्वलम्

कीदृशीसा सदा मेध्याऽयोध्या विष्णुप्रिया पुरी ।
आद्या सा गीयते वेदे पुरीणां मुक्तिदायिका ॥ १७ ॥
संस्थानं कीदृशं तस्यास्तस्यां के च महीभुजः ।
कानि तर्थानि पुण्यानि महात्म्यं तेषुकीदृशम् ॥ १८ ॥
अयोध्यासेवनान्नृणां फलं स्यात् सूत! कीदृशम् ।
किं चरित्रं सूत! तस्याः का नद्यः के च सङ्गमाः ॥ १६ ॥
तत्र स्नानेन किं पुण्यं दानेन च महामते! ।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामस्त्वत्तः सूत! गुणाधिक! ॥ २० ॥
एतत्सर्वं क्रमेणैव तथ्यं त्वं वेत्थ साम्प्रतम् ।
अयोध्याया महापुर्या माहात्म्यं वक्तुमर्हसि ॥ २१ ॥

सूत उवाच

व्यासप्रसादाज्जानामिपुराणानितपोधनाः । सेतिहासानिसर्वाणिसरहस्यानितत्त्वतः
तं प्रणम्य प्रवक्ष्यामि माहात्म्यंभवदग्रतः । अयोध्यायामहापुर्यायथावत्सरहस्यकम्
विद्यावन्तं विपुलमतिदं वेदवेदाङ्गवेद्यं श्रेष्ठं शान्तं शमितविषयं शुद्धतेजोविशालम् ।
वेदव्यासं सततविनतं विश्ववेद्यैकयोनिं पाराशर्यं परमपुरुषं सर्वदाऽहं नमामि ॥२४
ॐनमोभगवतेतस्मैव्यासायामिततेजसे । यस्यप्रसादाज्जानामिह्ययोध्यामहिमामहम्
शृण्वन्तु मुनयः सर्वे सावधानाः सशिष्यकाः ।
माहात्म्यं कथयिष्यामि अयोध्याया महोदयम् ॥ २६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उदीरितमगस्त्याय स्कंन्देनाऽश्रावि नारदात् ।
अगस्त्येन पुरा प्रोक्तं कृष्णद्वैपायनाय तत् ॥ २७ ॥
कृष्णद्वैपायनाच्चैतन्मयाप्राप्तं तपोधनाः । तदहं वच्मि युष्मभ्यंश्रोतुकामेभ्यआदरात्
नमामि परमात्मानं रामं राजीवलोचनम् । अतसीकुसुमश्यामं रावणान्तकमव्ययम्
अयोध्या सा परा मेध्या पुरी दुष्कृतिदुर्ल्लभा ।
कस्य सेव्या च नाऽयोध्या यस्यां साक्षाद्धरिः स्वयम् ॥ ३० ॥
सरयूतीरमासाद्य दिव्यापरमशोभना । अमरावत्ती निभा प्रायः श्रिता वहुतपोधनैः
हस्त्यश्वरथपत्त्याढ्या सम्पदुच्चा च संस्थिता ।
प्राकाराढ्यप्रतोलीभिस्तोरणैः काञ्चनप्रभैः ॥ ३२ ॥
सानूपवेषैः सर्वत्र सुविभक्तचतुष्टया । अनेकभूमिप्रासादावहुभित्तिसुविक्रिया ॥३३॥
पद्मोत्फुल्लशुभोदाभिर्वापीभिरुपशोभिता । देवतायतनैर्दिव्यैर्वेदघोषैश्च मण्डिता ॥
वीणावेणुमृदङ्गादिशब्दैरुत्कृष्टताङ्गता । शालैस्तालैर्नालिकेरैःपनसामलकैस्तथा ॥३५
तथैवाम्रकपित्थाद्यैरशोकैरुपशोभिता । आरामैर्विविधैर्युक्ता सर्वर्तुफलपादपैः ॥ ३६
मालतीजातिबकुलपाटलीनागचम्पकैः । करवीरैः कर्णिकारैः केतकीभिरलङ्कृता ॥
निम्बजम्बीरकदलीमातुलिङ्गमहाफलैः । लसच्चन्दनगन्धाढ्यै र्नागरैरुपशोभिता ॥
देवतुल्याप्रभायुक्तैर्नृपपुत्रैश्च संयुता । सुरूपाभिर्वरस्त्रीभिर्देवस्त्रीभिरिवावृता ॥ ३६॥
श्रेष्ठैः सत्कविभिर्युक्ताबृहस्पतिसमैर्द्विजैः । वणिग्जनैस्तथा पौरैःकल्पवृक्षैरिवावृता
अश्वैरुच्चैः श्रवस्तुल्यैर्दन्तिभिर्दिग्गजैरिव । इति नानाविधैर्भावैरुपेतेन्द्रपुरीसमा ॥
यस्यांजातामहीपालाः सूर्यवंशसमुद्भवाः । इक्ष्वाकुप्रमुखाः सर्वे प्रजापालनतत्पराः ॥
यस्यास्तीरे पुण्यतोया कूजद्भृङ्गविहङ्गमा । सरयूर्नाम तटिनी मानसप्रभवोल्लसा
धर्मद्रवपरीता सा घर्घरोत्तमसङ्गमा ।
मुनीश्वराश्रिततटा जागर्ति जगदुच्छ्रिता ॥ ४४ ॥
दक्षिणाच्चरणाङ्गुष्ठान्निःसृता जाह्नवी हरेः । वामाङ्गुष्ठान्मुनिवराः सरयूर्निर्गता शुभा ॥
तस्मादिमे पुण्यतमे नद्यौ देवनमस्कृते । एतयोः स्नानमात्रेण ब्रह्महत्यां व्यपोहति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तामयोध्यामथ प्राप्तोऽगस्त्यः कुम्भोद्भवो मुनिः ।
यात्रार्थं तीर्थमाहात्म्यं ज्ञात्वा स्कन्दप्रसादतः ॥ ४७ ॥
आगत्यतुपुनःसोऽपिकृत्वायात्रांक्रमेणच। यथोक्तेनविधानेनस्नात्वासन्तर्प्यतान्पितॄन्
पूजयित्वायथान्यायंदेवताःसकलाअपि। सर्वाण्यपिचतीर्थानिनमस्कृत्ययथाविधि
कृतकृत्योर्जितानन्दस्तीर्थमाहात्म्यदर्शनात्। अभूदगस्त्योरूपेण पुलकाञ्चितविग्रहः
स त्रिरात्रं स्थितस्तत्र यात्रां कृत्वा यथाविधि ।
स्तुवन्नयोध्यामाहात्म्यं प्रतस्थे मुनिसत्तमः ॥ ५१ ॥
तमायान्तं विलोक्याऽऽशु बहुलानन्दसुन्दरम् ।
कृष्णद्वैपायनो व्यासः पप्रच्छाऽऽनन्दकारणम् ॥ ५२ ॥

व्यास उवाच

कुतः समागतो ब्रह्मन्साम्प्रतं मुनिसत्तमः। परमानन्दसन्दोहः समभूत्साम्प्रतं तव ॥
कस्मादानन्दपोषोऽभूत्तव ब्रह्मन्वदस्व मे। ममापि भवदानन्दात्प्रमोदोहृदि जायते ॥

अगस्त्य उवाच

अहो महदथाश्चर्य्यं विस्मयो मुनिसत्तम!। दृष्ट्वाप्रभावं मेऽद्याभूदयोध्यायास्तपोधन
तस्मादानन्दसन्दोहः समभून्मम साम्प्रतम् ।
तच्छ्रुत्वागस्त्यवचनं व्यासः प्रोवाच तं मुनिम् ॥ ५६ ॥

व्यास उवाच

भगवन्ब्रूहितत्त्वेनविस्तरात्सरहस्यकम्। अयोध्यायामहापुर्या महिमानंगुणाधिकम्
कः क्रमस्तीर्थयात्रायाः कानि तीर्थानि को विधिः ।
किं फलं स्नानतस्तत्र दानस्य च महामुने! ॥
एतत्सर्वं समाचक्ष्व विस्तराद्वदताम्वर ॥ ५८ ॥

अगस्त्य उवाच

अहो धन्यतमाबुद्धिस्तवजातातपोधन!। दृश्यते येन पृच्छा ते ह्ययोध्यामहिमाश्रिता
अकारो ब्रह्म च प्रोक्तं यकारो विष्णुरुच्यते। धकारो रुद्ररूपश्च अयोध्यानाम राजते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वोपपातकैर्युक्तैर्ब्रह्महत्यादिपातकैः । नायोध्या शक्यतेयस्मात्तामयोध्यांततोविदुः

विष्णोराद्या पुरी येयं क्षितिं न स्पृशति द्विज! ।
विष्णोः सुदर्शने चक्रे स्थिता पुण्यकरी क्षितौ ॥ ६२ ॥
केन वर्णयितुं शक्यो महिमाऽस्यास्तपोधन! ।
यत्र साक्षात्स्वयं देवो विष्णुर्वसति सादरः ॥ ६३ ॥

सहस्रधारामारभ्य योजनं पूर्वतोदिशि । तथैवदिक्प्रतीच्यां वै योजनं समतोऽवधिः
दक्षिणोत्तरभागे तु सरयूतमसावधिः । एतत्क्षेत्रस्य संस्थानं हरेरन्तर्गृहंस्थितम्
मत्स्याकृतिरियंविप्रपुरीविष्णोरुदीरिता । पश्चिमेतस्यमूर्द्धातुगोप्रतारासिताद्द्विज

पूर्वतः पृष्ठभागो हि दक्षिणोत्तमरमध्यमः ।
तस्यां पुर्यां महाभाग! नाम्ना विष्णुर्हरिः स्वयम् ॥
पूर्वं दृष्टप्रभावोऽसौ प्राधान्येन वसत्यपि ॥ ६७ ॥

व्यास उवाच

भगवन्किम्प्रभावोऽसौ योऽयं विष्णुहरिस्त्वया ।
कीर्तितो मुनिशार्दूल प्रसिद्धिं गतवान्कथम् ॥
एतत्सर्वं समाचक्ष्व विस्तरेण ममाऽग्रतः ॥ ६८ ॥

अगस्त्य उवाच

विष्णुशर्मेति विख्यातः पुराऽभूद्ब्राह्मणोत्तमः । वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञोधर्मकर्मसमाश्रितः
योगध्यानरतो नित्यंविष्णुभक्तिपरायणः । सकदाचित्तीर्थयात्रांकुर्वन्वैष्णवसत्तमः

अयोध्यामागतो विष्णुर्विष्णुः साक्षाद्वसेदिति ॥ ७० ॥

चिन्तयन्मनसा वीरस्तपः कर्तुंसमुद्यतः । स वै तत्र तपस्तेपे शाकमूलफलाशनः ॥
ग्रीष्मेपञ्चाग्निमध्यस्थो ह्यतपत्स महातपाः । वार्षिकेच निरालम्बोहेमन्ते च सरोवरे

स्नात्वा यथोक्तविधिना कृत्वा विष्णोस्तथाऽर्चनम् ।
वशीकृत्येन्द्रियग्रामं विशुद्धेनाऽन्तरात्मना ॥ ७३ ॥

मनोविष्णौसमावेश्यविधायप्राणसंयमम् । ॐकारोच्चारणाद्धीमान्हृदिपद्मंविकाशयन्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तन्मध्येरविसोमाग्निमण्डलानियथाविधि । कल्पयित्वाहरिंमूर्तंयस्मिन्देशेसनातनम्
पीताम्बरधरं विष्णुं शङ्खचक्रगदाधरम् । तच्चपुष्पैःसमभ्यर्च्य मनस्तस्मिन्निवेश्यच
ब्रह्मरूपं हरिंध्यायञ्जपन्वैद्वादशाक्षरम् । वायुभक्षःस्थितस्तत्र विप्रस्त्रीन्वत्सरान्वसन्
ततो द्विजवरो ध्यात्वा स्तुतिश्चक्रे हरेरिमाम् । प्रणिपत्यजगन्नाथं चराचरगुरुंहरिम्
विष्णुशर्माऽथ तुष्टाव नारायणमतन्द्रितः ॥ ७८ ॥

विष्णुशर्मोवाच

प्रसाद भगवन्विष्णो! प्रसीद पुरुषोत्तम! । प्रसीद देवदेवेश! प्रसीद कमलेक्षण! ॥
जयकृष्ण!जयाचिन्त्य!जयविष्णो!जयाव्यय! । जययज्ञपते!नाथ!जयविष्णोपतेविभो
जय पापहरानन्त जय जन्मज्वरापह । नमः कमलनाभाय नमः कमलमालिने ॥ ८१ ॥
नमः सर्वेश भूतेश नमः कैटभसूदन! । नमस्त्रैलोक्यनाथाय जगन्मूल! जगत्पते ॥८२॥
नमो देवाधिदेवाय नमो नारायणाय वै । नमः कृष्णाय रामाय नमश्चक्रायुधाय च ॥

त्वं माता सर्वलोकानां त्वमेव जगतःपिता ।
भयार्त्तानां सुहृन्मित्रं त्वं पिता त्वं पितामहः ॥ ८४ ॥
त्वं हविस्त्वं वषट्कारस्त्वं प्रभुस्त्वं हुताशनः ।
करणं कारणं कर्त्ता त्वमेव परमेश्वरः ॥ ८५ ॥
शङ्खचक्रगदापाणे! मां समुद्धर माधव! ॥ ८६ ॥

प्रसीद मन्दरधर! प्रसीद मधुसूदन! । प्रसीद कमलाकान्त प्रसीद भुवनाधिप! ॥८७॥

अगस्त्य उवाच

इत्येवं स्तुवतस्तस्यमनोभक्त्यामहात्मनः । आविर्बभूव विश्वात्मा विष्णुर्गरुडवाहनः
शङ्खचक्रपदापाणिः पीताम्बरधरोऽच्युतः । उवाचस प्रसन्नात्माविष्णुशर्माणमव्ययः

श्रीभगवानुवाच

तुष्टोऽस्मि भवतो वत्स महता तपसाऽधुना ।
स्तोत्रेणानेन सुमते! नष्टपापोऽसिसाम्प्रतम् ॥ ९० ॥

वरम्वरयविप्रेन्द्र! वरदोऽहं तवाऽग्रतः । नाऽतप्ततपसा द्रष्टुं शक्यः केनाऽप्यहं द्विज!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विष्णुशर्म्मोवाच

कृतकृत्योऽस्मि देवेश साम्प्रतं तवदर्शनात् । त्वद्भक्तिमचलामेकां मम देहि जगत्पते

श्रीभगवानुवाच

भक्तिरस्त्वचलामेवैवैष्णवीमुक्तिदायिनी । अत्रैवास्त्वचलामेवै जाह्नवीमुक्ति दायिनी

इदं स्थानं महाभाग! त्वन्नाम्ना ख्यातिमेष्यति ॥ ९४॥

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वादेवदेवेशश्चक्रेणोत्खायतत्स्थलम् । जलं प्रकटयामास गाङ्गंपातालमण्डलात्

जलेन तेन भगवान्पवित्रेण दयाम्बुधिः । नीरजस्कं भूमितलं क्षणाच्चक्रे कृपावशात्

चक्रतीर्थमिति ख्यातं ततः प्रभृति तद्द्विज! ।

जातं त्रैलोक्यविख्यातमघौघध्वंसकृच्छुभम् ॥ ९७ ॥

तत्र स्नानेन दानेन विष्णुलोकम्व्रजेन्नरः ॥ ९८ ॥

ततः स भगवान्भूयोविष्णुशर्माणमच्युतः । कृपया परया युक्त उवाच द्विजवत्सलः

श्रीभगवानुवाच

त्वन्नामपूर्विकाविप्रमन्मूर्त्तिरिहतिष्ठतु । विष्णुहरीतिविख्याता मुक्तानांमुक्तिदायिनी

अगस्त्य उवाच

इतिश्रुत्वावचोविप्रोवासुदेवस्यबुद्धिमान् । स्वनामपूर्विकांमूर्तिंस्थापयामासचक्रिणः

ततः प्रभृति विप्रेश! शङ्खचक्रगदाधरः । पीतवासाश्चतुर्बाहुर्नाम्नाविष्णुहरिः स्थितः

कार्त्तिकेशुक्लपक्षस्यप्रारभ्यदशमीतिथिम् । पूर्णिमामवधिकृत्वायात्रासाम्वत्सरीभवेत्

चक्रतीर्थेनरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । बहुवर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥

पितॄनुद्दिश्य यस्तत्र पिण्डान्निर्वापयिष्यति ।

तृप्तास्तु पितरो यान्ति विष्णुलोकं न संशयः ॥ १०५ ॥

चक्रतीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा विष्णुहरिं विभुम् । सर्वपापक्षयंप्राप्य नाकपृष्ठे महीयते

स्वशक्त्या तत्र दानानि दत्त्वा निष्कलमषो नरः ।

विष्णुलोके वसेद्धीमान्यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ १०७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्यदाऽपि नरस्तत्र चक्रतीर्थे जितेन्द्रियः। दृष्ट्वा सकृद्धरिंदेवं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

इति सकलगुणाब्धिर्ध्येयमूर्तिश्चिदात्मा
हरिरिह परमूर्त्या तस्थिवान्मुक्तिहेतोः।
तमिह वहुलभक्त्या चक्रतीर्थाभिषेकी
वसति सुकृतिमूर्त्तिर्योऽर्चयेद्विष्णुलोके ॥ १०६ ॥

इति श्रीस्कादे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-ऽयोध्यामाहात्म्ये विष्णुहरिमाहात्म्यवर्णनंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

ब्रह्मकुण्डसहस्रधारातीथवर्णनम्

सूत उवाच

अगस्त्यमुनिरित्युक्त्वा चक्रतीर्थाश्रयां कथाम्।
विभोर्विष्णुहरेऽश्चापि पुनराह द्विजोत्तमाः ॥ १ ॥

अगस्त्य उवाच

पुरा ब्रह्माजगत्स्रष्टाविज्ञायहरिमच्युतम्। अयोध्यावासिनंदेवंतत्रचक्रेस्थितिंस्वयम्
आगत्यकृतवांस्तत्र यात्रां ब्रह्मायथाविधि। यज्ञश्चविधिवच्चक्रेनानासम्भारसंयुतम्
ततः स कृतवां स्तत्र ब्रह्मालोकपितामहः।
कुण्डं स्वनाम्ना विपुलं नानादेवसमन्वितम् ॥ ४ ॥
विस्तीर्णजलकल्लोलकलितं कलुषापहम्। कुमुदोत्पलकह्लारपुण्डरीककुलाकुलम् ॥
हंससारसचक्राह्वविहङ्गमनोहरम्। तटान्तविटपोल्लासिपतत्त्रिगणसङ्कुलम् ॥ ६ ॥
तत्र कुण्डेसुराः सर्वेस्नाताःशुद्धिसमन्विताः। वभूवुरद्धा विगतरजस्काविमलत्विषः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदाश्चर्य्यं महद्दृष्ट्वा ते सर्वे सहसासुराः । ब्रह्माणम्प्रणिपत्योचुर्भक्त्या प्राञ्जलयस्तदा

देवा ऊचुः

भगवन्ब्रूहि तत्त्वेन माहात्म्यंकमलासन । अस्य कुण्डस्यसकलंखातस्यविमलत्विषः
अत्रस्नानेनसर्वेषामस्माकंविगतं रजः । महदाश्चर्यमेतस्य दृष्ट्वा कुण्डस्यविस्मिताः
सर्वे वयं सुरश्रेष्ठ! कृपया त्वमतो वद ॥ १० ॥

ब्रह्मोवाच

शृण्वन्तु सर्वे त्रिदशाः! सावधानाः सविस्मयाः ।
कुण्डस्यैतस्य माहात्म्यं नानाफलसमन्वितम् ॥ ११ ॥

अत्रस्नानेनविधिवत्पापात्मानोऽपिजन्तवः । विमानंहंससंयुक्तमास्थायरुचिराम्बराः
(अध्यासते) निवसन्ति ब्रह्मलोकं यावदाभूतसम्प्लवम् ॥ १२ ॥

अत्र दानेन होमेन यथाशक्त्या सुरोत्तमाः । तुलाश्वमेधयोःपुण्योप्राप्नुयुर्मुनिसत्तमाः
ममास्मिन्सरसिश्रीमाञ्जायतेस्नानतोनरः । तस्मादत्र विधानेनस्नानंदानंजपादिकम्
सर्वयज्ञसमंस्याद्वैमहापातकनाशनम् । ब्रह्मकुण्डमिति ख्यातिमितोयास्यत्यनुत्तमाम्
अस्मिन्कुण्डेचसान्निध्यंभविष्यतिसदामम । कार्त्तिकेशुक्लपक्षस्यचतुर्दश्यांसुरोत्तमाः
यात्रा भविष्यति सदा सुराः! साम्वत्सरीमम । शुभप्रदा महापापराशिनाशकरीतदा
स्वर्णञ्चैवसदादेयंवासांसिविविधानिच । निजशक्त्याप्रकर्तव्यासुरास्तृप्तिर्द्विजन्मनाम्

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वा देवदेवोऽयं ब्रह्मा लोकपितामहः । अन्तर्दधे सुरैः सार्द्धं तीर्थं दृष्ट्वा तपोधन!
तदाप्रभृति तत्कुण्डंविख्यातंपरमम्भुवि । चक्रतीर्थाच्चपूर्वस्यांदिशिकुण्डंस्थितंमहत्

सूत उवाच

इत्युक्त्वा स तपोराशिरगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
पुनः पृष्टो मुनिवरो व्यासायाऽवीवदत्कथाम् ॥ २१ ॥

अगस्त्य उवाच

अन्यच्छृणु महाभाग! तीर्थंदुष्कृतिदुर्ल्लभम् । ऋणमोचनसञ्ज्ञन्तु सरयूतीरसङ्गतम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रह्मकुण्डान्मुनिवर! धनुःसप्तशतेन च। पूर्वोत्तरदिशाभागे संस्थितं सरयूजले ॥२३॥
तत्र पूर्वं मुनिवरो लोमशोनाम नामतः। तीर्थयात्राप्रसङ्गेन स्नानञ्चक्रे विधानतः॥
ततः स ऋणनिर्मुक्तो बभूव गतकल्मषः। तदाश्चर्य्यं महद्दृष्ट्वा मुनीन्सानन्दमब्रवीत्
पश्यन्त्वेतस्यमहतोगुणांस्तीर्थवरस्य वै। भुजावूर्ध्वंतथाकृत्वाहर्षेणाऽऽहाश्रुलोचनः

लोमश उवाच

ऋणमोचनसञ्ज्ञन्तु तीर्थमेतदनुत्तमम्। यत्र स्नानेन जन्तूनामृणनिर्यातनम्भवेत्॥
ऐहिकं पारलौकिक्यं यद्दृणत्रितयं नृणाम्।
तत्सर्वं स्नानमात्रेण तीर्थेऽस्मिन्नश्यति क्षणात्॥ २८॥
सर्वतीर्थोत्तमं चैतत्सद्यः प्रत्ययकारकम्। मया चाऽस्य फलं सम्यगनुभूतमृणादिह
तस्मादत्र विधानेनस्नानंदानञ्चशक्तितः। कर्त्तव्यंश्रद्धयायुक्तैःसर्वदाफलकाङ्क्षिभिः
स्नातव्यञ्च सुवर्णञ्च देयं वस्त्रादि शक्तितः॥ ३१॥

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वा तीर्थमाहात्म्यं लोमशो मुनिसत्तमः।
अन्तर्दधे मुनिश्रेष्ठः स्तुवंस्तीर्थगुणान्मुदा॥ ३२॥
इत्येतत्कथितं विप्र! ऋणमोचनसञ्ज्ञकम्। यत्रस्नानेनजन्तूनामृणंनश्यतितत्क्षणात्
ऋणमोचनतीर्थन्तु पूर्वतः सरयूजले॥ ३३॥
धनुर्द्विशत्या तीर्थञ्च पापमोचनसञ्ज्ञकम्। सर्वपापविशुद्धात्मा तत्र स्नानेन मानवः॥
जायते तत्क्षणादेव नाऽत्र कार्या विचारणा॥ ३४॥
मया तत्र मुनिश्रेष्ठ! दृष्टं माहात्म्यमुत्तमम्॥ ३५॥
पाञ्चालदेशसम्भूतो नाम्ना नरहरिर्द्विजः। असत्सङ्गप्रभावेण पापात्मा समजायत॥
नानाविधानि पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च। कृतवान्पापिसङ्गेनत्रयीमार्गविनिन्दकः
स कदाचित्साधुसङ्गात्तीर्थयात्राप्रसङ्गतः। अयोध्यामागतोविप्र! महापातककृद्द्विजः
पापमोचनतीर्थेतुस्नातःसत्सङ्गतोद्विजः। पापराशिर्विनष्टोऽस्यनिष्पापःसमभूत्क्षणात्
दिवः पपात तन्मूर्ध्नि पुष्पवृष्टिर्मुनीश्वर। दिव्यं विमानमारुह्यविष्णुलोकेगतोद्विजः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तद्दृष्टमहदाश्चर्यं मया च द्विजपुङ्गव! । श्रद्धया परयातत्र कृतं स्नानं विशेषतः ॥४१

माघकृष्णचतुर्दश्यां तत्र स्नानं विशेषतः ।
दानञ्च मनुजैः कार्य्यं सर्वपापविशुद्धये ॥ ४२ ॥
अन्यदा तु कृते स्नाने सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ ४३ ॥

पापमोचनतीर्थे तुपूर्वन्तु सरयूजले । धनुः शतप्रमाणेन वर्त्तते तीर्थमुत्तमम् ॥ ४४ ॥

सहस्रधारासञ्ज्ञन्तु सर्वकिल्बिषनाशनम् । यस्मिन्रामाज्ञया वीरो लक्ष्मणः परवीरहा

प्राणानुत्सृज्य योगेन ययौ शेषात्मतां पुरा ॥ ४५ ॥

सार्द्धहस्तत्रयेणैव प्रमाणं धनुषो विदुः । चतुर्भिर्हस्तकैः संख्यादण्डइत्यभिधीयते ॥

सूत उवाच

इत्थंतदासमाकर्ण्यकुम्भयोनिमुनेस्तदा । कृष्णद्वैपायनोव्यासःपुनःपप्रच्छकौतुकात्

व्यास उवाच

सहस्रधारामाहात्म्यंविस्तराद्वद सुव्रत! । शृण्वंस्तीर्थस्य माहात्म्यंनतृप्यतिमनोमम

अगस्त्य उवाच

सावधानः शृणु मुने! कथां कथयतो मम । सहस्रधारातीर्थस्य समुत्पत्तिंमहोदयात्

पुरा रामो रघुपतिर्देवकार्यं विधायवै । कालेन सह सङ्गम्य मन्त्रं चक्रे नरेश्वरः ॥५०॥

आवां मन्त्रयमाणौ हि यः पश्येदन्तिकागतः ।
मया त्याज्यो भवेत्क्षिप्रमित्थं चक्रे स सम्विदम् ॥ ५१ ॥

तस्मिन्मन्त्रयमाणेहिद्वारेतिष्ठतिलक्ष्मणे । आगतःसतपोराशिर्दुवासास्तेजसांनिधिः

आगत्य लक्ष्मणं शीघ्रं प्रीत्योवाच क्षुधाऽऽकुलः ॥ ५३ ॥

दुर्वासा उवाच

सौमित्रे! गच्छ शीघ्रं त्वं रामाग्रे मां निवेदय ।
कार्यार्थिनमिदं वाक्यं नाऽन्यथा कर्तुमर्हसि ॥ ५४ ॥

अगस्त्य उवाच

शापाद्भीतः स सौमित्रिर्द्रुतं गत्वातयोः पुरः । मुनिंनिवेदयामासरामाग्रेदर्शनार्थिनम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुर्वाससं तपोराशिमत्रिनन्दनमागतम् ॥ ५५ ॥

रामोऽपि कालमामन्त्र्यप्रस्थाप्यचबहिर्ययौ । दृष्ट्वा मुनिंतंप्रणतःसम्भोज्यप्रभुरादरात्

दुर्वाससं मुनिवरं प्रस्थाप्य स्वयमादरात् ।

सत्यभङ्गभयाद्वीरो लक्ष्मणं त्यक्तवांस्तदा ॥ ५७ ॥

लक्ष्मणोऽपि तदा वीरः कुर्वन्नवितथं वचः । भ्रातुर्ज्येष्ठस्य सुमतिः सरयूतीरमाययौ

तत्र गत्वाऽथ च स्नात्वा ध्यानमास्थाय सत्वरम् ।

चिदात्मनि मनः शान्तं सङ्गम्याऽवस्थितस्तदा ॥ ५६ ॥

ततः प्रादुरभूत्तत्र सहस्रफणमण्डितः । शेषश्चक्षुःश्रवाः श्रेष्ठः क्षितिं भित्त्वासहस्रधा

सुरलोकात्सुरेन्द्रोऽपि समागादमरैः सह ॥ ६० ॥

ततः शेषात्मतां यातं लक्ष्मणं सत्यसङ्गरम् । उवाचमधुरं शक्रःसुराणांतत्रपश्यताम्

इन्द्र उवाच

लक्ष्मणोत्तिष्ठ शीघ्रंत्वमारोह स्वपदं स्वकम् । देवकार्यं कृतं वीर! त्वया रिपुनिषूदन

वैष्णवंपरमंस्थानंप्राप्नुहित्वंसनातनम् । भवन्मूर्तिःसमायातः शेषोऽपिविलसत्फणः

सहस्रधाक्षितिंभित्त्वासहस्रफणमण्डलैः । क्षितेःसहस्रच्छिद्रेषुयस्माद्भित्त्वासमुद्गताः

फणसाहस्रमणिभिर्दग्धाः शेषस्य सुव्रत! । तस्मादेतन्महातीर्थं सरयूतीरगं शुभम्

ख्यातं सहस्रधारेति भविष्यति न संशयः ॥ ६५ ॥

एतत्क्षेत्रप्रमाणं तु धनुषां पञ्चविंशतिः । अत्र स्नानेन दानेन श्राद्धेन श्रद्धयान्वितः ॥

सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं व्रजेन्नरः ॥ ६६ ॥

अत्र स्नातो नरो धीमाञ्छेषं सम्पूज्य चाऽव्ययम् ।

तीर्थं सम्पूज्य विधिवद्विष्णुलोकमवाप्नुयात् ॥ ६७ ॥

तस्मादत्र प्रकर्तव्यंस्नानं विधिपुरःसरम् । शेषरूपाहिवद्धत्र्य याःपूज्याविप्राविशेषतः

स्वर्णं चान्नंचवासांसिदेयानिश्रद्धयान्वितैः । स्नानं दानं हरेः पूजासर्वमक्षयतां व्रजेत्

तस्मादेतन्महातीर्थं सर्वकामफलप्रदम् । क्षितौ भविष्यति सदानात्रकार्याविचारणा

श्रावणे शुक्लपक्षस्य या तिथिः पञ्चमीभवेत् । तस्यामत्रप्रकर्त्तव्योनागानुद्दिश्ययत्नतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्सवो विपुलः सद्भिः शेषपूजापुरःसरम् । उत्सवे तु कृते तत्र तीर्थमहति मानवैः
सन्तोष्य च द्विजान्भक्त्या नागपूजापुरस्सरम् ।
सन्तुष्टाः फणिनः सर्वे पीडयन्ति न मानुषान् ॥ ७३ ॥
वैशाखमासे ये स्नानं कुर्वन्त्यत्र समाहिताः । न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि
तस्मादत्र प्रकर्तव्यं माधवे यत्नतो नरैः । स्नानं दानं हरिःपूज्यो ब्राह्मणाश्च विशेषतः
तीर्थे कृतेऽत्र मनुजैः सर्वकामफलप्रदः ॥ ७५ ॥
विष्णुमुद्दिश्ययोदद्यात्सालङ्कारांपयस्विनीम् । सवत्सामत्रसत्तीर्थेसत्पात्रायद्विजन्मने
तस्य वासो भवेन्नित्यं विष्णुलोके सनातने । अक्षयंस्वर्गमाप्नोतितीर्थस्नानेनमानवः
अत्र पूज्यौ विशेषेण नरैः श्रद्धासमन्वितैः । वैशाखे मास्यलङ्कारैर्वस्त्रैश्चद्विजदम्पती
लक्ष्मीनारायणप्रीत्यै लक्ष्मीप्राप्त्यै विशेषतः ।
वैशाखेमासि तीर्थानि पृथिवीसंस्थितानि वै ॥ ७९ ॥
सर्वाण्यपि चसङ्गत्यस्थास्यन्त्यत्रनसंशयः । तस्मादत्रविशेषेणवैशाखेस्नानतोनृणाम्
सर्वतीर्थावगाहस्य भविष्यति फलं महत् ॥ ८० ॥

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वा मुनिराजेन्द्रो लक्ष्मणं सुरसङ्गतम् । शेषं संस्थाप्यतत्तीर्थे भूभारहरणक्षमम्
लक्ष्मणं यानमारोप्य प्रतस्थे दिवमादरात् ॥ ८१ ॥
तदाप्रभृति तत्तीर्थंविख्यातिपरमां ययौ । वैशाखेमासितीर्थस्यमाहात्म्यंपरमंस्मृतम्
पञ्चम्यामपि शुक्लायां श्रावणस्य विशेषतः । अन्यदापर्वणि श्रेष्ठंविशेषंस्नानमाचरेत्
सहस्रधारातीर्थे च नरः स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ ८३ ॥
विधिवदिह हि धीमान्स्नानदानानितीर्थेनरवर! इह शक्त्या यः करोत्यादरेण ।
स इह विपुलभोगान्निर्मलात्मा च भक्त्या भजति भुजगशायिश्रीपतेरात्मनैक्यम् ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये
वैष्णवखण्डेऽयोध्यामाहात्म्ये ब्रह्मकुण्डसहस्रधारातीर्थ-
माहात्म्यवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तृतीयोऽध्यायः

चन्द्रसहस्रव्रतोद्यापनवर्णनम्

सूत उवाच

इति श्रुत्वा वचो धीमानादरात्कुम्भजन्मनः। प्रोवाचमधुरंवाक्यंकृष्णद्वैपायनोमुनिः

व्यास उवाच

भगवन्नद्भुतमिदं तीर्थमाहात्म्यमुत्तमम्। श्रुत्वा त्वत्तो मम मनः परमानन्दमाययौ ॥

अन्यत्तीर्थवरं ब्रूहि तत्त्वेन मम शृण्वतः। न तृप्तिरस्ति मनसः शृण्वतो मम सुव्रत!

अगस्त्य उवाच

शृणु विप्र! प्रवक्ष्यामि तीर्थमन्यदनुत्तमम्। स्वर्गद्वारमिति ख्यातं सर्वपापहरं सदा

स्वर्गद्वारस्य माहात्म्यं विस्ताराद्वक्तुमीश्वरः।

नहि कश्चिदतो वत्स! सङ्क्षेपाच्छृणु सुव्रत! ॥ ५ ॥

सहस्रधारामारभ्य पूर्वतः सरयूजले। षट्त्रिंशदधिका प्रोक्ता धनुषां षट्शती मितिः

स्वर्गद्वारस्य विस्तारः पुराणज्ञैर्विशारदैः। स्वर्गद्वारसमं तीर्थं न भूतं न भविष्यति

सत्यंसत्यंपुनः सत्यं नासत्यं ममभाषितम्। स्वर्गद्वारसमंतीर्थंनास्तिब्रह्माण्डगोलके

हित्वा दिव्यानि भौमानि तीर्थानि सकलान्यपि।

प्रातरागत्य तिष्ठन्ति तत्र संश्रित्य सुव्रत! ॥ ६ ॥

तस्मादत्र प्रकर्तव्यं प्रातःस्नानं विशेषतः। सर्वतीर्थावगाहस्य फलमात्मनः ईप्सता

त्यजन्ति प्राणिनः प्राणान्स्वर्गद्वारान्तरेद्विज!।

प्रयान्ति परमं स्थानं विष्णोस्तेनाऽत्र संशयः ॥ ११ ॥

मुक्तिद्वारमिदं पश्यस्वर्गप्राप्तिकरंनृणाम्। स्वर्गद्वारमितिख्याततस्मात्तीर्थमनुत्तमम्

स्वर्गद्वारंसुदुष्प्राप्यं देवैरपि न संशयः। यद्यत्कामयते तत्र तत्तदाप्नोति मानवः ॥

स्वर्गद्वारे परा सिद्धिः स्वर्गद्वारे परागतिः। जप्तं दत्तं हुतं दृष्टं तपस्तप्तंकृतञ्चयत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध्यानमध्ययनं सर्वं दानं भवतिचाऽक्षयम् ॥ १४ ॥
जन्मान्तरसहस्रेण यत्पापं पूर्वसञ्चितम् । स्वर्गद्वारप्रविष्टस्य तत्सर्वं व्रजति क्षयम्
ब्राह्मणाः क्षत्त्रिया वैश्याः शूद्रा वै वर्णसङ्कराः ।
कृमिम्लेच्छाश्च ये चाऽन्ये सङ्कीर्णाः पापयोनयः ॥ १६ ॥
कीटाः पिपीलिकाश्चैवयेचान्येमृगपक्षिणः । कालेन निधनं प्राप्ताःस्वर्गद्वारेशृणुद्विज
कौमोदकीकराः सर्वे पक्षिणो गरुडध्वजाः । शुभेविष्णुपुरेविष्णुर्जायन्तेतत्रमानवाः
अकामो वा सकामो वा अपि तीर्थगतोऽपि वा ।
स्वर्गद्वारे त्यजन्प्राणान्विष्णुलोके महीयते ॥ १९ ॥
मुनयो देवताः सिद्धाः साध्या यक्षा मरुद्गणाः । यज्ञोपवीतमात्रेणविभागश्चक्रिरेतुये
मध्याह्नेऽत्र प्रकुर्वन्तिसान्निध्यंदेवतागणाः । तस्मात्तत्रप्रकुर्वन्तिमध्याह्नेस्नानमादरात्
कुर्वन्त्यनशनं ये तु स्वर्गद्वारे जितेन्द्रियाः । प्रयान्ति परमंस्थानंयेचमासोपवासिनः
अन्नदानरता ये च रत्नदा भूमिदा नराः । गोवस्त्रदाश्च विप्रेभ्यो यान्ति ते भवनं हरेः
यत्र सिद्धा महात्मानोमुनयः पितरस्तथा । स्वर्गंप्रयान्तितेसर्वेस्वर्गद्वारंततःस्मृतम्
चतुर्द्धाच तनुं कृत्वादेवदेवो हरिःस्वयम् । अत्र वै रमते नित्यं भ्रातृभिः सह राघवः
ब्रह्मलोकं परित्यज्य चतुर्वक्त्रः सनातनः । अत्रैवरमते नित्यं देवैः सह पितामहः ॥
कैलासनिलयावासी शिवस्तत्रैव संस्थितः ॥ २७ ॥
मेरुमन्दरमात्रोऽपि राशिः पापस्य कर्मणः । स्वर्गद्वारंसमासाद्यससर्वोव्रजतिक्षयम्
या गतिर्ज्ञानतपसां या गतिर्यज्ञयाजिनाम् । स्वर्गद्वारे मृतानांतु सागतिर्विहिताशुभा
ऋषिदेवासुरगणैर्जपहोमपरायणैः । यतिभिर्मोक्षकामैश्च स्वर्गद्वारो निषेव्यते ॥ ३० ॥
षष्टिवर्षसहस्राणि काशीवासेषु यत्फलम् । तत्फलं निमिषार्द्धेन कलौदाशरथींपुरीम्
यागतिर्योगयुक्तानांवाराणास्यांतनुत्यजाम् । सा गतिःस्नानमात्रेणसरय्वांहरिवासरे
स्वर्गद्वारे मृतः कश्चिन्नरकं नैव पश्यति ।
केशवानुगृहीता हि सर्वे यान्ति परांगतिम् ॥ ३३ ॥
भूलोके चाऽन्तरिक्षे च दिवि तीर्थानि यानि वै ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अतीत्य वर्तते तानि तीर्थान्येतद् द्विजोत्तम! ॥ ३४ ॥
विष्णुभक्तिं समासाद्य रमन्ते तु सुनिश्चिताः ।
संहृत्य शक्तितः कामं विषयेषु हि संस्थितम् ॥ ३५ ॥
शक्तितःसर्वतोयुक्त्वाशक्तिस्तपसिसंस्थिता । नतेषांपुनरावृत्तिःकल्पकोटिशतैरपि
हन्यमानोऽपियोविद्वान्वसेच्छस्त्रशतैरपि । सयातिपरमं स्थानं यत्र गत्वा नशोचति
स्वर्गद्वारे वियुज्येत सयाति परमाङ्गतिम् । उत्तरं दक्षिणंवाऽपिअयनंनविकल्पयेत्
सर्वस्तेषां शुभःकालःस्वर्गद्वारंश्रयन्तिये । स्नानमात्रेणपापानिविलयंयान्तिदेहिनाम्
यावत्पापानि देहेनयेकुर्वन्ति जनाः क्षितौ । अयोध्या परमं स्थानंतेषामीरितमादरात्
ज्येष्ठे मासि सितेपक्षेपञ्चदश्यांविशेषतः । तस्यसाम्वत्सरीयात्रादेवैश्चन्द्रहरेःस्मृता
तस्मिन्नुद्यापनं चन्द्रसहस्रं व्रतयोगिभिः । कार्यं प्रयत्नतो विप्र! सर्वयज्ञफलाधिकम्
तस्मिन्कृते महापापक्षयात्स्वर्गो भवेन्नृणाम् ॥ ४३ ॥

श्रीव्यास उवाच

भगवन्ब्रूहि तत्त्वेनतस्यचन्द्रहरेः शुभाम् । उत्पत्तिश्च तथाचन्द्रव्रतस्योद्यापनेविधिम्

अगस्त्य उवाच

अयोध्यानिलयं विष्णुंनत्वा शीतांशुरुत्सुकः ।
आगच्छत्तीर्थमाहात्म्यं साक्षात्कर्तुं सुधानिधिः ॥
अत्राऽऽगत्य च चन्द्रोऽथ तीर्थयात्रां चकार सः ॥ ४५ ॥
क्रमेण विधिपूर्वञ्च नानाश्चर्यसमन्वितः । समाराध्य ततो विष्णुं तपसा दुश्चरेण वै
तत्प्रसादं समासाद्य स्वाभिधानपुरस्सरम् । हरिं संस्थापयामासतेनचन्द्रहरिःस्मृतः
वासुदेवप्रसादेन तत्स्थानं जातमद्भुतम् । तद्धि गुह्यतमं स्थानं वासुदेवस्य सुव्रत
सर्वेषामेव भूतानां भर्तुर्मोक्षस्य सर्वदा ।
अस्मिन्सिद्धाः सदा विप्र! गोविन्दव्रतमास्थिताः ॥ ४६ ॥
नानालिङ्गधरानित्यं विष्णुलोकाभिकाङ्क्षिणः ।
अभ्यस्यन्ति परं योगं मुक्तात्मानो जितेन्द्रियाः ॥ ५० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यथाधर्ममवाप्नोति अन्यत्र न तथा क्वचित् । दानं व्रतं तथा होमःसर्वमक्षयतां व्रजेत्
सर्वकामफलप्राप्तिर्जायते प्राणिनां सदा । तस्मादत्र विधातव्यंप्राणिभिर्यत्नतःक्रमात्
दानादिकं विप्रपूजा दम्पत्योश्च विशेषतः ॥ ५२ ॥
सर्वयज्ञाधिकफलं सर्वतीर्थावगाहनम् । सर्वदेवावलोकस्य यत्पुण्यं जायते नृणाम् ॥
तत्सर्वं जायते पुण्यं प्राणिनामस्य दर्शनात् । तस्मादेतन्महाक्षेत्रं पुराणादिषुगीयते
उद्यापनविधिश्चात्र नृभिर्द्विजपुरस्सरम् । अग्रे चन्द्रहरेश्चन्द्रसहस्रव्रतसञ्ज्ञकः ॥५५॥
गतेवर्षद्वये सार्द्धे पञ्चपक्षे दिनद्वये । दिवसस्याऽष्टमे भागे पतत्येकोऽधिमासकः ॥
त्र्यधिके वा अशीत्यब्दे चतुर्मासयुते ततः । भवेच्चन्द्रसहस्रं तु तावज्जीवति योनरः
उद्यापनं प्रकर्त्तव्यं तेन यात्रा प्रयत्नतः ॥ ५७ ॥
यत्पुण्यं परमं प्रोक्तं सततं यज्ञयाजिनाम् । सत्यवादिषु यत्पुण्यं यत्पुण्यंहेमदायिनि
तत्पुण्यं लभते विप्र! सहस्राब्दस्य जीविभिः ॥ ५८ ॥
सर्वसौख्यप्रदं तादृक्पुण्यव्रतमिहोच्यते ॥ ५९ ॥
चतुर्दश्यां शुचिः स्नात्वा दन्तधावनपूर्वकम् । चरितब्रह्मचर्य्यश्च जितवाक्कायमानसः
पौर्णमास्यां तथा कृत्वा चन्द्रपूजां च कारयेत् ॥ ६० ॥
पूर्वञ्च मातरः पूज्या गौर्यादिकक्रमेण च । ऋत्विजः पूजयेद्भक्त्यावृद्धिश्राद्धपुरस्सरम्
प्रयत्नैः प्रतिमा कार्या चन्द्रमण्डलसन्निभा । सहस्रसङ्ख्या ह्यथवातदर्द्धं वातदर्द्धकम्
निजवित्तानुमानेन तदर्द्धेन तदर्द्धिकम् ॥ ६२ ॥
ततः श्रद्धानुमानाद्वा कार्या वित्तानुमानतः । अथवा षोडश शुभा विधातव्याःप्रयत्नतः
चन्द्रपूजां ततः कुर्यादागमोक्तविधानतः । माषैः षोडशभिः कार्याप्रत्येकंप्रतिमाशुभा
सोममन्त्रेण होमस्तु कार्योवित्तानुमानतः । प्रतिमास्थापनंकुर्यात्सोममन्त्रमुदीरयेत्
सोमोत्पत्तिं सोमसूक्तं पाठयेच्च प्रयत्नतः । चन्द्रपूजांततः कुर्यादागमोक्तविधानतः ॥
चन्द्रन्यासं कलान्यासंकारयेन्मण्डलेजलम् । एकादशेन्द्रियन्यासंतथैवविधिपूर्वकम्
चन्द्रबिम्बनिभं कार्य्यंमण्डलंशुभतण्डुलैः । मध्येचकलशःस्थाप्योगव्येनपयसाप्लुतः
चतुरस्रेषुसम्पूर्णान्कलशान्स्थापयेद्बहिः । मण्डले चन्द्रपूजाचकर्तव्यानामभिःक्रमात्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हिमांशवे नमश्चैव सोमचन्द्राय वै नमः । चन्द्राय विधवे नित्यं नमः कुमुदबन्धवे ॥
सुधांशवे च सोमाय ओषधीशाय वै नमः । नमोऽब्जायमृगाङ्कायकलानांनिधयेनमः
नमो नक्षत्रनाथाय शर्वरीपतये नमः । जैवातृकाय सततं द्विजराजाय वै नमः ॥ ७२ ॥
एवं षोडशभिश्चन्द्रः स्तोतव्यो नामभिः क्रमात् ॥ ७३ ॥
ततो वै प्रयतो दद्याद्विधिवन्मन्त्रपूर्वकम् । शङ्खतोयं समादाय सपुष्पफलचन्दनम् ॥
नमस्तेमासमासान्ते जायमानःपुनःपुनः । गृहाणार्घ्यंशशाङ्क! त्वं रोहिण्यासहितोमम
एवं सम्पूज्य विधिवच्छशिनं प्रणतोभवेत् । षोडशान्येचकलशादुग्धपूर्णाःसरत्नकाः
सवस्त्राच्छादनाः शान्त्यै दातव्यास्ते द्विजन्मने ।
अभिषेकं ततः कुर्यात्पायसेन जलेन तु ॥ ७७ ॥
ऋत्विजां मनसस्तुष्टिः कार्या वित्तानुमानतः । ब्राह्मणंभोजयेतत्र सकुटुम्बंविशेषतः
पूजनीयौप्रयत्नेन वस्त्रैश्च द्विजदम्पती । कर्तव्यश्च ततो भूरिदक्षिणादानमुत्तमम् ॥
प्रतिमाश्च प्रदातव्या द्विजेभ्यो धेनुपूर्विकाः । सुवर्णं रजतं वस्त्रं तथान्नं च विशेषतः
दातव्यं चन्द्रसुप्रीत्यै हर्षादेवं द्विजन्मने ॥ ८० ॥
उपवासविधानेन दिनशेषं नयेत्सुधीः । अनन्तरे च दिवसे कुर्याद्भगवदर्चनम् ॥
बान्धवैः सह भुञ्जीत नियमञ्च विसर्ज्जयेत् ॥ ८१ ॥
एवञ्च कुरुते चन्द्रसहस्रं व्रतमुत्तमम् । ब्रह्मघ्नोऽपि सुरापोऽपि स्तेयी च गुरुतल्पगः
व्रतेनाऽनेन शुद्धात्मा चन्द्रलोकं व्रजेन्नरः ॥ ८२ ॥
यादृशश्च भवेद्विप्र! प्रियो नारायणस्य च । एवं करोति नियतं कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायांद्वितीये वैष्णवखण्डेऽयोध्यामाहात्म्ये चन्द्रसहस्रव्रतोद्यापनविधिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुर्थोऽध्यायः

धर्महरिस्वर्णखनिमाहात्म्यवर्णनम्

अगस्त्य उवाच

तस्माच्चन्द्रहरिस्थानादाग्नेय्यां दिशि संस्थितः।
देवो धर्महरिर्नाम कलिकल्मषनाशकः ॥ १ ॥
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः स्वकर्मपरिनिष्ठितः।
पुरा समागतो धर्मस्तीर्थयात्राचिकीर्षया ॥ २ ॥
आगत्य चचकारोच्चैर्यात्रांतत्रादरेणसः। दृष्ट्वामाहात्म्यमतुलमयोध्यायाःसविस्मयः
विधाय स्वभुजावूर्ध्वौ विप्रोऽवोचन्मुदान्वितः।
अहो रम्यमिदं तीर्थमहो माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥
अयोध्यासदृशी कापि दृश्यते नाऽपरा पुरी।
या न स्पृशति वसुधां विष्णुचक्रस्थिताऽनिशम् ॥ ५ ॥
यस्यां स्थितो हरिः साक्षा सेयं केनोपमीयते।
अहो तीर्थानि सर्वाणि विष्णुलोकप्रदानि वै ॥ ६ ॥
अहो विष्णुरहोतीर्थमयोध्याऽहो महापुरी।
अहो माहात्म्यमतुलं किं न श्लाघ्यमिहास्थितम् ॥ ७ ॥
इत्युक्त्वा तत्र बहुशो ननर्तप्रमदाकुलः। धर्मोमाहात्म्यमालोक्यअयोध्यायाविशेषतः
तं तथा नर्तमानं वै धर्मं दृष्ट्वा कृपान्वितः। आविर्बभूव भगवान्पीतवासाहरिः स्वयम्
तं प्रणम्य च धर्मोऽथ तुष्टाव हरिमादरात् ॥ ९ ॥

धर्म उवाच

नमः क्षीराब्धिवासाय नमः पर्यङ्कशायिने।
नमो शङ्करसंस्पृष्टदिव्यपादाय विष्णवे ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्त्याऽर्चितसुपादाय नमोऽजादिप्रियाय ते । शुभाङ्गाय सुनेत्राय माधवाय नमोनमः
नमोऽरविन्दपादाय पद्मनाभाय वै नमः । नमः क्षीराब्धिकल्लोलस्पृष्टगात्राय शार्ङ्गिणे
ॐनमो योगनिद्राय योगक्षैर्भावितात्मने । तार्क्ष्यासनाय देवाय गोविन्दायनमोनमः
सुकेशाय सुनासाय सुललाटाय चक्रिणे । सुवस्त्राय सुवर्णाय श्रीधराय नमोनमः ॥
सुबाहवे नमस्तुभ्यं चारुजङ्घाय ते नमः । सुवासाय सुदिव्याय सुविद्याय गदाभृते
केशवाय च शान्ताय वामनाय नमोनमः । धर्मप्रियाय देवाय नमस्ते पीतवाससे ॥

अगस्त्य उवाच

इति स्तुतो जगन्नाथो धर्मेण श्रीपतिर्मुदा । उवाच स हृषीकेशः प्रीतो धर्ममुदारधीः

श्रीभगवानुवाच

तुष्टोऽहं भवतो धर्म! स्तोत्रेणानेन सुव्रत! । वरम्वरय धर्मज्ञ! यस्तेस्यान्मनसः प्रियः

स्तोत्रेणानेन यः स्तौति मानवो मामतन्द्रितः ।
सर्वान्कामान्वाप्नोति पूजितः श्रीयुतःसदा ॥ १६ ॥

धर्म उवाच

यदि तुष्टोऽसि भगवन्देवदेव! जगत्पते! । त्वामहंस्थापयाम्यत्र निजनाम्नाजगद्गुरो

अगस्त्य उवाच

एवमस्त्विति सम्प्रोच्याऽभवद्धर्महरिर्विभुः । स्मरणादेव मुच्येत नरो धर्महरेर्विभोः
सरयूसलिले स्नात्वा सुचिन्ताकुलमानसः । देवं धर्महरिं पश्येत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
अत्र दानं तथा होमं जपोब्राह्मणभोजनम् । सर्वमक्षयतांयातिविष्णुलोकेनिवासकृत्

अज्ञानाज्ज्ञानतो वाऽपि यत्किञ्चिद्दुष्कृतम्भवेत् ।
प्रायश्चित्तं विधातव्यं तन्नाशाय प्रयत्नतः ॥ २४ ॥

प्रायश्चित्तेन विधिवत्पापं तस्य प्रणश्यति । तस्मादत्र प्रकर्त्तव्यंप्रायश्चित्तंविधानतः
अज्ञानाज्ज्ञानतोवापिराजादेर्निग्रहात्तथा । नित्यकर्मनिवृत्तिःस्याद्यस्यपुंसोऽवशात्मनः

तेनाऽप्यत्र विधातव्यं प्रायश्चित्तं प्रयत्नतः ॥ २६ ॥
अत्र साक्षात्स्वयं देवो विष्णुर्वसति सादरः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्माद्वर्णयितुं शक्यो महिमा न हि मानवैः ॥ २७ ॥

आषाढे शुक्लपक्षस्यएकादश्यां द्विजोत्तम! । तस्यसाम्वत्सरीयात्राकर्तव्यातुविधानतः

स्वर्गद्वारे नरःस्नात्वा दृष्ट्वा धर्महरिंविभुम् । सर्वपापविशुद्धात्माविष्णुलोकेवसेत्सदा

तस्माद्दक्षिणदिग्भागे स्वर्णस्य खनिरुत्तमा । यत्रचक्रेस्वर्णवृष्टिं कुवेरो रघुजाद्भयात्

व्यास उवाच

भगवन्ब्रूहि तत्त्वज्ञ! स्वर्णवृष्टिरभूत्कथम् । कुवेरस्य कथं भीतिरुत्पन्ना रघुभूपतेः ॥

एतत्सर्वं समाचक्ष्व विस्तरान्मम सुव्रत! । श्रुत्वा कथारहस्यानिनतृप्यतिमनो मम

अगस्त्य उवाच

श्रृणु विप्र! प्रवक्ष्यामि स्वर्णस्योत्पत्तिमुत्तमाम् ।

यस्य श्रवणतो नृणां जायते विस्मयो महान् ॥ ३३ ॥

आसीत्पुरा रघुपतिरिक्ष्वाकुकुलवर्द्धनः । रघुर्निजभुजोदारवीर्यशासितभूतलः ॥ ३४

प्रतापतापितारातिवर्गव्याख्यातसद्यशाः । प्रजाः पालयता सम्यक्तेन नीतिमता सता

यशःपूरेण संलिप्ता दिशोदश सितत्विषा । स चक्रे प्रौढविभवसाधनांविजयक्रमात्

नानादेशान्समाक्रम्य चतुरङ्गबलान्वितः । भूतानि वशमानीय वसु जग्राह दण्डतः ॥

उत्कृष्टान्नृपतीन्वीरो दण्डयित्वा वलाधिकान् ।

रत्नानि विविधान्याशु जग्राहाऽतिवलस्तदा ॥ ३८ ॥

स विजित्य दिशः सर्वा गृहीत्वा रत्नसञ्चयम् ।

अयोध्यामागतो राजा राजधानीञ्च तां शुभाम् ॥ ३९ ॥

तत्रागत्यचकाकुत्स्थोयज्ञायोत्सुकमानसः । चकारनिर्मलांवुद्धिंनिजवंशोचितक्रियाम्

वसिष्ठं मुनिमाज्ञाय वामदेवं च कश्यपम् ॥ ४१ ॥

अन्यानपि मुनिश्रेष्ठान्नानातीर्थसमाश्रितान् । समानयद्विनीतेन द्विजवर्येण भूपतिः ॥

दृष्ट्वास्थितान्सतान्सर्वान्प्रदीप्तानिवपावकान् । तानागतान्विदित्वाऽथरघुःपरपुरञ्जयः

निश्चक्राम यथान्यायं स्वयमेव महायशाः ॥ ४३ ॥

ततो विनीतवत्सर्वान्काकुत्स्थो द्विजसत्तमान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उवाच धर्मयुक्तं च वचनं यज्ञसिद्धये ॥ ४४ ॥

रघुरुवाच

मुनयः सर्व एवैते यूयं श्रृणुत मद्वचः । यज्ञं विधातुमिच्छामि तत्राज्ञां दातुमर्हथ ॥
साम्प्रतं मामको यज्ञोयुक्तःस्यान्मुनिसत्तमाः । एतद्विचार्यतत्त्वेन ब्रूत यूयंमुनीश्वराः

मुनय ऊचुः

राजन्विश्वजिदाख्यातोयज्ञानांयज्ञउत्तमः । साम्प्रतंकुरु तं यत्नान्माविलम्बंवृथाकृथाः

अगस्त्य उवाच

नृपश्चक्रे ततो राज्ञं विश्वदिग्जयसञ्ज्ञितम् । नानासम्भारमधुरं कृतसर्वस्वदक्षिणम्
नानाविधेन दानेन मुनिसन्तोषहर्षकृत् । सर्वस्वमेव प्रददौ द्विजेभ्यो बहुमानतः ॥
तेषु विश्वेषु यातेषु पूजितेषु गृहान्स्वकान् । वन्धुष्वपि च तुष्टेषु मुनिषु प्रणतेषु च
तेन यज्ञेन विधिवद्विहितेन नरेश्वरः । शुशुभे शोभनाचारः स्वर्गे देवेन्द्रवत्क्षणात् ॥
तत्रान्तरे समभ्यायान्मुनिर्यमवतांवरः । विश्वामित्रमुनेरन्तेवासीकौत्सइतिस्मृतः
दक्षिणार्थं गुरोर्धीमान्पावितुं तं नरेश्वरम् । चतुर्दशसुवर्णानां कोटीराहर सत्वरम्

मद्द दक्षिणेति गुरुणा निर्बन्धाद्याचितो रुषा ।
आगतः स मुनिः कौत्सस्ततो याचितुमादरात् ॥ ५३॥
रघुं भूपालतिलकं दत्तसर्वस्वदक्षिणम् ॥ ५४ ॥

तमागतमभिप्रेत्य रघुरादरतस्तदा । उत्थाय पूजयामास विधिवत्स परन्तपः ॥

सपर्य्यासीत्तस्य सर्वा मृत्पात्रविहितक्रिया ॥ ५५ ॥
पूजा सम्भारमालोक्य तादृशं तं मुनीश्वरः ।
विस्मितोऽभून्निरानन्दो दक्षिणाऽऽशां परित्यजन् ॥
उवाच मधुरं वाक्यं वाक्यज्ञानविशारदः ॥ ५६ ॥

कौत्स उवाच

राजन्नभ्युदयस्तेऽस्तु गच्छाम्यन्यत्र साम्प्रतम् ॥ ५७ ॥

गुर्वर्थाहरणायैवदत्तसर्वस्वदक्षिणम् । त्वां न याचे धनाभावादतोऽन्यत्रव्रजाम्यहम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

इत्युक्तस्तेन मुनिना रघुः परपुरञ्जयः । क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीदेनं विनयाद्विहिताञ्जलिः ॥

रघुरुवाच

भगवंस्तिष्ठ मे हर्म्ये दिनमेकं मुनिव्रत! । यावद्यतिष्ये भगवन्भवदर्थार्थमुच्चकैः ॥६०

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वापरमोदारवचो मुनिमुदारधीः ।प्रतस्थे च रघुस्तत्र कुबेरविजिगीषया ॥६१
तमायान्तं कुबेरोऽथ विज्ञाप्य वचनोदितैः । प्रसन्नमनसंचक्रेवृष्टिं स्वर्णस्य चाक्षयाम्
स्वर्णवृष्टिरभूद्यत्र सास्वर्णखनिरुत्तमा । स मुनिं दर्शयामास खनिंतेन निवेदिताम् ॥
तस्मै समर्पयामास तांरघुःखनिमुत्तमाम् । मुनीन्द्रोऽपिगृहीत्वाशुततोगुर्वर्थमादरात्
राज्ञेनिवेदयामाससर्वमन्यद्गुणाधिकः । वरानथ ददौ तुष्टः कौत्सो मतिमतास्वरः ॥

कौत्स उवाच

राजल्लँभस्वसत्पुत्रं निजवंशगुणान्वितम् । इयंस्वर्ण खनिस्तूर्णं मनोऽभीष्टफलप्रदा
भूयादत्र परं तीर्थं सर्वपापहरं सदा । अत्र स्नानेन दानेन दानेन नृणांलक्ष्मीःप्रजायते
वैशाखेशुक्लद्वादश्यांयात्रासास्वत्सरीस्मृता । नानाभीष्टफलप्राप्तिर्भूयान्मद्वचसान्नृणाम्

अगस्त्य उवाच

इति दत्त्वा वरान्राज्ञेकौत्सः सन्तुष्टमानसः । प्रतस्थे निजकार्यार्थे गुरोराश्रममुत्सुकः
राज्ञः सकृतकृत्योऽथशेषंसङ्गृह्यतद्धनम् । द्विजेभ्योविधिवद्दत्त्वापालयामासवैप्रजाः
एवं स्वर्णखनेर्जातं माहात्म्यञ्च मुनीश्वरात् ॥ ७१ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये-
वैष्णवखण्डेऽयोध्यामाहात्म्ये धर्महरिस्वर्णखनिमाहात्म्य-
वर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चमोऽध्यायः

सकौत्सवृत्तवर्णनंतिलोदकीमाहात्म्यकथनम्

व्यास उवास

भगवन्ब्रूहितत्त्वेनकथंनिर्वन्धतोमुनिः। विश्वामित्रोनिजंशिष्यंकौत्संक्रोधेनताद्वशम्
दुष्प्राप्यमर्थं यत्नेन बहु प्रार्थितवांस्तदा। एतत्सर्वञ्च कथय मयि यद्यस्ति ते कृपा

अगस्त्य उवाच

श्रृणुद्विजकथामेतांसावधानेन्द्रियःस्वयम्। विश्वामित्रोमुनिश्रेष्ठःसदिव्यज्ञानलोचनः
निजाश्रमे तपो दुर्गञ्चकार प्रयतो व्रती। एकदा तमथो द्रष्टुं दुर्वासा मुनिरागतः॥

आगत्य च क्षुधाक्रान्त उच्चैः प्रोवाच स द्विजः।
भोजनं दीयतां मह्यं क्षुधापीडितचेतसे।
पायसं शुचि चोष्णञ्च शीघ्रं क्षुधार्त्तिने द्विज!॥ ५॥

इतिश्रुत्वावचःक्षिप्रंविश्वामित्रःप्रयत्नतः। स्थाल्यांपायसमादायतंसमर्प्यततःस्वयम्
तदादायोत्थितं द्रष्ट्वा दुर्वासास्तं विलोकयन्। उवाच मधुरं वाक्यंमुनिलक्षणतत्परः

क्षणं सहस्व विप्रेन्द्र! यावत्स्नात्वा व्रजाम्यहम्।
तिष्ठ तिष्ठक्षणं तिष्ठ आगच्छाम्येव साम्प्रतम्॥ ८॥
इत्युक्त्वा स जगामैव दुर्वासाः स्वाश्रमं तदा॥ ९॥
विश्वामित्रस्तपोनिष्ठस्तदा सानुरिवाऽचलः।
दिव्यं वर्षसहस्रं स तस्थौ स्थिरमतिस्तदा॥ १०॥

तस्य शुश्रूषणपरो मुनिः कौत्सो यतव्रतः। बभूव परमोदारमतिर्विगतमत्सरः॥११
पुनरागत्यस मुनिर्दुर्वासा गतकल्मषः। भुक्त्वा च पायसं सद्यःसजगामनिजाश्रमम्
तस्मिन्गतेमुनिवरेविश्वामित्रस्तपोनिधिः। कौत्संविद्यावतांश्रेष्ठंविससर्जगृहान्प्रति

स विसृष्टो गुरुं प्राह दक्षिणा प्रार्थ्यतामिति।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विश्वामित्रस्तु तं प्राह त्वं किं दास्यसि दक्षिणाम्
दक्षिणा तव शुश्रूषा गृहं व्रज यतव्रतः ॥ १४ ॥
पुनः पुनर्गुरुं प्राहशिष्यो निर्वन्धवान्यदा। तदा गुरुर्गुरुक्रुद्धः शिष्यंप्राह चनिष्ठुरम्
सुवर्णस्य सुवर्णस्य चतुर्दश समाहर। कोटीर्मे दक्षिणाविप्र पश्चाद्गच्छ गृहम्प्रति
इत्युक्तो गुरुणा कौत्सो विचार्य समुपागतम्।
काकुत्स्थं दिग्विजेतारं ययाचे गुरुदक्षिणाम् ॥ १७ ॥
इत्युक्तं ते मुनिवर त्वया पृष्टं हि यत्पुनः। अतोऽन्यच्छृणुतेवच्मितीर्थकारणमुत्तमम्
तस्माद्दक्षिणदिग्भागे सम्भेदःसिद्धसेवितः।
तिलोदकीसरय्वोश्चसङ्गत्या भुवि संश्रुतः
तत्र स्नात्वामहाभागभवन्तिविरजानराः। दशानामश्वमेधानांकृतानांयत्फलंफलंलभेत्
तदाप्नोति स धर्मात्मा तत्र स्नात्वा यतव्रतः ॥ २० ॥
स्वर्णादिकञ्च यो दद्याद्ब्राह्मणे वेदपारगे। शुभांगतिमवाप्नोति अग्निवच्चैव दीप्यते
तिलोदकी सरय्वोश्च सङ्गमे लोकविश्रुते।
दत्त्वान्नञ्च विधानेन न स भूयोऽभिजायते
उपवासत्रयः कृत्वा विप्रान्सन्तर्पयेन्नरः। सौत्रामणेश्च यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः
एकाहारस्तु यस्तिष्ठेन्मासं तत्र यतव्रतः। यावज्जीवकृतं पापं सहसा तस्य नश्यति
नभस्यकृष्णामावस्यांयात्रासाम्वत्सरीभवेत्। रामेणनिर्मितापूर्वंनदीसिन्धुरिवापरा
सिन्धुजानांतुरङ्गांणाजलपानायसुव्रत!। तिलवच्छ्याममुदकं यतस्तस्यां सदाबभौ
तिलोदकीति विख्याता पुण्यतोया सदा नदी।
सङ्गमादन्यतो यस्यां तिलोदक्यां शुचिव्रतः
स्नातो विमुच्यते पापैः सप्तजन्मार्जितैरपि ॥ २७ ॥
तस्मात्तिलोदकीस्नानं सर्वपापहरं मुने!।
कर्त्तव्यं सुप्रयत्नेन प्राणिभिर्धर्मकाङ्क्षिभिः
स्नानं दानं व्रतं होमं सर्वमक्षयतां व्रजेत् ॥ २८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इति विविधविधानैस्तीर्थयात्रां क्रमेण प्रथितगुणविकासः प्राप्तपुण्यो विधाय
हरिमुपहृतभावः पूजयन्सर्वतीर्थं व्रजति परमधाम न्यस्तपापः कथञ्चित् ॥ २६

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णव
खण्डेऽयोध्यामाहात्म्ये तिलोदकीप्रभाववर्णनंनाम
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः

स्वर्गद्वारगोप्रतारतीर्थमाहात्म्यवर्णनम्

अगस्त्य उवाच

तस्मात्सङ्गमतोविप्रपश्चिमेदिक्तटेस्थितम्। सीताकुण्डमितिख्यातंसर्वकामफलप्रदम्
यत्रस्नात्वानरो विप्र सर्वपापैःप्रमुच्यते । सीतया किलतत्कुण्डंस्वयमेवविनिर्मितम्
रामेण वरदानाच्च महाफलनिधिकृतम् ॥ २ ॥

श्रीराम उवाच

शृणु सीते! प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं भुवि यादृशम् ।
त्वत्कुण्डस्याऽस्य सुभगे त्वत्प्रीत्या कथयाम्यहम् ॥ ३ ॥

अत्र स्नानञ्च दानञ्च जपो होमस्तपोऽथवा । सर्वमक्षयतां याति विधानेनशुचिस्मते
मार्गकृष्णचतुर्दश्यां तत्र स्नानंविशेषतः । सर्वपापहरं देवि! सर्वदास्नायिनांनृणाम्
इति रामो वरं प्रादात्सीतायै च प्रजाप्रियः । तदाप्रभृति सर्वत्र तत्तीर्थं भुविवर्त्तते
सीताकुण्डमिति ख्यातं जनानां परमाद्भुतम् ।
तस्मिंस्तीर्थे नरः स्नात्वा नूनं राममवाप्नुयात् ॥ ७ ॥

तत्र स्नानेन दानेन तपसा च विशेषतः । गन्धैर्माल्यैर्धूपदापैर्न्नानाविभवविस्तरैः ॥
रामं सम्पूज्य सीताञ्च मुक्तः स्यान्नात्र संशयः ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मार्गे मासि च स्नातव्यं गर्भवासो न जायते ।
अन्यदाऽपि नरः स्नात्वा विष्णुलोकं सगच्छति ॥ ९ ॥
विभोर्विष्णुहरेर्विप्र! रम्ये पश्चिमदिक्तटे । देवश्चक्रहरिर्नाम सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥१०
तस्य चक्रहरेर्विप्र महिमा न हि मानवैः । शक्यो वर्णयितुंधीरैरपि बुद्धिमताम्वरैः
ततः पश्चिमदिग्भागे नाम्ना पुण्यं हरिस्मृति । विष्णोरायतनंख्यातंपरमार्थफलप्रदम्
यस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १२ ॥
तयोर्दर्शनतो यान्ति तेषां पापानिदेहिनाम् । तानिपापानियावन्ति कुर्वतेभुवियेनराः
पुरा देवासुरे जाते सङ्ग्रामे भृशदारुणे । दैत्यैर्वरमदोत्सिक्तैर्देवायुधि पराजिताः ॥
तेषां पलायमानानां देवानामग्रणीर्हरः । संस्तभ्यचैवतान्सर्वान्पुरस्कृत्याम्बुजासनम्
क्षीरोदशायिनं विष्णुं शेषपर्य्यङ्कशायिनम् ।
लक्ष्म्योपविष्टं पार्श्वे च चरणाम्बुजहस्तया ॥ १६ ॥
नारदाद्यैर्मुनिवरैरुद्गीतगुणगौरवम् । गरुडेन पुरःस्थेनानिशमञ्जलिना स्तुतम् ॥१७॥
क्षीराब्धिजलकल्लोलमदबिन्द्वङ्कितांम्बरम् । तारकोत्करविस्फारतारहारविराजितम्
पीताम्बरमतिस्मेरविकाशद्भावभावितम् ।
बिभ्रतं कुण्डलं स्थूलं कर्णाभ्यां मौक्तिकोज्ज्वलम् ॥ १९ ॥
रत्नवल्लीमिव स्वच्छां श्वेतद्वीपनिवासिनीम् ।
किरीटं पद्मरागाणां वलयं दधतं परम् ॥ २० ॥
मित्रस्य राहुवित्रासनिवर्त्तनमिवाऽपरम् । सकौस्तुभप्रभाचक्रं बिभ्राणम्प्रवलारुणम्
पराञ्चतुर्मुखोत्पत्तिकल्पसंकल्पनामिव । शरणंस जगामाऽऽशुविनीतात्मास्तुवन्निति
तस्मिन्नवसरेशम्भुःसर्वदेवगणैःसह । तुष्टाव प्रयतोभूत्वा विष्णुं जिष्णुंसुरद्विषाम्

ईश्वर उवाच

संसारार्णवसंतारसुपर्णमुखदायिने । मोहतीव्रतमोहारिचन्द्राय हरये नमः ॥ २४ ॥
स्फुरत्सम्विन्मणिशिखां चित्तसङ्गतिचन्द्रिकाम् ।
प्रपद्ये भगवद्भक्तिमानसोद्यानवाहिनीम् ॥ २५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हेलोल्लसत्समुत्साहशक्तिव्याप्तजगत्त्रयम्। यापूर्वकोटिर्भावानांसत्वानांवैष्णवीतिवा
पवनान्दोलिताम्भोजदलपर्वान्तवर्त्तिनाम् । पतताभिवजन्तूनांस्थैर्यमेका हरिस्मृतिः

नमः सूर्य्यात्मने तुभ्यं साम्वित्किरणमालिने ।
हृत्कुशेशयकोषश्रीसमुन्मेषविधायिने ॥ २८ ॥

नमस्तस्मै यमवते योगिनांगतये सदा । परमेशाय वै पारे सहसां तमसां तथा ॥
यज्ञाय भुक्तहविष ऋग्यजुःसामरूपिणे । नमः सरस्वतीगीतदिव्यसद्गुणशालिने ॥
शान्ताय धर्मनिधये क्षेत्रज्ञायाऽमृतात्मने । शिष्ययोगप्रतिष्ठाय नमो जीवैकहेतवे ॥

घोराय मायाविधये सहस्रशिरसे नमः ॥ ३१ ॥

योगनिद्रात्मनेनाभिपद्मोद्भूतजगत्सृजे । नमः सलिलरूपाय कारणाय जगत्स्थितेः
कार्यमेयाय बलिने जीवाय परमात्मने । गोप्त्रे प्राणाय भूतानां समो विश्वायवेधसे
दृप्ताय सिंहवपुषे दैत्यसंहारकारिणे । वीर्यायाऽनन्तमनसे जगद्भावभृते नमः ॥ ३४ ॥
संसारकारणाज्ञानमहासन्तमसच्छिदे । अचिन्त्यधाम्ने गुह्याय रुद्रायात्युद्विजेनमः ॥
शान्ताय शान्तकल्लोलकैवल्यपददायिने । सर्वभावातिरिक्ताय नमः सर्वमयात्मने ॥

इन्दीवरदलश्यामं स्फूर्जत्किञ्जल्कविभ्रमम् ।
विभ्राणं कौस्तुभं विष्णुं नौमि नेत्ररसायनम् ॥ ३७ ॥

अगस्त्य उवाच

इति स्तुतः प्रसन्नात्मा वरदो गरुडध्वजः । ववर्ष दृष्टिसुधया सर्वान्देवान्कृपान्वितः

उवाच मधुरं वाक्यं प्रश्रयावनतान्सुरान् ॥ ३८ ॥

श्रीभगवानुवाच

जानामि विबुधाः सर्वमभिप्रायं समाधितः। दैतेयैर्विक्रमाक्रान्तं पदं समरदर्पितैः ॥
सबलैर्बलहीनानां प्रतापो विजितःपरैः । साम्प्रतं तु विधास्यामितपोयुष्मद्बलायवै
अयोध्यानगरेगत्वा करिष्येतपउत्तमम् । गुप्तो भूत्वा भवत्तेजोविवृद्ध्यैदैत्यशान्तये

भवन्तोऽपि तपस्तीव्रं कुर्वन्त्वमलमानसाः ।
अयोध्यां प्राप्यतांदेवादैत्यनाशाय सत्वरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवान्देवो गरुडवाहनः । अयोध्यामागतः क्षिप्रश्चकार तप उत्तमम्
गुप्तो भूत्वा यदा विद्वन्सुरतेजोऽभिवृद्धये । तेन गुप्तहरिर्नाम देवो विख्यातिमागतः
आगतस्य हरेः पूर्वं यत्र हस्ततलाच्च्युतम् ।
सुदर्शनाख्यं तच्चक्रं तेन चक्रहरिः स्मृतः ॥ ४५ ॥
तयोर्दर्शनमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते । हरेस्तेन प्रभावेण देवाः प्रबलतेजसा ॥ ४६ ॥
जित्वा दैत्यान्रणैः सर्वान्संप्राप्य स्वपदान्यथ । रेजिरेविपुलानन्दैरसुरानार्दयंस्ततः
ततः सर्वे समेत्याशुबृहस्पतिपुरस्सराः । देवाः सर्वेऽनमन्मौलिमालार्चितपदाम्बुजम्
हरिं द्रष्टुमथागच्छन्नयोध्यायां समुत्सुकाः ॥ ४८ ॥
आगत्य चततःश्रुत्वानानाविधगुणादरम् । भावैःपुण्यैःसमभ्यर्च्यनत्वाप्राञ्जलयस्तदा
हरिमेकाग्रमनसा ध्यायन्तो ध्याननिष्ठिताः ॥ ४९ ॥
तानागतान्समालोक्यपदभक्त्याकृताननतीन् । प्रसन्नः प्राहविश्वात्मापीतवासाजनार्दनः

श्रीभगवानुवाच

भोभोदेवाभवन्तश्चचिराद्दिष्ट्याद्यसंगताः । अधुनाभवतामिच्छांकांकरोमिसुराअहम्
तद्ब्रूत त्वरिता मह्यं किं विलम्बेन निर्भयाः ॥ ५१ ॥

देवा ऊचुः

भगवन्देवदेवेश! त्वया सम्प्रति सर्वशः । सर्वं समभवत्कार्यं निष्पन्नं वै जगत्पते! ॥
तथापिसर्वदाभाव्यं नित्यंदेवत्वयाविभो! । अस्मद्रक्षार्थमत्रैव विजितेन्द्रियवर्त्मना
एवमेव सदा कार्यं शत्रुपक्षविनाशनम् ॥ ५४ ॥

श्रीभगवानुवाच

एवमेतत्करिष्यामि भवतामरिसञ्जयम् । श्रीमत्तां तेजसो वृद्धिं करिष्यामिसदासुराः
कथयेयश्च सदा ख्यातिं लोके यास्यति चोत्तमाम् ॥ ५५ ॥
अयं नाम्ना गुप्तहरिर्देवो भुवनविश्रुतः । मदीयं परमं गुह्यं स्थानं ख्यातिं समेष्यति
अत्र यः प्राणिनां श्रेष्ठःपूजायज्ञजपादिकम् । करोतिपरयाभक्त्यासयातिपरमांगतिम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्र यः कुरुतेदानं यथाशक्तया जितेन्द्रियः। स स्वर्गमतुलंप्राप्यनशोचति कदाचन
अत्र मत्प्रीतये देवाः प्राणिभिर्धर्मकाङ्क्षिभिः।
दातव्या गौः प्रयत्नेन सवत्सा विधिपूर्वकम् ॥ ५६ ॥
स्वर्णश्रृङ्गी रौप्यखुरी वस्त्रद्वयसमावृता। कांस्योपदोहना ताम्रपृष्ठीबहुगुणान्विता
रत्नपुच्छा दुग्धवती घण्टाभरणभूषिता।
अर्चिता गन्धपुष्पाद्यैः सुप्रसन्नाऽमृतप्रजा ॥ ६१ ॥
द्विजाय वेदविज्ञाय गुणिने निर्मलात्मने। विष्णुभक्तायविदुषे आनृशंस्यरताय च ॥
ब्राह्मणायच गौर्देया सर्वत्र सुखमश्नुते। न देया द्विजमात्राय दातारं सोऽवपातयेत्
मत्प्रीतयेऽत्र दातव्या निर्मलेनान्तरात्मना। स्नातं यैश्च विशुद्ध्यर्थमत्र मद्भक्तितत्परैः
तेषां स्वर्गतयो नित्यं मुक्तिः करतलेस्थिता ॥ ६५ ॥
तथा चक्रहरेः पीठे मत्प्रीत्यै दानमुत्तमम्। जपहोमादिकञ्चापि कर्त्तव्यं यत्नतोनरैः
भवन्तोऽपि विधानेनयात्रांकुर्वन्तुसत्तमाः। अस्माद्गुप्तहरेः स्थानान्निकटेसङ्गमेशुभे
प्रत्यग्भागे गोप्रताराद्योजनत्रयसंमिते। वर्घराम्बुतरङ्गिण्या सरयूः सङ्गता यतः ॥६८
अत्र स्नात्वा विधानेन द्रष्टव्योऽत्र प्रयत्नतः।
देवो गुप्तहरिर्नाम सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥ ६९ ॥

अगस्त्य उवाच

इत्युक्त्वान्तर्दधेदेवः पीताम्बरधरोऽच्युतः। देवाअपिविधानेन कृत्वा यात्रांप्रयत्नतः
अयोध्यायां स्थिता नित्यं हरेर्गुणविमोहिताः ॥ ७० ॥
तदाप्रभृति विप्रेन्द्र! तत्स्थानम्भुवि पप्रथे।
कार्त्तिक्यां तु विशेषेण यात्रा साम्वत्सरी भवेत् ॥ ७१ ॥
विभोर्गुप्तहरेस्तत्र सङ्गमस्नानपूर्विका। गोप्रतारेच तीर्थेऽस्मिन्सरयूवर्घराश्रिते ॥
स्नात्वा देवोऽर्चनीयोऽयं सर्वकामफलप्रदः ॥ ७२ ॥
तथा चक्रहरेर्यात्रा कर्त्तव्या सुप्रयत्नतः। मार्गशीर्षस्य विशदे पक्षे हरितिथौ नरैः
एवं यः कुरुते यात्रां विष्णुलोके स मोदते ॥ ७४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीसूत उवाच

एवमुक्त्वा तु विरते मुनौ कलशजन्मनि । कृष्णद्वैपायनो व्यासःपुनराह सविस्मयः

व्यास उवाच

अत्याश्चर्य्यमयीं ब्रह्मन्कथामेतां तपोधन! । उक्तवानसि येनैतत्साश्चर्य्यं मममानसम्
विस्तरेण मम ब्रूहि माहात्म्यं परमाद्भुतम् । शृणुसङ्गममाहात्म्यंविप्रेन्द्र! परमाद्भुतम्
स्कन्ददेवाच्छ्रुतं सम्यक्कथयामि तथा तव ॥ ७८ ॥
दशकोटिसहस्राणि दशकोटिशतानिच । तीर्थानि सरयूनद्या घर्घरोदकसङ्गमे ॥
निवसन्ति सदा विप्र! स्कन्दादवगतं मया ॥ ७९ ॥
देवतानां सुराणाञ्च सिद्धानां योगिनां तथा ।
ब्रह्मविष्णुशिवानाञ्च सान्निध्यं सर्वदा स्थितम् ॥ ८० ॥
तस्मिन्सङ्गमसलिलेनरःस्नात्वासमाहितः । सन्तर्प्य पितृदेवांश्चदत्त्वादानंस्वशक्तितः
हुत्वा वैष्णवमन्त्रेण शुचिर्यत्फलमाप्नुयात् ।
तदिहैकमना विप्र! शृणु यत्कथयामि ते ॥ ८२ ॥
अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च । कुरुक्षेत्रे महाक्षेत्रे राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ ८३ ॥
सुवर्णदाने यत्पुण्यमहन्यहनि तद्भवेत् ॥ ८४ ॥
अमावास्यांपौर्णमास्यांद्वादश्योरुभयोरपि । अयनेचव्यतीपातेस्नानंवैष्णवलोकदम्
तिष्ठेद्युगसहस्रन्तु पादेनैकेन यः पुमान् । विधिवत्सङ्गमेस्नायात्पौष्यांतदविशेषतः
लम्बतेऽवाक्छिरा यस्तु युगानामयुतं पुमान् ।
स्नातानां शुचिभिस्तोयैः सङ्गमे प्रयतात्मनाम् ॥ ८७ ॥
व्युष्टिर्भवति या पुंसां न सा क्रतुशतैरपि ॥ ८८ ॥
पौषे मासि विशेषेण स्नानं बहुफलप्रदम् ॥ ८९ ॥
पौषे मासि विशेषेण यः कुर्यात्स्नानमादृतः ।
ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यः शूद्रो वा वर्णसङ्करः ॥
स याति ब्रह्मणः स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितम् ॥ ९० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पौषे मासि तु यो दद्याद् घृताढ्यं दीपमुत्तमम् ।
विधिवच्छ्रद्धया विप्र! शृणु तस्याऽपि यत्फलम् ॥ ९१ ॥

नानाजन्मार्जितं पापं स्वल्पंवह्वपिवाभवेत् । तत्सर्वंनश्यति क्षिप्रं तोयस्थंलवणंयथा
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सन्ततीःसौख्यमुत्तमम् । प्राप्नोतिफलदंनित्यंदीपदःपुण्यभाङ्नरः
यस्तु शुक्लत्रयोदश्यां पौषेऽत्र प्रयतो व्रती । जागरं कुरुतेधीरः स गच्छेद्भवनंहरेः
जागरं विदधद्रात्रौ दीपं दत्त्वा तु सर्वशः । होमञ्च कारयेद्विप्रो नियतात्माशुचिव्रतः

वैष्णवो विष्णुपूजाञ्च कुर्वञ्छृण्वन्हरेःकथाम् ।
गीतवादित्रनृत्यैश्च विष्णुतोषणकारकैः ॥
कथाभिः पुण्ययुक्ताभिर्जागृयाच्छर्वरीं नरः ॥ ९६ ॥
ततः प्रभाते विमले स्नात्वा विधिवदादरात् ।
विष्णुं सम्पूज्य विप्रांश्च देयं स्वर्णादि शक्तितः ॥ ९७ ॥
स्वर्णं चाऽन्नञ्च वासांसि योदद्याच्छ्रद्धयाऽन्वितः ।
सङ्गमे विधिवद्विद्वान्स याति परमां गतिम् ॥ ९८ ॥
वर्षे वर्षे तु कर्त्तव्यो जागरः पुण्यतत्परैः ॥ ९९ ॥
हरिः पूज्यो द्विजाः सम्यक्सन्तोष्याः शक्तितो नरैः ।
तेन विष्णोः परातुष्टिः पापानि विफलानि च ।
भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा ताक्ष्यर्स्य दर्शनात् ॥ १०० ॥
तत्र स्नातो दिवं याति अत्र स्नातः सुखी भवेत् ॥ १०१ ॥
त्रिषु लोकेषु ये केचित्प्राणिनः सर्व एव ते ।
तर्प्यमाणाः परां तृप्तिं यान्ति सङ्गमजैर्जलैः ॥ १०२ ॥

भूतानामिहसर्वेषां दुःखोपहतचेतसाम् । गतिमन्वेषमाणानां न सङ्गमसमा गतिः ॥
सप्तावरान्सप्त परान्पुरुषश्चाऽऽत्मना सह । पुंसस्तारयते सर्वान्सङ्गमे स्नानमाचरन्
जात्यन्धैरिह ते तुल्यास्तथा पङ्गुभिरेव च । समेत्याऽत्रचनस्नान्ति सरयूघर्घरसङ्गमे
वर्णानां ब्राह्मणो यद्वत्तथा तीर्थेषु सङ्गमः । सरयूघर्घरायोगे वैष्णवस्थो नरः सदा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्र स्नानेन दानेन यथाशक्त्याजितेन्द्रियः । होमेनविधियुक्तेननरःस्वर्गमवाप्नुयात्
नरो वा यदि वा नारी विधिवत्स्नानमाचरेत् ।
स्वर्गलोकनिवासो हि भवेत्तस्य न संशयः ॥ १०८ ॥
यथा वह्निर्दहेत्सर्वं शुष्कमार्द्रमथाऽपिवा । भस्मीभवन्तिपापानितत्समागममज्जनात्
एकतः सर्वतीर्थानि नानाविधिफलानि वै । सरयूघर्घरोत्पन्नसङ्गमस्त्वधिको भवेत्
सर्वतीर्थावगाहस्यफलंयादृक्स्मृतं श्रुतौ । तादृक्फलंनृणांसम्यग्भवेत्सङ्गममज्जनात्
गोप्रताराभिधं तीर्थमपरं वर्ततेऽनघ! । सन्निधौ सङ्गमस्यैव महापातकनाशनम् ११२
यत्रस्नानेन दानेन न शोचति नरः क्वचित् । गोप्रतारसमं तीर्थं न भूतं न भविष्यति
वाराणस्यां यथा विद्वन्वर्त्तते मणिकर्णिका ।
उज्जयिन्यां यथा विप्र! महाकालनिकेतनम् ॥ ११४ ॥
नैमिषे चक्रवापी तु यथा तीर्थतमास्मृता । अयोध्यायांतथाविप्रगोप्रताराभिधंमहत्
यत्र रामाज्ञया विद्वन्साकेतनगरीजनाः । अवापुः स्वर्गमतुलं निमज्ज्य परमाम्भसि ॥

व्यास उवाच

अवापुस्ते कथं स्वर्गं साकेतनगरीजनाः । कथञ्च राघवो विद्वन्नेतत्कथय सुव्रत ! ॥

अगस्त्य उवाच

सावधानः शृणु मुने!कथामेतांसुविस्तरात् । यथाजगामरामोऽसौस्वर्गंसचपुरीजनः
पुरा रामो विधायैव देवकार्य्यमतन्द्रितः । स्वर्गं गन्तुं मनश्चक्रे भ्रातृभ्यांसहवीरधीः
ततो निशम्य चारेण वानराः कामरूपिणः । ऋक्षगोपुच्छरक्षांसि समुत्पेतुरनेकशः
देवगन्धर्वपुत्राश्च ऋषिपुत्राश्च वानराः । रामक्षयं विदित्वा तु सर्व एव समागताः ॥
ते राममनुगत्योचुः सर्वे वानरयूथपाः । तवाऽनुगमने राजन्सम्प्राप्ताःस्मइहानघ! ॥
यदि राम विनास्माभिर्गच्छेस्त्वं पुरुषर्षभ! । सर्वे खलुहताः स्याम दण्डेन महतान्नृप
श्रुत्वा तु वचनं तेषामृक्षवानररक्षसाम् । विभीषणमुवाचाऽथ राघवस्तत्क्षणं गिरा
यावत्प्रजाधरिष्यन्ति तावदेव विभीषण! । कारयस्वमहद्राज्यंलङ्कांत्वंपालयिष्यसि
शाधि राज्यञ्च खल्वेतन्नान्यथा मे वचः कुरु ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रजास्त्वं रक्ष धर्मेण नोत्तरं वक्तुमर्हसि ॥ १२६ ॥
एवमुक्त्वा तु काकुत्स्थोहनुमन्तमथाब्रवीत् । वायुपुत्रचिरञ्जीवमाप्रतिज्ञां वृथाकृथाः
यावल्लोका वदिष्यन्ति मत्कथां वानरर्षभ! । तावत्त्वंधारयप्राणान्प्रतिज्ञांप्रतिपालयन्
मैन्दश्च द्विविदश्चैव अमृतप्राशनावुभौ । यावल्लोका धरिष्यन्ति तावदेतौ धरिष्यतः
पुत्रपौत्राश्च येऽस्माकं तान्रक्षन्त्विह वानराः ।
एवमुक्त्वा तु काकुत्स्थः सर्वानथ च वानरान्
मया सार्धं प्रयातेति तदा तान्राघवोऽब्रवीत् ॥ १३० ॥
प्रभातायां तु शर्वर्यां पृथुवक्षा महाभुजः । रामः कमलपत्राक्षः पुरोधसमथाऽब्रवीत्
अग्निहोत्राणि यान्त्वग्रेदीप्यमानानिसर्वशः । वाजपेयातिरात्राणिनिर्यान्तुचममाग्रतः
ततो वसिष्ठस्तेजस्वी सर्वं निश्चित्य चेतसा ।
चकार विधिवत्कर्म महाप्रास्थानिकम्विधिम् ॥ १३३ ॥
ततः क्षौमाम्बरधरो ब्रह्मचर्यसमन्वितः । कुशानादाय पाणिभ्यां महाप्रस्थानमुद्यतः
न व्याहरच्छुभं किञ्चिदशुभं वा नरेश्वरः । निष्क्रम्यनगरात्तस्मात्सागरादिवचन्द्रमाः
रामस्य सव्यपार्श्वे तु सपद्मा श्रीः समाश्रिता ।
दक्षिणे ह्रीर्विशालाक्षी व्यवसायस्तथाऽग्रतः ॥ १३६ ॥
नानाविधायुधान्यत्र धनुर्ज्याप्रभृतीनि च । अनुव्रजन्ति काकुत्स्थं सर्वेपुरुषविग्रहाः
वेदो ब्राह्मणरूपेणसावित्रीसव्यदक्षिणे । ॐकारोऽथवषट्कारःसर्वेरामं तदाऽव्रजन्
ऋषयश्चमहात्मानःसर्वे चैवमहीधराः । अनुगच्छन्तिकाकुत्स्थंस्वर्गद्वारमुपस्थितम्
तथानुयान्ति काकुत्स्थमन्तःपुरगताःस्त्रियः । सवृद्धाबालदासीकाःसपर्षद्द्वाररक्षकाः
सान्तःपुरश्च भरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ । रामं व्रजन्तमागम्य रघुवंशमनुव्रताः ॥१४१
ततोविप्रामहात्मानःसाग्निहोत्राःसमन्ततः । सपुत्रदाराःकाकुत्स्थमनुगच्छन्तिसर्वशः
मन्त्रिणो भृत्ययुक्ताश्च सपुत्राः सहबान्धवाः ।
सर्वे ते सानुगाश्चैव ह्यनुगच्छन्ति राघवम् ॥ १४३ ॥
ततः सर्वाः प्रकृतयो हृष्टपुष्टजनावृताः । गच्छन्तमनुगच्छन्ति राघवं गुणरञ्जिताः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथा प्रजाश्च सकलाः सुपुत्राश्चसबान्धवाः । राघवस्यानुगाश्चासन्हृष्टाविगतकल्मषम्
स्नाताः शुक्लाम्बरधराः सर्वेप्रयतमानसाः । कृत्वा किलकिलाशब्दमनुयाताश्च राघवम्
न कश्चित्तत्र दीनोऽभून्न भीतोनाऽतिदुःखितः । प्रहृष्टामुदिताः सर्वेबभूवुःपरमाद्भुताः
द्रष्टुकामाश्चनिर्वाणं राज्ञो जनपदास्तथा । सम्प्राप्तास्तेऽपिदृष्ट्वैव नभोमार्गेणचक्रिणा
ऋक्षवानररक्षांसि जनाश्च पुरवासिनः । आगत्य परया भक्त्या पृष्ठतः समुपाययुः ॥
तानिभूतानि नगरेष्वन्तर्धानगतान्यपि । राघवं तेऽप्यनुययुः स्वर्गद्वारमुपस्थितम् ॥

यानि पश्यन्ति काकुत्स्थं स्थावराणि चराणि च ।
सत्त्वानि स्वर्गगमने मतिं कुर्वन्ति तान्यपि ॥ १५१ ॥
नाऽऽसीत्सत्त्वमयोध्यायां सुसूक्ष्ममपि किञ्चन ।
यद्राघवं नाऽनुयाति स्वर्गद्वारमुपस्थितम् ॥ १५२ ॥

अथार्द्धयोजनंगत्वा नदीं पश्चान्मुखो ययौ । सरयूं पुण्यसलिलां ददर्श रघुनन्दनः ॥
अथ तस्मिन्मुहूर्ते तु ब्रह्मालोकपितामहः । सर्वैः परिवृतोदेवैर्ऋषिभिश्च महात्मभिः

आययौ तत्र काकुत्स्थं स्वर्गद्वारमुपस्थितम् ॥ १५४ ॥

विमानशतकोटिभिर्दिव्याभिःसर्वतोवृतः । दीपयन्सर्वतोव्योमज्योतिर्भूतमनुत्तमम्
स्वयंप्रभैश्च तेजोभिर्महद्भिःपुण्यकर्मभिः । पुण्या वाता ववुस्तत्रगन्धवन्तः सुखप्रदाः
सपुण्यपुष्पवर्षैश्च वायुयुक्तं महाजवम् । गन्धर्वैरप्सरोभिश्च तस्मिन्सूर्यउपस्थितः ॥

सरयूसलिलं रामः पद्भ्यां स समुपास्पृशत् ।
ततो ब्रह्मा सुरैर्युक्तं स्तोतुं समुपचक्रमे ॥ १५८ ॥

त्वं हि लोकपतिर्देव न त्वां जानाति कश्चन । अहं ते वै विशालाक्ष! भूतपूर्वपरिग्रहः
त्वमचिन्त्यं महद्भूतमक्षयंलोकसंग्रहे । यामिच्छसिमहावीर्यतांतनुं प्रविशस्वकाम्
पितामहस्य वचनादिदमेवाविशत्स्वयम् । सुदिव्यं वैष्णवं तेजः संसारंससहानुजः

ततो विष्णुतनुं देवाः पूजयन्तः सुरोत्तमम् ॥ १६१ ॥

साध्यामरुद्गणाश्चैवसेन्द्राःसाग्निपुरोगमाः । येचदिव्याऋषिगणागन्धर्वाप्सरसस्तथा

सुवर्णा नागयज्ञाश्च दैत्यदानवराक्षसाः ॥ १६२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवाः प्रहृष्टा मुदिताः सर्वे पूर्णमनोरथाः । साधुसाध्विततितेसर्वेत्रिदिवस्थावभाषिरे
अथ विष्णुर्महातेजाः पितामहमुवाच ह । एषां लोकं जनौघानां दातुमर्हसि सुव्रत
इमे तु सर्वेमत्स्नेहादायाताःसर्वमानवाः । भक्ताश्चभक्तिमन्तश्चत्यक्तात्मानोऽपिसर्वशः

तच्छ्रुत्वा विष्णुकथितं सर्वलोकेश्वरोऽब्रवीत् ।
लोकं सन्तानिकं नाम संस्थास्यन्ति हि मानवाः ॥ १६६ ॥

स्वर्गद्वारेऽत्रवैतीर्थेराममेवानुचिन्तयन् । प्राणांस्त्यजतिभक्तयावैससन्तानम्परंलभेत्

सर्वे सन्तानिकं नाम ब्रह्मलोकादनन्तरम् ।
वानराश्च स्वकां योनिं राक्षसाश्चाऽपि राक्षसीम् ॥ १६८ ॥

यस्या विनिःसृता ये वै सुरासुरतनूद्भवाः । आदित्यतनयश्चैव सुग्रीवः सूर्यमण्डलम्
ऋषयो नागयक्षाश्च प्रयास्यन्ति स्वकारणम् । तथाब्रुवतिदेवेशेगोप्रतारमुपस्थितम्
तज्जलं सरयूं भेजे परिपूर्णं ततोजलम् । अवगाह्य जलं सर्वे प्राणांस्त्यक्त्वाप्रहृष्टवत्
मानुषं देहमुत्सृज्य तेविमानान्यथाऽऽरुहन् । तिर्यग्योनिगतायेच प्रविश्य सरयूं तदा
देहत्यागञ्चतेतत्रकृत्वादिव्यवपुर्द्धराः । तथान्यान्यपि सत्त्वानि स्थावराणिचराणिच
प्राप्य चोत्तमदेहं वै देवलोकमुपागमन् । तस्मिंस्तत्र समापन्ने वानरा ऋक्षराक्षसाः

तेऽपि प्रविविशुः सर्वे देहान्निक्षिप्य वै तदा ॥ १७४ ॥

तदा स्वर्गंगताःसर्वेस्मृत्वालोकगुरुंविभुम् । जगामत्रिदशैः सार्द्धं रामोहृष्टोमहामतिः
अतस्तद्गोप्रताराख्यं तीर्थंविख्यातिमागतम् । गोप्रतारे परोमोक्षोनान्यतीर्थेषुविद्यते
जन्मान्तरशतैर्विप्र योगोऽयं यदि लभ्यते । मुक्तिर्भवतितत्त्वेकजन्मनालभ्यते न वा
गोप्रतारेण सन्देहोहरिर्भक्तयासुनिष्ठितः । एकेनजन्मनान्योऽपियोगमोक्षञ्चविन्दति

गोप्रतारे नरो विद्वान्योऽपि स्नाति सुनिश्चितः ।
विशत्यसौ परं स्थानं योगिनामपि दुर्लभम् ॥ १७६ ॥
कार्त्तिक्याश्च विशेषेण स्नातव्यं विजितेन्द्रियैः ।
कार्त्तिके मासि विप्रर्षे सर्वे देवाः सवासवाः ॥
स्नातुमायान्त्ययोध्यायां गोप्रतारे विशेषतः ॥ १८० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोप्रतारसमं तीर्थं न भूतं न भविष्यति । यत्र प्रयागराजोऽपि स्नातुमायातिकार्त्तिके

निष्पापःकलुषं त्यक्त्वा शुक्लाङ्गः सितकञ्चुकः ।
शुद्ध्यर्थं साधु कमोऽसौ प्रयागे मुनिसत्तम! ॥ १८२ ॥
यानि कानि च तीर्थानि भूमौ दिव्यानि सुव्रत! ।
कार्त्तिक्यां तानि सर्वाणि गोप्रतारे वसन्ति वै ॥ १८३ ॥

गोप्रतारे जपो होमः स्नानं दानञ्च शक्तितः । सर्वमक्षयतां याति श्रद्धयानियमव्रतम्

कार्त्तिके प्राप्य तद्यान्ति तीर्थानि सकलान्यपि ।
गोप्रतारं गमिष्यामः पापं त्यक्तुमितीच्छया ॥ १८५ ॥

गोप्रतारे कृतं स्नानं सर्वपापप्रणाशनम् । गोप्रतारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा गुप्तहरिंविभुम्

सर्वपापैः प्रमुच्येत नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ १८६ ॥

विष्णुमुद्दिश्य विप्राणां पूजनञ्च विशेषतः । कर्त्तव्यं श्रद्धया युक्तैः स्नानपूर्वं यतव्रतैः
पयस्विनी च गौर्देया सालङ्कारा च शक्तितः । विप्राय वेदविदुषे नियमव्रतशालिने

ब्राह्मणायाऽतिशुचये विष्णुप्रीत्यै यतात्मना ॥ १८८ ॥

अन्नं बहुविधं हेमवासांसिविविधानिच । दातव्यानि हरेः प्राप्त्यैभक्त्यापरमयायुतैः
सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे नर्मदायां शशिग्रहे । तुलादानस्य यत्पुण्यं तदत्र दीपदानतः ॥१९०॥
घृतेन दीपको यस्य तिलतैलेन वा पुनः । ज्वलते मुनिशार्दूल! हयमेधेन तस्य किम्
तेनेष्टं क्रतुभिः सर्वैः कृतं तार्थावगाहनम् । दीपदानं कृतं येन कार्त्तिके केशवाग्रतः ॥

नानाविधानि नीर्थानि भुक्तिमुक्तिप्रदानि च ।
गोप्रतारस्य तान्यत्र कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ १९३ ॥

स्वर्णमल्पञ्च यो दद्याद्ब्राह्मणे वेदपारगे । शुभाङ्गतिमवाप्नोति ह्यग्निवच्चैव दीप्यते

गोप्रताराभिधे तीर्थे त्रिलोकी विश्रुते द्विज! ।
दत्त्वाऽन्नञ्च विधानेन न स भूयोऽभिजायते ॥ १९५ ॥

तत्र स्नानंतु यः कुर्याद्विप्रान्संतर्पयेन्नरः । सौत्रामणेश्च यज्ञस्य फलम्प्राप्नोतिमानवः
एकाहारस्तु यस्तिष्ठेन्मासं तत्र यतव्रतः । यावज्जीवकृतं पापं सहसा तस्य नश्यति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अग्निप्रवेशं ये कुर्यु र्गोप्रतारे विधानतः। तेविशन्ति पदं विष्णोर्निःसन्दग्धं तपोधन
कुर्वन्त्यनशनं येऽत्र विष्णुभक्त्या सुनिश्चिताः॥
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥ १९९ ॥
अर्चयेद्यस्तु गोविन्दं गोप्रतारे हि मानवः॥
दशसौवर्णिकं पुण्यं गोप्रतारे प्रकथ्यते ॥ २०० ॥
अग्निहोत्रफलो धूपो गोविन्दस्य समर्पितः॥
भूमिदानेन सदृशं गन्धदानफलं स्मृतम् ॥ २०१ ॥
अत्यद्भुतमिदं विद्वन्स्थानमेतत्प्रकीर्तितम् ॥
कार्त्तिक्यां तु विशेषेण अत्र स्नात्वा शुचिव्रतः॥ २०२ ॥
स्वर्गद्वारेनरःस्नात्वादशस्वर्णफलंलभेत् ।स्वर्णदःस्वर्गवासीचयोदद्याच्छ्रद्धयान्वितः
सुतीर्थे पर्वणि श्रेष्ठे दशस्वर्णफलप्रदे। ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यां रात्रौ जागरणं चरेत् ॥
उपोषितः शुचिः स्नातो विष्णुपूजनतत्परः। दीपंदद्यात्प्रयत्नेननानाफलविधायिनम्
तावद्गर्जन्ति पुण्यानि स्वर्गे मर्त्ये रसातले। यावद्द्याज्जले दीपं कार्त्तिके केशवाग्रतः
पौर्णमास्यांप्रभातेतुस्नात्वानिर्मलमानसः। हरिंसम्पूज्यविधिवद्विधायश्राद्धमादरात्
दत्त्वाऽन्नंचयथाशक्त्यासन्तोष्यब्राह्मणांस्ततः।वस्त्रादिभिरलङ्कारैःसम्पूज्यद्विजदम्पती
विभुंगुप्तहरिं दृष्ट्वा सम्पूज्य तु विशेषतः। नमस्कृत्याऽनु तत्तीर्थं शुचिस्तद्गतमानसः
स्वर्गद्वारे च विधिवन्मध्याह्ने स्नानमाचरेत्।
सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोके महीयते ॥ २१० ॥
इति परमविधानैर्गोप्रतारे विधाय प्रथितसुकृतमूर्त्तिः स्नानमुच्चैः प्रयत्नात्।
कलितनिखिलपापः पूजयित्वाऽऽदरेणाऽच्युतममलविकाशोविष्णुसायुज्यमेति
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
ऽयोध्यामाहात्म्ये स्वर्गद्वारगोप्रतारतीर्थमाहात्म्यवर्णनं
नाम षष्ठोऽध्यायः॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तमोऽध्यायः

क्षीरोदकादिघोषार्ककुण्डान्तमाहात्म्यवर्णनम्

अगस्त्य उवाच

तीर्थमन्यत्प्रवक्ष्यामि क्षीरोदकमिति स्मृतम् ।
सीताकुण्डाच्च वायव्ये वर्त्तते गुणसुन्दरम् ॥
पुण्यैकनिचयस्थानं सर्वदुःखविनाशनम् ॥ १ ॥

पुरा दशरथो राजा पुत्रेष्टिं नाम नामतः । चकार विधिवद्यज्ञं पुत्रार्थं च चाऽऽदरात्
क्रतुं समापयामास सानन्दो भूरिदक्षिणम् । यज्ञान्ते क्रतुभुक्तत्र मूर्तिमान्समदृश्यत
हस्ते कृत्वा हेमपात्रंहविःपूर्णमनुत्तमम् । तस्मिन्हविषिसङ्कीर्णं वैष्णवं तेजउत्तमम्
चतुर्विधंविभज्यैवपत्नीभ्योदत्तवान्नृपः ॥ ४ ॥

यत्र तत्क्षीरसम्प्राप्तिर्जाता परमदुर्ल्लभा । क्षीरोदकमितिख्याततंतत्स्थानंपापनाशनम्
उदकेनाभिव्यक्तं च उत्तमञ्च फलप्रदम् ॥ ५ ॥

तत्र स्नात्वा नरो धीमान्विजितेन्द्रिय आदरात् ।
सर्वान्कामानवाप्नोति पुत्रांश्च सुबहुश्रुतान् ॥ ६ ॥

आश्विनेशुक्लपक्षस्यएकादश्यांजितव्रतः । तत्रस्नात्वा विधानेनदत्त्वाशक्त्याद्विजन्मने
विष्णुं सम्पूज्य विधिवत्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
पुत्रानवाप्नुयाद्धिद्धिं धर्मांश्च विधिवन्नरः ॥ ८ ॥

तस्मात्क्षीरोदकस्थानान्नैर्ऋते दिग्दले श्रितम् ।
ख्यातं बृहस्पतेः कुण्डमुद्दण्डाचण्डमण्डितम् ॥ ९ ॥

सर्वपापप्रशमनं पुण्यामृततरङ्गितम् । यत्र साक्षात्सुरगुरुर्निवासं किल निर्ममे ॥ १० ॥
यज्ञश्च विधिवच्चक्रे बृहस्पतिरुदारधीः । नानामुनिगणैर्युक्तं रम्यं बहुफलप्रदम् ॥
सुपर्णच्छायसम्पन्नं कुण्डं तत्पापिदुर्ल्लभम् ॥ ११ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रादयोऽपि विबुधा यत्र स्नात्वा प्रयत्नतः ॥
मनोऽभीष्टफलं प्राप्ताः सौन्दर्यौदार्यतुन्दिलाः ॥ १२ ॥
यत्र स्नानेन दानेन नरो मुच्येत किल्बिषात् ॥ १३ ॥
भाद्रे शुक्ले तु पञ्चम्यां यात्रा तत्र फलप्रदा। अन्यदाऽपिगुरोर्वारेस्नानं बहुफलप्रदम्
बृहस्पतेस्तथा विष्णोः पूजां तत्र य आचरेत् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके स मोदते ॥ १५ ॥
भवेद्बृहस्पतेः पीडा यस्यगोचरवेधतः । तेनाऽत्रविधिवत्स्नानंकार्यं सङ्कल्पपूर्वकम्
होमंकृत्वा गुरोर्मूर्तिःसुवर्णेनविनिर्मिता । स्थित्वाजले प्रदेयावै पीताम्बरसमन्विता
वेदज्ञायाऽतिशुचये स्नात्वा पीडापनुत्तये । होमश्च कारयेत्तत्र ग्रहजाप्यविधानतः ॥
एवं कृते न सन्देहो ग्रहपीडा प्रणश्यति ॥ १६ ॥
तद्दक्षिणे मुनिश्रेष्ठरुक्मिणीकुण्डमुत्तमम् । चकारयत्स्वयंदेवीरुक्मिणीकृष्णवल्लभा
तत्र विष्णुः स्वयं चक्रे निवासंसलिलेतदा । वरप्रदानात्स्नेहेनभार्यायाःप्रगुणीकृतम्
तत्र स्नानं तथा दानं होमं वैष्णवमन्त्रकम् । द्विजपूजां विष्णुपूजांकुर्वीतप्रयतोनरः
तत्र साम्वत्सरी यात्रा कर्त्तव्या सुप्रयत्नतः । ऊर्ज्जकृष्णनवम्याञ्च सर्वपापापनुत्तये
पुत्रवाञ्जायते वन्ध्यो यात्रां कृत्वा न संशयः ।
नारीभिर्वा नरैर्वापि कर्त्तव्यं स्नानमादरात् ॥ २४ ॥
भुक्त्वा भोगान्समग्रांश्च विष्णुलोके स मोदते ।
लक्ष्मीकामनयातत्र स्नातव्यश्च विशेषतः ॥ २५ ॥
सर्वकाममवाप्नोतितत्रस्नानेनमानवः । रुक्मिणीश्रीपतिप्रीत्यैदातव्यश्चस्वशक्तितः
कर्त्तव्या विधिवत्पूजा ब्राह्मणानांविशेषतः । ध्येयोलक्ष्मीपतिस्तत्रशङ्खचक्रगदाधरः
पीताम्बरधरः स्रग्वी नारदादिभिरीडितः । तार्क्ष्यासनोमुकुटवान्महेन्द्रादिविभूषितः
सर्वकामफलावाप्त्यै वक्षोलक्षितकौस्तुभः । अतसीकुसुमश्यामः कमलामललोचनः
एवं कृते न सन्देहः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
इह लोके सुखम्भुक्त्वा हरिलोके स मोदते ॥ ३० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अतः परम्प्रवक्ष्यामि तीर्थमन्यदघापहम् । कलिकिल्विषसंहारकारकं प्रत्ययात्मकम्
परम्पवित्रमतुलं सर्वकामार्थसिद्धिदम् । धनयक्षइतिख्यातं परं प्रत्ययकारकम् ॥३२

रुक्मिणीकुण्डवायव्यदिग्दले संस्मृतं शुभम् ।
हरिश्चन्द्रस्य राजर्षेरासीत्तत्र धनं महत् ॥ ३३ ॥

तस्य रक्षार्थमत्यर्थं रक्षितो यक्षउच्चकैः । विश्वामित्रो मुनिः पूर्वं यदाचैव पराजयत्
हरिश्चन्द्रं नरपतिं राजसूयकरम्परम् । राज्यं जग्राह सकलं चतुरङ्गबलान्वितम् ॥
तद्वशेऽदाच्च स मुनिर्धनं सकलमुत्तमम् । तद्रक्षार्थं प्रयत्नेन यक्षं स्थापितवानसौ ॥

प्रमन्थुरइतिख्यातं प्रमोदानन्दमन्दिरम् ।
रक्षां विदधतस्तस्य बहुयत्नेन सर्वशः ॥ ३७ ॥

तुतोष स मुनिर्धीमान्कन्दाचिद्विजितेन्द्रियः । उवाचमधुरं वाक्यंप्रीत्यापरमयायुतः

विश्वामित्र उवाच

वरं वरय धर्मज्ञ! क्षिप्रमेवविमत्सरः । भक्त्या परमया धीर! सन्तुष्टोऽस्मिविशेषतः

यक्ष उवाच

वरं प्रयच्छसि यदि विप्रवर्य! मदीप्सितम् । ममाङ्गमतिदुर्गन्धि शापाच्च नृपतेरभूत्

सुगन्धयितुं ब्रह्मर्षे! तत्प्रसीदमुनीश्वर! ॥ ४० ॥

अगस्त्य उवाच

एवमुक्ते तु यक्षेण मुनिर्ध्यानस्थलोचनः । तंविविच्यानयाभक्त्याअभिषेकंचकारसः
तीर्थोदकेन विधिवत्कृत्वासङ्कल्पमादरात् । ततः सोऽभूत्क्षणेनैवसुगन्धोत्तरविग्रहः
तथाभूतः स मधुरं प्रोवाचप्राञ्जलिस्ततः । पुनः पुरः स्थितोधीमान्विनयावनतस्तदा

यक्ष उवाच

त्वत्कृपाभिरहंधीर जातः सुरभिविग्रहः । एतत्स्थानं यथाख्यातियातिसर्वज्ञतत्कुरु

त्वत्प्रसादेन विप्रर्षे! तथा यत्नं विधेहि वै ॥ ४५ ॥

अगस्त्य उवाच

एवमुक्तः क्षणं ध्यात्वा मुनिस्तिमितलोचनः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यक्षं प्रति प्रसन्नात्मा ह्युवाच श्लक्ष्णया गिरा ॥ ४६ ॥

विश्वामित्र उवाच

प्रसिद्धिमतुलां यक्ष एतत्स्थानं गमिष्यति । धनयक्ष इतिख्यातिमेतत्तीर्थंगमिष्यति
सौन्दर्य्यदं शरीरस्यपरंप्रत्ययकारकम् । यत्रस्नात्वाविधानेनदौर्गन्ध्यंत्यजतिक्षणात्
तत्र स्नानं प्रयत्नेन कर्त्तव्यं पुण्यकाङ्क्षिभिः ॥ ४८ ॥
दानंश्रद्धास्वशक्तिभ्यांलक्ष्मीपूजाविशेषतः । तत्रस्नानेनदानेन लक्ष्मीप्रीत्यैविशेषतः
पूजया तु निधीनाञ्च नवानामपि सुव्रत! । इहलोके सुखं भुक्त्वा परलोके स मोदते
महापद्मस्तथा पद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च सर्वाश्च निधयो नव
एतेषामपि कुण्डेऽत्र सन्निधिर्भविताऽनघ! । एतेषां तु विशेषेण पूजाबहुफलप्रदा ॥
जलमध्ये प्रकर्त्तव्यं निधिलक्ष्मीप्रपूजनम् ॥ ५३ ॥
अन्नं बहुविधं देयं वासांसि विविधानि च ॥ ५४ ॥
सुवर्णादि यथा शक्त्या वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् । गुप्तंदानं प्रयत्नेनकर्त्तव्यंसुप्रयत्नतः
फलानि च सुवर्णानि देयानि च विशेषतः ॥ ५६ ॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां स्नानं बहुफलप्रदम् । श्रद्धयापरयायुक्तैः कर्त्तव्यंश्रद्धयाऽधिकम्
माघे कृष्णचतुर्दश्यां यात्रा साम्वत्सरी भवेत् ।
तत्र स्नानं पितृणान्तु तर्पणञ्च विशेषतः ॥ ५८ ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यत्विति ब्रुवन् । अपसव्येन विधिवत्तर्प्पयेदञ्जलित्रयम् ॥
एवंकुर्वन्नरोयक्ष! न मुह्यातकदाचन । अत्र स्नातो दिवं याति अत्रस्नातःसुखीभवेत्
अत्र स्नातेन ते यक्ष कर्त्तव्यं पूजनम्पुरः । त्वत्पूजनेन विधिवन्नृणां पापक्षयोभवेत्
नमः प्रमथराजेति पूजामन्त्र उदाहृतः । तीर्थमध्ये प्रकर्त्तव्यं पूजनं श्रवणादिकम् ॥
निधिलक्ष्म्योस्तथायक्ष! तवपूजा विशेषतः । एवंयःकुरुतेधीरसर्वान्कामानवाप्नुयात्
धनार्थी धनमाप्नोति पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति तत्किं न यदिहाऽऽप्यते ॥ ६४
यस्तु मोहान्नरोयक्ष स्नानं नकुरुतेकिल । तस्यसाम्वत्सरंपुण्यंत्वंग्रहीष्यसिसर्वशः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इति दत्त्वा वरांस्तस्मै विश्वामित्रोमुनीश्वरः । अन्तर्दधेमुनिवरस्तदासचतपोनिधिः
तदाप्रभृतितत्स्थानंपरमांख्यातिमाययौ । तस्यतीर्थस्यसकलाभूमिःस्वर्णविनिर्मिता
दिव्यरत्नौघखचिता समन्तादुपशोभिता । एवं यः कुरुते विद्वन्सयातिपरमांगतिम्
धनयक्षादुत्तरस्मिन्दिग्भागेसंस्थितं द्विज! । वसिष्ठकुण्डंविख्यातंसर्वपापापहं सदा

वसिष्ठस्य सदा तत्र निवासः सुतपोनिधेः ।
अरुन्धती सदा यस्य वर्तते निर्मलव्रता ॥ ७० ॥

अत्र स्नानंविशेषेणश्राद्धपूर्वमतन्द्रितः । यः कुर्यात्प्रयतोधीमांस्तस्यपुण्यमनुत्तमम्
वामदेवस्य यत्रैव सन्निधिर्वर्ततेऽनघ! । वशिष्ठवामदेवौतु पूजनीयौ प्रयत्नतः ॥७२॥
पतिव्रतापूजनीयाऽरुन्धतीचविशेषतः । स्नातव्यंविधिनासम्यग्दातव्यञ्चस्वशक्तितः
सर्वकामफलप्राप्तिर्जायते नात्र संशयः । अत्र यः कुरुते स्नानं स वसिष्ठसमो भवेत्
भाद्रेमासिसितेपक्षेपञ्चम्यांनियतव्रतः । तस्यसाम्वत्सरीयात्राकर्त्तव्याविधिपूर्विका

विष्णुपूजा प्रयत्नेन कर्तव्या श्रद्धयाऽत्र वै ।
सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोके महीयते ॥ ७६ ॥
वसिष्ठकुण्डाद् विप्रेन्द्र! प्रत्यग्दिग्दलमाश्रितम् ।
विख्यातं सागरंकुण्डं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥
यत्र स्नानेन दानेन सर्वकामानवाप्नुयात् ॥ ७७ ॥
पौर्णमास्यां समुद्रस्य स्नानाद्यत्पुण्यमाप्नुयात् ।
तत्पुण्यं पर्वणि स्नातो नरश्चाऽक्षयमाप्नुयात् ॥ ७८ ॥

तस्मादत्रविधानेनस्नातव्यंपुत्रकाङ्क्षया । आश्विनेपौर्णमास्यांतुविशेषात्स्नानमाचरेत्
एवं कुर्वन्नरोविद्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते । अत्रस्नात्वा नरोदत्त्वा यथाशक्त्यादिवम्व्रजेत्

सागरान्नैर्ऋतेभागे योगिनीकुण्डमुत्तमम् ।
यत्राऽऽस्ते चतुःषष्टियोगिन्यो जलसंस्थिताः ॥ ८१ ॥

सर्वार्थसिद्धिदाः पुंसांस्त्रीणाञ्चैवविशेषतः । परसिद्धिप्रदाःसर्वाः सर्वकामफलप्रदाः
आश्विने शुक्लपक्षस्य अष्टम्याश्च विशेषतः । स्नातव्यञ्च प्रयत्नेन योगिनीप्रीतयेनृभिः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्रस्तानंतथादानंसर्वंसफलतांव्रजेत् । यक्षिणीप्रभृतयः सिद्धा भवन्त्यत्र नसंशयः
योगिनीकुण्डतः पूर्वमुर्वशीकुण्डमुत्तमम् । यत्र स्नातोनरोविद्वन्नुर्वशींदिविसंश्रयेत्
पुराकिल मुनिर्धीरो रैभ्योनामतपोधनः । चचारहिमवत्पार्श्वे निराहारोजितेन्द्रियः
तत्तपो विपुलं दृष्ट्वा भीतः सुरपतिस्ततः । उर्वशीं प्रेषयामास तपोविघ्नाय चादरात्
ततः सा प्रेषिता तेनाजगाम गजगामिनी । उवास हिमवत्पार्श्वे रैभ्याश्रममनुत्तमम्
नवफुल्ललताकुञ्जे मञ्जुकूजद्विहङ्गमे । किन्नरीकेलिसङ्गीतस्तिमिताङ्गकुरङ्गके ॥८६॥

पुन्नागकेशराशोकच्छिन्नकिञ्जल्कपिञ्जरे ।
कल्पिते काञ्चनगिरौ द्वितीय इव वेधसा ॥ ६० ॥

सा बभौ कान्तिसर्वस्वकोशःकुसुमधन्वनः । उर्वश्यनल्पसामान्यलावण्यामृतवाहिनी
अङ्गप्रभासुवर्णेन सितमौक्तिकशोभिता । तारुण्यरुचिरत्वेन तारुण्येन विभूषिता ॥
विलोललोचनापाङ्गतरङ्गधवलत्विषा । नवपल्लवसच्छायं कल्पयन्ती निजाधरम् ॥

कर्णोपलम्बिसङ्घुष्यद्भृङ्गाढ्यचूतमञ्जरी ।
सुधागर्भसमुद्भूता पारिजातलता यथा ॥ ६४ ॥

तनुमध्या पृथुश्रोणिर्वर्णोद्भिन्नपयोधरा । निःशाणितशरस्येव शक्तिः कुसुमधन्वनः ॥
अपश्यदाश्रमे तस्मिन्मुनिरायतलोचनाम् । नयनानलदाहेन विदग्धेन मनो भुवा ॥६६
त्रिनेत्रवञ्चनायेव कल्पितां ललनातनुम् । ताम्राश्रमलतापुष्पकाञ्चीरचितकुण्डलाम्

विलोक्य तां विशालाक्षीं मुनिर्व्याकुलितेन्द्रियः ।
बभूव रोषसन्तप्तः शशाप च बहु ज्वलन् ॥ ६८ ॥

रैभ्य उवाच

कुरूपतां व्रजक्षिप्रं या त्वं सौन्दर्यगर्विता । समागता तपोविघ्नहेतवे मम सन्निधौ

अगस्त्य उवाच

इति शप्तारुषा तेन मुनिना सा शुभेक्षणा । उवाच वनिता भूत्वा प्राञ्जलिर्मुनिमादरात्

उर्वश्युवाच

भगवन्मे प्रसीद त्वं पराधीनायतस्त्वहम् । त्वच्छापस्य कथं मुक्तिर्भवितानियतव्रत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रैभ्य उवाच

अयोध्यायामस्ति तीर्थं पावनंपरमं महत्। तत्रस्नानंकुरुष्वाऽद्यसौन्दर्यम्परमाप्नुहि

त्वन्नाम्नैव च विख्यातिं तोयं यास्यति तद्ध्रुवम् ॥ १०३ ॥

अगस्त्य उवाच

एवंसाविप्रवचसाविदधेसर्वमादरात्। सुन्दरी साऽभवत्क्षिप्रंतत्स्थानंख्यातिमाययौ

अत्र स्नानंमुनिश्रेष्ठ यः कुर्याद्विधिवज्जनः। सौन्दर्यं परमं तस्य भवेत्तत्र न संशयः॥

भाद्रे शुक्लतृतीयायां यात्रा साम्वत्सरी भवेत्।

विष्णुरत्र जनैः पूज्यः सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १०६ ॥

एवंकुर्वन्नरोविद्वान्विष्णुलोकेवसेत्सदा। नरोवा यदिवानारीसर्वान्कामानवाप्नुयात्

घोषार्ककुण्डं परममुर्वशीकुण्डदक्षिणे। वर्तते मुनिशार्दूल! सर्वपापापहं सदा॥१०८

यत्र स्नानेन दानेन सूर्य्यलोके महीयते। एतत्तीर्थस्य सदृशं नापरं विद्यते क्वचित्

व्रणी कुष्ठी दरिद्री वा दुःखाक्रान्तोऽपि यो नरः।

करोति विधिवत्स्नानं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ११० ॥

रविवारे विशेषेण कर्त्तव्यं स्नानमादरात्।

भाद्रे मासि तथा माघे शुक्लषष्ठ्यां प्रयत्नतः ॥ १११ ॥

कर्त्तव्यंविधिवत्स्नानंसूर्यलोकाभिकाङ्क्षया। पौषेमासि तथा स्नाने सूर्यवारेविशेषतः

सप्तम्यां रवियुक्तायां स्नानं बहुफलप्रदम्। घोषाभिधोऽभवत्पूर्वं सूर्यवंशे नरेश्वरः

समुद्रमेखलामेकः पृथिवीं समपालयत्। यस्यकीर्त्याप्रकाशन्तेत्रिलोकीमण्डलानिवै

यः प्रतापात्स्फुरन्भाति प्रभाकर इवाऽपरः। प्रचण्डतरदोर्दण्डखण्डितारातिमण्डलः

स कदाचित्प्रजापालो मन्त्रिविन्यस्तभूतलः। बभ्राम मृगयासक्तो वनेऽतिगहनद्रुमे

स राजा पूर्वजन्मोत्थपापैरशुभसूचकैः। कृमिव्याप्तकराम्भोजः सुन्दरोऽपि गतस्मयः

मृगयायामभूदेकः कदाचित्पर्यटन्वने। वराहसिंहहरिणान्निघ्नन्गच्छन्नितस्ततः॥

तृषाक्रान्तोम्लानतनुःसरोपश्यत्पुरो नृपः। ददर्शतत्रच मुनीन्स्नानसन्ध्यादितत्परान्

ततोविधिवदाचम्य स्नानञ्चक्रेनरेश्वरः। ततो दिव्यशरीरोऽभूदानन्दामलमानसः॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुनिभिस्तीर्थमाज्ञाय चक्रेसूर्य्यस्तुतिं प्रियाम् ॥ १२१ ॥

राजोवाच

भगवन्देवदेवेश नमस्तुभ्यं चिदात्मने । नमः सवित्रे सूर्याय जगदानन्ददायिने ॥१२२
प्रभागेहाय देवाय त्रयीभूताय ते नमः । विवस्वते नमस्तुभ्यं योगज्ञाय सदात्मने ॥
पराय परमेशाय त्रिलोकीतिमिरच्छिदे । अचिन्त्याय सदातुभ्यं नमो भास्करतेजसे
योगप्रियाय योगाय योगज्ञाय सदा नमः ।
ॐकाराय वषट्कारस्रूपिणे ज्ञानरूपिणे ॥ १२५ ॥
यज्ञाय यजमानाय हविषे ऋत्विजे नमः । रोगघ्नाय स्वरूपाय कमलानन्ददायिने ॥
अतिसौम्यातितीक्ष्णाय सुराणाम्पतये नमः ।
सत्रासायनमस्तुभ्यंभक्तत्राय प्रियात्मने ॥ १२७ ॥
प्रकाशकाय सततं लोकानांहितकारिणे । प्रसीद प्रणतायाऽद्य मह्यं भक्तिकृतेस्वयम्

अगस्त्य उवाच

इत्येवं ब्रुवतस्तस्य स प्रसन्नोरविःस्वयम् । आविर्बभूवसहसा भक्तस्यप्रियकाम्यया
उवाच मधुरं वाक्यं प्रश्रयानतमूर्द्धजम् ॥ १२६ ॥

रविरुवाच

वरम्वरय राजेन्द्र! प्रसन्नोऽस्मि तवाग्रतः । ददामि तद्वरं तेऽद्ययत्त्वयामनसेप्सितम्

राजोवाच

भगवन्भास्कराऽनन्त! प्रयच्छसिवरं यदि । मन्नाम्ना कृतमूर्त्तिस्तेतिष्ठत्वत्रसदाविभो

रविरुवाच

एवमस्तु मनुष्येन्द्रतववाञ्छामनोहरा । एतत्स्तोत्रंत्वयोक्तं मे ये पठिष्यन्तिमानवाः
तेभ्यस्तुष्टः प्रदास्यामि सर्वान्कामान्नरेश्वरः ।
तत्तत्स्थानं परांख्याति त्वन्नाम्ना यास्यति क्षितौ ॥ १३३ ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति योऽत्र स्नानं समाचरेत् । मद्भक्तेनसदाराजन्कर्त्तव्यंस्नानमत्र वै
यं यं काममिहेच्छेत तं तं काममवाप्नुयात् ॥ १३५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

इति दत्त्वा वरंदेवः कृपया परया युतः । भास्वान्सहस्रकिरणस्तदाऽन्तर्द्धानमाययौ
राजा भास्करदेहोत्थां रविमूर्त्तिमनुत्तमाम् । तत्रसंस्थापयामासपूजयामासचस्वयम्
घोषार्ककुण्डं तन्नाम्ना तत्र ख्यातिंजगामह । यत्र स्नानान्नरो राजन्सूर्य्यलोकेवसेत्सदा
इति रुचिरविधानैस्तूर्णमादित्यमूर्त्तिं विमलपरम भक्त्या पूजयित्वाऽऽदरेण ।
तदमृतमयकुण्डे स्नानमादौ विधाय प्रचुरविमलकीर्तिः सूर्यलोकेवसेत्सः ॥१३६

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
ऽयोध्यामाहात्म्ये बृहस्पतिकुण्डरुक्मिणीकुण्डधनयक्षतीर्थवसिष्ट-
कुण्डसागरकुण्डयोगिनीकुण्डोर्वशीकुण्डघोषार्ककुण्डमाहात्म्य
वर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः

रतिकुण्डमहारत्नतीर्थदुर्भरभहामरतीर्थमहाविद्यातीर्थसिद्धपीठक्षीरेश्वर सीताकुण्डसुग्रीवतीर्थहनुमत्कुण्डविभीषणसरस्तीर्थायोध्या यात्राविधिक्रमवर्णनम्

अगस्त्य उवाच

घोषार्कतीर्थाद्विप्रर्षे पश्चिमे दिक्तटे स्थितम् । रतिकुण्डमिति ख्यातं सर्वपापहरंसदा
यत्र स्नानेन दानेन परां कान्तिमवाप्नुयात् । तत्पश्चिमदिशाभागे कुसुमायुधनामकम्
कुण्डं प्रसिद्धमतुलं सर्वकामार्थसिद्धये । यत्र स्नानेन दानेन कन्दर्पसदृशाकृतिम् ॥
लभते ना विधानेन मुने! नास्त्यत्र संशयः ॥ ३ ॥
रतिकुण्डे तथा विप्र! कुसुमायुधकुण्डके । श्रद्धया कुरुते स्नानं ससौख्यपरमोभवेत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुण्डद्वयेऽत्र मिथुनं यत्स्नानं कुरुते किल । रतिकामाविघख्यातौसदातौसुन्दरौतदा
तस्मादत्र विधानेन स्नातव्यं धर्मकाङ्क्षिभिः । दानं देयंयथाशक्त्या रतिकन्दर्पतुष्टये
भवेतां नियतं तस्य सन्तुष्टौ रतिमन्मथौ । माघे विशदपञ्चम्यांयत्र स्नानंशुभप्रदम्
रतिकुण्डे पुरः स्नात्वा पश्चात्कन्दर्प्पकुण्डके । स्नातव्यं तद्दिनेचिप्रमिथुनेनप्रयत्नतः

रतिकन्दर्प्पयोः पूजा विधातव्या विशेषतः ।
वस्त्रादिभिरलङ्कारैः सम्पूज्यौ द्विजदम्पती ॥ ९ ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ १० ॥

चन्दनागुरुकर्पूरकस्तुरीकुङ्कुमादिभिः । वासोभिर्विविधैः पुष्पैः पूजयेद्द्विजदम्पती
एवं कृते न सन्देहो रतिकन्दर्पतुष्टये । तद्व्रजेन्मिथुनं विप्र! रतिकन्दर्प्पतुल्यताम् ॥

कुसुमायुधकुण्डात्तु प्रतीच्यां दिशि संस्थितम् ।
मन्त्रेश्वर इति ख्यातं तत्स्थानं भुवि दुर्लभम् ॥ १३ ॥

तत्र तीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा मन्त्रेश्वरं विभुम् । न तेषांपुनरावृत्तिःकल्पकोटिशतैरपि
पुरा रामो देवकार्यं विधायामलकर्मकृत् । कालेन सह सङ्गम्य मन्त्रं चक्रे नरेश्वरः ॥
स्वर्गं प्रति प्रयाणाय यत्रस्नातोजितेन्द्रियः । तत्रैवस्थापितं लिङ्गंमन्त्रेश्वरइतिश्रुतम्
तदुत्तरे सरो रम्यं कुमुदोत्पलमण्डितम् । तत्र स्नानं तथा दानं नानाफलदमुत्तमम्
चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां यात्रा साम्वत्सरी स्मृता । तत्र स्नानेनदानेनब्राह्मणानांचपूजनात्

अक्षयं स्वर्गमाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ १८ ॥

मन्त्रेश्वरस्य महिमा नहि केनापि शक्यते । सम्यग्वर्णयितुं विप्र! य उत्तमफलप्रदः ॥

मन्त्रेश्वरसमं लिङ्गं न भूतं न भविष्यति ॥ १९ ॥

सुगन्धिपुष्पधूपादिकुसुमाद्यनुलेपनैः । पूजनीयः प्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥२०॥
एवं कृते न सन्देहो मुक्तिस्तस्य करे स्थिता । तत्रैवोत्तरभागे तु शीतला वर्ततेऽनघ
तां सम्पूज्य नरो विद्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते । सर्वदा पूजनं तस्याःसोमवारेविशेषतः

कर्त्तव्यं सुप्रयत्नेन नृभिः सर्वार्थसिद्धये ॥ २२ ॥

विस्फोटकादिकभये नरैश्च समुपस्थिते । कर्तव्यं पूजनं सम्यग्रोगादिभयनाशनम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदुत्तरे तु तत्रैव देवी वन्दीति विश्रुता । यस्याः स्मरणमात्रेण निगडादिभयं नहि

राज्ञा क्रुद्धेन ये बद्धाः शृङ्खलानिगडादिभिः ।

बन्दीं संस्मृत्य देवीं तु मुक्ताः स्युस्तत्क्षणाद्धि ते ॥ २५ ॥

यात्रा तस्याः प्रयत्नेन कर्तव्या यत्नतोनरैः । मङ्गलेहिविशेषेणसर्वकामार्थासिद्धिदा

गन्धैःपुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैरपि च सुव्रत! । नैवेद्यैर्विविधैर्वाऽपि पूजनीया प्रयत्नतः ॥

वन्दीप्रीत्यैमुनिश्रेष्ठ! देयं ब्राह्मणभोजनम् । एवं कृते नसन्देहः सर्वान्कामानवाप्नुयात्

तदुत्तरस्मिंस्तत्रैव चुडकी भुविकीर्त्तिता । वर्ततेपरमासिद्धिरूपिणीस्मरणान्नृणाम्

सुसंदिग्धेषु कार्येषुभयेचसमुपस्थिते । यस्याः स्मरणतो नृणांसर्व सिद्धिःप्रजायते

अग्रे तस्याः सदाकार्यान्नृभिरङ्गुष्ठतोध्वनिः । दीपदानं प्रयत्नेन कर्त्तव्यंनियतात्मभिः

सर्वाभीष्टप्रदं नृणां दीपदानं प्रशस्यते ।

चतुर्दश्यां चतुर्दश्यां तस्या यात्रा विनिर्मिता ॥ ३२ ॥

ततः पूर्वदिशाभागे वर्त्तते तीर्थमुत्तमम् । महारत्नइतिख्यातं सर्वतीर्थोत्तमोत्तमम् ॥

यत्र स्नानेनदानेनपूजयाचद्विजन्मनाम् । सर्वकामार्थसिद्धिःस्यान्नात्रकार्याविचारणा

भाद्रे कृष्णचतुर्दश्यां यात्रा साम्वत्सरी स्मृता ।

यात्राऽऽस्ते किल मुख्याऽस्य महारत्ना इति श्रुता ॥ ३५ ॥

महारत्नइति ख्यातं तस्मात्तीर्थमनुत्तमम् । तत्र दानं प्रकर्त्तव्यं द्विजसन्तोषकारकम्

नारीभिरपि विप्रर्षे कर्त्तव्यो जागरोत्सवः । वीर्यसौभाग्यसम्पन्नसर्वसौख्यायसर्वदा

तत्र स्नानं प्रयत्नेन कर्त्तव्यं श्रद्धया नरैः ॥ ३७ ॥

ततो नैर्ऋत्यदिग्भागे दुर्भराख्यं सरःशुभम् । वर्तते सुकृतोदारं महाभरसरस्तथा ॥

तत्र स्नानादवाप्नोति सदा स्वर्गपदं नरः । धनं बहुविधं देयंवासांसि विविधानि च

शिवपूजाप्रकर्त्तव्या स्नात्वा कुण्डद्वये नरैः । नानाविधेन भावेन भक्त्यापरमयायुतैः

गन्धादिभिः शुभैः पुष्पैरर्चनीयो महेश्वरः ।

नीलकण्ठोऽन्धकारातिराराध्यो योगिनामपि ॥ ४१ ॥

इति ध्यात्वा शिवंसाद्धंनिष्पापंप्रयतोनरः । सर्वकामानवाप्याशुशिवलोकेमेवसेत्सदा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवं कृत्वा नरो विप्र सर्वपापैः प्रमुच्यते । महाभरे वरे तीर्थे तथा दुर्भरसञ्ज्ञके ॥४३

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां यः कुर्याच्छ्रद्धयाऽन्वितः ।
शिवपूजाञ्च विधिवद्द्विजपूजां विशेषतः ॥ ४४ ॥

यः करोति नरोभक्त्या शिवलोके स सम्वसेत् । एवंकुर्वन्नरोविद्वान्नमुह्यतिकदाचन
विष्णुरुद्रौ चतस्यातिसुप्रसन्नौ सनातनौ । तयोः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते
अतः किं वहुनोक्तेन विप्र! तीर्थमनुत्तमम् । सर्वपापौघशमनं सर्वाभीष्टकरं सदा ॥

अतः परं प्रवक्ष्यामि तीर्थमन्यच्छुभावहम् ।
यत्र यात्रा तथा दानं विना भाग्यं न सम्भवेत् ॥ ४८ ॥

ईशानेदुर्भरस्थानान्महाविद्याभिधंमहत् । तस्यदर्शनतोनृणांसिद्धयःस्युःकरेस्थिताः

तदग्रे सरसि स्नात्वा महाविद्यां तु यां नरः ।
पश्यति श्रद्धया भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥ ५० ॥

सिद्धपीठंतथाख्यातंसम्यक्प्रत्ययकारकम् । तत्र पूजाविधातव्याभक्त्यापरमयाद्विज!
मन्त्रं यः श्रद्धया विप्र शैवंशाक्तमथापिवा । गाणपत्यं वैष्णवं वा तत्र यः प्रयतोनरः
एकाग्रमानसोविद्वन्नाराध्यावर्तयेत्सदा । तस्यसिद्धिर्भवेन्नित्यं चमत्कारोभवेद्द्विज
तस्मादत्रप्रकर्तव्यं जपादिकमतन्द्रितैः । अष्टम्याञ्चनवम्याञ्चयात्रास्यात्प्रतिमासिकी
देयान्यन्नानि वहुशो नानाविधफलानिच । क्षीरेण स्नपनं कार्यं पूजनीया प्रयत्नतः ॥
उच्चाटनादीन्यपि च मोहनादिविशेषतः । अत्रस्थानेविशेषेणदुष्टमन्त्रोऽपिसिध्यति

सिद्धस्थाने परं मोक्षं वशीकरणमुत्तमम् ।
जपो होमस्तथा दानं सर्वमक्षयतां व्रजेत् ॥ ५७ ॥

आश्विने शुक्लपक्षस्य नवरात्रिषु सुव्रत! । यत्र गत्वा नरो विप्र! सर्वपापैः प्रमुच्यते
यदा पूर्वं विनिर्जित्य रावणं लोकरावणम् । समागतोरघुपतिः सीतालक्ष्मणसंयुतः
यत्र गत्वा पदा वीरो भरतोरामकाङ्क्षया । स्थितः सानुचरःश्रीमान्क्रियापरमयायुतः
तत्रागमत्सुरगवी प्रादुर्भूता स्रवत्स्तनी । तत्स्तनेभ्यःप्रसुस्राव दुग्धं वहुगुणाधिकम्
तद्भूमिपतितं दुग्धं दृष्ट्वा वानरराक्षसाः । विस्मयं परमं जग्मुः पप्रच्छुस्ते चराचरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किमेतदिति राजेन्द्र! तानुवाच रघूद्वहः । वसिष्ठो वेत्तितत्सर्वं पृच्छामस्तंमुनिवयम्
इत्युक्तास्तु ततःसर्वेवसिष्ठप्रमुखेस्थिताः । ते पप्रच्छुः प्राञ्जलयः कृत्वाचाग्रेसरंनृपम्

वसिष्ठोऽपि क्षणं ध्यात्वा तमुवाच निराकुलम् ।
राघवम्प्रति सम्बोध्य सर्वेषामग्रतो मुनिः ॥ ६५ ॥

वसिष्ठ उवाच

शृणुराम महाबाहो कामधेनुरियं शुभा । समागता तव स्नेहात्प्रस्रवन्ती स्तनात्पयः
दुग्धमध्येसमुद्भूतोरुद्रस्त्वांद्रष्टुमागतः । निष्पन्नकार्य्यंदेवानांनिर्जितारातिमुत्तमम्
इमं सम्पूजय क्षिप्रमेतत्कुण्डस्य सन्निधौ । शीघ्रं त्वमपि यत्नेन पूजयेमंशिवंशुभम्

दुग्धेश्वरमितिख्यातं क्षीरकुण्डे पवित्रकम् ॥ ६८ ॥

अगस्त्य उवाच

ततो रघुपतिः श्रीमान्वसिष्ठोक्तविधानतः । पूजयामासतल्लिङ्गंदुग्धेश्वरमिति स्मृतम्
सीतयासत्कृतंयस्मात्तत्कुण्डंक्षीरसङ्गमम् । सीताकुण्डमितिख्यातिंजगामानुपमांततः
सीताकुण्डेनराः स्नात्वादृष्ट्वादुग्धेश्वरंप्रभुम् । सर्वपापैःप्रमुच्यन्तेनात्रकार्याविचारणा
अत्रस्नानंजपोहोमोदानञ्चाक्षयताम्व्रजेत् । सीताकुण्डेतुसम्पूज्यसीतारामौसलक्ष्मणौ

दुग्धेश्वरञ्च सम्पूज्य सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
जेष्ठेमासि चतुर्दश्यां यात्रा साम्वत्सरी स्मृता ॥ ७३ ॥

एवं यो विधिवत्कुर्याद्द्वयाधर्मविशारदः । स याति परमं स्थानं यत्र गत्वा नशोचति
तत्र पूर्वादिशाभागे सुग्रीवरचितं महत् । तीर्थं तपोनिधेस्तत्र वर्तते सन्निधौ शुभम्
यत्रस्नात्वाचदत्त्वाचरामंसम्पूज्ययत्नतः । तस्मिन्नेवदिनेतत्रसर्वान्कामानवाप्नुयात्

तत्प्रत्यग्दिशि वै स्थानं हनुमत्कुण्डमित्यपि ।
तस्य पश्चिमतो विप्र! विभीषणसरः शुभम् ॥ ७७ ॥

तयोः स्नानेन दानेन रामसम्पूजनेन च । सर्वान्कामानवाप्नोति तस्मिन्नेवविधानतः

इयं सा परमा मेध्याऽयोध्या धर्मनिधिः स्मृता ॥ ७८ ॥
इत्युक्तास्तुततः सर्वे वसिष्ठमुनिमादरात् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पप्रच्छुर्विनयात्क्षिप्रं विभीषणपुरःसराः । कथयस्व तपोराशे! कथामेतांसुदुर्ल्लभाम्
अयोध्यायाः परम्विप्र माहात्म्यं कथयन्ति यत् ।
तत्सर्वं कथय क्षिप्रं श्रुत्वा माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ८० ॥
यथा यात्रांविधास्यामःक्रमेणचविधानतः । तदस्मासुकृपां कृत्वा कथयस्वतपोनिधे

वसिष्ठ उवाच

शृण्वन्तुमुनयःसर्वे अयोध्यामहिमाद्भुतम् । यच्छ्रुत्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्र संशयः
इदं गुह्यतरं क्षेत्रमयोध्याभिधमुत्तमम् । सर्वेषामेव भूतानां हेतुर्मोक्षस्य सर्वदा ॥८३
अस्मिन्सिद्धाः सदा देवा वैष्णवं व्रतमास्थिताः ।
नानालिङ्गधरा नित्यं विष्णुलोकाभिकाङ्क्षिणः ॥ ८४ ॥
अभ्यस्यन्तिपरंयोगंयुक्तप्राणाजितेन्द्रियाः । नानावृक्षसमाकीर्णेनानाविहगवासिनि
कमलोत्पलशोभाढ्ये सरोभिः समलङ्कृते । अप्सरोगणसङ्कीर्णे सर्वदा सेवितेशुभे
रोचतेहिसदावासःक्षेत्रेनित्यंहरेरिह । मन्यमानाविष्णुभक्ताविष्णौ सर्वेऽर्पितक्रियाः
यथामोक्षमिहायान्तिनान्यत्र हि तथा क्वचित् । अथ श्रेष्ठतमं क्षेत्रंयस्माच्चवसतिर्हरेः
महाक्षेत्रमिदं यस्मादयोध्याभिधमुत्तमम् ॥ ८८ ॥
नैमिषे च कुरुक्षेत्रे गङ्गाद्वारे च पुष्करे । स्नानात्संसेवनाद्वाऽपि न मोक्षः प्राप्यतेतथा
इह सम्प्राप्ते यद्वत्तत एव विशिष्यते । प्रयागे वा भवेन्मोक्ष इह वा हरिसंश्रयात् ॥
सर्वस्मादपि तीर्थाग्र्यादिदमेव महत्स्मृतम् ॥ ९० ॥
अव्यक्तलिङ्गैर्मुनिभिःसर्वैःसिद्धैर्महर्षिभिः । इहसम्प्राप्यतेमोक्षोदुर्ल्लभोऽन्यत्रयोमतः
तेभ्यःप्रयच्छतिहरिर्योगमैश्वर्यमुत्तमम् । आत्मनश्चैवसायुज्यमीप्सितंस्थानमुत्तमम्
ब्रह्मादेवर्षिभिःसार्द्धंश्रीश्चवायुर्दिवाकरः । देवराजस्तथाशक्रो ये चान्येऽपिदिवौकसः
उपासते महात्मनः सर्वत्र हरिमादरात् । अन्येऽपियोगिनः सिद्धा क्षेत्ररूपामहाव्रताः
अनन्यमनसो भूत्वा सर्वदोपासतेहरिम् । विषयासक्तचित्तोऽसि त्यक्तधर्म रतिर्नरः
इह क्षेत्रे मृतः सोपि संसारी न पुनर्भवेत् ॥ ९५ ॥
ये पुनर्निगमाधीनाःसत्रस्थाविजितेन्द्रियाः । व्रतिनश्चनिरारम्भाःसर्वे तेहरिभाविताः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देहभङ्गं समापद्य धीमन्तः सङ्गवर्जिताः । गतास्ते च परं मोक्षं प्रसादात्सर्वदा हरेः
जन्मान्तरसहस्रेषु युञ्जन्योगी न चाऽऽप्नुयात् । तमिहैव परंमोक्षंमरणादपिगच्छति
एतत्सङ्क्षेपतो वच्मि क्षेत्रस्य महिमाद्भुतम् । एतदेव परं स्थानमेतदेव परम्परदम् ॥
एतादृङ्नापरं स्थानं पुनरन्यत्र दृश्यते ॥ ९९ ॥
यत्रगत्वाप्रयत्नेनयात्रापुण्याभिकाङ्क्षिभिः । कर्तव्याविधिवद्धीराः क्रमेणश्रद्धयान्वितैः
प्रथमेऽहनि कर्त्तव्य उवपासो यतात्मभिः । नियमेन ततः स्नानं दानञ्चैव स्वशक्तितः
उपावृत्तस्तु पापेभ्योयस्य वासोगुणैः सह ।
उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः ॥ १०२ ॥
उपवासं विधायाऽसौ चक्रतीर्थे नरः कृती । उपवासदिनेस्नायाद्दद्याच्चैवस्वशक्तितः
विप्रं सम्पूज्य विधिवत्पश्येद्विष्णुहरिं विभुम् ।
स्वर्गद्वारे नरः स्नात्वा विष्णुं सम्पूज्य यत्नतः ॥ १०४ ॥
क्षौरञ्च कारयेत्तत्र व्रतीधर्माभिधे ततः । पापमोचनके स्नानमृणमोचनके ततः १०५
स्नात्वा सहस्रधारायां शेषंसम्पूज्य यत्नतः । दृष्ट्वा चन्द्रहरिं देवं ततोधर्महरिंविभुम्
ततश्चक्रहरिं दृष्ट्वा दद्याच्चैव स्वशक्तितः । ब्रह्मकुण्डे नरः स्नात्वा सर्वकामार्थसिद्धये
महाविद्यासमीपे तु रात्रौ जागरणं चरेत् ॥ १०७ ॥
ततः प्रभाते विमले पुनरुत्थाय सद्व्रती । स्वर्गद्वारे प्रयत्नेन विधिवत्स्नानमाचरेत्
श्राद्धञ्च विधिवत्कृत्वा दत्त्वा चैव स्वशक्तितः ।
विष्णुं सम्पूज्य विधिवद्विप्रानपि पुनः पुनः ॥ १०९ ॥
दम्पती च प्रयत्नेनपूज्यौवस्त्रादिभिस्तथा । श्रद्धया परया युक्तैर्दातव्याभूरिदक्षिणा
विप्रान्सम्पूज्य विधिवद्भुञ्जीत प्रयतोनरः ॥ १११ ॥
अन्येद्युरपि चोत्थाय श्रद्धयापरयायुतः । रुक्मिणीप्रभृतीन्यत्रपश्येत्तीर्थानिचक्रमात्
तत्र तत्र नरः स्नात्वा दत्त्वा चैव स्वशक्तितः ।
विष्णुं सम्पूज्य यत्नेन मनोवाक्कायनिर्मलः ॥ ११३ ॥
यात्रां समापयेत्सम्यङ्नियतात्माशुचिव्रतः । यत्रक्वापिमृतोधीरःपरंमोक्षमवाप्नुयात्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगस्त्य उवाच

वसिष्ठोक्तमिति श्रुत्वाकृत्वाचैवयथाविधि । विभीषणपुरोगास्ते बभूवुर्निर्मलास्तदा

इति बहुलविधानैस्तीर्थयात्रां विधाय प्रचुरसुकृतपूर्णास्ते च सुग्रीवमुख्याः ।
गतमलिनसुदेहाः स्वर्गचर्याप्रयत्नादुपगुणितगुणौघास्ते बभूवुः समस्ताः ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे-
ऽयोध्यामाहात्म्ये रतिकुण्डमहारत्नतीर्थदुर्भरमहाभरतीर्थमहाविद्यातीर्थ
सिद्धपीठश्रीरेश्वरसीताकुण्डसुग्रीवतीर्थहनुमत्कुण्डविभीषण-
सरस्तीर्थायोध्यायात्राविधिक्रमवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः

गयाकूपपिशाचमोचनमानसतीर्थतमसानदीमाण्डव्याद्याश्रमसीता-
कुण्डदुग्धेश्वरभैरवभरतकुण्डजयकुण्डमाहात्म्यवर्णनम्

अगस्त्य उव च

जटाकुण्डत आग्नेयदिग्दले संश्रितं महत् । गयाकूपमिति ख्यातं सर्वाभीष्टफलप्रदम्

यत्रस्नात्वाचदत्त्वाचयथाशक्त्याजितेन्द्रियः । सर्वकाममवाप्नोतिश्राद्धंकृत्वाद्विजोत्तमः

नरकस्थाश्च ये केचित्पितरश्च पितामहाः ।
विष्णुलोकेतु गच्छन्ति तस्मिञ्छ्राद्धे कृते तु वै ॥ ३ ॥

तस्मिञ्छ्राद्धेकृते विप्रपितॄणामनृणाभवेत् । शक्तिभिः पिण्डदानन्तुसयवैःपायसेनच

कर्त्तव्यमृषिनिर्दिष्टं पिण्याकेनगुणेनवा । श्राद्धं तत्तीर्थके प्रोक्तं पितॄणां तुष्टिकारकम्

तत्रश्राद्धं प्रकर्त्तव्यं नरैः श्रद्धासमन्वितैः । तुष्यन्ति पितरस्तेषांतुष्टाःस्युःसर्वदेवताः

तुष्टेषु पितृषु श्रीमाञ्जायते पुत्रवांस्तथा । श्राद्धेन पितरस्तुष्टाःप्रयच्छन्तिसुतान्बहून्

श्रियश्च विपुलान्भोगाञ्छ्राद्धकृद्भ्यो न संशयः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तस्मादत्र विधानेन विधातव्यं प्रयत्नतः ॥ ८ ॥

श्राद्धं श्रद्धायुतैः सम्यगभीष्टफलकाङ्क्षिभिः । गयाकूपे विशेषेण पितॄणां दत्तमक्षयम्
सोमवारेण संयुक्ता अमावास्या यदाभवेत् । तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितॄणांदत्तमक्षयम्
अन्यदा सोमवारेण तत्र श्राद्धं विधानतः । पितृसन्तोषदं नित्यं तत्रदत्ताक्षयोभवेत्
तत्र पूर्वदिशाभागे तीर्थं सर्वोत्तमोत्तमम् । पिशाचमोचनंनाम विद्यते च फलप्रदम्
तत्र स्नात्वा च दत्त्वा च पिशाचोनैवजायते । तत्रस्नानंतथादानंश्राद्धञ्चैवविशेषतः

कर्त्तव्यश्च प्रयत्नेन नरैः श्रद्धासमन्वितैः ॥ १३ ॥

मार्गशीर्षे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां विशेषतः । स्नानं तत्र प्रकर्तव्यं पिशाचत्वविमुक्तये ॥
तत्सन्निधौपूर्वभागे मानसंनाम नामतः । तीर्थं पुण्यनिवासाग्र्यंस्नातव्यञ्चविशेषतः

तत्र स्नानेन दानेन सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
नानाविधानि पापानि मेरुतुल्यानि वै पुनः ॥
तत्र स्नानात्क्षयं यान्ति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ १६ ॥

यत्किञ्चिद्विद्यतेपापंमानसंकायिकं तथा । वाचिकञ्चतथापापंस्नानतोविलयंव्रजेत्
प्रौष्ठपद्यांसदाकार्य्यापौर्णमास्यांविशेषतः । यात्रातस्यनृभिर्विप्रपुण्यवद्भिःक्रियापरैः
तस्माद्दक्षिणदिग्भागे वर्त्तते सुकृतैकभूः । तमसानाम तटिनी महापातकनाशिनी ॥
यत्र स्नानं तथा दानं सर्वपापहरं सदा । यस्यास्तटेतथा रम्ये सर्वदा फलदायके ॥

नानाविधानि स्थानानि मुनीनां भावितात्मनाम् ।
माण्डव्यस्य मुने! स्थानं वर्त्तते पापनाशनम् ॥ २१ ॥

यस्यास्तीरे मुनिश्रेष्ठ! सर्वत्र सुमनोहरम् । तस्याऽऽश्रमपदं रम्यं नानावृक्षमनोहरम्
यस्मात्स्थानात्समुद्भूता तमसा सुतरङ्गिणी । तद्वनं पुण्यमधिकं पावनं पदमुत्तमम्

यस्य दर्शनतो नृणां सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ २४ ॥

प्रफुल्लनानाविधगुल्मशोभितं लताप्रतानावनतं मनोहरम् ।
विरूढपुष्पैः-परितः प्रियङ्गुभिः सुपुष्पितैः कण्टकितैश्च केतकैः ॥ २५ ॥
तमालगुल्मैर्निचितं सुगन्धिभिः सकर्णिकारैर्बकुलैश्च सर्वतः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अशोकपुन्नागवरैः सुपुष्पितैर्द्विरेफमालाकुलपुष्पसञ्चयैः ॥ २६ ॥
क्वचित्प्रफुल्लाम्बुजरेणुरूषितैर्विहङ्गमैश्चारुफलप्रचारिभिः ।
विनादितं सारसमुत्कुलादिभिः प्रमत्तदात्यूहकुलैश्चवल्गुभिः ॥ २७ ॥
क्वचिच्च चक्राह्वरवोपनादितं क्वचिच्च कादम्बकदम्बकैर्युतम् ।
क्वचिच्च कारण्डवनादनादितं क्वचिच्च मत्तालिकुलाकुलीकृतम् ॥ २८ ॥
मदाकुलाभिर्भ्रमरीभराराग्निषेवितं चारुसुगन्धिपुष्पवत् ।
क्वचिच्च पुष्पैः सहकारवृक्षैर्लतोपगूढैस्तिलकद्रुमैश्च ॥ २९ ॥
प्रहृष्टनानाविधपक्षिसेवितं प्रमत्तहारीतकुलोपनादितम् ।
समन्ततः सुन्दरदर्शनीयतां समुद्वहत्तद्वनमुल्लसन्महत् ॥ ३० ॥
निबिडनिचुलनीलं नीलकण्ठाभिरामं मदमुदितविहङ्गीवृन्दनादाभिरामम्
कुसुमिततरुशाखालीनमत्तद्विरेफं नवकिसलयशोभाशोभितंसत्फलाढ्यम्
इत्यादिबहुशोभाढ्यं सर्वदिक्षु मनोहरम् । यत्र माण्डव्यमुनिनातपस्तप्तं महत्किल
यत्प्रभावादभूत्तीर्थं पावनं तत्सदा महत् ॥ ३२ ॥
तत्पूर्वं गौतमस्यर्षेराश्रमं पावनं महत् । तत्पूर्वं च्यवनस्यर्षेः पराशरमुनेरिदम् !
प्रथमं ते मुनिश्रेष्ठ! पितुः किल तपोनिधेः ॥ ३३ ॥
नानाविधानि तीर्थानि चाश्रमाश्चैवसर्वशः । वर्तन्तेतापसानाञ्चयस्यास्तीरेसमन्ततः
तमसानाम सा ज्ञेया वर्तते तटिनी शुभा । यज्ञयूपान्समुत्खाय शोभिताबहुशोऽभितः
तत्र स्नानेन दानेनश्राद्धेनचविशेषतः । सर्वकामार्थसिद्धिःस्यान्नाऽत्रकार्याविचारणा
मार्गशीर्षे शुक्लपक्षे पञ्चदश्यां विशेषतः । स्नानं तस्य फलप्राप्तिदायकं सर्वदा नृणाम्
तस्मादत्र प्रकर्तव्यं स्नानं निर्मलमानसैः ।प्रयत्नतो मुनिश्रेष्ठ! सर्वकामार्थसिद्धिदम्
अतः परं प्रवक्ष्यामि तमसापरमंशुभम् । सीताकुण्डमितिख्यातंश्रीदुग्धेश्वरसन्निधौ
भाद्रेशुक्लचतुर्थ्यांतुतस्ययात्राशुभावहा । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं पूज्योविघ्नेश्वरस्तथा
तस्य स्मरणमात्रेण सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ ४० ॥
तस्माद्दक्षिणदिग्भागे भैरवो नाम नामतः । यं दृष्ट्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यतेनात्रसंशयः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रक्षितो वासुदेवेन क्षेत्ररक्षार्थमादरात् । तस्यपूजा विधातव्या प्रयत्नेन यथाविधि ॥
मनोऽभीष्टफलप्राप्तिर्भैरवस्य सदाऽऽदरात् ॥ ४२ ॥
मार्गशीर्षस्यकृष्णायामष्टम्यांतस्यनिर्मिता । यात्रासाम्वत्सरीतत्रसर्वकामार्थसिद्धये
पशूपहारसम्भूति कर्त्तव्यं पूजनं जनैः । सर्वकामफलप्राप्तिर्जायते नाऽत्र संशयः ॥४४
निर्विघ्नं तीर्थवसतिर्भैरवस्य प्रसादतः । जायते तेन कर्तव्या पूजा तस्य प्रयत्नतः ॥
एतस्मिन्नुत्तरे भागे रम्यं भरतकुण्डकम् ।
यत्र स्नात्वा नरः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४५ ॥
तत्र स्नानं तथादानं सर्वमक्षयतां व्रजेत् । अन्नं वहुविधं देयंवासांसिविविधान्यपि
यत्नतो देवताः पूज्या वस्त्रादिभिरलङ्कृतैः । नन्दिग्रामे वसन्पूर्वं भरतोरघुवंशजः
रामचन्द्रं हृदि ध्यायन्निर्मलात्मा जितेन्द्रियः ।
ततः स्थित्वा प्रजाः सर्वा ररक्ष क्षितिवल्लभः ॥ ४६ ॥
तत्र चक्रे महत्कुण्डं भरतोनाम भूपतिः । राममूर्तिं च संस्थाप्यचचारविजितेन्द्रियः
तत्कुण्डे सुमहत्पुण्यं नानापुण्यसमन्वितम् ।
कुमुदोत्पलकह्लारपुण्डरीकसमन्वितम् ॥ ५१ ॥
हंससारसचक्राह्वविहङ्गमविराजितम् । उद्यानपादपच्छायासच्छायमम्लं सदा ॥५२
तत्र स्नानं महापुण्यं प्रमोदानन्दनिर्मलम् । तत्र स्नानं तथा श्राद्धं पितॄनुद्दिश्य कुर्वतः
पितरस्तस्य तुष्यन्ति तुष्टाः स्युः सर्वदेवताः ॥ ५३ ॥
स्वर्णं चाऽन्नं विधानेन दातव्यं च द्विजन्मने । श्रद्धापूर्वकमेतत्तु कर्तव्यं प्रयतैर्नरैः ५४
तत्पश्चिमदिशाभागे जटाकुण्डमनुत्तमम् । यत्र रामादिभिः सर्वैर्जटाःपरिहृता निजाः
जटाकुण्डमिति ख्यातं सर्वतीर्थोत्तमोत्तमम् ।
यत्र स्नानेन दानेन सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ५६ ॥
पूर्वकुण्डेषु सम्पूज्योभरतःश्रीसमन्वितः । जटाकुण्डेषुसम्पूज्यौससीतौरामलक्ष्मणौ
चैत्रकृष्णचतुर्दश्यां यात्रा साम्वत्सरी भवेत् ॥ ५७ ॥
इति परमविधानैः पूजयेद्रामसीते तदनु भरतकुण्डे लक्ष्मणं च प्रपूज्य ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विधिवदमृतकुण्डे द्वन्द्वसम्मज्जनेन वसति सुकृतिमूर्तिर्वैष्णवे तत्रलोके ॥५८

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्त्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डेऽयोध्यामाहात्म्ये गयाकूपपिशाचमोचनमानसतीर्थतमसानदीमाण्डव्याद्याश्रमसीताकुण्डदुग्धेश्वरभैरवभरतकुण्डजटाकुण्डमाहात्म्यवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः

अयोध्यायात्राविधिक्रमवर्णनम्

अगस्त्य उवाच

निराहारो नरो भूत्वा क्षीराहारोऽपि वा पुनः ।
अजितं पूजयेद्विप्र! तस्य सिद्धिः करे स्थिता ॥ १ ॥

महोत्सवस्तु कर्तव्योगीतवादित्रसंयुतः । एवं यःकुरुतेधीमान्सर्वान्कामानवाप्नुयात्
एतस्माद्उत्तरे विद्वन्वीरस्य शुभसूचकम् । स्थानं मत्तगजेन्द्रस्य वर्तते नियतव्रत! ॥
तदग्रे सरसिस्नात्वावसेत्तत्रसुनिश्चितम् । पूर्णांसिद्धिमवाप्नोतियामवाप्यनशोचति
अयोध्यारक्षको वीरःसर्वकामार्थसिद्धिदः । नवरात्रिषुपञ्चम्यांयात्रासाम्वत्सरीभवेत्
गन्धपुष्पधूपादिनैवेद्यादिविधानतः । पूजनीयः प्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥
यंयं काममिहेच्छेत तं तं काममवाप्नुयात् ॥ ६ ॥

एतस्माद्दक्षिणे भागे सुरसानाम राक्षसी । विष्णुभक्ता सदाविप्रवर्ततेसिद्धिदायिका
तां सम्पूज्य नरो भक्त्या सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ८ ॥

लङ्कास्थानादिहानीतारामेणोत्कृष्टकर्मणा । अयोध्यायांस्थापितासारक्षार्थंनियतव्रतैः
सम्पूज्यविधिवत्तस्यादर्शनंकार्यमादरात् । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थमुत्सवोऽपिशुभप्रदः
कर्त्तव्यः सुप्रयत्नेन गीतवादित्रसंयुतैः ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नवरात्रे तृतीयायां यात्रा साम्वत्सरीभवेत् । सर्वदा सुखसन्तानसिद्धये परमार्थदा
नानासङ्गीतवादित्रनृत्योत्सवमनोहरा ॥ ११ ॥
एवं कृते न सन्देहः सर्वदा रक्षितो भवेत् ॥ १२ ॥
एतत्पश्चिमदिग्भागे वर्तते परमो मुने! । पिण्डारक इति ख्यातो वीरःपरमपौरुषः ॥
पूजनीयः प्रयत्नेन गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥ १३ ॥
यस्य पूजावशान्नृणां सिद्धयः करसंश्रिताः । तस्य पूजाविधानेन कर्तव्यं पूजनंनरैः
सरयूसलिले स्नात्वा पिण्डारकञ्चपूजयेत् । पापिनांमोहकर्त्तारंमतिदं कृतिनांसदा
तस्य यात्राविधातव्यासपुष्यानवरात्रिषु । तत्पश्चिमदिशाभागे विघ्नेशंकिलपूजयेत्
यस्य दर्शनतो नृणां विघ्नलेशोन विद्यते । तस्माद्विघ्नेश्वरः पूज्यः सर्वकामफलप्रदः
तस्मात्स्थानत ऐशाने रामजन्मप्रवर्त्तते । जन्मस्थानमिदम्प्रोक्तंमोक्षादिफलसाधनम्
विघ्नेश्वरात्पूर्वभागेवासिष्ठादुत्तरेतथा । लोमशात्पश्चिमेभागेजन्मस्थानंततःस्मृतम्
यद्दृष्ट्वा च मनुष्यस्य गर्भवासजयोभवेत् ।
विना दानेन तपसा विना तीर्थैर्विना मखैः ॥ २० ॥
नवमीदिवसे प्राप्ते व्रतधारी हि मानवः । स्नानदानप्रभावेण मुच्यते जन्मबन्धनात् ॥
कपिलागोसहस्राणि यो ददातिदिनेदिने । तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेःप्रदर्शनात्
आश्रमे वसतां पुंसां तापसानाञ्च यत्फलम् । राजसूयसहस्राणि प्रतिवर्षाग्निहोत्रतः
नियमस्थं नरं दृष्ट्वा जन्मस्थाने विशेषतः । मातापित्रोगुरूणाञ्चभक्तिमुद्वहतांसताम्
तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ॥ २५ ॥

अथ सरयूवर्णनम्

पितृणामक्षया तृप्तिर्गयाश्राद्धाधिकं फलम् ॥ २६ ॥
मन्वन्तरसहस्रैस्तु काशीवासेषुयत्फलम् । तत्फलंसमवाप्नोति सरयूदर्शने कृते ॥
गयाश्राद्धञ्च ये कृत्वा पुरुषोत्तमदर्शनम् । कुर्वन्ति तत्फलं प्रोक्तं कलौदाशरथींपुरीम्
मथुरायां कल्पमेकं वसते मानवो यदि । तत्फलं समवाप्नोति सरयूदर्शने कृते ॥२६
पुष्करेषु प्रयागेषु माघे वा कार्त्तिके तथा । तत्फलं समवाप्नोति सरयूदर्शने कृते ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कल्पकोटिसहस्राणि ह्यवन्तीवासतो हि यत् ।
तत्फलं समवाप्नोति सरयूदर्शने कृते ॥ ३१ ॥

षष्टिवर्षसहस्राणि भागीरथ्यवगाहजम् । तत्फलं निमिषार्द्धेन कलौ दाशरथीं पुरीम्
निमिषं निमिषार्द्धं वा प्राणिनां रामचिन्तनम् । संसारकारणाज्ञाननाशकंजायतेध्रुवम्

यत्र कुत्र स्थितो ह्यस्तु ह्ययोध्यां मनसा स्मरेत् ।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पान्तरशतैरपि ॥ ३४ ॥

जलरूपेण ब्रह्मैव सरयूर्मोक्षदा सदा । नैवाऽत्र कर्मणोभोगो रामरूपो भवेन्नरः ॥३५
पशुपक्षिमृगाश्चैव ये चान्ये पापयोनयः । तेऽपि मुक्ता दिवं यान्ति श्रीरामवचनंयथा
इत्युक्त्वा विरते तस्मिन्मुनौ कलशजन्मनि । कृष्णद्वैपायनव्यासःपुनरूचे तपोधनः

दुर्लभा सर्वजन्तूनां कथा विस्तरतः क्रमात् ।
यात्राक्रमोऽपिच मया श्रुत आगच्छतां नृणाम् ॥ ३८ ॥

इदानींश्रोतुमिच्छामिक्षेत्रस्थानंयथाविधि । यात्राक्रमंमुनिश्रेष्ठसम्यक्त्वत्तस्तपोधन
फलम्ब्रूहि क्रमेणैवविस्तरात्पृच्छतो मम । यद्यस्तिमयिते विद्वन्कृपाकारुणिकोत्तम
यथा श्रुत्वा क्रमेणैव यात्रां विश्वविदाम्वर! । करोमि त्वत्प्रसादेन तथाकुरुयतव्रत!

अगस्त्य उवाच

श्रृणु वक्ष्यामितत्त्वेनयात्राक्रममथादितः । अयोध्यां सप्ततीर्थानां यथावदनुपूर्वशः
मनोवाक्कायशुद्धेन निर्दोषेणान्तरात्मना । मानसेषु सुतीर्थेषु स्नात्वाकिल जितेन्द्रियः

यः करोति विधिं सम्यक्स तीर्थफलमश्नुते ॥ ४३ ॥

व्यास उवाच

मानसान्येव तीर्थानि कथयस्वतपोधन! । येषुस्नातवतां नृणां विशुद्धिर्मनसोभवेत्

अगस्त्य उवाच

श्रृणुतीर्थानिगदतोमानसानिममानघ! । येषु सम्यङ्नरः स्नात्वाप्रयातिपरमांगतिम्
सत्यतीर्थं क्षमातीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः । सर्वभूतदयातीर्थं तीर्थानां सत्यवादिता
ज्ञानतीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थसप्तकम् । सर्वभूतदयातीर्थे विशुद्धिर्मनसो भवेत् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नतोयपूतदेहस्यस्नानमित्यभिधीयते । स स्नातो यस्य वै पुंसः सुविशुद्धंमनोगतम्

भौमानामपि तीर्थानां पुण्यत्वे कारणं शृणु ॥ ४८ ॥

यथा शरीरस्योद्देशाः केचिन्मध्योत्तमाः स्मृताः ।

तथा पृथिव्यामुद्देशाः केचित्पुण्यतमाः स्मृताः ४६ ॥

तस्माद्भौमेषु तीर्थेषु मानसेषु च सम्वसेत् । उभयेषुचयःस्नाति स यातिपरमांगतिम्

तस्मात्त्वमपिविप्रेन्द्र विशुद्धेनान्तरात्मना । यात्रांकुरुप्रयत्नेन यात्रा वै नोदितामया

तं तु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र! तीर्थयात्राविधिं क्रमात् ॥ ५१ ॥

जायन्ते च जलेष्वेवम्रियन्तेचजलौकसः । न च गच्छन्तिते स्वर्गमशुद्धमनसोमलाः

विषयेष्वनिशं रागो मनसो मल उच्यते । तेष्वेव हि न सङ्गस्य नैर्मल्यं समुदाहृतम्

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानं न शुध्यति । शतशोऽपि जलैर्धौते सुराभाण्डमपावनम्

दानमिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतिस्तथा ।

सर्वाण्येतानि तीर्थानि यदि भावेन निर्मलः ॥ ५५ ॥

निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव वसते नरः । तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्करं तथा ॥

एतत्ते कथितं विप्र! मानसं तीर्थलक्षणम् ।

स्नाते यस्मिन्क्रियाः सर्वाः सफलाः स्युः क्रियावताम् ॥ ५७ ॥

प्रातरुत्थाय मतिमान्सङ्गमे स्नानमाचरेत् ।

विभं विष्णुहरिं दृष्ट्वा स्नायाद्वै ब्रह्मकुण्डके ॥ ५८ ॥

चक्रतीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा चक्रहरिं विभुम् । ततो धर्महरिंदृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते

एकादश्यामेकादश्यामियं यात्रा शुभावहा । प्रातरुत्थाय मतिमान्स्वर्गद्वारजलाप्लुतः

विधाय नित्यजं कर्म अयोध्यां च विलोकयेत् । सरयूं तु ततोदृष्ट्वापश्येन्मत्तगजंततः

वन्दीञ्च शीतलांश्चैवबटुकश्चविलोकयेत् । तस्यसरसिस्नात्वामहाविद्यांविलोकयेत्

पिण्डारकं ततो दृष्ट्वा ततो भैरवदर्शनम् । अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यामेषा यात्रा फलप्रदा

अङ्गारकचतुर्थ्यां तु पूर्वोक्ता देवता अपि । विघ्नेशञ्च ततः पश्येत्सर्वकामार्थसिद्धये

प्रातरुत्थाय मतिमान्ब्रह्मकुण्डजले प्लुतः । विष्णुंविष्णुहरिंदृष्ट्वामनोवाक्कायशुद्धिमान्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मन्त्रेश्वरं ततोद्दृष्ट्वा महाविद्यां विलोकयेत् ।
अयोध्यां च ततो दृष्ट्वा सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ६६ ॥
स्वर्गद्वारेनरःस्नात्वासचैलोविजितेन्द्रियः । नानाविधानिपापानिबहुजन्मकृतानि च
सचैलस्नानतो यान्ति तस्मात्सचैलमाचरेत् ॥ ६७ ॥
एषा वै गदिता यात्रा सर्वपापहरा शुभा ॥ ६८ ॥
य एवं कुरुते यात्रां नित्यं शुभफलप्रदाम् । न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि
तस्मात्त्वमपि विप्रेन्द्र! अयोध्यां व्रज माचिरम् ।
तत्र गत्वा क्रमेणैव यात्रां कुरु यतेन्द्रिययः ॥ ७० ॥
अयोध्या परमं स्थानं अयोध्या परमं महत् ।
अयोध्यायाः समा काचित्पुरी नैव प्रदृश्यते ॥ ७१ ॥
अयोध्या परमं स्थानं विष्णुचक्रे प्रतिष्ठितम् ॥ ७२ ॥
इत्येतत्कथितं विप्र मया पृष्टं हि यत्त्वया । समाश्रय मुने! तां त्वमनुजानीहिमामतः

सूत उवाच

इत्येतदुक्त्वा विरते मुनौ कलशजन्मनि । उवाचमधुरं वाक्यंव्यासःसतपसांनिधिः

व्यास उवाच

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि कृतकृत्योऽस्म्यहं मुने! ।
सत्यं शौचं श्रुतं विप्रं सुशीलं च क्षमाऽऽर्जवम्
सर्वञ्च निष्फलं तस्य अयोध्यां नाऽऽगतो यदि ॥ ७५ ॥
यस्मिन्मयिप्रसन्नेन वयोक्तोधर्मनिर्णयः । इदानीमपिगच्छामिह्ययोध्यांनिर्मलांपुरीम्
त्वमपि व्रज विप्रेन्द्र! स्वमाश्रमपदं निजम् ॥ ७६ ॥

सूत उवाच

इत्येवमुक्त्वाक्रमशोयात्राविधिमनुत्तमम् ।
जगाम तपसांराशिरगस्त्यःकुम्भसम्भवः ॥ ७७ ॥
स्वमाश्रमपदं धीरो विस्मयोत्फुल्ललोचनः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्यासोऽपि महसां राशिर्जगाम विजितेन्द्रियः ॥ ७८ ॥

अयोध्यामागतो विप्रःसर्वकामार्थसिद्धये । आगत्यैतद्विधानेनकृत्वायात्रांयथाक्रमम्

दृष्ट्वा महाश्चर्यकरं कारणं तीर्थमुत्तमम् । आनन्दतुन्दिलस्तत्रसम्यगाचम्य बुद्धिमान्

ततो जगाम विप्रेन्द्रः स्वमाश्रमपदं मुनिः ।

व्यासेन कथितं मह्यं माहात्म्यं क्रमशस्तदा ॥ ८१ ॥

मया श्रुत्वा च माहात्म्यंयात्रां कृत्वाविधानतः । कुरुक्षेत्रेसमागत्यभवदग्रेनिरूपितम्

इदं माहात्म्यतुलंयः पठेत्प्रयतो नरः । श्रद्धया यच्च शृणुयात्सयाति परमां गतिम् ॥

तस्मादेतत्प्रयत्नेन श्रोतव्यश्च जनैः सदा । द्विजपूजा विष्णुपूजाविधातव्या प्रयत्नतः

दातव्यश्च सुवर्णादि यथाशक्त्या द्विजन्मने । पुत्रार्थीलभतेपुत्रान्धर्मार्थीधर्ममाप्नुयात्

अतिविपुलविधानैर्वर्णितं धर्म्यमाद्यं कलयति परभक्त्या क्षेत्रमाहात्म्यमेतत् ।

य इह मनुजवर्यः श्रीसनाथः स सम्यग्व्रजति हरिनिवासं सर्वभोगांश्च भुक्त्वा

यः पाठकस्यापि कदाचिदेव ददाति वित्तं च यथाऽऽत्मशक्त्या

पात्राणि वस्त्राणि मनोहराणि रौप्यं सुवर्णञ्च गवीः स मुच्येत् ॥ ८७ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
ऽयोध्यामाहात्म्येऽगस्त्यव्याससम्वादेऽयोध्यायात्राविधिक्रमवर्णनं
नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

समाप्तमिदमयोध्यामाहात्म्यम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥

अथश्रीवासुदेवमाहात्म्यारम्भः *

प्रथमोऽध्यायः

सावर्णिप्रश्नवर्णनम्

शौनक उवाच

जीवानां श्रेयसे सौते! बहुधा साधनानिते । धर्मोज्ञानञ्चवैराग्यंयोगार्दान्युदितानिनः
इतिहासैर्वहुविधैर्विस्पष्टार्थानितानिच । सर्वाण्यपिमहाबुद्धे! श्रुतान्यस्माभिरादरात्
सर्वेषां मनुजानान्तुदुष्कराण्येवतानितु । बाहुल्याच्चान्तरायाणांतत्सिद्धिरपिदुर्ल्लभा
प्रयत्नेनाऽतिमहतापुरुषैर्धैर्य्यशालिभिः । साधितान्यपिसिध्यन्तितानिकालेनभूयसा
अतो भवान्द्विजातानामाश्रमाणाञ्चसर्वशः । ब्रवीतु सुकरोपायं स्त्रीशूद्रादेरपीह नः ॥
कृतेन येनाऽप्यल्पेन येन केनाऽपि देहिना । अन्तरायैरविहतं महदेव फलं भवेत् ॥ ६॥
मोक्षस्य साधनंताद्रृक्सुविचार्य्यमहामते! । हिताय सर्वजीवानां कृपया वक्तुमर्हसि
प्रसादाद्बलदेवस्य व्यासस्य जनकस्य च । जानामिसर्वमेवत्वं तन्नो ब्रूहि बुभुत्सतः

सौतिरुवाच

महर्षिरपि सावर्णिरेवमेव हि शौनक । विनीतः स्कन्दमप्राक्षीत्पुनः शङ्करनन्दनम् ॥

---

* बङ्गाक्षरमुद्रितपुस्तकेलक्ष्मणपुर (लखनऊ) मुद्रितपुस्तकेचेदंवासुदेवमाहात्म्यं नैव दृश्यतेनारदपुराणीयविषयानुक्रमणेमाहेश्वरखण्डेवासुदेवमाहात्म्यपरिगणनं कृतं परं वेङ्कटेश्वरमुद्रितग्रन्थ एतन्माहात्म्यस्य वैष्णवखण्डसमाप्त्यनन्तरं कृतंनिवन्धनमिति परिशिष्टशैल्योप निबद्ध्यतेऽस्माभिरिति निभालयन्तु सुधियः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सावर्णिरुवाच

श्रुतानानाविधाधर्माःसाङ्ख्यज्ञानश्चनैकधा। योगादीनित्वदुक्तानिसाधनानिमयागुह

सुदुष्कराणि मन्येऽहं तानि त्वस्मादृशां किल।

महतामपि चाऽन्येषां कृच्छ्रसाध्यानि वै चिरात् ॥ ११॥

अतो वर्णाश्रमवतां श्रेयस्कृत्सुकरश्च यत्। साधनं यच्छ्रेष्ठतमं वक्तुमर्हसिमेऽधुना

सौतिरुवाच

इति पृष्टो मुनीन्द्रेण तेनजिज्ञासुनागुहः। वासुदेवं हृदिध्यायन्कार्त्तिकेयःसऊचिवान्

स्कन्द उवाच

शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्येऽहं श्रुतं पितृमुखान्मया। सर्वेषामपि जीवानां सुकरंमोक्षसाधनम्

देवताप्रीणनसमंस्वेष्टसिद्धिमभीप्सताम्। नास्त्यन्यसाधनंकिञ्चिद्वर्णाश्रमवतामिह

अप्यल्पं सुकृतं कर्म देवसम्बन्धतः कृतम्। फलं ददाति निर्विघ्नंमहदेवहितन्नृणाम्

दैवं पित्र्यं स्वधर्म्मश्च काम्यं कर्म्मापि यच्च तत्।

देवतायास्तु सम्बन्धात्सद्यः स्यादिष्टसिद्धिदम् ॥ १७॥

साङ्ख्ययोगविरागादि प्रागुक्तं यच्च दुष्करम्।

तदपि स्याद्धि सुकरमनेनैवाऽऽशु सिद्धिदम् ॥ १८॥

देवस्याऽऽराधनेनैव यतः सिद्ध्यति वाञ्छितम्।

अतः सर्वैर्यथाशक्ति प्रीत्याराध्यः स मानवैः ॥ १६॥

सावर्णिरुवाच

देवाबहुविधाःप्रोक्तास्त्वया षण्मुख! मे पुरा। नानाविधा वर्णिताश्चतदाराधनरीतयः

तत्फलानि च सर्वाणि त्वयोक्तानि पृथक्पृथक्।

स्वर्गादिप्राप्तिमुख्यानि कालग्रस्तानि तानि तु ॥ २१॥

निवृत्तिधर्म्मिणां ब्रह्माद्युपास्तेर्योगिनां गुह!।

जानादिलोकाप्तिफलं द्विपरार्द्धान्तनश्वरम् ॥ २२॥

दुष्कराणीह संसाध्य कर्म्माणिपुरुकृच्छ्रतः। क्षयिष्णुफललाभश्चेत्तर्हिंकितदुपार्जनैः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कालेन नाश्यते येषांवपुःस्थानबलादिकम् । तेषांनरोचतेमह्यमुपासाऽत्रदिवौकसाम्
यः स्वयं निर्भयोऽन्येषां भयहर्त्तासनातनः । नित्यधामाक्षयफलप्रदाता भक्तवत्सलः
यस्य प्रसादात्सर्वेषां सर्वएव मनोरथाः । सिद्ध्येयुश्चाञ्जसैवाऽत्र तं देवं वद मे गुह!
तदाराधनरीतिश्च सुकरां शिष्टसम्मताम् । ब्रूहि सर्वां विशेषेण जिज्ञासामीदमञ्जसा

सौतिरुवाच

इत्थं महर्षिणा तेन सम्पृष्टो भगवान्गुहः । सुप्रसन्नउवाचेदं मानयंस्तमुदारधीः ॥२८

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशातिसाहस्र्यां संहितायांद्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये सावर्णिप्रश्नोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

आत्यन्तिकश्रेयःसाधनवर्णनेनारायणनारदसमागमवर्णनम्

स्कन्द उवाच

महान्तं प्रश्नवित्प्रश्नं पृच्छसि त्वमिहाऽनघ! । नाल्योत्तरं वर्षशतैर्वक्तुंशक्यंस्वतर्कतः
ऋते देवप्रसादाद्वै ब्रह्मज्ञानिवरैरपि ॥ १ ॥
वासुदेवप्रसादात्तु मया ज्ञातं वदामि ते । अनाख्येयं न ते किञ्चिधर्मनिष्ठाय सन्मते!
एवमेव हि पप्रच्छ निवृत्ते भारते रणे । अजातशत्रुर्नृपतिर्भीष्मं धर्म्मविदाम्वरम् ॥
शयितं शरशय्यायां ध्यानप्राप्ताच्युतेन च । प्राप्तमैकात्म्यमप्यत्र निगमागमपारगम्

युधिष्ठिर उवाच

चतुर्षु तात वर्णेषु चतुर्ष्वप्याश्रमेषु यः । इच्छेच्चतुर्वर्गसिद्धिं देवतां कां यजेत सः
निर्विघ्नेन च का सिद्धिः कथं स्यादल्पकालतः ।
कथं चाप्यल्पसुकृती पदवीं महतीमियात् ॥
एतं मे संशयं छिन्धि सर्वज्ञस्त्वं पितामह! ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्कन्द उवाच

एवं धर्मात्मनातेन पृष्टः शान्तनवो मुने! । किञ्चिज्जहास वीक्ष्यैवश्रीकृष्णमुखपङ्कजम्
दृशा स प्रेरितस्तेन नरनारायणोदितम् । श्रीवासुदेवमाहात्म्यं पितुः श्रुतमुवाचतम्
ततः श्रुत्वा नारदोऽपिकुरुक्षेत्रं गतः पुनः । कैलासएत्थयतत्प्राह पितरंमेसचापिमाम्
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि निश्छद्मपरिपृच्छते । महासदसि निर्णीतंमुनिवर्याऽपसंशयम्
वासुदेवः परब्रह्म श्रीकृष्णः पुरुषोत्तमः । देवोऽकामैः सकामैश्च पूज्यो मुक्तैर्नरैरपि

द्विजातीनां चाश्रमाणां स्त्रीशूद्रादेश्च सर्वथा ।
स्वस्वधर्मैरेष एव तोषणीयोऽस्ति भक्तितः ॥ १२ ॥

तस्मात्कर्माखिलमपिदैवंपित्र्यश्चसर्वदा । तत्प्रीत्याएव कर्त्तव्यं वेदोक्तञ्चयथोचितम्
सुखाप्तयेनृभिर्यद्यत्कर्माऽत्रक्रियतेशुभम् । अपिस्वनुष्ठितंतच्चेत्कृष्णसम्बन्धवर्जितम्

तदा क्षयिष्ण्वल्पफलं ज्ञेयं तच्च गुणात्मकम् ॥ १५ ॥

फलवैगुण्यकृत्तच्चाऽशुभदेशादियोगतः । बहुविघ्नञ्च तन्नृणां नैव वाञ्छितसिद्धिदम्
कर्मतदेव श्रीकृष्णप्रीणनाय क्रियेत चेत् । तत्सम्बन्धेन तर्ह्येतद्भवेत्सर्वं हिनिर्गुणम्
स्ववाञ्छितादप्यधिकं ददाति फलमक्षयम् । असद्देशादिसम्बन्धात्तद्वैगुण्यंभवेन्न च

विघ्नस्तु कोऽपि ब्रह्मर्षे! प्रतापाच्चक्रपाणिनः ।
तस्मिन्नप्रभवेत्काऽपितत्स्यातीप्सितसिद्धिदम् ॥ १८ ॥

यद्यप्यल्पंस्वसुकृतं तथापि परमात्मनः । साक्षात्सम्बन्धतो ब्रह्मन्भवत्येव महत्तरम्
यथास्फुलिङ्गमात्रोऽपि वन्यकाष्ठौघयोगतः । अनिवार्यो भवेद्दावस्तथैतद्धरियोगतः

प्रवृत्ते वा निवृत्ते वा तस्माद्धर्मे स्थितैर्नरैः ।
उपास्तव्यो वासुदेवस्तत्सम्यक्सिद्धिमीप्सुभिः ॥ २१ ॥

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । नारदस्य च सम्वादमृषेर्नारायणस्य च ॥
यो वासुदेवोभगवान्नित्यंब्रह्मपुरेस्थितः । दाक्षायण्यामाविरासीद्धर्माल्लोकहितायसः
कृते युगे द्विजवर! पुरा स्वायम्भुवान्तरे । नरो नारायणश्चेति द्विरूपः प्रादुरास सः
धर्माश्रमात्तपस्तप्तुं क्षेमायैव नृणाम्भुवि । नरनारायणौ तौ च बदर्याश्रममीयतुः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्राद्यौ लोकनाथौ तौक्रशौधमनिसन्ततौ। तेपातेतेजसास्वेनदुर्निरीक्ष्यौसुरैरपि
यस्य प्रसादं कुर्वाते स वै तौ द्रष्टुमर्हति। शक्यते नान्यथाद्रष्टुमपि तद्धामवासिभिः
एकदा नारदोयोगी ताभ्यामेव दिदृक्षितः। अन्तरात्मतया चान्तर्हृदयेपि प्रचोदितः
मेरोर्महागिरेः शृङ्गात्सद्यो गगनवर्त्मना। तं देशमागमद्ब्रह्मन्बदर्याश्रमसञ्ज्ञितम् ॥
तयोराह्निकवेलायामागतस्तत्र स द्रुतम्। आद्याश्रमक्रियासक्तौ तौ ददर्श च दूरतः
दृष्ट्वैवेश्वरचर्या तां तस्य कौतूहलंत्वभूत्। अहोएतौ जगत्पूज्यावीश्वरौसर्वदेहिनाम्

एतौ हि परमं ब्रह्म काऽनयोराह्निकी क्रिया ॥ ३१

पितरौ सर्वभूतानां देवतानाञ्च दैवतम्। कां देवतां तु यजतः पितॄन्वैतौ महामती

इति सञ्चिन्त्य मनसा भक्तो नारायणस्य सः।

तत्समीपमुपेत्याऽथ तस्थौ नत्वा कृताञ्जलिः ॥ ३३ ॥

कृते दैवेच पित्र्ये च ततस्ताभ्यांनिरीक्षितः। पूजितश्चैवविधिनाशास्त्रदृष्टेनसोऽनघ!
तद्दृष्ट्वामहदाश्चर्य्यमपूर्वञ्चिविधिविस्तरम्। उपोपविष्टःसुप्रीतो नारदोऽभूच्चविस्मितः
नारायणं सन्निरीक्ष्य प्रयतेनान्तरात्मना। नमस्कृत्य च तं देवमिदं वचनमब्रवीत् ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्य आत्यन्तिकश्रेयःसाधननिरूपणे नारायणनारद-
समागमोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तृतीयोऽध्यायः

श्रीवासुदेवस्यसर्वोपास्यत्वनिरूपणम्

नारद उवाच

वेदेषु सपुराणेषु साङ्गोपाङ्गेषु गीयसे । त्वमेव शाश्वतो धातानियन्ताऽमृतमच्युतः
त्वं विधाता च सततं त्वयि सर्वमिदं जगत् ॥ १ ॥
चत्वारो ह्याश्रमादेवसर्वे वर्णाश्चकर्मभिः । यजन्ते त्वामहरहर्नानामूर्त्तिसमास्थितम्
पिता माता च सर्वस्य दैवतं त्वं हि शाश्वतम् ।
कं त्वं च यजसे देवं पितरं वा न विद्महे ॥ ३ ॥

श्रीनारायण उवाच

नैतद्रहस्यं वक्तव्यमात्मगुह्यमथापि ते । मयि भक्तिमते ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि यथातथम् ॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं यो ब्रह्मेति श्रुतिवर्णितः । त्रिगुणव्यतिरिक्तश्च पुरुषो दिव्यविग्रहः
महापुरुष इत्युक्तो वासुदेवश्च यः प्रभुः । नारायण ऋषिर्विष्णुः कृष्णश्च भगवानिति
एकः स एव देवो नौ पितरौ चेति विद्धि भो ।
आवाभ्यां पूज्यतेऽसौ हि दैवे पित्र्ये च कल्पिते ॥ ७ ॥
नास्तितस्मात्परतरःपितादेवोऽथवाद्विज! । आत्माहिनौस विज्ञेयःकृष्णोब्रह्मपुरेश्वरः
तेनैषा प्रथिता ब्रह्मन्मर्यादा लोकभावनी । दैवं पित्र्यञ्च कर्तव्यमितिलोकहितैषिणा
प्रवृत्तश्च निवृत्तश्च द्वेधा कर्माऽस्ति वैदिकम् । यथाधिकारंविहितंपुरुषार्थोपलब्धये
तन्त्रवेदोक्तविधिनास्वोचितस्त्रीपरिग्रहः । वित्तार्जनञ्चन्यायेनद्रव्ययज्ञाःसकामनाः
वासो ग्रामे च नगरे पूर्त्तमिष्टञ्च कर्मयत् । प्रवृत्तं तत्तुसकलमशान्तिकृदुदीरितम् ॥
स्त्रीद्रव्ययोः परित्यागः कामलोभक्रुधांतथा । वनवासश्चवैराग्यंतपःक्षान्तिःशमोदमः
ब्रह्मयज्ञा योगायज्ञा ज्ञानयज्ञाश्च सर्वशः । जपयज्ञाश्चेति मुने निवृत्तं कर्म कीर्तितम् ॥
त्रिलोक्यां गतयोधर्मंप्रवृत्तमनुतिष्ठताम् । स्वर्गलोकावधिमुने! मनुष्याणांभवन्तिवै

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रचन्द्राग्निलोकादौ स्वस्वपुण्यफलश्च ते।
भोगैश्वर्यं बहुविधमभीष्टं भुञ्जते खलु ॥ १६ ॥
यावत्पुण्यं तावदेव भुक्त्वा तत्ते सुरास्ततः। क्षीणे तु सुकृतेभूयःपतन्तिविवशाभुवि
भोगैश्वर्यादिनाशो हि कालवेगेन जायते। अनिच्छतामपि मुने तेषांपुण्यक्षये सति
अधिकारिकदेवानामपि ब्रह्मदिने मुहुः। इष्टभोगैश्वर्यनाशो जायते कालरंहसा ॥ १६
निवृत्तधर्मनिष्ठा ये योगिनश्च तपस्विनः।
जनादीन्यान्ति लोकांस्त्रींस्ते तु त्रैलोक्यतो वहिः ॥ २० ॥
तत्तल्लोकैश्वर्यभोगान्भुञ्जते तेनिजेप्सितान्। दैनन्दिनेऽपि प्रलयेवर्त्तन्ते ते यथासुखम्
ब्रह्मणो द्विपरार्द्धान्ते तद्भोगैर्यसम्पदः। नश्यन्ति कालशक्त्यैव लोकास्तेषां चनारद
अथैतद्द्विविधंकर्मगुणात्मकमपि द्विज!। कृतंचेद्विष्णुसम्बद्धंनिर्गुणंस्यात्तदातुतत्
तत्फलं चाऽक्षयं स्याद्धि स्वेष्टादप्यधिकं नृणाम्।
भक्तास्ते भगवद्धाम यान्त्यष्टावृत्तितः परम् ॥ २४ ॥
अतो विवेकिनो नित्यं विष्णुभक्त्यन्विताः क्रियाः।
प्रवृत्ता वा निवृत्ता वा कुर्वते सकला अपि ॥ २५ ॥
ब्रह्मा स्थाणुर्मनुर्दक्षो भृगुर्द्धर्मस्तथायमः। मरीचिरङ्गिराश्चात्रिःपुलस्त्यःपुलहः क्रतुः
वैभ्राजश्च वसिष्ठश्च विवस्वान्सोम एव च। कश्यपः कर्द्दमाद्याश्च प्रजानां पतयोमुने
देवाश्च ऋषयः सर्वेसर्वे वर्णास्तथाऽऽश्रमाः। पूजयन्ति तमेवेशं प्रवृत्तंधर्ममास्थिताः
सनः सनत्सुजातश्च सनकः स सनन्दनः। सनत्कुमारः कपिल आरुणिश्चसनातनः
ऋभुर्यतिश्च हंसाद्या मुनयो नैष्ठिकव्रताः। तमेव पूजयन्तीशं निवृत्तं धर्ममास्थिताः
वासुदेवस्याऽङ्गतया भावयित्वासुरान्पितॄन्। अहिंसपूजाविधिनायजन्तेचान्वहंहि ते
यथाधिकारमेते हि तेन यत्र नियोजिताः। प्रवृत्ते वा निवृत्ते वा धर्मेतेपालयन्तितम्
तस्य देवस्य मर्यादां न क्रामन्त्युभयेऽपि ते ॥ ३२ ॥
चतुर्वर्गे तेषु यस्य यद्यदिष्टतमं भवेत्। तत्तत्सम्पूरयत्येव सर्वशक्तिपतिः प्रभुः ॥३३
भक्त्या कृतस्याप्यल्पस्यभगवान्पुण्यकर्मणः। प्रीतोददात्येवफलंमहदक्षयमीप्सितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेषुतद्भक्तितोलोकेयेत्वेकान्तित्वमास्थिताः । वासुदेवंविनाऽन्यत्रसङ्क्षीणाशेषवासनाः
देहान्ते तेतु सम्प्राप्य तस्य धाम तमःपरम् । देहैरप्राकृतैरेव प्रेम्णा परिचरन्ति तम्
अन्येतु भक्ताःकालेनतदुपासनदार्ढ्यतः । वासनानांक्षयेजातेयान्त्येकान्तिकवद्धितम्
येत केनाऽपि भावेन तेन सम्बध्यते तु यः । संसृतिं नप्रयात्येवसतुक्काप्यन्यजीववत्

कर्मयोगस्यसंसिद्धिर्ज्ञानयोगस्यचेप्सिता ।
तस्या श्रयादेवऽऽनृणां निर्विघ्नं भवतिद्रुतम् ॥ ३६ ॥

तस्मात्सएवभगवान्सर्वैरपिजनैरिह । स्वाभीष्टफलसिद्ध्यर्थंप्रीत्योपास्योयथाविधि

ब्रह्मैक्यमताा निर्विघ्ना अपि ब्रह्मशिवादयः ।
श्रीविष्णोः कुर्वते भक्तिं सन्तीत्थं तन्महागुणाः ॥ ४१ ॥

इतिगुह्यसमुद्देशस्तवनारद कीर्त्तितः । अतिप्रेम्णा हि सततं मयि भक्तिमतोऽखिलः

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीवासुदेवसर्वोपास्यत्वनिरूपणं नाम
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः

श्वेतद्वीपमुक्तवर्णनम्

स्कन्द उवाच

स एवमुक्तो (क्ता?) त्मविदां वरिष्ठो नारायणेनोत्तमपूरुषेण ।
जगाद वाक्यं जगतां गरिष्ठं तमच्युतं लोकहिताधिवासम् ॥ १ ॥

नारद उवाच

श्रुतं मयादेव! समं त्वयोक्तमृष्याकृतिच्छादितभूरिधाम्ना ।
तवैव लीलासकलेयमीश सर्वेश्वरस्येति विदामि चित्ते ॥ २ ॥
त्वद्दर्शनेनैव हि पूर्णकामो भवामिभूमन्! स्वदद्दीप्सितेन ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथाप्यहं तत्तव पूर्वरूपं प्रभो! दिदृक्षामि हि कौतुकं मे ॥ ३ ॥

श्रीनारायण उवाच

न तत्स्वरूपं मम दानयज्ञयोगैश्च वेदैस्तपसाऽपि दृश्यम् ।
एकान्तिकैर्भक्तवरैस्तु भक्त्या ह्यनन्यया नारद! दृश्यते तत् ॥ ४ ॥
भक्तिस्तव त्वस्ति मयि ह्यनन्या ज्ञानञ्च वैराग्ययुतं स्वधर्मः ।
अतश्च तद्दर्शनमाप्स्यसि त्वं सुरेश्वराद्यैरपि यद्दुरापम् ॥ ५ ॥
त्वदीयभक्त्याऽतितरां प्रसन्नस्त्वाज्ञापयाम्यद्य तदीक्षणाय ।
सितान्तरीपं व्रज तत्र तेऽयं मनोरथः सेत्स्यति विप्रवर्य! ॥ ६ ॥

स्कन्द उवाच

श्रुत्वेति वाचं परमेष्ठिपुत्रः सोऽप्यर्चयित्वा तमृषिं पुराणम् ।
खमुत्पपातोत्तमयोगयुक्तस्ततोऽधिमेरौ सहसा निपेते ॥ ७ ॥
तस्याऽवतस्थे च मुनिर्मुहूर्त्तमेकान्तमासाद्य गिरेः स शृङ्गे ।
आलोकयन्नुत्तरपश्चिमेन ददर्श चाऽत्यद्भुतमन्तरीपम् ॥ ८ ॥
क्षीरोदधेरुत्तरतो हि द्वीपः श्वेतः स नाम्ना प्रथितो विशालः ।
देदीप्यमानो विततेन सर्वतो ज्योतिश्चयेनाऽतिसितेन नित्यम् ॥ ९॥
आम्रैरनेकैरसनैरशोकैराम्रातकैर्निम्बकदम्बनीपैः ।
बिल्वैर्मधूकैः सुरदारुभिश्च प्लक्षैर्वटैः किंशुकचन्दनैश्च ॥ १० ॥
सर्ज्जैश्च शालैः पनसैस्तमालैर्मुनिद्रुमैः केतकचम्पकैश्च ।
कुन्दैश्चजातीसुरमल्लिकाभिर्द्रुमैर्वृतः पुष्पफलावनम्रैः ॥ ११ ॥
कल्पद्रुमाणां बहुभिश्च वृन्दैः सुवर्णरम्भाक्रमुकालिभिश्च ।
महद्भिरुद्यानवरैरनेकैः सरित्सरोभिर्विकचाम्बुजैश्च ।
हंसादिभिः पक्षिवरैः सुशब्दैर्गणैर्मृगाणांरुचिरैश्चलद्भिः ॥ १२ ॥
सर्वेऽपि जीवाः किल यत्र मुक्ता वसन्ति च स्थावरजङ्गमाश्च ।
तं वीक्षमाणेन च तेन दृष्टा भक्तोत्तमाः श्री पुरुषोत्तमस्य ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अतीन्द्रिया निर्गतसर्वपापा निष्यन्दहीनाश्च सुगन्धिनश्च ।
द्विबाहवः केऽपि चतुर्भुजाश्च श्वेताश्च केचिन्नवनीरदाभाः ॥ १४ ॥
पद्मच्छदाक्षाः सममानगात्राः सुरूपदिव्यावयवाःसुसाराः ।
विकीर्णकेशाश्च सदा किशोराः सद्भिश्च चिह्नैर्निखिलैरुपेताः ॥ १५ ॥
सरोजरेखाङ्कितपाणिपादाः षडूर्मिहीना मिहिरातितेजसः ।
सितांशुकाध्यानपराश्च सौम्याः कालोऽपि येभ्यो भयमेति नित्यम् ॥१६॥

सावर्णिरुवाच

अतीन्द्रिया निरातङ्का अनिष्यन्दाः सुगन्धिनः ।
के ते नराः कथं जातास्तादृशाः का च तद्गतिः ॥ १७ ॥
श्वेतद्वीपपयोम्भोधौवर्त्तते हिधरातले । तद्वासिनामपिकथं प्रोक्ताऽतीन्द्रियता त्वया
ये ब्रह्मण्यक्षरे धाम्नि सच्चिदानन्दरूपिणि ।
स्थिताः स्युश्चिन्मया मुक्तास्ते तथा स्युर्न्नहीतरे ॥ १६ ॥
एतं मे संशयं छिन्धि परं कौतूहलं हि मे ।
त्वं हि सर्वकथाभिज्ञस्ततस्त्वामाश्रितोऽस्म्यहम् ॥ २० ॥

स्कन्द उवाच

एकान्तोपासनेनैव प्राक्कल्पेषु रमापतेः । ये ब्रह्मभावं सम्प्राप्ता अजरामरतांगताः ॥२१
अक्षराख्या पुमांसस्ते श्वेतद्वीपेऽत्रधामनि । सेवितुंवासुदेवंतंस्थितादेवर्षिणेक्षिताः
प्राप्तेप्रलयकालेतुपुनश्चाऽक्षरधामनि।स्थास्यन्तितेस्वतन्त्राश्चकालमायाभयोज्झिताः
अत्रापिपुरुषा ये तुमायाजाताअतः क्षराः । तेऽपि सद्भिःसाधनैर्वैजायन्तेतादृशाःकिल
अहिंसया च तपसा स्वधर्मेण विरागतः । वासुदेवस्यमाहात्म्यज्ञानेनैवात्मनिष्ठया ॥
भक्त्या परमयानित्यंप्रसङ्गेन महात्मनाम् । हरिसेवाविहीनानां मुक्तीनामप्यनिच्छया
सिद्धीनाममणिमादीनां सर्वासां चाऽप्यकाङ्क्षया ।
अन्योऽन्यं श्रुतिकीर्तिभ्यां श्रीहरेर्जन्मकर्मणाम्
भवन्ति तादृशा नूनं पुरुषा मुनिसत्तम! ॥ २७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जगत्सर्गे जायमानेऽप्येते कालवशात्कचित् ।
न जायन्ते स्वतन्त्रत्वान्न नश्यन्ति लयेऽन्यवत् ॥ २८ ॥

अत्रतेकथयिष्यामिकथांपौराणिकींमुने! ।यथाऽत्रत्योऽपिमनुजस्तथाभावमुपेयिवान्
विस्तीर्णैषाकथाब्रह्मञ्छ्रुतामेपितृसन्निधौ । सैषाद्यतववक्तव्याकथासारोहिसस्मृतः
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्वेतद्वीपमुक्तवर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

उपरिचरवसुसद्गुणवर्णनम्

स्कन्द उवाच

आसीद्राजोपरिचरो वासुनामा पुरा मुने । भूभर्त्तु रायोस्तनयः ख्यातश्चासावमावसुः
आखण्डलसखो भक्तिं प्राप्तो नारायणे प्रभौ ॥ १

धार्मिकः पितृभक्तश्च पितृन्देवांश्च तर्पयन् । सदाचाररतो दक्षः क्षमावाननसूयकः ॥
सर्वोपकारकः शान्तो ब्रह्मचर्यरतः शुचिः । अक्रोधनश्च मितभुङ्मृदुर्निर्व्यसनो मुनिः
निर्द्वन्द्वो निर्विकारश्च निर्मानो धीर आत्मवित् ।
निर्दम्भो मानदो योगी तपस्वी विजितेन्द्रियः ॥ ४ ॥

धनपुत्रकलत्रेषु विरक्तः स्वजनादिषु । नारायणमनुं भक्त्या स जजापाऽन्वहं नृपः ॥
तस्मैतुष्टोऽथभगवान्वासुदेवःस्वयंददौ । साम्राज्यं सोऽथनासक्तस्तत्रभेजेतमादरात्
तन्त्रोक्तेनविधानेनपञ्चकालं समाहितः । पूजयामास देवेशं तच्छेषेण सुरान्पितृन् ॥
तेषांशेषेणविप्रांश्चसम्विभज्याऽऽश्रितांश्चसः । शेषान्नभुक्सत्यपरःसर्वभूतेष्वहिंसकः
भक्षणे दोषमविदत्प्राणिमात्रामिषस्य तु । महापातकवद्राजा स्वप्रजाश्चतथाऽवदत्
सर्वभावेन भेजेऽसौ देवदेवं जनार्दनम् । अनादिमध्यनिधनं लोककर्त्तारमव्ययम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीवासुदेवपदयोः स चकार मनः स्थिरम् । श्रोत्रे चनित्यंभगवत्कथायाःश्रवणेनृपः
नयने स्वे मुकुन्दस्य तद्भक्तानाञ्चदर्शने । गुणगाने हरेर्वाणीञ्चक्रे भूमिपतिः स तु ॥

नारायणाङ्घ्रिसंस्पृष्टतुलसीपुष्पसौरभे ।
घ्राणं चकार च नृपो नाऽन्यगन्धेषु कर्हिचित् ॥ १३ ॥

श्रीशोपभुक्तवस्त्रादिस्पर्शने च त्वचं निजाम् । चकार रसनामन्ने नारायणनिवेदिते
भगवन्मन्दिरक्षेत्रसदन्तिकगतौ तथा । चकार चरणौ राजा सेवायाञ्च करौ हरेः ॥
उत्तमाङ्गं च चक्रेऽसौ विष्णुपादाभिवन्दने । सख्यञ्चकार परमं महाभागवतेषु सः १६
एकोऽपि न क्षणस्तस्य विना भक्तिरमापतेः । जगामकिलराजर्षेस्तदीयव्रतचारिणः
महद्भिरेव सम्भारैर्विष्णोर्ज्जन्मदिनोत्सवान् । चक्रे तदर्थमुद्यानमन्दिरोपवनानि च
इत्थं नारायणे भक्तिं वहतो ब्राह्मणोत्तम! । एकशय्यासनं तस्यदत्तवान्देवराट्स्वयम्

वैजयन्तीं ददौ मालां तस्मा इन्द्रोऽतिशोभनाम् ।
अम्लानपङ्कजमयीं तथा रत्नानि भूरिशः ॥ २० ॥

आत्मा राज्यं धनं चैव कलत्रं वाहनादि च । यत्तद्भगवतः सर्वमिति तत्प्रेक्षितं सदा

काम्या नैमित्तिकाजस्रं यज्ञियाः परमाः क्रियाः ।
सर्वाः सात्वतमास्थाय विधिं चक्रे समाहितः ॥ २२ ॥

पञ्चरात्रविदो मुख्यास्तस्य गेहे महात्मनः । प्रायणंभगवत्प्रत्तंभुञ्जतेऽस्माग्रतोद्विजाः
तस्य प्रशासतो राज्यंधर्मेणाऽमित्रघातिनः । नानृतावाक्समभवन्मनोदुष्टंनचाऽभवत्

न च कायेन कृतवान्स पापं परमण्वपि ॥ २४ ॥

पञ्चरात्रं महातन्त्रं भगवद्भक्तिपुष्टये । शुश्रावाऽनुदिनं राजा भगवद्भक्तवक्त्रतः ॥ २५॥
धर्मं संस्थापयञ्छुद्धं रञ्जयन्सकलाः प्रजाः । पालयामासपृथिवींदिवमाखण्डलोयथा
अपिसप्तविधस्तस्य राज्ये पललभक्षकः । पुमान्कोऽप्यभवन्नैव न चपाखण्डवेषिणः

असाध्व्यो योषितश्चैव पुरुषाः पारदारिकाः ।
न श्रुतास्तस्य राज्ये च धर्मसङ्करकारिणः ॥ २८ ॥

एकादशविधं मद्यंत्रिविधाञ्चसुरामपि । नाजिघ्रदपि कोऽपीह तस्मिन्राज्यंप्रशासति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवंगुणःसतु काऽपिपक्षपाताद्दिवौकसाम् । मिथ्यालापाद्दिवोभ्रष्टःप्रविवेशमहीतलम्
अन्तर्भूमिगतश्चाऽसौ सततं धर्मवत्सलः । नारायणपरोभूत्वा तन्मन्त्रमजपत्स्थिरः
तस्यैवच प्रसादेन पुनरेवोत्थितस्तु सः । दिवम्प्राप्य सुखं तत्रमनोऽभीष्टंसमन्वभूत्
पुनश्चेदिपतिर्भूत्वा भुव्यसौ पितृशापतः ।
पञ्चरात्रोक्तविधिना भेजे हरिमतन्द्रितः ॥ ३३ ॥
स्वर्गलोकं ततः प्रापद्दिव्यदेहेन भूपतिः । उपासनाञ्च तत्रत्यैः परमर्षिगणैः सह ॥
दृढीकुर्वन्भगवतः कञ्चित्कालमुवास तत् । परं पदमथ प्रापद्वासुदेवस्य निर्भयम् ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्य उपरिचरवसुसद्गुणवर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः

वेदस्यहिंसापरत्वोक्त्योपरिचरवसोरधःपातवर्णनम्

सावर्णिरुवाच

स हि भक्तोभगवतआसीद्राजामहान्वसुः । किं मिथ्याऽभ्यवदद्येनदिवोभूविवरंगतः
केनोद्धृतः पुनर्भूमेः शप्तोऽसौ पितृभिः कुतः ।
कथं मुक्तस्ततो भूप इत्येतत्स्कन्द! मे वद ॥ २ ॥

स्कन्द उवाच

शृणु ब्रह्मन्कथामेतां वसोर्वासवरोचिषः । यस्याः श्रवणतःसद्यःसर्वपापक्षयोभवेत्
स्वायम्भुवान्तरेपूर्वमिन्द्रो विश्वजिदाह्वयः । आरम्भे महायज्ञमश्वमेधाभिधं मुने ॥
निबद्धाः पशवोऽजाद्याःक्रोशन्तस्तत्रभूरिशः । सर्वेदेवगणाश्चापि रसलुब्धास्तदासत
क्षेमाय सर्वलोकानां विचरन्तो यदृच्छया । महर्षय उपाजग्मुस्तत्र भास्करवर्च्चसः
सम्मानिताः सुरगणैः पाद्यार्घ्यस्वागतादिभिः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ते बृहन्मुनयोऽपश्यन्मेध्यांस्तान्क्रोशतः पशून् ॥ ७ ॥
सात्त्विकानामपिचतंदेवानांयज्ञविस्तरम् । हिंसामयंरूमालोक्यतेऽत्याश्चर्यंहिलेभिरे
धर्मव्यतिक्रमं दृष्ट्वा कृपया ते द्विजोत्तमाः । महेन्द्रप्रमुखानूचुर्देवान्धर्मधियस्ततः ॥६॥

महर्षय ऊचुः

देवैश्च ऋषिभिःसाकंमहेन्द्राऽस्मद्वचःशृणु । यथास्थितंधर्मतत्त्वंवदामोहिसनातनम्
यूयं जगत्सर्गकाले ब्रह्मणा परमेष्ठिना । सत्त्वेन निर्मिताः स्थोवै चतुष्पाद्धर्मधारकाः
रजसा तमसा चासौ मनूंश्चैव नराधिपान् । असुराणाञ्चाधिपतीनसृजद्धर्मधारिणः
सर्वेषामथ युष्माकं यज्ञादिविधिबोधकम् । ससर्ज श्रेयसे वेदं सर्वाभीष्टफलप्रदम्
अहिंसैव परो धर्मस्तत्र वेदेऽस्तिकीर्त्तितः । साक्षात्पशुवधोयज्ञे नहि वेदस्यसम्मतः
चतुष्पादस्यधर्मस्यस्थापनेह्येवसर्वथा । तात्पर्यमस्तिवेदस्य न तु नाशेऽस्यहिंसया
रजस्तमोदोषवशात्तथाप्यसुरपा नृपाः । मेध्येनाऽऽजेन यष्टव्यमित्यादौमतिजाड्यतः

छागादिमर्थं बुबुधुर्व्रीह्यादिं तु न ते विदुः ॥ १६ ॥
सात्त्विकानां तु युष्माकं वेदस्याऽर्थो यथा स्थितः ।
ग्रहीतव्योऽन्यथानैव तादृशी च क्रियोचिता ॥ १७ ॥
यादृशो हि गुणो यस्यस्वभावस्तस्यतादृशः ।
स्वस्वभावानुसारेण प्रवृत्तिः स्याच्च कर्मणि ॥ १८ ॥
सात्त्विकानां हि वो देवः साक्षाद्विष्णू रमापतिः ।
अहिंसयज्ञेऽस्ति ततोऽधिकारस्तस्य तुष्टये ॥ १६ ॥

प्रत्यक्षपशुमालभ्य यज्ञस्याऽऽचरणं तु यत् । धर्मः स विपरीतोवैयुष्माकंसुरसत्तमाः
रजस्तमोगुणवशादासुरीं सम्पदं श्रिताः । युष्माकं याचका ह्येतेसन्त्यवेदविदोयथा
तत्सङ्गादेवयुष्माकं साम्प्रतं व्यत्ययोमतेः । जातस्तेनेदृशंकर्म प्रारब्धमितिनिश्चितम्
राजसानां तामसानामासुराणांतथानृणाम् । यथागुणंभैरवाद्याउपास्याःसन्तिदेवताः
स्वगुणानुगुणात्मीय देवतातुष्टये भुवि । हिंस्रयज्ञविधानं यत्तेषामेवोचितं हि तत्
तत्राऽपि विष्णुभक्ताये दैत्यरक्षोनरादयः । तेषामप्युचितो नास्तिहिंस्रयज्ञःकुतस्तुवः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यज्ञशेषोहि सर्वेषां यज्ञकर्मानुतिष्ठताम् । अनुज्ञातो भक्षणार्थं निगमेनैव वर्तते ॥२६

सात्त्विकानां देवतानां सुरामांसाशनं क्वचित् ।

अस्माभिस्त्वीक्षितं नैव न श्रुतञ्च सतां मुखात् ॥ २७ ॥

तस्माद्व्रीहिभिरेवाऽसौयज्ञःक्षीरेणसर्पिषा । मेध्यैरन्नरसैश्चाऽन्यैःकार्योनपशुहिंसया

तत्राऽपिवीजयैष्टव्यमजसञ्ज्ञामुपागतैः । त्रिवर्षकालमुषितैर्न्न येषां पुनरुद्गमः ॥ २६॥

अद्रोहश्चाप्यलोभश्च दमो भूतदया तपः । ब्रह्मचर्यं तथा सत्यमदम्भश्च क्षमा धृतिः

सनातनस्यधर्मस्य रूपमेतदुदीरितम् । तदतिक्रम्य यो वर्तेद्धर्मघ्नः स पतत्यधः ॥३१

स्कन्द उवाच

इत्थं वेदरहस्यज्ञैर्महामुनिभिरादरात् । बोधिता अपि सन्नीत्या स्वप्रतिज्ञाविघाततः

तद्वाक्यंजगृहुर्नैव तत्प्रामाण्यविदोऽपिते ॥ ३२ ॥

महद्व्यतिक्रमात्तर्हि मानक्रोधमदादयः । विविशुस्तेष्वधर्मस्य वंश्याश्छिद्रगवेषिणः

अजश्छागोन वोजानीत्यादिवादिषुतेष्वथ । विमनस्स्वृषिवर्येषुपुनस्तान्बोधयत्सुच

राजोपरिचरः श्रीमांस्तत्रैवागाद्यदृच्छया । तेजसा द्योतयन्नाशा इन्द्रस्य परमः सखा

तं दृष्ट्वासहसायान्तंवसुं ते त्वन्तरिक्षगम् । उचुर्द्विजातयो देवानेष च्छेत्स्यतिसंशयम्

एष भूमिपतिःपूर्वं महायज्ञान्सहस्रशः । चक्रे सात्वततन्त्रोक्तविधिनाऽऽरण्यकेन च

येषु साक्षात्पशुवधः कस्मिंश्चिदपि नाऽभवत् ।

न दक्षिणानुकल्पश्च नाऽप्रत्यक्षसुरार्च्चनम् ॥ ३८ ॥

अहिंसाधर्मरक्षाभ्यांख्यातोऽसौ सर्वतोनृपः । अग्रणीर्विष्णुभक्तानामेकपत्नीमहाव्रतः

ईदृशो धार्मिकवरः सत्यसन्धश्चवेदवित् । कश्चिन्नान्यथा ब्रूयाद्वाक्यमेष महान्वसुः

एवं तेसम्विदंकृत्वाविबुधाऋषयस्तथा । अपृच्छन्सहसाऽभ्येत्यवसुं राजानमुत्सुकाः

देवमहर्षय ऊचुः

भोराजन्केन यष्टव्यं पशुनाऽहोस्विदोषधैः । एतं नः संशयं छिन्धिप्रमाणंनोभवान्मतः

स्कन्द उवाच

स तान्कृताञ्जलिर्भूत्वा परिपप्रच्छ वै वसुः । कस्यवःकोमतःपक्षोब्रूतसत्यंसमाहिताः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महर्षय ऊचुः

धान्यैर्यष्टव्यमित्येव पक्षोऽस्माकं नराधिप! । देवानां तु पशुःपक्षोमतंराजन्वदात्मनः

स्कन्द उवाच

देवानां तु मतं ज्ञात्वा वसुस्तत्पक्षसंश्रयात् । छागादिपशुनैवेज्यमित्युवाचवचस्तदा

एवं हि मानिनां पक्षमलन्तं स उपाश्रितः । धर्मज्ञोऽप्यवदन्मिथ्यावेदं हिंसापरंनृपः

तस्मिन्नैव क्षणे राजा वाग्दोषादन्तरिक्षतः । अधः पपात सहसा भूमिं चप्रविवेशसः

महतीं विपदं प्रापभूमिमध्यगतो नृपः । स्मृतिस्त्वेनं नप्रजहौ तदा नारायणाश्रयात्

मोचयित्वा पशून्सर्वांस्ततस्ते त्रिदिवौकसः ।

हिंसाभीता दिवं जग्मुः स्वाश्रमांश्च महर्षयः ॥ ४६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये वेदस्य हिंसापरत्वोक्त्या उपरिचरवसोरधः पातवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः

उपरिचरवसुमोक्षवर्णनम्

स्कन्द उवाच

भूमध्यगःसराजाऽथस्वकृतंकर्मगर्हयन् । अनुतप्यमानश्च भृशं मानयंस्तान्बृहन्मुनीन्

जजाप भगवन्मन्त्रं त्र्यक्षरं मनसा सदा ॥ १ ॥

तत्राऽपि परया भक्त्या पञ्चकालं स्वचेतसा । अयजद्धरिं सुरपतिंभूमेर्विवरआदरात्

ततोऽस्य तुष्टोभगवान्वासुदेवो जगत्पतिः । आपद्यपि यथाकालंयथाशास्त्रंस्वमर्चतः

वरदो भगवान्विष्णुः समीपस्थं द्विजोत्तमम् ।

गरुत्मन्तं महावेगमाबभाषे स्वयं ततः ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभगवानुवाच

द्विजोत्तम महाभाग गम्यतां वचनान्मम । सम्राड्राजा वसुर्नामधर्मात्मामांसमाश्रितः
ब्रह्मातिक्रमदोषेण प्रविष्टो वसुधातलम् । तन्मानना कृता तेन तद्गच्छाद्यतदन्तिकम्
भूमेर्विवरसङ्गुप्तं गरुडैनं ममाज्ञया । अधश्चरं नृपश्रेष्ठं खेचरं कुरु मा चिरम् ॥ ७ ॥

स्कन्द उवाच

गरुत्मानथ विक्षिप्य पक्षौमारुतवेगवान् । विवेश विवरंभूम्यांयत्रास्तेवाग्यतोवसुः
तत एनं समुत्क्षिप्य स्वचञ्च्वा विनतासुतः । उत्पपात नभस्तूर्णं तत्र चैनममुञ्चत
तस्मिन्मुहूर्त्ते सञ्जज्ञे राजोपरिचरः पुनः । सशरीरो गतः स्वर्गं परमं सुखमाप्तवान्
एवं तेनाऽपि ब्रह्मर्षे वाग्दोषात्सदवज्ञया । प्राप्ता गतिरयज्वार्हा धर्मज्ञेन महात्मना ॥
केवलं पुरुषस्तेन सेवितो हरिरीश्वरः । ततः शीघ्रं जहौ पापं स्वर्गलोकमवाप च

भुञ्जानो विविधं सौख्यं मनोऽभीष्टञ्च तत्र सः ।
उवासान्यो यथा शक्रो गीयमानयशाः सुरैः ॥ १३ ॥

तमेकदा विमानेन चरन्तं सूर्यसन्निभम् । अद्रिकाप्सरसायुक्तमच्छोदा समवैक्षत ॥

सा हि सोमपदस्थानां पितॄणां मानसी सुता ।
अग्निष्वात्ताभिधानानाममूर्त्तानां महात्मनाम् ॥ १५ ॥
अमूर्त्तत्वात्पितॄन्स्वान्सा न जानन्ती शुचिस्मिता ।
तं वसुं पितरं मेने स च तामात्मजामिव ॥ १६ ॥

तौ ततः पितरः शेपुर्भावं दृष्ट्वेदृशं तयोः । कन्ये त्वमस्यन्नृपतेर्भुवि कन्याभविष्यसि

वसो! त्वं मानुषो भूत्वा सुतामेनां स्वयोषिति ।
अस्यामेवाप्सरायां त्वं जनयिष्यसि निश्चितम् ॥ १८ ॥
इत्थं तौ पितृभिः शप्तौ शापमोक्षाय तांस्ततः ।
प्रार्थयामासतुर्नत्वा तदोचुस्ते कृपालवः ॥ १९ ॥
अवश्यमित्थं भावित्वाद्युवाभ्यामुपलम्भितः ।
शापोऽयं तत्र युवयोः श्रेय एव भविष्यति ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टाविंशे द्वापरे तु वसो! त्वं भुवि भूपतेः । कृतयज्ञस्य तनयो भवितासि महात्मनः
तत्राऽपि च यथेदानीं तथा त्वं सकलैर्गुणैः । जुष्टश्चखचरोभाव्यो महाभागवताग्रणीः

पञ्चरात्रोक्तविधिना विष्णुमभ्यर्च्य भक्तितः ।
तच्छेषेण सुरांश्चाऽस्मानर्चयिष्यसि सप्रजः ॥ २३ ॥
ततस्त्वं दिव्यदेहेन स्वर्गलोकमवाप्स्यसि ।
दिव्यान्भोगांस्तत्र भुक्त्वा प्राप्स्यसे वैष्णवं पदम् ॥ २४ ॥
अच्छोदे त्वमपि क्षोण्यां नाम्ना कालीति विश्रुता ।
स्वांशेन मत्स्यदेहायामद्रिकायां जनिष्यसे ॥ २५ ॥

पराशरात्तत्रसुतंकन्यैवप्राप्स्यसेहरिम् । प्रसादादेवतस्यत्वं भुक्तिं मुक्तिं च लप्स्यसे

स्कन्द उवाच

इत्थं स पितृभिःशप्तोऽनुगृहीतश्चभूपतिः । कृतयज्ञादिह जनिं प्राप्याऽभूद्विश्रुतोगुणैः
यथा पूर्वं कृष्णभक्तो दैवपित्र्यविधानवित् । सख्ये तस्मै महेन्द्रश्चप्रादात्प्रचुरसम्पदः
श्वेतद्वीपे वासुदेवात्प्राप्तोयोविजयध्वजः । पुरास्वेनारिनाशार्थंतस्माइन्द्रस्तमप्यदात्

अन्तरीक्षगती राजा भौमान्भोगान्सुदुर्लभान् ।
भुक्त्वाऽन्ते स्वर्गलोकञ्च दिव्यदेहेन लब्धवान् ॥ ३० ॥
प्राक्पुण्यशेषस्य फलं भुञ्जन्स्वमनसेप्सितान् ।
तत्र भोगान्बहुविधांस्तीव्रं वैराग्यमाप्तवान् ॥ ३१ ॥

मेरोः शृङ्गेऽथ विजने शुचिः कृतदृढासनः । दध्यौस्वहृदयाम्भोजेस्वेष्टदेवंरमापतिम्
त्यक्त्वादेववपुः सोऽथयोगधारणयामुनिः । ततःसूक्ष्मशरीरेणप्रापभास्करमण्डलम्

यदाहुर्नैष्ठिकानाञ्च मुक्तिद्वारं हि योगिनाम् ॥ ३३ ॥

तत्तेजोदग्धसूक्ष्माङ्गः सच्चिद्रूपोऽतिनिर्मलः । स वभूव महाभागः सङ्क्षीणाशेषवासनः
ततस्तन्मण्डलगतैरातिवाहिकदैवतैः । स निन्ये वैष्णवं धाम श्वेतद्वीपाख्यमद्भुतम्
सहिद्वीपोभुविस्थोऽपिभवत्यप्राकृतोमुने । हरिभक्तिजनावासःप्राप्यएकान्तभक्तिभिः
स गोलोकब्रह्मपुरवैकुण्ठानाञ्च सुव्रत! । द्वारभूतोऽस्ति भक्तानांतल्लिप्सूनांमहात्मनाम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यस्य यद्धाम्न इच्छा स्याद्व्रजतस्तं तदेव हि । प्रापयन्तिश्वेतमुक्तामुनेप्रागुक्तलक्षणाः

दिव्यदेहोऽभवत्तत्र धाम्न्यऽसौ श्वेतमुक्तवत् ।
प्राप्य गोलोकधामाऽथ परमानन्दमाप्तवान् ॥ ३६ ॥

इत्थमेकान्तिकेनैवधर्मेणाऽऽराधयन्तिये । नारायणं परं ब्रह्म श्वेतमुक्ता भवन्ति ते ॥

एतत्ते सर्वमाख्यातं पृष्टवान्यद्भवान्मुने । स्थितिरेकान्तभक्तानां श्वेतधाम्नश्चलक्षणम्

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्य उपरिचरवसुमोक्षनिरूपणं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः

देवेन्द्रशापवार्त्तावर्णनम्

सावर्णिरुवाच

महर्षिवारितैर्द्देवैस्त्यक्ते हिंसामये मखे । पुनः कथं सम्प्रवृत्ता मखाः सर्वत्र तादृशाः

देवेष्वृषिषु भूपेषु प्राचीनाऽऽधुनिकेषु च । सनातनः शुद्धधर्मो विपर्यासं कथं गतः ॥

अत्र मे संशयो भूयान्सञ्जातोऽद्य षडानन! । त्वं सर्वशास्त्रतत्त्वज्ञस्तमपाकर्त्तुमर्हसि

स्कन्द उवाच

कालो बलीयान्बलिनां भिद्यन्ते तेन बुद्धयः । कामक्रोधरसास्वादलोभमानवतां मुने

अतिक्रमेण महतांयथार्थहितभाषिणाम् । क्रोधमानवशात्पुंसांनश्यन्त्येव च सद्धियः

अकार्यमपि ते कर्तुं तदानीं तु बुधा अपि । प्रवर्त्तन्तेऽनुतप्यन्तेवम्भ्रम्यन्तेऽथ संसृतौ

कामादिभिर्विहीना ये सात्वताः क्षीणवासनाः ।
तेषां तु बुद्धिभेदाय क्वाऽपि कालो न शक्नुते ॥ ७ ॥

अनाश्रितस्तु सद्धर्मं पुमान्कश्चन कर्हिचित् । संसृतेर्म्मुच्यतेनैव सत्यमेतद्वचो मम ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रवृत्तिं हिंस्रयज्ञादेरथ ते द्विजसत्तम! । कथयामि यथा पूर्वं मयाऽश्रावि पितुर्मुखात्
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
नारायणस्य माहात्म्यं यत्र लक्ष्म्याश्च कीर्तितम् ॥ १० ॥
मुनीनां वृहतांतेषामतिक्रमणदोषतः । इन्द्रस्याऽऽसीद्विश्वजितःसद्बुद्धिविलयोमुने
दुर्वासाः शङ्करस्यांशस्तपस्वी मुनिरेकदा । चरन्यदृच्छयालोकान्पुष्पभद्रांनदींययौ
जलक्रीडार्थमायान्तीं स्वर्गात्तत्रसखीवृताम् । विद्याधरस्य सुमतेरङ्गनां स समैक्षत
स्वर्गङ्गाहेमकमलैर्ग्रथितामतिसौरभाम् । दधतीं दक्षिणे पाणौ स्रजंमदकलाभिधाम्
तामवेक्ष्य मुनिस्तस्याः समीपमुपगम्यसः । उन्मत्तवद्ययाचेतांस्रजेविद्याधरीधृताम्
सापिप्रणम्यतंसद्योमाहात्म्यंतस्यजानती । तत्कण्ठेधारयामासमालांतां परमादरात्
ततः प्रीतमनागच्छन्गायन्नुन्मत्तवन्मुनिः । ददर्श पथिदेवेन्द्रमायान्तं तां महानदीम्
अप्सरोभिश्च गन्धर्वैः सतालं मधुरस्वरम् ।
उपगीयमानविजयमधिरूढं गजाधिपम् ॥ १८ ॥
रम्भामधुरसङ्गीतश्रवणानन्दनिर्वृतम् । तन्मुखाब्जस्थिरदृशं छत्रचामरशोभितम् ॥
अनवेक्षमाणमात्मानं तं दृष्ट्वा सोऽत्रिनन्दनः ।
स्वकण्ठस्थां स्रजं तस्मिंश्चिक्षेपोन्मत्तवद्धसन् ॥ २० ॥
इन्द्रोऽप्यधर्मसर्गेण समाविष्टःपुरैव यत् । ततस्तदा कामवशस्तांन्यधाद्गजकुम्भयोः
तत्सौरभाकृष्टचेताः करीन्द्रः शुण्डयाऽकृषत् ॥ २१ ॥
करात्सा पतिता भूमौ तांश्च गच्छन्करीपदा । ममर्द पश्यतस्तस्यमहर्षेस्तपसांनिधेः
ततःक्रुद्धःसदुर्वासाः प्रलयाग्न्यरुणेक्षणः । प्राहेन्द्रंमत्तदुष्टात्मन्स्तब्धोसिकामलम्पट
श्रियोधामस्रजंप्रीत्यामद्दत्तांनाभिनन्दसि । प्रणाममपि रेमूढ न करोषि त्वमुन्मदः ॥
न वीक्षसे मामपि त्वं त्वादृङ्मत्तैकशिक्षकम् ।
त्रैलोक्यराज्यप्राप्तान्ध्यः सम्यक्त्वां शिक्षयेऽधुना ॥ २५ ॥
यस्यः प्रसादात्त्रैलोक्यराज्यसौख्यं त्वमाप्तवान् ।
सैव श्रीः सत्रिलोकं त्वां हित्वा लीनाऽस्तु सागरे ॥ २६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चज्रपातोपमंवाक्यंतन्निशम्यैवतत्क्षणम् ।गजादुत्प्लुत्यविमदस्तदङ्घ्र्योर्न्यपतद्धरिः
प्रार्थयामासच मुहुः प्रणमंस्तं सवेपथुः । प्रसादं मयि दासे त्वं कृपालो कर्तुमर्हसि ॥
प्राहाऽथ स रे शक्र नाहम्वैगौतमोमुनिः । अक्षमासारसर्वस्वं दुर्वाससमवेहिमाम्
अन्येतेमुनयोदुष्टास्तावकास्तेऽनुवर्त्तिनः । अहं तु त्वादृशान्कीटान्गणयेनैवनिःस्पृहः

ज्वलज्जटाकलापाच्च भ्रूकुटीकुटिलेक्षणात् ।
को वा न विभियान्मत्तो ब्रह्माण्डे पापकर्मकृत् ॥ ३१ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये देवेन्द्रशापो नामाऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः

हिंस्रयज्ञप्रवृत्तिहेतुनिरूपणम्

स्कन्द उवाच

भाविधर्मविपर्यासकालवेगवशोऽथ सः । नाहं क्षमिष्य इत्युक्त्वा कैलासं प्रययौमुने
त्रैलोक्याच्छ्रीरपितदासमुद्रेऽन्तर्द्धिमाययौ । इन्द्रंविहायाऽप्सरस सर्वशःश्रियमन्वयुः
तपः शौचं दया सत्यं पादः सद्धर्मऋद्धयः । सिद्धयश्च वलं सत्त्वं सर्वतः श्रियमन्वयुः
गजादीनिच यानानि स्वर्णाद्याभूषणानिच । चिक्षियुर्मणिरत्नानि धातूपकरणानिच

अन्नान्यौषधयः स्नेहाः कालेनाऽल्पेन चिक्षियुः ।
न क्षीरं धेनुमहिषीप्रमुखानां स्तनेष्वभूत् ॥ ५ ॥

नवाऽपि निधयोनष्टाः कुवेरस्यापिमन्दिरात् । इन्द्रःसहामरगणैरासीत्तापससन्निभः

सर्वाणि भोगद्रव्याणि नाशमीयुस्त्रिलोकतः ।
देवा दैत्या मनुष्याश्च सर्वे दारिद्र्यपीडिताः ॥ ७ ॥

कान्त्याहीनस्ततश्चन्द्रःप्रापाम्बुत्वंमहोदधौ । अनावृष्टिर्महत्यासीद्धान्यबीजक्षयङ्करी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काऽन्नं कान्नेति जल्पन्तः क्षुत्क्षामाश्च निरोजसः। त्यक्त्वाग्रामान्पुरश्चोषुर्वनेषुचनगेषु च

क्षुधार्त्तास्ते पशून्हत्वा ग्राम्यानारण्यकांस्तथा।

पक्त्वाऽपक्त्वाऽपि वा केचित्तेषां मांसान्यभुञ्जत ॥ १० ॥

विद्वांसो मुनयश्चाऽथ ये वै सद्धर्मचारिणः।

म्रियमाणाः क्षुधाऽथाऽपि नाऽश्नन्त पललानि तु ॥ ११ ॥

तदा तु वृद्धा ऋषयस्तान्दृष्ट्वाऽनशनादृतान्। मनुभिः सह वेदोक्तमापद्धर्ममबोधयन्

मुनयः प्रायशस्तत्र क्षुधाव्याकुलितेन्द्रियाः। परोक्षवादवेदार्थान्विपरीतान्प्रपेदिरे ॥

अर्थश्चाजादिशब्दानांमुख्यंछागादिमेव ते। बुबुधुश्चाऽथ ते प्राहुर्यज्ञान्कुरुतभोद्विजाः

या वेदविहिता हिंसा न सा हिंसाऽस्ति दोषदा।

उद्दिश्य देवान्पितॄंश्च ततो घ्नत पशूञ्छुभान् ॥ १५ ॥

प्रोक्षितं देवताभ्यश्च पितृभ्यश्च निवेदितम्। भुञ्जतस्वेप्सितंमांसंस्वार्थंतु घ्नतमापशून्

ततो देवर्षिभूपाला नराश्च स्वस्वशक्तितः। चक्रुस्तैर्बोधितायज्ञानृतेह्येकान्तिकान्हरेः

गोमेधमश्वमेधञ्च नरमेधमुखान्मखान्। चक्रुर्यज्ञावशिष्टानि मांसानि बुभुजुश्च ते ॥

विनष्टायाः श्रियः प्राप्त्यैकेचिद्यज्ञांश्चचक्रिरे। स्त्रीपुत्रमन्दिराद्यर्थंकेचिच्चस्वीयवृत्तये

महायज्ञेष्वशक्तास्तुपितॄनुद्दिश्यभूरिशः। निहत्यश्राद्धेषुपशून्मांसान्यादंस्तथाऽऽदयन्

केचित्सरित्समुद्राणां तीरेष्वेवावसञ्जनाः। मत्स्याञ्जालैरुपादाय तदाहारा बभूविरे

स्वगृहागतशिष्टेभ्यः पशूनेव निहत्य च।

निवेदयामासुरेते गोछागप्रमुखान्मुने! ॥ २२ ॥

सजातीयविवाहानां नियमश्च तदा क्वचित्। नाभवद्धर्मसाङ्कर्याद्वित्तवेश्माद्यभावतः

ब्राह्मणाः क्षत्रियादीनांक्षत्राद्याब्रह्मणांसुताः। उपयेमिरेकालगत्यास्वस्ववंशविवृद्धये

इत्थं हिंसामया यज्ञाः सम्प्रवृत्ता महापदि।

धर्मस्त्वाभासमात्रोऽस्थात्स्वयं तु श्रियमन्वगात् ॥ २५ ॥

अधर्मः साऽन्वयो लोकांस्त्रीनपि व्याप्य सर्वतः।

अवर्द्धताऽल्पकालेन दुर्निवार्यो बुधैरपि ॥ २६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दरिद्राणामथैतेषामपत्यानि तु भूरिशः। तेषां च वंशविस्तारो महाँल्लोकेष्ववर्द्धत
विद्वांसस्तत्रयेजातास्तेतुधर्मं तमेव हि। मेनिरे मुख्यमेवाऽथ ग्रन्थांश्चक्रुश्चतादृशान्
ते परम्परया ग्रन्थाः प्रामाण्यं प्रतिपेदिरे। आद्ये त्रेतायुगे हीत्थमासीद्धर्मस्यविप्लवः
ततः प्रभृति लोकेषु यज्ञादौ पशुहिंसनम्। बभूव सत्ये तु युगे धर्मआसीत्सनातनः
कालेन महता सोऽपि सह देवैः सुराधिपः। आराध्य सम्पदं प्राप वासुदेवं प्रभुम्मुने
ततो धर्मनिकेतस्य श्रीपतेः कृपया हरेः। यथापूर्वश्चसद्धर्मस्त्रिलोक्यां सम्प्रवर्तत॥

तत्राऽपिकेचिन्मुनयो नृपा देवाश्च मानुषाः।
कामक्रोधरसास्वादलोभोपहतसद्धियः
तमापद्धर्ममद्यापि प्राधान्येनैव मन्वते।

एकान्तिनोभागवतजिताकामादयस्तुये। आपद्यपि नतेऽगृह्णंस्तं तदाकिमुताऽन्यदा
इत्थं ब्रह्मन्नादिकल्पे हिंस्रयज्ञप्रवर्त्तनम्। यथासीत्तन्मयाख्यातमापत्कालवशाद्भुवि॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायांद्वितीयेवैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये हिंस्रयज्ञप्रवृत्तिहेतुनिरूपणंनाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

दशमोऽध्यायः

श्रीवासुदेवप्रसादनिरूपणम्

सावर्णिरुवाच

कथं प्राप्ता पुनःस्कन्दश्रीरिन्द्रेण गताम्बुधिम्। एतांकथयमेसर्वांकथांनाराधाश्रयाम्

स्कन्द उवाच

श्रिया विहीनो देवेन्द्रः श्रीहीनैरपि दानवैः। पराजितोहृतस्थानोनष्टाशेषपरिच्छदः
गिरिगह्वरकुञ्जेषु काननेषु ततस्ततः। परिबभ्राम सहितो दिगीशैर्वरुणादिभिः॥ २
वल्कलाजिनवस्त्राश्च पशुपक्ष्यामिषाशनाः। देवादैत्यानरानागास्तुल्याचारपरिच्छदाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पात्राणि मृण्मयान्येवसर्वेषामपिवेश्मसु । आसन्वराकाःसर्वेऽपिपिशाच्यइवचस्त्रियः
आदावभूदनावृष्टिर्भुवि द्वादशवार्षिकी । ततो वर्षे क्वचिद्वृष्टिरासीत्स्वल्पाक्वचिन्नच
इत्थंदारिद्र्यदुःखानांतेषांवर्षशतंगतम् । बलिष्ठारब्धकर्माणस्तेऽतिदुःखेऽपिनोमृताः

अजीवन्त मृतप्राया नरकेष्विव नारकाः

यतन्तोऽपि श्रियः प्राप्त्यै यज्ञाद्यैर्नाऽलभन्त ताम् ॥ ८ ॥

ततः सहस्रवर्षान्ते मेरौ शरणमाययुः । शापाद्दुर्वाससो देवाःसर्वेदुर्वाससोविधिम्

प्रणम्य तस्मै दुःखं स्वं वासवाद्या न्यवेदयन् ।

आदावेव हि सोऽज्ञासीत्सर्वज्ञत्वात्सुरापदम् ॥ १० ॥

उपालभ्यततश्चेन्द्रंविरिञ्चिःसहशङ्करः । तद्दुःखवारणाकल्पोविष्णुमैच्छत्प्रसादितुम्
आराधयिष्यंस्तपसा ततोऽसौ तं तपःप्रियम् । सर्वदेवगणोपेतउपायात्क्षीरसागरम्
तस्योत्तरे तटे रम्ये सर्वे तेऽनशनव्रताः । एकपादस्थिता ऊर्द्ध्वबाहवश्चक्रिरे तपः ॥
केशवं हृदि ते दध्युः सर्वक्लेशविनाशनम् । लक्ष्मीपतिंवासुदेवमेकाग्रकृतमानसाः ॥

शताब्दान्ते ततो विष्णुः श्रीकृष्णो भगवान्स्वयम् ।

अत्यापन्नेषु दीनेषु कृपां देवेषु सोऽकरोत् ॥ १५ ॥

अदृश्यमूर्तिरात्मज्ञैरपि भूरितपस्विभिः । तत्राऽऽविरासीत्कृपयानियुताहस्करद्युतिः
तेजोमण्डलमेवाऽऽदौ सहसा स्फुरितं महत् । ददृशुर्विबुधाः सर्वे सितंघनमनौपमम्
ब्रह्माशिवश्च तन्मध्ये ददृशाते रमापतिम् । घनश्यामंचतुर्बाहुंगदाब्जाब्जारिधारिणम्
किरीटकाञ्चीकटककुण्डलादिविभूषितम् । पीतकौशेयवसनं दिव्यसुन्दरविग्रहम् ॥
हर्षविह्वलितात्मानौ दण्डवत्तौ प्रणेमतुः । तदिच्छयाऽथ देवाश्चदृष्ट्वातंचमुदाऽऽनमन्
बभूवुरतिहृष्टास्ते निधिं प्राप्याऽधना इव ।बद्धाञ्जलिपुटाः सर्वेभक्त्या तं तुष्टुवुःसुराः

देवा ऊचुः

ॐनमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि । प्रद्युम्नायाऽनिरुद्धाय नमः सङ्कर्षणाय च
ॐकारब्रह्मरूपाय त्रेधाऽऽविष्कृतमूर्तये । ब्रह्माण्डसर्गस्थित्यन्तहेतवे निर्गुणाय च ॥
नयनानन्दरूपाय प्रणतक्लेशनाशिने । केशवाय नमस्तुभ्यं स्वतन्त्रेश्वरमूर्तये ॥ २४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मोदिताशेषभक्ताय कालमायादिमोहिने । सदानन्दाय कृष्णाय नमः सद्धर्मवर्त्तिने ॥
भवाम्बुधिनिमग्नानामुद्धृतिक्षमकीर्तये । दर्शनीयस्वरूपाय घनश्यामाय ते नमः ॥
गदाब्जदरचक्राणि बिभ्रते दीर्घबाहुभिः । सुरगोविप्रधर्माणां गोप्त्रे तुभ्यं नमोनमः
वरेण्याय प्रपन्नानामभीष्टवरदायिने । निगमागमवेद्याय वेदगर्भाय ते नमः ॥ २८ ॥

तेजोमण्डलमध्यस्थदिव्यसुन्दरमूर्तये ।
नमामो विष्णवे तुभ्यं परात्परतराय च ॥ २६ ॥

वाणीमनोविप्रकृष्टमहिम्नेऽक्षररूपिणे । सर्वान्तर्यामिणे तुभ्यं बृहते च नमोनमः
सुखदोऽसि त्वमेवैकःस्वाश्रितानामतोवयम् । महापदब्धिकक्लिष्टाःशरणंत्वामुपागताः

देवाधिदेवभक्तस्य तव दुर्वाससोवयम् ।
अतिक्रमाच्छ्रिया हीनाः प्राप्ताः स्मो दुर्दशामिमाम् ॥ ३२ ॥
वासोऽन्नपानस्थानादिहीनान्धर्मोऽपि नः प्रभो ।
त्यक्त्वा सह श्रिया यातस्तान्पातुं त्वमसाध्वरः ॥ ३३ ॥

यतोवयञ्च धर्मश्च त्वदीया इति विश्रुताः । यथापूर्वं सुखीकर्त्तुं त्वमेवार्हस्यतोहिनः

स्कन्द उवाच

इति सम्प्रार्थितो देवैर्भगवान्स दयानिधिः । उवाचानन्दयन्वाचामेवगम्भीरया सुरान्

श्रीभगवानुवाच

विदितं मे सुरा सर्वं कष्टं वः सदतिक्रमात् । उपायं कुरुताद्यैव वच्मि यत्तन्निवृत्तये
औषधीरम्बुधौ सर्वाः क्षिप्त्वामन्दरभूभृता । नागराजवरत्रेण मन्थध्वमसुरैः सह ॥

आदौ सन्धाय दनुजैः कुरुताऽम्बुधिमन्थनम् ।
साहाय्यं वःकरिष्यामि खेदःकार्यो न तत्र वः ॥ ३८ ॥
अमृतञ्च श्रियो दृष्टिं प्राप्य पूर्वाधिकौजसः ।
भवितारो मद्विमुखा दैत्यास्तु क्लेशभागिनः ॥ ३६ ॥

स्कन्द उवाच

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे विष्णुर्भक्तसङ्कटनाशनः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवास्तस्मै नमस्कृत्य तदुक्तं कर्तुमारभन् ॥ ४० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीवासुदेवप्रसादनिरूपणं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १०

एकादशोऽध्यायः

अमृतमन्थनेविषोत्पत्तिनिरूपणम्

स्कन्द उवाच

ब्रह्मरुद्रौ महेन्द्रादीन्सन्धानायाऽसुरैः सह । आज्ञाप्यजग्मतुः स्वंस्वंधामदेवास्सांमुने
समयोचितभाषाविद्वासवोनीतियुक्तिभिः । प्रलोभ्यफलभागेनसन्धिंचक्रेऽसुरैः सह
ततो देवासुरगणा मिलिता वारिधेस्तटे । महौषधीरुपानीय बहुशो निदधुर्द्रुतम् ॥
मन्दराद्रिमुपेत्याऽथ नानौषधिविराजितम् । मूलादुत्पाट्य तेसर्वेनेतुमब्धिसमुद्यताः
एकादशसहस्राणियोजनानांभुविस्थितम् । नोद्धर्तुमशकंस्ते तं तदानींतुष्टुवुर्हरिम्
एतद्विदित्वा भगवान्सङ्कर्षणमहीश्वरम् । अजिज्ञपत्तमुद्धर्तुं बद्धमूलं महीध्रम् ॥
फत्कारमात्रेणैकेन स तु सद्यस्तमीश्वरः । बहिश्चिक्षेप तत्स्थानाद्योजनद्वितयान्तरे
अत्याश्चर्यं तदालोक्य हृष्टाः सर्वे सुरासुराः । तदन्तिकमुपाजग्मुर्द्धावन्तश्चकृतारवाः
बलिनो यत्नवन्तोऽपि परिघोपमबाहवः । उद्धृत्यनेतुं नो शेकुर्विषण्णाविफलश्रमाः
ज्ञात्वा सुरगणान्खिन्नान्भगवान्सर्वदर्शनः । तार्क्ष्यमाज्ञापयामास नेतुं तमुदधिं द्रुतम्

सहावरणमप्यण्डं लीलया धर्त्तुमीश्वरः ।
मनोवेगः स तत्रेत्य निजत्रोट्यैव तं गिरिम्
उत्पाट्य सागरतटे निधाय हरिमाययौ ॥ ११ ॥

ततः संहृष्टमनसः सर्वे कश्यपनन्दनाः । वासुकिं चाऽऽह्वयामासुः सुधाभागप्रतिज्ञया
स तत्रागादथो सर्वे तेऽब्धिं मन्थितुमुद्यताः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तानपांनिधिरागत्य मूर्त्तिमानब्रवीद्वचः ॥ १३ ॥
यदि दास्यथ मे यूयमभृतांशं सुरासुराः । सोढास्मि विपुलं तर्हिं मन्दरभ्रमणार्द्दनम्
तथेति ते प्रतिज्ञाय क्षिप्त्वादावोषधीलताः । परिविव्युर्न्नागराजंतस्मिन्काञ्चनपर्वते
ततो देवा हृदि हरिं सस्मरुः कार्यसिद्धये । स्मृतमात्रःसतत्राऽगादच्युतःसर्वदर्शनः
तमालोक्यामरगणा मुदिताःफणिनांपतेः । पुरोभागंगृहीत्वैवतस्थुस्तेनानुमोदिताः
देवतापक्षपातित्वं सूचयन्स्वस्य च प्रभुः । यत्रदेवास्तत्रतस्थौततोदैत्यास्तुचुक्रुधुः
तपोविद्यावयोज्येष्ठा अधोभागममङ्गलम् । कथं तिरश्चोगृह्णीमोनेद्रृङ्मूर्खावयंत्विति
सहदेवैस्ततोविष्णुःस्वयंतान्मानयन्निव । प्रहस्यदत्त्वाप्राग्भागंसुरान्पुच्छमजिग्रहत्
महाहिविषफूत्कारदाहादमररक्षणम् । चरित्रमेतच्छ्रीभर्तुरिति दैत्या न ते विदुः ॥
तत उत्तोलयामासुः स्वर्णसान्वालिभास्वरम् ।
मन्दरं काश्यपेयास्ते चर्मिका वद्धकच्छकाः ॥ २२ ॥
द्वाविंशतिसहस्राणि योजनानां तमुच्छ्रितम् ।
अम्भोनिधौ निदधिरे क्रोशन्तोऽत्यर्थमुत्सुकाः ॥ २३ ॥
धार्यमाणोप्यनाधारस्तैरद्रिरतिगौरवात् । ययावधस्तलंसद्यस्तदासंस्तेऽतिविह्वलाः
तदा स भगवान्साक्षात्सर्वथा भक्तकार्यकृत् । स्तूयमानोऽमरैरद्रिमुद्दध्रे कमठाकृतिः
उत्थितं तमवेक्ष्याशुसर्वे फुल्लहृदाननाः । बभूवुश्च स्थिरःसोऽभूत्कूर्मपृष्ठेतिविस्तृते
ततो ममन्थुस्तरसा यावद्बलमपांनिधिम् ।
श्रमफूत्कारवदना (म्लाना) देवादयोऽदयम् (देवादयोऽभवन्) ?॥ २७
भ्राम्यमाणात्ततस्त्वद्रेर्वहवोन्यपतन्द्रुमाः ।ऊर्ध्वद्रुघर्षजोवह्निस्तत्स्थसिंहादिमादहत्
तत्र नाना जलचरा विनिष्पिष्टा महाद्रिणा । विलयंसमुपाजग्मुःशतश :क्षीरवारिधौ
साम्वर्त्तकमहामेघसङ्घगर्जितवन्महान् । आसीन्मन्थननादश्च प्रतिध्वनिविवर्द्धितः
अत्याकर्षणखिन्नाङ्गवासुकेर्म्मुखफूत्कृतैः । हतौजसोऽतिखिन्नाश्चदैत्यानिष्प्रालवद्वभुः
अविषह्यं विषाग्निश्च मर्षन्ति वहुधा मुहुः । लम्बन्तेस्माऽहिराजस्यसहस्रंवदनान्यधः
दधारसहसा तानि भगवत्प्रेरितो विभुः । सङ्कर्षणो महातेजाः सहमानो विषानलम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सहस्रमेकं वर्षाणां मथ्यमानात्पयोनिधेः । हालाहलं विषमभूदुत्सर्पद्विदिशो दिशः
यदाहुः कालकूटाख्यं सर्वलोकातिदाहकम् । तेनदन्दह्यमानाङ्गास्ते तुचक्रुः पलायनम्
ततोब्रह्माप्रजेशाश्चदेवाःसर्वेऽप्युमापतिम् । प्रार्थयंस्तस्यपानार्थंस्तुवन्तःस्तुतिभिर्मुने
भगवानथतं प्राह सुराणामग्रजो भवान् । भवतीत्यग्रजं वाद्धर्गृ हाणेदं विषं शिव!

देवानां स भयं दृष्ट्वा करुणश्चाऽऽज्ञया हरेः ।
आकर्षद्योगकलया विषं प्राणितलेऽखिलम् ॥ ३८ ॥
पपौ तत्कण्ठमध्ये च शोषयामास तत्क्षणम् ।
नीलकण्ठ इति ख्यातः शङ्कराख्यश्च सोऽभवत् ॥ ३९ ॥
पास्यतस्तस्य पाणेर्ये पतिता भुवि बिन्दवः ।
तान्नागा वृश्चिकाद्याश्च जगृहुः काश्चनौषधीः ॥ ४० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्येऽमृतमन्थने विषोत्पत्तिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

द्वादशोऽध्यायः

अमृतमन्थनेचतुर्दशरत्नोत्पत्तिवर्णनम्

स्कन्द उवाच

ततोहृष्टाः काश्यपेया मन्थस्थानमुपेत्यते । पुनर्वर्षसहस्रंचमथ्नन्तिस्म पयोनिधिम्

मथ्यमानात्तथा सिन्धोः सर्वैस्तैरपि किञ्चन ।
नाऽऽसीच्च शिथिला आसन्मन्थितारः श्वसन्मुखाः ॥ २ ॥
वासुकिश्च महासर्पः प्राणवैक्लव्यमाप्तवान् ।
मन्थकाले मन्दरोऽपि नैकत्राऽऽसीत्स्थिरस्थितिः ॥ ३ ॥

सर्वान्दृष्ट्वा निरुत्साहान्प्रद्युम्नो विष्णवनुज्ञया । देवासुराहिराजेषु प्रविश्यबलमादधौ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनिरुद्धोपि तत्रैव तमाक्रम्य नगाधिपम् । सहस्रबाहुभिस्तस्थौ महाचलइवाऽपरः
ततो ममन्थुस्तरसा सम्प्राप्तपरमौजसः । सविस्मया महाब्धि ते सुरासुरगणामुदा
नारायणानुभावेन नाऽऽपुर्देवादयः श्रमम् । शुशुभे मन्थनं तच्च सममाकर्षणात्तदा ॥ ७
मथ्यमाने महाम्भोधौ सुस्रुवुःपरितस्तदा । महाद्रुमाणां निर्यासावहवश्चौषधीरसाः
तथाभूतादम्बुनिधेराविरासीत्कलानिधिः । कान्त्यौषधीनामध्यक्षःसर्वासांयउदीर्यते

ततो गवामधिष्ठात्री सर्वासामपि कामधुक् ।
हविर्धान्यभवद् धेनुः शीतांशुसदृशद्युतिः ॥ १० ॥

अश्वः श्वेतोऽथाविरासीद्धयानामधिदेवता । ऐरावतश्चनागेन्द्रश्चतुर्दन्तः शशिप्रभः॥
पारिजातोदिव्यतरुस्तरुराजस्ततोऽभवत् । मणिरत्नं कौस्तुभाख्यं पद्मरागमभूत्ततः
ततोऽभवन्नप्सरसो रूपलावण्यभूमयः । सुरा देवी ततो जज्ञे सर्वमादकदेवता ॥१३॥
आसीदथ धनुःशार्ङ्गंसर्वशस्त्राधिदैवतम् । वाद्याधिदैवतंशङ्खः पाञ्चजन्यस्ततोऽभवत्
तत्र चन्द्रः पारिजातस्तथैवाप्सरसाङ्गणः । आदित्यपथमाश्रित्यतस्थुरेतेतुतत्क्षणम्
वारुणीमश्वराजश्च दैत्येशा जगृहुर्द्रुतम् । ऐरावतं देवराजो जग्राहानुमताद्धरेः ॥
कौस्तुभश्च धनुः शङ्खो विष्णुमेव प्रपेदिरे । हविर्धानींतु ते सर्वे तापसेभ्योददुस्तदा

मथ्यमानात्पुनः सिन्धोः साक्षाच्छ्रीरभवत्स्वयम् ।
आनन्दयन्ती स्वदृशा त्रिलोकीं हतवर्चसम् ॥ १८ ॥

तां ग्रहीतुं तु सर्वेऽपिसुरासुरनरादयः । ऐच्छंस्तस्याः प्रतापात्त शेकेनेतुंनकश्चन

ततस्तां पद्महस्तत्वाच्छ्रीं विदित्वैव वासवः ।
आनन्दं परमम्प्राप ब्रह्माद्या ये च तद्विदः ॥ २० ॥

तावत्तत्राम्बुधिःसाक्षादेत्यतांहैमआसने । कन्याममेयमित्युक्त्वागृहीत्वाङ्कउपाविशत्
पुनरब्धेर्मथ्यमानादधिकं बलिभिश्चतैः । सुधार्थिभिर्धैर्यवद्भिरपि नैवाऽभवत्सुधा ॥
तदा शिथिलयत्नास्ते निराशाअमृतोद्भवे । प्रम्लानवक्त्राःखिन्नाश्चबभूवुःकाश्यपामुने
दृष्ट्वातथाविधांस्तांश्चभगवान्करुणानिधिः । उद्युक्तोऽभूत्स्वयंब्रह्मन्मन्थनायहसन्विभुः

रत्नकाञ्चीदृढाबद्धकक्षपीताम्बरद्युतिः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वाभ्यां द्वाभ्यामहिं मध्ये दोर्भ्यामुभयतोऽग्रहीत् ॥ २५ ॥
धृताऽहिवदना दैत्यास्तस्थुरेकत एवते । एकतोधृततत्पुच्छादेवास्तस्थुस्तदाखिलाः
तन्मध्यगश्च भगवान्ममन्थाऽङ्घ्रिसलीलया । ददानो नयनानन्दंचञ्चत्करविभूषणः
ब्रह्मामहर्षिप्रवरैरन्तरिक्षस्थितस्तदा । अवाकिरत्तं कुसुमैः कुर्वञ्जयजयध्वनिम् ॥२८
मथ्यमानात्ततः सिन्धोर्जज्ञे धन्वन्तरिः पुमान् ।
विष्णोरंशेन गौराङ्गः सुधाकुम्भं करे दधत् ॥ २६ ॥
घृतादीनांहिसर्वेषांरसानांसारमुत्तमम् । अमृतंतद्गृहीत्वाऽसौश्रियोन्तिकमुपाययौ
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्येऽमृतमन्थने चतुर्दशरत्नोत्पत्तिर्नाम
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः

देवतामृतपानवर्णनम्

स्कन्द उवाच

उत्प्रेक्षन्तो जायमानं मन्थितारोऽथतेऽखिलाः ।
आयान्तं ददृशुर्दूरादन्ति धन्वन्तरिं श्रियः ॥ १ ॥
सुधाभृतं हेमकुम्भं दृष्ट्वा चाऽस्य करे धृतम् ।
असुराः सहसा ब्रह्मन्नुत्प्लुत्य जगृहुश्च तम् ॥ २ ॥
तत्रापि बलिनो ये ते गृहीत्वादुद्रुवुस्ततः । तान्दुर्बलान्न्यषेधन्तनीतिवाक्यैरनुद्रुताः
अहो नैषमधर्मो वः कार्यो धर्मपरायणैः । समश्रमेभ्यो देवेभ्यो दत्त्वा पेयंनचान्यथा
अनादृत्यैति तद्वाक्यं ययुर्दूरं त्वरान्विताः । तत्रापितेषामन्योन्यंकराकृष्टिर्महत्यभूत्
अहं पूर्वमहं पूर्वं न त्वं न त्वंपिवाम्यहम् । इत्थं विवदमानास्तेनापुस्तत्प्राशनक्षणम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अथ देवाम्लानवक्त्राद्दृष्ट्वादैत्यैर्हृतांसुधाम् । अशक्तास्तत्प्रतीकारेशरणम्प्रापुरच्युतम्
पाहिपाहि जगन्नाथ! नष्टं सर्वस्वमेव नः । दैत्यैर्हृता सुधासर्वाकागतिर्नोभविष्यति
सुधापानादृतेऽप्येते हन्तुमस्मानलं क्षमाः । पीतेऽमृते तु तैरद्य किं करिष्यामहेवयम्

स्कन्द उवाच

निशम्यदैन्यंदेवानांभगवान्भक्तकार्यकृत् । साभैष्टेतिसुरानुक्त्वासुधामादीत्सदासुरात्
स्त्रीरूपमद्भुतं धृत्वा सर्वलोकविमोहनम् । दैत्यान्तिकमुपागत्य चक्रे कन्दुकखेलनम्
ते तु तद्रूपमालोक्यमोहिताःकामविह्वलाः । त्यक्त्वा परस्परोन्मर्द्दंतामुपेत्याब्रुवन्वचः
सुधाकुम्भमिमंभद्रेगृहीत्वात्वंविभज्य नः । सर्वान्पायय सुश्रोणि वयंकश्यपसूनवः

इत्युक्त्वा तं ददुस्तस्यै तेऽनिच्छन्त्या अपि स्त्रियै ।
सा प्राह मम विश्रम्भो न कार्यः स्वैरिणी ह्यहम् ॥ १४ ॥

अकार्यंवःकृतं ह्येतद्विभजिष्येनिजेच्छया । इत्युक्त्वाअपिते मूढा यथेष्टंकुर्विति ब्रुवन्
ततस्तदाज्ञयासर्वेदेवादैत्याश्चवासुकिः । निषेदुःपङ्क्तिशस्तत्रस्वस्वमण्डलमाश्रिताः
पङ्क्तिबन्धोद्यतेष्वेषु मोहिनीसातुदूरतः । सम्मुखं देवपङ्क्तीनांहैमासनउपाविशत्

स्वान्तिके चाऽमृतघटं निधाय स्त्रैणलीलया ।
इतस्ततो वीक्षमाणा तस्थौ निःस्पृहवत्क्षणम् ॥ १८ ॥
विप्रचित्तिमुखास्तर्हि ये वै दानवयूथपाः ।
सन्दिग्धचित्ता मोहिन्यामासन्देवान्तिकस्थितेः ॥ १६ ॥

शनैरुपेत्यतद्दृष्टिं वञ्चयित्वा सुधाघटम् । जह्रुःपुनर्दुरात्मानो रहोगत्वापिपासवः ॥
नरनारायणौ तत्रमुनिभिः सहचागतौ । आस्तां तौदद्दृशातेतान्दानवान्हरतोऽमृतम्
नारायणेनेरितोऽथनरस्तान्सहसाऽरुणत् । बलादाच्छिद्यतत्कुम्भंमोहिन्यैसददौद्रुतम्
ततोनरंहन्तुकामाआत्तशस्त्रास्तुदानवाः । आपतन्पङ्क्तिविक्षेपोह्यसुराणामभून्महान्
तदा नरोऽपि भगवान्देवदैत्यनरैरपि । अजेयो निर्भयो ह्येकः साकं तैर्युयुधे बली

एतस्मिन्नन्तरे देवान्पङ्क्तिस्थान्मोहिनीवपुः ।
अपाययत्सुधां विष्णुः सर्वशो लघुचङ्क्रमः ॥ २५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्रापि दानवो राहुः सूर्याचन्द्रमसाऽन्तरे। प्रविश्य देवतापङ्क्तावुपाविशदलक्षितः

तत्राऽऽगतायां मोहिन्यां सिञ्चन्त्यां तन्मुखे सुधाम्।
दृशाऽसूसुचता तस्यै पुष्पवन्तावुभौ च तम्॥ २७॥

स्मृत्यागतेनचक्रेणतद्ग्रीवाऽस्यचसामृतम्। शिरश्चिच्छेदातिमहन्मायायोषिद्वपुःप्रभुः
तच्छैलश्रृङ्गप्रतिमं ग्रसल्लोकान्नदद्भृशम्। ग्रहत्वेस्थापयामास लोकानांशान्तयेहरिः
देवान्सुधां पाययित्वा जगृहे पौरुषींतनुम्। भगवानथ देवास्तु युयुधुः सहदानवैः
उदन्वतस्तटे युद्धं देवानामसुरैः सह। सुधापानातिबलिनामासीद्विष्णुसहायिनाम्
तस्मिंस्तु तुमुलेयुद्धेनरेणेन्द्रादिभिश्चते। निहन्यमानाअसुराः पलाय्य विविशूरसाम्

सूर्यश्चास्तं गतस्तावत्सर्वे देवगणास्ततः।
श्रियोऽन्तिकमुपाजग्मुस्तद्दर्शनमहोत्सवाः॥ ३३॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये देवतामृतपानवर्णनं नाम
त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

चतुर्दशोऽध्यायः

लक्ष्मीनारायणविवाहोत्सववर्णनम्

स्कन्द उवाच

ब्रह्मा प्रजेश्वराः शम्भुर्मनवश्च महर्षयः। आदित्यवसुरुद्राश्च सिद्धगन्धर्वचारणाः॥१॥
साध्याश्च मरुतश्चैवविश्वदेवादिगीश्वराः। दस्रौवह्निश्चन्द्रमाश्च स्वयं धर्मःप्रजापतिः
सुपर्णः किन्नराश्चैव ये चान्ये गणदेवताः। शेषाद्या वैष्णवानागा देवपत्न्यश्चसर्वशः

सावित्री पार्वती चैव पृथिवी च सरस्वती।
शची गौरी शिवा सञ्ज्ञा ऋद्धिः स्वाहा च रोहिणी॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धूमोर्णा चादितिर्द्धर्मपत्न्यो मूर्तिदयादयः ॥ ४ ॥
अरुन्धती शाण्डिलीच लोपामुद्रातथैवच । अनसूयादयः साध्व्यऋषिपत्न्यश्चसर्वशः
गङ्गा सरस्वती रेवा यमुना तपती तथा । चन्द्रभागा विपाशाच शतद्रुर्देविका तथा
गोदावरी च सरयूःकावेरीकौशिकीतथा । कृष्णा वेणी भीमरथी ताम्रपर्णीमहानदी
कृतमाला वितस्ता च निर्विन्ध्या सुरसा तथा ।
चर्मण्वती पयोष्णी च विश्वाद्या नद्य आययुः ॥ ८ ॥
रम्भा घृताची विश्वाची मेनका चतिलोत्तमा । उर्वशीप्रमुखास्तत्रसर्वाप्सरसआययुः
वैकुण्ठवासिनः सर्वे तथा गोलोकवासिनः । पार्षदप्रवराविष्णोस्तत्राजग्मुःप्रहर्षिताः
अणिमाद्याः सिद्धयोऽष्टौ शङ्खपद्मादयो नव ।
निधयो मूर्तिमन्तश्च समाजग्मुः श्रियोऽन्तिके ॥ ११ ॥
पूर्णः शारदचन्द्रोपि तदानीं प्रीतये श्रियाः । नैशं तमोऽहरत्सर्वं बभूवुर्निर्मलादिशः ॥
ततोऽभिषेकमारेभे तस्या ब्रह्माज्ञया वृषा । मण्डपं रचयामाससद्यस्त्वष्टातिशोभनम्
रत्नस्तम्भसहस्राणामायताभिश्च पङ्क्तिभिः ।
चित्रैरनेकैरुल्लोचैः शोभितं कदलीद्रुमैः ॥ १४ ॥
सुगन्धिपुष्पनम्राभिर्दिव्यकल्पद्रुमालिभिः । जुष्टं नानाविधैरङ्गैर्दर्शनीयं मनोहरम् ॥
कोटिशो रत्नदीपानां पङ्क्तिभिः शुद्धरोचिषाम् ।
भ्राजमानं तोरणैश्च मुक्ताहारैश्च लम्बिभिः ॥ १६ ॥
रत्नसिंहासने तत्र गीतवाद्यपुरस्सरम् । उपावेश्य श्रियं चक्रुरभिषेकं महर्षयः ॥१७
ऐरावतः पुण्डरीको वामनो कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ १८ ॥
कुर्वन्तोवृंहितान्येतेहेमकुम्भोद्धृतैःशुभैः । चतुःसिन्धुसमानीतैरभ्यषिञ्चन्तवारिभिः
मूर्तिमत्यो महानद्यस्तत्राजह्रुर्जलानि च । मन्त्रानुचारयन्तिस्म मूर्तावेदाःसहर्षिभिः
जगुः सुकण्ठा गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः । वाद्यानिवादयामासुरन्येदेवगणास्तदा
महानभूत्तदानन्दस्त्रिलोक्यां सर्वदेहिनाम् । श्रीसूक्तादिद्विजापेठुर्जगुर्गीतानिचस्त्रियः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कांस्यतालमृदङ्गांश्च पणवानकगोमुखान् । वादयामासुरम्भोदादिविदुन्दुभयोऽनदन्
आसीत्कुसुमवृष्टिश्च साकंजयरवैस्तदा । आसंस्तत्परिचर्यायांधर्मपत्न्यश्च सिद्धयः
सुस्नातायै ततस्तस्यै कौशेये पीतवाससी । ददावनर्घ्ये जलधी रत्नभूषाश्च भूरिशः
उपवेशोचितं तस्या इन्द्र आसनमाहरत् । विश्वकर्मा कङ्कणानि ददौ सद्रत्नमुद्रिकाः

सुधाकरस्तु तद्भ्राता नासाभूषणमुत्तमम् ।
ददौ तस्यै केशभूषां सद्रत्ननिचितां तथा ॥ २९ ॥

पद्मजन्मा ददौ पद्मं मुक्ताहारं सरस्वती । नागाश्च शेषप्रमुखास्तस्यै रत्नेन्द्रकुण्डले

अञ्जनं कुङ्कुमं चाऽदाद् दुर्गा सौभाग्यलक्षणम् ।
ललाटिकाञ्च सावित्री शची ताम्बूलपात्रिकाम् ॥ २८ ॥

वसन्तः कौसुमान्हारान्कण्ठसूत्रञ्च शङ्करः । वैजयन्तीं स्रजं पाशी कुबेरो रत्नदर्पणम्

अनर्घ्यां कञ्चुकीं वह्निर्यमोऽदाद् व्यजनं शुभम् ।
ददुस्तस्यै चाऽपरेऽपि भूषास्तत्समयोचिताः ॥ ३१ ॥
ततः स्वलङ्कृतां कन्यां कस्मैदद्यामिमामिति ।
सिन्धुः पप्रच्छ ब्रह्माणं तदोवाच स सर्ववित् ॥ ३२ ॥

कन्यातवेयमम्भोधे! मातामम शिवस्य च । देवानामथसर्वेंगांलोकानामस्तिनिश्चितम्
नारायणं वासुदेवं परं ब्रह्माखिलेश्वरम् । पुरुषोत्तममेवैकं विनाऽस्याः नाऽपरः पतिः
अतः साक्षाद्भगवते त्रैलोक्यसुखहेतवे । आगतायोपविष्टाय देह्यस्मै विधिनाऽम्बुधे
कुरुष्व जन्मसाफल्यं पावयित्वा निजंकुलम् । समुद्धर भवाम्भोधेर्दत्त्वेमांपरमात्मने
एकस्त्वंसप्तभीरूपैःसप्तद्वीपविभागतः । विश्रुतोऽथविधायैतन्महतींकीर्त्तिमाप्स्यसि

इत्युक्तो ब्रह्मणा हृष्टः समुद्रः पुलकाञ्चितः ।
मन्यमानो निजं धन्यमदित्सद्विष्णवे सुताम् ॥ ३८ ॥

ततःसहैवविधिनासम्प्रार्थ्यतमीश्वरम् । वाग्दानादिविधायैवचक्रेवैवाहिकंविधिम्
धन्वन्तरिश्चन्द्रमाश्च वासवाद्याश्चदेवताः । आसन्समुद्रस्यपक्षे तत्र वैवाहिकोत्सवे
वस्त्राभरणयानादिदाने भोजनकर्मणि । सन्मानने च जन्यानां मुख्या आसंस्तएवहि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लक्ष्म्याश्च माङ्गल्यविधौ मुख्यास्तत्र तु योषितः ।
आसन्गङ्गादयो नद्यः शच्याद्याश्च सुराङ्गनाः ॥ ४२ ॥

मेनाद्यानगपत्न्यश्चसिद्धयश्चाणिमादयः । चन्द्रपत्नीतथाकान्तिःसर्वाश्चाप्सरसोमुने

नारायणस्याथ विभोर्लीलां वैवाहिकीं विधिः ।
शोभयन्पितरौ चक्रे मूर्तिधर्मौ विचार्य च ॥ ४४ ॥

धर्मोऽसौ जगदाधारः पूज्यश्चाखिलदेहिनाम् ।
पिताऽस्य भवितुं योग्यो ह्यस्मिंश्च प्रीतिमान्भृशम् ॥ ४५ ॥

इयञ्च मूर्त्तिःप्रख्यातासर्वसद्गुणजन्मभूः । दाक्षायणीधर्मपत्नी माता भवितुमर्हति

ततोधर्मस्याऽपिपक्षेमुख्याःकार्येष्विमेऽभवन् । नन्दीश्वरगणेशाभ्यांसहितःशङ्करोमुने

महर्षयो मरीच्याद्याः प्रजेशा नारदो मुनिः । वैनतेयश्च नन्दाद्याःश्रीदामाद्याश्चपार्षदाः

दुर्गा च वेदसूत्रांगी स्त्रीषुमुख्याबभूविरे । ऋषिपत्न्योऽनसूयाद्याधर्मपत्न्यश्चसर्वशः

सह वेदादिभिर्ब्रह्मा त्वासीदुभयपक्षयोः । ब्राह्मणावैदिकाये चविवाहविधिकोविदाः

अथाऽब्धिःसर्वसम्भाराञ्श्रियाएवप्रसादतः । सद्यःसम्पादयामासजनयन्देवविस्मयम्

यद्यत्सङ्कल्पयामास हृदि तत्तदुपाहृतम् । सद्यः स्वान्तिक एवैक्षत्ततोऽभूदतिहर्षितः

मध्येतुमण्डपस्यासावग्निस्थापनवेदिकाम् । कारयामासविधिवद्ब्राह्मणैर्वेदवेदिभिः

अलञ्चकार तां वेदिंगन्धपुष्पाक्षतादिभिः । नानाविधैःशुभै रङ्गैः साङ्कुरैः करकैस्तथा

ततो महामङ्गलवाद्यघोषैः समन्त्रकं संस्नपितो मुनीन्द्रैः ।
अनर्घ्यवासांसि च रत्नभूषा दधार विष्णुर्मुकुटञ्च दिव्यम् ॥ ५५ ॥

वादित्रनिध्वाननिनादिताशं नृत्यत्सुरस्त्रीकलगीतशोभनम् ।
तं मण्डपं सोऽथ सुरैः स्तुवद्भिः सहेत्य हैमे निषसाद पीठे ॥ ५६ ॥

प्रक्षालयामास तदङ्घ्रिपङ्कजं स्वप्रेष्ठपत्न्या जलधिः सगङ्गया ।
भृङ्गारसिक्तोत्तमवारिधारया तदम्बु शीर्ष्णा च दधार साऽन्वयः ॥ ५७ ॥

ततः पठन्मङ्गलमुच्चकैः श्रियं प्रादापयच्चाम्बुधिनाऽच्युताय ।
प्रज्वाल्य वह्निं विधिना विधाता साकं बृहद्भिर्मुनिभिर्जुहाव ॥ ५८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रदाय तस्मै तनयां मनोज्ञां तत्पादपद्मैकनिबद्धदृष्टिम् ।
वासांसि रत्नाभरणानि चाऽदाद् भूयांसि भूम्ने स समं दुहित्रा ॥ ५९ ॥
हुतस्य तस्याऽथ हुताशनस्य प्रदक्षिणाश्चापि सह श्रियैव ।
चकार चेतांसि निजेक्षकाणां स्त्रीणाञ्च पुंसां च हरन्हरिः सः ॥ ६० ॥
एकासने तौ सह सन्निविष्टौ ब्रह्माण्डमातापितरौ मनोज्ञौ ।
सम्पूजयामासुरनर्घ्यवस्त्रविभूषणैर्देवगणाः सयोषाः ॥ ६१ ॥
तदा च गीतानि सुमङ्गलानि श्रियश्च विष्णोर्गुणवर्णनानि ।
दुर्गादयश्चाऽथ पुलोमजाद्या देव्यो जगुः सस्मितचारुवक्त्राः ॥ ६२ ॥
द्विधा विभक्तानि सुराङ्गनानां वृन्दान्युपाविश्य च सम्मुखानि ।
तद्रूपतिप्रेक्षणकौतुकानि तदा जगुः प्रेमभरेण तानि ॥ ६३ ॥
यथा तदाकर्ण्य सुराः समस्ता महर्षयश्चाऽखिलयोषितोऽपि ।
स्वान्तस्तमैक्षन्त सह श्रियेशं स्फुरन्तमासन्ननु चित्रवच्च ॥ ६४ ॥
प्रणम्य भक्त्या च वराक्षतादि समर्प्य ताभ्यां विबुधा मुदैव ।
पृथक्पृथक्तुष्टुवुरूर्जिताभिर्वाग्भिश्च तौ प्राञ्जलयो विनीताः ॥ ६५ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये लक्ष्मीनारायणविवाहोत्सवनिरूपणं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चदशोऽध्यायः

ब्रह्मादिदेवकृतालक्ष्मीनारायणस्तुतिवर्णनम्

ब्रह्मोवाच

विचार्य्याऽहं वेदान्मुहुरुपगतो निश्चयमिमं
रमारामे भक्तिस्त्वयिदृढतरा यर्ह्यसुभृताम् ।
भवेत्तर्ह्येवैषां क्षयविरहिता भोगनिकरा-
स्तथास्युर्लोका वै परमपुरुषाऽऽत्यन्तिकगतिः ॥ १ ॥
अजानन्तस्त्वित्थं भृतरजतमस्कानपि हरे!
भजन्त्यस्मान्देवावहुविधतपोर्चासरणिभिः।तएवोक्तामूढाःक्षयरहितसौख्यंनकुहचि
लभन्तेऽतस्त्वां वै निजहृदि दधे केशवमहम् ॥ २ ॥

शङ्कर उवाच

त्रयी सांख्यवेदान्तयोगाः पुराणं तथा पञ्चरात्रं प्रभो! धर्मशास्त्रम् ।
तवैवाऽतिमाहात्म्यमेकस्य नित्यं प्रकारैरनेकैर्हि गायन्ति भक्त्या ॥ ३ ॥
त्वदेवेश शास्त्राणि चैतानि भूम्नो बभूवुस्त्वदेकाश्रयाण्यादिकल्पे ।
रमासेव्यपादाम्बुजं शास्त्रयोनिं तमाद्यं भवन्तं भजे वासुदेवम् ॥ ४ ॥

धर्म उवाच

कथा त्वदीया भवपाशमोचनी सुधैव तापत्रयतप्तदेहिनाम् ।
अनेकजन्माघचयापहारिणी तनोति भक्तिं दयुनं तवाऽञ्जसा ॥ ५ ॥
सदैव सा कर्णपथेन हृद्दरीं विशत्वनन्ताभिध सम्मुखोद्गता ।
मम त्वदन्या हरताच्च वासना दयाब्धये ते प्रभविष्णवे नमः ॥ ६ ॥

प्रजापतय ऊचुः

धन्या एते कल्पवृक्षा यदीयां छायामेतामाश्रितस्त्वं सहश्रीः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धन्यः कर्ता मण्डपस्याऽस्य ते वै धन्यैषा भूर्यत्र पीठं तवेश! ॥ ७ ॥
धन्यो लोके नूनमेषोऽम्बुराशिः साक्षात्तुभ्यं येन दत्ता स्वकन्या ।
धन्याश्चैते त्वां वयं वीक्षमाणा धन्येशानं श्रीपतिं त्वां नताः स्मः ॥ ८ ॥

मनव ऊचुः

धर्मः खलु स हि परमो धर्मेभ्यो माधव सकलेभ्योऽपि ।
भक्तिर्भवति यतो वै धर्मभुवि त्वयि हि निरवद्या ॥ ९ ॥
धर्मात्मानं भगवन्धर्मधुरीणं च धर्मपातारम् ।
सर्वातिप्रियधर्मं नुमस्त्वां धर्मसम्भूतिम् ॥ १० ॥

ऋषय ऊचुः

भक्त्या हीनस्त्वद्विमुखो वयुनार्थी श्राम्यन्भूयोऽप्यस्य नसिद्धिं समुपैति ।
तर्ह्याऽऽसक्तः कर्मणि काम्ये तु कुतोऽसौ सौख्यं यायादक्षयमानन्दमहाब्धे ॥११
भक्त्या नित्यं त्वामत एव वयं वै श्रद्धायुक्ता धर्मतपोनिगमाद्यैः ।
मायातीतं कालनियन्तारमुदारं ध्यायामः श्रीकान्तपरात्परमेकम् ॥ १२ ॥

इन्द्र उवाच

भगवन्गुरुदुःखिता वयं ननु दुर्वाससस एव हेलनात् ।
न भवन्तमृतेऽचितुं हि नो विधिरुद्रप्रमुखा इमेऽशकन् ॥ १३ ॥
विगताखिलसम्पदो निरन्नाः समभावं भुवि पामरैरुपेताः ।
भवतैव वयं हृतापदः स्मः सपदि श्रीहरये नमोऽस्तु तुभ्यम् ॥ १४ ॥

अग्निरुवाच

गीर्वाणदानवनराद्युपजीवनान्नं यन्निर्मितं हि भवतैव ततो बुधास्तु ।
यज्ञेषु तेन यजनं तव कुर्वतेऽथो त्वच्छेषमन्यदिविषद्भ्य उपानयन्ति ॥१५॥
काम्येषु कर्मसु रता अपि याज्ञिकास्ते तत्कर्मबन्धनत आशु विमुच्य यान्ति ।
ब्राह्मीं गतिं तदितरे तु भवन्ति चौराः
श्रीयज्ञपूरुषमहं प्रणमामि तं त्वाम् ॥१६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मरुत ऊचुः-

भक्ता एकान्तिकास्तेऽक्षरपरमपदे सेवया ते तु हीनं
वासैश्वर्यादि नेच्छन्त्यतिशयितसुखं नाऽपि कैवल्यमोक्षम् ।
तद्युक्तं त्वात्मनोऽपि श्वपचकुलजनुर्मानयन्त्युत्तमं वै
तं त्वामेकान्तधर्माश्रयणमुपगताः श्रीमहापूरुषं स्मः ॥ १७ ॥

सिद्धा ऊचुः

नैकब्रह्माण्डसर्गादिकारणं त्वामकारणम् । तत्स्थं तद्व्यतिरिक्तं चनियन्तारंनमामहे

रुद्रा ऊचुः

मायया सर्वमोहिन्यामोहनंमोहवर्जितम् । महाकालस्याऽपि कालंत्वांनमःपुरुषोत्तमम्

आदित्या ऊचुः

प्रकाशिता येन वयं जगन्ति प्रकाशयामो भवता रमेश! ।
स्वयं प्रकाशं तमुरुप्रकाशं प्रकाशमूर्त्ति प्रणता भवन्तम् ॥ २० ॥

साध्या ऊचुः

शास्ता नृपाणाञ्च महोरगाणां दैत्याधिपानाञ्च सुराधिपानाम् ।
त्वं वै मनूनाञ्च प्रजापतीनां राजाधिराजाय नमोऽस्तु तुभ्यम् ॥ २१ ॥

वसव ऊचुः

भवति भुवि यदा यदाऽसुरांशैः प्रथितसनातनधर्मधार्मिकाणाम् ।
कदनमुरु तदातदा स्वयं ते ह्यवतरते प्रणमाम धर्मगोप्त्रे ॥ २२ ॥

चारणा ऊचुः

चरित्रं शुभं ते धृतानेकमूर्त्तेः प्रबन्धैरनेकैर्हि गायन्ति भक्ताः ।
यदु श्रोतृवक्तॄन्पुनात्येव सद्यो वयं तं नताः पुण्यकीर्त्ति भवन्तम् ॥ २३॥

गन्धर्वाप्सरस ऊचुः

ये कथास्ते विहायाऽन्यगाथाः प्रभो! कीर्त्तयन्तेऽथ शृण्वन्ति वा ते जनाः ।
दुःखिताः स्युश्च संसारपाशैः सितास्तं नताः स्मः शरण्यं भवन्तं वयम् ॥२४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समुद्र उवाच

अजित तवाऽथ तावकजनस्य मुदा-
ऽल्पमपि द्रविणजलान्नवस्त्रनमनान्यतमेन सकृत् ।
चरति ह सेवनं स पदवीं महतीं महतां व्रजति जनोऽल्पकोपितमहंप्रणतःकरुणम्

पार्षदा ऊचुः

पितरौ त्वमसि स्वजनस्त्वमसि त्वमसीष्टगुरुः सुहृदात्मपतिः ।
त्वमसाश्वर एव च नः परमस्त्वमसि द्रविणं सकलं त्वमसि ॥ २६ ॥

मूर्त्तिरुवाच

यत्सम्बन्धत एव यान्ति पदवीमुच्चां महद्भिर्नृतां
स्त्रीशूद्रासुरनीचपक्षिपशवः पापात्मजीवा अपि ।
तद्धीना विबुधेश्वरा अपि भवन्त्यर्चोज्झितास्तत्क्षणं
गोलोकाधिपतिं तमेव हृदये नित्यं भजे त्वामहम् ॥ २७ ॥

सावित्र्युवाच

त्वं सर्गकाले प्रकृतिश्च पूरुषं दृष्ट्या स्वयोत्थाप्य ततस्तदात्मना ।
तत्त्वानि सृष्ट्वा महदादिमानितैर्नैकान्विराजो बहुधा ससर्जिथ ॥ २८ ॥
वैराजरूपेण जगद्विधातृतां स्वीकृत्य देवासुरमानुषोरगान् ।
त्वं स्थावरं जङ्गममीश! निर्ममे त्वामादिकर्तारमुपाश्रिताऽस्म्यहम् ॥ २६ ॥

दुर्गोवाच

प्रियतयाऽधिकया हृदि चिन्तनं विदधते तव ये भुवि ते विभो! ।
न परमेष्ठिसुखं न दिवः सुखं न कमयन्ति धरैकनरेशताम् ॥ ३० ॥
प्रसभमर्पितमप्यतुलं त्वया सुखमिदं समवाप्य च तत्र ते ।
तदपहाय न शक्तिकृतः क्षणं तमु नमामि च सात्वतनायकम् ॥ ३१ ॥

नद्य ऊचुः

वरद! नमनमात्रं नामसंकीर्तनं वा विदधति तव ये वै ज्ञानतोऽज्ञानतो वा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जनिमृतियमभीतेस्तानपि त्रायमाणं नरसखमुपयाताः स्मोऽद्य नारायणं त्वाम्

देवपत्न्य ऊचुः

भुवि धृताकृतेर्जन्म मङ्गलं चरितमद्भुतं लोकपावनम् ।
भवति निर्गुणं सर्वमेव ते भवसि निर्गुणं ब्रह्म यत्परम् ॥ ३३ ॥
तव समाश्रयात्तामसा जना अपि च राजसाः सात्त्विकाश्च ये ।
ननु भवन्ति ते निर्गुणास्ततो वयमुपास्महे त्वां हि निर्गुणम् ॥ ३४ ॥

ऋषिपत्न्य ऊचुः

आर्तानामुरुवृजिनैस्त्रिधा च तापैः सर्वापत्प्रशमनमेकमेश विष्णोः ।
पादाब्जं तव भवतीति तद्द्वयं वै प्राप्ताः स्मः शरणमनन्त देवदेव! ॥ ३५ ॥

पृथिव्युवाच

पूर्णशारदसुधाकराननं शारदाब्जदलदीर्घलोचनम् ।
श्रीवियोगबहुधार्तिमोचनं वासुदेवमहमेकमाश्रये ॥ ३६ ॥

सरस्वत्युवाच

नयने ममाच्युत तवाऽतिसुन्दरे मुखशीतरोचिषि चकोरतां गते ।
न हि गच्छतोऽन्यत इतीयमेव मे हृदि मूर्तिरस्तु सततं नहीतरा ॥ ३७ ॥

स्कन्द उवाच

इति स्तुतोऽखिलैर्देवैः सोऽभिनन्द्य दृशैव तान् ।
प्राह श्रियं शुभे! पश्य देवादींस्त्वमिमानिति ॥ ३८ ॥

ततःसमीक्षिताःप्रीत्यातथामधुरयादृशा । त्रिलोकीवासिनः सर्वेऋद्धाआसन्यथापुरा
लेभिरेस्वस्वऋद्धिंतेगृहिणस्त्यागिनोऽपिच । धर्मादयश्चसानन्दंप्रचरन्तिस्मपूर्ववत्

तस्याः श्रियश्च भगवान्ददौ स्थानमुरः स्वकम् ।
तत्र स्थित्वैव सा व्यापत्त्रैलोक्यं सम्पदात्मना ॥ ४१ ॥

ततो रत्नाकरः स्वस्माच्छ्रीजनेरनुभावतः । बभूवान्वर्थसञ्ज्ञो वैसम्पूर्णक्षयरत्नवान् ॥
चतुर्विधैर्बहुरसैः सदन्नैरमृतोपमैः । सर्वान्समागतांस्तत्र तर्पयामास सादरम् ॥ ४३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनर्घ्याणि च वस्त्राणि रत्नभूषाः परिच्छदान् ।
देवादिभ्यो ददौ प्रीत्या सर्वेभ्योऽपि पृथक्पृथक् ॥ ४४ ॥
जामातुस्तुष्टयेस्वस्यतदीयेभ्यस्तदाम्बुधेः । नाऽऽसीत्किमप्यदेयम्वैधनवर्द्धनवर्षिणः
भगवानपि तद्दत्तं यौतकञ्च धनं बहु । ब्राह्मणेभ्यः प्रदायैव श्रिया सह तिरोदधे ॥
लक्ष्मीनारायणाभ्यांतेभृशमानन्दिताःसुराः । इन्द्रादयोदिवंजग्मुःस्वंस्वंधामाऽपरेययुः
अधिकारञ्च सम्प्राप्य यथापूर्वंनिजंनिजम् । सर्वेऽपिसुखिनोजाताप्रसादात्कमलापतेः
मन्दरञ्च गिरिं तार्क्ष्यः पुनर्भगवदाज्ञया । स्वस्थानं समुपानीय स्थापयामास लीलया
एवमिन्द्रेण ब्रह्मर्षे! नष्टा ब्राह्मणशापतः । उपलब्धा पुनः सम्पन्नारायणप्रसादतः ॥५०
य एतां शृणुयात्पुण्यां कथांभगवतोमुने! । कीर्तयेत्प्रयतोवापिसम्पदंप्राप्नुतोहितौ
गृहिणां धनसिद्धिः स्यात्त्यागिनाञ्च यथेप्सिता ।
भक्तिज्ञानविरागादेर्भवेत्सिद्धिरनेन वै । ॥ ५२ ॥
इति ते कथितं ब्रह्मन्यथेन्द्रः प्राप सम्पदम् । नारदोऽपि यथाश्वेतं द्वीपंसगतवानृषिः
तत्ते सर्वं प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकेन चेतसा ॥ ५३ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये लक्ष्मीनारायणस्तुतिनिरूपणं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः

गोलोकवर्णनम्

स्कन्द उवाच

मेरुशृङ्गं समारूढो नारदो दिव्यया दृशा । श्वेतद्वीपञ्चतत्रस्थान्पश्यन्मुक्तान्सहस्रशः
वासुदेवे भगवति दृष्टिमाबध्य तत्क्षणम् । । उत्पपात महायोगीसद्यःप्रापचधामतत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राप्यश्वेतं महाद्वीपं नारदो हृष्टमानसः । ददर्श भक्तांस्तानेव श्वेतांश्चन्द्रप्रभाञ्छुभान्
पूजयामास शिरसा मनसा तैश्च पूजितः । दिदृक्षुर्ब्रह्म परमंसच कृच्छ्रपरः स्थितः
भक्तमेकान्तिकं विष्णोर्बुद्ध्वाभागवतास्तु ते । तमूचुस्तुष्टमनसोजपन्तंद्वादशाक्षरम्

श्वेतमुक्ता ऊचुः

मुनिवर्य! भवान्भक्तः कृष्णस्याऽस्ति यतोऽत्र नः ।
दृष्टवान्देवदुर्दृश्यान्किमिच्छन्नथ तप्यति ॥ ६ ॥

नारद उवाच

भगवन्तंपरं ब्रह्मसाक्षात्कृष्णमहंप्रभुम् । द्रष्टुमुत्कोऽस्मिभक्तेन्द्रास्तंदर्शयततत्प्रियाः

स्कन्द उवाच

तदैकः श्वेतमुक्तस्तु कृष्णेन प्रेरितो हृदि । एहितेदर्शयेकृष्णमित्युक्त्वापुरतोऽभवत्
प्रहृष्टो नारदस्तेन साकमाकाशवर्त्मना । पश्यन्धामानि देवानां तत उद्र्ध्वं ययौमुनिः
सप्तर्षीँश्चध्रुवं दृष्ट्वाऽनासक्तः कुत्रचित्स च । महर्जनतपोलोकान्व्यतीयाय द्विजोत्तम!
ब्रह्मलोकं ततोदृष्ट्वाश्वेतमुक्तानुगोमुनिः । कृष्णस्यैवेच्छयाऽध्वानंप्रापाऽग्रावरणेष्वपि

भूम्यप्तेजोनिलाकाऽऽशाऽहम्महत्प्रकृतीः क्रमात् ।
क्रान्त्वा दशोत्तरगुणाः प्राप गोलोकमद्भुतम् ॥ १२ ॥

धामतेजोमयं तद्वधि प्राप्यमेकान्तिकैर्हरेः । गच्छन्ददर्शविततामगाधां विरजांनदीम्
गोपीगोपगणस्नानधौतचन्दनसौरभाम् । पुण्डरीकैः कोकनदैः रम्यामिन्दीवरैरपि ॥
तस्यास्तटं मनोहारि स्फटिकाश्ममयंमहत् । प्रापश्वेतहरिद्रक्तपीतसन्मणिराजितम्

कल्पवृक्षालिभिर्जुष्टं प्रवालाङ्कुरशोभितम् ।
स्यमन्तकेन्द्रनीलादिमणीनां खनिमण्डितम् ॥ १६ ॥

नानामणीन्द्रनिचितसोपानततिशोभनम् । कूजद्भिर्मधुरं जुष्टं हंसकारण्डवादिभिः ॥
वृन्दैःकामदुघानाञ्चगजेन्द्राणाञ्चवाजिनाम् । पिबद्भिर्निर्मलं तोयं राजितंसव्यतिक्रमत्
उत्तीर्याऽथ धुनीं दिव्यांतत्क्षणादीश्वरेच्छया । तद्धामपरिखाभूतंशतशृङ्गमापसः
हिरण्मयंदर्शनीयं कोटियोजनमुच्छ्रितम् । विस्तारेदशकोट्यस्तुयोजनानांमनोहरम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सहस्रशः कल्पवृक्षैःपारिजातादिभिर्द्रुमैः । मल्लिकायूथिकाभिश्चलवङ्गैलालतादिभिः
स्वर्णरम्भादिभिश्चान्यैःशोभमानंमहीरुहैः । दिव्यैर्मृगगणैर्नागैःपक्षिभिश्चसुकूजितैः

दुर्गायितस्य तद्धाम्नस्तस्य रम्येषु सानुषु ।
मनोज्ञान्विततानैक्षद्भगवद्रासमण्डपान् ॥ २३ ॥

वृतानुद्यानततिभिः फुल्लपुष्पसुगन्धिभिः । कपाटै रत्ननिचितैश्चतुर्द्वारसुशोभनान् ॥
चित्रतोरणसम्पन्नै रत्नस्तम्भैः सहस्रशः । जुष्टांश्चकदलीस्तम्भैर्मुक्तालम्बैर्वितानकैः
दूर्वालाजाक्षतफलैर्युक्तान्माङ्गलिकैरपि । चन्दनाऽगुरुकस्तूरीकेशरोक्षितचत्वरान् ॥
सुश्राव्यवाद्यनिनदैर्हृद्यान्बहुविधैरपि । तेषु यूथानि गोपीनां कोटिशः स ददर्श ह ॥
अनर्घ्यवासोभूषाभिः सद्रत्नमणिकङ्कणैः । काञ्चीनूपुरकेयूरैः शोभितान्यङ्गुलीयकैः ॥
तारुण्यरूपलावण्यैःस्वरैश्चाऽप्रतिमानिहि । राधालक्ष्मीसवर्णानिश्रृङ्गारिकरकाणिच

भोगद्रव्यैर्बहुविधैर्मण्डपेषु युतेषु च ।
विलसन्ति च गायन्ति मनोज्ञाः कृष्णगीतिकाः ॥ ३० ॥

उपत्यकासु तस्याद्रेरथ वृन्दावनाभिधम् । वनं महत्तदद्राक्षीत्सावर्णे! नारदो मुनिः ॥
कृष्णस्यराधिकायाश्चप्रियंतत्क्रीडनस्थलम् । कल्पद्रुमालिभीरम्यंसरोभिश्चसपङ्कजैः
आम्रैराम्रातकैर्नीपैर्बदरीभिश्च दाडिमैः । खर्जूरीपूगनारङ्गैर्नारिकेलैश्च चन्दनैः ॥ ३३
जम्बूजम्बीरपनसैरक्षोदैः सुरदारुभिः । कदलीभिश्चम्पकैश्च द्राक्षाभिः स्वर्णकेतकैः
फलपुष्पभरानम्रैर्नानावृक्षैर्विराजितम् । मल्लिकामाधवीकुन्दैर्लवङ्गैर्यूथिकादिभिः ॥
मन्दशीतसुगन्धेन सेवितं मातरिश्वना । शतश्रृङ्गस्रुतैरार्द्रं निर्झरैश्च समन्ततः ॥

सदा वसन्तशोभाढ्यं रत्नदीपालिमण्डितैः ।
श्रृङ्गारिकद्रव्ययुतैः कुञ्जैर्जुष्टमनेकशः ॥ ३७ ॥

गोपानां गोपिकानाञ्चकृष्णसंकीर्त्तनैर्मुहुः । गोवत्सपक्षिनिनदैर्नानाभूषणनिस्वनैः

दधिमन्थनशब्दैश्च सर्वतो नादितं मुने! ॥ ३८॥

फुल्लपुष्पफलानम्रनानाद्रुमसुशोभनैः । द्वात्रिंशता वनैरन्यैर्युक्तं पश्यमनोहरैः ॥ ३६ ॥
तद्वीक्ष्य हृष्टः स प्रापगोलोकपुरमुज्ज्वलम् । वर्त्तुलं रत्नदुर्गञ्च राजमार्गोपशोभितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राजितं कृष्णभक्तानां विमानैः कोटिभिस्तथा ।
रथै रत्नेन्द्रखचितैः किङ्किणीजालशोभितैः ॥ ४१ ॥
महामणीन्द्रनिकरै रत्नस्तम्भाऽलिमण्डितैः ।
अद्भुतैः कोटिशः सौधः पङ्क्तिसंस्थैर्मनोहरम् ॥ ४२ ॥

विलासमण्डपैरम्यैरत्नसारविनिर्मितम् । रत्नेन्द्रदीपततिभिः शोभितं रत्नवेदिभिः
केसराऽगुरुकस्तूरीकुङ्कुमद्रवचर्चितम् । दधिदूर्वालाजपूगै रम्भाभिः शोभिताङ्गणम्
वारिपूर्णैर्हेमघटैस्तोरणैः कृतमङ्गलम् । मणिकुट्टिमराजाध्वचलद्भूरिगजाश्वकम् ॥
श्रीकृष्णदर्शनाऽऽयातैर्नैकब्रह्माण्डनायकैः । विरिञ्चिशङ्कराद्यैश्च बलिहस्तैःसुसंकुलम्

व्रजद्भिः कृष्णवीक्षाऽथ गोपगोपीकदम्बकैः ।
सुसङ्कुलमहामार्गं मुमोदाऽऽलोक्य तन्मुनिः ॥ ४७ ॥

कृष्णमन्दिरमापाऽथसर्वाश्चर्यंमनोहरम् । नन्दादिवृषभान्वादिगोपसौधालिभिर्वृतम्
चतुर्द्वारैः षोडशभिर्दुर्गैः सपरिखैर्युतम् । कोटिगोपवृतैकैकद्वारपालसुरक्षितैः ॥४९
रत्नस्तम्भकपाटेषु द्वार्षु स्वाग्रस्थितेषु सः । उपविष्टाक्रमेणैव द्वारपालान्ददर्श ह ॥
वीरभानुं चन्द्रभानुं सूर्यभानुं तृतीयकम् । वसुभानुं देवभानुं शक्रभानुं ततः परम् ॥
रत्नभानुं सुपार्श्वञ्च विशालमृषभं ततः । अंशुं बलञ्च सुबलं देवप्रस्थं वरूथपम् ॥

श्रीदामानञ्च नत्वाऽसौ प्रविष्टोऽन्तस्तदाज्ञया ।
महाचतुष्के वितते तेजोऽश्यन्महोच्चयम् ॥ ५३ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये गोलोकवर्णनं नाम
षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तदशोऽध्यायः

श्रीवासुदेवदर्शनवर्णनम्

स्कन्द उवाच

तत्त्वेककालसम्भूतकोटिकोट्यर्कसन्निभम्। स व्यचष्ट महत्तेजो दिव्यंसिततरम्मुने

दिशश्च विदिशः सर्वा उद्ध्वर्धाऽधो व्याप्नुवच्च यत्।

अक्षरं ब्रह्म कथितं सच्चिदानन्दलक्षणम्॥ २॥

प्रकृतिंपुरुषंचोभौतत्कार्याण्यपिसर्वशः। व्याप्तं यद्योगसंसिद्धाःषट्चक्राणिनिजान्तरे

व्यतीत्य मूर्ध्नि पश्यन्ति वासुदेवप्रसादतः॥ ३॥

यद्भासाभासितःसूर्योवह्निरिन्दुश्चतारकाः। भासयन्तिजगत्सर्वंस्वप्रकाशंतथामृतम्

यद्ब्रह्मपुरमित्याहुर्भगवद्धाम सात्वताः। यस्यान्तिकेषु परितस्तिष्ठन्त्यर्चककोटयः

ब्रह्मशङ्करवृन्दानिह्यपर्युपरिसम्भ्रमात्। पतन्ति बलिहस्तानि गोपगोपीव्रजाश्चयत्

कृष्णस्यानुग्रहोयस्मिन्स तेजसि तमीक्षते। केवलं तेज एवान्ये पश्यन्तिनतुतं मुने

तस्मिन्ददर्शाऽद्भुतदिव्यमन्दिरं विचित्ररत्नेन्द्रमयं मनोज्ञम्।

रत्नोज्ज्वलस्तम्भसहस्रकान्तं महासभामण्डपदर्शनीयम्॥ ८॥

सौधालिभिर्भूरिभिरुज्ज्वलाभिः स्वोपासकानां परितो विराजितम्।

विचित्रसूक्ष्माम्बररत्नभूषाविभूषितानां हि नृणाञ्च योषिताम्॥ ९॥

सिंहासनं तत्र मणीन्द्रसारै रत्नेन्द्रसारैश्च विनिर्मितं सः।

आश्चर्यकृत्प्रेक्षकमानसानां दिव्यं मुनिः प्रैक्षत भूरिहर्षः॥ १०॥

तत्राऽथ कृष्णं भगवन्तमैक्षन्नारायणं निर्गुणमास्थितं सः।

सर्वज्ञमीशं पुरुषोत्तमञ्च यं वासुदेवञ्च वदन्ति सात्वताः॥ ११॥

यं केचिदाहुः परमात्मसञ्ज्ञं केचित्परं ब्रह्म परात्परञ्च।

ब्रह्मेति केचिद्भगवन्तमेके विष्णुञ्च भक्ताः परमेश्वरञ्च॥ १२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कन्दर्पसाहस्रमनोहराङ्गं सदा किशोरं करुणानिधानम् ।
अतिप्रशान्ताकृतिदर्शनीयं क्षराक्षरेभ्यश्च परं स्वतन्त्रम् ॥ १३ ॥
नैकाण्डसर्गस्थितिनाशलीलाविधायकापाङ्गनिरीक्षणञ्च ।
अनेककोट्यण्डमहाधिराजं विश्वैकवन्द्यं नटवर्यवेषम् ॥ १४ ॥
अनर्घ्यदिव्योत्तमपीतवाससमनेकसद्रत्नविभूषणाढ्यम् ।
नवीनजीमूतसमानवर्णं कर्णोल्लसत्सन्मकराभकुण्डलम् ॥ १५ ॥
निजाङ्गनिर्यत्सितभूरितेजश्चयावृतत्वात्सितवर्णमुक्तम् ।
सद्रत्नसारोज्ज्वलसत्किरीटं शरत्सरोजच्छदचारुनेत्रम् ॥ १६ ॥
सुगन्धिसच्चन्दनचर्चिताङ्गं श्रीवत्सलक्ष्माङ्कितहृत्कपाटम् ।
निनादयन्तं मधुरञ्च वेणुं कृत्वा मुखाग्रेऽम्बुजचारुदोर्भ्याम् ॥ १७ ॥
जयासुशीलाललितामुखानां वृन्दैः सखीनां सह राधया च ।
तमर्च्यमानं रमया च भामाकलिन्दजाजाम्बवतीमुखानाम् ॥ १८ ॥
धर्मेण वेदैरखिलैर्भगैश्च ज्ञानादिभिः सम्मतपाणियुग्मैः ।
निषेव्यमाणञ्च सुदर्शनाद्यैर्निजायुधैर्मूर्तिधरैरनेकैः ॥ १९ ॥
मसारमाणिक्यसुवर्णवर्णैः सितैश्च कैश्चिन्निजपार्षदाग्र्यैः ।
उपासितं चक्रगदाब्जशङ्खलसद्भुजैर्नन्दसुनन्दमुख्यैः ॥ २० ॥
श्रीदाममुख्यैरथ गोपवेषैर्भक्त्याऽवनम्रैर्द्विभुजैरनेकैः ।
उपास्यमानं गरुडेन चाऽग्रतो विभूतिभिश्चाष्टभिरानताभिः ॥ २१ ॥
मूर्त्या च शान्त्या दयया च सेवितं पुष्ट्या च तुष्ट्या ह्यथ मेधया च ।
श्रद्धाक्रियाह्युन्नतिभिश्च मैत्र्या तथा तितिक्षास्मृतिबुद्धिभिश्च ॥ २२ ॥
दृष्ट्वा तमत्यद्भुतदिव्यमूर्त्तिं तद्रूपसौरम्यहृताखिलेन्द्रियः ।
आनन्दवारिप्रतिरुद्धदृष्टिः प्रेम्णोदूर्ध्वरोमासुखसम्भृतोऽभूत् ॥ २३ ॥

दण्डवत्तं नमस्कृत्य नारदः प्रेमविह्वलः । बद्धाञ्जलिपुटस्तस्थौ वीक्षमाणस्तदाननम्
तं मानयामास हरिः पृष्ट्वा स्वागतमादरात् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तमेकान्तिकं स्वस्य स्वेनैवच दिदृक्षितम् ॥ २५ ॥

भगवद्वाक्यपीयूषास्वादप्राप्तात्मसंस्मृतिः । तद्दर्शनमहामन्दो भक्त्यातुष्टाव तं मुनिः

नारद उवाच

जयश्रीकृष्ण! भगवन्नारायणजगत्प्रभो! । वासुदेवाऽखिलावास! सदैकान्तिकवल्लभ!

अत्याश्चर्यार्चनीयाङ्घ्रे राधिकाकमलादिभिः ।

त्वमेवात्यन्तिकं श्रेयोऽभीप्सतां परमा गतिः ॥ २८ ॥

नित्यानामात्मनां नित्य आत्मा चेतनचेतनः । क्षराक्षरेभ्यश्च परस्त्वं ब्रह्म परमं हरेः

यथाविशुद्धिःसिद्धिश्चभक्त्यापरमया तव । तथानस्यान्नृणामन्यैःसाधनैस्तपआदिभिः

त्वदङ्घ्रिदिव्यज्योत्स्नैका मुमुक्षूणां हृदि स्थितम् ।

महत्सन्तमसं हन्तुं सद्यः शक्ताऽस्ति सत्पते! ॥ ३१ ॥

सर्वैर्वेदैस्त्वमेवेज्यउपास्योज्ञेयएव च । निरूपितोऽसिभगवन्सर्वकारणकारणम्

एकैकस्मिन्रोमकूपेयत्तवाऽस्तिसितंमहः । शान्तमानन्दरूपञ्चतत्कोटीन्दुप्रभाधिकम्

अस्मिंस्त्वमक्षरेधाम्निनिर्गुणेऽमृतसञ्ज्ञके । महःपुञ्जेसदैवास्सेनिर्गुणः पुरुषोत्तमः

ब्रह्माण्डभयदात्कालान्मायायाश्च महाभयात् ।

मुक्ता भक्ता भवन्त्येव त्वदीयोपासनाबलात् ॥ ३५ ॥

तं त्वामहमुपेतोऽस्मि शरणं जगदीश्वरम् । सर्वात्मानं विभुं ब्रह्ममहापुरुषमच्युतम्

यथा त्वच्चरणाम्भोजे भक्तिर्मे निश्चला सदा । भवेत्तथैव देवेश! कर्त्तुमर्हस्यनुग्रहम्

स्कन्द उवाच

इत्थं देवर्षिणा भक्त्या संस्तुतः परमेश्वरः ।

तमाहानन्दयन्वाचा सुधासस्मितया मुनिम् ॥ ३८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीवासुदेवदर्शनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टादशोऽध्यायः

वासुदेवावतारादिवर्णनम्

श्रीभगवानुवाच

दर्शनं मम यज्जातं तव तत्तुमहामुने !। नित्यैकान्तिकभक्तत्वान्निर्दम्भत्वान्मदिच्छया
अहिंसाब्रह्मचर्यं च त्वयि नित्यश्च तद्द्वयम् । स्वधर्मोपशमौचैववैराग्यंचात्मवेदनम्
सत्सङ्गोऽष्टाङ्गयोगश्च सर्वथेन्द्रियनिग्रहः । मुन्यन्नवृत्तिश्च तपः सर्वव्यसनहीनता ॥
मदेकान्तिकभक्तिश्चमाहात्म्यज्ञानपूर्विका । वर्त्तते तेन मामत्र पश्यसि त्वं हि सुव्रत
ईदृग्लक्षणसम्पन्नायेस्युरन्येऽपिमानवाः । तेपिमामीदृशंविप्र! पश्यन्त्येकान्तिकप्रियम्

असावहमिह ब्रह्मन्नस्मिन्नक्षरधामनि ।
राधालक्ष्मीयुतो नित्यं वसामि स्वाश्रितैः सह ॥ ६ ॥

वासुदेवस्वरूपोऽहं सर्वकर्मफलप्रदः । अन्तर्यामितया वर्त्ते स्वतन्त्रतः सर्वदेहिनाम्
वैकुण्ठाख्ये महाधाम्निलक्ष्म्या सह चतुर्भुजः । वसामिनन्दगरुडमुख्यैःसाकञ्चपार्षदैः
धाम्नि तेजोमयेदिव्येश्वेतद्वीपेऽन्वहं भुवि । ददामिश्वेतमुक्तेभ्यः पञ्चकालंस्वदर्शनम

कुर्वेऽनिरुद्धप्रद्युम्नसङ्कर्षणसमाह्वयैः ।
स्वरूपैर्नैककोट्यण्डसर्गस्थित्यप्ययानहम् ॥ १० ॥
सर्गारम्भे मया ब्रह्मा सृष्टो नाभिसरोरुहात् ।
तपसाऽऽराधयामास स मां यज्ञैश्च नारद !॥ ११ ॥
ततस्तस्मै प्रसन्नोऽहं प्राददामीप्सितान्वरान् ।
ब्रह्मन्प्राप्स्यसि सामर्थ्यं प्रजानां त्वं विसर्जने ॥ १२ ॥
आज्ञायामेव ताः सर्वास्तव स्थास्यन्ति मद्वरात् ।
वेदाश्चापि स्फुरिष्यन्ति तव बुद्धौ सनातनाः ॥ १३ ॥

ज्ञानञ्च मत्स्वरूपस्य यथावत्तेभविष्यति । त्वया कृताश्चमर्यादांनातिक्रंस्यतिकश्चन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुरासुरगणानाञ्च मुनीनाञ्च महात्मनाम् । त्वमेव वरदो ब्रह्मन्वरेप्सूनां भविष्यसि
असाध्ये यत्र कार्येचमोहमेष्यसितत्त्वहम् । प्रादुर्भूयकरिष्यामिस्मृतमात्रस्त्वयाविधे

सृज्यमाने त्वया विश्वे नष्टां पृथ्वीं महार्णवे ।
आनयिष्यामि स्वं स्थानं वाराहं रूपमास्थितः ।
हिरण्याक्षं निहत्यैव दैतेयं बलगर्वितम् ॥ १७ ॥

दिनान्तेतत्रमत्स्योऽहंभूत्वाक्षोणींतरीमिव । सहोषधिंधारयिष्येमन्वादींश्चनिशावधि
सुधायै मथनतामब्धिकाश्यपानांनिराश्रयम् । मन्थानं कूर्मरूपोऽहंधास्येपृष्ठेचमन्दरम्
नारसिंहं वपुः कृत्वा हिरण्यकशिपुं विधे !। सुरकार्ये हनिष्यामियज्ञघ्नं दितिनन्दनम्
विरोचनस्यबलवान्बलिःपुत्रोमहासुरः। भविष्यतिसशक्रञ्चस्वाराज्याच्च्यावयिष्यति
त्रैलोक्येऽपहृतेतेनविमुखेचशचीपतौ । अदित्यांद्वादशःपुत्रःसम्भविष्यामिकश्यपात्

ततो राज्यं प्रदास्यामि देवेन्द्राय दिवः पुनः ।
देवताः स्थापयिष्यामि स्वेषु स्थानेष्वहं विधे !।
बलिं चैव करिष्यामि पातालतलवासिनम् ॥ २३ ॥

कर्दमाद्देवहूत्याञ्च भूत्वाऽथ कपिलाभिधः । प्रवर्तयिष्येकालेननष्टंसाङ्ख्यंविरागयुक्
दत्तो भूत्वाऽनसूयायामत्रेरान्विक्षिकींततः । प्रह्लादायोपदेक्ष्यामि विद्याञ्चयदवे विधे
मेरुदेव्यां सुतो नाभेर्भूत्वाहमममृषभो भुवि । धर्मं पारमहंस्याख्यंवर्तयिष्ये सनातनम्

त्रेतायुगे भविष्यामि रामो भृगुकुलोद्वहः ।
क्षत्रञ्चोत्सादयिष्यामि भग्नसेतुकदध्वगम् ॥ २७ ॥

सन्धौतु समनुप्राप्ते त्रेतायाद्वापरस्यच । कौशल्यायां भविष्यामि रामोदशरथादहम्
सीताभिधानालक्ष्मीश्चभवित्रीजनकात्मजा । उद्वहिष्यामितामैशंभङ्क्त्वाधनुरहंमहत्
ततो रक्षःपतिं घोरंदेवर्षिद्रोहकारिणम् । सीतापहारिणंसङ्ख्येहनिष्यामिसहानुजम्
तस्य मेतुचरित्राणिवाल्मीक्याद्यामहर्षयः । तदागास्यन्तिबहुधायच्छ्रुतेःस्यादघक्षयः
द्वापरस्यकलेश्चैव सन्धौ पर्यवसानिके । भूभारासुरनाशार्थं पातुं धर्मञ्च धार्मिकान् ॥

वसुदेवाद्भविष्यामि देवक्यां मथुरापुरे ॥ ३२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृष्णोऽहंवासुदेवाख्यस्तथासङ्कर्षणोबलः । प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्चभविष्यन्तियदोःकुले

गोपस्य वृषभानोस्तु सुता राधा भविष्यति ।
वृन्दावने तया साकं विहरिष्यामि पद्मज !॥ ३४ ॥
लक्ष्मीश्च भीष्मकसुता रुक्मिण्याख्या भविष्यति ।
उद्वहिष्यामि राजन्यान्युद्धे निर्जित्य तामहम् ॥ ३५ ॥

धर्मद्रुहोऽसुरान्हत्वा तदाविष्टांश्च भूपतीन् । धर्मं संस्थापयन्नेवकरिष्येनिर्भरांभुवम्
येन केनाऽपि भावेनयस्यकस्याऽपिमानसम् । मयिसंयोक्ष्यतेतन्तंनेष्येब्रह्मगतिंपराम्

धर्मं भुवि स्थापयित्वा कृत्वा यदुकुलक्षयम् ।
पश्यतां सर्वदेवानामन्तर्द्धास्ये भुवस्ततः ॥ ३८ ॥

कृष्णस्य ममवीर्याणि कृष्णद्वैपायनादयः । गास्यन्तिबहुधाब्रह्मन्सद्यःपापहराणिहि
कृष्णद्वैपायनो भूत्वा पराशरमुनेः सुतः । शाखाविभागं वेदस्य करिष्यामितरोरिव

वैदिकं विधिमाश्रित्य त्रिलोकीपरिपीडकान् ।
छलेन मोहयिष्यामि भूत्वा बुद्धोऽसुरानहम् ॥ ४१ ॥

मया कृष्णेन निहताः साऽर्जुनेन रणेषु ये । प्रवर्तयिष्यन्त्यसुरास्तेत्वधर्मंयदाक्षितौ
धर्मदेवात्तदा भक्तादहं नारायणो मुनिः । जनिष्ये कोशले देशे भूमौहिसामगोद्विजः
मुनिशापन्नृतांप्राप्तानृषींस्तात!तथोद्धवम् । ततोऽवितासुरेभ्योऽहंसद्धर्मंस्थापयन्नज!

जनान्म्लेच्छमयान्भूमौ कलेरन्ते महैनसः ।
कल्की भूत्वा हनिष्यामि विचरन्दिव्यवाजिना ॥ ४५ ॥
यदा यदा च वेदोक्तो धर्मो नाशिष्यतेऽसुरैः ।
प्रादुर्भावो भविष्यो मे तद्रक्षायै तदा तदा ॥ ४६ ॥

तस्माच्चिन्तांविहायैवप्रजाःसृजयथापुरा । एतान्दत्त्वावरांस्तस्माअहमन्तर्हितोऽभवम्
यथा तस्मै वरा दत्तास्तथत्र च [illegible]कृतम् । कुर्वेकरिष्ये च मुनेनिजशक्तिभिरञ्जसा
एवम्विधस्य मे ब्रह्मादीशितुः सर्वदेहिनाम् । दर्शनं दुर्लभं जातं तवैकान्तिकभक्तितः
वर [illegible]य मत्तस्त्वं स्वाभीष्टं मुनिसत्तम । प्रसन्नोऽ[illegible]भृशं तुभ्यं[illegible]ऽफलं ममदर्शनम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्कन्द उवाच

श्रुत्वेति भगवद्वाक्यं नारदो मुनिसत्तमः। मन्यमानो निजं धन्यं तमुवाच प्रभुं मुने!
दर्शनादेव ते स्वामिन्सम्पूर्णो मे मनोरथः। इदं हि दुर्लभंमन्ये सर्वेषामपि देहिनाम्

अतस्ते च त्वदीयानां त्वद्धाम्नोस्याऽमृतस्य च।
साक्षात्समीक्षणादन्यत्प्राप्यं मे नास्ति वाञ्छितम् ॥ ५३ ॥

इतोऽन्यद्दुर्लभं क्वाऽपि नास्ति ब्रह्माण्डगोलके। यदहं परितुष्टात्तेप्रार्थयेयमिहाच्युत
लोकान्तरसुखंयत्तद्वैदिकैरेव कर्मभिः। दैवैः पित्र्यैश्चलभ्येत तच्चाऽप्यस्तिहिनश्वरम्
नेच्छामि तदहंकिञ्चित्सुखंत्वत्तःपरंप्रभो!। वरमेकं तु याचे त्वत्स्वेप्सितंवरदर्षभात्
तवाऽथ तवभक्तानांसदैवगुणगायने। अत्युत्सुकाऽस्तुमेबुद्धिस्त्वयिप्रीतिविवर्द्धिनी

स्कन्द उवाच

तथाऽस्त्विति प्रतिश्रुत्य कृष्णस्तेनेति याचितम्।
गानोपयुक्तां महतीं वीणां दत्त्वाऽब्रवीत्पुनः ॥ ५८ ॥

श्रीभगवानुवाच

अधुना गच्छ देवर्षे विशालांबदरीमितः। तत्र धर्मात्मजं भक्त्या मामाराधय सुव्रत!
त्वं ह्येकान्तिकभक्तोऽसि ममनिष्कपटान्तरः। तेनत्वामधिकंमन्येविधेरपिपितुस्तव
यादृशोऽहञ्च यद्रूपो यावांश्च महिमा मम। विदुस्तत्सर्वमपि मेभक्ताएकान्तिकामुने
हृदि चिन्त्योऽहमेवास्मिसततंतेषांचतेमम। तेषामिष्टंनमत्तोऽन्यन्ममतेभ्योनकिञ्चन

यथा पतिव्रता नार्यो वशीकुर्वन्ति सत्पतिम्।
निजैर्गुणैस्तथा भक्ता वशीकुर्वन्ति मामपि ॥ ६३ ॥

अनुयामि श्रिया साकं तानहं परवानिव। यत्रयत्र च ते सन्तितत्रतत्राऽहमस्मि हि
सत्सङ्गादेव मत्प्राप्तिर्भवेद्भुवि मुमुक्षताम्। नान्योपायेन देवर्षे! सत्यमित्यवधारय ॥

मामेव यर्हि शरणं मानुषाः प्राप्नुवन्ति ये।
तर्ह्येव ते विमुच्यन्ते मायाया जीवबन्धनात् ॥ ६६ ॥

मां प्रपन्नस्तु पुरुषो येन केनापि भावतः। यथेष्टं सुखमाप्नोति न तु संसृतिमश्नुवत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्कन्द उवाच

एवमुक्तो भगवता प्राप्तोऽनुग्रहमीप्सितम् । प्रणम्य साश्रुनयनःपर्यावर्तत नारदः॥६८
तमेववीणया गायञ्छ्वेतमुक्तमपश्यत । प्राग्वत्स्वाग्रे चलन्तंतमन्वगच्छद् द्विजर्षभ!

सद्यः श्वेतं महाद्वीपं प्राप्य श्वेतान्प्रणम्य तान् ।
निवृत्तो नारदो ब्रह्मंस्तरसा मेरुमागमत् ॥ ७० ॥

ततो मेरोः प्रचक्राम पर्वतं गन्धमादनम् । निपपात च खात्तूर्णं विशालां वदरीमनु ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीवासुदेवावतारादिकथनंनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

एकोनविंशोऽध्यायः

नारदनरनारायणसमागमवर्णनम्

स्कन्द उवाच

ततः स ददृशे देवौ पुराणावृषिसत्तमौ । तपश्चरन्तौ सुमहदात्मनिष्ठौ महाव्रतौ ॥

तेजसाऽप्यधिकौ सूर्यात्सर्वलोकविरोचनात् ।
श्रीवत्सलक्षणौ पूज्यौ जटामण्डलधारिणौ ॥ २ ॥

पद्मचिह्नभुजौतौचपादयोश्चक्रलक्षणौ । व्यूढोरस्कौ दीर्घभुजौ सिततसूक्ष्मघनांशुकौ
स्वास्यौ पृथुललाटौ चसुभ्रूवौशुभनासिकौ । शुभलक्षणसम्पन्नौदिव्यमूर्त्तींघनप्रभौ

विनयेनाऽन्तिकं प्राप्य तयोः कृत्वा प्रदक्षिणाम् ।
भक्त्या प्रणम्य साष्टाङ्गं तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः ॥ ५ ॥

ततस्तौतपसांवासौयशसांतेजसामपि । ऋषीपौर्वाह्णिकस्याऽन्तेविधेर्मौनंविहायच

प्रीत्या नारदमभ्यर्च्य पाद्यार्घ्याभ्यां समार्चताम् ।
पीठयोरुपविष्टौ तौ कौशयोर्नारदश्च सः ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेषुतत्रोपविष्टेषु स देशोऽभिव्यराजत । आज्याहुतिमहाज्वालैर्यज्ञवाटोऽग्निभिर्यथा
अथनारायणस्तत्रनारदम्वाक्यमब्रवीत् । सुखोपविष्टंविश्रान्तंकृतातिथ्यं सुसत्कृतम्

श्रीनारायण उवाच

अपि ब्रह्मन्स भगवान्परमात्मा सनातनः । ब्रह्मधाम्नित्वया दृष्ट आवयोः कारणं परम्

नारद उवाच

भगवंस्त्वप्रसादेन तमहं परमेश्वरम् । वासुदेवं समालोके स्थितमक्षरधामनि ॥ ११
इहचैवागतःस्तेनविसृष्टोवांनिषेवितुम् । आसिष्येतत्परोभूत्वायुवाभ्यांसहनित्यशः

श्रीनारायण उवाच

धन्योऽस्यनुगृहीतोऽसियत्तेदृष्टःस्वयंप्रभुः । नहितंदृष्टवान्ब्रह्मन्कश्चिद्देवोपिवाऋषिः
भक्त्यैकान्तिकया तस्य प्राप्ता अक्षरसाम्यताम् ।
ये हि भक्तास्त एवैनं पश्यन्त्यखिलकारणम् ॥ १४ ॥
सदिव्यमूर्त्तिर्भगवान्दुर्द्दर्शः पुरुषोत्तमः । नारदैतद्धि मे सत्यं वचनं समुदाहृतम् ॥
नाऽन्यो भक्तात्प्रियतरो लोके तस्याऽस्ति कश्चन ।
ततः स्वयं दर्शितवांस्तवाऽऽत्मानं द्विजोत्तम !॥ १६ ॥
तेजः पुञ्जाभिरुद्धाङ्गो गुणातीताद्भुताकृतिः ।
अखण्डानन्दरूपश्च सदा शुद्धोऽच्युतोऽस्ति सः ॥ १७ ॥
रूपवर्णवयोवस्थाःप्राकृतानैवतस्य हि । सर्वं तस्याऽस्ति तद्दिव्यंसर्वोपकरणानिच
एकान्तिकानां भक्तानां स एव परमा गतिः ॥ १८ ॥
आत्मब्रह्मैक्यसम्पन्नैर्विनिवृत्तगुणैरपि । क्रियते वासुदेवस्य भक्तिरित्थंगुणो हि सः
माहात्म्यमस्यकोवक्तुंशक्नुयात्परमात्मनः । अचिन्त्यानन्तशक्तीनामधिपस्यमहामुने
आत्मात्मा चाक्षरात्माचह्येषआकाशनिर्मलः । दिव्यदृगीक्ष्यःसन्मात्रःपुरुषोवसुदेवजः
समस्तकल्याणगुणोनिर्गुणश्चेश्वरेश्वरः । परया विद्यया वेद्य उपास्यो ब्रह्मवित्प्रभुः
दिव्यमूर्त्ति तमीशानं तपसैकान्तिकेन च । यः प्रीणयति धर्मेण सधन्यतमउच्यते
तस्मात्त्वमपि देवर्षे ! धर्मेणैकान्तिकेनतम् । आराधयन्निहैवाङ्ग! कश्चित्कालं तपःकुरु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तपसैवाऽतिशुद्धात्मा माहात्म्यं तस्य सत्पतेः।
यथावज्ज्ञास्यति भवान्प्रोच्यमानं मयाऽखिलम् ॥ २५ ॥
सर्वार्थसाधनं विद्धितपस्तद्धृदयं मुने !। नातप्तभूरितपसा स वशीक्रियते प्रभुः ॥

स्कन्द उवाच

एवमुक्तो भगवता नरनारायणेन सः। प्रीतस्तपः कर्त्तुमिच्छँस्तमुवाच महामतिः ॥
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये नारदनरनारायणसमागमो नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

विंशोऽध्यायः

चातुर्वर्ण्यधर्मनिरूपणम्

नारद उवाच

भगवन्ब्रूहि मे धर्ममेकान्तंतव सम्मतम्। प्रीयते येन विश्वात्मा वासुदेवः ससर्वदा

श्रीनारायण उवाच

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन्मतिस्ते विमला किल।
मयि स्निग्धाय भक्ताय तुभ्यं गुह्यमपि ब्रुवे ॥ २ ॥
धर्म एष मया प्रोक्तः कल्पस्याऽऽदौ विवस्वते। तमेव कथये तुभ्यं सनातनमहं मुने
स्वधर्मज्ञानवैराग्यैः सह लक्ष्मीवदीश्वरे। तस्मिन्ननन्याभक्तिर्याधर्मएकान्तिकःसवैः
तेनैवातिप्रसन्नःस्याद्गोलोकाधिपतिः स्वयम्। जायतेसचभक्तोऽपिपरिपूर्णमनोरथः

नारद उवाच

लक्षणानि बुभुत्सामिस्वधर्मादेः पृथक्पृथक्। शास्त्रयोनेरहंत्वत्तोवक्तुंतानित्वमर्हसि
निगमागमशास्त्राणां सर्वेषामपि सत्पते !। मूलं त्वमेक एवासि येषु धर्मः सनातनः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वमेव साक्षाद्भगवान्वासुदेवोऽक्षरात्परः । श्रेयसे सर्वभूतानां वर्तसेऽत्रदया।निधिः ॥
त्वत्तोऽन्ये तुस्वस्वभावगुणतन्त्राह्यजादयः । यथावन्नविजानीयुर्द्धर्मादींस्त्वमतोचद

स्कन्द उवाच

इति देवर्षिणा पृष्टो भगवान्धर्मनन्दनः । स्वधर्मादीन्क्रमेणैव कथयामास सर्ववित्

श्रीनारायण उवाच

वर्णानामश्रमाणाञ्च सदाचारः पृथक्पृथक् । सामान्यःसविशेषश्चस्वधर्मःस उदीर्यते
नृणां साधारणं धर्मं सर्वेषामादितः शृणु । अहिंसा परमोधर्मस्तत्राऽऽदिम उदाहृतः
स्वमुख्यधर्मवृत्योरन्यद्रोहोमनसाऽपियः । सतिगत्यन्तरेप्राणिमात्रस्यापीतिसामता
सत्यावाग्भूतमात्रस्य द्रोहोनस्याद्ययातथा । तपश्चशास्त्रविहितभोगसङ्कोचलक्षणम्
बाह्यमाभ्यन्तरञ्चेति द्विविधं शौचकर्म च । अनादानं परस्वस्य परोक्षं वा छलेन च
यथोचितं ब्रह्मचर्यं कामलोभक्रुधां जयः । मुदा वित्तार्पणं पात्रे तुष्टिर्लब्धेन दैवतः ॥
तीर्थेक्षेत्रे च यज्ञादौचतुर्वर्गाप्तयेऽपि वा । आत्मनो वापरस्याऽपिसर्वथा व्रतवर्जनम्
जातिभ्रंशकराणाञ्च कर्मणां परिवर्जनम् । पाणिपादोदरोपस्थवाचां संयमनं तथा
सर्वेषां व्यसनानाञ्च वर्जनं मद्यमांसयोः । व्यभिचारान्निवृत्तिश्च कुलसद्धर्मपालनम्
एकादशीनां सर्वासां यमैः साकमुपोषणम् । हरेर्जन्मदिनानाञ्च व्रताचरणमञ्जसा ॥

आर्जवं साधुसेवा च विभज्याऽन्नादिभोजनम् ।
भक्तिर्भगवतश्चेति धर्माः साधारणा नृणाम् ॥ २१ ॥

ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्रा वर्णाश्चत्वार ईरिताः । तेषां पृथक्पृथग्धर्मान्विशेषान्वच्मितेमुने
शमो दमःक्षमाशौचमास्तिक्यंभक्तिरीशितुः । तपो ज्ञानंचविज्ञानंविप्रधर्मःस्वभावजः
शूरत्वं धैर्यमौदार्यं बलं तेजः शरण्यता । गोविप्रसाधुरक्षेज्याधर्माः क्षत्रस्यकीर्त्तिताः
राज्ञस्त्वेतेऽथ नीत्यैव प्रजानांपरिपालनम् । धर्मसंस्थापनंभूमौ धर्मादण्डार्हदण्डनम्
आस्तिक्यं दाननिष्ठाचसाधुब्राह्मणसेवनम् । अतुष्टिरर्थोपचये धर्मावैश्यस्यचोद्यमः
द्विजातीनां च देवानां सेवा निष्कपटंगवाम् । विशेषधर्मःकथितःशूद्रस्यमुनिसत्तम!
अध्यापनंयाजनञ्चविशुद्धाच्चप्रतिग्रहः । विप्रस्यजीविकाप्रोक्तातत्रान्त्यात्वापदिस्मृता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

याजनेऽध्यापने वाऽपि दोषदर्शी द्विजोत्तमः ।
यस्तस्याऽन्यापि विहिता वृत्तिरस्ति चतुर्विधा ॥ २६ ॥
शिलोञ्छं नित्ययाच्ञा च शालीनश्चोचिता कृषिः ।
श्रेयसी पूर्वपूर्वाऽत्र ज्ञातव्या द्विजसत्तमैः ॥ ३० ॥

विप्रो जीवेद्वैश्यवृत्त्या सत्यामापदि नारद !। अथ वा क्षत्रवृत्त्या न तुकर्हिचित् ॥३१
शस्त्रेण जीवेत्क्षत्रन्तु सर्वतो धर्मरक्षया। आपन्नो वैश्यवृत्त्यैव विप्ररूपेण वा चरेत् ॥
करादानादिनृपतेरविप्राद्वृत्तिरीरिता । देशकालानुसारेण रञ्जयित्वाऽखिलाः प्रजाः
आपत्कालेपि क्षत्रस्य ब्राह्मणस्येव सर्वथा । विगर्हितानीचसेवास्वतेजःक्षयकारिणी

कृषिवाणिज्यगोरक्षा तुरीया वृद्धिजीवनम् ।
वैश्यस्य जीविका प्रोक्ता शूद्रवृत्तिस्तथाऽऽपदि ॥ ३५ ॥
शूद्रो जीवेद् द्विजातीनां सेवालब्धधनेन च ।
आपत्काले तु कार्वादेर्जीविकावृत्तिमाश्रयेत् ॥ ३६ ॥

आपन्मुक्तस्तुसर्वोऽपि प्रायश्चित्तंयथोचितम् । विधायस्वस्ववृत्त्यैवपुनर्वर्त्ततमुख्यया
चातुर्वर्ण्यंसतांसङ्गंकुर्यान्नत्वसतांक्वचित् । मुक्तिप्रदोऽस्तिसत्सङ्गःकुसङ्गोनिरयप्रदः

कामं क्रोधं रसास्वादं जित्वा मानञ्च मत्सरम् ।
निर्दम्भं विष्णुभक्ता ये ते सन्तः साधवो मताः ॥ ३६ ॥
स्त्रियां स्त्रैणे रसास्वादे सक्ताश्च धनगृध्नवः ।
हिंस्रा दम्भकृताटोपा भक्ताभासा ह्यसाधवः ॥ ४० ॥
असाधुष्वासुरी सम्पद्दैवी सम्पत्तु साधुषु ।
सहजाऽस्तीति निश्चित्य सेव्याः सन्तः सुखेप्सुभिः ॥ ४१ ॥
यादृशां यस्य सङ्गः स्याच्छास्त्राणां वा नृणामपि ।
बुद्धिः स्यात्तादृशी तस्य कार्योऽतो नाऽसतां हि सः ॥ ४२ ॥

ये साधुसेवारुचयःपुरुषानिजशक्तितः । अप्राप्यंतास्तितेषां वै किमप्यैश्वर्यमूर्जितम्
स्वधर्मस्थाअपिसतां द्रोहिणोयेतुमानवाः । सद्गतिंनैवते यान्ति क्वापिकेनापिकर्मणा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वमेव साक्षाद्भगवान्वासुदेवोऽक्षरात्परः । श्रेयसे सर्वभूतानां वर्तसेऽन्नद्दयानिधिः ॥
त्वत्तोऽन्ये तुस्वस्वभावगुणतन्त्राह्यजादयः । यथावन्नविजानीयुर्द्धर्मादींस्त्वमतोवद

स्कन्द उवाच

इति देवर्षिणा पृष्टो भगवान्धर्मनन्दनः । स्वधर्मादीन्क्रमेणैव कथयामास सर्ववित्

श्रीनारायण उवाच

वर्णानामश्रमाणाञ्च सदाचारः पृथक्पृथक् । सामान्यःसविशेषश्चस्वधर्मःस उदीर्यते
नृणां साधारणं धर्मं सर्वेषामादितः शृणु । अहिंसा परमोधर्मस्तत्राऽऽदिम उदाहृतः
स्वमुख्यधर्मवृत्योरज्यद्रोहोमनसाऽपियः । सतिगत्यन्तरेप्राणिमात्रस्यापीतिसामता
सत्यावाग्भूतमात्रस्य द्रोहोनस्याद्ययातथा । तपश्चशास्त्रविहितभोगसङ्कोचलक्षणम्
वाह्यमाभ्यन्तरश्चेति द्विविधं शौचकर्म च । अनादानं परस्वस्य परोक्षं वा छलेन च
यथोचितं ब्रह्मचर्यं कामलोभक्रुधां जयः । मुदा वित्तार्पणं पात्रे तुष्टिर्लब्धेन दैवतः ॥
तीर्थक्षेत्रे च यज्ञादौचतुर्वर्गाप्तयेऽपि वा । आत्मनो वापरस्याऽपिसर्वथा त्व्रतवर्जनम्
जातिभ्रंशकराणाञ्च कर्मणां परिवर्जनम् । पाणिपादोदरोपस्थवाचां संयमनं तथा
सर्वेषां व्यसनानाञ्च वर्जनं मद्यमांसयोः । व्यभिचारान्निवृत्तिश्च कुलसद्धर्मपालनम्
एकादशीनां सर्वासां यमैः साकमुपोषणम् । हरेर्जन्मदिनानाञ्च व्रताचरणमञ्जसा ॥

आर्जवं साधुसेवा च विभज्याऽन्नादिभोजनम् ।
भक्तिर्भगवतश्चेति धर्माः साधारणा नृणाम् ॥ २१ ॥

ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्रा वर्णाश्चत्वार ईरिताः । तेषां पृथक्पृथग्धर्मान्विशेषान्वच्मितेमुने
शमो दमःक्षमाशौचमास्तिक्यंभक्तिरीशितुः । तपो ज्ञानंचविज्ञानंविप्रधर्मःस्वभावजः
शूरत्वं धैर्यमौदार्यं बलं तेजः शरण्यता । गोविप्रसाधुरक्षेज्याधर्माः क्षत्रस्यकीर्त्तिताः
राज्ञस्त्वेतेऽथ नीत्यैव प्रजानांपरिपालनम् । धर्मसंस्थापनंभूमौ धर्मादण्डार्हदण्डनम्
आस्तिक्यं दाननिष्ठाचसाधुब्राह्मणसेवनम् । अतुष्टिरर्थोपचये धर्मावैश्यस्यचोद्यमः
द्विजातीनां च देवानां सेवा निष्कपटं गवाम् । विशेषधर्मःकथितःशूद्रस्यमुनिसत्तम!
अध्यापनंयाजनञ्चविशुद्धाच्चप्रतिग्रहः । विप्रस्यजीविकाप्रोक्तातत्रान्त्यात्वापदिस्मृता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

याजनेऽध्यापने वाऽपि दोषदर्शी द्विजोत्तमः ।
यस्तस्याऽन्यापि विहिता वृत्तिरस्ति चतुर्विधा ॥ २९ ॥
शिलोञ्छं नित्ययाच्ञा च शालीनश्चोचिता कृषिः ।
श्रेयसी पूर्वपूर्वाऽत्र ज्ञातव्या द्विजसत्तमैः ॥ ३० ॥

विप्रो जीवेद्वैश्यवृत्त्या सत्यामापदि नारद !। अथ वा क्षत्रवृत्त्या न तुकर्हिचित् ॥३१
शस्त्रेण जीवेत्क्षत्रन्तु सर्वतो धर्मरक्षया। आपन्नो वैश्यवृत्त्यैव विप्ररूपेण वा चरेत् ॥
करादानादिनृपतेरविप्राद्वृत्तिरीरिता । देशकालानुसारेण रञ्जयित्वाऽखिलाः प्रजाः
आपत्कालेपि क्षत्रस्य ब्राह्मणस्यैव सर्वथा । विगर्हितानीचसेवास्वतेजःक्षयकारिणी

कृषिवाणिज्यगोरक्षा तुरीया वृद्धिजीवनम् ।
वैश्यस्य जीविका प्रोक्ता शूद्रवृत्तिस्तथाऽऽपदि ॥ ३५ ॥
शूद्रो जीवेद् द्विजातीनां सेवालब्धधनेन च ।
आपत्काले तु कार्वादिजींविकावृत्तिमाश्रयेत् ॥ ३६ ॥

आपन्मुक्तस्तुसर्वोऽपि प्रायश्चित्तंयथोचितम् । विधायस्वस्ववृत्त्यैवपुनर्वर्त्ततमुख्यया
चातुर्वर्ण्यंसतांसङ्गंकुर्यान्नत्वसतांक्वचित् । मुक्तिप्रदोऽस्तिसत्सङ्गःकुसङ्गोनिरयप्रदः

कामं क्रोधं रसास्वादं जित्वा मानञ्च मत्सरम् ।
निर्दम्भं विष्णुभक्ता ये ते सन्तः साधवो मताः ॥ ३९ ॥
स्त्रियां स्त्रैणे रसास्वादे सक्ताश्च धनगृध्नवः ।
हिंस्रा दम्भकृताटोपा भक्ताभासा ह्यसाधवः ॥ ४० ॥
असाधुष्वासुरी सम्पद्दैवी सम्पत्तु साधुषु ।
सहजाऽस्तीति निश्चित्य सेव्याः सन्तः सुखेप्सुभिः ॥ ४१ ॥
यादृशां यस्य सङ्गः स्याच्छास्त्राणां वा नृणामपि ।
बुद्धिः स्यात्तादृशी तस्य कार्योऽतो नाऽसतां हि सः ॥ ४२ ॥

ये साधुसेवारुचयःपुरुषानिजशक्तितः । अप्राप्यंनास्तितेषां वै किमप्यैश्वर्यमूर्जितम्
स्वधर्मस्थाअपिसतां द्रोहिणोयेतुमानवाः । सद्गतिंनैवते यान्ति क्वापिकेनापिकर्मणा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महापूजारताविष्णोर्भक्ताअपिसतांयदि । द्रोहं कुर्युस्तदा तेषु न प्रसीदतिसक्वचित्
सद्द्रोहिणस्तुदेहान्तेयांयांयोनिंव्रजन्तिच । तत्रतत्रक्षुधारोगैःपीड्यन्तेजीविताविधि
सतामतिक्रमादेव पुण्यानां महतामपि । सद्यः क्षयः स्यात्सर्वेषामायुषः सम्पदामपि

तस्मात्सेवा सतां कार्या सर्वैरपि सुखेप्सुभिः ।
पुण्यतीर्थानि सेव्यानि पूज्या विप्राश्च धेनवः ॥ ४८ ॥

तीर्थानि देवप्रतिमा निन्देयुर्येकुबुद्धयः । तेषां तु जारजातानांवंशोच्छेदोभवेद्ध्रुवम्

एकस्मिंस्तर्पिते विप्रे सद्भोज्यैर्दक्षिणादिभिः ।
तर्पितं स्याज्जगत्सर्वं हरिस्तुष्यति च स्वयम् ॥ ५० ॥
एकस्मिन्ब्राह्मणे द्रुग्धे द्रुग्धं स्यात्सकलं जगत् ।
तस्माच्छक्त्या पूजनीया ब्राह्मणा विष्णुरूपिणः ॥ ५१ ॥

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति सर्वे देवगणा अपि । तथा सर्वाणितीर्थानितासुतिष्ठन्तिसर्वदा
गव्यर्च्चितायामेकस्यांसर्वेदेवाःसमर्च्चिताः । कृतानिस्युश्चसर्वाणितीर्थान्यपिचनारद
एकस्याअपिगोर्द्रोहेकृतेकापिप्रमादतः । द्रुग्धाःस्युर्देवतासर्वास्तीर्थान्यपिचकृत्स्नशः
तस्माच्चातुर्वर्ण्यजनैर्यथोक्तविधिसंस्थितैः । भवितव्यं प्रयत्नेन त्रेतव्यञ्च निषेधतः
चातुर्वर्ण्येतरे ये तु तेषां वृत्तिः कुलोचिता । चौर्यहिंसाद्यधर्मेण रहितैव हितावहा
वर्णधर्मा इति प्रोक्ताः सङ्क्षेपेण महामुने !। चतुर्णामाश्रमाणाञ्चधर्मानथ वदामि ते

इतिश्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये चातुर्वर्ण्यधर्मनिरूपणं नाम
विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकविंशोऽध्यायः

ब्रह्मचारिधर्मनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

ब्रह्मचारी गृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा । एत आश्रमिणःप्रोक्ताश्चत्वारोमुनिसत्तमः

संस्कारैः संस्कृतो यस्तु शुद्धयोनिर्द्विजातिताम् ।

प्राप्तः स हि ब्रह्मचारी तद्धर्मानादितो ब्रुवे ॥ २ ॥

वर्णीवेदमधीयीत वसन्गुरुगृहेशुचिः । जितेन्द्रियोजितक्रोधो विनीतस्तथ्यभाषणः

सायं प्रातश्चरेद्धोमं भिक्षाचर्यांश्च संयतः ।

कुर्यात्त्रिकालं सन्ध्यांश्च विष्णुपूजां तथाऽन्वहम् ॥ ४ ॥

गुर्वाज्ञयैव भुञ्जीत मितमन्नमनाकुलः । गुरुसेवापरो नित्यं भवेद्व्यसनवर्जितः ॥५॥

स्नाने च भोजने होमे जपेमौनमुपाश्रयेत् । छिन्द्यान्ननखरोमाणिदन्तान्नैवातिधावयेत्

नाऽतिधावेच्च वासांसि भवेन्निष्कपटोगुरौ । आहूतोऽध्ययनंकुर्यादादावन्तेचतंनमेत्

अस्पृश्यान्न स्पृशेच्चासौ नाऽसंभाष्यांश्च भाषयेत् ।

अभक्ष्यं भक्षयेन्नैव नाऽपेयञ्च पिबेत्कचित् ॥ ८ ॥

मेखलामजिनंदण्डंविभृयाच्चकमण्डलुम् । सिते द्वे वाससीब्रह्मसूत्रञ्चजपमालिकाम्

दर्भपाणिश्च जटिलः केशसंस्कारवर्जितः । अङ्गरागं पुष्पहारान्भूषणानिच वर्जयेत् ॥

तैलाभ्यङ्गं न कुर्वीत कज्जलेनाऽञ्जनं तथा । वर्जयेच्च प्रयत्नेन संसर्गं मद्यमांसयोः

स्त्रीणां निरीक्षणंस्पर्शंभाषणंक्रीडनादिच । वर्जयेत्सर्वथावर्णीस्त्रियाश्चाप्यवलेखनम्

विना च देवप्रतिमां काष्ठचित्रादि योषितम् ।

अपि नैव स्पृशेद्धीमान् च बुद्ध्याऽवलोकयेत् ॥ १३ ॥

प्राणिमात्रञ्च मिथुनीभूतं नेक्षेत कर्हिचित् ।

स्त्रीणां गुणांश्चाऽप्यगुणाञ्छृणुयान्नैव नो वदेत् ॥ १४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्पृशन्नेववन्देतगुरुपत्नीमपिस्वकाम् । जनन्याऽपि नतिष्ठेत रहःस्थानेतुकर्हिचित्
एवंवृत्तोवसेत्तत्रयावद्विद्यासमापनम् । ततोविरक्तोन्यासी स्याद्वर्णी वानैष्ठिकोभवेत्
अनधिकारिता प्रोक्ता नैष्ठिकव्रतिनां कलौ ॥ १६ ॥
न सन्धाविति विज्ञेयंकलीतिशब्दसंग्रहात् । वनीस्यादथ वाब्रह्मन्नविरक्तोभवेद्गृही
प्राजापत्यं च सावित्रं ब्राह्मं नैष्ठिकमेव च । चतुर्विधं ब्रह्मचर्यं तत्रैकं शक्तितः श्रयेत्
इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये ब्रह्मचारिधर्मनिरूपणं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

द्वाविंशोऽध्यायः

गृहस्थधर्मनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

गृही बुभूषुर्गुरवेदक्षिणांस्वस्यशक्तितः । दत्त्वा तदाज्ञयैवाऽसौ समावर्त्तनमाचरेत्
ततः कुलोचितांयोषांवयसोनामरोगिणीम् । पुंलक्षणेनरहितामपापांविधिनोद्वहेत्
स्वाधिकारानुसारेण कृष्णसम्प्रीतयेऽन्वहम् । देवर्षिपितृभूतानि यजेतविधिनाततः
स्नानं सन्ध्यां जपं होमं स्वाध्यायं विष्णुपूजनम् ।
तर्पणं वैश्वदेवञ्च कुर्याच्चाऽऽतिथ्यमन्वहम् ॥ ४ ॥
कुर्यात्पुण्यंयथाशक्तिन्यायार्जितधनेनच । अनासक्तः पोष्यवर्गं पुष्णीयान्नतुपीडयेत्
देहेच दैहिकान्वाऽसावुद्दिश्य पशुवत्परैः । वैरं न कुर्याद्देहादावहन्तां ममतांत्यजेत् ॥
कुर्याद्भागवतानाञ्चसतांसङ्गमतन्द्रितः । न स्त्रैणानां व्यसनिनांसङ्गंकुर्यान्नलोभिनाम्
कामभावेन नेक्षेत परयोषान्तु कर्हिचित् ।
श्राद्धपर्वव्रताहादौ नोपेयाच्च स्वयोषितम् ॥ ८ ॥
प्राप्तोऽपि पुरुषः साङ्ख्ये योगे च परिपक्वताम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुत्र्या अपि प्रसङ्गेन रहःस्थाने तु मुह्यति ॥ ६ ॥
अतो मात्रा भगिन्या वा दुहित्राऽपि रहःस्थले ।
सह नाऽऽसीत मतिमान्युवत्या किमुताऽन्यथा ॥ १० ॥
अमङ्गलानां सर्वेषां विधवाह्यत्यमङ्गलम् । तद्दर्शनञ्च तत्स्पर्शोनृणां सुकृतह्वत्ततः ॥
प्रयाणकाले विधवादर्शनं सन्मुखे यदि । स्यात्तदानैवगन्तव्यमन्यथा मरणं ध्रुवम् ॥
आशिषो विधवा स्त्रीणां समाःकालाहिफूत्कृतैः ।
ततश्च विभियात्ताभ्यो राक्षसीभ्यो यथा गृही ॥ १३ ॥
मद्यंमांसंमादकञ्चद्यूतादीन्दूरतस्त्यजेत् । नद्रोहंप्राणिमात्रस्यकुर्याद्वाचापिकर्हिचित्
अवतारचरित्राणि शृणुयादन्वहं हरेः । सर्वा अपि क्रियाः कुर्याद्वासुदेवार्थमास्तिकः
ऊर्जे माघे च वैशाखे चातुर्मास्ये मलिम्लुचे । अन्येषुपुण्यकालेषुविशेषनियमांश्चरेत्
पुण्यदेशे पुण्यकाले सत्पात्रे विधिना गृही । दद्याद्दानं यथाशक्तिदयांकुर्वीत जन्तुषु
पुण्यान्देशान्पुण्यकालान्पुण्यपात्राणिचाऽनघ ! कथयामिविशेषेणधर्मवृद्धिकराणिते
देशः सर्वोत्तमस्त्वेष भुवि यो मदधिष्ठितः । महामुनिगणा यत्र तपस्यन्तिमहाव्रताः
हरितद्भक्तमाहात्म्याद्देशानामस्ति पुण्यता । गङ्गाद्वारं मधुपुरी नैमिषारण्यमेव च ॥
कुरुक्षेत्रमयोध्या च प्रयागश्च गयाशिरः । पुरी वाराणसी चैव पुण्यश्च पुलहाश्रमः ॥
कपिलाश्रमः श्रीरङ्गः प्रभासश्चकुशस्थली । क्षेत्रं सिद्धपदाख्यं च पौष्करञ्चमहत्सरः
क्रीडास्थानं भगवतः सश्रियो रैवताचलः । तथा गोवर्द्धनगिरिः पुण्यंवृन्दावनंवनम्
महेन्द्रमलयाद्याश्च सप्ताऽपि कुलपर्वताः । भागीरथी महापुण्या यमुना च सरस्वती
गोदावरी च सरयूः कावेरी गोमतीमुखाः । पुराणप्रथिताः पुण्या महानद्योनदास्तथा
महोत्सवैर्भवेद्यत्र भगवत्प्रतिमार्चनम् । प्रभोरनन्यभक्ताश्च भवेयुर्यत्रयत्र च ॥ २६ ॥
अहिंस्राश्च स्वधर्मस्था यत्र स्युर्ब्राह्मणोत्तमाः ।
मृगाद्याः पशवो यत्र विचरेयुश्च निर्भयाः ॥ २७ ॥
यत्रयत्रावताराश्च हरेर्वासश्च यत्र वा । एते पुण्यतमा देशा भुवि सन्ति विशेषतः ॥
अल्पोऽप्येषु कृतो धर्मः स्यात्सहस्रगुणो नृणाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुण्यवृद्धिकरान्कालाञ्छृणवथो वच्मि नारद !॥ २९ ॥
अयने द्वे च विषुवं ग्रहणं सूर्यसोमयोः । दिनक्षयो व्यतीपातः श्रवणर्क्षाणि सर्वशः
द्वादश्य एकादश्यश्च मन्वाद्याश्च युगादयः ।
पुण्याः स्युस्तिथयः सर्वा अमावास्या च वैधृतिः ॥ ३१ ॥
मासर्क्षयुक्पौर्णमास्यश्चतस्रोऽप्यष्टकास्तथा ।
स्वजन्मर्क्षाणि च हरेर्जन्मोत्सवदिनानि च ॥ ३२ ॥
स्वस्य स्त्रियाश्चाऽर्भकाणां संस्कारोऽभ्युदयस्तथा ।
सत्पात्रलब्धिश्च यदा कालाः पुण्यतमा इमे ॥ ३३ ॥
देवपितृद्विजसतामेषां शक्त्या समर्च्चनम् । स्नानदानजपादीनि स्युरनन्तफलानि हि
सत्पात्रं तु स्वयं साक्षाद्भगवानेव नारद !। शाखानामिव मूलाम्बु यद्दत्तं सर्वतुष्टिकृत्
अहिंसावेदविद्याभिस्तुष्टिः सद्धर्मभक्तिभिः ।
हृदि विष्णुं दधीरन्ये ते सत्पात्राणि वै द्विजाः ॥ ३६ ॥
एकान्तिकाश्च भगवद्भक्ता बद्धविमोचकाः ।
सत्पात्राणीति जानीहि येष्वास्ते भगवान्स्वयम् ॥ ३७ ॥
आढ्यस्तु कारयेद्विष्णोर्मन्दिराणि दृढानि च ।
पूजाप्रवालसिद्ध्यर्थं तद्वृत्तीश्चाऽपि कारयेत् ॥ ३८ ॥
जलाशयान्वाटिकाश्च विष्णवर्थमुपकल्पयेत् । सदन्नैःसुरसैःसाधून्ब्राह्मणांश्चैवतर्पयेत्
अहिंसान्वैष्णवान्यज्ञान्कुर्याच्छक्त्या यथाविधि ।
व्रतजन्मोत्सवान्विष्णोः सम्भारेण च भूयसा ॥ ४० ॥
प्रौष्ठपदासिते पक्षे क्षयाहे तीर्थपर्वसु । पित्रोः श्राद्धं प्रकुर्वीत तद्बन्धूनां च शक्तितः
दैवे कर्मणि पित्र्ये च भक्तान्भगवतोद्विजान् । पूजयेत्स्वधर्मस्थान्भोजयेद्भगवद्धिया
दैवे द्वौ भोजयेद्विप्रौ त्रींश्च पित्र्ये यथाविधि ।
एकैकं वोभयत्राऽपि नैव श्राद्धे तु विस्तरेत् ॥ ४३ ॥
देशकालद्रव्यपात्रपूजोपकरणानि च । विस्तरेण यथाशास्त्रं न स्यादेवेति निश्चितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न श्राद्धे काऽपि मांसं तु दद्यान्नाऽद्याच्च मानवः ।
मुन्यन्नैः क्षीरसर्पिर्भ्यां तृप्यन्ति पितरो भृशम् ॥ ४५ ॥

अहिंसा प्राणिमात्रस्य मनोवाक्तनुभिस्तु या । तयैवपितरःसर्वेतृप्यन्त्यतिदयालवः
तस्मात्कुसङ्गतः काऽपि शास्त्रहार्दमवुध्य च । श्राद्धे मांसं नैव दद्याद्वासुदेवपरःपुमान्
व्रतानि कुर्याद्विष्णोश्च ब्रह्मचर्यादिभिर्यमैः । सहैव तत्परो नान्यत्कार्यं कुर्याच्चतद्दिने

स्वसम्बन्धिजनानां चाऽप्याशौचं जनिनाशयोः ।
यथाशास्त्रं पालयेत ग्रहणे चाऽर्कचन्द्रयोः ॥ ४६ ॥

व्यावहारिककार्याणांविवादेनिर्णयेऽपि च । गृहीतरास्त्यागिनोयेतेनकार्यानचाश्रवाः

यत्रैते स्युर्न तत्कार्यं सिध्येत्क्वापि द्विजोत्तम !।
सर्वस्वनाशस्तत्र स्यादित्येवं त्वस्ति निर्णयः ॥ ५१ ॥

धर्मा एते गृहस्थानांमयासङ्क्षेपतोदिताः । यदनुष्ठानतोनॄणांस्यात्स्वेष्टसुखमक्षयम्
शिलादिजीविकावृत्तिभेदेन गृहिणो द्विजाः । चतुर्विधाः प्रकीर्त्यन्तेतत्तन्नाम्नाचनारद

स्त्रीणामथ प्रवक्ष्यामि धर्मान्धर्मवतांवर !।
येषु स्थिताः स्त्रियः सर्वाः प्राप्नुवन्तीप्सितं सुखम् ॥ ५४ ॥
सुवासिनीभिर्नारीभिः स्वपतिर्देववत्सदा ।
सेवनीयोऽनुवर्त्त्यश्च जरन्रुग्णोऽधनोऽपि वा ॥ ५५ ॥

तद्वन्धवश्चानुवर्त्याः सेवनेनयथोचितम् । उज्ज्वलानिविधेयानिगृहोपकरणानिच
गृहं मार्जनसेकाद्यैः स्वच्छं कार्यं दिनेदिने । प्रियं सत्यंचवक्तव्यंस्थेयंशुचितयासदा

चाञ्चल्यमतिलोभश्च क्रोधः स्तेयं च हिंसनम् ।
अधार्मिकाणां सङ्गश्च वर्ज्यः स्त्रीणां तथा नृणाम् ॥ ५८ ॥
भवितव्यं तत्पराभिर्द्धर्मकार्येषु सर्वदा ।
त्यक्त्वौद्धत्यं विनीताभिः स्थेयं जित्वेन्द्रियाणि च ॥ ५६ ॥
पातिव्रत्ये स्थिताभिश्च धर्मे तासी रमापतेः ।
भक्तिः कार्या स्वतन्त्राभिर्भवितव्यं न कुत्रचित् ॥ ६० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विधवातुसदाविष्णुंसेवेतपतिभावतः । कामसम्बन्धिनीर्वार्त्तानश्रृण्वीत न कीर्तयेत्
आसन्नसम्बन्धवतो विनाऽन्यान्पुरुषान्कचित् । अनापदिस्पृशेन्नैवपश्येन्नैवचकामतः
स्तनपश्यतुनुःस्पर्शाद्वृद्धस्यचन दुष्यति । कार्यआवश्यकेताभ्यांभाषणेचविभर्त्तृका
व्यावहारिककार्यैं च विवादमधिकं नरैः । न कुर्वीताऽवश्यकार्ये तैर्भाषेत विना रहः

नेक्षेत मिथुनीभूतं बुद्ध्या पश्वाद्यपि कचित् ।

त्यजेच्च सकलान्भोगान्स्यात्सकृन्मितभुक्तया ॥ ६५ ॥

सधातुसूक्ष्मवासांसिनालङ्काराश्चधारयेत् । न दिवा शयनं कुर्यान्न खट्वायामनापदि
ताम्बूलभक्षणंनैव कुर्यान्नाभ्यङ्गमञ्जनम् । पुम्प्रसङ्गाच्चविभियात्कृष्णाहेरिवनित्यदा
समीक्ष्यपुरुषंनारीयानमोहमुपाव्रजेत् । तादृशीतुविनालक्ष्मीमेकांनान्यास्तिकुत्रचित्
धर्मनिष्ठा ततो नारी स्वनिःश्रेयसमिच्छती । नेक्षेतपुरुषाकारंबुद्धिपूर्वञ्च न स्पृशेत्
कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि नैरन्तर्येण भक्तितः । व्रतानिकुर्याच्च सदा भवेन्नियमतत्परा
पित्रापुत्रादिनावाऽपितरुणी तरुणेन च । सह तिष्ठेन्न रहसि कुसङ्गं सर्वथा त्यजेत्

सधवा विधवा वा स्त्री स्वरजोदर्शनं कचित् ।

न गोपयेत्त्रिरात्रं तु मनुष्यादींश्च न स्पृशेत् ॥ ७२ ॥

प्रथमेऽहनिचण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी । तृतीयेरजकीप्रोक्ता साचतुर्थेऽह्निशुद्ध्यति

इति स्त्रीणां मया धर्माः सङ्क्षेपात्कथितास्तव ।

युक्ता यैर्योषितो यायुरिहाऽमुत्र महत्सुखम् ॥ ७४ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये गृहस्थधर्मनिरूपणं नाम
द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रयोविंशोऽध्यायः

वनस्थयतिधर्मनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

वानप्रस्थस्य वक्ष्यामि नियमानथ ते मुने !। तृतीयआयुषो भागे तृतीयाश्रम ईरितः
अनुकूला स्वसेवायां विरक्ताच तपःप्रिया। यदि पत्नी भवेत्तर्हि तया सहवनंविशेत्
अन्यथा तु सुतादिभ्यस्तस्या पोषणरक्षणम्।
आदिश्य स्वयमेकाकी विरक्तो वनमाविशेत् ॥ ३ ॥
निर्भयो निवसेत्तत्र तपोरुचिरतन्द्रितः। कुर्यादुटजमग्न्यर्थं स्वयं तु बहिरावसेत् ॥
भवेत्पञ्चतपा ग्रीष्म उदवासश्च शैशिरे। आसारषाट्चवर्षासुजितक्रोधोजितेन्द्रियः
वासश्च तार्णं पार्णम्वा वसीताऽजिनवल्कलम्।
भुञ्जीत ऋषिधान्यानि वन्यं कन्दफलादि वा ॥ ६ ॥
अग्निपक्वं वाऽर्कऽपक्वमपक्वं वापिभक्षयेत्। अभावेत्वेषदन्तानामश्मोलूखलकुट्टितम्
स्वयमेवाहरेदन्नं यथाकालं दिनेदिने। काले पराहृतं वापि गृह्णीयान्नाऽन्यथा क्वचित्
कालेऽपि कृष्टपच्यन्तु न गृह्णीयादनापदि। वन्यैरेवाग्निकार्यञ्चधान्यैः कुर्वीत पूर्ववत्
रक्षेत्कमण्डलुं दण्डमग्निहोत्रपरिच्छदान्। केशरोमश्मश्रुनखान्धारयेन्मलिनान्दतः ॥
अङ्गान्यमर्दयन्स्नायाद्भूतले च शयीत सः। देशकालबलावस्थानुसारेण तपश्चरेत्
फेनपाश्चौदुम्बराश्च वालखिल्यास्तथैव च। वैखानसेति कथिताश्चतुर्द्धावनवासिनः
यथाशक्तिद्वादशाब्दानष्टौ वा चतुरो वने। वसेद्द्वावेकमेवाऽपि ततःसंन्यासमाश्रयेत्
यदि स्यात्तीव्रवैराग्यं तर्हि न्यासो हितावहः।
वसेत्तत्रैवाऽन्यथा तु यावज्जीवं वने द्विजः ॥ १४ ॥
यथाविधि कृतत्यागस्तुरीयाश्रममास्थितः।
साच्छादनं तु कौपीनं कन्थामेकाञ्च धारयेत् ॥ १५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दण्डं कमण्डलुं चाम्बुगालनं विभृयाच्च सः । सदाचारद्विजगृहेकालेभिक्षांसमाचरेत्
न कुर्यात्प्रत्यहं भिक्षामेकस्यैव गृहेयतिः । रसलुब्धो भवेन्नैव सकृच्च मितभुग्भवेत्

वनस्थाश्रमिणो भिक्षां प्रायो गृह्णीत भिक्षुकः ।
तदन्धसाऽतिशुद्धेन शुद्ध्यत्येवाऽस्य यन्मनः ॥ १८ ॥
घ्राणेऽपि मांससुरयोः पाराकं व्रतमाचरेत् ।
शौचाचारविशुद्धः स्याच्छूद्रादींश्चापि न स्पृशेत् ॥ १९ ॥
नित्यं कुर्याद्विष्णुपूजा मयाद्विष्णोर्न्निवेदितम् ।
द्वादशार्णं जपेद्विष्णोरष्टाक्षरमनुञ्च वा ॥ २० ॥

असद्वादंनकुर्वीतवृत्त्यर्थंनाचरेत्कथाम् ।असच्छास्त्रेनसक्तःस्यान्नोपजीवेच्चजीविकाम्
सच्छास्त्रमभ्यसेच्चासौबन्धमोक्षानुदर्शनम् । मठादीन्नैवबध्नीयादहन्ताममतेत्यजेत्
चातुर्मास्यंविनैकत्रवसेन्नाऽसावनापदि । आत्मनश्च हरेरूपं विद्याज्ज्ञानेन तत्त्वतः ॥
कामं क्रोधं भयं वैरं धनधान्यादिसङ्ग्रहम् । नैवकुर्यात्पालयेतयमांश्चनियमान्यतिः

तीव्रज्ञानविरागाभ्यां सम्पन्नोऽपि यतिर्ध्रुवम् ।
स्त्रीवित्तभूषासद्वस्त्रसंसर्गाद्भ्रष्टतामव्रजेत् ॥ २५ ॥

पुष्पचन्दनतैलादिसुगन्धिद्रव्यवर्जनम् । त्यागीकुर्वीताऽन्यथा तु भवेद्देहात्मधीःस वै

आहारो यस्य यावांस्तं तावान्स्त्रीकाम आविशेत् ।
अतो मितं नीरसं च भोजनं त्यागिनो हितम् ॥ २७ ॥
न श्राव्या ग्राम्यवार्त्ता च मोक्षसिद्धिमभीप्सता ।
नश्येद्यच्छ्रवणान्नृणां सद्यो विष्णुकथारुचिः ॥ २८ ॥

अपिचित्रमयींनारीं त्यागीनैक्षेतन स्पृशेत् । स्त्र्याकारदर्शनादेवभ्रष्टाभूरितपस्विनः
कुटीचको बहूदश्च हंसः परमहंसकः । एवं चतुर्द्धा कथितो यतिर्वैराग्यभेदतः ॥३०॥
काषायवाससोये मे भविष्याःसाधवश्च तैः । कार्यं मदर्थपाकादितुर्याश्रमस्थितैरति
श्रावासुदेवभक्ता ये तीव्रवैराग्यशालिनः । तेषां धर्मस्तुतत्सेवा प्रोक्ताहस्सुचरात्रिषु

एकोऽपिच क्षणस्तेषां ज्ञानविज्ञानभूयसाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तिं नवविधां विष्णोर्विना व्यर्थो न वै भवेत् ॥ ३३ ॥
सर्वैर्गुणैरुपेतोऽपिभगवद्विमुखो यदि । स्वजनोऽपि भवेत्तं तु जह्युरेव हि वैष्णवाः
प्रासादिकं हरेरन्नं मोक्षितंतत्पदाम्बुना । भुञ्जीरंस्तुलसीमिश्रं प्रत्यहं सात्वताजनाः
स्त्रीणाञ्च स्त्रीषु सक्तानां प्रसङ्गो विष्णुचिन्तकैः ।
सर्वथैव परित्याज्यो भवेत्तद्ध्यानमन्यथा ॥ ३६ ॥
भगवन्तंवासुदेवंविनैकमितरःपुमान् । कोऽपिनास्त्येव यो नारींसमीक्ष्यनविमुह्यति
यत्र स्थित्या मुहुः स्त्रीणां स्यातां शब्दश्रुतीक्षणे ।
त्यागी तत्र वसेन्नैव वसन्धर्मच्युतो भवेत् ॥ ३८ ॥
कामो लोभो रसास्वादः स्नेहो मानस्तथा च रुट् ।
एते त्याज्याः प्रयत्नेन षड् दोषाः संसृतिप्रदाः ॥ ३९ ॥
प्रोक्तेषुधर्मेष्वेतेषुयस्ययस्यच्युतिर्भवेत् । यथाशक्तियथाशास्त्रंकार्यातत्तस्यनिष्कृतिः
इत्थं चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणाञ्च नारद !। धर्माःसंक्षेपतः प्रोक्ता वैष्णवानाञ्चते मया
वर्णीयतिश्च धर्मस्थोब्रह्मलोकमुपैति वै । त्रिलोकंवनस्थश्चगृहस्थःस्वर्गमाप्नुयात्
भक्त्या सहैताञ्छ्रीविष्णोराचरेयुस्तु ये जनाः ।
ते तु सर्वेऽपि देहान्ते विष्णुलोकमवाप्नुयुः ॥ ४३ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयेवैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये वनस्थयतिधर्मनिरूपणं नाम
त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुर्विंशोऽध्यायः

ज्ञानस्वरूपनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

अथज्ञानस्वरूपं तेवच्मिसाङ्ख्येननिश्चितम् । क्षेत्रादिज्ञायतेयेन तज्ज्ञानंहिनिरुच्यते
वासुदेवः परं ब्रह्म बृहत्यक्षरधामनि । आदावेकोऽद्वितीयोऽभून्निर्गुणो दिव्यविग्रहः
सकार्यमूलप्रकृतिः सकलाऽक्षरतेजसि । प्रकाशेऽर्कस्यरात्रीव तिरोभूता तदाऽभवत्
सिसृक्षाऽथाभवत्तस्यब्रह्माण्डानांयदातदा । सकालाविर्बभूवादौ महामायाततोहिसा
तां कालशक्तिमादाय वासुदेवोऽक्षरात्मना । सिसृक्षयैक्षत यदा सा चुक्षोभ तदैवहि
तस्याः प्रधानपुरुषकोट्योजज्ञिरे मुने !। युज्यन्ते स्म प्रधानैस्ते पुरुषाश्चेच्छयाप्रभोः
पुमांसोनिदधुर्गर्भांस्तेषु तेभ्यश्चजज्ञिरे । ब्रह्माण्डानिह्यसङ्ख्यानितत्रैकंतुविविच्यते

आदौ जज्ञे महांस्तस्मात्पुंसो वीर्याद्धिरण्मयात् ।
अहङ्कारस्ततस्तस्माद्गुणाः सत्त्वादयस्त्रयः ॥ ८ ॥

तमसः पञ्च तन्मात्रा महाभूतानि जज्ञिरे । दशेन्द्रियाणि रजसो बुद्ध्यासहमहानसुः

सत्त्वादिन्द्रियदेवाश्च जायन्ते स्म मनस्तथा ।
सामान्यतस्तत्त्वसञ्ज्ञा एते देवाः प्रकीर्त्तिताः ॥ १० ॥

प्रेरिता वासुदेवेन स्वस्वांशैरैश्वरंवपुः । अजीजनन्विराट्सञ्ज्ञं ते चराचरसंश्रयम् ॥
सच वैराजपुरुषःस्वसृष्टास्वप्स्वशेत यत् । तेन नारायणइतिप्रोच्यते निगमादिभिः

तन्नाभिपद्माद् ब्रह्माऽऽसीद्राजसोऽथ हृदम्बुजात् ।
जज्ञे विष्णु सत्त्वगुणो ललाटात्तामसो हरः ॥ १३ ॥

एतेभ्यएवस्थानेभ्यस्तिस्रआसंश्चशक्तयः । तत्रासीत्तामसीदुर्गासावित्रीराजसीतथा

सात्त्विकी श्रीश्चेति सर्वा वस्त्राऽलङ्कारशोभिताः ॥ १४ ॥
ता वैराजाज्ञया त्रींश्च ब्रह्मादीन्प्रतिपेदिरे ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुर्गा रुद्रश्च सावित्री ब्रह्माणं विष्णुमन्तिमा ॥ १५ ॥
चण्डिकाद्याश्च दुर्गाया अंशेनाऽऽसन्सहस्रशः ।
त्रयीमुख्याश्च सावित्र्याः शक्तयोंऽशेन जज्ञिरे ॥
दुस्सहाप्रमुखाश्चासन्नंशेनैव श्रियो मुने !॥ १६ ॥

तत्रादितो यो ब्रह्माऽऽसीद्वैराजनाभिपद्मतः । एकार्णवेतदब्जस्थः सकश्चिदपि नैक्षत
विसर्गबुद्धिमप्राप्तोनात्मानञ्चविवेदसः । कोऽहं कुत इति ध्यायन्नदिद्रक्षत्कजाश्रयम्

नाऽलं प्रविश्याऽधो यातुस्तन्मूलञ्चविचिन्वतः ।
सम्वत्सरशतं यातं तस्य नाऽन्तं तु सोऽलभत् ॥ १६ ॥

ऊर्ध्वं पुनरुपेत्याऽथ श्रान्तश्च निषसाद सः । अदृश्यमूर्तिर्भगवानूचे तपतपेति तम्
तच्छ्रुत्वा तत्प्रवक्तारमदृष्ट्वा च स सर्वतः । गुरूपदिष्टवत्तेपे दिव्यं वर्षसहस्रकम् ॥
पद्मे तपस्यते तस्मै तपः शुद्धात्मने ततः । समाधौ दर्शयामासधामवैकुण्ठमच्युतः
प्राधानिकागुणा यत्र त्रयोपि रजआदयः । न भवन्त्यल्पमपि यत्कालमायाभयंन च
सहोदितार्कायुतवद्भास्वरेतत्र तेजसि । वासुदेवंददर्शाऽसौ रम्यदिव्यासिताकृतिम्
चतुर्भुजं ,गदापद्मशङ्खचक्रधरं विभुम् । पीताम्बरं महारत्नकिरीटादिविभूषणम् ॥

नन्दताक्ष्यादिभिर्जुष्टं पार्षदैश्च चतुर्भुजैः ।
सिद्धिभिश्चाष्टभिः षड्भिर्बद्धाञ्जलिपुटैर्भगैः ॥ २६ ॥

सिंहासने श्रिया साकमुपविष्टं तमीश्वरम् । प्रणम्यप्राञ्जलिस्तथौविरञ्चो हृष्टमानसः
तं प्राह भगवान्ब्रह्मंस्तुष्टोऽहंतपसा तव । वरं वरयमत्तस्त्वंस्वाभीष्टंयत्प्रियोऽसि मे
इत्युक्तस्तेन तं जानंस्तपसि प्रेरकं प्रभुम् । स्वञ्चविश्वसृजं ब्रह्मायथाचेऽभिमतंवरम्
प्रजाविसर्गशक्तिं मे देहि तुभ्यंनमःप्रभो !। तत्रापिचन बद्ध्येयं यथा कुरुतथाकृपाम्
ततस्तं भगवानूचे सेत्स्यते ते मनोरथः । वैराजेन मयात्मैक्यंभावयित्वा समाधिना

प्रजाः सृजाऽथ स्वासाध्ये कार्ये स्मर्योऽहमिष्टदः ॥ ३१ ॥
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे विष्णुर्ब्रह्माप्येकसमाधिना ।
वैराजेनाऽथ लोकान्प्रागलीनासर्वान्स्व ऐक्षत ॥ ३२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विसर्गशक्तिं सम्प्राप्य स सर्गाय मनोदधे । ब्रह्मज्योतिर्मयस्तावदादित्यःप्रादुरास ह
स्थायपित्वाऽण्डमध्ये तं ततः स मनसाऽसृजत् ।
तपोभक्तिविशुद्धेन मुनीनाद्यांश्चतुःसनान् ॥ ३४ ॥
प्रजाः सृजतचेत्यूचेतांस्तदातेतुतद्वचः । न जगृहुर्नैष्ठिकेन्द्रास्तेभ्यश्चुक्रोध विश्वसृट्
क्रुद्धस्य तस्य भालाच्च रुद्र आसीत्तमोमयः ।
मन्युं नियम्य मनसा प्रजेशान्सोऽसृजत्ततः ॥ ३६ ॥
मरीचिमत्रिं पुलहं पुलस्त्यश्च भृगुं क्रतुम् । वसिष्ठं कर्दमश्चैव दक्षमङ्गिरसं तथा ॥
धर्मं ततः सहृदयादधर्मंपृष्टतस्तथा । मनसः काममास्याच्चवाणींक्रोधं भ्रुवोऽसृजत्
शौचं तपो दया सत्यमिति धर्मपदानि च । चतुर्भ्यो वदनेभ्यश्च चत्वारि ससृजेततः
ऋग्वेदं वदनात्पूर्वाद्यजुर्वेदं च दक्षिणात् । ।
ससर्ज पश्चिमात्साम सौम्याच्चाऽथर्वसञ्ज्ञितम् ॥ ४० ॥
इतिहासपुराणानि यज्ञान्विप्रशतं तथा ।
वस्वादित्यमरुद्विश्वान्साध्यांश्च मुखतोऽसृजत् ॥ ४१ ॥
बाहुभ्यः क्षत्रियशतमूरुभ्यां चविशांशतम् । पद्भ्यांशूद्रशतंचैतान्ससर्जसहवृत्तिभिः
ब्रह्मचर्यं च हृदयाद्गार्हस्थ्यं जघनस्थलात् । वनाश्रमंतथोरस्तःसंन्यासंशिरसोऽसृजत्
वक्षःस्थलात्पितृगणानसुराञ्जघनस्थलात् । ससर्ज च गुदान्मृत्युंनिर्ऋतिं निरयांश्चसः
गन्धर्वांश्चारणान्सिद्धान्सर्पान्यक्षांश्च राक्षसान् ।
नगान्मेघान्विद्युतश्च समुद्रान्सरितस्तथा ॥ ४५ ॥
वृक्षान्पशून्पक्षिणश्च सर्वान्स्थावरजङ्गमान् ।
स्वाङ्गेभ्य एव सोस्राक्षीद् ब्रह्मा नारायणात्मकः ॥ ४६ ॥
सृष्टिमेतां विलोक्याऽपि नाऽतिप्रीतो यदा तदा ।
हरिं ध्यात्वा स ससृजे तपोविद्यासमाधिभिः ॥
ऋषीन्स्वायम्भुवादींश्च मनूंश्च मनुजानपि ॥ ४७ ॥
ततः प्रीतः स सर्वेषांनिवासाययथोचितम् । स्वर्लोकंचभुवर्लोकंभूर्लोकंसमकल्पयत्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

येषां तु यादृशं कर्म प्राक्कालीनं हि तान्विधिः ।
संस्थाप्य तादृशे स्थाने वृत्तीस्तेषामकल्पयत ॥ ४९ ॥
देवानाममृतं नृणामृषीणां चान्नमोषधीः । यक्षरक्षोसुरव्याघ्रसर्पादीनां सुरामिषम्
चक्लृपे गोमृगादीनां वृत्तिं स यवसादि च ॥ ५० ॥
स देवानां तु विश्वेषां हव्यं वृत्तिमकल्पयत् । अमूर्तानांचमूर्तानांपितृणाकव्यमेवच
दुर्गोद्भवानां शक्तीनां तदुपासनतत्परैः । दैत्यरक्षःपिशाचाद्यैर्दत्तं मद्यामिषादि च
तथा सावित्र्युद्भवानां शक्तीनां तदुपासकैः ।
दत्तमृष्यादिभिर्यज्ञे मुन्यन्नंचान्नमोषधीः ॥ ५३ ॥
श्रीजातानां च शक्तीनां तदुपास्तिपरायणैः । दत्तं देवासुरनरैः पायसाज्यसितादिच
प्रजापतीनांसपतिस्ततःप्राहाऽखिलाःप्रजाः । इज्यादेवाश्चपितरोहव्यकव्यात्मकैर्मखैः
इष्टाः सम्पूरयिष्यन्तिह्यनेयुष्मन्मनोरथान् । एतान्येनाऽर्चयिष्यन्तितेवैनिरयगामिनः
इत्थं कृता हि मर्यादा तेन नारायणात्मना ।
दैवं पित्र्यमतोनित्यं जनैःकार्यं यथाविधि ॥ ५७ ॥
ततो ब्रह्मा स सर्वेषांधर्मसेत्ववनायच । तत्तज्जातिषुयेमुख्यास्तान्मनूंश्चाप्यतिष्ठिपत्
वासुदेवेच्छयैवेत्थं वैराजाद्ब्रह्मरूपिणः । कल्पेकल्पे भवत्येव सृष्टिर्बहुविधा मुने !॥
प्राक्कल्पे यादृशी सञ्ज्ञा वेदाः शास्त्राणि च क्रियाः ।
कल्पेऽन्ये तादृशाः सर्वे धर्माः स्युश्चाऽधिकारिणः ॥ ६० ॥
विष्णुर्यः कथितः सोऽपि वैराजपुरुषात्मकः ।
पोषयत्यखिलाँल्लोकान्मर्यादाः परिपालयन् ॥ ६१ ॥
मन्वादिभिः पाल्यमानाः सेतवस्त्वसुरैर्यदा ।
कामरूपैर्विभिद्यन्ते वासुदेवस्तदा स्वयम् ॥
ब्रह्मादिभिः प्रार्थ्यमानः प्रादुर्भवति भूतले ॥ ६२ ॥
अवतारा भगवतो भूताभाव्याश्च सन्ति ये ।
कर्त्तुं नशक्यते तेषां सङ्ख्यां सङ्ख्याविशारदैः ॥ ६३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सद्धर्मदेवसाधूनां गुप्त्यै तद्द्रोहिमृत्यवे । श्रेयसेसर्वभूतानामाविर्भावोऽस्तिसत्पतेः
स वासुदेवः प्रकृतौ पुंसि कार्येषु चैतयोः ।
अन्वितश्च पृथक् चाऽऽस्ते सर्वाधीशः स्वधामनि ॥ ६५ ॥
व्याप्य स्वांशैरिमाँल्लोकान्यथाग्निवरुणादयः ।
स्वस्त्यासते स्वस्वलोके तथैव भगवान्मुने !॥ ६६ ॥
सर्गात्प्राक्सच्चिदानन्दः शुद्ध एकश्च निर्गुणः ।
यथाऽऽसीत्ताद्गेवासावन्वितोऽप्यस्ति निर्मलः ॥ ६७ ॥
वायुतेजोजलक्ष्मासु तत्तत्कार्येषु खं यथा । अन्वीयाऽप्यस्तिनिर्लेपंतथा पूर्वंतथैवहि
सर्वोपास्यो नियन्ता च व्यापकश्चैषकीर्तितः । आत्यन्तिकेलयेऽथैषाभवत्येवयथापुरा
वैराजः पुरुषो योऽत्र प्रोक्तोऽसावीश्वराभिधः । ज्ञेयःस्वतन्त्रःसर्वज्ञोवश्यमायश्चनारद
एतस्यैव स्वरूपाणिब्रह्मविष्णुशिवास्त्रयः । रजआदिगुणोपेताःस्वगुणानुगुणक्रियाः
ब्रह्मणो ये समुत्पन्ना देवासुरनरादयः । ते जीवसञ्ज्ञा ह्यल्पज्ञाः परतन्त्रा भवन्ति च
जीवानामीश्वराणां च तनवःक्षेत्रसञ्ज्ञकाः । महदादितत्त्वमय्यःक्षेत्रज्ञाख्यास्तुतद्विदः
क्षेत्राणां च क्षेत्रविदां प्रधानपुरुषस्य च । मायायाः कालशक्तेश्चाऽक्षरस्यचपरात्मनः
पृथक्पृथग्लक्षणैर्यज्ज्ञानं तज्ज्ञानमुच्यते ॥ ७४ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये ज्ञानस्वरूपनिरूपणं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चविंशोऽध्यायः

वैराग्यभक्तिनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

वैराग्यस्याऽथतेवच्मिलक्षणंमुनिसत्तम !। क्षयिष्णुवस्तुष्वरुचिःसर्वथेतितदीरितम्
आरभ्य मायापुरुषात्सर्वा ह्याकृतयस्तु याः । कालशक्त्याभगवतोनाश्यन्तेताश्चतद्वशाः
प्रत्यक्षेणाऽनुमानेनशाब्देनचविवेकिभिः । असत्यताकृतीनांचनिश्चितासत्यतात्मनाम्
नित्येन प्रलयेनैष कालो नैमित्तिकेन च । प्राकृतिकेन रूपेण चरत्यात्यन्तिकेन च ॥
देहिदेहा इमे नित्यं क्षीयन्ते परिणामिनः । क्रमेण दृश्यते यत्र बाल्यतारुण्यवार्द्धकम्
सूक्ष्मत्वान्नेक्ष्यते तत्तु गतिर्दीपार्चिषो यथा । फलवृद्धिर्वाऽनुपदं जायमाना द्रुमेयथा
तस्यांतस्यामवस्थायां दुःखं चमहदीक्ष्यते । जाग्रदादिष्ववस्थासुदुःखंचैवपुनःपुनः

दुःखमाध्यात्मिकं भूरि दृश्यते चाऽऽधिभौतिकम् ।
आधिदैविकमप्यत्र दुःखमेवाऽस्ति देहिनाम् ॥ ८ ॥

हाहा ममार मत्पुत्रो हा पत्नी म्रियते मम । तातं मेऽभक्षयद्व्याघ्रो दष्टा सर्पेणमेवधूः

महासौधोऽग्निना दग्धो हाहा सोपस्करोऽद्य मे ।
स्वकुटुम्बं कथं पोक्ष्ये नाऽवर्षत्पाकशासनः ॥ १० ॥

सस्यैःसमृद्धंमत्क्षेत्रंहाहा दग्धंहिमाग्निना । ह्रियन्तेतस्करैर्गावःसर्वस्वंममलुण्ठितम्

नृपेण दण्डितोऽत्यर्थं शत्रुणा हाऽतिताडितः ।
किं करोमि च कं ब्रूयां माता मे व्यभिचारिणी ॥ १२ ॥
विषं पास्यामि हाहाऽद्य मत्पत्नीं शत्रुराकृषत् ।
हा स्वसा मे हृता म्लेच्छैर्हाहाऽरिः प्राप मर्मभित् ॥ १३ ॥

म्रिये ज्वरातिव्यथया यमदूता इमे हहा । इत्थं रोरूयमाणा हि दृश्यन्ते सर्वतो जनाः
अवस्थानां शरीरस्यजन्ममृत्यू प्रतिक्षणम् । कालेनप्राप्नुवद्भिःस्वंप्रारब्धंदुःखमश्यते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रारब्धान्ते मृत्युदुःखंभवत्यप्रतिमं हि तत् । मृत्वाऽपि चमहद्दुखंप्राप्यतेयमयातना
ततो जरायुजोद्भिज्जस्वेदजाण्डजयोनिषु । भूत्वाभूत्वा यथाकर्मम्रियतेदुःखितैःपुनः

नित्यः प्रलय एवं ते कीर्त्तितः सूक्ष्मया दृशा ।

स ज्ञेयोऽथ मुने! वच्मि लयं नैमित्तिकाभिधम् ॥ १८ ॥

निमित्तीकृत्य रजनीं भवेद्विश्वसृजस्तु यः । नैमित्तिकःसकथितोलयोदैनंदिनश्चसः
चतुर्युगाणां साहस्रं दिनंविश्वसृजो मुने !। निशा चतावतीतस्यतद्द्वयंकल्पउच्यते
एकैकस्मिन्दिने तस्य चतुर्दश चतुर्दश । भवन्ति मनवो ब्रह्मन्धर्मसेत्वभिरक्षकाः ॥
आद्यःस्वायम्भुवस्तत्रमनुःस्वारोचिषस्ततः । उत्तमस्तामसश्चाऽथरैवतश्चाक्षुषस्ततः
श्राद्धदेवश्च सावर्णिभौत्यो रौच्यस्ततः परम् । ब्रह्मसावर्णिनामाच रुद्रसावर्णिरेवच
मेरुसावर्णिसञ्ज्ञोऽथदक्षसावर्णिरन्तिमः । चतुर्दशैते मनवः प्रोक्ता ब्रह्मैकवासरे ॥
एकैकस्य मनोः कालो युगानांचैकसप्ततिः । दिव्यैर्द्वादशसाहस्रैर्युगकालश्चवत्सरैः
चतुर्दशस्यैव मनोरन्तरेऽन्तमुपेयुषि । सायंसन्ध्या विश्वसृजो जायते मुनिसत्तम !
दिनावसाने वैराजः शक्तीराकर्षति स्थितेः । वैराजात्मा तदा रुद्रस्त्रिलोकींहर्तुमीहते
आदौभवत्यनावृष्टिरत्युग्राशतवार्षिकी । तदाऽल्पसारसत्त्वानि क्षीयन्ते सर्वशोभुवि

साम्वर्त्तकस्य चाऽर्कस्य रश्मयोऽत्युल्वणा रसम् ।

आपातालात्पिबन्त्याशु धरण्यां सर्वमेव हि ॥ २९॥

सारसं चैव नादेयं सामुद्रं चाऽम्बु सर्वशः ।

शोषयित्वाऽखिलाँल्लोकान्सोऽर्को नयति सङ्क्षयम् ॥ ३० ॥

ततो भवतिनिःस्नेहा नष्टस्थावरजङ्गमा । कूर्मपृष्ठोपमा भूमिःशुष्कासङ्कुचिताभृशम्
कालाग्निरुद्रः शेषस्य मुखादुत्पद्यते ततः । अधोलोकान्सप्तभूमिभुवःस्वश्चदहत्यसौ
निर्दग्धलोकदशको ज्वालावर्त्तभयङ्करः । उद्भासितमहर्लोकः कालाग्निः परिवर्त्तते ॥
गताधिकारास्त्रिदशाभुवःस्वर्गनिवासिनः । महर्लोकाज्जनंयान्तिवह्निज्वालाभृशार्दिताः
निवृत्तिधर्मा ऋषयः प्राप्ताः सिद्धदशां तु ये । भूतलात्तेपितर्ह्येवऋषिलोकंप्रयान्तिच

उत्तिष्ठन्ति ततो घोरा व्योम्नि साम्वर्त्तका घनाः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महागजकुलप्रख्यास्तडित्वन्तोऽतिनादिनः ॥ ३६ ॥
धूम्रवर्णाःपीतवर्णाःकेचित्कुमुदसन्निभाः । लाक्षारसनिभाःकेचिच्चाषपत्रनिभास्तथा
शमयित्वा महावह्निंशतंवर्षाण्यहर्निशम् । वर्षमाणाःस्थूलधाराःस्तनन्तस्ते घनाघनाः
ब्रह्माण्डस्यान्तरालञ्च पूरयन्ति ध्रुवावधि ॥ ३८ ॥
एकार्णवजले तस्मिन्वैराजपुरुषः स तु । अनिरुद्धात्मकः शेते नागेन्द्रशयने प्रभुः ॥
तदा देवाश्च ऋषयो रजःसत्त्वतमोवशाः । ये ते सह विरिञ्चेनस्वकीयगुणकर्षिताः
प्रविश्य तस्य जठरे शेरते दीर्घनिद्रया ॥ ४० ॥
ये तु ब्रह्मात्मैक्यभावा वशीकृतगुणत्रयाः । निवृत्तेनैव धर्मेण वासुदेवमुपासते ॥ ४१
महरादिषु लोकेषु ते चतुर्षु कृतालयाः । तं वैराजं संस्तुवन्तोनिवसन्तियथासुखम्
नारायणः स भगवान्स्वरूपं परमात्मनः । चिन्तयन्वासुदेवाख्यं शेते वै योगनिद्रया
निशान्ते ब्रह्मणा साकं सर्वे तेतस्य जाठराः । उत्पद्यन्तेयथापूर्वंयथाकर्माधिकारिणः
एवं नैमित्तिको नाम त्रिलोकीक्षयलक्षणः । प्रलयः कथितस्तुभ्यंप्राकृतंकीर्त्तयाम्यथ
य एष कल्पः कथितस्तादृशानांशतत्रयम् । षष्ट्याधिकश्चयःकालोवैधसःसतुवत्सरः
पञ्चाशता तैः परार्द्धा ब्रह्मायुस्तद्द्वयंमतम् । पराख्यकाले सम्पूर्णे महान्भवतिसङ्क्षयः
संहाररुद्ररूपेण संहृत्य स्वं विराड्वपुः । स्वपरं निर्गुणंरूपंवैराजोयातुमिच्छति
तदा भवत्यनावृष्टिः पूर्ववच्छतवार्षिकी ।
साङ्कर्षणश्च कालाग्निर्दहत्यण्डमशेषतः ॥ ४६ ॥
साम्वर्त्तकास्ततो मेघा वर्षन्त्यतिभयानकाः । शतंवर्षाणिधाराभिर्मुसलाकृतिभिर्मुने
महदादेर्विकारस्य विशेषान्तस्य सङ्क्षयः । सर्वस्यापि भवत्येव वासुदेवेच्छयाततः
आपो ग्रसन्ति वै पूर्वं भूमेर्गन्धात्मकं गुणम् ।
आत्तगन्धाततोभूमिः प्रलयत्वाय प्रकल्पते ॥ ५२ ॥
ग्रसतेऽम्बु गुणं तेजो रसंतल्लीयते ततः । रूपं तेजो गुणं वायुर्ग्रसतेलीयतेऽथ तत्
वायोरपि गुणं स्पर्शमाकाशो ग्रसते ततः । प्रशाम्यतितदावायुःखन्तुतिष्ठत्यनावृतम्
भूतादिस्तद्गुणं शब्दंग्रसतेलीयतेचखम् । इन्द्रियाणिविलीयन्तेतेजसाहङ्कृतौततः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अहङ्कारे विलीयन्तेसात्त्विके देवता मनः । यद्यद्यस्मात्समुत्पन्नंतत्तत्तस्मिन्हिलीयते

अहङ्कारो महत्तत्वे त्रिविधोऽपि प्रलीयते ।

तत्प्रधाने च तत्पुंसि स मूलप्रकृतौ ततः ॥ ५७ ॥

एष प्राकृतिको नाम प्रलयः परिगीयते । तिरोभवन्ति जीवेशायत्राऽव्यक्तेहरीच्छया

यदा च मायापुरुषौ कालोऽत्यक्षरतेजसि ।

तदिच्छया तिरोयान्ति स त्वेको वर्तते प्रभुः

तदा स प्रलयो ज्ञेयो नारदात्यन्तिकाभिधः ॥ ५६ ॥

इत्थंप्रभोःकालशत्तयालयैरेतैश्चतुर्विधैः । असद्वद्ध्वाऽखिलंतत्राऽरुचिर्वैराग्यमुच्यते

वासुदेवेतरान्देवान्कालमायावशीकृतान् ।

विदित्वा तेषु च प्रीतिं हित्वा तस्यैव नित्यदा ।

गाढस्नेहेन या सेवा सा भक्तिरिति गीयते ॥ ६१ ॥

श्रवणं कीर्तनं तस्यस्मृतिश्चरणसेवनम् । पूजाप्रणामोदास्यञ्च सख्यंचात्मनिवेदनम्

इत्येतैर्नवभिर्भावैर्यः सेवेत तमादरात् ।

अनन्यया धिषणया स हि भक्त इतीर्यते ॥ ६३ ॥

त्रिभिः स्वधर्मप्रमुखैर्युक्ताभक्तिरियंमुने !। धर्म एकान्तिकइति प्रोक्तोभागवतश्चसः

साक्षाद्भगवतः सङ्गात्तद्भक्तानाञ्च वेद्रृशाम् ।

धर्मो ह्येकान्तिकः पुम्भिः प्राप्यते नाऽन्यथा क्वचित् ॥ ६५ ॥

नैतादृशं परं किञ्चित्साधनंहिमुमुक्षताम् । निःश्रेयसकरं पुंसां सर्वाभद्रविनाशनम्

एकान्तधर्मसिद्ध्यर्थंक्रियायोगपरोभवेत् । पुमान्स्याद्येननैष्कर्म्यंकर्मणांमुनिसत्तम!

एतन्मया वेदपुराणगुह्यं तत्त्वं परं प्रोक्तमघौघनाशम् ।

एकाग्रया शुद्धधियावधार्यं सच्छ्रद्धया चेतसि ते महर्षे ! ॥ ६८ ॥

न वासुदेवात्परमस्ति पावनं न वासुदेवात्परमस्ति मङ्गलम् ।

न वासुदेवात्परमस्ति दैवतं न वासुदेवात्परमस्ति वाञ्छितम् ॥ ६६ ॥

यन्नामधेयं सकृदप्यबुद्ध्या देहावसानेऽपि गृणाति योऽत्र ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स पुष्कसोऽप्याशु भवप्रवाहाद्विमुच्यते तं भज वासुदेवम् ॥ ७० ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायांद्वितीयेवैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये वैराग्यभक्तिनिरूपणं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

षड्विंशोऽध्यायः

क्रियायोगाधिकारादिवर्णनम्

स्कन्द उवाच

एकान्तधर्मविवृतिं श्रुत्वा भगवतोदिताम् । प्रहृष्टमानसो भूयस्तं पप्रच्छ स नारदः ॥

नारद उवाच

धर्म एकान्तिकः स्वामिंस्त्वया सम्यगुदीरितः ।

तमाश्रुत्य महान्हर्षो जातोऽस्ति मम मानसे ॥ २ ॥

सिद्धयेतस्यभवताक्रियायोगोयउच्यते । तमहंबोद्धुमिच्छामि भगवंस्तवसम्मतम्

श्रीनारायण उवाच

पूजाविधिः क्रियायोगोवासुदेवस्यकीर्त्यते । स तु वेदेषुतन्त्रेषुवहुधैवास्तिवर्णितः

भक्तानां रुचिवैचित्र्यात्तथा वहुविधत्वतः ।

वासुदेवस्य मूर्त्तीनां वहुधा सोऽस्ति विस्तृतः ॥ ५ ॥

साकल्येनोच्यमानस्य पारो नाऽऽयाति तस्य वै ।

अतः सङ्क्षेपतस्तुभ्यं वच्मि भक्तिविवर्द्धनम् ॥ ६ ॥

प्राप्तायेवैष्णवींदीक्षांवर्णाश्चत्वारआश्रमाः । चातुर्वर्ण्यस्त्रियश्चैतेप्रोक्ताअत्राधिकारिणः

वेदतन्त्रपुराणोक्तैर्मन्त्रैर्मूलेन च द्विजाः । पूजेयुर्दीक्षितायोषाः सच्छूद्रा मूलमन्त्रतः

मूलमन्त्रस्तु विज्ञेयः श्रीकृष्णस्य षडक्षरः ॥ ८ ॥

स्वस्वधर्मं पालयद्भिः सवरैतैर्यथाविधि । पूजनीयोवासुदेवोभक्त्यानिष्कपटान्तरैः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आदौ तु वैष्णवीं दीक्षां गृह्णीयात्सद्गुरोः पुमान् ।
सदैकान्तिकधर्मस्थाद् ब्रह्मज्ञातेर्दयानिधेः ॥ १० ॥
सम्पन्नोज्ञानभक्तिभ्यांस्वधर्मरहितस्तु यः । सगुरुर्नैवकर्त्तव्यःस्त्रीहृतात्माचकर्हिचित्
प्राप्ता स्त्रैणाद् गुरोर्दीक्षा ज्ञानं भक्तिश्च कर्हिचित् ।
फलेन्नैव यथाऽपत्यं युवतिः षण्ढसङ्गिनी ॥ १२ ॥
प्राप्याऽतः सद्गुरोर्दीक्षां तुलसीमालिकां गले ।
ललाटादौ चोद्ध्र्वपुण्ड्रं गोपीचन्दनतो धरेत् ॥ १३ ॥
विष्णुपूजारुचिर्भक्तो गुरोरेवागमोदितम् । पूजाविधिं सुविज्ञाय ततः पूजनमारभेत्
रात्र्यन्तयामउत्थायभक्तोब्राह्मेक्षणेऽथवा । मुहूर्त्तार्द्धं हृदि ध्यायेत्केशवंक्लेशनाशनम्
कीर्त्तयित्वाऽभिधानस्य तदीयानाञ्च नाडिकाम् ।
ततः शौचविधिं कृत्वा दन्तधावनमाचरेत् ॥ १६ ॥
अङ्गशुद्धिस्नानमादौ कृत्वा स्नायात्समन्त्रकम् ।
गृहीत्वाशुचिमृत्स्नादीन्कुर्यात्स्नानाङ्गतर्पणम् ॥ १७ ॥
परिधायांऽशुकेधौतेउपविश्यासनेशुचौ । कृत्वोद्ध्र्वपुण्ड्रंकुर्वीतसन्ध्यांहोमंजपादिच
वस्त्रचन्दनपुष्पादीनुपहारांस्ततोऽखिलान् । आहरेन्मांसमदिराद्यशुचिस्पर्शवर्जितान्
देवेभ्यो वा पितृभ्यश्चाऽप्यन्येभ्यो न निवेदितान् ।
अनाघ्रातांश्च मनुजैः केशकीटादिवर्जितान् ॥ २० ॥
संस्थाप्यतान्दक्षपार्श्वे पूजोपकरणानिच । उद्धृत्य दीपमाज्येनकुर्यात्तैलेन वा ततः
कौशेवौर्णे च वस्त्रादौ विकाष्ठे शुद्ध आसने । उपाविशेद्वासुदेवप्रतिमासन्निधौ ततः
शैली धातुमयी दार्वी लेख्या मणिमयी च वा ।
प्रतिमा स्यात्सिता रक्ता पीता कृष्णाऽथ वा मुने !॥ २३ ॥
कृष्णस्य सा तु कर्तव्या द्विभुजावाचतुर्भुजा । मुरलीं धारयेत्तत्र द्विभुजायाःकरद्वये
अथवा दक्षहस्तेऽस्याश्चक्रं शङ्खं तथेतरे । पद्मं वा धारयेद्दक्षे पाणावभयमुत्तरे ॥२५
द्वितीयायास्तु हस्तेषु दक्षिणाधः करक्रमात् । गदाब्जदरचक्राणिधारयेन्मुनिसत्तम॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्विविधाया अपि हरेर्मूर्तेर्वामेश्रियं न्यसेत् । मुरलीधरवामे तु राधांरासेश्वरींन्यसेत्
अप्येषा द्विविधा मूर्त्तिरखण्डा शुभलक्षणा । सर्वावयवसम्पन्ना भवेदर्च्चकसिद्धिदा
लक्ष्मीस्तु द्विभुजाकार्यावासुदेवस्यसन्निधौ । दधतीपङ्कजंहस्ते वस्त्रालङ्कारशोभना

लक्ष्मीवद्राधिकाऽपि स्याद् द्विभुजा चारुहासिनी ।
पङ्कजं पुष्पमालां वा दधती पाणिपङ्कजे ॥ ३० ॥

अचलाचचलाचेति द्विविधाप्रतिमाहरेः । तत्राऽऽद्यायां न कर्तव्यमावाहनविसर्जनम्
तदङ्गदेवतानाञ्चकार्यंनावाहनाद्यपि । नच दिङ्नियमोऽर्चायांतस्याः स्थेयंतु सम्मुखे
शालग्रामेऽप्येवमेव कार्यं नावाहनादि च । अन्यत्र चलमूर्त्तौ तु कर्तव्यं तत्तदर्चकैः ॥
तत्रापि दार्व्यां लेख्यायांजलस्पर्शोऽनुलेपनम् । नैव कार्यम्पूजकेनकर्तव्यंपरिमार्जनम्
उदङ्मुखःप्राङ्मुखोवाचलायांसम्मुखोऽथवा । यथाशक्तियथालब्धैरुपहारैर्यजेद्धरिम्

श्रद्धानिश्छद्मभक्तिभ्यामर्पितेनाऽम्बुनाऽपि सः ।
प्रीतस्तुष्यति विश्वात्मा किमुताऽखिलपूजया ॥ ३६ ॥

पुंसा श्रद्धादिहीनेन रत्नहेमाद्यलङ्क्रियाः । चतुर्विधं चाप्यन्नाद्यं दत्तं गृह्णातिनोमुदा

तस्माद्भक्तिमता कार्यं पुंसा स्वश्रेयसे भुवे ।
श्रीकृष्णस्यार्च्चनं नित्यं सर्वाभीष्टाशुदायिनः ॥ ३८ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये क्रियायोगाधिकारादिनिरूपणं नाम
षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तविंशोऽध्यायः

क्रियायोगे पूजामण्डलरचनाविधिनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

खननोक्षणलेपाद्यैः शोधिते धरणीतले। चतुष्पादं न्यसेत्पीठं नानारङ्गसुशोभिते ॥
अर्चकः प्राङ्मुखःपीठपादान्कोणेषुकारयेत्। चतुर्षु तेषुधर्मादीन्स्थापयेत्सिंहरूपिणः
अग्नौ धर्मं न्यसेच्छ्वेतं ज्ञानंशोणञ्च नैर्ऋते। वायौ तु पीतंवैराग्यंश्याममैश्वर्यमैशके

मनोधीचित्ताहङ्कारान्क्रमात्पूर्वादिदिक्ष्वथ।
विन्यसेत्पीठगात्रेषु हरिद्रक्तसितासितान् ॥ ४ ॥

स्थाप्यारक्तसितश्यामारजःसत्त्वतमोगुणाः। पीठस्यपट्टिकायांतुत्रयोपिमुनिसत्तम!
अन्तःकरणरूपेषु गात्रेष्वथ चतुर्ष्वपि। विमलाद्या न्यसेच्छक्तीर्द्वेद्वे एकैकगात्रके ॥

विमलोत्कर्षिणीति द्वे गौराङ्ग्यौ पूर्वतो न्यसेत्।
वादयन्त्यौ शुभां वीणां हरिद्वस्त्रे स्वलङ्कृते ॥ ७ ॥

ज्ञानाक्रिये न्यसेद्याम्ये पीतवस्त्रेऽरुणद्युती। एका तालं वादयन्ती मृदङ्गमपरा तथा

योगाप्रह्व्यौ न्यसेत्पश्चाच्छ्यामे अरुणवाससौ।
सहैव मुरलीं चोभे वादयन्त्यौ पृथक्पृथक् ॥ ६ ॥
सत्येशाने हेमवर्णे उत्तरस्यां ततो न्यसेत्।
श्यामांशुके वादयन्त्यावुभे ते परिवादिनीम् ॥ १० ॥
अनुग्रहाख्या पट्टिकायां स्थाप्यैका च कृताञ्जलिः।
सर्वा एतास्तु कर्तव्या द्विभुजाः सुविभूषणाः ॥ ११ ॥

पीठोपरि सितद्वीपं कुर्वीतश्वेतवाससा। तन्मध्येऽष्टदलंपद्मंकुर्वीतोज्ज्वलकर्णिकम्
द्वादशांशं परित्यज्य पद्मक्षेत्रस्य बाह्यतः। वृत्तैस्त्रिभिस्तस्यमध्यं विभजेत्समभागतः
तत्राऽऽद्यंकर्णिकास्थानंकेसराणांतुमध्यमम्। पत्राणांतुतृतीयंस्याद्दलाग्राणितुबाह्यतः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परितस्तस्य च पुरं चतुर्द्वारं प्रकल्पयेत् । रङ्गद्रव्यैर्बहुविधैर्हरिद्राकुङ्कुमादिभिः ॥
कुर्वीत तण्डुलैर्वापि तत्र पद्मादि शोभनम् । पद्मस्यकर्णिकांमध्येहेमवर्णांसुशोभयेत्
शोणवर्णानि पत्राणिपरितस्तस्यचार्चकः । कुर्यादष्टाप्यप्यष्टदिक्षुस्वर्णवर्णानिवामुने
पूर्वं तु गोपुरं शोणंश्यामंकुर्याच्चदक्षिणम् । पीतवर्णंपश्चिमञ्चस्फटिकाभंतथोत्तरम्
अन्तराले च पुष्पाणि चित्राणि पुरपद्मयोः ।
कृत्वा मध्येऽथ श्रीकृष्णं तद्वामे राधिकां न्यसेत् ॥ १६ ॥
राधाकृष्णस्यास्य ततःपृष्ठेसङ्कर्षणं न्यसेत् । चतुर्बाहुं धृतच्छत्रंगौराङ्गंनीलवाससम्
दक्षे न्यसेद्भगवतः प्रद्युम्नं पीतवाससम् । चतुर्भुजंघनश्यामं धृत्वाचामरमास्थितम्
वामेऽनिरुद्धं च हरेर्न्यसेदरुणवाससम् । इन्द्रनीलमणिश्यामं संस्थितं धृतचामरम् ॥
त्रयोऽप्येते तु कर्तव्या नानालङ्कारशोभिताः । अनर्घ्यरत्नमुकुटास्तारुण्येनमनोहराः
ततोऽवतारांस्तु हरेः केसरेष्वष्टसुक्रमात् । एकैकस्मिन्न्यसेद्द्वौद्वावष्टस्वेवंहिषोडश
स्थापयेद्वामनं बुद्धं पूर्वस्मिन्केसरेऽग्रतः । घनश्यामावुभौह्येतौ करुणौ ब्रह्मचारिणौ
सितांशुकौ करे दक्षे बिभ्रतौ फुल्लपङ्कजम् । अभयं वामहस्तेचशान्तौयज्ञोपवीतिनौ
कल्किनं पर्शुरामं च वह्निकोणेऽथ विन्यसेत् ।
खड्गपाणिस्तत्र कल्की पर्शुपाणिस्तथाऽपरः ॥ २७ ॥
उभौ गौरौचताम्राक्षौजटिलौसितवाससौ । यज्ञोपवीतिनौकार्यौत्यक्तक्रोधमहारयौ
हयग्रीववराहौ च स्थापयेद्याम्यकेसरे । हयग्रीवो हयास्यः स्यान्नराङ्गश्चचतुर्भुजः ॥
शङ्खादिभृत्स्वर्णवर्णोधृतदिव्यसिताम्बरः । वराहस्तुवराहास्यो नराङ्गःस्याच्चतुर्भुजः
शङ्खचक्रगदाब्जानि दधत्पीताम्बरं तथा । मधुपिङ्गलवर्णश्च कर्त्तव्योद्विभुजोऽथ वा
मत्स्यकूर्म्मौ नैरृते च स्थापयेत्केसरे ततः । कटेरधस्तादाकारावदूर्ध्वंतौतुनराकृती
वामे शङ्खं गदां दक्षे पाणौच दधतावुभौ । श्यामसुन्दरदेहौ च कर्त्तव्यौधृतभूषणौ
धन्वन्तरिंनृसिंहञ्चपश्चिमेकेसरेन्यसेत् । धन्वन्तरिः शुक्लवासोगौराङ्गोऽमृतकुम्भधृत्
सिंहवक्त्रोनृसिंहस्तु नृदेहःकेसरान्वितः । नीलोत्पलाभोद्विभुजोगदाचक्रधरो भवेत्
वायौ न्यसेदुभौ हंसदत्तात्रेयौ जटाधरौ । योगिवेषौसितौदण्डकमण्डलुकरौतथा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तरे केसरे व्यासं न्यसेद्गणपतिंततः। तत्रव्यासोविशालाक्षःकृष्णवर्णःसिताम्बरः
द्विभुजो धृतवेदश्च सुपिशङ्गजटाधरः। सितयज्ञोपवीतश्च कर्त्तव्यः सपवित्रकः॥
गजास्य एकदन्तश्चरक्तो गणपतिर्भवेत्। रक्ताम्बरधरश्चैव नागयज्ञोपवीतवान् ॥३६॥
तुन्दिलश्च चतुर्बाहुः पाशाङ्कुशवरान्दधत्। करेणैकेन चदधद्रम्यांपुस्तकलेखिनीम्

न्यसेत्केसर ईशाने कपिलं पूजकस्ततः।
सनत्कुमारं च मुनिं नैष्ठिकब्रह्मचारिणम् ॥ ४१ ॥

शुक्लाङ्गः कपिलःकार्यो धृतचारुसिताम्बरः। दधत्कराभ्यामम्भोजमभयंशान्तविग्रहम्
पञ्चवार्षिकबालाभो दिग्वस्त्रोऽल्पजटाधरः। सनत्कुमारश्च मुनिः कर्त्तव्यः पूजकेन तु
संस्थाप्य केसरेष्वित्थं देवताः पङ्कजस्य तु। न्यसेच्च दलमध्येषुपार्षदानर्च्चकोऽष्टसु
विष्वक्सेनश्च गरुडं तत्रादौ पूर्वतो न्यसेत्। ततो दक्षक्रमेणैव प्रबलञ्च बलं न्यसेत्
कुमुदं कुमुदाक्षश्च सुनन्दं नन्दमेव च। श्रुतदेवं जयन्तश्च विन्यसेद्विजयं जयम् ॥४६
ततः प्रचण्डं चण्डञ्चपुष्पदन्तश्चसात्वतम्। द्वौद्वावेवंक्रमेणैवस्थानेष्वष्टसुविन्यसेत्

चतुर्भुजाः सर्व एते शङ्खार्यब्जगदाधराः।
कार्याः किरीटिनः श्यामाः पीतवस्त्राः सुभूषणाः ॥ ४८ ॥

दलमध्यान्तरालेषु सिद्धीरष्टसुविन्यसेत्। नानामङ्गलवाद्यानांवादनेनिपुणाःक्रमात्

अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा।
ईशिता वशिता चैवाऽष्टमी कामावसायिता ॥ ५० ॥

एताः सुवर्णवर्णाभाः सर्वाभरणभूषिताः। वेणुवीणादिहस्ताश्चकर्त्तव्याश्चित्रवाससः

दलाग्रेष्वष्टसु ततो वेदाञ्छास्त्राणि च न्यसेत्।
तत्र वेदान्न्यसेद् दिक्षु शास्त्राणि तु विदिक्षु सः ॥ ५२ ॥

पूर्वे न्यसेत्तु ऋग्वेदमक्षमालाधरं सितम्। खर्वं लम्बोदरं सौम्यं पद्मनेत्रंसिताम्बरम्
याम्ये न्यसेद्यजुर्वेदंमध्यमाङ्गं कृशोदरम्। पिङ्गाक्षं स्थूलकण्ठञ्चपीतंचारुणवाससम्
अक्षस्रजं करे वामे दक्षे वज्रञ्च बिभ्रतम्। पश्चिमे सामवेदञ्च प्रांशुमादित्यवर्चसम्
दक्षेऽक्षमालां वामे च धृतवन्तं करेदरम्। स्वर्णवस्त्रंविशालाक्षंविन्यसेद्गायनोद्यतम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अथर्वाणं न्यसेत्सौम्ये सिताङ्गं नीलवाससम् ।
वामेऽक्षसूत्रं दक्षे च खट्वाङ्गं बिभ्रतं करे
वह्न्योजसश्च ताम्राक्षं वयसा स्थविरं तथा ॥ ५७ ॥

अग्निकोणे धर्मशास्त्रंन्यसेच्चकमलासनम् । श्वेतंचबिभ्रतंदोर्भ्यांमुक्तामालांतथातुलाम् दीर्घकेशनखंसाङ्ख्यंनैर्ऋतेतुन्दिलंन्यसेत् । जपमालाञ्चदण्डञ्चकाराभ्यांबिभ्रतंसितम् न्यसेद्वायौ ततो योगं स्वर्णवर्णंकृशोदरम् । ऊरुन्यस्तकरद्वन्द्वंस्वनासाग्रकृतेक्षणम् पञ्चरात्रं तथेशाने धवलं वनमालिनम् । न्यसेत्कराभ्यां दधतमक्षमालाञ्च लाङ्गलम्

एषां चतुर्णां वासांसि श्वेतसूक्ष्मघनानि च ।
कर्त्तव्यानि तथाक्षीणि पद्मपत्रायतानि च ॥ ६२ ॥

अग्राणामन्तरालेषुमहर्षींश्च सयोषितः । विन्यसेत्पठतो वेदान्पूर्वाग्नेयाद्यनुक्रमात् मरीचिं कलयायुक्तमत्रिं चाऽप्यनसूयया । श्रद्धयाऽङ्गिरसं साकंपुलस्त्यञ्च हविर्भुवा गत्यायुक्तञ्च पुलहंक्रियायावसहक्रतुम् । ख्यात्या भृगुमरुन्धत्यावशिष्ठंसहविन्यसेत् द्विभुजाःसर्वएवैतेजटाश्मश्रुधराःकृशाः । कार्यास्तपस्विनोदण्डान्दधतश्च कमण्डलून्

पद्माद्बहिर्न्यसेच्चाऽष्टौ दिशासु विदिशासु च ।
दिक्पालानिन्द्रप्रमुखान्सह यानान्यथादिशम् ॥ ६७ ॥

प्राच्यामैरावतारूढं न्यसेदिन्द्रं चतुर्भुजम् । वज्राङ्कुशाम्बुजवरान्दधतंस्वर्णसन्निभम् कौसुम्भरम्यवसनं नानालङ्कारशोभितम् । शोणापाङ्गंविशालाक्षंसर्वलक्षणलक्षितम् अग्निकोणे न्यसेदग्निं ताम्रवर्णंचतुर्भुजम् । दधानं पाणिभिश्चैव शूलंशक्तिस्रुचंस्रुवम् चतुः शुके हैमरथे निवण्णं वायुसारथिम् । त्रिनेत्रं धूम्रवसनं पिङ्गश्मश्रुजटेक्षणम् ॥ यमं न्यसेद्दक्षिणतः श्यामं चामीकराम्बरम् । चतुर्भुजं दण्डखड्गपरशुपाशधारिणम्

उन्मत्तमहिषारूढं नानाभूषणभूषितम् ॥ ७२ ॥

ऊर्द्ध्वकेशं विरूपाक्षं नैर्ऋतं नैर्ऋते न्यसेत् । खड्गं पाशञ्च दधतंद्विभुजं नरवाहनम् हरिश्मश्रुं धूम्रवर्णं परिवीतासिताम्बरम् । हाटकानेकभूषाढ्यमवैष्णवभयङ्करम् ॥ ततः प्रतीच्यां वरुणमिन्द्रनीलमणिप्रभम् । श्वेताम्बरं चतुर्बाहुंमुक्ताहारविभूषितम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तहंसरथारूढं दोर्भ्यां पाशञ्चबिभ्रतम् । अन्याभ्यांरत्नपात्रञ्चशङ्खञ्चदधन्तंन्यसेत्
वायौ वायुं हरिद्वर्णं द्विभुजं कृष्णवाससम् ।
पृषत्स्थं मुक्तकेशञ्च व्यात्तास्यं ध्वजिनं न्यसेत् ॥ ७७ ॥
सौम्ये न्यसेत्कुबेरञ्चस्वर्णवर्णञ्चतुर्भुजम् । गदाशक्तित्रिशूलानिरत्नपात्रञ्चविभ्रतम्
नीलाम्बरं श्मश्रुलंचशिविकायांसमास्थितम् । पिशङ्गवामनयनं नैकभूषञ्च वर्मिणम्
ईशानेऽथ महारुद्रमर्द्धनारीश्वरं न्यसेत् । वामार्द्धे पार्वती कार्या दक्षार्द्धे तत्र शङ्करः ॥
ईश्वरार्द्धेजटाजूटं कर्तव्यं चन्द्रभूषितम् । उमार्द्धे तिलकं कार्यं सीमन्तमलिके तथा
भस्मनोद्धूलितं चार्द्धमर्द्धं कुङ्कुमभूषितम् । नागोपवीतं चाऽप्यर्द्धमर्द्धंहारविभूषितम्
वामार्द्धेच स्तनः पीनः कर्त्तव्यः कञ्चुकीवृतः । कट्यांञ्चरशनाहैमीपादेकाञ्चननूपुरम्
कौसुम्भं वसनञ्चैव करौ कङ्कणभूषितौ । त्रिशूलमक्षसूत्रञ्च दधतौ रत्नमुद्रिकौ ॥
दक्षार्द्धे रशना सार्पी कार्या वस्त्रं गजाजिनम् ।
करौ च नागवलयौ दर्पणोत्पलधारिणौ ॥ ८५ ॥
एवंविधं महादेवं न्यसेद्वृषभवाहनम् । इत्थमष्टदिगीशानां कुर्यात्स्थापनमर्चकः ॥
पुराद्बहिस्ततश्चाऽष्टौ स्थापयेदर्चको ग्रहान् ।
स्वस्वदिक्षु स्थितान्स्वस्वान्यारूढान्स्यन्दनानि च ॥ ८७ ॥
प्राच्यां दिशि न्यसेत्तत्र भास्करं पीतवाससम् ।
सिन्दूरवर्णं द्विभुजं पद्महस्तं रथे स्थितम ॥ ८८ ॥
एकं चक्रं द्वादशारंरथस्यास्यातितेजसः । सप्ताश्वाश्चहरिद्वर्णावामेसन्तिनियोजिताः
अग्निकोणे ततःस्थाप्यो भृगुः श्वेतः सिताम्बरः ।
दण्डं कमण्डलुं बिभ्रद्द्विबाहुः सौम्यदर्शनः ॥ ९० ॥
चित्रवर्णाश्वदशके स्थितो हेममये रथे । दक्षिणे च न्यसेद्भौमं रक्तं रक्ताम्बरं तथा ॥
चतुर्भुजं गदाशक्तित्रिशूलवरधारिणम् । तस्य हैमं रथं कुर्यादरुणाष्टहयान्वितम्
राहुश्च नैरृते कोणे नीलवासाश्चतुर्भुजः ।
करालास्यस्तमोरूपश्चर्मासिशक्तिशूलधृत् ॥ ९३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भृङ्गवर्णाष्टतुरगे स्थितःकार्यस्त्वयोरथे । सौरिश्चपश्चिमेस्थाप्यइन्द्रनीलसमद्युतिः

धन्वी त्रिशूली द्विभुजो मन्दाक्षश्चाऽसिताम्बरः ।

शवलाष्टाश्वसंयुक्ते स्थितः कार्ष्णायसे रथे ॥ ९५ ॥

वायुकोणेततश्चन्द्रं स्थापयेच्च सिताम्बरम् । श्वेतवर्णंगदाहस्तंद्विभुजश्चरथेस्थितम्

शतारचक्रत्रितयेस्नन्दनेतस्यचाम्मये । कुन्दाभाः सन्त्युभयतोयोजितास्तुरगादश

उत्तरे द्विभुजःसौम्यो वराभयकरोऽरुणः । हरिद्रासाष्टपिङ्गाश्वेकार्योहैमरथेस्थितः

ईशाने च गुरुः स्थाप्योहेमवर्णः सिताम्बरः । द्विभुजः पद्मनयनोधृतदण्डकमण्डलुः

पाण्डुराष्टहये हैमे निषण्णः स्यनन्दनोत्तमे ॥ ९९ ॥

अङ्गदेवान्भगवतः स्थापयेदित्थमर्चकः ।

कर्णिकाद्रिपुरान्तान्तस्थानेषु क्रमशोऽखिलान् ॥ १०० ॥

वासुदेवाङ्गदेवानां न्यसेन्मूर्त्तीस्तु वैभवी । पूगफलानीतरस्तु न्यसेत्पुष्पाक्षतादि वा

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये क्रियायोगे पूजामण्डलरचनाविधिनिरूपणं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अष्टाविंशोऽध्यायः

श्रीराधाकृष्णस्वरूपध्याननिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

आचम्यप्राणानायम्यततोसौस्वस्थमानसः । नमस्कृत्येष्टदेवादीन्देशकालौचकीर्त्तयेत्

एकान्तधर्मसिद्ध्यर्थं वासुदेवस्य पूजनम् ।

करिष्य इति सङ्कल्प्य कुर्यान्न्यासविधिं ततः ॥ २ ॥

न्यासे मन्त्रा द्वादशार्णो गायत्री वैष्णवीतथा । नारायणाष्टाक्षरश्चज्ञेयाविष्णुषडक्षरः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एते द्विजानां विहितास्तदन्येषां त्विह त्रयः। वासुदेवाष्टाक्षरश्च हरिपञ्चाक्षरस्तथा

षडर्णः केशवस्येति न्यासे होमे च सम्मताः ॥ ४ ॥

श्रीविष्णुप्रतिमाङ्गेषु स्वाङ्गेष्विव ततोऽखिलान्।

कुर्यान्न्यासांश्च तैर्मन्त्रैस्ततोऽर्चां वाससाऽऽमृजेत् ॥ ५ ॥

कलशं वामभागे स्वे संस्थाप्यावाह्य तत्रच। तीर्थानिगन्धपुष्पाद्यैरुपचारैस्तमर्चयेत्

पूजाद्रव्याणि चाऽऽत्मानं प्रोक्षयित्वा तदम्वुना।

शङ्खं घण्टाञ्च सम्पूज्य भूतशुद्धिं समाचरेत् ॥ ७ ॥

आभ्यन्तराग्निवायुभ्यां दग्ध्वा पापात्मकं वपुः।

शुद्धस्य स्वात्मनस्त्वैक्यं भावयेद्ब्रह्मणा स्थिरः ॥ ८ ॥

ततोऽक्षरब्रह्मरूपो राधाकृष्णं हृदि प्रभुम्। ध्यायेदव्यग्रमनसा प्राणायामं समाचरन्

अधोमुखं नाभिपद्मं कदलीपुष्पवत्स्थितम्। विभाव्यापानपवनं प्राणेनैक्यमुपानयेत्

पद्मनाले तमानीय सह तेन तदम्वुजम्। आकर्षेदूर्ध्वमथ तन्नद्ब्तीव्रमुपैति हृत् ॥

प्रफुल्लति च तत्रैतद्धृदयाकाश उल्लसत् ॥ ११ ॥

तेजोराशिमये तत्रततोऽप्यधिकतेजसा। दर्शनीयतमं शान्तं ध्यायेच्छ्रीराधिकापतिम्

उपविष्टं स्थितंवा तंदिव्यचिन्मयविग्रहम्। ध्यायेत्किशोरवयसंकोटिकन्दर्पसुन्दरम्

रूपानुरूपसम्पूर्णदिव्यावयवलक्षितम्। शरच्चन्द्रावदाताङ्गं दीर्घचारुभुजद्वयम् ॥१४

आरक्तकोमलतलरम्याङ्गुलिपदाम्बुजम्। तुङ्गारुणस्निग्धनखद्युतिलज्जायितोडुपम् ॥

शिञ्जत्किङ्किणिमञ्जीरहंसकाङ्घ्रियुगश्रियम्। सुवृत्तजङ्घायुगलं समजानूरुशोभनम्

सद्रत्नरशनाबद्धपीताम्बरकटिश्रियम्। उत्तुङ्गकुक्षिनाभ्यन्तर्निम्ननाभिवलित्रयम् ॥१७

विततोत्तुङ्गहृदयं श्रीवत्सावर्त्तशोभितम्।

ललन्तीगुच्छगुच्छार्द्धदेवच्छान्दादिभूषितम् ॥ १८ ॥

नानासुगन्धिपुष्पस्रक्स्वर्णयज्ञोपवीतिनम्। उन्निद्रशोणपद्माभकरकङ्कणभूषणम् ॥

सूक्ष्मपर्वाङ्गुलिद्योतन्नैकसद्रत्नमुद्रिकम्। निनादयन्तं मधुरं वेणुं सर्वमनोहरम् ॥ २०

विपुलांसं गूढजत्रुं महावाह्वङ्गदद्युतिम्। भ्रमत्सुगन्धलुब्धालिझङ्कारितवनस्रजम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कम्बूपमगलभ्राजत्सद्ग्रैवेयककौस्तुभम् । शोभमानहनुं बिम्बीफलशोणाधरद्युतिम्
सितस्मितकलाराजत्पूर्णचन्द्रनिभाननम् । तिलपुष्पसमाकारदर्शनीयसुनासिकम् ॥
समानकर्णविभ्राजन्मकराकृतिकुण्डलम् । कर्णोपरिलसच्चित्रपुष्पगुच्छावतंसकम् ॥
समसूक्ष्मरदज्योत्स्नोल्लसद्गण्डस्थलश्रियम् । पद्मपत्रायतारक्तप्रान्तरम्यविलोचनम्
पृथुतुङ्गललाटं च कामचापायितभ्रुवम् । वक्रसूक्ष्मासितस्निग्धमनोहरशिरोरुहम् ॥
नानासद्रत्नखचितकिरीटधृतशेखरम् । प्रेम्णा निजं वीक्षमाणं प्रसन्नं स्निग्धया दृशा

ध्यात्वेत्थं कृष्णमथ तद्वामे राधां विचिन्तयेत् ।
द्विभुजां स्वर्णगौराङ्गीं कौसुम्भामलवाससम् ॥ २८ ॥

समकर्णोल्लसद्रत्नभूषणांशुकनासिकाम् । किशोरीं मृगशावाक्षींपीतोन्नतघनस्तनीम्

कृशमध्यां पृथुश्रोणिं रत्नकाञ्चीविभूषिताम् ।
अनेकदिव्याभरणां विकचाब्जाननस्मिताम् ॥ ३० ॥

रत्नाङ्गुलीयकेयूरकङ्कणादिलसत्कराम् । शिञ्जद्धंसकमञ्जीरशोभमानाङ्घ्रिपङ्कजाम् ॥

विशालभालविलसत्सत्काश्मीरललाटिकाम् ।
बिम्बोष्ठीं सुकपोलां च वेणीग्रथितमालतीम् ॥ ३२ ॥

प्रेक्षमाणां प्रभुं प्रेम्णा दधानामम्बुजं करे । ध्यात्वैवं राधिकां तत्र प्रभुमर्चेत्तया सह

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे
श्रीवासुदेवमाहात्म्ये क्रियायोगे श्रीराधाकृष्णस्वरूपध्याननिरूपणं
नामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऊनत्रिंशोऽध्यायः

श्रीवासुदेवपूजाविधिनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

उपचारैर्बहुविधैर्मानसैस्तं प्रपूज्य सः । आवाह्य स्थापयेद्भक्तो मूर्तौ स्थापनमुद्रया ॥
ततस्तदङ्गदेवांश्च तत्तन्मन्त्रैः पृथक्पृथक् । आवाह्य नाममन्त्रैर्वा सुप्रतिष्ठापयेच्च सः
घण्टादि वादयेद्वाद्यं कुर्याद्वा तालिकाध्वनिम् ।
सुप्तोत्थितमिवाऽथैनं कारयेद्दन्तधावनम् ॥ ३ ॥
श्यामाकविष्णुक्रान्ताभ्यां दूर्वाब्जाभ्यां सहोदकम् ।
पाद्यमेतत्प्रभोर्दद्यात्ततोऽर्घ्याचमनीयके ॥ ४ ॥
चन्दनाक्षतपुष्पाणि दर्भाग्रतिलसर्षपान् । यवान्दूर्वाञ्चाऽर्घ्यपात्रे निक्षिपेदम्बुना भृते
जातीफललवङ्गैलाकङ्कोलोशीरवासितम् । दद्यादाचमनीयाम्बु ततः संस्नापयेद्धरिम्
सुगन्धिपुष्पतैलेन कुर्यादभ्यङ्गमादितः । सुरभिद्रव्यकल्केन कुर्याच्चोद्वर्तनं ततः ॥ ७॥
क्षीरेण दध्ना चाज्येन मधुना सितयातथा । स्नपयेद्धरिमव्यग्रस्तत्तन्मन्त्रैःपृथक्पृथक्
सुगन्धिना च शुद्धेन स्नानमुष्णेन चाम्बुना । तंकारयित्वागन्धाद्यैःस्नानपीठेऽर्चयेल्लघु
निर्माल्यपुष्पादि ततो विसृज्योत्तरतो द्विजः । राजनाद्यैःसामभिर्वामहापुरुषविद्यया
श्रीसूक्तविष्णुसूक्ताभ्यामभिषेकं समाचरेत् ॥ १० ॥
नाम्नां सहस्रेण हरेरष्टोत्तरशतेन वा । अभिषेकं तु कुर्वीरन्स्त्रियः शूद्राश्च दीक्षिताः
ततः प्रमार्ज्य वस्त्रेण तमनर्घ्यांशुकानि च ।
परिधापयेदतिप्रेम्णा राधां चान्यांश्च शक्तितः ॥ १२ ॥
उपवीतं भगवतेदद्यात्सूक्ष्मं सितं शुभम् । रत्नहेमाद्यलङ्कारान्साङ्गायाऽस्मै च धारयेत्
यथार्ऋतु यथास्थानं चन्दनेनयथोचितम् । तिलकाऽनुलेपनं कुर्यात्सकेशरघनादिना
यथोचितमलङ्कारान्धारयित्वा च राधिकाम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पत्रलेखाश्च तिलकं विदध्यात्कुंकुमाक्षतैः ॥ १५ ॥
आदर्शं दर्शयित्वाऽथ पुष्पस्रक्छेखरादिभिः । पूजयेत्तं सहस्रेण तुलसीमञ्जरीदलैः
तुलस्या वाऽथ पुष्पेणप्रत्येकंनामवैष्णवम् । नमःप्रान्तचतुर्थ्यन्तंकीर्त्तयन्नर्चयेत्प्रभुम्
सुगन्धिद्रव्यचूर्णानि ततः सौभाग्यवन्ति च ।
समर्प्य धूपं कुर्वीत दशाङ्गं वाऽमृतादिकम् ॥ १८ ॥
दीपं घृतेनकुर्वीत वर्त्तिकाद्वयदीपितम् । कृतं स्वशक्तितः शुद्धं महानैवेद्यमर्पयेत् ॥
संयावपायसापूपशष्कुलीखण्डलड्डुकान् । पूरिकाःपोलिकामौद्गमोदनंव्यञ्जनानिच
दधिदुग्धघृतादीनि चतुष्पद्यां निधारयेत् ॥ २० ॥
भोजयेत्तं ततः प्रेम्णा मध्येपानीयमर्पयन् । मुहूर्त्तोर्द्धे गतेदद्याद्धस्तप्रक्षालनाम्बु च ॥
उच्छेषणं भगवतो विष्वक्सेनादिदेवताः ।
उपकल्प्याऽन्यतः स्थाप्य स्वार्थं तद्भुवमामृजेत् ॥ २२ ॥
मुखवासं ततोदद्यात्कृतांताम्बूलवीटिकाम् । पूगचूर्णलवङ्गैलाजातीजादिसमन्विताम्
फलञ्चनारिकेलादि दत्त्वाशक्त्या-चदक्षिणाम् । महानीराजनंकुर्याद्गीतवादित्रपूर्वकम्
स्तुयात्पुष्पाञ्जलीन्दत्त्वा तत्स्तोत्रेणैव तं ततः ।
नामसङ्कीर्त्तनं कुर्याद्गायन्नृत्यंश्च तत्पुरः ॥ २५ ॥
मुहूर्त्तं स विधायेत्थंकृत्वाचत्रप्रदक्षिणाम् । प्रणामंदण्डवत्कुर्यात्तिर्यक्तद्दक्षिणेभुचि
अष्टाङ्गं वाऽपि पञ्चाङ्गं प्रणामं पुरुषश्चरेत् । पञ्चाङ्गमेव नारी तु नान्यथा मुनिसत्तम
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यामुरसा शिरसा दृशा ।
वचसा मनसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः ॥ २८ ॥
[बाहुभ्यां चैव मनसाशिरसावचसादृशा । पञ्चाङ्गोऽयंप्रणामःस्यात्पूजासुप्रवराविमौ
भीतं मां संसृतेः पाहि प्रपन्नं त्वां प्रभो! इति ।
ततः सम्प्रार्थ्य स्वाध्यायं शक्त्या कुर्वीत नैत्यकम् ॥ ३० ॥
ध्यात्वा शेषाञ्च तद्दत्तांगृहीत्वाशिरसादरात् । आवाहितंयथापूर्वंराधाकृष्णंहृदम्बुजे
संस्थापयेचाङ्गदेवान्स्वस्वस्थानंविसर्जयेत् । करण्डकेवाशय्यायांमन्दिरेप्रतिमांहरेः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शाययित्वा पिधाय द्वावैश्वदेवं समाचरेत् ॥ ३२ ॥

प्रासादिकंहरेरन्नंस्वपोष्येभ्योविभज्यसः । स्वयंभुक्त्वातत्कथाद्यैर्दिनशेषमतिक्रमेत्

महापूजाविधानेनप्रोक्तेनाऽनेनयोऽन्वहम् । भक्त्या समर्चयेद्विष्णुंस भवेत्तस्यपार्षदः

दिव्यं विमानमारुह्य भास्वरं देवतेप्सितम् ।

गोलोकाख्यं हरेर्द्धाम दिव्याङ्गो याति पूजकः ॥ ३५ ॥

फलाभिसन्धिना वाऽपि यस्तमर्चेद् दिने दिने ।

सोऽपि धर्मं काममर्थं मोक्षं चाऽप्नोत्यभाप्सितम् ॥ ३६ ॥

इत्थं पूजाविधिंकर्त्तुमशक्तो राधया सह । हरिमेकं यथा लब्धैरर्चेद्भक्त्योपचारकैः ॥

द्वादशाक्षरमन्त्रेणद्विजोऽन्योनाममन्त्रतः । श्रीराधाकृष्णमभ्यर्चेद्भक्तिरेवाऽत्रसिद्धिदा

एकादश्यां हरेर्जन्मोत्सवादौ तु विशेषतः ।

महापूजैव कर्त्तव्या स्वशक्त्याऽखिलवैष्णवैः ॥ ३९ ॥

प्रतिष्ठामात्रमपि यः कुर्यादन्यकृतालये । स सार्वभौमराज्यं वै प्राप्नुयान्नष्टकिल्बिषः

कारयेन्मन्दिरं रम्यं धनाढ्यश्च हरेर्दृढम् ।

यः स तु प्राप्नुयाद्राज्यं त्रैलोक्यस्याप्यकण्टकम् ॥ ४१ ॥

वृत्तिदानेन पूजायाः प्रवाहं वर्द्धयेत्तु यः । सपुमान्प्राप्नुयान्नूनंविष्णुलोकेमहत्सुखम्

प्रतिष्ठां मन्दिरं पूजां कारयेत्त्रीण्यपीह यः ।

समानैश्वर्यमाप्नोति वासुदेवस्य स ध्रुवम् ॥ ४३ ॥

हरेर्वृत्तिंहरेद्यस्तु कृतां स्वेन परेण वा । कल्पमेकं सवै भुङ्क्ते नरके यमयातनाः ॥

कर्त्ता कारयिता यश्च सहायश्चानुमोदकः । चतुर्णां हि फलेभागःसुकृतस्येतरस्य च

इति क्रियायोगविधिर्मया नारद! कीर्त्तितः ।

येनैकान्तिकधर्मोऽत्र सिद्ध्येत्तत्प्रवणात्मनाम् ॥ ४६ ॥

विषयांश्चिन्तयंश्चित्तो बहिःपूजां हरेश्चरन् । सम्भारेणापिमहतानयथोक्तंफलंलभेत्

इतस्ततो ग्राम्यसुखेभ्रमत्स्वीयं मनस्ततः । नियम्यविष्णुपूजायांमुमुक्षुःप्रयतोभवेत्

महाव्रता भूरितपस्विनोऽपि स्वधीतवेदा अपि बुद्धिमन्तः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साङ्ख्यं च योगं परिशीलयन्तः सिद्धिं न यान्त्येव विनाऽर्चनं हरेः ॥ ४६ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये क्रियायोगे श्रीवासुदेवपूजाविधिनिरूपणं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

त्रिंशोऽध्यायः

अष्टाङ्गयोगनिरूपणम्

स्कन्द उवाच

वासुदेवार्चनविधिं निशम्येत्थं स नारदः । प्रसन्नःपुनरप्राक्षीत्तं मुनीनां परं गुरुम् ॥

नारद उवाच

सम्यगुक्तो भगवता क्रियायोगो महाफलः ।
एकेन मनसा योऽसौ कार्यः सिद्धिमभीप्सुभिः ॥ २ ॥

मनसो निग्रहस्तत्रज्ञानिनामपि सद्गुरो !। दुष्करः किंपुनस्तर्हिनृणांकर्मात्मनांभुवि
तमृते तु हरेरर्चा नाभीष्टफलदायिनी । अतस्तन्निग्रहोपायमपि मे वक्तुमर्हसि ॥

स्कन्द उवाच

इत्यापृष्टः स मुनिना मुनीन्द्रः सर्वदर्शनः । नारायणो नरसखो नारदं तमभाषत ॥

श्रीनारायण उवाच

सत्यमेव मुने! वक्षि मनसोऽस्ति बलं महत् ।
जितेऽपि यस्मिन्विश्वासः शत्रुवन्न विवेकिनाम् ॥ ६ ॥
मनसा सदृशोऽन्यस्तु शत्रुर्नास्त्येव देहिनाम् ।
विष्णुध्यानाभ्यासयोगान्निर्दोषं तद्धि शाम्यति ॥ ७ ॥

अदान्ताश्ववदेवैतद्यतोऽस्ति दुरवग्रहम् । अतो वैराग्ययुक्पुम्भिः सदुपायैर्निग्रह्यते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उपायास्तत्र बहवःसन्तितेष्वपिसन्मते । अष्टाङ्गयोगस्याभ्यासःश्रेष्ठःस्वयः फलप्रदः
यमाश्च नियमा ब्रह्मन्नासनान्यसुसंयमः । प्रत्याहारोधारणा च ध्यानमङ्गं तु सप्तमम्
समाधिश्चाष्टमं प्रोक्तं योगस्याऽनुक्रमेण वै ॥ १० ॥
तत्राऽहिंसाब्रह्मचर्य सत्याऽस्तेयापरिग्रहाः ।
एते पञ्च यमाः प्रोक्ताः साधनीयाः प्रयत्नतः ॥ ११ ॥
शौचंतपश्चसन्तोषःस्वाध्यायोविष्णुपूजनम् । एतेच नियमापञ्चद्वितीयाङ्गतयामताः
परिहायाऽङ्गचाञ्चल्यं यथा सुखतया स्थितिः ।
तदासनं स्वस्तिकादिप्रोक्तं द्वन्द्वार्त्तिजिन्मुने !॥ १३ ॥
चरतां सर्वतोऽसूनामेकदेशेतु धारणम् । गुरूपदिष्टरीत्यैव प्राणायामः स उच्यते ॥
चले वायौचलंचित्तंस्थिरेतस्मिंस्थिरं ततः । सुदेशेऽयंसदाऽभ्यस्यः पूरकूम्भकरेचकैः
मनसेन्द्रियवृत्तीनां तत्तद्विषयतश्च यत् । आकर्षणं प्रतीचीनं प्रत्याहारः स ईरितः ॥
नाभ्याद्यन्यतमे स्थाने प्राणेन सह चेतसः । वासुदेवस्वरूपे यद्धारणं धारणोदिता ॥
एकैकावयवस्यैवचिन्तनंयत्पृथक्पृथक् । पदाब्जादेर्भगवतस्तद्ध्यानमितिकीर्तितम्
निरोधःप्राणमनसोरतिप्रेम्णाहरौतुयः । ससमाधिरितिप्रोक्तोयोगिनामभिवाञ्छितः
अङ्गैरष्टभिरेतैर्हि शिक्षितैः सिद्धसद्गुरोः ।
योगः सिद्ध्यति वै पुंसां समाधेः पक्वतात्मकः ॥ २० ॥
नैतादृशं परं सम्यङ्मनोनिग्रहसाधनम् । पुरुषाणां मुमुक्षूणामिति जानीहि नारद ॥
तपस्विनां महाशत्रोर्ब्रह्माण्डक्षोभकादपि ।
मदनान्न भयं किञ्चिद्योगिनस्त्वस्ति कर्हिचित् ॥ २२ ॥
आयास्यन्तं विहित्वैव सोऽन्तकालश्च योगवित् ।
स्वातन्त्र्येणैव देहं स्वं त्यजतीत्थं समाधिना ॥ २३ ॥
पार्ष्णिभ्यांगुदमापीड्यवायुं पादद्वयस्थितम् । शनैःशनैःसमाकृष्यमृत्युस्थानंनयत्यमुम्
मनसा केशवं ध्यायंस्तन्मनुश्चषडक्षरम् । जपंस्ततोऽमुंनयति वायुं स्थानं प्रजापतेः
ततो नाभिञ्च हृदयमुरः कण्ठश्चयोगवित् । नयति भ्रूकुटिंवायुं वासुदेवपरायणः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एतेषु षट्सु स्थानेषु त्वेकैकस्मिन्पृथक्पृथक् ।
योगी प्राणमनोक्षाणां निरोधश्च विसर्जनम् ॥
तावदभ्यसति स्वस्य यावत्स्यात्तत्स्वतन्त्रता ॥ २७ ॥

जितंजितं विहायैव स्थानं याति परम्परम् । प्राप्तस्यस्थानकंषष्ठंतदभ्यासेश्रमोनहि
सप्तच्छिद्राणि रुद्ध्वाऽथप्राणमक्षमनोयुतम् । प्रापय्यतालुव्रजतिब्रह्मरन्ध्रंसयोगवित्
मायामयपदार्थानां ततो हित्वैव वासनाः । स वासुदेवैकमनास्त्यजति स्वकलेवरम्
ततो भगवतोधाम श्रीकृष्णस्य तमपरम् । उपेत्य सेवमानस्तं नन्दते दिव्यविग्रहः
इति ते कथितो ब्रह्मन्योगशास्त्रस्यसंग्रहः । जित्वातेन मनः स्वीयं तमाराधयसर्वदा

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे-
श्रीवासुदेवमाहात्म्येऽष्टाङ्गयोगनिरूपणं नाम
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

एकत्रिंशोऽध्यायः

श्रीनरनारायणस्तुतिनिरूपणम्

स्कन्द उवाच

श्रुत्वैतत्सकलं धर्म्यं यथावद्भगवद्वचः । निःसंशयो मुनिः प्राह तं प्रणम्य कृताञ्जलिः

नारद उवाच

नष्टा मे संशयाः सर्वे प्रसादाद्भगवंस्तव । वासुदेवस्य माहात्म्यंमयाऽधिगतमञ्जसा
कञ्चित्कालमिहैवाऽयंतपःकुर्वंस्त्वयासह । श्रृण्वंश्चनित्यंज्ञानादिकरिष्येपद्ममात्मनः

स्कन्द उवाच

इत्युक्त्वा नारदस्तत्र तेनचाप्यनुमोदितः । उवास दिव्यवर्षाणां सहस्रं स तपश्चरन्
शुश्राव चाऽनुदिवसं यथाकलं हरेर्मुखात् । धर्मज्ञानाद्यथ प्राप पक्वतां तत्र योगिराट्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्नेहश्च परमम्प्राप स श्रीकृष्णेऽखिलात्मनि । गुणगानपरोनित्यमासभागवताग्रणीः
भक्तिनिष्ठांपरांप्राप्तमथ तं सिद्धयोगिनम् । उवाचभगवान्प्रीतः श्रेयस्कृत्सर्वदेहिनाम्

श्रीनारायण उवाच

सिद्धोऽसि त्वं महर्षेऽद्य गच्छलोकहितं कुरु । एकान्तधर्मं सर्वत्र प्रवर्त्तयितुमर्हसि

स्कन्द उवाच

इत्याज्ञां शिरसा तस्य स आदाय जगद्गुरोः ।
गच्छंस्ततस्तमस्तौषीत्प्रणम्य प्राञ्जलिः स्थितः ॥ ९ ॥

नारद उवाच

नमो नमस्ते भगवञ्जगद्गुरो! नारायणाऽप्राकृतदिव्यमूर्त्ते !।
अनन्तकल्याणगुणाकरस्त्वं दासे मयि प्रीततरः सदा स्याः ॥ १० ॥
त्वं वासुदेवोऽसि जगन्निवासः क्षेमाय लोकस्य तपः करोषि ।
योगेश्वरेशोपशमस्थ आत्मारामाधिपस्त्वं परहंससद्गुरुः ॥ ११ ॥
विभुर्ऋषीणामृषभोऽक्षरात्मा जीवेश्वराणाञ्च नियामकोऽसि ।
साक्षी महापूरुष आत्मतन्त्रः कालोऽभवद्यद्भ्रकुटेर्महांश्च ॥ १२ ॥
सर्गादिलीलां जगतां त्वमीश करोषि मायापुरुषात्मनैव ।
तथाप्यकर्त्ता ननु निर्गुणोऽसि भूमा परब्रह्म परात्परश्च ॥ १३ ॥
सत्यः स्वयंज्योतिरतर्क्यशक्तिस्त्वं ब्रह्मभूतात्मविचिन्त्यमूर्त्तिः ।
बृहद्व्रताचार्य! महामुनीन्द्र! कन्दर्पदर्पापहरप्रताप ॥ १४ ॥
तपस्विनां ये रिपवः प्रसिद्धाः क्रोधो रसो मत्सरलोभमुख्याः ।
अप्याश्रमं तेऽपि कदाऽपि वेष्टुं नेमं क्षमा ह्यत्र तव प्रतापः ॥ १५ ॥
छन्दोमयो ज्ञानमयोऽमृताध्वा धर्मात्मको धर्मसर्गाभिपोष्टा ।
उन्मूलिताधर्मसर्गो महात्मा त्वमव्ययश्चाक्षयोऽव्यक्तबन्धुः ॥ १६ ॥
निर्दोषरूपस्य तवाऽखिलाः क्रिया भवन्ति वै निर्गुणा निर्गुणस्य ।
धर्मार्थकामेप्सुभिरर्चनायस्त्वमीश्वरो नाथ! मुमुक्षुभिश्च ॥ १७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्वं कालमायायमसंसृतिभ्यो महाभयात्पातुमेकः समर्थः ।
भक्तापराधाननवेक्षमाणो महादयालुः किल भक्तवत्सलः ॥ १८ ॥
धृतावतारस्य हि नाममात्रं रूपञ्च वा यः स्मरेदन्तकाले ।
सोऽपि प्रभो! घोरमहाघसंघात्सद्यो विमुक्तो दिवमाशु याति ॥ १६ ॥
तं त्वां विहायाऽत्र तु यो मनुष्यो देहे त्रिधातावपि दैहिकेषु ।
जायाऽऽत्मजज्ञातिधनेषु सज्जते स मायया वञ्चित एव मूढः ॥ २० ॥
त्वद्भक्तियोग्यो नरदेह एव यं कामयन्तेऽपि च नाकसंस्थाः ।
त्वद्भक्तिहीनं हि दिवोऽपि सौख्यमहं तु जाने नरकेण तुल्यम् ॥ २१ ॥
तपस्त्रिलोक्याः कुरुषे सुखाय तत्रापि ते भारतवासिपुंसु ।
अनुग्रहो भूरितरो यदत्र कृतावतारो विचरन्विराजसे ॥ २२ ॥
तस्याऽऽश्रयं ये तव नाऽत्र कुर्वते त एव शास्त्रेषु मताः कृतघ्नाः ।
अतस्तवैकाश्रयमेव बाढं कुर्वत्यजस्रं मयि तेऽस्तु तुष्टिः ॥ २३ ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीनरनारायणस्तुतिनिरूपणं नामैक-त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

द्वात्रिंशोऽध्यायः

ग्रन्थसम्प्रदायप्रवृत्तिनिरूपणम्

स्कन्द उवाच

इति स्तुत्वातमीशानंनारदःसययौततः । शम्याप्रासाभिधंब्रह्मन्व्यासस्याश्रममादितः
सादरं मानितस्तेन प्रत्युत्थानासनादिभिः । तस्माएकान्तिकंधर्म्मं प्राहजिज्ञासवेसच

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ततो ब्रह्मसभां गत्वा ब्रह्मणः शृण्वतो मुनिः।
देवान्पितॄन्महर्षींश्च तत्रस्थांस्तमुपादिशत् ॥ ३ ॥
तत्र स्थितो भास्करश्च धर्ममेतं पुनर्म्मुने । शुश्राव नारदात्सर्वं श्रुतं नारायणात्पुरा ॥
स प्राहाऽऽत्माग्रयायिभ्यो वालखिल्येभ्य आदरात् ।
मेरौ ते सङ्गतान्देवानिन्द्रादींश्च न्यशामयन् ॥ ५ ॥
तेभ्योऽसितो मुनिः श्रुत्वा धर्ममेतं द्विजोत्तम !।
पितृभ्यः कथयामास पितृलोकं गतः क्वचित् ॥ ६ ॥
पितरस्ते त्वर्यमाद्या ऊचिरे शन्तुनं नृतम् । स भीष्मायस्वपुत्रायकथयामासतत्त्वतः
सोऽपि भारतयुद्धान्ते धर्म्मराजाय पृच्छते । शयानः शरशय्यायां प्राह संसदिभूयसि
तत्र श्रुत्वा नारदोऽपि स्थितः सदसि सादरम् । कैलासेशङ्करंप्राहसचमांमुनिसत्तम
मया ते कथितंब्रह्मन्पृच्छतेधर्म्मवर्त्तिने । पात्रायैतत्प्रदातव्यमिति मां हिपिताऽब्रवीत्
येनयेन श्रुतं ह्येतन्माहात्म्यं सात्वताम्पतेः । ससतस्मिन्परां भक्तिंचकारस्वविमुक्तये
युधिष्ठिरोऽपि राजर्षिः श्रुत्वा भीष्मेण कीर्त्तितम् ।
माहात्म्यं देवकीसूनोर्म्मुमुदे भ्रातृभिः सह ॥ १२ ॥
तमात्मनो मातुलेयं सर्वकारणकारणम् । निशम्याऽऽश्चर्य्यजलधौनिममज्जमहामतिः
वासुदेवादिकं व्यूहं वाराहादींश्च सर्व्वशः । अवतारानपि नृपो मेनेऽस्यैव रमापतेः ॥
ततः सहानुजो राजा दिव्यमानुषविग्रहे । अत्यन्तं भक्तिमान्कृष्णे वभूव द्विजसत्तम!
श्रुत्वेमां च कथांसर्व्वेब्रह्मराजसुरर्षयः । सभायां तत्रयेचासंस्तेऽप्यभूवन्सविस्मयाः
कृष्णमेव परं ब्रह्म विदित्वा ते नराकृति । भक्तिं प्रपेदिरे तस्मिन्प्रणमन्तस्तमादरात्
इत्थंतस्याऽस्ति माहात्म्यमतस्त्वमपिसन्मते !। सर्वात्मनावासुदेवंतमेवभजभक्तितः
श्रीवासुदेवमाहात्म्यमेतत्ते कथितं मया । दुर्वासनोपशमनं भगवद्भक्तिवर्द्धनम् ॥ १९॥
कथितानि पुराणेऽत्र मयाख्यानानि यानि ते । तेषां सारइदंब्रह्मन्निर्म्मथ्यैवसमुद्धृतः
वेदोपनिषदां चैतद्रसो वै सांख्ययोगयोः । पञ्चरात्रस्यकृत्स्नस्यधर्म्मशास्त्रस्यचानघ
धन्यं यशस्यं चाऽऽयुष्यमेतत्परममङ्गलम् । साक्षाद्भगवता गीतं सर्वाभद्रविनाशनम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

य एतच्छृणुयात्पुण्यं कीर्तयेदथ यः पठेत् । वासुदेवे भवेत्तेषामचला निर्मला मतिः॥
भक्ता एकान्तिकास्ते च भवेयुस्तस्य मानवाः । ब्रह्मरूपाव्रजन्त्यन्तेब्रह्मधामतमःपरम्

धर्मार्थी लभतेऽनेन धर्मं कामं च कामुकः ।
धनार्थी धनमाप्नोति मोक्षार्थी मोक्षमुत्तमम् ॥ २५ ॥

लभेत विद्यां विद्यार्थी मुच्येद्रुग्णश्चरोगतः । एतच्छ्रवणमात्रेणसर्वपापक्षयो भवेत्
ब्राह्मं तेजो लभेद्विप्रः क्षत्रियश्चपरेशताम् । धनं वैश्यःसुखंशूद्रःश्रवणादस्यचाप्नुयात्

एतच्छ्रुत्वा रणं गच्छन्विजयं चाऽऽप्नुयान्नृपः ।
प्राप्नुयात्स्त्री च सौभाग्यं कन्या च स्वेप्सितं वरम् ॥ २८ ॥

एतस्य श्रुतिकीर्त्तिभ्यां शास्त्रजातशिरोमणेः । यं यं कामयेत्कामंतंतंप्राप्नोतिमानवः

तस्मात्त्वं सर्वदा भक्त्या पठन्नेतद् द्विजोत्तम !॥
कायवाणीमनोभिस्तं भजेथा भक्तवत्सलम् ॥ ३० ॥

सौतिरुवाच

एतन्महासेनमुखाब्जनिःसृतं सावर्णिरापीय वचोऽमृतं सः ।
चकार भक्तिं वसुदेवनन्दने नराकृतिब्रह्मणि सर्वमङ्गले ॥ ३१ ॥
यूयं च सर्वे निगमागमज्ञा ब्रह्मण्यदेवं भजनीयमीशम् ।
भजध्वमेकं तमुदारकीर्त्तिं श्रीवासुदेवं निजधर्मसंस्थाः ॥ ३२ ॥

गोलोकधामपतये प्रकाशचयमूर्त्तये । नमोऽस्तु वासुदेवाय भक्तयाऽऽनन्दविवृद्धये ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये वैष्णवखण्डे वासुदेवमाहात्म्ये ग्रन्थसम्प्रदायप्रवृत्तिनिरूपणं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

समाप्तमिदं वासुदेवमाहात्म्यम् ॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे द्वितीयं वैष्णवखण्डं सम्पूर्णम् ॥ २ ॥

——:०:——

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विशेषतोऽवधेयम्

बदरिकाश्रममाहात्म्यस्याऽग्रे नारदपुराणीयस्कन्दमहापुराणस्थै-तत्पुराणसूचिमध्ये मदनालसमाहात्म्यं धूम्रकोशाख्यानञ्च वर्तते अथ च मार्गशीर्ष-माहात्म्यस्याऽग्रे द्वादशवनमाहात्म्यमस्ति। भागवतमाहात्म्यस्याऽग्रे माघमास-माहात्म्यम्वर्तते तत्तद् विशिष्ट-विशिष्ट हस्तलिखितग्रन्थसङ्ग्रहालयानां सर्वतोऽनु-सन्धानेऽपि नैव वयं समर्थास्तत्प्राप्तौ। तदर्थं श्रीमद्विद्वद्धुरीणानां समक्षं साञ्जलि समभ्यर्थना यदग्रेपुनरनुसन्धानदिशायत्नेसफलेएतत्प्राप्तौ सत्यां परि-शिष्टरूपेणग्रन्थेऽस्मिन्नविकलं प्रकाशनीयतासम्पद्येत।

विदुषाम्वशम्वदौ
सम्पादकौ
ब्रह्मदत्तत्रिवेदि रामनाथदाधीचौ

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा

—:*:—